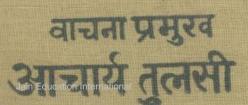


# अवाइयं \* रायपसेणियं \* जीवाजीवाभिगमे



संपादक

चार्य महाप्रज्ञ



For Private & Personal Use Only

निग्गंथं पावयणं



# ओवाइयं • रायपसेणियं • जीवाजीवाभिगमे

धावना प्रमुखः आचार्य तुलसी

संपादकः युवाचार्यं महाप्रज्ञ

प्रकाशक जो*ज विश्व भारती* लाडनूं (राजस्थान)

पृष्ठांक : ८००

সকাগক :

लाडन्ं

जैन विश्व भारती,

प्रबंध सम्पादकः श्रीचन्द रामपुरिया,

अर्थिक सहयोगः

विराटनगर (नेपाल)

प्रकाशन तिथि:

ই০ १৫ন৬

श्री रामलाल हंसराज गोलछा

विकम सम्वत् २०४४ (दीपावली)

मूल्य ४००/-

भुद्रकः मित्र परिषद् कलकत्ता के आर्थिक सौजन्य से स्थापित जैन विक्ष्य भारती प्रेस, लाडनूं (राजस्यान) On the occasion of Acarya Tulsi Amrit Mahotsava Year

Niggantham Pāvayaņam

# UVANGA SUTTĀŅI IV

# (PART 1)

### OVĀIYAM • RĀYAPASEŅIYAM • JĪVĀJĪVĀBHIGAME

(Original Text Critically Edited)

Vācanā-pramukha : ĀCĀRYA TULSI

Editor i YUVĂCĀRYA MAHĀPRAJÑA

## Publisher : JAIN VISHVA BHARATI LADNUN (RAJASTHAN)

Publisher : JAIN VISHVA BHARATI. Ladnun–341 306

Managing Editor : Shrichand Rampuria,

By Munificence : Shri Ramlal Hansraj Golchha Viratnagar (Nepal)

Year of Publication : Vikram Samvat 2044 (DJpāvalī 1987 A.D.

Pages : 800

Price | 400/-

Printers : JAIN VISHVA BHARATI PRESS, [Established through the financial co-operation of Mitra Parishad, Calcutta) Ladnum (Rajasthan)

# अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिर्वचनीय होता है उस माली का जो अपने हाथों से उप्त और सिंचित दुम निकुंज को पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ देखता है, उस कलाकार का जो अपनी तूलिका से निराकार को साकार हुआ देखता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नों से प्राणवान् बना देखता है। चिरकाल से मेरा मन इस कल्पना से मरा था कि जैन आगमों का भोधपूर्ण-सम्पादन हो और मेरे जीवन के बहुश्रमी क्षण उसमें लगे। संकल्प फलवान् बना और वैसा ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-परिवार उस कार्य में संलग्न हो गया। अतः मेरे इस अन्तस्तोप में मैं उन सबको समभागी बनाना चाहता हूं, जो इस प्रवृत्ति में संविभागी रहे हैं। संक्षेप में वह संविभाग इस प्रकार है:

संपादक :	युवाचार्य महाप्रज्ञ
पाठ-संशोधन सहयोगी :	मुनि सुदर्शन
33	मुनि मधुकर
**	मुनि हीरालाल
शब्दकोशः :	**

संविभाग हमारा धर्म है। जिन-जिनने इस गुरुतर प्रवृत्ति में उन्मुक्त भाव से अपना संविभाग समर्पित किया है, उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूं और कामना करता हूं कि उनका भविष्य इस महान कार्य का भविष्य बने ।

#### स्राचार्य तुलसी

# মদর্ঘতা

पुट्ठो वि पक्णा-पुरिसो सुदक्खो, झाणा-पहाणो जणि जस्स निच्चं । सच्चरपद्रोगे पवरासयस्स, भिक्खुस्स तस्स प्पणिहाणपुढवं ।।

विलोडियं ग्रागमडुद्धमेव, लद्धं सुलद्धं णवगीयमच्छं। सज्झाय-सज्झाण-रयस्स निच्चं, जयस्स तस्स प्पणिहाणपुष्ठ्वं।।

पवाहिया जेण सुयस्स खारा, गणे सनस्ये नम नाणसे वि। जो हेउभूग्रो स्स पवायणस्स, कालुस्स तस्स प्पणिहाणपुरुषं॥ जिसका प्रज्ञा-पुरुष पुष्ट पटु, होकर भी आगम-प्रधान था। सत्य-योग में प्रवर चित्त था, उसी भिक्षु को विमल भाव से ।

जिसने आगम-दोहन कर **कर**, पाया प्रवर प्रचुर नवनीत । श्रुत-सद्ध्यान लीन चिर चिन्तन, जयाचार्य को विमल माव से।

जिसने अनुत की धार बहाई, सकल संघ में मेरे मन में । हेतुभूत अनुत सम्पादन में, कालुगणी को विमल भाव से।

Jain Education International

# प्रकाशकीय

आगम संपादन एवं प्रकाशन की योजना इस प्रकार है----

- २. जागम-अनुसंधान ग्रन्थमाला---मूलपाठ, संस्कृत छाया, अनुवाद, पद्यानुकम, सूत्रानुकम तथा मौलिक टिप्पणियों सहित आगमों का प्रस्तुतीकरण ।
- ३. आगम-अनुकीलन ग्रन्थमाला --आगमों के समीक्षात्मक अध्ययनों का प्रस्तुतीकरण ।
- ४. आगम-कथा प्रग्थमाला---आगमों से संबंधित कथाओं का संकलन और अनुवाद ।
- २. वर्गीकृत-आगम ग्रन्थमाला --आगमों का संक्षिप्त वर्गीकृत रूप में प्रस्तुतीकरण ।
- ६. जागमों के केवल हिंदी अनुवाद के संस्करण ।

प्रथम आगम-सुत ग्रन्थमाला में निम्न ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं---

- (१) दसवेआलियं तह उत्तरज्झयणाणि
- (२) आयरो तह आयारचूला
- (३) निसीहज्झयणं
- (४) उववाइयं
- (१) समवाओ
- (६) अंगमुत्ताणि (सं० १)-इसमें आवारांग, सूत्रकृतांग, स्थानांग, समवायांग-ये चार अंग समाहित हैं।
- (७) अंगसुत्ताणि (खं० २) -- इसमें पंचम अंग भगवती प्रकाशित है।
- (८) अंगसुत्ताणि (खं० ३) ---इसमें ज्ञाताधर्मकथा, उपायकदशा, अंतकृतदशा, अनुत्तरोपपत्तिक-दशा, प्रश्तव्याकरण और विपाक----ये ६ अंस हैं।
- (१) नवसुत्ताणि (खं० १)---इसमें आवस्सयं, दसवेआलियं' उत्तरज्झयणाणि, नंदी, अणुओगदाराइं, दसाओ, कथ्पो, ववहारो, निसीहज्झयणं--ये नौ आगम ग्रन्थ हैं।

उक्त में से प्रथम पांच ग्रन्थ जैन श्वेताम्बर तेरागंथी महासमा, कलकत्ता द्वारा प्रकाश्वित हुए हैं एवं खंतिम चार ग्रन्थ जैन विश्व मारती, जाडनूं द्वारा प्रकाशित हुए हैं।

दितीय आगम अनुसंधान प्रन्थमाना में निम्न प्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं----

() दसवेवालियं

ŧo

(२) उत्तरज्झयणाणि (भाग १ और २)

(३) ठाणं

(४) समवाओ

(भ्) सूयगडो (भाग १ और भाग २)

उक्त में से प्रथम दो ग्रन्थ जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासमा, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित हुए हैं और अंतिन तीन ग्रन्थ जैन विश्व भारती, लाडनूं द्वारा प्रकाशित हुए हैं । दसवेआलियं का द्वितीय संस्करण भी जन विश्व भारती, लाडनूं द्वारा प्रकाशित हुआ है ।

तीसरी आगम-अनुशीलन ग्रन्थमाला में निम्न दो ग्रन्थ निकल चुके हैं---

(१) दशवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन ।

(२) उत्तराध्ययन : एक समीक्षात्मक अध्ययन ।

चौथी आगम-कथा प्रन्थमाला में अभी तक कोई प्रन्थ प्रकाशित नहीं हो पाया है।

पांचवीं वर्गीकृत-आगम प्रन्थमाला में दो ग्रन्थ निकल चुके हैं---

(१) दशवैकालिक वर्गीकृत (धर्मप्रज्ञप्ति खं० १)

(२) उत्तराध्ययन वर्गीकृत (धर्मप्रज्ञप्ति खं० २)

छठी ग्रन्थमाला में कैवल आगम हिंदी अनुवाद ग्रन्थमाला के संस्करण के रूप में एक 'दशवें-कालिक और उत्तराध्ययत' ग्रन्थ का प्रकाशन हुआ है ।

उक्त प्रकाशनों के अतिरिक्त दशवैकालिक एवं उत्तराध्ययन (मूल पाठ मात्र) गुटकों के रूप में प्रकाशित किए जा चुके हैं।

प्रस्तुत प्रकाशन उवंगसुत्ताणि, खंड १ में (१) ओवाइयं (२) रायपसेणियं और (३) जीवाजीवाभिगमे----इन तीन उभांग आगमों का पाठान्तर सहित मूलपाठ मुद्रित है। साथ ही साथ इन तीनों उपांगों की संयुक्त शब्दसूची भी अन्त में संलग्न कर दी गई है। भूमिका में इन ग्रन्थों का संक्षेप में परिचय प्राप्त है, अतः यहां इस विषय पर प्रकाश डालने की आवश्यकता नहीं है।

आगम प्रकाशन कार्य की योजना में निम्न महानुभावों का सहयोग रहा---

(१) सरावगी चेरिटेबल फण्ड, कलकत्ता (ट्रस्टी रामकुमारजी सरावगी, गोविदालालजी सरावगी एवं क्रमलनयनजी सरावगी)।

(२) रामलालजी हंसराजजी गोलळा, विराटनगर ।

(३) स्व॰ जयचंदलालजी गोठी, सरदारणहर ।

(४) रामपूरिया चेरिटेबल ट्रस्ट, कलकता ।

(१) बेगराज भंवरलाल चोरडिया चेरिटेबल ट्रस्ट ।

इस खण्ड के प्रकाशन के लिए विराटनगर (तेपाल) निवासी श्री रामनालजो हंसराजजी गोलछा से उदार आधिक अनुदान प्राप्त हुआ है। इसके लिए संस्थान उनके प्रति कृतज्ञ है।

यह ग्रन्थ जैन विश्व भारती के निजी मुद्रणालय में मुद्रित होकर प्रकाशित हो रहा है। सुद्रणा-लय के स्थापन में मित्र-परिषद्, कनकत्ता के आर्थिक-सहयोग का सौजन्य रहा, जिसके लिए, उक्त

#### ŢŢ

संस्था को अनेक धन्यवाद है।

यह ग्रन्थ आचार्य तुलसी अमृत-महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में प्रकाशित हो रहा है। आगम-संपादन के विविध आयामों के वाचना-प्रमुख हैं आचार्यश्री तुलसी और प्रधान संपादक तथा विवेचक हैं युवाचार्यश्री महाप्रज्ञजी। इस कार्य में अनेक साधु-साध्वी सहयोगी रहे हैं। इस तरह अथक परिश्रम के द्वारा प्रस्तुत इस ग्रन्थ के प्रकाशन का सुयोग पाकर जैन विधव भारती अत्यंत क्रतज्ञ है।

जैन विषव भारती **१६-११-**८७ लाडनूं (राज०)

#### <mark>श्रीचंद रामपुरिया</mark> कुलपति

### सम्पादकीय

प्रस्तुत पुस्तक में तीन ग्रन्थ हैं - ओवाइयं, रायपमेणियं और जीवाजीवाभिगमे ।

#### **ओवाइ**यं

औषपातिक ना पाठ आदर्शों तथा वृत्ति के आधार पर स्वीकार किया गया है। प्रस्तुत सूत्र में वाचनान्तरों की बहुलता है। यह सूत्र वर्णनकोश है। इसलिए अन्य आगमों में स्थान-स्थान पर 'जहा जोववाइए' इस प्रकार का समर्पण-वचन मिलता है। उन आगमों के व्याख्याकारों द्वारा अपने व्याख्या-ग्रन्थों में अवतरित पाठ तथा कहीं-कही समर्पण-सूत्रों के पाठ औपपातिक के स्वीकृत पाठ में नहीं मिलते हैं। वे पाठ वाचनान्तर में प्राप्त हैं। समर्पण-वचन पढ़ने वालों के लिए यह एक समस्या बन जाती है।

प्रस्तुत आगम का पाठ आदर्शों तथा वृत्ति के आधार पर ही नहीं, किन्तु अन्य आगमों व व्याख्या-ग्रन्थों में प्राप्त अवतरणों व समर्पणों के आधार पर भी निर्धारित होना चाहिए था। किन्तु समग्र अवतरणों व समर्पणों का संकलन हुए बिना वैसा करना संभव नहीं।

इस विषय में कुछ संकलन हमने किया है----

#### सगवई

-	
91819X	एवं जहा ओववाइए जाव
હાશકદ્	एवं जहा उववाइए (दो बार)
હાશ્દદ્	जहा कूणिओ जाव पायच्छित्ते
61820	"जहा ओववाइए जाव एगाभिमुहे।" "एवं जहा ओववाइए जाव तिविहाए"।
21825	"जहा अोववाइए जात्र सत्यवाह" । "जहा कोववाइए जाव खत्तियकुंडग्गामे" ।
81852	ओववाइए परिसा वण्णओ तहा भाणियव्वं।
81208	"जहा ओववाइए जाव गगणतलमणुलिहंती"। "एवं जहा ओववाइए त <b>हेव</b>
	भइणियव्वं''।
81208	जहा स्रोववाइए जाव महापुरिस°
हा२०५	जहा ओववाइ <b>ए</b> जाव अभिनंदता
30513	एवं जहा ओववाइए कूणिओ जाव निग्गच्छइ
32128	जहा ओववाइए
22152	जहा ओववाइए कूणियस्त
881ex	जहा अरेववाइए जाव गहणयाए

भगवई वृत्ति	
ণঙ্গ ও	औपपाति <b>कात् स</b> व्याख्यानोऽत्र दृश्यः
पत्र ११	औषपातिकवद्वाच्या
দঙ্গ ২ १७	"एवं अहा उववाइए" त्ति तत्र चेदं सूत्रमेवम्
पत्र ३१ू=	"एवं जहा उववाइए जाव" इत्यनेनेदं सूचितम्
पत्र ३१६	"जहा चेव उववाइए" ति तत्र चैवमिदं सूत्रम्
पत्र ४६२	"जहा उववाइए" ति तत्र चेदं सूत्रमेवं लेगतः
पत्र ४६्३	"जहा उववाइए" ति तदैव लेशतो दर्श्यते
पत्र ४६३	"एवं जहा उववाइए" तत्र चैतदेवं सूत्रम्
पत्र ४६३	श्जहा उववाइए" ति चेदमेवं सूत्रम्
पत्र ४६३	"जहा उववाइए परिसावन्तओं" ति यथा कौणिकस्यौपपातिके
<b>দঙ্গ</b> ४७६	"जहा उववाइए" ति एवं चैतत्त <b>त्र</b>
পঙ্গ ४७६	"जहा उववाइए" ति अनेन यत्सूचितं तदिदम्
য্স ४⊂१	"जहा उववाइए" ति करणादिदं दृश्यम्
पत्र ४८२	"एवं जहा उववाइए" ति अनेन यत्सूचितं तदिदम्
पत्र ४१६	"जहा उववाइए" इत्येतस्मादतिदेशादिदं दृश्यम्
पत्र ४,२०	" <b>एवं जहा उव</b> वाइए'' इत्येतत्करणादिदं दृश्यम्
पत्र ४२१	"एवं जहेवे" त्यादि "एवम्" अनंतरदशितेनाभिलापेन यथौपपातिके सिद्धान-
	धिकृत्य संहतनाद्युक्तं तथैवेहापि
पत्र ४२१	वा <b>क्</b> यपद्धतिरौषपातिकप्रसि <b>द्धा</b> ऽध्येता

\$ \$155, 885	एवं जहेव ओववाइए तहेव
११।१३=	जहा ओववाइए तहेव अट्टणसाला तहेव मज्जणघरे
881888	एवं जहा दढपइण्णस्स
११।१२६	एवं जहा दढपइण्णे
881826	जहा आववाइए
881856	जहा अम्मडो जाव बंभलोए
१२!३२	एवं जहा कूणिओ तहेव सब्ब
\$\$1800	जहा कूणिओ ओववाइए जाव पज्जुवासइ
621800	एवं जहा ओववाइए जाव वॉराहगा
881880	एवं जहा ओववाइए अम्मडस्स वत्तव्वया
<b>१४।१</b> ≈६	एवं जहा ओववाइए दढप्पइण्णवत्तव्वया
१५११८६	एवं जहा ओववाइए जाव सव्वदुक्खाणमंतं
२४।१६६	जहा आववाइए जाव सुद्धेसणिए
२४।४७०	जहा ओववाइए जाव लूहाहारे
281801	जहा ओववाइए जाव सव्वगाय"

बहवे उग्गा भोगा इत्याद्यीपपातिकग्रन्थोक्तं सर्वमवसातव्यं यावत् समग्रापि राज-पृ० ३९ प्रभृतिका परिषत्पर्युपासीना अवतिष्ठते

यावच्छब्दकरणात् "आइकरे तित्थगरे" इत्यादिक: समस्तोपि औपपातिकग्रन्थ-

प्रसिद्धो भगवतद्वर्णको वाच्यः, स चातिगरीयानिति न लिख्यते, केवलमौपपातिक-

- यावच्छब्दकरणाद्राजवर्णको देवीवर्णकः समवसरणं चौपपातिकानुसारेण ताव-पूरु २७ द्वक्तव्यं यावत्समवसरणं समाप्तम्
- ज्ञेया ।

- अशोकवरपादपस्य पृथिवीशिलापट्टकस्य च वक्तव्यता औपपातिकग्रन्थानुसारेण
- **वर्ण्णक**परिग्रहः पू० १०

- पृ० ५
- यावच्छब्दकरणात् ''सद्दिए कित्तिए नाए सच्छत्ते'' इत्याद्यौपपातिकग्रन्थप्रसिद्ध-
- सम्प्रत्यस्या नगर्या वर्णकमाह----(यहां अौपपातिक का उल्लेख नहीं) पू० ३
- असोयवरपायवे पुढविसिलापट्टए वत्तव्वया कोववाइयगमेणं नेया सू० ३, ४ एगदिसाए जहा उबवाइए जाव अप्पेगतिया सू० ६्दद रायपसेणिय वृत्ति
- जहा दढपइण्णे \$1\$100 जहा दढपइण्णे २।शा३६ जहा दढपइण्गे રાશ્વા

## विवागसुयं

रायपसेणियं

पु० ३०

- ज्ञातावृत्ति पत्र २ वर्णकग्रन्थोत्रावसरे वाच्यः---
- "जहा उववाइए" सि अनेनेथं सूचितम् पत्र ६२४

ग्रन्थादवसेयः

- "जहा उववाइए" ति अनेनेदं सुचितम् पत्र ६२४
- ...जहा **उववाइए" सि अ**नेनेदं सूचितम् पत्र ६२४
- ग्एवं जहा उववाइए'' इत्यादि भावितमेवाभ्मडपरिव्राजककथ।नक इति । पत्र ६१६
- · एवं जहे'' त्यादिना यत्सूचितम् पत्र १६३
- दुश्यम्—
- "जहा अम्मडो" ति यथौपपातिने अम्मडोऽधीतस्तथाऽयमिह वाच्य: দস ২४৪ ''एवं जहा उववाइए जाव आराहग'' सि इह यावत्करणादिदमर्थतो लेशेन पत्र १६३
- "जहा उववाइए" इत्यनेनयत्सूचितम् पत्र १४५
- "एवं जहा दढपइन्नो" इत्यनेन यत्यूचितं तदेवं दृश्यम् পৰা ২৪২
- व्यतिकरोः ··जहा दढपइन्ने'' त्ति ययौपपातिके दृढप्रतिज्ञोऽधीतस्तथाऽयं वक्तव्यः तच्चैवम् দ্র ২४২
- पजहा उववाइए तहेव अट्टणसाला तहेव मज्जणघरे' सि यथौपपातिकेऽट्टणसाला पत्र ४४२

- 4

		भयान्न लिखित इत्यवसेयम्
গা০	वृ० पत्र २६४	एव <b>मुक्त</b> कमेण औषपातिकगमेन–प्रथमोपाङ्गगतपाठेन तावद् वक्तव्यं यावत्तस्य
		राज्ञः पुरतो महाम्बाः
ন্ধাৎ	बॄ० पत्र ३२४	वृक्षवर्णनं प्रथमोपाङ्गतो ऽवसेयम्
सूरग	गणत्ती वृत्ति	
বন্গ	२	यावच्छन्देनौपपातिकग्रन्थप्रतिपादितः समस्तोपि वर्णकः आइन्तजणसमूहा" इत्या-
		दिको द्रष्टव्य:
पत्र	२	तस्यापि चैस्यस्य वर्णको वक्तव्यः स चौषपातिकग्रन्थादवसेयः
<b>ए</b> त्र	२	तस्य राज्ञः तस्याप्त्व देव्या औषपातिकप्रन्थोक्तो वर्णकोऽभिधातव्यः
पत्र	₹	समवसरणवर्णनं च भगवत औषपातिकग्रन्यादवसेयम्
पत्र	3	"बहवे उग्गा भोगा" इत्याद्यीपपातिकग्नन्थोवक्तम्
पत्र	३	अत्र यावच्छन्दादिदमौषपातिकग्रन्थोवतं द्रष्टव्यम्

#### ₹

				<b>`</b>
12		,,		चिरातीतमित्यादिर्वणंकस्तत्परिक्षेपि वनधण्डवर्णंकसहितऔपपातिकतोऽवसेय:
<b>, 1</b>		**		<i>''व</i> ण्णओ'' त्ति अत्र राजे( ''म <i>ु</i> य₁ि्मवन्तमहन्ते'' त्यादिको <b>राज्ञायच ''सुकु</b> -
				मालपाणिपाये'' त्यादिको वर्णकः प्रथमोपाङ्गप्रशिद्धोऽभिधातव्यः
.,		,1		यथा च समवसरणवर्णकं तथौपपातिकश्रन्थादवसेयं
,,		,,		"त <b>ए णं मिहिलाए णयरीए सिघाडगे" त्यादिकं</b> "जाव" पंजलिउडा पञ्जुवासंती"
				ति पर्यन्तमौपपातिकगतमवगन्तव्यम्
				एवोपाङ्गाद <b>वग</b> न्तव्यमिति
যা০	वु०	पत्र	१४३	"यथौपपातिके" एवं यथा प्रथमोपाङ्गे <del>***</del> ****** निपातः, औपपाति <b>क-</b>
	~			गमस्चार्य
হাত	ৰু০	থঙ্গ	१५४	यथौपपातिके सर्वोऽणगारवर्णकस्तथाऽत्रापि वाच्य:
যা৹	नू०	प <b>त्र</b>	१५५	कियद्यावदित्याह
	-			संग्राह्यः "अष्पेगइया दोमासपरिआया" इत्यादिकः औषपातिकग्रन्थो विस्तर-
				भयान्न लिखित इत्यवसेयम्
হ্যা ০	वृ०	पत्र	રદ્દ૪	एव <b>मुक्त</b> कमेण औषपातिकगमेन-प्रथमोपाङ्गगतपाठेन ताबद् वक्तव्यं यावत्तस्य
	-			राज्ञ: पुरतो महाश्वाः

#### जंबद्दीवपण्णत्ती वृत्ति

,,

যাতে বৃত ঘঙ্গ १४

11

२।६५	एवं जाव णिम्मच्छइ जहा ओववाइए जाव आउलबोलबहुलं
<b>२</b> ।ऽ३	एवं जहा ओधवाइए रुच्चेव अणगारवण्णओ जाव उड्ढं जाणू
<b>३।१७</b> ⊏	एवं ओववाइयगमेणं जाव तस्स

"वण्णओ" ति ऋखस्तिमितसमृढा इत्यादि

औषपातिकोपाङ्गप्रसिद्धः समस्तोपि वर्णको द्रष्टव्यः

#### जंबहीवपण्णत्ती

- इत्यादिरूपा धर्मकथाऔपपातिकग्रन्थादवसेया पृ० २वव
- वक्तव्यम् । तच्च एवं
- "एवं जहा उबवाइए तहा भाणियव्वं" इति एवं यथा श्रौपपातिके अन्धे तथा पृ० ११६

t۳

#### चंद्रपण्णत्ती हस्तलिखित वृत्ति

- पत्र ५ औपपातिकग्रन्थप्रसिद्धः समस्तोपि वर्णको द्रष्टव्यः स च ग्रन्थगौरवभयान्नलिख्यते केवलं तत एवौपपातिकादवसेयः
- पत्र ५ औपपातिकग्रन्थोक्तो वेदितव्यः
- पत्र ५ तस्य राज्ञस्तस्याश्च देव्या औपपातिक ग्रन्थोक्तो वर्णकोऽभिधातव्यः
- पत्र ४ समबसरणवर्णनं च भगवत औपपातिकग्रन्थादवसेयम्
- पत्र ६ "बहवे उग्गा भोगा" इत्याद्यौपपातिकग्रन्थोक्त सर्वमवसेयम्

उवंगा

- १।१४१ जहा दढपइण्णो
- २।१२ जहा दढपइण्णो

#### दसाओ

- १०।२ रायवण्णओ एवं जहा ओववातिए जाव चेल्लणाए----१०।१४-१६ सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं उववाइयगमेणं नेयव्वं जाव पज्जु-
  - वासइ----

#### दसा. हस्त. वृत्ति

- वृत्ति पत्र ११ अोपपातिकग्रन्थप्रतिपादितः रूमस्तोपि वर्णको वाच्यः स चेह ग्रंथगोरवभयान्न लिख्यते केवलं तत एवोपपातिकादवसेयः । दसा. ४।४
- द० ४१४ ह०वु० पत्र ११ चैत्यवर्णको भणितव्यः सोप्यौपपातिकग्रन्थादवसेयः
- द० शह् बु० पत्र ११ औपपातिकोक्तं पाठसिद्धं सर्वमवसेयं.....
- द० १०।२ ह०व० पत्र २५ "तस्य वर्णको यथा औषपातिकनाम्नि ग्रन्थेऽभिहितस्तथा"
- द० १०१२ ह०व० पत्र २५ विस्तरव्याख्या तूपपातिकानुसारेण वाच्या-
- द० १०।३ ह०वृ० पत्र २५ आदिकरः यावत्करणात् ......समस्तो औषपातिकग्रन्थप्रसिद्धो .....केवल-भौषपातिकग्रंथादवसेयः—
- द० १०।६ ह०वृ० पत्र २६ जावत्ति यावत्करणःत् जणवूहेइ वाः भोगाः भोगाः इत्याद्योपपातिक-ग्रन्थोक्तम् —
- द० १०1१४.१९ ह०वृ०पत्र २८ उववातियगमेणीति औपपातिकग्रंथोक्तकौणिकवंदनगमनप्रकारेणाय-मपि निर्गतः
- द० १०।२१ ह०वृ० पत्र २९ इहावतरे धर्म्यकथा औपपातिकोक्ता भणितव्या

#### अन्य आगमों में ओवाइयं के सूत्र :---

ओवाइयं	भगवई	राय०	<b>জঁ</b> ৰু ০
सू० ३२	२४।५४६-४६३		
सू० ३३	२४।५६४-५६६		
सू० ३६	२४।४७६-४७१		
सू० ४०	२४।४५२-४६५		

ओवाइयं	भगवई	राय०	जंबु०
सू० ४३	२४१६००-६१२		
सू॰ ४४	२४1६१३-६१०		
सू॰ ६४	81508	सू० ४६-५५	<b>२। १</b> ७न
सू॰ ६४			<b>१</b> ।१८०
सू॰ ६६			રા≹૭€

#### समर्पण सूत्र

संक्षिप्त पद्धति के अनुसार औपपातिक में समर्पण के अनेक रूप मिलते हैं :----

```
जाव-उदए जाब कोणे (११७)
```

```
एवं जाव-अपडिविरया एवं जाव (१६१)
```

सेसं तं चेव---परलोगस्स अगराहगा सेसं तं चेव (१४७)

एवं--एवं उवज्मायाणं थेराणं (१६)

अभिलावेणं-एवं एएणं अभिलावेणं (७३)

एवं तं चेव—सगडं वा एवं तं चेव भाणियव्वं जाव णण्णत्थ गंगामट्टियाए (१२३)

```
भाणियब्वं—एवं चेव पसत्यं भाणियव्वं (४०)
```

कंदमंतो एएसि वण्णओ भाणियव्वो जाव सिविय (१०)

णेयव्व--- त चेव पसत्यं णेयव्व । एव चेव वइविणओ वि एएहि पएहि चेव णेयव्वो (४०)

#### शब्दान्तर और रूपान्तर

व्याकरण और आर्थ-प्रयोग-सिद्ध शब्दान्तर एवं रूपान्तर भाषा-मास्त्रीय अध्ययन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं । इसलिए उन्हें पाठान्तर से पृथक् रखा है ।

सूत्र	8	कु <b>रकु</b> ड	कुंकड	<b>(</b> ख)
,,	8	°मुसुंढि°	°मुसढि°	(न) (फ,ख)
37	१	ेवक	°व <sup>ॅ</sup> वक	<b>(</b> ग)
11	٤	°भत्त°	°हत्त °	(布)
.,	8	°कीला°	°खीला°	(न,ख)
"	8	°तुरग°	°तुरंग°	(雨) (雨)
,3	ę	द रिसणिज्जा	दरिसणीया	(क,ख)
"	२	कालागरु	कालागुरु⁰	्(क <b>)</b>
	२	°कहग°	°कहक°	्षः) ( <b>क</b> , ख, ग)
#	8	°निकुरं <b>ब</b> भूए	°णिउरंबभुए	(स, थ, स) (ख)
,,	¥	दरिसणिज्जा	<b>दर</b> सणिज्जा	(अ) (क,ख)
,,	X	गु <b>ल</b> इय	गुलुइय	(क)
सू <b>त्र</b>	Ę	अर्बिभतर <sup>०</sup>	अब्भंतर°	(•) (क)
n	द्	बाहिर	बहिर	(ग)
41	3	णीवेहि	णितेहि	( <b>下</b> )

	93	° जाजिश्य 'ज ''	**	
	₹ <b>₹</b>	*हलधर* *====	<b>'हल</b> हर'	(ૡ <u>)</u>
**	35	'हण् <b>ए</b>	*हणूए	(ক)
\$7	38	भुयगोस <b>र</b> °		(क, ख, ग)
n	28	लकरंडुय°	<b>अकरंदु</b> य <sup>*</sup>	(क, ख)
**	<b>?</b> £	ి చెల్లా క	*य∎*	(ष्)
"	te	गुप्फे	*गोफे*	(ग)
33	4E	*वीढेणं	°पीडेणं	(ক, অ)
<b>3</b> 1	२१	जया	जदा	(ক)
n	२६	आयावाया	अदावाया	(ग)
";	२६	प <b>रवा</b> या	परवादा	(ग)
	<b>२१</b>	ओमोयरिया	अ <b>व</b> मोयरिया	(वृ)
,,	રર	बारस <b>भत्ते</b>	बारसमभत्ते	(क)
			बारसमेभत्ते	(ग)
"	१२	चउद्स'	चोद्सम*	( <b>क</b> , ख)
			चोद् <b>स</b> मे	(ग)
**	₹२	सोलस⁴	सोलसम'	(ফ, অ)
			सोलसमे'	(ग)
,,	३२	चउमासिए	<b>भउम्मा</b> सिए	(ख)
	<b>२</b> ३	*मोइत्ति	भोईति	(प) (ग)
1) 1)	₹¥	दव्वाभि	दव्वभि*	(५) <b>(</b> क)
 11	80	एंतस्स	इंतस्स	(ए) (ग)
,,	83	*पउत्ते	*पजुत्ते	(ग) (ग)
**	83	उसण्प	बोसल्प"	(क, ग)
	<b>X</b> ₹	र्क्ह	•रुयी	(ज, प) (ग)
"	88	े - दरिसणाव रणिउज°	दंसणाव <b>रणी</b> य	
<i>n</i>	૪૬	°वीची°	°वीती°	( <sup>1</sup> )
'n	°ૡ ૪૬	रोयपट्ठ'	*तोय <b>व</b> ट्ठ'	(ग) (क)
33	YE	*वण्णिय*	*পতিপ্বশ	(क) (म)
"	X0	विहरसती	वहस्यती	(ग) (ग)
37	×٠ ۲	'तिरीड <b>धारी</b>	<b>*हरप्र</b> ता * <b>किरीडधा</b> री	(ग) (म)
11 77		महप्पत्वं	महाफल महाफल	· · /
8	ৰ ২২	गरगण	गतगता	( <b>फ</b> , ख, ग)
**	7.2 7.2		गतगत। पच्चोरुभंति	(क) (म)
"	X.3	पच्चोरुहंति पानिमन्द्रपानिमन्द्रपत		(ग)
37	<u>५</u> ५	पाडियक्कपाडियक्काइं जननेन नहि		डेएक्काइं(ख)
*	2E	पक्षोय-लट्टि	पतोद-लर्डि जापेल प्रॉन	(ক) (ল)
			पयोत्त-सट्टि	( <b>T</b> )

Jain Education International
------------------------------

;;	<b>د</b> و	वेयणिज्जं	वेदणिज्जं	(क, ग)	
IJ	٤٥	से जे	सेज्जे	(क, ख)	
,,	६२	से जाओ	सेज्जाओ	• •	
,,	<b>E</b> २	*उरियाओ	°पुरियाओ		
,,	EX	कुक्कुइया	कोकुइया	(ख,ग)	
,,	દહ	*अहट्वण		(क,ख,ग)	
n	<b>१</b> ०४	अलाउ°	लाउ°	(ग)	
;;	<b>१ १</b> ७	<b>च</b> रिमेहि	चरमेहि	(क)	
11	१४८	°वेंटिया	°वंटिया	(ख)	
**	328	भूइ	भूई°	(क,ख,ग)	
,,	<b>१</b> ६४	अणगारा	अणकारा	(क, ग)	
,,	१७०	तेल्ला°	तिल्ल° (क)	; तेल" (ख)	
11	<b>২</b> ৬২	वयै	वइ°	(क, ख, ग)	
$\overline{n}$	X38	गा. १ पइट्ठिया	पत्तिट्टिया	(क,ख)	
प्रति-परिचय					
(क) यह प्रति 'श्रीचन्द गणेशदास गधैया पुस्तकालय', सरदारशहर से श्री मदनचन्द जी गोठी					
द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र ४० तथा पृष्ठ ८० है। प्रत्येक पत्र ११।।। इन लम्बा तथा ४।। इन चौड़ा					
है। प्रत्येक पत्र में ४ से १३ तक पंक्तियां हैं। प्रत्येक पंक्ति में ४० से ४६ तक अक्षर हैं। पत्र के					
বা	चारों ओर सूक्ष्माक्षरों में टीका लिखी हुई है। प्रति सुन्दर, कलात्मक तथा पठित मालूम होती है।				
प्रति के अंत में लेखक की निम्तोक्त प्रशस्ति है					

प्रति के अत में लेखक की निम्नोक्त प्रशस्ति है :----

इति श्री उववाईसूत्रं समाप्तं ॥ ग्रन्थ ११६७ ।।छ।। संवत् १६२३ वर्षे फाल्गुन सुदि ३ दिने । आगरा नगरे। पातिसाह श्री अकबर जलालदीन राज्य प्रवर्त्तमाने॥ श्री बृहत् खरतर पूज्यराज श्री ६ जिनसिंघसूरिविजयराज्ये पंडित गच्छालकार श्री श्रीलव्धिवर्द्धन

अन्भंगेहि

°सुसलिट्ट°

°वीजियंगे

कूतुयग्गहा

°सर्विकणी°

°तुरंगाणं

°मुदंग°

भट्टत्तं

°कुंच°

वज्ज°

°निकस°

°मिसमिसंत°

(希)

(ग)

(क)

(ग)

(ক)

(क)

(¶):

**(** क )

(ख)

(ख)

(ग, वृ)

(क, ग)

अन्भिगेहि

°सुसिलिट्ठ°

°**वी**इयंगे

कूवग्गाहा

°तुरगाणं

°मुइंग°

भट्टित्तं

°कोंच°

बइर°

°णिघस°

**स**खिखिणी°

°मिसिमिसंत°

६३

६३

६३

६३

६४

६४

६४

६७

६द

৩१

=२

۳२

Ħ

 $\mathbf{n}$ 

\*\*

,,

ю

,,

11

21

"

,,

"

,,

मुनिभिरुपपातिका नाम उपांगं लिखापितं ।।छ।। वाच्यमानं चिरं नद्यात् ।। शुभं भवतु लेखकवाचकयोः ।।श्री।।

(ख) यह प्रति 'श्रीचन्द गणेशदास गर्धया पुस्तकालय' सरदारशहर से श्री मदनचन्दजी गोठी द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र ४६ तथा पृष्ठ ११८ है। प्रत्येक पत्र १०। इंच लम्बा ४। इंच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में पाठ की ७ से ६ तक पंक्तियां हैं। प्रत्येक पंक्ति में ४० से ४५ तक अक्षर हैं। पाठ के ऊपर-नीचे दोनों ओर राजस्थानी भाषा का अर्थ है। प्रति के अन्त में लेखक की निम्नोक्त प्रशस्ति है:---

श्री उवाई उपांग पढमं समत्तं ॥ गंथाग्रं १२२५ ॥ ॥छा। ॥श्री॥ ॥ संवत् १६६५ वर्षे पोष मासे जुक्लपक्षे सप्तमी तिथौ श्री सोमवारे । श्री श्री विक्रम नगरे । महाराजाधिराज महाराजा श्री रायसिंहजी विजयराजे पं० कर्म्मसिंह लिपीक्वता ॥छा।

(ग) यह प्रति 'श्रीचन्द गणेशदास गधैया पुस्तकालय' सरदारशहर से श्री मदनचन्दजी गोठी द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र २६ तथा पृष्ठ ४२ हैं। प्रत्येक पत्र १०॥ इंच लम्बा तथा ४० इंच चौड़ा है। प्रत्येक पंक्ति में १४ पंक्तिया तथा प्रत्येक पंक्ति में ४६ से ४५ तक अक्षर हैं। प्रति के अन्त में हैं---उवाईयं समत्तं ॥ प्रन्थाग्र १२०० शुभमस्तु ॥छा। श्री ॥ लिखा है किन्तु संवत नहीं दिया है। पर पत्र, अक्षर तथा चित्रों के आधार से यह प्रति १७ वीं शताब्दी की होनी चाहिए ।

(वृ) हस्तलिखित वृत्ति की प्रतिः यह आधिम्द गणेगदास गर्धया पुस्तकालय', सरदारशहर से श्री मदनचन्दजी गोठी द्वारा प्राप्त है। इसकी पत्र संख्या ७५ तथा पृष्ठ १५० हैं। प्रत्येक पत्र में १३ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ५५ से ६० तक अक्षर हैं। प्रति १०। इंच लम्बी तथा ४। इंच चौड़ी है। प्रति शुद्ध तथा स्पष्ट है। अंतिम प्रशस्ति में लिखा है ---

शुभं भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥ लेखकपाठकयोश्च भद्रं भवतु ॥छा।

संवत् १९१६ वर्षे मार्गशीर्षं सुदि भोमे लिखितं ।।छा। श्रीः ।।

यादृशं पुस्तके दृष्ट्वा ॥ तादृशं जिखितं मया ॥ यदि शुद्धमशुद्धं वा ॥ मम दोषो न दीयते॥ छ ॥छ॥

#### (वृ०पा०) वृत्ति-सम्मत पाठान्तर

कुछ विशेष-हस्तलिखित वृत्ति तथा मुद्रित वृत्ति में वाचनान्तर पाठ सदृश नहीं है । हमने मूल आधार हस्तलिखित वृत्ति को माना है ।

#### रायपसेणियं

प्रस्तुत सूत्र का पाठ-निर्णय हस्तलिखित आदर्शों तथा वृत्ति के आधार पर किया गया है। सूर्याभ के प्रकरण में जीवा जीवा भिगम और दृढप्रतिज्ञ के प्रकरण में औपपात्तिक सूत्र का भी उपयोग किया है। वृत्तिकार ने स्थान-स्थान पर वाचना भेद की प्रचुरता का उल्लेख किया है। वृत्तिकाल में पाठभेद की समस्या उग्र थी, उत्तरकाल में वह उग्रतर हो गई। फिर भी हमने उपलब्ध साधन-सामग्री का सूक्ष्मेक्षिकया प्रयोग कर पाठ निर्धारण किया है। अधिकार की भाषा में कोई नहीं कह सकता कि यह पाठ-निर्धारण सर्वात्मना युटि रहित है, किन्तु इतना कहा जा सकता है कि इस कार्य में तटस्थता और धृति का सर्वात्मना उपयोग किया गया है।

प्रस्तुत सूत्र को पाठपूर्ति अत्यन्त अम साध्य हुई है। पाठपूर्ति से सूत्र का भरोर बृहत् हुआ है। साथ-ही-साथ पाठ-बोध की सुगमता और कथावस्तु की सरसता बढ़ी है।

#### शब्दान्तर और रूपांतर

थ्याकरण और आर्ष-प्रयोग-सिद्ध गव्दान्तर एवं रूपान्तर भाषा शास्त्रीय अध्ययन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं; इसलिए उन्हें पाठान्तर से पृथक् **र**खा है।

	-			
सूत्र संख		मउड	मतुड	(क)
**	5	°धेयं	<sup>°</sup> घे <b>ज्ज</b>	(क)
"	3	णाइ°	णादि <sup>०</sup>	(क,ख,ग,च)
"	f o	<b>उकि</b> हाए	ओ <b>किट्ठाए</b>	(छ)
**	१२	षट्ठे	वट्ठे (ख,ग);	मट्ठ (च)
,,	१३	णाइय		,ख,ग,घ,च,छ)
13	१४	हंत	हंद	(च)
"	१५	अभिवंदए	अभिवंदते	(ন্ত)
"	२४	आयंस <sup>°</sup>	<b>कातं</b> स°	(घ,च)
11	ইও	ਸਿਤ°	मउ°	(क,ख,ग)
п	ইও	पासाईए	पासातीए	(क,ख,ग,घ)
i)	४०	वतीव	अतीत	(च)
17	ሄፍ	तिसो <b>वा</b> ण°	तिसोमाण°	(क,ख,ग,च)
,,	XĘ	महालतेणं	महालएणं	(ख,ग,घ)
	<b></b>	वेमाणिएहि	<b>वेमाणि</b> तेहि	(क,ख,ग,घ)
**	37	<b>वि</b> रचिय	विरतिय	(क,ख,ग,च)
"	৬१	<sup>°</sup> वायाणं	वाइयाणं	(क,ख,ग,छ)
			वाययाणं	(घ)
**	૭૪	ओणमति	तोन <b>मं</b> ति	(क,च)
n	७६	मच	मिच	(क्वचित्)
n	99	"टागं	°ताणं	(क,च,छ)
**	११८	मत्थए	मत्थते	(क,ख,ग,घ)
"	११५	जएणं विजएणं	जतेण विजतेण	(क,ख,ग,घ)
"	858	ब <i>हु</i> ईओ	बहुगीओ	(क,ख,ग,घ)
			बहुगीतो	(च,छ)
ю	358	दार°		ज,ख,ग,च,छ; )
			बार	(घ)
"	१३०	*कवेल्लुयाओ	<b>क</b> वेलुयातो	(क,ख,ग,घ)
"	2 <b>5</b> 3	संकलाओ	संखलाओ	( क्वचित्)
11	१३७	पगंठगा	पकंठगा	(घ,च)
n	१५४	साए पहाए पएसे	साते पहाते पते	र भाषा । से (क.ख.ग.छ
				ন্দ্র ( প্রেয়ণ, ব,ন্ত)
				.,-,

	328	सन्वोउय°	सव्वोउत° ( <b>क,ख,ग,</b> घ)
11	१७३	धिगढ	°विनद्ध° (घ)
"	१७२	নিতাম	तित्थाण° (क,ख,ग,घ,च,छ)
11			(
"	१८४	आईणग	आदीणग (क,ख,ग,घ)
11	3=8	उड्ढ	उद्धं (क)
,,	१९७	*वेइया	°वेतिया (क,ख,ग,घ,च,छ)
11	038	फलएसु	°फलतेसु (क,ख,ग,घ,च,छ)
79	385	तआ	तगो (क); ततो (छ)
11	२२६	ींबटा	°बेंटा क,ख,ग,छ; बेठा (च)
31	२४५	सुविरइ₊रयत्ताणे	सुइरइ-रइत्ताणे (क,ख,ग,घ,छ)
	२६२	कड्रुच्छ्यं	कडुच्छ्यं (क,ख,ग,घ)
12	<b>६</b> १४	चरियासु	चलियासु (क,ख,ग)
	<b>६</b> ६४	पीय"	पील° (क,ख,ग)
tı.	ई. द	*बिद*	°वंद° (घ)
**	<b>হ্</b> নাও	°वूहे	'पूहे (क,ख,ग)
"	<b>સ્</b> દ્ય	°परिभाइत्ता	परिभागेत्ता (क,ख,ग,घ,च,छ)
17	90Ę	कोट्ठयाओ	कोट्ठाओ (क,घ)
,2	७२०	अगिलाए	अइलाए (क,च)
	७४४	अओ '	अयो°(क,ख,ग); अय° (घ)
n	હષ્દ્રશ	भिच्चा	भेच्चा (घ)
	७६०	किसिए	कसिए (क,ख,ग,घ,छ)
,,	<b>૭૭ શ</b>	वाउकायस्स	वाउयागस्स (क,ख,ग,घ,च,छ)
"	७८७	भिक्खुयाणं	भिछुयाणं (घ, च)
21	988	°ट्वओगेण	प्पयोगेण (घ)

ξŞ

#### प्रति-परिचय

(क) यह प्रति सरदारशहर श्वीचन्द गणेशदास गर्थया पुस्तकालय' से प्राप्त है। इसके ४९ पत्र तथा ६ पृष्ठ हैं। प्रत्येक पत्र की लम्बाई १०॥ इंच तथा चौड़ाई ४॥ इंच हे। प्रत्येक पत्र में १३ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ५० से ५५ तक अक्षर है यह प्रति वि० सं० १६७१ की लिखी हुई है। इसकी पुष्पिका निम्नोक्त है----

जमो जिणाणं जियभयाणं णमःसुय देवयाए भगवईए णमो पण्णत्तीए भगवईए णमो भगवओ अरहओ पासस्स पस्से सुपस्से गरसंवणीणभंए । छः रायपसेणइयं समत्तं । छ । ग्रंथाग्रं २०७९ समयित-मिदं सूत्रं छ संवत् १६७१ वर्षे भाद्रवा सुदि ११ ।

आगे भी पश्चिका है पर उस पर हड़ताल फोरी हुई है।

(ख), (ग) पत्र क्रमशः ४४, ६१। ये दोनों प्रति 'क' प्रति के सदृश ही हैं ।

(घ) यह प्रति 'यति कवकचन्दजी' पाली (मारवाड़) की है। इसके पत्र ४४ व पृष्ठ १०८ हैं।

प्रत्येक पत्र की लम्बाई १०॥ इंच व चौड़ाई ४॥ इंच हैं। प्रत्येक पत्र में १३ पंक्तियां व प्रत्येक पंक्ति में ४६-४८ अक्षर हैं। यह प्रति विव्संव १४६६ की लिखी हुई है। प्रति के अन्त में निम्न पुष्पिका है----

।।छा। शुभं भवतु लेखकपाठकयोः श्री संघस्य च । सं १५६६ वर्षे चैत्र सुदि २ तिथौ अद्येह श्रीमदणहिल्लपत्तने श्री वृहत्खरतरगच्छे श्रीवर्धमानसून्सिताने श्री जिनभद्रसूरिपट्टानुकमेण श्री जिन-हंससूरिराज्ये वाचनाचार्यजयाकारगणिशिष्य वा० धर्मविल।सगणिवाचनार्थं भ० वस्तुपालभार्यया लीली श्रावकया । पुत्ररत्न भ० सालिगपुमुखपरिवार स श्रीकया सू श्रेयार्थ च लेखितं श्री राजप्रश्नीयोपांगं ।

(च) यह प्रति पूनमचन्द बुद्धमल दुधोड़िया, छापर (राजस्थान) के संग्रह से प्राप्त है। इस प्रति के ४२ पत्र तथा =४ पृष्ठ हैं। प्रत्येक पत्र की लम्बाई १२ इंच तथा चौड़ाई १ इंच है। प्रत्येक पत्र में ११ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ४= से १४ तक अक्षर हैं। प्रथम दो पत्रों में २ चित्र है। लिपि सुन्दर पर अशुद्धि बहुल है। यह प्रति अनुमानित सोखहवीं शताब्दि की है।

(छ) यह प्रति भी उपरोक्त दुधोड़िया, छापर (राजस्थान) के संग्रह से प्राप्त है इस प्रति के पत्र ४१ व पृष्ठ ५२ हैं। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ५७ से ६० अक्षर हैं। लिपि साधारण पर शुद्ध है। अन्त में लिखा है---लिपि सं० १६६५ वर्षे कार्तिक मासे शुक्ल पक्षे सप्तमी शुके बब्बेरकपुरे पं० लब्धि कल्लोलगणिनालेखि।

(वृ) यह प्रति 'श्रीचन्द गणेशदास गर्धया पुस्तकालय' सरदारशहर से प्राप्त है। इसके १२ पत्र तथा १०४ पृष्ठ हैं। प्रत्येक पत्र की लम्बाई १०॥ इंच तथा चौड़ाई ४॥ इंच है। प्रत्येक पत्र में १७ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ६४ से ७० तक अक्षर हैं। यह प्रति वि० सं० १६०५ में लिखी हुई है। इसकी पुष्पिका निम्नोक्त हैं---

इति मलयगिरिविरचिता राजप्रश्नीयोपांगवृत्तिका समर्थिता ॥ समाप्तमिति । प्रत्यक्षरगणनयः ग्रन्थाग्रं ॥छ॥ ॥छ॥ प्रत्यक्षर गणनातो ग्रन्थमानं विनिधिचतं । सप्तत्रिंशत्त्वतान्यत्र । श्लोकानां सर्व संख्ययाः ॥छ॥ ग्रन्थाग्रं श्लोक ३७०० ॥छा। श्री ॥ संवत् १६०५ वर्षे श्रावण सुदि १३ भौमे पत्तन वास्तव्यं ॥ पं० रद्रासुत्जिगनाथ लिखितं ॥ शुभं भवतु ॥

#### जीवाजीवाभिगमे

प्रस्तुत सूत्र का पाठ निर्णय हस्तलिखित आदर्शो तथा वृत्तिके आधार पर किया गया है।

मलयगिरि की वृत्ति प्राचीन आदर्श के आधार पर निर्मित है इसीलिए ताडपत्रीय आदर्श और वृत्ति का पाठ समान चलता है। इस विषय में ३।२१८, ४५७, ५७८, ८२६ सूत्र तथा इनके पाद टिप्पण द्रष्टव्य है। अर्वाचीन आदर्शों में पाठ का इतना बड़ा अन्तर मिलता है यह बहुत ही विमर्शनीय और अन्वेषणीय है।

जीवाजीवाभिगम के आदर्शों में गाठ की एक समानता नहीं उही है इसकी सूचना जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति के वृत्तिकार शान्तिचन्द्र ने भी दी है।

#### १. जम्बुद्वीपप्रज्ञपति वृत्ति यत्र १०=-

अत्र चाधिकारे जीवाभिगमसूत्रादशॅ क्वचिदधिकपदम् अपि दृश्यते तत्तु वृत्तावत्याख्यातं स्वयं पर्यालोच्यमानमपि न नार्थप्रदमिति न लिखितं, तेन तत् सम्प्रदायादवगन्तव्यं, तमन्तरेण सम्यक् पाठशुद्धेरपि कर्त्तुमशक्षत्वादिति । उपाध्याय शान्तिचन्द्र ने कल्पचृक्ष के विवरण का पाठ जीवाजीवाभिगम से उद्धृत किया है। चतुथं कल्पचृक्ष के स्वरूप वर्णन में उन्होंने 'कणग निगरण' पाठ उद्धृत किया है। उसका अर्थ किया है सूवर्ण राशि। 'जीवाजीवाभिगम की वृत्ति में 'कणग निगरण' पाठ व्याख्यात है—-''कनकस्य निगरणं कनकनिनगरणं गालितं कनकमिति भावः। 'जिपि-परिवर्तन के कारण पाठ परिवर्तन हुआ है। आदशों में 'कूडागारट्ठ' पाठ मिलता है। मुद्रित तथा हस्तलिखित वृत्ति में भी 'कूटागाराद्यानि' पाठ उपलब्ध होता है।

अचार्य मलयगिरि ने आदर्शगत पाठभेद का स्वयं उल्लेख किया है। वृत्तिकार ने जिन गाथाओं को अन्यत्र कहकर उद्धृत किया है। अर्वाचीन आदशों में वे गाथाएं मूल पाठ में समाविष्ट हो गई।

वृत्ति में जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति की टीका का उल्लेख मिलता है। जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति के व्याख्याकार मलयगिरि के उत्तरवर्ती ही हैं। इसलिए यह उल्लेख प्रक्षिप्त है अथवा मलयगिरि के सामने उसकी कोई प्राचीन व्याख्या रही है यह अन्वेषण का विषय है।

कहीं कहीं वृत्ति में भी कुछ विमर्शनीय लगता है। 'सिरिवच्छ' पाठ की व्याख्या वृतिकार ने 'श्रीवृक्ष' की है। प्रकरण की दृष्टि से 'श्रीवत्स होना चाहिए।"

मूल टीकाकार और मलयगिरि के सामने पाठभेद तथा अर्थभेद की जटिलता रही है और व्याख्याकारों के समय में इस विषय में कुछ चर्चाएँ भी होती रही हैं। इस विषय में वृत्ति का एक उल्लेख बहुत ही ऐतिहासिक महत्त्व का है। वृत्तिकार ने लिखा है कि यह सूत्र विवित्र अभिप्राय बाला होने के कारण दुर्लक्ष्य है। इसकी व्याख्या सम्यक् सम्प्रदाय के आधार पर ही ज्ञातव्य है। सूत्र

१. जम्बूद्वीप वृ० प० १०२—"कनकनिकरः सुवर्णराक्षिः ।"

- २. जीवाजीवाभिगम वृ० प० २६७ !
- ३. जम्बूद्वीपप्रज्ञन्ति बु० प० १०७

बेलें जीवाजीवाभिगम ३। १९४ का पादटिप्पण ।

४. (क) जीवाजीवाभिगम वु० प ३२१

गइह बहुषा सूत्रेषु पाठभेदाः परमेतावानेव सर्वत्राप्यर्थी नार्थभेदान्तरमित्येतद्ध्याख्यानुसारेण सर्वेप्यनुगन्तव्या न मोग्षच्यमिति ।"

(ख) जीवा० वृ० प० ३७६

इह भूयान् पुस्तकेषु वाचनाभेदो गलितानि च सुत्राणि बहुषु पुस्तकेषु ततो यथाऽवस्थितवाध-नामेदप्रतिगत्यर्थंगलितसूत्रोद्धरणार्थं चैवं सुगमान्यपि विवियन्ते ।

- ४. जीवा वृ०प० ३३१, ३३३, ३३४ तथा ३१८२०, ८३०, ८३४, ८३७ के पादटिप्पण इष्टव्य हैं।
- ६. जोवाभिगम वृ०प० ३८२ व्यचिस्सिंहादीनां वर्णनं बृ्ध्यते तद् बहुष् पुस्तकेषु न दृष्टमित्युपेक्षितं अवध्यं चेत्तद्वयाख्यानेन प्रयोजनं र्तीह जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति टीका परिभावनीया, तत्र सविस्तरं तद् व्यांख्यानस्य क्वतत्वात् ।
- ७. जीवा जीवाभिगम वृ॰प॰ २७१---अ्त्रोबुक्षेणांकितं --लाङिछितम् वृक्षो येषां ते श्री वृक्षलाङ्छित वक्षसः''।

के अभिप्राय को जाने बिना मनमाने ढ़ंग से व्याख्या करना उनकी अवहेलना करना है।<sup>3</sup> सूत्र की आधातना या अवहेलना न हं। इस दृष्टिकोण ने पाठ और अर्थ की परम्परा को सुरक्षित रखने में काफी योग दिया है फिर भी बुद्धि की तरतमता और लिपिप्रमाद के कारण पाठ और अर्थ में परि-वर्तन हुआ है। पाठ को विविधता के कारण हमें भी पाठ के विधारण में काफी श्वम करना पड़ा है। पाठान्तर और उनके टिप्पणों से उसका बंकन किया जा सकता है।

'ता' संकेतित प्रति संक्षिप्त पाठप्रधान है, जैसे १:४१ सूत्र से -- "ताई भंते कि पुडाई आहारेति अपु गोयमा पुट्ठा णो अपु । अंगा णो अणोगा अणंतरे। णवरं अणूई पि आ बायराई पिआ उड्ढं वि इ आदि पि इ सविसए णो अविसए आणुपुटिंव णो अणाणुपुटिंव अव्छिट्टि वाघात प सिय तिविसि ष्क । नो बण्णतो काला नी संघतो सु २ उसतो नो फासहो तेति पाराणं विपरिणामेत्ता अपुब्व वण्ण गुण ष्क उप्पाएता आतसरीर क्षेत्रोगाढ़े पोग्गले सब्बप्पणताए आहारमाहारेति" ।

लिपि-दोप के कारण "कि तिदिसि के स्थान में "कतिदिसि" (क) । "ता' का अनेक जगह पाठान्तर नहीं लिया है, वहां पाठ बहुत संक्षिप्त है ।

818	जिणवखायं	जिणखायं (ख	a) जिणखातं (ता)
**	अणुवीइ	अणुवीतियं	(क,ख)
"	रो <b>एमा</b> णा	रोतमाणा	(ता)
<b>818</b> 8	संघयण	<b>सं</b> धतण	(तर)
**	सण्णाओ	सण्णातो	(क)
21	जोगुवओगे	जोगुवतरेगे	(क)
3118	कोहकसा <b>ए</b>	कोहकसाते	(ক)
8128	कण्हलेस्सा	<b>किण्ह</b> लस्सा	(ग,ट)
शरद	<b>आण</b> पाणु <sup>०</sup>	अ <b>ग्ण</b> प षा <sup>°</sup>	<b>(</b> 5)
<b>१</b> ।७२	छीर <b>विरा</b> लिया	छिरविरालिया (	क) छिरिविरालिया (ख;)

#### शब्दान्तर और रूपान्तर

#### १. जीवाजीवाभिगम बु०प० ४४० ---

"सूत्राणि ह्रामूनि विचित्राभिप्रायतथा दुलंक्ष्याणीति सम्यक्संप्रदायादवसातस्थानि, सम्प्रवायश्च यथोक्तस्वरूप इति न काचिदनुपपत्तिः, न च सूत्राभिप्रायमज्ञात्वा अनुपपत्ति रुद्भावनीया, महा-शातनायोगतो महाऽनर्थप्रसक्तेः सूत्रकृतो हि भगवन्तो अहीयांसः प्रमाणीकृताश्च महीयस्तरेस्त-त्कालवत्तिभिरन्यैविद्धद्भिस्ततो न तत्सूत्रेषु ननागप्यनुपपत्तिः, केवलं सम्प्रदायावसाये यत्नो विष्ठेयः ये तु सूत्राभिप्रायमज्ञात्वा यथा कथञ्चिद्धः नुपरतिमुद्भावयन्ते ते महतो महीयस्त प्रस्त त्वत्तेति दोर्घतरसंसारभाजः, आह च टीकाकारः - "एवं विचित्राणि सूत्राणि सम्यक्संप्रदाया-त्वत्तेति दोर्घतरसंसारभाजः, आह च टीकाकारः - "एवं विचित्राणि सूत्राणि सम्यक्संप्रवाया-दवसेयानोत्त्यचिज्ञाय तदभिभायं नानुपर्यात्त्वोदना कार्या, महाझातनायोगतो महाइनर्थंप्रसंगा-दिति" एवं च ये सम्प्रति दुष्यमानुभावतः अवचनस्योपप्लवाय धूमकेतव इवोश्थिताः सकलकाल सुकराध्यवच्छिन्तमुविधिमार्गानुष्ठादृसुविहितसाधुषु तस्तरिणस्तेऽपि वृद्घपरम्परायात्तसम्प्रदाया-दवसेयं सूत्राभिप्रायमपास्योत्सुत्रं प्ररूप्यत्ते नहाशातनाभाज प्रतिपत्तय्या अपकर्णयितय्याझ्च द्ररतस्तत्वविदिभिरिति कृतं प्रसङ्गेन" ।

		छिरियविरालिया (ग,ट); छीरवीराली (ता)
<b>१</b> ।७३	थीहू	धिभु (क)
21200	तहप्पगारा	तहप्पकारा (क,ख,ग,ट)
11202	दुआगडया	दुयागतिया (ग)
21226	आहारो	आधारो (ता)
RIXE	पलिओवमाई	पलितोवमाइ (क,ख,ग,ट)
राइ०	अब्भहियाइं	अव्भधियाइं (ग)
2198	फुफुअग्गि	फुंफअगिग (क); पुंफअग्गि (ग)
राहर	वासपुहत्तं	वासपुधत्तं (क); बासपुहुत्तं (ग,ट)
21281	एतासि	एतेसि (क,ख,ग,ट); एमासि (ता)
38815	वणस्सति°	वणाप्फइ" (क,ख,म)
रे।५	जोयण	जोतण (क)
રાદ્	आवबहुले	<b>अवबहु</b> ले (क); आ <b>वब</b> हुले (ता)
<b>स् ३</b>	अवाधाए	आबाधाए (क,ख,ट)
३।४८	जे णं इमं	जेणिमं (ता)
3193	असीडतर	आसीउत्तरे (ता)
રાખ્ય ક	अडहत्तरे	अडसत्तरी (ग); अट्ठुत्तरे (ता)
ee15	<b>किण्</b> हपुड	किल्णपुड (क.ग.)
द्वाद०	बाहल्लेण	पाहलेणं (ता)
8315	केरिसगा	केरि <b>स</b> ता <b>(</b> क,ख,ग)
3185	फुडित <sup>⁰</sup>	फुडिग* (ता <b>)</b> ; स्फुटित <sup>°</sup> (मवृ)
31 <b>88</b> 5	<b>उसिणवेदणि</b> ज्जेसु	उसुणवेदणिज्जेसु (ता)
3166z	विरचिय	विरइय (क,ग,ट)
31888	एगाहं	एकाहं (ख,ग,ट)
३।२३४	एत्थ	तत्थ (क,ख,ग,ट); यत्थ (ता)
३।३२३	जंबूणदमया	जंबुणतमया (क); जंबूणतामया (ग,ट,ता)
३।३७१	उ <b>व</b> गारियालयणे	अोवारियलयणे (क,ख,ग,ट,त्रि; )
		<b>उवकारि</b> यल <b>यणे</b> (ता)
३।३७२	खंभुग्गय	थंभुग्गय (क,ग)
३१४१२	धूबधडियाओ	धूमबडियाओं (क,ख)
₹1 <b>X</b> 1 <b>F</b>	<b>ओवि</b> य°	उब्वितिय (क,ख); उब्विदय (ग)
<b>३</b> ।७ <b>३३</b>	<b>बाया</b> लीसं	बादालीसं (ता)
<b>३।७</b> १०	t	वाताओसं (ता)
३।७४≍	केलासे	केतिलासे (ख); कइलासे (ग,ट,त्रि)
8301F	एगुणयालं	इऊयालं (क); ऊपालं (ख,ता;)
		इगुयालं (ग)

31065	इगयालीसं	एयालीसं (क,ख,ट);	एगयालीसं (ग)
		इतालीसं	(ता)
३।∽२€	ते <b>णट्</b> ठेणं	एएणट्ठेणं	(ग,त्रि)
३।८३८।१३	मणुस्ताणं	मणूसाणं	(ता)
312,80	<b>क</b> याइ	<b>क</b> दायी	(ता)
३। <b>८४१</b>	बलाहका	बलाहत।	(ता)
\$1=x\$	बादरे विज्जुक <b>रि</b>	वातरे विज्जुतारे	(ता)
	बादरे थणियसहे	वातरे थणितसद्दे	(ता)
३। <b>५४१</b>	नदीओइ वा णिहीति वा	णंदीति <b>वा णि</b> धयोति वा	(ता)
<b>३।</b> ५६०	सुप <b>क्</b> कखो <i>य</i> रसेइ	<b>सु</b> पिक्कखोत रसेति	(ता)
31500	खोदवरण्णं	खोय <b>व</b> रण्णं	(क,ख,ग,ट,त्रि)
38315	खोदसरिसं	खोतोदसरिस	(ता)
31865	<b>हे</b> ड्रिपि	हट्ठिपि (ग,ट,ता); हिंद्रपि	(বি)
818000	सन्वहेट्ठिल्लं	सव्वहेद्रिमयं	(ता)
३।१००७	सब्वोवरिल्लं	सम्बुप्परिल्लं	(क,ख,ट)
318000	सब्बब्भितरिल्लं	<b>स</b> व्यब्भंतर	(ता)
रा३७	णिओवा	णियोता	<b>(</b> ता)
XIXX	°णिओदजीवा	°णिगोदजीवा	(क,ख,ग,ट,त्रि)
પ્∖પ્≓	°णिओदजीवा	°णिओयजीवावि	(क,ख,ग,ट,त्रि)
\$ \$13	अणाइए	अणादीए	(ता)
2125	सकासाई	सकसादी	(ता)
85813	ओहिदंसणी	अवधिदंसणी	(ग,त्रि)
		ओधिदंसणि	(ता)
			• •

#### प्रति परिचय

#### (क) (मूलपाठ) पत्र ६४ संयत् १९७१ (हस्तलिखित)

यह प्रति श्रीचन्द गणेशदास गधैया पुस्तकालय सरदारशहर की है। इसके पत्र १४ व पृष्ठ १८८ हैं। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां हैं और प्रत्येक पंक्ति में ५३-५६ तक अक्षर हैं। इसकी लम्बाई १३। इंच द चौड़ाई ५ इंच है। यह अति सुन्दर लिखी हुई है। अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है---

संवत् १९७५ वर्षे आधिवनमासे कृष्णपक्षे त्रयोदभ्यां तिथौ भृगुवासरे पत्तननगरमध्ये मोढजातीय जोशी वीट्टलसुत लटकणलिखितम् ।छ।

यादृणं पुस्तके दृष्टं तादृशं लिखितं मया यदि शुढ़मशुढ़ं वा मम दोषो न दीयते ।।१।। शुभं भवत्, लेखक-पाठकयोः कल्पाणवस्तु छ । छ । श्री । श्री । छ । ग्रं० ५२००

#### (ख) (मूलपाठ) पत्र ५०

यह प्रति' पूर्वलिखित सरदारणहर की है। इसके पत्र म०व पृष्ठ १६० हैं। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां हैं और प्रत्येक रंक्ति में ६१ करीन अक्षर है। इसकी लम्बाई १२ इंच व चौड़ाई ४। इंच है। 'प्रति' प्राचीन है व बहुत जीर्ण है, अन्त में लिपि संवत् नहीं है परस्तु अनुमानतः १६ वीं शताब्दी की होनी चाहिए ।

#### (ग) (मूलपाठ) पत्र १० सचित्र

यह प्रति श्रीचन्द गणेशदास गर्धया पुस्तकालय की है। इसके पत्र ६० व पृष्ठ १०० हैं। प्रत्येक पत्र में १४ पंक्तियां है और प्रत्येक पंक्ति में ६३ करीब अक्षर लिखे हुए हैं। इसकी लम्बाई ११॥ इंच व चौड़ाई ४॥ इंच है। प्रति के आदि पत्र में तीर्थंकर देव की प्रतिमा का सुनहरी स्याही में सुन्दर चित्र है। प्रति बहुत सुंदर लिखी हुई है। 'प्रति' के मध्य 'बाबडी' व उसके मध्य लाल बिन्दु हैं।

इस प्रति के अन्त में पुष्पिकां व लिपि संवत् नहीं है परन्तु अनुमानतः १६ वीं शताब्दी की होनी चाहिए ।यह प्रति 'ताडपत्रीय प्रति' व टीका से प्रायः मेल खाती है ।

#### 'ता' ताडपत्रीय फोटो प्रिन्ट (जैसलमेर भण्डार)

यह प्रति टीका से प्रायः मिलती है। इसमें तीसरी 'प्रतिपत्ति' के १०५ सूत्र से ११५ सूत्र तक के पत्र नहीं हैं।

(ट) (टब्बा) लिपि संवत् १८०० यह प्रति संधीय ग्रन्थालय लाडनूं की है। यह प्रति कालू-गणी द्वारा पठित (पारायणकृत) है व उनके द्वारा स्थान-स्थान पर पाठ संघोधन भी किया हुआ है।

#### जीवाजीवामिगम टीका (हस्तलिखित)

यह प्रति 'श्रीचन्दजी गणेशदासजी गधैया' पुस्तकालय सरदारशहर की है। इसके पत्र २५० व पृष्ठ ५०० हैं। प्रत्येक पत्र में पंक्ति १५ अक्षर ६५ करीब है। लम्बाई १० x ४५ुँ लिपि सं० १७१७, प्रति की लिपि सुन्दर है।

#### सहयोगानुम्सि

जैन-परंपरा में वाचना का इतिहास बहुत प्राचीम है। आज से १४०० वर्ष पूर्व तक आगम की चार वाचनाएं हो चुकी हैं। देवर्दिगणी के बाद कोई सुनियोजित आगम-वाचना नहीं हुई। उनके वाचना-काल में जो आगम लिखे गये थे, वे इस लंबी अवधि में बहुत ही उव्यवस्थित हो गये हैं। उनकी पुनर्व्यवस्था के लिए आज फिर एक सुनियोजित वाचना की अपेक्षा थी। आचार्यश्री तुलसी ने सुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था, परन्तु वह पूर्ण नहीं हो सका। अन्ततः हम इसी निष्कर्ष पर पहुंचे कि हमारी वाचना अनुसन्धानपूर्ण, गवेषणापूर्ण, तटस्थदृष्टिसमन्वित तथा सपरिश्रम होगी तो वह अपने आप सामूहिक हो जाएगी। इसी निर्णय के आधार पर हमारा यह आगम-वाचना का कार्य प्रारंभ हुआ।

हमारी इस वावना के प्रमुख आचार्यश्री तुलसी हैं। वाचना का अर्थ अध्यापन हैं। हमारी इस प्रवृत्ति में अध्यापन-कार्य के अनेक अंग हैं---पाठ का अनुसंधान, भाषान्तरण, समीक्षात्मक अध्ययन, तुलनात्मक अध्ययन आदि-आदि। इन सभी प्रवृत्तियों में आचार्यश्री का हमें सक्रिय योग मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है। यही हमारा इस गुरुतर कार्य में प्रवृत्त होने का शक्ति बीज है।

मैं आचार्य की के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर भार-मुक्त होऊं, उसकी अपेक्षा अच्छा है कि अग्रिम कार्य के लिए उनके आगीर्वाद का शक्ति-संबल पा और अधिक भारी बनूं।

प्रस्तुत ग्रन्थ के ओवाइयं तथा रायपसेणियं के पाठ सम्पादन में मुनि सुदर्शनजी, मुनि मधुकरजी और मुनि हीरालालजी तथा जीवाजीवाभिगमे के पाठ सम्पादन में मुनि सुदर्शनजी और मुनि हीरा-

Education International

लालजी ने श्रम और निष्ठापूर्वंक योग दिया है। जीवाजीवामिगमे के पाठ सम्पादन में मुनि छत्रमल जी, मुनि बालचंदजी, मुनि हंसराजजी और मुनि मणिलाल जी का भी सहयोग रहा है।

अोवाइयं की शब्द सूची मुनि श्रीचम्दर्जी तथा रायपसेणियं और जीवाजीवाभिगमे की मुनि हीरालालजी ने तैयार की है। प्रूफ संशोधन के कार्य में मुनि सुदर्शनजी, मुनि हीरालालजी और साध्वी सिद्धप्रज्ञाजी व समणी क्रुसुम प्रज्ञा का सहयोग रहा है।

ओवाइयं तथा रायपसेणियं का ग्रन्थ-परिमाण मुनि मोहनलालजी "आमेट" ने तैयार किया है। इस ग्रन्थ के प्रथम दो परिशिष्ट मुनि हीरालालजी ने तैयार किए है। पाठ के पुर्नानरीक्षण के समय भी मुनि हीरालालजी विशेषतः संलग्न रहे हैं।

कार्य-निष्पत्ति में इनके योग का मूल्यांकन करते हुए में इन सबके प्रति आभार व्यक्त करता हूं।

आगमविद् और आगम संपादन के कार्य में सहयोगी स्व० श्री मदनचंदजी गोठी को इस अवसर पर विस्मृत नहीं किया जा सकता। यदि वे आज होते तो इस कार्य पर उन्हें परम हर्ष होता।

आगम के प्रबन्ध-सम्पादक श्री श्रीचन्दजी रामपुरिया/कुलपति-जैन विश्व भारती/प्रारंभ से ही आगम कार्य में संलग्न रहे हैं । आगम साहित्य को जन-जन तक पहुंचाने के लिए वे कृत-संकल्प और प्रयत्नशील है। अपने सुव्यवस्थित वकालत कार्य से पूर्ण निवृत्त होकर वे अपना अधिकांश समय आगम-सेवा में लगा रहे हैं। जैन विश्व भरती के अध्यक्ष खेमचन्दजी सेठिया और मंत्री श्रीचन्द बंगाणी का भी योग रहा है। संपादकीय और भूमिका का अंग्रेजी अनुवाद जैन विश्व भारती के अन्तर्गन अनेकान्त सोधपीठ के डायरेक्टर नय्यमल टॉटिया ने तैयार किया है।

एक लक्ष्य के लिये समान गति से चलने वालों की समप्रवृत्ति में योगदान की परम्परा का उल्लेख व्यवहार पूर्ति मात्र है। वास्तव में यह हम सबका पवित्र कर्तव्य है और उसी का हम सबने पालन किया है।

अध्यात्म साधना केन्द्र, महरोली अक्षय तृतीया १ मई, १९८८७ नई दिल्ली

---युवाचार्यं महाप्रज्ञ

भूमिका

```
प्रस्तुत पुस्तक का नाम उवंगसुत्ताणि है। इसमें बर्रह उपांगों का पाठान्तर तथा संक्षिप्तपाठ
सहित मूलपाठ है। इग्के दो खण्ड हैं। अथम खण्ड मे तोल उपांग हैं:---
१. ओवाइयं २. रायपसेणियं ३. जीवाजीवाभिगमे ।
द्वितीय खंड में नौ उपांग हैं---
१. पण्णवणा २. जंबुद्दीवपण्णत्ती ३. चंदपण्णत्ती ४. सुरपण्णत्ती
४. निरयावलियाओ [कप्पियाओ] ६. कप्पवडिसियाओ ७. पुण्फियाओ
६. दुप्फचूलियाओ [कप्पियाओ] ६. वण्हिदसाओ
प्राचीन व्यवस्था के अनुसार आगम के दो वर्गीकरण मिलते हैं ।
१. अंगप्रविष्ट
२. अंगबाह्य
```

उपांग नाम का दर्गीकरण प्राचीनकाल में नहीं था । नन्दीसूत्र में उपांग का उल्लेख नहीं है । उससे पहले के किसी आगम में उपांग की कोई चर्चा नहीं है । तत्वार्थभाष्य में उपांग का प्रयोग मिलता है । उपलब्ध प्रयोगों में सम्भवतः यह सर्वाधिक प्राचीन है ।<sup>1</sup>

#### अंग और उपांग की संबन्ध योजना

तत्वार्थभाष्य में उपांग शब्द का उल्लेख है, किन्तु उसमें अंगों और उपांगों का सम्बन्ध वर्चित नहीं है। इसकी चर्चा जम्बूढीपप्रज्ञप्ति की वृत्ति तथा निरयावलिका के वृत्तिकार श्रीचन्द्रसूरि द्वारा रचित सुखबोधा सामाचारी नामक ग्रन्थ में मिलती है। जम्बूढीपप्रज्ञप्ति की वृत्ति के अनुसार अंगों और उपांगों की सम्बन्ध-योजना इस प्रकार है:---

<b>ग्रं</b> ग	उपांग
आचारांग	<b>कौप</b> यातिक
सू <b>त्रकृतांग</b>	र <b>ाजप्रग्वी</b> य
स्थानांग	जीवा <b>जीवाभिगम</b>
समवायांग	प्रज्ञाप <b>वा</b>
भगवती	जम्बूढीप <b>प्रज्ञप्ति</b>

१. तत्त्वार्थभाष्य १/२० ः तस्य च महाविषवाचात्तांस्तानर्थानधिकृत्य

```
प्रकरणसामप्त्यपेक्षमंगोपांगनानात्वम् ।
```

```
२. सुखमोषा सामाचारी, पुष्ठ ३४ ।
```

ज्ञाताधर्मकथा उपासकदका अन्तक्रतदशा अनुत्तरोपपातिकदशा प्रस्तब्याकरण विपाकश्रुत दृष्टिवाद चन्द्रप्रज्ञप्ति सूर्यंप्रज्ञप्ति निरयावलिका [कल्पिका] कल्पावतंसिका पुष्पिका पुष्पिचूलिका वृष्णिदशा<sup>र</sup>

#### १. ओवाइयं

₹?

#### नाम बोध

प्रस्तुत आगम का नाम ओवाइयं [अपैपपातिक] है। इस का मुख्य प्रतिपाद्य उपपात है। समवसरण इसका प्रासंगिक विषय है। मुख्य प्रतिपाद्य के आधार पर प्रस्तुत सूत्र का नाम 'ओवाइयं' किया गया है। इसका संस्कृत रूप औपपातिक होता है। प्राकृत नियम के अनुसार वकार का लोप करने पर 'ओववाइय' का 'ओवाइय' रूप बन गया। नंदी सुत्र में यही नाम उपलब्ध होता है।

#### विषय-वस्तु

औषपातिक का मुख्य विषय पुनर्जन्म है। उपपात के प्रकरण में अमुक प्रकार के आचरण से अमुक प्रकार का आगामी उपपात होता है, यही विषय चर्चित है।

उपोद्धात प्रकरण में अनेक वर्णक हैं — नगरी वर्णक, चैत्य वर्णक, उद्यान वर्णक, राज वर्णक अर्थाद-आदि । इन वर्णकों से प्रस्तुत सूत्र वर्णक सूत्र बन गया । इन्हीं वर्णकों के कारण अनेक समर्पणों में इसका उपयोग हुआ है ।

#### व्याख्या ग्रंथ

औपपातिक का प्रथम व्याख्या ग्रन्थ नवांगी टीकाकार अभयदेवसूरिकृत वृत्ति है। उसके प्रारम्भिक श्लोक से यह ज्ञात होता है कि अभयदेवसूरि को इस वृत्ति से पूर्व कोई अन्य वृत्ति प्राप्त नहीं थी। उन्होंने अन्य ग्रन्थों का अवलोकन कर इसका निर्माण किया था। स्वयं उन्होंने लिखा है----

श्रीवर्द्धमानमानम्य, प्रायोऽन्यग्रन्थवीक्षिता ।

औपपातिकझास्त्रस्य, व्याख्या काचिद्विधीयते ।।

वृत्तिकार ने कुछ स्थलों पर पूर्वं ज आचार्यों के अभिमतों का उल्लेख भी किया है ----

१. स्तानाद्वा पाण्डुरीभूनगात्रा इति वृढाः [वृत्ति, पृ० १७१] ।

२. चूणिकारस्त्वाह | वृत्ति पृ० २२४ ]

३. अस्य च वृद्धो**क्त**स्थाधिकृतगाथाविवरणस्यार्थं भावार्थः । [वृत्ति, पृ० २२**१**]

#### १. जम्बूहीपप्रज्ञप्ति, शान्तिचग्द्रीया वृत्ति, पत्र १,२ ।

२. नन्दी, सूत्र ७६ ।

यह वृत्ति न बहुत विस्तृत है और न अति संक्षिप्त । इसके मध्यम आकार में विवेचनीय स्थल अधिकांशतया व्याख्यात हैं।<sup>3</sup>

प्रस्तुत सूत्र में वाचनान्तरों की बहुतता है। वृत्तिकार ने प्रथम सूत्र की व्याख्या में लिखा है---इस सूत्र में बहुत वाचनाभेद है। जो बुढिगम्य होगा उसकी मैं व्याख्या करुंगा। सम्भवत: इतने वाचनान्तर किसी अन्य सूत्र में प्राप्त नहीं हैं। यदि वृत्तिकार ने इनका संकलन नही किया होता तो ये लुप्त हो जाते।

वृत्ति के अन्त में त्रिश्लोकी प्रशस्ति है । उसने वृत्तिकार ने अपने गुरु श्री जिनेश्वरसूरि, चन्द्रकुल तथा रचनास्थल---अणहिलपाटकनगर और वृत्ति के संशोधक द्रोणाचार्य का उल्लेख किया है----

> चन्द्रकुल-विपुल-भूतल-युगप्रवर-वर्धमानकल्पतरोः । कुसुमोपमस्य सूरेः, गुणसौरभ-भरित-भवनस्य ॥१॥ निस्सम्बन्धविहारस्य सर्वदा श्रीजिनेक्वराह्वस्य । शिष्येणाभयदेवाख्यसूरिणेयं कृता वृत्तिः । २॥ अणहिलपाटकनगरे श्रीमद्द्रोणाख्यसूरिमुख्येन । पण्डितगुणेन गुणवत्त्रियेण संशोधिता चेयम् । ३॥

इसका दूसरा व्याख्या-ग्रन्थ स्तवक है। यह विक्रम की अठारहवीं काती का हैं। इसके कर्ता संभवत: धर्मसी मुनि हैं।

#### २. रायपसेणियं

#### नाम बोध

प्रस्तुत सूत्र का नाम 'रायपसेणियं' है। पं० बेचरदास दोशी ने प्रस्तुत सूत्र का नाम 'रायपसेणइयं' रखा है। उन्होंने सिद्धसेनगणी द्वारा उल्लिखित 'राजप्रसेनकीय' और मुनि चन्द्रसूरि द्वारा उल्लिखित 'राजप्रसेनजित' को इसका आधार माना है।'

प्रस्तुत सूत्र का सर्वाधिक प्राचीन उल्लेख नंदी सूत्र में मिलता है। वहां इसका नाम 'रायपसेणिय' है।' नंदी की चूणि और उसकी हरिभद्रसूरि तथा आचार्य मलयगिरि कृत वृत्तियों में इसकी व्याख्या नहीं है। आचार्य मलयगिरि ने प्रस्तुत सूत्र के विवरण में 'राजप्रश्नीय' नाम का उल्लेख किया है। राजा प्रदेशी ने केशीस्वामी से प्रश्न पूछे थे। प्रस्तुत सूत्र में उनका वर्णन है। अतः इसका नाम 'राजप्रश्नीय' है।'

```
१. औपपातिक, वृत्ति, पृ० २ : इह च बहवो वाचनाभेदा दृश्यन्ते, तेषु च यमेवावभोरस्यामहे तमेव
व्याख्यास्यामः ।
```

- २. रायपसेणइयं, प्रवेशक, पृ० ६,७ ।
- ३. नंदी, सू० ७७ ।
- ४. (क) रायपसेणिय वृत्ति, पृ० १ :

अय कस्माद् इदमुपाङ्गं राजप्रश्नीयाभिधानमिति ? उच्यते, इह प्रदेशिनामा राजा भगवतः केशिकुमारथमणस्य समोपे यान् जीवविषयान् प्रश्नानकार्षोत्, यानि च तस्मं केशिकुमारश्रमणो गणभूत् व्याकरणानि व्याक्वतवान् ।

(ख) रायपसेणिय वृत्ति, पृ० २ राजप्रदनेषु भवं राजप्रदनीयम्।

विषय-वर्णन की दृष्टि से मलयगिरि की व्याख्या उचित है और उसके आधार पर उनके द्वारा स्वीकृत नाम भी अनुचित प्रतीत नहीं होता, किन्तु शब्दशास्त्रीय दृष्टि से उनके द्वारा स्वीकृत नाम समालोच्य है। पं० वेचरदासजी ने उसकी समालोचना की है। उनका तर्क है— 'प्रश्न शब्द का प्राकृत रूप 'पण्ह' और 'पसिण' होता है, किन्तु 'पसेण' नहीं होता। उच्चारण शास्त्र की वैज्ञानिक रीति से 'पसिण' तक का परिवर्तन ही उचित नहीं लगता है। प्राकृत व्याकरण की दृष्टि से भी 'पसेण' रूप घटित नहीं होता। इसे आर्थ रूप मान तो फिर शुद्धाशुद्ध प्रयोग की मर्यादा ही टूट आरएगी।''

पण्डितजी का तर्क बलवान् है फिर भी अमीमांस्य नहीं है। हमारी दृष्टि के अनुसार---

[१] 'पसेणिथ' का मूल रूप 'पसिणिय' [सं० प्रक्षित] है। इकार का एकार होना उच्चारण शास्त्र की दृष्टि से असंगत नहीं है। यह परिवर्तन अनेक स्थानों में मिलता है। उदाहरण के लिए कुछ घब्द यहां प्रस्तुत किए जा रहे हैं:---

पिहणीणं	पेहु <b>गे</b> णं	[दे०]
णिव्वाणं	णेव्वाणं	[ सं० निर्वाणम् ]
णिव्वुती	णेव्वुती	[सं० निर्वृत्तिः]
तिगिच्छियं	तेगिच्छियं	[सं० चिकित्सितम्]
बिटा	बेंटा	[सं॰ वृत्तम्]
ৰি	बे	[सं० द्वि]
तिकालं	तेकालं	[सं० त्रिकालम्]

[२] आगम-सूत्रों तथा प्राचीन ग्रन्थों में 'रायपसेणिय' पाठ उपलब्ध है। 'रायपसेणइय' पाठ कहीं भी उपलब्ध नहीं है। नंदी सूत्र में 'रायपसेणिय' नाम मिलता है। इसका उल्लेख पहले किया जा चुका है। पाक्षिक सूत्र में भी 'रायप्पसेणिय' पाठ मिलता है।' पाक्षिक सूत्र के अवचूरि-कार ने भी इसका संस्कृत रूप 'राजप्रक्षिनयं' किया है।'

[३] प्रसेनजिस् का प्राकृत रूप असेणइय' बनता है। स्थानांग में पांचवें कुलकर का नाम असेणइय' है। अन्यत्र भी अनेक स्थलों में यह मिलता है।

प्रस्तुत सूत्र का विषयवस्तु यदि राजा प्रसेनजित् से संबद्ध होता तो इसका नाम 'रायपसेणइयं' होता, किन्तु इसकी विषयवस्तु राजा पएसी से संबद्ध है। इस दृष्टि से भी 'रायपसेणइय' नाम संगत नहीं है। दीधनिकाय में पायासी राजा प्रसेनजित् के सामंत रूप में उल्लिखित है। किन्तु प्रस्तुत सूत्र में राजा प्रसेनजित् का कोई उल्लेख नहीं है। अतः 'रायपसेणइयं' नाम का कोई आधार प्राप्त नहीं होता।

विषयवस्तु के आधारपर 'रायपएसियं' नाम की कल्पना की जा सकती है। किन्तु इसका कोई प्राचीन आधार प्राप्त नहीं है।

राजा प्रदेशी के प्रश्न प्रस्तुत सूत्र की रचना के आधार रहे हैं, इसलिए इसका नाम 'रायपसेणिय' ही होना चाहिए।

#### व्याख्या ग्रन्थ

प्रस्तुत सूत्र के व्याख्या-ग्रंथ दो हैं --- [१] वृत्ति और [२] स्तबक [टब्बा, बालावबोध]। वृत्ति संस्कृत में लिखित है और स्तबक गुजराती मिश्रित राजस्थानी में । वृत्ति के लेखक सुप्रसिद्ध टीकाकार आचार्य मलयगिरि हैं और स्तबककार हैं पार्श्वचन्द्रगणी [१६ वी शती] और मुनि धर्मसिंह [१८ वीं शती] । स्तबक संक्षिप्त अनुवाद ग्रन्थ है । प्रस्तुत सुत्र के रहस्यों को स्पष्ट करने वाला व्याख्या ग्रन्थ वास्तव में वृत्ति ही है । वृत्तिकार ने सूत्र के सब विषयों को स्पष्ट नहीं किया है, फिर भी उन्होंने अनेक स्थलों में अनेक महत्वपूर्ण सूचनाएं दी हैं ।

वृत्तिकार को वृत्ति-निर्माण में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उनके सामने सबसे बड़ी कठिनाई पाठ-भेद की थी। इसका उन्होंने स्थान-स्थान पर उल्लेख किया है।' वर्तमान कठिनाइयों के आधार पर वृत्ति दो भागों में विभक्त हो गई। पूर्वभाग में वृत्तिकार ने सुगमपदों की भी व्याख्या की है। उत्तरभाग में केवल विषमपदों की व्याख्या की है। अतएव पूर्वभाग की व्याख्या विस्तृत और उत्तरभाग की संक्षिप्त है। पूर्वभाग की विस्तृत व्याख्या के उन्होंने दो हेतु बतलाए हैं---

१. विषय की नवीनता

२. पाठ-भेद की प्रचुरता

उत्तरभाग की संक्षिप्त व्याख्या के भी तीन हेतु बतलाए हैं---

१. पाठ की सुगमता

२. पूर्व व्याख्यातपदों की पुनरावृत्ति

३. पाठ-भेद की अल्पता ।<sup>३</sup>

वृत्तिकार ने लौकिक विषयों को लौकिक कला के निष्णात व्यक्तियों से जानने का अनुरोध किया है।' राजप्रश्नीय और जीवाभिगम में अनेक स्थलों पर प्रकरण की समानता है। दोनों के व्याख्याकार आचार्य मलयगिरि हैं। इसलिए उनके समप्रकरणों की वृत्ति में भी प्रचुर समानता है। वृत्तिकार को जीवाभिगम की मूल टीका प्राप्त थी। उसका वृत्तिकार ने प्रस्तुत वृत्ति में स्थान-स्थान

१. रायपसेणिय वृत्ति, पू॰ २०४, २४१, २४६

२. रायपसेणिय वृत्ति, पृ० २३६ :

इह प्राक्तनो ग्रन्थः प्रायोऽपूर्वः भूयानपि च पुस्तकेषु वाचनामेदस्ततो माऽभूत् शिष्याणां सम्मोह इति क्वापि सुगमोऽपि यथावस्थितवाचनाकमप्रदर्शा नार्थं लिखित, इत ऊर्घ्वं न् प्रायः सुगमः प्राग्व्याख्यातस्वरूपश्च न च वाचना-भेदोऽप्यतिबादर इति स्वयं परिभावनोयः, विषमपदव्याख्या सु विषास्यते इति ।

३. वही, पू० १४४ 🗧

एते नर्तनविषयः अभिनयविश्वयश्च नाट्यकुशलेम्यो वेदितव्याः ।

पर उल्लेख किया है। ' एक स्थान पर जीवाभिगम-चूणि का भी उल्लेख किया है। वृत्ति का ग्रन्थ परिमाण तीन हजार सात सौ श्लोक है:---प्रत्यक्षरगणनातो ग्रन्थमानं विनिश्चितम् । सप्तत्रिंशच्छतान्यत्र श्लोकानां सर्वसंख्यया ॥ १. (क) रायपसेणियवृत्ति पु० १०० आह च जीवाभिगसमूलधीकाक्कत्-विजयदूष्यं वस्त्रविशेषः इति । (ख) वही, पु० १४ म आह च जीवाभिगममूलटीकाकारः अर्थलाप्रासादा यत्रार्थला नियम्यन्ते इति । जीवाभिषममूलटीकाकारेण--- आवर्त्तनपीठिका यत्रेन्द्रकीलको भवति इति । (ग) वही, पु० १५६ आह च जीवाभिगममूलटीकाकृत् --- कूटो माडभागः उच्छयः झिखरम् इति । आह च--जीवाभिगममूलटीकाकृत्-ग्रंकमयाः पक्षास्तदेकदेवभूता एवं पक्ष बाहवोऽपि ब्रष्टच्या इति । (घ) बही, पु० १६० उक्तं च जीवाभिगममूलटीकाकारेण ओहाडणी हारग्रहणं ? महत् क्षुल्लकं च पुंछनी इति । (च) वही, पु० १६१ आह च जीवाभिगममूलटीकाकृत् – नैवेधिकी निषीदनस्थानम् इति ! (छ) वही, पु० १६८ आह च जीवाभिगममूलटीकारः प्रकण्ठी पीठविशेषी इति । (ज) वही, पू० १६९ उक्तं च जीवाभिगममूलटीकायाम् ---- प्रासादावतंसकी प्रासादविशेषी इति । (झ) वही, पु० १७६ उक्तं च जीवाभिगममूलटीकायाम्—मनोगुलिका नाम गीठिका" इति । (ट) वही, पू० १७७ उक्तं च जीवाभिगममूलटीकाकारेण-हयकण्ठौ- हयकण्ठप्रमाणौ रत्नविशेषौ एवं सर्वेऽपि कण्ठा वाच्या इति । (ठ) बही, पू० १८० उक्तं च जीवाभिगममूलटांकायाम् ---तैलसमुद्गकौ सुगन्धितैलाधारौ । (ड) वही, पु०१८६ जीवाभिगममूलटीकायामपि ४६ -- "उप्पत्यं झ्वासयुक्तम्" इति । (ह) वही, पू० १६४ उक्तं च जोवाभिगसमूलटीकायाम् दगमण्डपाः स्फाटिका मण्डपा इति । (त) वही, पू० २२६ जीवाभिगममूलटीकाकारः --- "बिब्बोयणा-उपधानकान्युच्यन्ते" इति ।

15

### 10

वृत्ति के प्रारंभ में वृत्तिकार ने भगवान् महावीर को नमस्कार किया है और गुरु के आदेश से राजप्रश्नीय सूत्र के विवरण की सूचना दी है:----

> प्रणमत-वीरजिनेश्वरचरणयुगं परमपाटलच्छायम् । अधरीक्वतमतवासवमुकुटस्थितरत्कचिचकम् ॥ राजप्रश्नीयमहं, विवृणोमि यथाऽगमं गुरुनियोगात् । तत्र च शक्तिमशक्ति, गुरवो जानन्ति का चिन्ता ॥१॥

```
वृत्ति को परिसमाश्ति में वृत्तिकार ने गुरु की विअयकामना और पाठक की ज्ञानकामना
की है---
```

अधरीक्वतचिन्तामणि-कल्पलता-कामवेनुमाहास्म्याः । विजयन्तां गुरुपादाः विमलीक्वतशिष्यमतिविभवाः । राजप्रश्नीयमिदं गम्भीरार्थं विवृण्वता कु**शलं ।** यदवापि मलयगिरिणा साध्रजनस्तेन भवत् कृती ।

# ३. जोवाजीवाभिगमे

### नामबोध

प्रस्तुत आगम का नाम जीवाजीवाभिगमे है। इसमें जीव और अजीव इन दो मूलभूत तत्त्वों का प्रतिपादन है। इसलिए इसका नाम जीवाजीवाभिगमे रखा गया है। इसमें नौ प्रतिपत्तियां [प्रकरण] हैं। इनमें जीवों के संख्यापरक वर्गीकरण किए गए हैं।

```
१. संसारीजीव के दो प्रकार----त्रस और स्थावर ।
```

२. संसारीजीव के तीन प्रकार---स्त्री, पुरुष और नपुंसक ।

```
३. संसारीजीव के चार प्रकार—नेरयिक, तियँञ्च, मनुष्य और देव ।
```

- ४. संसारीजीव के पांच प्रकार—एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय ।
- संसारीजीव के छह प्रकार---पृथ्वीकाधिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक वनस्पति-कायिक और त्रसकायिक ।
- ६. संसारीजीव के सात प्रकार --- नैरयिक, तिर्यञ्चन, तिर्यञ्चणी, मनुष्य, मनुष्यणी, देव और देवी ।
- ७. संसारीजीव के आठ प्रकार प्रथम समय नैरयिक, अप्रथम समय नैरयिक, प्रथम समय तिर्थञ्च, अप्रथम समय तिर्थंञ्च ।

प्रथम समय मनुष्य, अप्रथम समय मनुष्य

प्रथम समय देव, अप्रथम समय देव ।

 संसारीजीव के नौ प्रकार ---पृथ्वी काधिक, अक्कायिक, तेजस्कायिक वायुकायिक, बनस्पति-कायिक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय ।

१. संसारीजीव के दस प्रकार-प्रथम समय एकेन्द्रिय, अप्रथम समय एकेन्द्रिय

### प्रथम समय द्वीन्द्रिय, अप्रथम समय द्रीन्द्रिय।

प्रथ**म**्समय त्रीन्द्रिय. अप्रथम समय त्रीन्द्रिय प्र<mark>थम स</mark>मय चतुरिन्द्रिय, अप्रथम समय चतुरिन्द्रिय प्रथ**म सम**य पञ्चेन्द्रिय, अप्रथम समय पञ्चेन्द्रिय ।

नौवीं प्रतिपत्ति के आठवें सूत्र से अन्त तक सर्वं जीवाभिगम का निरुपण किया गया है। वह वर्गीकरण भिन्न दृष्टि से किया गया है, उदाहरणस्वरूप—जीव के दो प्रकार सिद्ध और असिद्ध।

जीव के तीन प्रकार सम्यक्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि, सम्यक्मिथ्यादृष्टि ।

प्रस्तुत आगम में अवान्तर विषय विपुल मात्रा में उपलब्ध है। इसमें भारतीय समाज और जीवन के बारे में विस्तृत जानकारी उपलब्ध है। स्थापत्य कला की दृष्टि से पद्मवरवेदिका और विजयद्वार का वर्णन बहुत महत्त्वपूर्ण है।

प्रस्तुत आगम मे आदेशों का संकलन मिलता है। एक विषय में स्थविरों के अनेक मत थे। मत के लिए आदेश शब्द का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत आगम उत्तरवर्त्ती प्रस्थ है। इसलिए इसमें स्थविरों के अनेक मतों का संकलन मिलता है। वृत्तिकार ने आदेश का अर्थ प्रकार किया है।' तात्पर्यार्थ में अनेक मतों का संकलन भी सिद्ध होता है। जीवा० २/२० में चार आदेशों का संकलन है। २/४५ में पांच आदेश उपलब्ध हैं। वृत्तिकार ने लिखा है कि पांच आदेशों में कौन सा आदेश समीचीन है, इसका निर्णय अतिशय ज्ञानी ही कर सकते हैं। सूत्रकार स्थविरों के समय में वे अतिशयज्ञानी उपलब्ध नहीं थे इसलिए सूत्रकार ने इस विषय में कोई निर्णय नहीं किया, केवल उपलब्ध आदेशों का संकलन कर दिया।

### रचनाकार

प्रस्तुत आगम की रचना स्थविरों ने की है। इसका आगम के प्रारंभ में स्पष्ट निर्देश है।

### व्याख्या ग्रन्थ

प्रस्तुत आगम की दो व्याख्याएं उपलब्ध हैं एक आचार्य हरिभद्रकृत और दूसरी आचार्य मलयगिरिकृत । आचार्य हरिभद्रकृत टीका संक्षिप्त है, मलयगिरिकृत टीका बहुत विस्तृत है। मलयगिरि ने अपनी वृत्ति में 'इतिवृद्धाः' तथा मूलटीका, मूलटीकाकार और चूणि का अनेक स्थानों पर उल्लेख किया है ।

- १. जीवजीवाभिगम वृ० प० ४३ "आदेश शब्द इह प्रकारवाची" आदेसोत्ति पगारो "इतिवचनात्, एकेन प्रकारेण, एक प्रकारमधिकृत्येतिभावार्थः"
- २. वही वृ० ५० ४९ ''अमीषां च पञ्चानामादेशानामन्यतमादेशसमीचीनतानिर्णयोऽतिश्वयगानिभिः सर्वोत्हृब्ट-श्रुतलब्धि-संपन्नैर्वा कर्तु शक्यते, ते च सूत्रक्रुतप्रतिपत्तिकाले नासीरन्निति सूत्रकृम्न निर्णयं क्रुतवानिति''।
- ३. जीवाजीवाभिगमे १/१—-' इह खलु जिणमयं जिणाणु मयं जिणाणुलोमं जिणप्वणीतं जिणपरूवियं जिणक्खायं जिणाणु चिण्णं जिणपण्गत्तं जिणदेसियं जिणपसत्वं अणुवीइ तं सद्दहमाणा तं परिायमाणा तं रोएमाणा थेरा भगवन्तो जीवाजीवाभिगमे णामज्झ्यणं पण्णवहंस"।

¥8.

"ताइ च मुलटीकाकृता वैविक्त्येन न व्याख्याता इति संप्रदायादवसेयाः""

'इतिवृद्धाः''

इयं च व्याख्या मूलटीकानूसारेण कुला।

"उक्तञ्च मूलटीकायाम्"। 'आह च मूलटीकाकृत्"

### कार्य-संपूर्ति

इसके संपादन का बहुत कुछ अय कुवाचार्य महाप्रज्ञ को है, क्योंकि इस कार्य में अर्हानेंश वे जिस मनोयोग से लगे हैं, उसी से यह कार्य संपन्न हो सका है। अन्यथा यह गुरुतर कार्य बड़ा दुरूह होता। इनकी वृत्ति मूलतः योगनिष्ठ होने से मन की एकाग्रता सहज बनी रहनी है। सहज ही आगम का कार्य करते-करते अन्तर्रहस्य पकडने में इनकी मेधा काफी पैनी हो गई है। विनयशीलता, श्रमपरायणता और गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण-भाव ने इनकी प्रगति में बड़ा सहयोग दिया है। यह वृत्ति इनकी बचपन से ही है। जब से मेरे पास आए मैंने इनकी इस वृत्ति में कमशः वर्षमानता ही पाई है। इनकी कार्यः क्षमता और कर्तव्यपरता ने मुझे बहुत संतोष दिया है।

प्रस्तुत आगमों के पाठ संशोधन में अनेक मुनियों का योग रहा। उन सबको मैं आशीर्वाद देता हं कि उनकी कार्यजा शक्ति और अधिक विकसित हो।

अपने शिष्य-साधु-साध्वियों के सहयोग से पाठ संशोधन का बृहत् कार्य सम्यग्रूप से सम्पन्न हो सका है, इसका मुझे परम हर्ष है।

अक्षय तृतीय, १ मई १९८७ अध्यात्म साधना केन्द्र, महरोली---नई दिल्ली आचार्य तुलसी

### EDITORIAL

The present volume consists of three *āgamas—Ovāiyam*, *Rāyapaseņiyam* and Jīvājīvābhigame.

### ονλιγλμ

The text of Aupapätika sūtra has been constituted on the basis of the manuscripts and the vrtti. The references to different ancient versions in this sūtra are in abundance. It is a repository of descriptions. That is why we find at various places the instruction—jahā ovavāte (as in Ovavāta), referring to similar describers of the other  $\bar{a}gamas$  Neither the commentaries of those  $\bar{a}gamas$  nor their authentic texts of the latter contain the describers accepted in the Aupapātika. Those describers, however, are available in other versions. It poses a problem for those who study the describers.

The text of this  $\bar{A}gama$  must be determined not only on the basis of  $\bar{a}darsas$ and *vrtti* but also on the basis of the describers available in the  $\bar{a}gamic$  commentaries and the texts of the other  $\bar{a}gamas$ . But it is difficult to do so without the compilation of the totality of describers.

Some of the describers are as follows :

#### Bhagavaī :

7/175 : evam jahā ovavāie jāva

7/176 : evam jahā uvavāje, evam jahā uvavāje

- 7/196 : jahā kūņio jāva pāyacchitte
- 9/157 : "jahā ovavāie jāva egābhimuhe" "evam jahā ovavāie jāva tivihāe"
- 9/158 : "jahā ovavāie jāva satthavāha" "jahā ovavāie jāva khattiyakuņdaggāme"
- 9/162 : ovavāie parisā vaņņao tahā bhāņiyavvam
- 9/204 : "jahā ovavāie jāva gagaņatalamaņulihantī" "evam jahā ovavāie taheva bhāņīyavvam"
  - 9/204 : jahā ovavāie jāva mahāpurisa
  - 9/208 · jahā ovavāie jāva abhinandatā
- 9/209 : evam jahā ovavāie kūņio jāva niggacchai
- 11/59 : jahā ovavāie
- 11/61 : jahā ovavāie kūņiyassa
  - 11/85 : jahā ovavāie jāva gahaņayāe

- 11/88 : 198 : evam jaheva ovavāie taheva
- 11/138 : jahā ovavšie taheva attaņasālā taheva majjaņaghare
- 11/154 : evam jahā dadhapainnassa
- 11/156 : evam jahā dadhapaiņņe
- 11/159 : jahā ovavāje
- 11/169 : jahā ammado jāva bambhaloe
- 12/32 : evam jahā kūņio taheva savvam
- 13/107 : jahā kūņio ovavāie jāva pajjuvāsai
- 14/107 : evam jahā ovavāie jāva ārāhagā
- 14/110 : evam jahā ovavāie ammadassa vattavvayā
- 15/186 : evam jahā ovavāie dadhappaippavattavvayā
- 15/189 : evam jahā ovavāle jāva savvadukkhāņamantam
- 25/569 : jahā ovavāie jāva suddhesaņie
- 25/570 : jahā ovavāie jāva lühāhāre
- 25/571 : jahä ovaväie jäva savvagäya

#### Bhagavaï Vrtti :

```
patra 7 : aupapātikāt savyākhyāno'tra dīsyah
```

```
" 11 : aupapātikavadvācyā
```

- " 317 : "evam jahā uvavāie" tti tatra cedam sūtramevam ......
- " 318 : "evam jahā uvavāje jāva" ityanenedam sūcitam......
- " 319 : "jahā ceva uvavāie" tti tatra caivamidam sūtram......
- "462 : "jahā uvavāie" tti tatra cedam sūtramevam lesatab......
- "463 : "jahā uvavāie" tti tadeva lešato daršyate......
- "463 : "evam jahā uvavāie" tatra caitadevam sūtram......
- ., 463 : "jahā uvavāie" tti cedamevam sutram......
- "463 : "jahā uvavāie parisāvannao" tti yathā kauņikasyaupapātike
- " 476 : "jahā uvavāie" tti evam caitattatra.....
- "479 : "jahā uvavāie" tti anena yatsūcitam tadidam.....
- " 481 : "jahā uvavāie" tti karaņādidam drsyam .....
- " 482 : "evam jahā uvavāje" tti anena yatsūcitam tadidam.....
- " 519 : "jahā uvavāie" ityetasmādatideśādidam drsyam.....
- ", 520 : "evam jahā uvavāie" ityetatkaraņādidam drsyam.....
- ", 521 : "evam jaheve" tyādi "evam", anantaradarsitenābhilāpena yathaupapātike siddhānadhikītya samhananādyuktam tathaivehāpi.....
- " 521 : vākyapaddhatiraupapātikaprasiddhā'dhyetā.....
- ., 542 : "jahā uvavāie taheva attaņasālā taheva majjaņaghare" tti yathaupapātike ttaņasālā vyatikaro.....
- "545: "jahā dadhapainne" tti yathaupapātike dīdhapratijāo'dhītastathā' yam vaktavyah taccaivam.....
- " 545 · "evam jahā dad hapainno" ityanena yatsūcitam tadevam dīsyam......
- " 548 : "jahā uvavāie" ityanena yatsūcitam
- "549 : jahā ammado" ti yathaupapātike ammado'dhītastathā'yamiha yācyah

patra 563 : "evam jahā uvavāte jāva ārāhaga" tti iha yāvatkataņādidamarthato leśena dīsyam.....

- " 563 : "evam jahe" tyādinā yatsūcitam.....
- "696 : "evam jahä uvaväie" ityädi bhävitamevämmadaparivräjakakathänaka iti
- ,, 924 : "jahā uvavāie" tti anenedam sūcitam ......
- "924 : "jahā uvavāie" tti anenedam sūcitam .....
- , 924 : "jahā uvavāie" tti anenedam sūcitam ......

### Jñātāvŗtti

" 2 : "varņakagrantho'trāvasare vācyaķ.....

### Vivāgasuyam

1/1/70 : jahā dadhapaiņņe 2/1/36 : jahā dadhapaiņņe 2/10/1 : jahā dadhapaiņņe

### Rāyapaseņiyam

sūtra 3,4 : asoyavarapāyave pudhavisilāpattae vattavvayā ovavāiyagameņam neyā

,, 688 : egadisāe jahā uvavāie jāva appegatiyā

### Rāyapaseņiya vŗtti

- page 3 : sampratyasyā nagaryā varņakamāha—(Here Aupapātika has not been mentioned)
  - "8: yāvacchabdakaraņāt "saddie kittie nāe sacchatte" ityādyaupapātikagranthaprasiddhavarņņakaparigrahah
  - ,, 10 : aśokavarapādapasya pŗthivīšilāpațţakasya ca vaktavyatā aupapātikagranthānusāreņa jīleyā
  - "27 · yāvacchabdakaraņādrājavarņako devīvarņakah samavasaraņam caupapātikānusāreņa tāvadvaktavyam yāvatsamavasaraņam samāptam
  - "30 : yāvacchabdakaraņāt "āikare titthagare" ityādikah samasto`pi aupapātikagranthaprasiddho bhagavadvarņako vācyah, sa cātigarīyāniti na likhyate, kevalamaupapātikagranthādavaseyah
  - ,, 39 : bahave uggā bhogā ityādyaupapātikagranthoktam sarvamavasātavyam yāvat samagrāpi rājaprabhŗtikā parisatparyupāsīnā avatisthate
  - "116 : "evam jahā uvavāie tahā bhāņiyavvam" iti evam yathā aupapātike granthe tathā vaktavyam. tacca evam
  - "288 : ityādirūpā dharmakathāaupapātikagranthādavaseyā

### Jambuddīvapaņņattī

- 2/65 : evam jāva ņiggacchai jahā ovavāie jāva āulabolabahulam
- 2/83 : evam jahā ovavāie sacceva aņagāravaņņao jāva uddhanjāņū
- 3/178 : evam ovavāiyagameņam jāva tassa

### Jambuddīvapaņņattī Vītti :

Sā, Vŗ. patra 14 : "vaņņao" tti rddhastimitasamrddhā ityādi

- " aupapātikopāngaprasiddhah samasto'pi varņako drastavyah
- ,, cirātītamityādirvarņakastatpariksepi vanakhaņdavarņakasahitaaupapātikato'vaseyah
- " "vaņņao" tti atra rājño "mahayāhimavantamahante" tyādikorājñāśca "sukumālapāņīpāye" tyādikovarņakah prathamopāngaprasiddho'bhidhātavyah
- ,, yathā ca samavasaraņavarņakam tathaupapātikagranthādavaseyam
- ", "tae nam mihilāe nayai le singhādage" tyadikam "jāva" panjaliudā pajjuvāsantī" ti paryantamaupapātikagatamavagantavyam evopāngādavagantavyamiti
- "143 : "yathaupapātike" evam yathā prathamopānge... nipātab, aupapātikagamascāyam
- "154 : yathaupapätike sarvo'ņagāravarņakastathā'trāpi vācyah
- "155 : kiyadyāvadityāha—ūrdhva m jānunī yeşām te ūrdhvajānavah.....atra yāvatpadasamgrāhyah "appegaiyā domāsapariāyā" ityādikah aupapātikagrantho vistarabhayānna likhita ityavaseyam
- "264 : evamuktakrameņa aupapātikagamena prathamopāngagatapāthena tāvad vaktavyam yāvattasya rājnah purato mahāsvāh
- " 325 : vrksavarņanam prathamopāngato'vaseyam

### Sūrapaņņattī Vŗtti

- patra 2 : "yāvacchabdenaupapātikagranthapratipāditab samasto'pi varņakab āinnajaņasamūhā" ityādiko drastavyab
  - ,, 2 : tasyāpi caityasya varņako vaktavyah sa caupapātikagrauthādavaseyah
  - ,, 2 : tasya rājnah tasyāśca devyā aupapātikagranthokto varņako'bhidhātavyah
  - "2: samavasaraņavarņanam ca bhagavata aupapātikagranthādavaseyam
  - " 3: "bahave uggā bhogā" ityādyaupapātikagranthovaktam
  - " 3 : atra yāvacchabdādidamaupapātikagranthoktam drastavyam

### Candrapaņņattī (Ms. Vŗtti)

- patra 5 : aupapātikagranthaprasiddhaḥ samasto'pi varņako draṣṭavyaḥ sa ca granthagauravabhayānna likhyate kevalam tata evaupapātikādavaseyaḥ
  - " 5 : aupapātikagranthokto veditavyaķ
  - ", 5 : tasya rājňastasyāšca devyā aupapātikagranthokto varņako'bhidhātavyah
  - " 5 : samavasaraņavarņanam ca bhagavata aupapātikagranthādavaseyam
  - ", 6 : "bahave uggā bhogā" ityādyaupapātikagranthoktam sarvamavaseyam

### 1/141 : jahā dadhapaiņņo 2/13 : jahā dadhapaiņņo Dasāa

Uvangā

# 10/2 : rāyavaņņao evam jahā ovavātie jāva ceilaņāe---

10/14-19 : sakorențamalladāmeņam chatteņam dharijjamāņeņam uvavāiyagameņam neyavvam jāva pajjuvāsai.....

Dasā. (Ms. Vrtti)

- Vītti patra 11 : aupapātikagranthapratipāditah samasto pi varņako vācyah sa ceha granthagauravabhayānna likhyate kevalam tata evaupapātikādavaseyah. Dasā, 5/4
  - D. 5/5, Ms. Vŗtti patra 11 : caityavarņako bhaņitavyah sopyaupapātikagranthādavaseyah
  - D. 5/6, Ms. Vrttipatra 11 :

aupapātikoktam pāthasiddham sarvamavaseyam.....

D. 10/2, Ms. Vittipatra 25 :

"tasya varņako yathā aupapātikanāmnigranthe'bhihitastathā"

D. 10/2, Ms. Vrttipatra 25 :

vistaravyāknyā tūpapatikānusāreņa vācyā......

### D. 10/3, Ms. Vrttipatra 25 :

ādikarah yävatkaraņāt..... samasto aupapātikagranthaprasiddho .. …kevalamaupapātikagranthādavaseyah...

### D. 10/6, Ms. Vrttipatra 26 :

jāvatti yāvatkaraņāt jaņavūhei vā.....uggā bhogā.....ityādyaupapātikagranthoktam ....

### D: 10/14-19, Ms. Vittipatra 28 : uvavātiyagameņīti aupapātikagranthoktakauņikavandanagamanaprakāreņāyamapi nirgataķ

D. 10/21, Ms. Vittipatra 29 :

ihāvasare dharmmakathā aupapātikoktā bhaņitavyā

### Sütras of Ovāiyam in other agamas :

Ovāiya <b>m</b>	Bhagavaĭ	Rāya.	Jambu.
Sūtra 32	25/559-563	_	
,, 33	25/564-568	—	
,, 36	25/576-579		
,, 40	25/582-598	—	
,, 43	25/600-612		
., 44	25/613-618	—	
,, 64	9/204	Sū. 49-55	3/178

••	65	<u> </u>	—	3/180
	66	<u> </u>		3/179

38

### The Describer sútras

The Describer sūtras take several concise forms in the Aupapātika. These are :—

jāva :	udae jāva jhīņe (117)		
evam jāva :	apadivirayā evam jāva (161)		
sesam tam ceva :	paralogassa ärähagā sesam tam ceva (157)		
evam:	evam uvajjhāyāņam therāņam (16)		
abhilāveņam :	evam eenam abhilavenam (73)		
evam tam ceva :	sagadam vā evam tam ceva bhāniyavvam jāva nannattha gangāmattiyāe (123)		
bhāņiyavvam :	evam ceva pasattham bhāniyavvam (40)		
	kandamanto eesim vannao bhaniyavvo jāva siviya (10).		
ņeyavvam :	tam ceva pasattham neyavvam. evam ceva vaivinao vi echim pachim ceva neyavvo. (40)		

### Variant words and forms

The variant words and forms as approved by Grammar and holy usage in Agamas are important from the linguistic standpoint. Hence they have been distinguished from the variant readings and are given below :

Sūtra 1	kukkuda	kuńkada	(kha)
,, 1	°musundhi°	°musandhi°	(ka, kha)
,, 1	°vamka	°vakka	(ga)
., 1	°bhatta°	°hatta°	(ka)
,, 1	°kīlā°	°khīlā°	(ka, kha)
,, 1	°turaga°	°turanga°	(ka)
,, 1	darisaņijjā	darisaņīyā	(ka, kha)
,, 2	kālāgaru	kālāguru°	(ka)
,, 2	°kahaga°	°kahaka°	(ka, kha, ga)
, 4	°nikurambabhūe	°ņiurambabhūe	(kha)
,, <b>5</b>	darisaņijjā	darasaņij <b>jā</b>	(ka, kha)
,, 5	gulaiya	guluiya	(ka)
,, 6	abbhintara°	abbhantara°	(ka)
,, 6	bāhira	bahira	(ga)
,, 9	ņīvehim	nitehim	(ka)
,, 13	°haladhara°	°halahara°	(vţ)
,, 19	°haņue	°haņūe	(ka)
,, <b>19</b>	bhuyagIsara°	bhuyalsara°	(ka, kha, ga)
,, 19	akaranduya°	akaranduya°	(ka, kha)
" 19	°ccharu°	°tharu°	(vt)

#### ٧ø

Sütra 19	gupphe	°gophe°	ga)
,, 19	°vłąhepam	°pī¢heņam	(ka, kha)
,, 21	jayā	jadā	(ka)
,, 26	āyāvāyā	ādāvāyā	(ga)
,, 26	paravāyā	paravādā	(ga)
,, 31	omoyarıyā	avamoyariyā	(vŗ)
,, 32	bārasabhatte	f bārasamabhatte	(ka)
		{ bārasamebhatte	(ga)
,, 32	cauddasa°	🕻 coddasama°	(ka, kha)
		{ coddasame°	(ga)
,, 32	solasa°	<b>s</b> olasama°	(ka, kha)
		<b>l</b> solasame°	(ga)
,, 32	caumāsie	caummāsie	(kha)
,, 33	°bhoitti	°bhoītti	(ga)
,, 34	davyābhi°	davvabhi°	(ka)
,, <b>4</b> 0	entassa	intassa	(ga)
,, 43	°pautte	°pajutte	(ga)
,, 43	usappa°	osaņņa°	(ka, ga)
,, 43	°r <b>ūl</b>	°ruyī	(ga)
,, 44	darisaņāvaraņijja°	damsaņāvaraņiya	(kha)
<b>,, 4</b> 6	°vIcI°	°vītī°	(ga)
,, 46	toyapattham	°toyavaţţham	(ka)
,, 49	°vapņiya°	°paṇṇiya°	(ga)
,, 50	vihassatI	vahassatī	(ga)
,, 51	tirl¢adhārl	kirīdadhārī	(kha)
, 52	mahapphalam	mahāphalam	(ka, kha, ga)
,, 52	gayagayā	gatagatā	(ka)
,, 52	paccoruhanti	paccorubhanti	(ga)
,, 58	pādiyakkapādiyakk	ājm pāģiekkapādiekkāim	(kha)
,, 59	paoya-lațțhim	∫ patoda-latthim	(ka)
		} payotta-latthim	(ga)
,, 63	abbhimgehim	abbamgehim	(ka)
,, 63	°misimisanta°	° <b>m</b> ismisanta°	(ga)
,, 63	°susilittha°	°susalițțha°	(ka, ga)
,, 63	°vIiyange	°vījiyange	(ka)
,, 64	kūvaggāhā	kütuyaggāhā	(ga)
,, 64	°turagāņam	°turańgāņam	(ka)
,, 64	sakhinkhiqi°	sakińkiņi°	(ka)
" 67	°muinga°	°mudabga°	(ga)
,, 68	bhattittam	bhattattam	(ka)
, 71	°koñca°	°kuñca°	(ga, vŗ)

" 82	vaira°	vajja°	(kha)
,, 82	°pighasa°	°nikasa°	(kha)
<b>,, 8</b> 6	veyaņijjam	vedanijjam	(ka, ga)
,, 90	se je	sejje	(ka, kha)
,, 92	se jão	sejjāo	(ka kha)
,, 92	°uriyão	°puriyāo	(ka, ga)
., 95	kukkuiyā	kokuiyä	(kha, ga)
,, 97	°ahavvaņa	°athavvaṇa°	(ka, kha, ga)
,, 105	alāu°	lāu	(ga)
,, 117	carimehim	caramehim	(ka)
,, 158	°veñțiyâ	°vañțiyă	(kha)
,, 159	bhūi°	bhül°	(ka, kha ga)
,, 164	aņagārā	aņakārā	(ka, ga)
,, 170	tellä°	∫ tilla°	(ka)
	l	{ tela°	(kha)
,, 175	vaya°	vai°	(ka, kha, ga)
,, 195	gā. 1, paițțhiyā	pattițthiy <b>ā</b>	(ka, kha)

#### Description of the Manuscripts

( $\mathbf{F}$ ) This was obtained from Gadhaiyā Library, Sardarshahar, through Shri Madanchandji Gauthi. It contains 40 leaves and 80 pages. Each leaf is 11-3/4" long and 4-1/2" wide. There are 4 to 13 lines in each leaf, each line containing 40 to 46 letters. Commentary is inscribed in very small letters in the margin on all sides. The manuscript is beautiful, artistic and appears to have been used and read. The following eulogy is given at the end of the copy—

"iti śrī uvavāīsūtram samāptam, grantha 1167. cha. Samvat 1623 varse phālguna sudi 3 dine. Agra nagare, pātisāha śrī Akbara Jalāludīna rājya pravartamāne. śrī vihat kharataragacchālankāra śrī pūjyarāja śrī 6 Jinasinghasūrivijayarājye paūdita śrī Labdhivardhanamunibhirupapātikā nāma upāngam likhāpitam, cha. vācyamānam ciram nandyāt subham bhavatu lekhakavācakayoh. śrī."

( $\P$ ) This manuscript was also obtained through Shri Madanchandji Gauthi from Gadhaiya Library, Sardarshahar. It contains 59 leaves and 118 pages. Each page is 10-1/4" long and 4-1/2" wide. There are 7 to 9 lines in each leaf and each line contains 40 to 45 letters. The upper and lower margins of the page contain the translation of the text in Rajasthani language. The following eulogy by the scribe appears at the end of the manuscript—

"śrī uvāī upāngam padhamam samattam. granthāgram 1225. cha. śrī. Samvat 1665 varse pausa māse šuklapakse saptamī tithau śrī somavāsare. śrī śrī vikrama nagare mahārājādhirāja mahārājā śrī rāyasinghjī vijayarāje pandita karmasinghena lipīkītā. cha." ( $\mathfrak{T}$ ) This manuscript was also obtained through Sri Madanchandji Gauthi from Gadhaiyā Library, Sardarshahar. Each page contains 26 leaves and 52 pages. Each page is 10-1/2" long and 4-1/2" wide. Each page contains 15 lines with 46 to 48 letters in each line. The manuscript concludes with— "uvāīyam samattam, granthāgra 1200, subhamastu cha. srī," but the year is not mentioned therein. Looking at its leaves, letters and illustrations, the copy must be belonging to the 17th century.

( $\mathbf{q}$ ) This manuscript of the vrtti was obtained through Shri Madanchandji Gauthi from Gadhaiyā Library, Sardarshahar. It has 75 leaves and 150 pages. Each leaf contains 13 lines with 55 to 60 letters in each line. The size of the leaf is  $10-1/4" \times 4-1/4"$ . The manuscript is revised and clear. In the eulogy the following is inscribed—"Subham bhavatu. kalyāṇamastu. lekhakapāṭhakayośca bhadram bhavatu, cha. samvat 1996 varşe Mārgašīrṣa sudi I, bhaume likhitam. cha. śrī yādṛśam pustake dṛṣṭvā, tāḍṛśam likhitam mayā/yadi suddhamaśuddham vā, mama doşo na diyate// cha. cha.

# (q. qr.) Variant readings based on the Vitti

There are no identical readings of different versions in the special manuscript of the *vrtti* and the printed vrtti. We have taken the manuscript *vrtti* as authoritative.

#### Räyapaseņiyam

The text of this sütra has been determined on the basis of manuscripts and the Vrttl. Jivājivābhigama and Aupapātika-sütras have also been used for determining the texts of the Sūryābha and the Drāhapratijāa chapters respectively. The commentator has mentioned the abundance of variant readings in different versions at every step. At the time of composing the commentary it posed a serious problem, but in later times it assumed still more serious dimensions. Even then we have revised the text by analysing the available material very minutely. None can claim that the revision of this text is totally flawless but this much can be asserted that we have maintained utmost neutrality and patience in our attempt to perform the task.

The construction of the text of this  $s\bar{u}tra$  has exacted vast labour, and resulted in the enlargement of the body of the  $s\bar{u}tra$ , as also in the intelligibility of the text and the tastefulness of the subject-matter.

### Variant words and forms

The variant words and forms as approved by grammatical rules and holy usage in Agamas are important from the linguistic standpoint, so they have been distinguished from the variant readings and are given below—

Sūtra No. 8	mauda	matuda	(ka)

	8	°dheyam	<sup>o</sup> dhejjam (ka)
,,	9	ņāj°	
,,	10	ukițțhãe	ņādi° (ka, kha, ga, ca) okițthãe (cha)
**	12	patthe	vațihe (kha, ga)
<b>.</b> .		putino	
	13	ņāiya	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
**	15	hanta	
,,	15	abhivandae	handa (ca) abhivandate (cha)
••	24	āyamsa°	ātańsa <sup>o</sup> (gha, ca)
,, ,,	37	miu°	mau° (ka, kha, ga)
,, ,,	37	pāsāle	pāsātie (ka, kha ga, gha)
,,	40	atīva	atīta (ca)
,,	48	tisovāņa°	tisomāņa <sup>o</sup> (ka, kha, ga, ca)
,,	56	mahālateņam	mahālaeņam (kha, ga, gha)
,,	56	vemäniehim	vemāņitehim (ka, kha, ga, gha)
,,	69	viraciya	viratiya (ka, kha, ga, ca)
,,	71	°vāyāņam	vāiyāņam (ka, kha, ga, cha)
		· ·	vāyayāņam (gha)
,,	75	oņamanti	tonamanti (ka, gha)
,	76	mau	miu (kvacit)
,,	77	°țāņam	°tāņam (ka, ca, cha)
,,	118	matthae	matthate (ka, kha, ga, gha)
,,	118	jaenam vijaenam	jateņam vijateņam (ka, kha, ga,
			gha)
7	124	bahulo	f bahugio (ka, kha, ga, gha)
			bahugito (ca, cha)
••	129	dāra°	j vāra (ka, kha, ga, ca, cha)
			{ bāra (gha)
**	130	°kavelluyāo	°kaveluyãto (ka, kha, ga, gha)
,	135	sankalão	sańkhalāo (kvacit)
,,	137	paganthagā	pakanthagā (gha, ca)
••	154	sāe pahāe paese	sāte pahāte patese (ka, kha, ga,
			gha, ca, cha)
••	159	savvouya°	savvouta° (ka, kha, ga, gha)
"	173	°piṇaddha	°vinaddha° (gha)
**	173	tithāņa°	titthāṇa° (ka, kha,ga,gha, ca, cha)
"	185	āīņaga	ādīņaga (ka, kha, ga, gha)
**	189	uddham	uddham (ka)
**	197	°veiyā	°vetiyā (ka, kha, ga, gha, ca, cha)
••	197	phalaesu	°phalatesu (ka, kha, ga, gha, ca,
			cha)

••	219	tao	∫ tago	(ka)
			<b>l</b> tato	(cha)
>>	228	°bințā	<b>∫</b> °bențā	(ka kha, ga, cha)
			{ bethā	(ca)
,,	245	suvirai-rayattāņe	suirai-raittāņe	-
			ounar ranney	cha)
	292	kaqucchuyam	kaducchayam	,
"	654	cariyāsu	•	(ka, kha, ga, gha)
**		•	caliyāsu	(ka, kha, ga)
**	664	pīya°	pīla°	(ka, kha, ga)
"	683	°vinda°	°vanda°	(gha)
,,	687	°vūhe	°pŭhe	(ka, kha, ga)
,,	695	°paribhäittā	paribhägettä	(ka, kha, ga, gha,
		1	Farrow-Potta	
	706	kotthayão	hatth öa	ca, cha)
**		-	koțthão	(ka, gha)
"	720	agilāe	ailāe	(ka, ca)
**	754	ao°	∫ ayo°	(ka, kha, ga)
			l aya°	(gha)
,,	755	bhiccā	bheccā	(gha)
"	760	kisie	kasie	(ka,kha, ga,gha, cha)
,,	771	vāukāyassa	vāuyāgassa	
.,		Taukuyassa	vauyagassa	(ka, kha, ga, gha,
	202			ca, cha)
**	787	bhikkhuyāņam	bhichuyāṇam	(gha, ca)
,,	791	°ppaogena	°ppayoge‡a	(gha)
			• •	

### Description of the Manuscript

( $\mathbf{\Phi}$ ) This manuscript was obtained from Shrichand Ganeshdas Gadhaiya Library, Sardarshahar. It contains 49 leaves and 98 pages. Each leaf is 10-1/2 'x 4-1/2", with 13 lines in each leaf and 50-55 letters in each line. It was scribed in V.S 1671 and the following is its colophon :

"namo jiņāņam jiyabhayāņam ņamosuya devayāe bhagavale ņamo paņņattīe bhagavale ņamo bhagavao arahao pasassa passe supasse passavaņīņabhoe. cha. Rāyapaseņaiyam samattam. cha. granthāgram 2079 samarthitamidam sūtram. cha. samvat 1671 varşe bhādravā sudi 11"

This colophon runs still further, but this faint portion is coloured with yellow.

(**a**) They contain 55 and 61 leaves respectively.

( $\pi$ ) Both of them are similar to the manuscript ( $\pi$ ).

( $\exists$ ) This manuscript belongs to Yati Kanakachandji of Pali (Marwar). Its size is  $10\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ . It contains 54 leaves and 108 pages, with 13 lines in each page and 46 to 48 letters in each line.

It was scribed in V.S 1566. The following colophon is appended at the end of the manuscript :---

"cha. subham bhavatu lekhaka-pāṭhakayoh śrī saṅghasya ca. saṁvat 1566 varşe caitra sudi 2 tithau adyeha śrīmadaṇahillapattane śrī vṛhat-kharataragacche śrī Vardhamānasūrisantāne śrī jinabhadrasūripaṭṭānukrameṇa śrī jinahamsasūrirajye vācanācharyajayākāragaṇisiṣya vā. dharma-vilāsagaṇivācanārtham bha. vastupālabhāryayā līlī śravikayā. Putraratna bha, sāliga pumukhaparivāra saśrīkayā suśreyārtham ca lekhitam śri Rājapraśnīyopāngam.

( $\exists$ ) This manuscript was obtained from the collection of Punamchand Buddhamal Dudheria of Chhapar (Rajasthan). Each leaf is 12"×5". There are 42 leaves and 84 pages in this copy, with 15 lines in each page and 48 to 54 letters in each line. Two illustrations are given in the first two pages. The script is beautiful but abounds in mistakes. Approximately it belongs to the sixteenth century.

( $\Im$ ) This manuscript also was obtained from the collection of Punamchand Buddhamal Dudheria of Chhapar (Raj.) It contains 41 leaves and 82 pages, with 15 lines in each page and 57 to 60 letters in each line. The script is ordinarily fair but flawless. It ends with the following colophon—"lipi samvat 1665 varşe kārtika māse šukla pakše saptamī šukre Babberakapure paņdita Labdhikallolagaņinā lekhi."

( $\overline{q}$ ) It was obtained from Shrichand Ganeshdas Gadhaiya Library, Sardarshahar. Its size is  $10\frac{1}{2}^{"} \times 4\frac{1}{2}^{"}$ . It contains 52 leaves and 104 pages, with 17 lines in each page and 65 to 70 letters in each line. This manuscript was scribed in V.S. 1605 and ends with the following colophon :—

"iti malayagiriviracitā rājaprašnīyopāngavīttikā samarthitā. samāptam iti. pratyaksaragaņanayā granthāgram. cha, cha. pratyaksaragaņanāto granthamānam vinišcitam. saptatrimšatšatānyatra. šlokānām sarvasamkhyayāh. cha, granthāgram šloka 3700, cha. šrī. samvat 1605 varse šrāvaņa sudi 13, bhaume pattana vāstavyam, paņdita Rudrasuta Jiganātha likhitam. šubham bhavatu.

### JĨVÄJĨVÅBHIGAME

The text of this sūtra has been revised on the basis of manuscripts and its *yrtti*.

The vrtti by Malayagiri is based on old *ādarša*, hence the texts of palm leaf and the vrtti are identical. The sūtras 3/218, 457, 578, 826 together with their footnotes may be consulted in this connection. A great variety of readings in the relatively later editions provides ample room for deliberation and research. The fact regarding the dissimilarity of readings in the manuscripts of Jivājīvābhigama has also been pointed out by Santicandra, the commentator of Jambúdvīpaprajňapti.<sup>1</sup>

Upādhyāya Šānticandra has quoted the text about the description of the Kalpavŗkşa from Jīvājīvābhigama. In describing the fourth Kalpavŗkşa he has quoted the reading 'Kaņaga-nigaraņa' which he explains as 'the heap of gold.'<sup>1</sup> In the Vŗtti of Jīvājīvābhigama the teum 'Kaņaganigaraņam' has been explained as 'Kanakasya nigaraṇam, kanaka-nigaraṇam, gālitam, kanakamiti bhāvaḥ'<sup>2</sup>. The change in script has led to change in reading. We find the reading 'Kūdāgā-rattha' in some manuscripts. In the printed editions as well as the hand-written copy we find the reading 'Kūtāgārādyāni'. It has not been explained in the Vŗtti of Jīvājīvābhigama. Of course, it has been explained in the Vŗtti of "Jambūdvīpa-prajñapti"—"Kūtākāreṇa—śikharākŗtyādħyāni.''<sup>3</sup>

Acarya Malayagiri has himself mentioned the variant readings of the manuscripts.<sup>4</sup> The verses, which the commentator quotes from other sources, have been included in the original text in comparatively recent manuscripts.<sup>5</sup>

In the V<sub>I</sub>tti we find the mention of the commentary on Jambūdvīpa-prajňapti. The commentators of Jambūdvīpa-prajňapti definitely belong to a period later than that of Malayagiri. Hence it is a matter worthy of investigation whether this mention is an interpolation or whether Malayagiri had really got with him some old commentary of Jambūdvīpa-prajňapti.<sup>6</sup>

At some places the vrtti contains a lot of matter worth deliberation. The commentator has explained the term "Sirivaccha as śrivrkşa. Looking to the context it should be śrivatsa."

iha bahudhā sūtresu pāthabhedāh parametāvāneva sarvatrāpyartho nārthabhedāntaramityetadvyākhyānusāreņa sarvepyanugantavyā na mogghavyamiti.

(b) Ibid, Vr. p. 376 :

"iha bhūyān pustakesu vācanābhedo galitāni ca sūtrāņi bahusu pustakesu tato yathāvasthitavācanābhedapratipattyartham galitasūtroddharaņāttham caivam sugamānyapi vivriyante.

5. Ibid, Vrtti p. 331, 333, 334, 334; 3/820, 830, 834, 837 : The footnotes are worth seeing.

6. jīvābhigama, Vrtti p. 382 :

kvacit simhādīnām varņanam dršyate tad bahusu pustakesu na drstamityupeksitam, avasyam cettadvyākhyānena prayojanam tarhi Jambūdvīoaprajňapti tīkā paribhāvanīyā tatra savistaram tadvyākhyānasya krtatvāt.

7. Ibid., vrtti p. 271 :

"Srivrksenänkitam-länchitam vrkso yesäm te soivrksalänchita vaksasah."

<sup>1.</sup> Jambüdvīpaprajňapti Vrtti. p. 108 :

atra cādhikāre jīvābhigamasūtrādarše kvacidadhikapadam api dršyate tattu vrttāvatyākhyātam svayam paryālocyamānamapi na nārthapradamiti na likhitam, ten tat sampradāyāda vagantavyam, tamantareņa samyak pāthašuddherapi kartumašakyatvāditi.

<sup>1.</sup> Jambudvīpa Vr. patra 102: kanakanikarah suvarņarāših.

<sup>2.</sup> Jīvājīvābhigama, Vr. p. 267.

<sup>3.</sup> Jambüdvipaprajňapti Vr. p. 107 : See the footnote of Jivájivábhigama, 3/594.

<sup>4. (</sup>a) Ibid. Vr. p. 321 :

The original commentator and Malayagiri had before them the intricacies of variant readings and different expositions and in the times of later commentators also such discussions were often held. In this connection, a topic mentioned in the vrtti is of historical importance. The commentator writes that this sūtra is obscure on account of the peculiarity of aim and purpose. It can be explained only on the basis of the right tradition and solid ground. It is sheer repudiation of the sūtra if it is explained carelessly and whimsically.<sup>1</sup> Due care had been taken that the sūtra may not be repudiated or wrongly interpreted. Consequently, attempt was made to preserve the text and its meaning. Even then due to variation in intelligence and scribe's carelessness discrepancies in readings and expositions have taken place. On account of the variant readings we had to take great pains in arriving at the correct text. The reader can estimate the labour involved by the variant readings and notes thereon appended in the edition.

The manuscript marked "tā" is an abridged version of the text, e.g. the following sūtra 1/41—"tāim bhante kim pudāim āhārenti apu goyamā puțihā no apu. ogā no aņogā aņantaro ņavaram aņūim pi ā bāyarāim piā uddham vi i ādim pi i savisae no avisae āņupuvvim no aņāņupuvvim ācchaddi vāghātam pa siya tidisi ska. no vaņņato kālā nī gandhato su 2 rasato no phāsaho tesim porāņam vipariņāmettā apuvva vaņņa guņa ska uppāettā ātasarīra khettogādhe poggale savvappaņattāe āhāramāhārenti,"

Due to the flaw in script the reading like *katidisim* (ka) has found place in place of *kimitidisim*. We have not accepted the readings of the  $\exists I$  manuscript in many places, because they are too much abridged.

#### Variant words and forms

1/1	Jiņakkāyam	Jiņakhāyam Jiņakhātam	(kha) (tā)
,,	aņuvīj	aņuvītiyam	(ka, kba)
"	roemāņā	rotamāņā	(tā)
1/14	sanghayana	sanghatana	(tā)

#### I. Ibid., Vrtti p. 450 :

sūtrāņi hyamūni vicitrābhiprāyatayā durlakşyāņiti samyaksampradāyādavasātavyāni, sampradāyašca yathoktasvarūpa iti na kācidanupapattih, na ca sūtrābhiprāyamajñātvā anupapattirudbhāvanīyā, mahāsātanāyogato mahā'narthaprasakteh, sūtrakīto hi bhagavanto mahīyānsah pramāņīkītāšca mahīyastaraistatkālavarttibhiranyairvidvadbhistato na tatsūtreşu manāgapyanupapattih, kevalam sampradāyāvasāye yatņo vidheyah, ye tu sūtrābhiprāyamajňātvā yathākathaňcidanupapattimudbhāvayante te mahato mahīyasa āsātayantīti dīrghatārasamsārabhājah, āha ca tīkākārah —"evam vicitrāņi sūtraņi samyaksampradāyādavaseyānītyavijňāya tadabhiprāyam nānupapatticodanā kāryā, mahāšātanāyogato mahā'narthaprasangāditi" evam ca ye samprati duşsamānubhāvatah pravacanasyopaplavāya dhūmaketava ivotīthitāh sakalakālasukarāvyavacchinnasuvidhimārgānuşthātrsuvihitasādhuşu matsariņaste'pi vrddhaparamparāyātasampradāyādavaseyam sūtrābhiprāyamapāsyotsūtram prarūpayanto mahāšātanābhājaḥ pratipattavyā apakarņayitavyāšcu dūratastattvavedibhiriti kītam prasangena".

### ¥ S

,,	saņņāo	saņņāto	(ka)
,,	joguvaoge	joguvatoge	(ka)
1/19	kohakasāe	kohakasāte	(ka)
1/21	kaņhalessā	kiphalessā	(ga, ta)
1/26	āņapāņu°	āņapāņa°	(t)
1/72	chīravirāliyā	chiravirāliyā	(k)
		chirivirāliyā	(kha)
		chirivavirāliā	(ga, <b>ț</b> a)
		chīravīrālī	(tā)
1/73	thihū	thibhu	(ka)
1/100	tahappagārā	tahappakārā	(ka, kha, ga, ta)
1/101	duāgaiyā	duyāgatiyā	(ga)
1/119	āhāro	ādhāro	(tā)
2/59	paliovamāim	palitovamäim	(ka, kha, ga, ta)
2/60	abbhahiyāim	abbhadhiyāim	(ga)
2/74	phumphuaggi	phumphaaggi	(ka)
		pumphaaggi	(ga)
2/92	vāsapuhattam	vāsapudhattam	(ka)
		vāsapuhuttam	(ga, ta)
2/241	etāsi	etesi	(ka, kha, ga, ta)
		egāsi	(tā)
2/149	vaņassati°	vaņapphai°	(ka, kha, ga)
3/5	joyaṇa°	jotana	(ka)
3/6	āvabahule	avabahule	(ka)
		āvabahule	(tā)
3/33	abādhāe	ābādhāe	(ka, kha, ta)
3/48	je pam imam	jeņimam	(tā)
3/73	asiuttaram	āsīuttare	(tā)
3/77	adahattare	adasattarî	(ga)
		atthuttare	(tā)
3177	kiņhapuda	kinnapuda	(ka, ga)
3/80	bāhalleņam	pāhaleņam	(tā)
3/94	kerisagā	kerisatā	(ka, kha, ga)
3/96	phudita°	phudiga°	(tā)
	<b>.</b> .	sphutita°	(ma, vŗ)
3/118	usiņavedaņijjesu	usuņavedaņījjesu	(tā)
3/118	viraciya	viraiya	(ka, ga, ta)
3/119	cgāham	ekāham	(kha, ga, ta)
3/234	ettha	tattha	(ka, kha, ga, ta)
		yaitha	(tā)
3/323	jambūņadamayā	jambūņatamayā	(ka)
		iambūņatāmayā	(ga, ța, tā)
		and a factor of a	(50) :0, 10)

3/371	uvagāriyālayaņe	ovāriyalayaņe	(ka, kha, ga, ta, tri)
		uvakāriyalayaņe	(tā)
3/372	khambhuggaya	thambhuggaya	(ka, ga)
3/412	dhūvadhadiyāo	dhūmadhaḍiyāo	(ka, kha)
3/593	oviya°	uvvitiya	(ka, kha)
		uvviiya	(ga)
3/733	bāyālīsa <b>m</b>	bādālīsam	(tā)
3/750	bāyālīsam	bātālīsam	(tā)
3/748	kelāse	ketiläse	(kha)
		kailāse	(ga, ța, tri)
3/794	eguņayālam	iūyālam	(ka)
		ūyālam	(kha, tā)
		iguyāla <u>m</u>	(ga)
3/798	egayālīsam	eyālīsam	(ka, kha, ta)
		egayālīsam	(ga)
		itālīsam	(tā)
3/829	teņațțheņam	eeņațtheņam	(ga, tri)
3/838/13	maņussāņam	maņūsāņam	(tā)
3/840	kayāj	kadāyī	(tā)
3/841	balāhakā	balāhatā	(tā)
3/841	bādare vijjukāre	vätare vijjutäre	(tā)
	badare thaniyasadd	e vātare thaņitasadde	(tā)
3/841	nadī oi vā ņihīti vā	pandīti vā ņidhayoti	vā (tā)
3/860	supakkakhoyarasei	supikkakhot araseti	$(t\bar{a})$
3/877	khodavaranna <b>m</b>	khoyavarannam	(ka, kha, ga, ta, tri)
3/949	khodasarisam	khotodasarisam	(tā)
3/998	hetthimpi	hatthimpi	(ga, ța, tā)
		hițthampi	(tri)
3/1007	savvahetthillam	savvahetthimayam	(tā)
3/1007	savvovarillam	savvupparillam	(ka, kha, ța)
3/1007	savvabbhimtarillan	i savvabbhantaram	(tā)
5/37	ņiodā	ņiotā	(tā)
5/54	°niodajīvā	°ņigodajīvā	(ka, kha, ga, ta, tri)
5/58	°ņiodajīvā	°nioyajīvāvi	(ka, kha, ga, ța, tri)
9/11	anâie	aņādīe	$(t\bar{a})$
9/28	sakāsāī	sakasādī	(tā)
9/131	ohidamsanī	avadhidamsaņī	(ga, tri)
-,	_	odhidamsanī	(tā)

### **Description of the Manuscript**

(本) Original text : leaves 94; samvat 1575; Hand-written.

This Ms. belongs to Shrichand Ganeshdas Gadhaia Library, Sardarshahar. It contains 94 leaves and 188 pages with 15 lines in each page and 53-56 letters in each line. Its size is  $13\frac{14}{4} \times 5^{"}$ . It is beautifully scribed. The following is the eulogy at the end :--

"Samvat 1575 varşe äśvinamāse kīsņapakse trayodašyām tithau bhīguvāsare pattananagaramadhye modhajātiya Jošī vītihalasuta latakaņalikhitam. cha. yādīšam pustake dīstam, tädīšam likhitam mayā/yadi śuddhamasuddham va mama doşo na dīyate //1/[ śubham bhavatu lekhaka-pāthakayoh kalyāņamastu. cha. cha. śrī. śrī. cha. granthāgra 5200.

(@) Original text : leaves 80.

This Ms. belongs to Sardarshahar mentioned above. It contains 80 leaves and 160 pages, with 15 lines in each page and nearly 61 letters in each line. Its size  $12^{\prime\prime} \times 44^{\prime\prime}$ . The Ms. is very old and tattered. The scribing year is not mentioned at the end, but most probably it must belong to the 16th century.

(1) Original text : leaves 90. Illustrated.

It belongs to Shrichand Ganeshdas Gadhaiya Library, Sardarshahar. It contains 90 leaves and 180 pages with 15 lines in each page and about 63 words per line. Its size is  $11\frac{1}{2}x4\frac{1}{2}$ . On the first page there is beautiful illustration in golden ink of the image of the Tirthankaradeva. It is very beautifully scribed. In the centre there is  $b\bar{a}vad\bar{a}$  and in the middle of that there is a red circular spot.

There is no puspikä and scribing year at the end of the ms., but most probably it belongs to the 16th century.

It almost tallies with the palmleaf manuscript and the commentary.

(ता) Palmleaf photo-print of Jaisalmer Bhandāra.

This copy mostly tellies with the commentary. It does not contain the pages containing the sūtras 105-115 of the third *pratipatti*.

(2)  $\overline{cat}$ : Scribing year 1800. It belongs to the Order's Library, Ladnun. It had been thoroughly studied by  $\overline{Acarya} K \overline{a} \overline{lugan}$  (the eighth pontiff) and the text had been corrected by him at various places.

### Jīvājīvābhigama tīkā (Hand-written)

It belongs to Shrichand Ganeshdas Gadhaiya Library, Sardarshahar. It contains 250 leaves, and 500 pages with 15 lines per page and about 65 letters per line. Its size is  $10^{"} \times 4 \cdot 1/4"$ . The scribing year is samvat 1717. The script is very beautiful.

#### Acknowledgements

Jainisam has a long tradition of councils held for compiling the texts of the  $\overline{Agamas}$ . Ere 1500 years from today there had been four councils on  $\overline{Agamas}$ . After Devarddhigani no well-planned  $\overline{Agamas}$  council was held. The  $\overline{Agamas}$ 

compiled at that time fell into disorder during this long internal. So a wellorganised council was the need of the hour to revise the Agamas again. Acārya Tulsī tried his best for a general consensus on Agama-editing but it could not materialise. Lastly it was decided that if our editing of Agamas is research-oriented, unbiased and punctilious, it will be universally accepted. On this consideration we started our work of holding the council for critically editing the Agamas.

Acāryaśrī Tulsī is the chief of this vācanā. Vācanā means "teaching", that comprises so many activities like search of the correct text, translation, critical and comparative study, and so on. In all these activities the active cooperation, guidance and encouragement from the Ācāryaśrī is always available to us. It was our forte for undertaking such onerous task.

Instead of expressing my gratitude to the Acāryaśrī and thereby feeling relieved from the burden of his gratefulness, I feel it better to require more energy through his blessings and become heavier for taking up the next assignment.

In editing the texts of **Ovāiyam** and **Rāyapaseņiyam** of this book Muni Sudarshan, Muni Madhukara, Muni Hiralal and in editing the text of *jīvājīvābhigame* Muni Sudarshan & Muni Hiralal have worked with diligence and perseverance. Muni Chatramal, Muni Balchand, Muni Hansraj and Muni Maņilal have also lent remarkable cooperation is editing the text of **Jīvājīvābhigame**.

Word index of Oväiyam has been prepared by Muni Shrichand and that of Rāyapaseņiyam and Jīvājīvābhigame by Muni Hiralal. Muni Sudarshan, Muni Hiralal and Sādhvī Siddhaprajñā, and Samaņī Kusumaprajñā actively cooperated in correcting the proofs of the book.

The general get-up of Ovaiyam and Rayapaseniyam has been prepared by Muni Mohanlal "Amet". The first two indexes have been prepared by Muni Hiralal. In the revision of the text also he was remarkably helpful.

While evaluating their cooperation in the accomplishment of this assignment I express my gratefulness to all of them.

The services of Late Madanchand Gauthi, who had a deep insight into the Agamas and who helped me in editing the text of the Agamas, cannot be forgotten at this stage. If he had been alive, he would have been very happy at this achievemnt,

Shri Shrichand Rampuria, Kulapati, Jain Vishva Bharati and the Managing Editor of  $\overline{Agama}$  Literature, has been actively involved in the  $\overline{Agama}$  work from the very beginning. He is fully-determined and working hard to reach the  $\overline{Agama}$  literature to the laymen. Having relieved himself of his well-set Advocate's job he has been devoting most of his time to the  $\overline{Agama}$  programme. Shri Khemchand Sethia, President and Shri Shrichand Bengani, Secretary of Jain Vishva Bharti have also actively cooperated in this task. The English rendering of the Editorial and the Introduction were done under the supervision of Dr. N. Tatia and Dr. V. P. Jain by Shri R.S. Soni & Samaņīs Chinmayaprājñā and Ujiyalaprājñā have also been actively associated with it.

It is simple formality to mention the names of those proceeding in the same direction with the same speed for a common goal. Really it is a sacred duty for us and we have all fulfilled it.

-Yuvācārya Mahāprajña

Adhyātma Sadhanā Kendra, Mehrauli, Delhi Akşaya Tŗtīyā, 1st May, 1987.

### INTRODUCTION

-- -

The present book is Uvangasuttāni. It contains the original text of twelve Upāngas with variant readings and abbreviated texts. It has two parts. The first part contains three Āgamas (1) Ovāiyam, (2) Rāyapaseņiyam and (3) Jīvājīvābhigame. The second part contains nine āgamas : (1) Paņņavaņā, (2) Jambuddīvapaņņattī, (3) Candapaņņattī, (4) Sūrapaņņattī, (5) Nirayāvaliyāo (Kappiyāo), (6) Kappavaģisiyāo (7) Pupphiyāo, (8) Pupphacūliyāo, (9) Vaņhidasāo.

In the ancient tradition we find the following two classifications of the agamas :-

(1) Angapravista and (2) Angabahya.

There was no such categorisation as  $Up\ddot{a}nga$  in the old tradition. Nandīsūtra bears no mention of any  $Up\ddot{a}nga$ . In any older dgama too,  $Up\ddot{a}nga$  has not been mentioned. The Tattvārthabhāşya uses this word for the first time, which is the earliest in the available texts.<sup>1</sup>

### Relation between Anga and Upanga

Tattvārthasūtra mentions the word *Upānga*, but it does not indicate any relationship between them. We find it mentioned in the vrtti of Jambūdvīpaprajňaptt and the Sukhabodhā Sāmācārī at page 34, composed by Shrichandra Sūri, the commentator of Nirayāvalikā. According to Jambūdvīpaprajňapti, the interrelationship between angas and upāngas is shown as under :--

Anga	Upânga
Ācārānga	—Aupapātika
Sūtrakītānga	—Rājapraśnīya
Sthänänga	JIvājīvābhigama
Samavāyātiga	-Prajilāpanā
Bhagavati	-Jambūdvīpaprajfiapti
Jñätädharmakathä	— Candraprajñapti
Upāsakadašā	- Sūryaprajñapti
Antakrddaśā	— Nirayāvalikā( Kalpikā)
Anuttaropapātikadašā	Kalpāvatansikā

1. Tattvārthabhāşya, 1/20: tasya ca mahāvişayatvāttānstānarthānadhikītya prakaraņasamāptyapeksamangopānganānātvam.

Praśnavyākaraņa	Puşpikā
Vipākašruta	- Puşpacülikā
D <b>ŗ</b> șțivāda	Vŗṣṇidaśā1
	1. Ovāiyam

#### Nomenclature

The present agama is called Ovaiyam (Aupapātikā). Its main theme is upapāta. Samavasaraņa is its incidental treatment. On the basis of the main theme treated herein, it is known as Ovāiyam (Skt. Aupapātika). On deleting letters "va" as per the Prakrit Grammar Rule, we get ovāiyam form in place of ovavāiyam. We come across the same name in the Nandīsūtra.<sup>2</sup>

#### Subject-Matter

The main theme enunciated in the *Aupapātika* is 'rebirth', that so and so *upapāta* (instantaneous rebirth) takes place because of such and such conduct.

The exordium consists of many types of descriptions of town, monastery, garden, king etc. The present sutra has come to be known as a Varnaka (describer) sutra because of these descriptions and has been used in various epilogues for this reason.

#### Commentaries

The first commentary of the Aupapātika is the  $v_{ft}$  by Abhayadeva Sūri, the commentator of the nine  $\bar{a}gamas$ . The introductory verse shows that Abhayadeva Sūri had got no other earlier  $v_{ft}$  in front of him. He composed this  $v_{ft}$  with the help of other texts. He himself mentions :--

śrīvarddhamānamānamya prāyo'nyagranthavīksitā /

aupapātikaśāstrasya vyākhyā kācidvidhīyate //

The commentator has mentioned the views of the foregoing acaryas at .several places.

- 1. snānādvā pāņdurībhūtagātrā iti vrddhāh/(Vrtti p. 171)
- 2. cūrņikārastvāha/(Vrtti p. 224)
- 3. asya ca vrddhoktasyādhikrtagāthāvivaraņasyārtham bhāvārthah/

(Vrtti p. 225)

This commentary is neither too elaborate nor too abridged. Its medium size contains most of the points worth discussing.

The Ovāiyam contains numerous variant readings. Abhayadeva has described the first sūtra thus—"This sūtra is abundant in variant readings. I shall deal with only what is intelligible."<sup>3</sup> Most probably such variant readings do

iha ca bahavo vācanābhedā dršvanto, teşu ca yamevāvabhotsyāmahe tameva vyākhyāsyāmah.

<sup>1.</sup> Jambudvipaprajňapti, Śānticandriyā Vrtti, patra 1, 2.

<sup>2.</sup> Nandīsūtra, 76.

<sup>3.</sup> Aupapātika, vrtti, page 2 :

not appear in any other sutra. If the commentator had not compiled them, they would have passed into oblivion.

The commentary ends with an eulogy in three verses, in which the commentator mentions the names of his guru—Shri Jineśvara Sūri, of the Candra lineage, and the place of composition—Anahi'apātakanagar and Dronācārya who revised the Vrtti:

> candrakula-vipula-bhūtala-yugapravara-vardhamānakalpataroh / kusumopamasya sūreh guņasaurabha-bharita-bhavanasya // nissambandhavihārasya sarvadā śrījineśvarāhvasya / śişyeņābhayadevākhyasūriņeyam krtā vrttih // aņahilapātakanagare śrímaddroņākhyasūrimukhyena / paņditaguņena guņavatpriyeņa samšodhitā ceyam //

The second commentary on the Ovāiya is 'Stabaka', which was probably composed by Muni Dharmasī and belongs to the eighteenth century of the Vikram era.

### 2. Rāyapaseņiyam

#### Nomenclature

This sutra is called Rayapaseniyam. Pt. Bechardas Doshi has named it as Rayapasenaiyam, stating that it is based on the 'Rajaprasenakiya' referred to by Siddhasenagani and Rajaprasenajita referred to by Muni Candrasūri.<sup>1</sup>

The earliest mention of this sūtra is found in *Nandīsūtra*, under the name  $R\bar{a}yapaseņiya$ .<sup>2</sup> The name has not been explained in the Nandī cūrņi and its commentaries by Haribhadrasūri and Ācārya Malayagiri who has named it as 'Rājaprašnīya' while dealing with it. King Pradešī had asked some questions to Kešīsvāmī. The present sūtra contains replies to the questions and hence the name 'Rājapraśnīya'.<sup>3</sup>

From the point of view of treatment of the subject-matter, Malayagiri's commentary is quite in order and the name does not sound awkward or improper on that account. But lexicographically the name is open to criticism, specially by Pt. Bechardas who contends that—"the word 'prasna' takes the forms 'punha' and 'pasina' in Prakrit, and not the form 'pasena'. There is no form as 'pasena' according to Prakrit grammar. If we recognise it

- 3. (a) Rāyapaseņiya vrtti, page 1 :
  - atha kasmād idam upāngam rājaprašnīyābhidhānamiti? ucyate, iha pradešināmā rājā bhagavatah kešikumārašramaņasya samīpe yān jīvavişayān prašnānakārsīt, yāni ca tasmai kešikumārašramaņogaņabhrī vyākaraņāni vyākriavān.
  - (b) Rāyapaseņiya Vītti, page 2 : tājaprašneşu bhavam rājaprašnīyam.

<sup>1.</sup> Rāyapaseņaiyam, pravešaka, page 6 & 7.

<sup>2.</sup> Nandī, sūtra 77.

as an authoritative form  $(\bar{a}rsa)$ , all rules about the correct or wrong usage of words in Prakrit would have been set to naught.<sup>1</sup>

Pt. Bechardas's contention may be valid, but it is not irrefutable. In our view-

(1) The original form of 'paseniya' is 'pasiniya' (Skt. prasnita). In pronunciation, 'assumption of the form 'i' by 'e' is quite consistent. We find such departure elsewhere too. For example :--

pihuņīņam	=	pehuņeņam	(Deśī)
ņivvāņam	=	ņevvāņam	(Skt. nirvāņam)
ņivvutī	=	ņevvutī	(Skt. nirvŗttiḥ)
tigicchiyam	==	tegicchiyam	(Skt. cikitsitam)
bințā	=	bențā	(Skt. vrttam)
bi	-	be	(Skt. dvi)
tikālam	=	tekālam	(Skt. trikālam)

(2) In the Agama-sūtras and old scriptures we find the text as rāyapaseņiya'. The usage 'rāyapaseņaiya' is not available anywhere. In the Nandīsūtra we come across 'rāyapaseņiya' as mentioned earlier. In 'Pākṣika sūtra' too, 'râyappaseņiya' occurs.<sup>2</sup> The composer of the avacūri of Pākṣika sūtra gives its Sanskrit form as 'rājapraśniyam'.<sup>3</sup>

(3) Prasenajit takes the form 'pasenaiya' in Prakrit In the Sthānānga sūtra the fifth kulakara is named as 'pasenaiya'.<sup>4</sup> This form is available at various other places too.

If the subject-matter of the present sutra had been related to King Prasenajit, the name could have been "Rāyapaseņaiyam". But in fact the subject-matter relates to King Paesī; hence the form "rāyapaseņaiya" is not compatible. In the *Dīghanikāya* King Pāyāsī is mentioned as a feudal lord to Prasenajit. But here we find no mention of King Prasenajit. Therefore the usage '*Rāyapaseņaiyam*' has no basis.

From the point of view of the subject-matter we may conjecture about the name ' $R\bar{a}yapaesiyam$ ', but there is no basis for such a conjecture.

King Pradeśi's quesies form the basis of the composition of the sūtra in question. Therefore its name must be 'Rāyapaseņiya' and none else.

#### Commentaries

Its two commentaries are named as (i) vrtti, and (ii) stabaka (tabbā or

Rājňah pradesi nāmnah prašnāni, tānyadhikītya kītam adhyayanam--rājaprašniyam.

4. Thānam, 7/62

<sup>1.</sup> Râyapasenaiyam, praveśaka, page 6.

<sup>2,</sup> Pākşikasūtram. page 76.

<sup>3.</sup> Pāksikasūtram Avacūri, page 77 :

bālāvabodha). The former is in Sanskrit while the latter is in the admixture of Rajasthani and Gujarati. Vītti was composed by the renowned annotator Ācārya Malayagiri while the stabaka was written jointly by Pārśvacandragaņī (16th Century) and Muni Dharmasingh (18th Century). Stabaka is a short piece of translation but  $v_{fiti}$  is the real commentary which clarifies the underlying meaning of the sūtra. Although the  $v_{fiti}$  has not been able to explain the whole theme, yet the commentator has provided valuable information at various places.

The author had to face many obstacles in writing the  $v_{ft}$ , the most difficult of them being the variations in text. He has mentioned this difficulty at several places.<sup>1</sup> To surmount these obstacles the  $v_{ft}$  has been bifurcated in two parts :--

(i) The first part : for commentary of intelligible words, and (ii) the later part : for commentary of technical terms. Thus the first part is quite extensive, while the later part is brief. The causes of detailed treatment in the first part are twofold :—

(a) Novelty of the subject-matter.

(b) Abundance of variant readings.

Likewise the later part has been treated in brief due to the following reasons :

- (a) Intelligibility of the text.
- (b) Repetition of the terms already explained.
- (c) Small number of variant readings.<sup>2</sup>

The commentator desires us to learn the mundane topics from the experts of that art.<sup>3</sup> Both Rājapraśnīya and Jīvābhigama bear identical topics at various places. Ācārya Malayagiri is the commentator of both of them. That is why the topics of the commentaries are largely identical. The commentator had obviously got the original commentary of Jīvābhigama, which fact has been mentioned time and again in this commentary.<sup>4</sup>

iha prāktano granthah prāyo'pūrvah bhūyānapi ca pustakeşu vācanābhedastato mā'bhūt sişyānām sammoha iti kvāpi sugamo'pi yathāvasthitavācanākramapradaršanārtham likhita, ita ūrdhvam tu prāyah sugamah prāgvyäkhyātasvarūpašca na ca vācanābhedo'pyatibādara iti svayam paribhāvanīyah, vişamapadavyākhyā tu vidhāsyate ita.

ete nartanavidhayah abhinayavidhayasca nätyakusalebhyo veditavyäh.

4. (a) Ibid, page 100 :

āha ca jīvābhigamamūlatīkākrt vijayadūşyam vastravišesah iti.

(b) Ibid, page 158 : àha ca jīvābhigamamūlaţīkākārah argalāprāsādā yatrārgalā niyamyante iti.

<sup>1.</sup> Rāyapaseņiya Vftti, p. 204,241,259.

<sup>2.</sup> Rāyapaseņiya Vrtti, page 239 :

<sup>3.</sup> Ibid., page 145 :

At one stage Jīvābhigama cūrņi has also been mentioned.

Vrtti contains 3700 ślokas :--

pratyakşaragananāto granthamānam vinišcitam / saptatrimšacchatānyatra ślokānām sarvasamkhyayā //

At the very outset, the commentator remembers Lord Mahāvīra reverentially and with guru's permission proceeds with the commentary on the Rājapraśnīya sūtra :--

praņamata vīrajinešvaracaraņayugam paramapātalacchāyam / adharīkŗtanatavāsavamukutasthitaratnarucicakram // rājaprašnīyamaham vivŗņomi yathā'gamam guruniyogāt / tatra ca šaktimašaktim guravo jānanti kā cintā //

At the end, the commentator prays for the victory of his preceptor as also attainment of knowledge for the reader :--

_	adharīkttacintāmaņi-kalpalatā-kāmadhenu-māhātmyāh / vijayantām gurupādāh vimalīkttaštsyamativibhavāh // rājaprašnīyamidam gambhīrārtham vivtņvatā kušalam / yadavāpi malayagiriņā sādhujanastena bhavatu ktī //1//
	jīvābhigamamūlaţīkākāreņaāvarttanapīthikā yatrendrakīlako bhavati iti. (c) Ibid, page 159 : āha ca jīvābhigamamūlatīkākītkūto mādabhāgah ucchayah šikharam iti. āha ca jīvābhigamamūlatīkākītankamayāh pakşāstadekadešabhūtā evam pakşa bāhavo'pi
	dîştavya ili. (d) Îbid, p. 160 :
	uktanca jīvābhigamamūlaţīkākāreņa ohādaņī hāragrabaņam ? mabat ksullakam ca punchanī' iti. (e) Ibid, p. 161 :
	āha ca jīvābhigamamūlațīkākrt-naisedhikī nisīdanasthānam iti. (f) lbid. p. 168 :
	āha ca jīvābhigamamūlaţīkākāraķ—prakaņţhau pīţhavišeşī iti. (g) loid, p. 169 :
	uktañ ca jīvābhigamamūlatīkāyām—prāsādāvatamsakau prāsādavīšesau iti. (h) Ibid, p. 176 : uktañ ca jīvābhigamamūlatīkāyām—manogulikā nāma pīthikā iti.
	<ul> <li>(i) Ibid, p. 177 ; uktañ ca jivābhigamamūlaţīkākāreņa—hayakaņţhau—hayakaŋţhapramāņau ratnaviš;şau evam sarve'pi kaŋţhā vācyā iti.</li> </ul>
	<ul> <li>(j) 1bik, p. 180 : uktañ ca jīvābhigamamūlaţīkāyām—tailasamudgakau sugandhitailādhārau.</li> <li>(k) 1bid, p. 189 :</li> </ul>
	jīvābhigamamūlatīkāyāmapi (46)—uppittham śväsayuktam iti. (1) Ibid, p. 195 :
	uktan ca jīvābhigamamūlatīkāyām—dagamaņdapāh-sphātikā maņdapā iti. (m) lbid, p. 226 : jīvābhigamamūlatīkākārah—bibboyaņā—upadhānakānyucyante iti.

### JĨVĀJĨVĀBHIGAME

20

#### Nomenclature

The āgama under review is Jīvājīvābhigame. Jīva and ajīva—the two basic tattvas—have been dealt with herein, hence it has been named as Jīvājīvābhigama. It contains nine chapters in which the sentient beings have been numerically classified :—

1. Two kinds of mundane beings-mobile and immobile.

2. Three kinds of mundane beings-woman, man and eunuch.

3. Four kinds of mundane beings-hellish-beings, animals, men and gods.

- 4. Five kind of mundane beings-one-sensed, two-sensed, three-sensed, foursensed and five-sensed.
- 5. Six kinds of mundane beings-earth-bodied, water-bodied, fire-bodied, airbodied, vegetation-bodied and mobile-bodied beings.
- 6. Seven kinds of mundane beings—hellish, male animals, female animals, men, women, gods and goddesses.
- 7. Eight kinds of mundane beings—first time hellish, second time hellish, first time animal, second time animal, first time man, second time man, first time god, second time god.
- 8. Nine kinds of mundane beings—earth-bodied, water-bodied, fire-bodied, airbodied, vegetation-bodied, two-sensed, threesensed, four-sensed and five-sensed.
- 9. Ten kinds of mundane beings—one time one-sensed, second time one-sensed, one time two-sensed, second time two-sensed, one time three-sensed, second time three-sensed, one time four-sensed, second time four-sensed, first time five-sensed, second time five-sensed.

The whole of Jîvābhigama has been dealt with up to the end of the eighth sūtra of the ninth *pratipatti*. This classification is based on various other criteria, e.g., two kinds of sentient beings—emancipated (*siddha*) and nonemancipated (*asiddha*).

A sentient being has three other categories too—one possessing right vision, perverted vision and right-cum-perverted vision.

In this āgama secondary subjects are available in abundance, which provide detailed information about Indian society and life. From the architectural point of view the description of 'padmavara' (lotus) altar and 'vijayadvāra' (gate of victory) is very important.

The sgama is a compilation of various adesas (view-points). The sthaviras

held divergent views on single topics. The word  $\bar{a}desa$  was used for a viewpoint. This  $\bar{a}gama$  is supplementary in nature. Hence it embodies various view-points of the sthaviras. The commentator uses  $\bar{a}desa$  in the sense of "kinds".<sup>1</sup> In essence the compilation of various viewpoints is clearly proved. In Jivājivābhigame, 2/20, we find four  $\bar{a}desas$  whereas in 2/48 there are five. The commentator is of the view that only the extraordinarily gifted persons can pass a judgment as to which of five  $\bar{a}.lesas$  is proper. There were no such gifted persons during the period of the *sthaviras*, hence the commentator has obviously abstained from expressing his own views on the subject. He has simply compiled the available  $\bar{a}desas.^2$ 

The sthaviras are the authors of this  $\bar{a}g\bar{a}ma$ . This is clearly indicated at the beginning of the  $\bar{a}gama$ .<sup>3</sup>

#### Commentaries

Two commentaries are available on this sūtra—one by Ācārya Haribhadra, and the other by Ācārya Malayagiri. The former is concise whereas the latter is quite cloborate. Malayagiri's vŗtti contains the ascription "iti vŗddhāħ" as well as the mention of the original text, the commentator and the cūrņi at several places :

'iti vrddhāh'<sup>4</sup>
'iyam ca vyākhyā mūlaţīkānusāreņa kītā'<sup>5</sup>
'uktañca mūlaţīkāyām'<sup>6</sup>
'āha ca mūlaţīkākītā vaiviktyena na vyākhyātā iti sampradāyādavaseyāh'<sup>8</sup>
'mūlaţīkākāreņāvyākhyānāt'<sup>9</sup>
'āha ca mūlaţīkākāraḥ---uktam cūrņau'<sup>10</sup>
'āha ca mūlaţīkākāraḥ---uktam mūlaţīkākāreņa'<sup>11</sup>

1. Jīvājīvābhigama, Vrtti p. 53 :

"ădeśa śabda iha prakāravācī"—'ādesotti pagaro'iti vacanāt, ekenaptakāreņa, ekaptakāramadhikriyetibhāvārthah'.

2. Ibid., p. 59 ;

amīşām ca pancānāmādesānāmanyatamādesasamīcīnatānirņayo'tisayajāānibhiķ sarvotkrstasruta labdhisampannairvā kartum sakyate te ca sūtrakrtpratipattikāle nāsīranniti sūtrakrnna nirņayam krtavāniti''.

Jīvājīvābhigame, 1/1 :

"iha khalu jiņamayam jiņāņumayam jiņāņulomam jiņappaņītam jiņaparūviyam jiņakkhāyam jīņāņuciņņam jiņapaņņatam jiņadesiyam jiņapasatthm aņuvīt tam saddahamāņā tam pattiyamāņā tam pattiyamāņā tam roemaņā therā bhagavantī jīvājivābhigame ņāmajjhayaņam paņņavaimsu".

4. Vrtt	i, p. 27	8.	71	p. 136
5. "	p. 64	9.	4	p. 136
6. "	p. 109	10.	,,	p. 137
7. "	p. 122	11.	**	p.180

'uktam mūlatīkāyām'' 'āha ca mūjatīkākārah'2 'uktam ca mūlatīkāyām'3 'āha ca mūlatīkākārab'i 'āha ca mūlatīkākāraḥ'<sup>5</sup> 'uktañca mülațīkāyām' 'uktañca mulațikākārena'' 'āha ca mūlatīkākārah', 'cūrņikāstvevamāha'8 'āha ca mūlatīkākārah' 'āha ca cūrņikīt'9 'uktañca mulațikāyām', 'Jīvābhigama mulațikāyām'<sup>10</sup> 'âha ca mūlațīkākāro'pi'. 'āha ca cūrņikīt'11 'tathā cāha mulatīkākārah'12 'āha ca mülacūrņikīt'18 'mūlaļīkākāro'pyāha.....cūrņikāro'pyāha'14 'āha cūrnikrt'<sup>15</sup> 'tathā cāha mūlatīkākāraķ'<sup>16</sup> 'āha ca cūrņikrt'17 'uktam cūŗņau'18 'āha ca mūlatīkākārah'<sup>18</sup> 'āha cūrņikīt āha ca tīkākārah' 20 'mūlatīkākāreņāpi'21 'āha ca mūlatīkākārah'22

#### Fulfilling the assignment

The credit of editing this text goes to a great extent to Yuvācārya Mahāprajña, because the work has been accomplished through his perseverance day and night, otherwise this onerous task was difficult to be finalised. He is basically inclined towards yoga. Therefore it is easy for him to maintain his equipoise (concentration). Not only that, being engrossed in the study of the *Agamas* in a routine manner he has developed a keen intellect in grasping the inner mysteries of things. The credit of his intellectual development goes to his humbleness, diligence and total surrender to his preceptor. He has been displaying such inclination since childhood. Since he came over to me, this

1. Vrtti, p. 141	12. Vrtti, p. 354
2. , p. 142	13. " p. 369
3. " p. 142	14. ,, p. 370
4. " p. 277	15: ,, p. 384
5. " p. 186	16. "p.438
6. , p. 204	17. " p. 441
7. , p 205	18. " p. 442
8. , p. 209	19. " p. 444
9. " p. 210	20. ", p. 450
10. " p. 214	21. " p. 452
11. " p. 321	<b>22.</b> ,, p. 457

60

learning has been gradually increasing. I am quite satisfied with his capacity to work and his dutifulness.

Seve.al other saints have cooperated in revising the text of this  $\bar{a}gama$ . I heartily bless them and wish that their work-born capacity should develop all the more.

My joy knows no bounds to see that the gigantic task of text revision has been successfully brought to completion through the cooperation of my disciples —the monks and nuns of the order.

-Ācârya Tulsi

Adhyātma Sādhanā Kendra, Mehrauli—New Delhi, Akşaya Tṛtīyā, 1st May, 1987.

# विषयानुऋम

### ओवाइयं

### समोसरण-पयरणं

# सूत्र १ से द१

पृ० १ से ५१

चंपानयरी बण्णम-पदं १, पुण्णभद्देइय-वण्णम-पदं २, वणसंड-वण्णम-पदं ३, असोमपायव-वण्णम-पदं ५, पुढविसिलापट्टय-वण्णम-पदं १३, कूणियराय-वण्णम-पदं १४, धारिणीदेवी वण्णम-पदं १५, पवित्ति-वाउय-पदं १६, महावीर-वण्णम-पदं १६, पवित्ति-वाउयस्स निवेदण-पदं २०, सविहि-णमोत्यु-पदं २१, भगवओ उवागम-पदं २२, समण-वण्णम-पदं २३, निग्गंथ-वण्णम-पदं २४, घेर-वण्णम-पदं २१, अणगार-वण्णम-पदं २७, अपडिबंध-विहार-पदं २६, तवोवहाण-वण्णम-पदं २४, घेर-वण्णम-पदं २१, अणगार-वण्णम-पदं २७, अपडिबंध-विहार-पदं २६, तवोवहाण-वण्णम-पदं २४, घेर-वण्णम-पदं २१, अणगार-वण्णम-पदं २७, अपडिबंध-विहार-पदं २६, तवोवहाण-वण्णम-पदं ३०, अणगार-वण्णम-पदं ४४, भवणवासि-वण्णम-पदं ४७, वाणमंतर-वण्णम-पदं ४६, जोइसिय-वण्णम-पदं ४०, वेमाणिय-वण्णम-पदं २१, परिसा-निग्ममण-पदं ५२, पवित्ति-वाउयस्स निवेदण-पदं ५३, सविहि-णमोत्थु-पदं ५४, बलवाउय-निहेस-पदं ५२, हत्थिवाउय-निहेस-पदं ५६, जाणसालिय-निहेस-पदं ५६, णयरगुत्तिय-निहेस-पदं ६०, बलवाउयस्स निवेदण-पदं ६२, कूणिय-सज्जा-पदं ६३, परिकरसज्जा-पदं ६४, कूणियस्स निग्गमण-पदं ६५, आसीवयण-पदं ६८, कूणिय-पज्जुवासणा-पदं ६९, देवी-पज्जुवासणा-पदं ७०, धम्मदेसणा-पदं ७१, धम्मपडिवत्ति-पदं ७८, परिसा-पडिगमण-पदं ५९, कूणिय-पडिगमण-पदं ८०, देवी-पडिगमण-पदं ६१,

### ओवाइय-पयरण

### सूत्र दर से १९४

### पूरु ४१ से ७७

गोयम-वण्णग-पदं ६२, कम्मबंध-पदं ६४, णेरइय-उववाय-पदं ६७, वाणमंतर-उववाय-पदं ६६, जोइसिय-उववाय-पदं १४, कंदप्पिय-उववाय-पदं १४, परिवायग-चरिया-पदं १६, अम्मड-अंतेवासि-पदं ११४, अम्मड-चरिया-पदं ११८, दढपइण्ण-पदं १४१, देवकिब्बिसिय-उववाय-पदं १४४, सहस्सार-उववाय-पदं १४६, आजीवयाण अच्चुय-उववाय-पदं १४८, समणाणं आभिओ-गिय-उववाय-पदं १४६, णिण्हगाणं गेवेज्ज-उववाय-पदं १६०, देस-विरय-वण्णग-पदं १६१, सब्ब-विरय-वण्णग-पदं १६३, केवलिसमुग्धाय-पदं १६६, जोग-निरोह-पदं १८९, सिद्ध-वण्णग-पदं १८२, ईसीयब्भारापुढवी-वण्णग-पदं १६२, सिद्ध-वण्णग-पदं १६४।

# संकेत-निर्दे शिका

- ० ये दोसों बिन्दु पाठ-पूर्ति के द्योतक हैं। पाठ-पूर्ति के प्रारम्भ में भरे बिन्दु और समापन्न में रिक्त बिन्दु ० का संकेत किया गया है। देखे, पृब्ठ म, सूम
- · ' यह दो या उससे अधिक शब्दों के स्थान में पाठान्तर होने का सूचक है।
  - पाठ में संसम्ब दिया गया एक बिन्दु अपूर्ण पाठ होने का सूचक है। देखें, पृष्ठ ३, पाठान्तर १२, पृ० ११६. सूत्र १४२
- [?] कोष्ठकवर्ती प्रक्ष्वचिह्न आदशों में अप्राप्त किन्तु आवश्यक पाठ के अस्तित्व का सूचक है। देखें, पू० २२, सूत्र ३२
- × क्रोस पाठ नहीं होने का द्योतक है। देखें, पू॰ १ पाठान्तर ६ जाव आदि पर जो अंक है वे पूर्ति आधार स्थल के द्योतक है। जैसे---पृ०९, पाठान्तर १४ पु० १०२ सूत्र ६६ पाठान्तर का अंक ६ पृ० ६७, सूत्र ४५, पाठान्तर का अंक ४ पृ० ११४, सूत्र १३६, पाठान्तर का अंक १४ पृ० ११६, सूत्र १४२, पाठान्तर का खंक २ पृ० १२५, सूत्र १२६, पादटिप्पणांक १,२,३ आदि सं० पा० संक्षिप्त पाठ नायः नायाधम्मकहाओ वृत्ति जं० पुवृ० जंबुद्दीवपण्णत्ती पुण्यसागरीयवृत्ति **श**न्तिचन्द्रीयवृत्ति ,, হাৰে০ ,, ,, ,, हीरविजयवृत्ति " हीवृ० " 13 राय० वृ० रायपसेणियं वृत्ति राय० सू० रायपसेणियं सूत्र को॰सू॰ कोवाइयं सूत्र उत्त० उत्तरज्झयणाणि भगवती भाव पण्णः पण्णवणा
- जीव जीवाव जीवाजीवाभिगमे जंबु०/जंबू० जंबुद्दीवपण्णत्ती पण्हाव पण्हावागरणं

# ओवाइयं

# समोसरण-पयरणं

#### चंपानयरी-चण्णग-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नाम नयरी होत्था--रिद्ध-त्थिमिय'-समिद्धा 'पमुद्दय-जणजाणवया'' आइण्ण-जण-मणूसा' हल-सयसहस्स-संकिट्ठ-'विकिट्ठ'-लट्ठ''-पण्णत्त'-सेउसीमा कुक्कुड'-संडेय-गाम-पउरा 'उच्छु-जव-सालिकलिया'' गो-महिस-गवेलग-प्पभूया' 'आयारवंत''-चेद्दय-जुवइविविहसण्णिविट्ठवहुला''' उक्कोडिय-गायगंठिभेय''-भड''-तक्कर-खंडरक्खरहिया खेमा णिरुवद्वा'' सुभिक्खा वीसत्थसुहावासा'' अणेगकोडि-

- १. तथमिय (क, ख, ग,) ।
- २. पमुइयजणुज्जाणजणवया (वृपा) ।
- ३. मणुस्सा (नावृ पत्र १) ।
- ४. वियट्ठ (नावृ पत्र १); विगिट्ठ (जं० पुवृ पत्र ३); विअट्ठ (जं० हीवृ पत्र २)।
- ५. वियलटु (ग) ।
- ६. पण्णत्ता (क); 'पण्णत्त' ति योग्यीकृता बीजवपनस्य (वृ); सूर्यप्रज्ञप्तिवृत्तौ (पत्र २६३) अस्य पदस्य व्याख्या एवं उपलभ्यते— प्रज्ञया-विशिष्टकर्म्मविषयबुद्ध्या आप्ते—प्राप्ते अतीव सुष्ठु परिकम्मिते इति भावः ।
- ७. कुंकुड (ख) ।
- म. "सालियकलिया (क); उच्छुजवसालिमालि-णीया (वृपा); रायपसेणइयवृत्तौ एष पाठो नास्ति व्याख्यात: ।
- गवेलप्पभूया (क) ।
- १०. 'आकारवन्ति सुन्दराकाराणि, आकारचित्राणि वा' इति वृत्तिव्याख्यानात् 'आयारवंतं' इति मूलपाठ:, 'आयारचित्त' इति पाठभेदश्च

फलितो भवति ।

- ११. अरहंतचेइयजणवइविसण्णिविट्ठबहुला' इति पाठान्तरं प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः पुवृ पत्र ३, हीवृ पत्र ८, इतिवृत्तिद्वयेपि व्याख्यातमस्ति । 'सूवयागचित्तचेइयजूयचिइ-सण्णिविट्रवहुला' इति पाठान्तरं प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः हीवृसङ्केतितायां वृत्ता-व्याख्यातमस्ति । रायपसेणइयवृत्तौ वेव ४) — 'आया रतंत-चेइय-जुवइविसिट्ट-(४०-सण्णिविट्ठबहुला' इति पाठो व्याख्यातोस्ति----आकारवन्ति सुन्दराकारानि चैत्यानि युवतीनां च पण्यतरुणीनामिति भावः, विशिष्टानि सन्निविष्टानि, सन्निवेशपाटका इति भाव:, बहुलानि बहूनि यस्यां सा तथा।
- १२. °भेयय (क, ग,); गाहगंठिभेयय (वृषा)।
- १३. रायपसेणइयवृत्तौ (पृ० ४) एतत्पदं नास्ति व्याख्यातम् ।
- १४. निष्टवद्दुया (ख, ग, नावृ) ।
- १५. प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ ज्ञाताधर्मकथायाः वृत्तौ

Ę

कोडुंबियाइण्ण'-णिव्वुयसुहा नड-णट्टग-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलंबग<sup>°</sup>-कहग-पवग-लासग-आइन्खग-लंख-मंख-तूणइल्ल-तुंबवीणिय-अणेगतालायराणुचरिया आरामुज्जाण-अगड-तलाग-दीहिय-वप्पिणि' गुणोववेया\* उव्विद्ध-विउल-गंभीर-खायफलिहा चक्क-गय-मुसुंढि'-ओरोह-सयग्घि-जमलकवाड-घणदुप्पवेसा धणुकुडिलवंकपागारपरिक्खित्ता कविसीसग-वट्टरइय-संठियविरायमाणा अट्टालय-चरिय-दार-गोपुर-तोरण-उण्णय<sup>६</sup>-सुविभत्तरायमगग विवणि-वणियछित्तं -सिप्पियाइण्ण-णिव्वुयसुहा छेयायरिय-रइय-दढफलिह-इंदकीला 'सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-पणियावण-विविहवत्थुपरिमंडिया'' सुरम्मा नरवइ-पवि-इण्ण-महिवइपहा अणेगवरतुरग-मत्तकुंजर-रहपहकर'°-सीय-संदमाणियाइण्ण-जाण-जुग्गा विमउल-णवणलिणि-सोभियजला 'पंडुरवर-भवण-सण्णिमहिया'" उत्ताणगनयण<sup>19</sup>-पेच्छ-णिज्जा पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

#### पुण्णभद्दचेइ य-२ ण्णग-पदं

२. तीसे णं चंपाए णयरीए वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए पुण्णभद्दे नामं चेइए होत्था—चिराईए'' पुव्वपुरिस-पण्णत्ते पोराणे'' सद्दिए कित्तिए'' णाए सच्छत्ते सज्झए

जम्बूढीपप्रज्ञप्तेः हीरविजयवृत्तौ च 'पाषण्डिनां गृहस्थानां च' इति व्यास्थागतं विद्यते । जम्बू-ढीपप्रज्ञप्तेः पुण्यसागरवृत्तौ तु 'पासंडिगिहत्थ-वीसत्थसुहावासा' इति मूलपाठः उल्लिखि-तोस्ति । °सुहवासा (क) ।

- १. कोडुंबियाइण्ण (क, ग)।
- २. विलंबय (ग) ।
- ३. वष्पिण (क, ग, नावृ, जं पुवृ, शावृ) ।
- ४. उप अप इत इत्येतस्य शब्दत्रयस्य स्थाने शकन्ध्वादिदर्शनादकारलोपे उपपेतेति भवति (वृ) । अतोग्रे सर्वेषु प्रयुक्तादर्शेषु 'नंदणवण-सन्निभप्पगासा' इति पाठो दृश्यते । जम्बूद्वीप-प्रज्ञप्तेः हीरविजयवृत्तावपि एष लभ्यते, प्रस्तुत-सूत्रस्य वृत्तौ अस्य पाठान्तरत्वेन उल्लेखोस्ति, जाताधमंकथाया वृत्तौ जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः पुण्य-सागरवृत्तौ च नैष लभ्यते, तेनासौ पाठान्तरत्वेन स्वीक्वतः ।
- ४. मुसंढि (रायवृ पृ० ४, जं० पुद्द पत्र ४, हीवृ पत्र १) ।
- ६. समुण्णय (ख, ग) ।
- ७. वणिच्छित्त (ख, ग, नावृ पत्र ३, राय वृ पृ० ६); वाचनान्तरे छेत्तणब्दस्य स्थाने छेयशब्दो-

भिधीयते तत्र च छेकशिल्पिकाकीर्णेति व्यास्थेयम् (वृ) ।

- **न.** निवुयसुहा (ग) ।
- १. \*विविहवेसपरिमंडिया (ग); विविहवसुपरि-मंडिया (रायवृ पृ० ६, जं० पुवृ पत्र ४, हीवृ पत्र १); पुस्तकान्तरेधीयते—सिंघाडगतिग-चउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहपहेसु पणियावण-विविहवेसपरिमंडिया (वृ) ।
- १०. भवरकर (ग) ।
- ११. रायपसेणइयवृत्तो पंडुरवरभवणपंतिमहिया' इति पाठो लिखितोस्ति ।
- १२. उत्ताणनयण (क, ख, ग, नावृ पत्र ३) ।
- १३. चिराइए (ग); चिर:--चिरकालः आदि:--निवेशो यस्य तच्चिरादिकम् (वृ); ज्ञाताधर्म-कथाया वृत्तौ (पत्र ४) जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः पुण्यसागरवृत्तौ (पत्र ४) च 'चिरादिकं' इत्येव व्याख्यातमस्ति, किन्तु तस्याः हीरविजयवृत्तौ (पत्र ११) 'चिरातीतं' इत्यपि व्याख्यात-मस्ति--चिरकाले भूतभूयः काले आदिर्निवेशो यस्य तच्चिरादिकं चिरकालोतीतो यस्मात्तच्चि-रातीतं वा चिरात्चिरकालीनपर्यायप्राप्तानति-ऋम्य गच्छतीति चिरातिगं वा चिरकालीनेषु

सघंटे सपडागाइपडागमंडिए' सलोमहत्थे कयवेयदिए' लाउल्लोइय-महिए गोसीस-सरसरत्तचंदण-दद्दर-दिण्णपंचंगुलितले उवचियवंदणकलसे' वंदणघड-सुकथ-तोरण-पडि-दुवारदेसभाए आसत्तोसत्त-विउल-वट्ट-वग्धारिय-मल्लदामकलावे 'पंचवण्ण-सरससुरभि-मुक्क"-पुष्फपुंजोवयारकलिए कालागुरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरक्क'-धूव-मघमघेंत'-गंधूद्धुया-भिरामे सुगंधवरगंधगंधिए' गंधवट्टिभूए नड-णट्टग-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलंबग-पवग-कहग-लासग-आइक्खग-लंख-मंख-तूणइल्ल-तुंववीणिय-भुयग-मागहपरिगए बहुजण-जाणवयस्स विस्सुयकित्तिए बहुजणस्स आहुस्स' आहुणिज्जे पाहुणिज्जे अच्चणिज्जे वंदणिज्जे नमंसणिज्जे पूर्याणज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवासणिज्जे दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सण्णिहियपाडिहेरे 'जाग-सहस्सभाग-पडिच्छए'' बहुजणो अच्चेइ आगम्म पुण्णभद्दं'' चेइयं पुण्णभद्दं'' चेइयं !।

#### वणसंड-वण्णग-पदं

३. से णं पुण्णभद्दे चेइए एक्केणं महया वससंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते ॥

४. से णं वणसंड किण्हे किण्होभासे नीले नीलोभासे हरिए हरिओभासे सीए सीओ-भासे णिद्धे णिद्धोभासे तिव्वे तिव्वोभासे किण्हे किण्हच्छाए नीले नीलच्छाए हरिए हरिय-च्छाए सीए सीयच्छाए णिद्धे णिद्धच्छाए तिव्वे तिव्वच्छाए घणकडियकडच्छाए" रम्मे

अफेर्छिमित्यर्थः । स्वीक्रुतपाठे 'चिरातीत' मिति व्याख्यातमभिप्रेतमस्ति ।

- १४. पुराणे (नावृ पत्र ४, रायवृ पृ० ६, जं० पुवृ० पत्र ४) ।
- १४. वित्तिए (क, ख, ग, वृ, नावृ); किसिए (वृपा); रायपसेणइयवृत्तावपि 'किसिए' इति पदं लिखितमस्ति ।
  - १. सपडाए पडागाइपडागमंडिए (वृपा) ।
  - २, °वयद्दीए (क); °वयडिुए (ख, जं० पुवृ पत्र ४) ।
  - ३. बहुष्वादर्श्वेषु 'उवचियचंदणकलसे' इत्यपि पाठो दृश्यते किन्तु 'वंदण' स्थाने 'चंदण' इति पाठो जात: वृत्तौ वन्दनकलगाः माङ्गल्यघटाः इति व्याख्यातमस्ति, अनेन 'वंदणकलसे' इत्येव पाठः सिद्ध्यति ।
  - ४. पंचविहसरिस° (क); ज्ञाताधर्मकथायाः वृत्तौ (पत्र ४) 'सरस' इति पदं व्याख्यातं नैव दुष्यते ।
  - ५. तुरुक्क (नावृ पत्र ४, अं० पुवृ पत्र ४)
  - ६. °मघंत (क, ख)।

- ७. सुगंधवरगंधिए (ख) ।
- जणवयस्स (ग) ।
- E. क्वचिदिदं न दृश्यते (वृ); जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः पुण्यसागरवृत्तावपि एतत्पदं नैव दृश्यते ।
- १०. जागभागदायसहस्सपडिच्छए (वृपा) ।
- ११,१२. पुष्णभद् (क) ।
- १३. घणकडियकडिच्छाए (क, ख); कडच्छए (ग); जीवाजीवाभिगमवृत्तौ (पत्र १८७) 'घणकडितडच्छाए' इति पाठः मूलपाठरूपेण 'घणकडितडच्छाए' इति पाठः मूलपाठरूपेण व्याख्यातोस्ति---इह शरीरस्य मध्यभागे कटि-स्ततोन्यस्यापिमध्यभागः कटिरिव कटिरित्यु-च्यते, कटिस्तटमिव कटितटं घना अन्यान्य-शाखानु प्रवेशतो निबिडा कटितटे --मध्यभागे छाया यस्य स घनकटितटच्छायः, मध्यभागे निबिडतरच्छाय इत्यर्थः, क्वचित्पाठः 'घनकडि-यकडच्छाए' इति, तत्रायमर्थः--कटः सञ्जातो-स्येति कटितः कटान्तरेणोपरि आवृत इत्यर्थः कटितश्चासौ कटश्च कटितकटः घना---निबिडा कटितश्टरयेवाधोभूमौ छाया यस्य स घन-

## महामेहनिकुरंवभूए 🖽

५. से<sup>\*</sup> णं पायवे मूलमंते कंटमंते खंधमंते तयामंते सालमंते पवालमंते पत्तमंते पुष्फमंते फलमंते वीयमंते<sup>\*</sup> अणुपुर्व्व'-सुजाय-रुइल-वट्टभावपरिणए 'एक्कखंधी अणेगसाला' अणेगसाह-प्पसाह-विडिमे अणेगनरवाम-सुप्पसारिय-अगेज्झ-घण-विउल-वद्ध [वट्ट<sup>\*</sup>?]

कटितकटच्छायः । जम्बूढीपप्रज्ञप्तेः शान्तिचन्द्रीयवृत्तौ (पत्र २५) हीरविजयवृत्तौ (पत्र १२) चापि एवमेवास्ति ।

- १. °निकुरुंबभूए (जं० हीवृ पत्र १२) ।
- २. अभयदेवसूरिणा प्रस्तुतसूत्रस्यवृत्तौ ज्ञाताधर्मकथायाः वृत्तौ (पत्र ६) च 'ते णं पायवा, पिंडिम-णीहारिस' इति सूत्रद्वयं बहुवचनान्तं 'सुय-बरहिण' इति सूत्रं एकवचनाग्तं व्याख्यातमस्ति । मलय-गिरिसूरिणा जीवाजीवाभिगमवृत्तौ (पत्र १८७) जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः शान्तिचन्द्रीयवृत्तौ (पत्र २६) च त्रीण्यपिसूत्राणि बहुवचनान्तानि व्याख्यातानि सन्ति ।

अभयदेवसूरिणा प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ वाचनान्तरस्य उल्लेखः कृतोस्ति— एतान्येव वृक्षविशेषणानि वनपण्डविशेषणतया वाचनान्तरेऽधीतानि । एतस्य वाचनान्तरस्याधारेण त्रिष्वपि सूत्रेष् एकवचनान्तः पाठः स्वीकृतः । आदर्शगतः पाठ एवमस्ति— ते णं पायवा मूलमंतो कंदमंतो खंधमंतो तयामंतो सालमंतो पवालमंतो पत्तमंत्तो पुष्फमंतो फलमंतो बीयमंतो अणूपुब्व-सुजाय-रुइल-वट्टभावपरिणया अणेगसाह-प्पसाह-विडिमा अणेगनरघाम-सुप्पसारिय-अग्रेंच्फ्र-घण-विउल-बद्ध- (वट्ट ?) खंधा अच्छिट्-पत्ता अविरलपत्ता अवाईणपत्ता अणइइपत्ता निद्धूय-जरढ-पंडुपत्ता णवहरिय-भिसंत-पत्तभारंधयार-गंभीरदरिसणिज्जा उवणिग्गय-णव-तरुण-पत्त-पत्लव-कोमलउज्जलचलंतकिसलय-सुकुमालपवाल सोहियवरंकुरग्गसिहरा णिच्चं कुसुमिया णिच्चं माइया णिच्चं लवइया णिच्चं थवइया णिच्चं गुलइया णिच्चं गोच्छिया णिच्चं जमलिया णिच्चं माइया णिच्चं विषमिया णिच्चं पणमिया (णिच्चं सुविभत्त-पिडि-मंजरि-बडेंसग-धरा?)णिच्चं कुसुमिय-माइय-लवइय-थवइय-गुलइय-गोच्छिय-जमलिय-जूवलिय-विणमिय-पणमिय-सुविभत-पिडि-मंजरि-वडेसंगधरा ।

पिडिम-णीहारिमं सुगंधि सुह-सुरभि-मणहरं च महया गंधर्द्धणि मुयंता णाणाविहगुच्छगुम्ममंड-वगघरगसुहसेउकेउबहुला अणेगरह-जाण-जुग्ग-सिविय-पविमोयणा सुरम्मा पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ।

- ३. 'हरियमंता' इति क्वचिद् दृश्यते (वृ) । ४. अणुपुव्वि (ग, राय वृ० १०)
- १. 'क' प्रती 'एक्कलंधा अणेगसाला' 'ग' प्रती 'एक्कलंधा' इति पाठभेदाः लभ्यन्ते । वृत्तौ एतत्पाठद्वय-मपि नास्ति व्याख्यातम् । ज्ञाताधर्मकथाया वृत्तावपि (पत्र १) नानयोर्व्याख्या विद्यते । रायपसेणइय वृत्तौ (पृ० १०) जीवाजीवाभिगमवृत्तौ (पत्र १८७) जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः श्रान्तिचन्द्रीयवृत्तौ (पत्र २९) च 'एगखंधी' इति पाठो व्याख्यातोस्ति —ते पादपाः प्रत्येकमेकस्कन्धाः, प्राकृते चास्य स्त्रीत्वमिति एगक्खंधी ।
- ६. ज्ञाताधर्मकथायाः वृत्तौ (पत्र ४) अभवदेवसूरिणा प्रस्तुतपाठो व्याख्यातस्तत्र 'वट्ट' पदमेव व्याख्यात-मस्ति–विपुलो विस्तीर्णो वृत्तश्च स्कन्धो येषां ते तथा मलयगिरिणा जीवाजीवाभिगमस्य वृत्तौ (पत्र १८७) रायपसेणइयवृत्तौ (पृ० १३) च 'वृत्तस्कन्धा' इति व्याख्यातमस्ति । जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः शान्ति-चन्द्रीयवृत्तौ (पत्र २९) 'वद्ध वृत्त' इति पदद्वयमपि नास्ति व्याख्यातम् ।

Ę

खंधे' अच्छिद्दपत्ते अविरलपत्ते अवाईणपत्ते अणईइपत्ते' निद्धूय'-जरढ-पंडुपत्त'-णवहरिय-भिसंत-पत्तभारंधयार-गंभीरदरिसणिज्जे उवणिग्गय'-णव-तरुण-पत्त-पत्लव-कोमलउज्जल-चलंतकिसलय-सुकुमालपवाल-सोहियवरंकुरग्गसिहरे णिच्चं कुसुमिए णिच्चं माइए' णिच्चं लवइए णिच्चं थवइए णिच्चं गुलइए णिच्चं गोच्छिए णिच्चं जमलिए णिच्चं जुबलिए णिच्चं विणमिए णिच्चं पणमिए [णिच्चं सुविभत्त-'पिडि-मंजरि''-बडेंसगधरे ?] णिच्चं कुसुमिय-माइय-लवइय-थवइय-गुलइय-गोच्छिय- जमलिय - जुबलिय - विणमिय - पणमिय-सुविभत्त-पिडि'-मंजरि-वडेंसगधरे ॥

६. सुय-वरहिण-मयणसाल-कोइल-कोहंगक''-भिगारग''-कोंडलग''-जीवंजीवग-णंदीमुह-कविल-पिगलवखग-कारंडक'' - चक्कवाय- कलहंस-सारस-अणेगसउणगणमिहुणविरइयसद्दु-ण्णइयमहुरसरणाइए सुरम्मे संपिडियदरियभमर-महुयरिपहकर-परिलितमत्तछप्पय-कुसुमासवलोल-महुरगुमगुमतगुंजंतदेसभाए 'अब्भितरपुप्फफले बाहिर-पत्तीच्छण्णे पत्तेहि य पुष्फेहि य ओच्छन्न-पलिच्छन्ने''' 'साउफले निरोयए अकंटए''' 'णाणाविहगुच्छ-गुम्म-

- १. वाचनान्तरेऽत्रस्थानेधिकपदान्येव दृश्यते— पाईण-पडीणाययसाला उदीण-दाहिण-विच्छिण्णा ओणय-नय-पणयविष्पहाइयओलंबप-लंबलंबसाहष्पसाहविडिमा अवाईणपत्ता अणुइण्णपत्ता ।
- २. अणईयपत्ता (ख,ग);अणीइपत्ता (जं० झावृ पत्र २९) ।
- ३. निद्धय (ख); निद्धुय (ग) ।
- ४. औपपातिकस्य अप्रयुक्तादर्शे 'पंडुरपत्ता' इत्यपि पाठो लभ्यते ।
- प्र. उचविणिग्गय (राय वृ०पृ० १४, जी० ३।२७४, जं० शावृ पत्र २६, हीवृ पत्र १३) ।
- ६. मुकुलिता (राय वृ० पृ० १४, जीवृ पत्र १८२ जं० झावृ० पत्र २४); मुकुलिता मयूरिता (जं० हीवृ० पत्र १३) ।
- ७. रायपरेणइयवृत्तौ (पृ० १३) जीवाजीवाभिगम वृतौ (पत्र १९२) जम्बूढीपप्रज्ञप्तेः शान्ति-चन्द्रीयवृत्तौ (पत्र २५) च 'पडि-मंजरि' इति पाठो व्याख्यातोस्ति ।
- द. कोष्ठकान्तर्वर्ती पाठ: आदर्शोषु नोपलभ्यते, वृत्तावपि नास्ति व्याख्यातः, किन्तु रायपसे-णइयवृत्तौ (पृ०१४) जीवाजीवाभिगमवृत्तौ (पत्र १८२) च एष पाठो व्याख्यातोस्ति,

जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः शान्तिचन्द्रीयवृत्तावपि (पत्र २५) एषोस्ति व्याख्यातः, तत्र औपपतिकस्य उल्लेखो विद्यते—औपपातिकादौ तु 'सुविभत्त-पिडिमंजरीवर्डिसगधराओ' इति पाठः । संक-लितपाठे एष पाठो विद्यते, तेन पृथक् पाठेपि एष युक्तोस्ति ।

- १०.कोभंगक (औपपातिकवृत्ति हस्तलिखित); कोरक (जी० ३।२७४, रायवृ० पृ० १४, जं० शावु० पत्र ३०) ।
- ११. भिगारक (क, ख); भिगार (ग)।
- १२. कडिलका (ख); कोंडल (ग)।
- १३. कारंड (क, ख); कारंडग (ग)।
- १४. एतानि त्रिण्यपि क्वचिद् वृक्षाणां विशेषणानि दृश्यन्ते (वृ) ।
- १४. निरोया अकंटया साउफला निद्धफला (जी० ३।२७४); रायपसेणइयवृत्ता (पृ० १६) वपि एतानि चत्वारि पदानि एतेनैव क्रमेण व्याख्या-तानि सन्ति । नीरोगका:......अकण्टका:.... स्वादुफला:, स्निग्धफला इत्यपि क्वचित् (जं० जावृ पत्र ३०); साउफले मिट्ठफले निरोयए (नावृ० पत्र ६); प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ 'साउफले' त्ति मिष्ठफलः इति व्याख्यातमस्ति ।

ध. पिंड (ग)।

मंडवगसोहिए'' 'विचित्तसुहकेउभूए'' वावी-पुक्खरिणी'-दोहियासु य सुनिवेसियरम्मजाल-हरए ॥

७. 'पिडिम-णीहारिमं सुगंधिं' सुह-सुरभि-मणहरं च महया गंधद्वणि' मुयंते णाणाविहगुच्छगुम्ममंडवगधरग-सुहसेउकेउवहुले' 'अणेगरह-जाण-जुग्ग-सिविय-पवि-मोयणे' सुरम्मे पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ॥

#### असोगपायव-वण्णग-पदं

५. तस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एवके असोगवरपायवे पण्णत्ते कुस-विकुस-विसुद्ध-रुक्खमूले मूलमंते कंदमंते \*खंधमंते तयामंते सालमंते पत्तमंते पुष्फमंते फलमंते वीयमंते अणुपुब्व-सुजाय-रुइल-वट्टभावपरिणए अणेगसाह-प्पसाह-विडिमे अणेगनरवाम-सुप्पसारिय-अग्गेज्झ-घण-विउल-बद्ध [वट्टां? ?] खंधे अच्छिद्दपत्ते अविरलपत्ते अवाईणपत्ते अणईइपत्ते निद्धूय-जरढ-पंडुपत्ते णवहरियभिसंत-पत्तभारंधयार-गंभीरदरिस-णिज्जे उवणिग्गय-णव-तरुण-पत्त-पल्लव-कोमलउज्जलचलंतकिसलय-सुक्रुमालपवाल-सोहियवरंकुरग्गसिहरे णिच्चं कुसुमिए णिच्चं माइए णिच्चं लवइए णिच्चं थवइए णिच्चं गुलइए णिच्चं गोच्छिए णिच्चं जमलिए णिच्चं माइए णिच्चं विणमिए णिच्चं पणमिए [णिच्चं सुविभत्त-पिडि-मंजरि-वडेंसगधरे'' ?] णिच्चं कुसुमिय-माइय-ल्वइय-थवइय-गुलइय-गोच्छिय-जमलिय-जुवलिय-विणमिय-पणमिय-सुविभत्त-पिडि-मंजरि-वडसगधरे।

- १. भंडवगरम्मसौहिए (ग);क्वचित् 'णाणाविह-गुच्छगुम्ममंडवगरम्मसोहिए' रम्मेत्ति क्वचिन्न-दृश्यते (वृ)।
- २. विचित्तसुहसेउकेउबहुले (वृपा); विचित्तसुह-केउबहुले (जी० ३।२७४; जं० शावृपा० पत्र ३०)।
- ३. पुक्खरणी (क, ख, ग)।
- ४. पिडिमं णीहारिमं सुगंधि (क); पिडिमणीहा-रिमसुगंधि (ख, ग)।
- ४. गंधद्धुणि (ख, ग) ।
- ६. सुहसेउकेउबहुला (रायवृ० पृ० १७, जी० ३।२७६) ।
- ७. अणेगसगड रह-जाण-जुग्ग-सोया-संदमाणिय-पडिमोयणा (जी० ३।२७६) ।
- ५. अभोकपादपवर्णके क्वचिदिदमधिकमधीयते— दूरोवगयकंदमूलवट्टलट्ठसंठियसिलिट्ठघणमसिण-निद्धजायनिरुवहउव्विद्धपवरखंघी अणेगणरप-वरभुयागेज्फे कुसुमभरसमोणमंतपत्तलविसाले महुकरिभमरगणगुमगुमाइयनिलितर्जाड्डतसस्सि-

रीए णाणासउणगणमिहणसुमहुरकण्णसुहपलत्त सद्महुरे (वृ) । रायपसेणइयवृत्तौ (पृ० १०) एष पाठो ग्रन्थान्तरप्रसिद्धपाठरूपेण व्याख्यातो दृश्यते-----'दूरुग्ग्यकंदमूलवट्टलट्ठसंघि - असिलिट्टे धणमसिणसिणिद्वअणुपुव्दिसुजायणिरुवहतोव्दि-द्वपवरखंधी अणेगणरपवरभुयअगेज्फे कुमुमभर-समोणमंतपत्तलविसालसाले महुकरिभमरगण-गुमुगुमाइयणिल्तिउड्वेंतसस्सिरीए णाणासउण-गणमिहणसुमहुरकण्णसुहपलत्तसद्महुरे कुसवि-पासाइए दरिसणिज्जे कुसविसुद्धरु<del>व</del>खमूले । अभिरूवे पडिरूवे ।' अस्य वाचनान्तरस्य रायपसेणियवृत्तिगतपाठस्य च अध्ययनेन एतत् स्पष्टं भवति--लिपिदोषेण पाठानां परिवर्तनं जातम्, वृत्तिकारैरपि यादृशाः पाठा लब्धास्ता-दृशा व्याख्याता: । उदाहरणरूपेण चिन्हाङ्कित-पाठानां वाचनान्तरपाठेस्तुलना कार्या ।

६. सं० पा०---कंदमंते जाव पविमोयणे ।

१०,११. द्रष्टव्यं पञ्चमसूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

#### समोसरण-पयरण

पिडिम-णीहारिमं सुगंधि सुह-सुरभि-मणहरं च महया गंधर्द्धणि मुयंते णाणाविह-गुच्छगुम्ममंडवगघरग-सुहसेउकेउबहुले अणेगरह-जाण-जुग्ग-सिविय°-पविमोयणे' सुरम्मे पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ॥

٤. से णं असोगवरपायवे अण्णेहिं बहूहि तिलएहि लउएहिं छत्तोवेहि सिरीसेहि सत्तिवण्णेहिं दहिवण्णेहि लोद्धेहि धवेहि चंदणेहि अज्जुर्णेहि णीवेहि कुडएहि कलंबेहिं फणसेहि दाडिमेहिं सालेहि तालेहि तमालेहि पियएहि पियंगूहि पुरोवगेहिं रायरुक्खेहि णंदिरुक्खेहि सन्त्रओ समंता संपरिक्खित्ते ।।

१० ते णं तिलया लउया \*छत्तोवा सिरीसा सत्तिवण्णा दहिवण्णा लोद्धा धवा चंदणा अज्जुणा णीवा कुडया कलंवा फणसा दाडिमा साला ताला तमाला पियया पियंगू पुरोवगा रायरुक्खा° णंदिरुक्खा कुस-विकुस-विसुद्ध-रुक्खमूला मूलमंतो कंदमंतो जाव'\* •णिच्चं कुसुमिय-माइय-लवइय-थवइय-गुलइय-गोच्छिय-जमलिय-जुवलिय-विणमिय-पणमिय-सुविभत्त-पिंडि-मंजरि-वडेंसगधरा।

पिडिम-णीहारिमं सुगंधि सुह-सुरभि-मणहरं च महया गंधर्द्धाण मुयंता णाणाविह-गुच्छगुम्ममंडवगघरग-सुहसेउकेउवहुला अणेगरह-जाण-जुग्ग°-सिविय-पविमोयणा'' सुरम्मा पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

११. ते णं तिलया लउया जाव<sup>1</sup> णंदिरुक्खा अण्णाहि<sup>1</sup> बहूहिं पउमलयाहिं णागलयाहिं असोगलयाहिं चंपगलयाहिं चूयलयाहिं वणलयाहिं वासंतियलयाहिं अइमुत्तयलयाहिं कुंदलयाहिं सामलयाहिं सब्वओ समंता संपरिक्खिता। ताओ णं पउमलयाओ 'जाव सामलयाओ'' णिच्चं कुसुमियाओ जाव<sup>1</sup> वडेंसगधराओ' पासादीयाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ।।

```
१. परिमोयणे (ख) ।
```

```
२. अण्णेहि य (ग) ।
```

- ३. बउएहि (क); बकुलैः (वृ) ।
- ४. सत्तवण्णेहि (रायवृ० पृ० १२) ।
- ४. कलंबेहि सब्वेहि (क. ख); सब्वेहि (ग, वृ); जीवाजीवाभिगमे (३।३८८) तद्वृत्तौ च तथा रायपसेणइयवृत्ता (पृ० १२) वृु्द्धृते प्रस्तुत-सूत्रपाठे 'सब्वेहि' एतत्पदं नैव दृश्यते ।

```
६. × (क,ख) ।
```

७. रायपसेणियवृत्ता (पृ० १२) बुद्धृते पाठे एतत्पदं नैव दृश्यते । जीवाजीवाभिगमे (३।३८८) च अस्य स्थाने 'पारावय' इति पदं लभ्यते ।

- १. सं० पा० कंदमंतो एएसि वण्णको भाणि-यब्वो जाव सिविय ।
- १०. ओ० सू० ५।
- ११. परिमोयणा (ख, ग) ।
- १२. ओ० सू० १० ।
- १३. अण्णेहि (क,ग); अण्णेहिय (ख)।
- १४. × (क, ख, ग); रायपसेणइयवृत्ता (पृ० १८) बुद्धृते औषपातिकपाठे चिह्नाङ्कितः पाठो विद्यते । तदाधारेणासौ मूले स्वीक्रतः, उक्त कमेणाप्यसौ युज्यते । जीवाजीवाभिगमे (३।३६०) पि एतत्संवादी पाठो दृश्यते । १४. ओ० सू० ४ ।
- १६. वडिसयधरीयो (क, ग); वडिसयधारीओ (ख) ।

१२. तस्स<sup>९</sup>णं असोगवरपायवस्स उवर्रि बहवे अट्ठ अट्ठ मंगलगा पण्णत्ता, तं जहा---सोवत्थिय-सिरिबच्छ-नंदियावत्त<sup>९</sup>-वद्धमाणग-भद्दासण-कलस-मच्छ-दप्पणा सब्व-रयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पहा समीरिया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा।

तस्स णं असोगवरपायवस्स उर्वार बहवे किण्हचामरज्झया नीलचामरज्झया लोहियचामरज्झया हालिद्दचामरज्झया सुविकलचामरज्झया अच्छा सण्हा रुप्पपट्टा वइरदंडा जलयामलगंधिया सुरम्मा पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ।

तस्स णं असोगवरपायवस्स उर्वार बहवे छत्ताइछत्ता पडागाइपडागा घंटाजुयला चामरजुयला उप्पलहत्थगा पउमहत्थगा कुमुयहत्थगा' नलिणहत्थगा सुभगहत्थगा सोगंधियहत्थगा पुंडरीयहत्थगा महापुंडरीयहत्थगा सयपत्तहत्थगा सहस्सपत्तहत्थगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ।।

#### पुढविसिलापट्ट्य-वण्णग-पवं

१३. तस्स णं असोगवरपायवस्स हेट्ठा 'ईसि खंध<sup>\*</sup>-समल्लीणे'', एत्थ णं महं एक्के पुढविसिलापट्टए पण्णत्ते--विक्खंभायाम'-उस्सेह-सुप्पमाणे किण्हे 'अंजणग-वाण-कुवलय'-

- १. वृत्तिकृता एतत् सूत्रं वाचनान्तरत्वेन उट्टच्चि-तम्—इह लतावर्णनान्तरमणोकवर्णकं पुस्त-कान्तरे इदमधिकमधीयते । रायपसेणइयसूत्रे (३,४) ओवाइयगमेणं इति संक्षिप्तपाठीस्ति तस्य वृत्तौ मलयगिरिणा एतत्पूर्णं सूत्रं व्या-ख्यातमस्ति । प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ अभयदेव-सूरिणा ये ये पाठाः वाचनान्तरत्वेन उट्टच्चि-तास्ते भगवत्यादिसूत्राणां वृत्तौ मूलपाठत्वेन व्याख्याताः सन्ति । तेन ज्ञायते अभयदेवसूरिणा ये आदर्शाः प्रमाणीकृतास्ते मूलपाठरूपेण अन्ये च वाचनान्तररूपेण उट्टच्चिताः ।
- २. क्वचिद् 'नंदावत्त' इति पाठः (रायवृ पृ० १६) ।
- ३. 'कुसुमहत्थय' त्ति पाठान्तरं (वृ) ।
- ४. खंधी (क)।
- ५. मलयगिरिणा रायपसेणइयवृत्तौ (पृ० २२) 'ईसि खंध-समल्लीणे' इति पाठः 'पुढविसिला-पट्टए पण्णत्ते' इति पाठानन्तरं व्याख्यातः — एको महान् पृथ्वीसिलापट्टक प्रज्ञप्तः, कथम्भूत इत्याह 'ईसि खंध-समल्लीणे' इत्यादि, इह स्कन्धः स्थुडमित्युच्यते तस्याणोकवरपादपस्य यत्

स्थुडं तत् ईषद्-मनाक् सम्यग्लीनस्तदासन्न इत्यर्थः । प्रस्तुतसूत्रे अभयदेवसूरिणा पूर्वमेव व्याख्यात:----'ईसिं खंघ-समल्लीणे' मनाक् स्कन्धासन्न इत्यर्थः । 'एत्थ णं महं एक्के' इत्यत्र 'एत्थ णं' ति झब्द: अशोकवरपादपस्य यदधोत्रेत्येवं सम्बन्धनीय: । रायपसेणइयसूत्रस्य समायोजना अधिकं सङ्ग्रतास्ति ।

- ६. अतः रायपसेणइयवृतो व्याख्यातः पाठः स्वीकृतपाठाद्भिन्नोस्ति । वाचनान्तरपाठेन तस्य प्रायः साम्यमस्ति—विवर्खभायामसुप्पमाणे किण्हे अंजणगघणकुवलयहलहरकोसेज्जसरिसो आगासकेसकज्जलकक्केयणइंदनीलअयसिकुसुम-प्पयासे भिगंजणभंगभेयरिटुगनीलगुलियगवला-इरेगे भमरनिकुरंबभूए जंबूफलअसणकुसुमबंध-णनीलुप्पलपत्तनिकरमरगयासासगनवणकीयासि-वण्णे णिढे घणे अज्भुसिरे रूवगपडिरूवग-दरिसणिज्जे आयंसतलोवमे सुरम्मे सीहासण-संठिए सुरूवे मुत्ताजालखइयंतकम्मे आइणग-रूय-बूर-नवणीय-तूलफासे सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे ।
- ७. अंजणवाणकुवलयधणकुवलय (क) ।

हलधरकोसेज्जागास-केस-कज्जलंगी खंजण-सिंगभेद-रिट्ठय-जंबूफल-असणग-सणबंधण-णीलुप्पलपत्तनिकर-अयसिकुसुमप्पगासे मरगय-मसार-कलित्त-णयणकीयरासिवण्णे' णिद्ध-घणे अट्ठसिरे आयंसय-तलोवमे सुरम्मे ईहामिय-उसभ-तुरग-णर-मगर-विहग-वालग-किण्णर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर' - वणलय-पउमलयभत्तिचित्ते' आईणग-रूय\*-बूर-णवणीय-तूलफासे सीहासणसंठिए पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे'।।

## कूणियराय-वण्णग-पदं

१४ तत्थ णं चंपाए णयरीए कूणिए णामं राथा परिवसइ—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे अच्चंतविसुद्ध-दीहराय-कुल-वंस-सुप्पसूए णिरंतरं रायलक्खण-विराइयंगमंगे 'वहुजण-वहुमाण-पूइए'' सव्वगुण-समिद्धे खतिए मुइए मुद्धाहिसित्ते माउ-पिउ-सुजाए दयपत्ते सीमंकरे सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे मणुस्सिदे जणवयपिया जणवयपाले जणवयपुरोहिए सेउकरें केउकरे णरपवरे पुरिसवरे पुरिससीहे पुरिसवग्धे पुरिसासीविसे पुरिसपुंडरीए' पुरिसवरगंधहत्थी अड्ढे दित्ते वित्ते विच्छिण्ण-विउल-भवण-सयणासण-जाण-वाहणाइण्णे बहुधण-बहुजायरूवरयए आओग-पओग-संपउत्ते विच्छडिुय-पउर-भत्तपाणे बहुदासी-दास-गो-महिस-गवेलगप्पभूए पडिपुण्ण-जंतकोस-कोट्ठागाराउधागारे' वलवं दुब्बलपच्चामित्ते ओहयकंटयं निहयकंटयं मलियकंटयं उद्धियकंटयं अकंटयं' ओहय-सत्तुं निहयसत्तुं मलियसत्तुं उद्धियसत्तुं निज्जियसत्तुं पराइयसत्तुं ववगयदुब्भिक्खं मारि-भय-विप्पमुक्कं खेमं सिवं सुभिक्खं 'पसंत-डिंव-डमरं''' रज्जं पसासेमाणे'' विहरइ ॥ धारिणीदेवी-वण्णग-पदं

१५. तस्स णं कोणियस्स रण्णो धारिणी णामं देवी होत्था—सुकुमाल-पाणिपाया 'अहीण-पडिपुण्ण-पंचिदियसरीरा''' लक्खण-वंजण-गुणोववेया माणुम्माणप्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सब्वंगसुंदरंगी ससिसोमाकार''-कंत-पिय-दंसणा सुरूवा करयल-परिमिय-पसत्थ-तिवली-वलिय-मज्झा 'कुंडलुल्लिहिय-गंडलेहा''' कोमुइ''-रयणियर-विमल-पडिपुण्ण- सोम-

- १. °रासिदित्ते (ख) ।
- २. × (वृ) ।
- ३. °भित्तिचित्ते (वृ) ।
- ४. रुय (ख, वृ) ।
- २. वाचनान्तरे पुनः सिलापट्टकवर्णकः किञ्चिद-न्यथा दृश्यते--अंजणगधणकुवलयहलहरकोसेज्ज-सरिसे आगासकेसकज्जलकवकेयणइंदणीलअय-सिकुसुमप्पगासे भिगंजणसिंगभेयरिटुगनील-गुलियागवलाइरेगभमरनिकुर्रबभूए जंबूफल-असणकुसुमबंधननीलुप्पलपत्तनिगरमरगयासास-गनयणरासिवण्णे निद्धे घणे अज्फुसिरे रूवग-पडिरूवदरिसणिज्जे मुत्ताजालखइयंतकम्मे (वृ) ।
- ६. × (व)।
- ७. पुरिसवरपुंडरीए (ख, रायवृ० पृ० २४) ।
- =. °राउहधरे (रायव्० पृ० २६) ।
- ६. अप्पडिकंटयं (रायवृ० पृ० २६) ।
- १०. 'पसंताहिय-डमरं' ति क्वचित्पाठः (वृ) ।
- ११. पसाहेमाणे (क, ग, वृपा) ।
- १२. अहीणपंचिदियसरीरा (क); क्वचित्तु— अहीणपुण्णपंचिदियसरीरा (वृ) ।
- १३. °सोम्माकार (वृ) ।
- १४. कुंडलल्लिहिय (क); कुंडलोल्लिखितपीन-गंडलेखा (वृपा)।
- १४. कोमुई (क); कोमुईय (ख); सर्वासु प्रतिषु 'कोमुइः···सोमवयणा' अयं पाठः पूर्वं वर्तते,

वयणा सिंगारागार-चारुवेसा संगय-गय-हसिय-भणिय-'विहिय-[चिट्ठिय' ?'] विलास-सललिय-संलाव-णिउण-जुत्तोवयार-कुसला' 'सुंदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्णविलासकलिया'' पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा कोणिएण' रण्णा भिभसारपुत्तेण' सद्धि अणुरत्ता अविरत्ता इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी' विहरइ ॥

#### पवित्ति-वाउय-पदं

१६. तस्स णं कोणियस्स<sup>°</sup> रण्णो एक्के पुरिसे विउल-कय-वित्तिए भगवओ पवित्ति-वाउए भगवओ तद्देवसियं पवित्ति णिवेदेइ ॥

१७. तस्स णं पुरिसस्स वहवे अण्णे पुरिसा दिण्ण-भति-भत्त-वेयणा भगवओ पविस्ति-वाउया भगवओ तद्देवसियं पविस्ति णिवेदेति ॥

१८. तेणं कालेणं तेणं समएणं कोणिए राया भिभसारपुत्ते' वाहिरियाए उवट्ठाण-सालाए अणेगगणणायग-दंडणायग''-राईसर-तलवर-माडंत्रिय-कोडं्विय''-मंति-महामंति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड-पीढमद्द-नगर-निगम - सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय- संधिवाल-सद्धि संपरिवुडे विहरइ ॥

## महावीर-वण्णग-पर्द

१६ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे सहसंबुद्धे

'कुंडलुस्लिहियगंडलेहा' इति: पाठ: पम्चात् वर्तते ।

- १. वृत्तिकृता 'विहितं चेष्टितम्' इति व्याख्या-तम् । ५१ सूत्रस्य वाचनान्तरे 'चेट्ठिय' इति पदमुपलभ्यते । रायपसेणइयवत्तौ (पृ० २९) समुद्धृते पाठेपि 'चेट्ठिय' इति पदं दृश्यते, सम्भाव्यते अत्रापि प्राचीनलिप्यां विद्यमानं 'चिट्ठिय' इति पदं अर्वाचीनलिप्यां 'विहिय' मिति रूपे प्रावर्तितमभूत् ।
- २. कुसला बिबोट्टी (क) ।
- × (क, ख, ग, वृ); क्वचिदिदमन्यद् दृ्ष्यते—सुंदरथण - जधण-वयण - कर-चरण-नयण-लादण्णविलासकलिया (वृ)।
- ४. दशाश्रुतस्कंधस्य दशम्या दशाया द्वितीय सूत्रस्य व्याख्यायां वृत्तिकृता भिन्नपद्धतिकः पाठः समुद्धृतः---तस्य देवी समस्तान्तःपुर-प्रधाना भार्या सकलगुणसमन्विता चेल्लगा नाम्नी तस्या वर्णको यथा औषपातिकनाम्नि ग्रंथेऽभिहितस्तथाभिधातव्यः, स चायं--

'सुकुमालपाणिपाया अहीणपडिपुण्णपंचेंदिय-सरीरा लक्खणवंजणगुणोववेया माणुम्माण-पमाणपडिपुण्णसुजायसव्वंगसुंदरगा' इत्यादि वर्णको वाच्यः जावत्ति यावत्करणात् 'चेल्लणाए सद्धि अणुरत्ते अविरत्ते इट्ठे सद्करिसे रसरूव-गंधे पंचविहे माणु्स्सए कामभोगे पच्चणु-ब्भवमाणे विहरइ' इति पदकदम्बकपरिग्रहः विस्तरव्याख्या तूपपातिकानुसारेण वाच्या नेह विस्तरभिया प्रतन्यते । किन्तु चेल्लणायाः वर्णने नैष पाठः सङ्गच्छते । 'सेणिएणं सदि अणुरत्ता अविरत्ता' इत्यादिपाठपद्धतिः समी-चीना भवेत् ।

- १. × (वृ) ।
- ६. पच्चणुब्भवमाणी (क, ग) ।
- ७. कुणियस्स (क, ख) ।
- <. वे**द**णा (क) ।
- ६. भंभसारपुत्ते (क); भिभिसारपुत्ते (वृ) ।
- १०· × (क, ख, ग) ।
- ११. कोडंबिय (क, ख, ग)।

पुरिसोत्तमे पुरिससीहे पुरिसवरपुंडरीए पुरिसवरगंधहत्थी अभयदए चवखुदए मग्गदए सरण-दए जीवदए दीवो ताणं सरणं गई पइट्ठा धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टी अप्पडिहयवरनाणदं-सणधरे वियट्रछउमे' जिणे जाणए तिण्णे तारए मुत्ते मोयए बुद्धे बोहए सव्वण्णू सव्वदरिसी सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तगं सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपाविउकामे— भुयमोयग-भिग -नेल-कज्जल- पहट्ठभमरगण-णिद्ध-निकुरुंब- निचिय-कुंचिय- पयाहिणावत्त-मुद्धसिरए दालिमपुप्फप्पगास-तवणिज्जसरिस-निम्मल-सुणिढ'-केसंत-केसभूमी घण-निचिय-सूवद्ध-लक्खणुन्नय-कुडागारनिभ-पिडियग्गसिरए छत्तागारुत्तिमंगदेसे णिव्वण-सम-लट्ठ-मट्ठ-चंदद्धसम-णिडाले उडुवइपडिपुण्ण-सोमवयणे अल्लीणपमाणजुत्तसवणे सुस्सवणे ' पीण-मंसल-कवोलदेसभाए 'आणामियचावरुइल-किण्हब्भराइ तणु-कसिण-णिद्धभमुहे'' अवदालिय-पुंडरीयणयणे कोयासिय-धवल-पत्तलच्छे गरुलायतउज्जु-तुंग-णासे ओयविय-सिल-प्पवाल-पंडुरससिसयल-विमलणिम्मलसंख-गोक्खीर-फेण-कुंद-दगरय-विवफल-सण्णिभाहरोट्ठे मुणालिया-धवलदंतसेढी अखंडदंते अप्फुडियदंते अविरलदंते सुणिद्धदंते सुजायदंते एगदंत-सेढी विव अणेगदंते हुयवहणिद्वंत-धोय-तत्त- तवणिज्ज-रत्ततलतालुजीहे अवट्ठिय-सुविभत्त-चउरंगूल-सुष्पमाण-कंबुवर- सरिसगीवे चित्तमंसू मंसलसंठिय-पसत्थ-सद्दूल-विउलहण्ए

१. वियट्टछउमे अरहा जिणे केवली सत्तहत्थुस्सेहे समचउरससंठाणसंठिए वज्जरिसहनाराय-संघयणे अणुलोमवा उवेगे कंकम्गहणी कवोयपरि-णामे सडणिपोसपिट्ठंतरोरुपरिणए पडमुप्पल-गंधसरिसनिस्साससुरभिवयणे छवि निरायंक-उत्तमपसत्यअइसेयनिरुवमपले (पाठान्तरेण-----तले) जल्लमल्लकलंकसेय रयदोसवज्जियसरीर-निरुवलेवे छायाउज्जोइयंगमंगे घणनिचियसुबद-लक्लणुण्णयकूडागा रनिभर्पिडियग्गसिरए सामलि-बोंडघगनिचियच्छोडियमिउविसयपसत्यसुहुमल-क्लणसुगंधसुन्दरे....(वृ) । वृत्तिकृता 'संपाविउ-कामे' इति पाठस्य व्याख्यानन्तरं लिखितमस्ति-— ·जिणे जाणए' इत्यादि विशेषणानि क्वचिन्त दुश्यन्ते, दुश्यन्ते पुनरिमानि-'अरहं' ति (वृत्ति पत्र २९) अत्र वृत्तिकृतां न स्पष्टीकृतं बाचना-न्तरे कियन्ति विशेषणानि दुश्यन्ते । 'भुयमोयग' इति पाठस्य व्याख्यावसरे वृत्तिकृता लिखितम्— अधिकृतवाचनायां भुजमोचकशब्दादारभ्यवेद-मधीयते ( 'दारभ्यचेद' —मुद्रितवृत्ति ) न साम-लीत्यादि । किन्तु एतेन 'अरहा' इत्यत: प्रारभ्य 'सामलि°' वाक्यांशपर्यन्तं पाठो

वाचनान्तरेस्ति—-इति न स्पष्टं भवति । तथापि अधिकृतवाचना भुजमोचकशब्दादेव 'प्रतीयते' अन्यथा शरीरवर्णकविशेषणानां द्विरुक्तता स्यात् । प्रतिपाठावलोकनेनापि एतन्मत सर्माथितं भवति ।

वियट्टछउमे अरहा जिणे केवली जिणे जाणए तिण्णे तारए मुत्ते मोयए बुद्धे कोहए सब्बण्णू सब्बदरिसी सत्तहत्थुस्सेहे समचउरंस-संठाणसंठिए वञ्जरिसहसंधयणे सरीरे निरुवलेवे छायाउज्जोइयंगमंगे जल्लमल्लकलंकसेयरहिय-सरीरे सिवमयल.... (क) ।

वियट्टछउमे अरहा जिणे केवली जिणे जाणए तिण्णे तारए मुत्ते मोयए बुद्धे बोहए सव्वण्णू सच्वदरिसी सत्तहत्थुस्सेहे समचउरंस-संठाणसंठिए वज्जरिसहनारायसंघयणे जल्ल-मल्लकलंकसेयरहियसरीरे सिवमयल .... (ख) ।

- २. सिणिद्ध (क) ।
- ३. × (क, ख)।
- ४. वाचनान्तरे तु दृश्यते --- 'आणामियचावरुइल-किण्हब्भराइसंदियसंगयआययसुजायभमुए' (वृ)!

'जुगसन्निभ-पीण-रइय-वरमहिस-वराह-सीह-सद्दूल-उसभ-नागवरपडिपुण्णविउलक्खंधे पीवर-पउट्ठसंठिय'-सुसिलिट्ठ'-विसिट्ठ-घण-थिर-सुबद्ध - संधि-पुरवर - फलिह - वट्टियभुए' भुयगीसर-विउलभोग-आयाण-पलिहउच्छूढ'-दीहबाहू'' रत्ततलोवइय-मउय-मंसल-सुजाय-लक्खणपसत्थ-अच्छिद्दजालपाणी पीवरकोमलवरंगुली' आयंब-तंब-तलिण-सुइ-रुइल-णिद्धणखे चंदपाणिलेहे सूरपाणिलेहे संखपाणिलेहे चक्कपाणिलेहे दिसासोत्थियपाणिलेहे 'चंद-सूर-संख-चनक-दिसासोत्थियपाणिलेहे'' 'कणग-सिलायलूज्जल-पसत्थ-समतल-उवचिय-विच्छिण्ण-पिहुलवच्छे सिरिवच्छंकियवच्छे अकरंडुय-कणग-रुयय-निम्मल-सुजाय-निरुवहयदेहधारी सण्णयपासे संगयपासे सुंदरपासे सुजायपासे मियमाइय-पीण-रइय-पासे उज्जुय-सम-सहिय-जच्च-तणु-कसिण-णिद्ध-आइज्ज-लडह-रमणिज्जरोमराई झस-विहग-सुजाय-पीण-कुच्छी 'झसोयरे सुइकरणे''' गंगावत्तग-पयाहिणावत्त-तरंगभंगुर-रविकिरणतरुण-बोहिय-अकोसायंत-पउम-गंभीर-वियडणाभे''' साहय-सोणंद-मुसल-दप्पण-णिकरियवरकणगच्छरुसरिस-वरवइर-वलियमज्झे पमुइयवर-तुरग-सीहवर''-वट्टियकडी 'वरतुरग-सुजाय-सुग्रज्झदेसे'' आइण्ण-हउव्व-णिरुवलेवे वरवारण-तुल्ल-विक्कम-विलसियगई गयससण-सुजाय-सन्निभोरू सामुगग\*-णिमग्ग-गूढजाणू एणी-कुरुविंद"-वत्त-वट्टाणुपुब्वजंघे संठिय-सुसिलिट्ठ\*\*-गूढगुष्फे सुष्पइट्ठिय-कुम्मचारुचलणे अणुपुव्वसुसंहयंगुलीए'' उण्णय-तणु-तंव-णिद्धणवखे रत्तुप्पलपत्त-मउय-सुकुमाल-कोमलतले अट्ठसहस्सवरपुरिसलवखणधरे आगासगएणं चक्केण, आगासगएणं

- १. सुसंठिय (ख, ग) ।
- २. सुसलिट्ठ (क); सलिट्ठ (वृ०) ।
- ३. वट्टियबाहू (वृ); वाचनान्तरे—'पुरवरफलिह-वट्टियभूए' इत्येतावदेव भुजविशेषणं दृश्यते । (वृ०) ।
- ४. पलिउच्छूढ (क); फलिहउच्छूढ (ग, वृपा) ।
- वाचनान्तरे— 'युगसन्निभपीन रतिदपीव रपउट्ठ-संठियसुसिलिट्ठविसिट्ठघणथिरसुबद्धसंधि' (वृ) ।
- ६. क्वचित् तु दृश्यते-----गीवरवट्टियसुजायकोमल-वरंगुली' (वृ)
- ७. वाचनान्तरेऽधीयते—'रविससिसंखवरचक्कसो -त्थियविभत्तसुविरइयपाणिलेहे 'अणेगवरलक्खणू-त्तिमपसत्थसुइरइयपाणिलेहे' (वृ) ।
- प. वाचनान्तरे तु वक्षोविशेषणांन्येवं दृष्यन्ते— 'उवचिय - पुरवरकवाडविच्छिन्चपिहुलवच्छे, 'कणयसिलायलुज्जलपसत्थसमतलसिरिवच्छरइ-यवच्छे' (वृ) ।
- ٤. 'अट्ठसहस्सपडिपुण्णवरपुरिसलवखणधरे' ति क्वचिद् दृश्यते (दृ); 'क, ख' आदर्शयोरपि एष पाठो दृश्यते ।

- १०. भसोयरे सुइकरणे पउमवियडणाभे (क); भसोदरपउमवियडणाभे (वृपा) ।
- ११. विउडणाभे (क, ख) वियडणाहे (वृ) ।
- १२. सीहअइरेग (वृषा) ।
- १३. वाचनान्तरे तु 'पसत्थवरतुरगगुज्भदेसे' (वृ) ।
- १४. समुग्ग (ग) ।
- १४. कुरुविंद (क, ख) ।
- १६. सुसलिट्ठविसिट्ठ (क); सुसिलिट्ठविसिट्ठ (ख)।
- १७. अणुपुब्बसुसाहयपीवरंगुलीए (वृ) ।
- १८. वाचनाग्तरेधीयते--- नगनगरमगरसागरचक्कं-कवरंकमंगलंकियचलणे विसिट्ठरूवे हुयवहनिद्धूम-जलियतडितडियतरुणरविकिरणसरिसतेए अणा-सवे अममे अकिंचणे छिन्नसोए निरुवलेवे ववगयपेमरागदोसमोहे निग्गंथस्स पवयणस्स देसए सत्थनायगे पइट्ठावए समणगपई समण-गविदपरिवर्ड्ढिए चउत्तीसबुद्धवयणाइसेसपत्ते पणतीससच्चवयणाइसेसे (वृ); 'क' आदर्श्वे पि एष पाठो लभ्यते ।

छत्तेणं, आगासियाहि चामराहि,'आगासफालियामएणं' सपायवीढेणं सीहासणेणं,धम्मज्झएणं पुरओ पकड्ढिज्जमाणेणं, चउद्दसहिं समणसाहस्सीहिं, छत्तीसाए अज्जियासाहस्सीहि सद्धि संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे चंपाए नयरीए वहिया उवणगरग्गामं उवागए चंपं नगरिं पुण्णभद्दं चेइयं समोसरिउकामे ।।

## पवित्ति-वाउयस्सनिवेदण-पदं

२०. तएणं से पवित्ति'-वाउए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ-तुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए ण्हाए कयवलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धपावेसाइं मंगलाइं' वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमहम्धाभरणालंकिय-सरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता चंपाए णयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव कोणियस्स रण्णो गिहे जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव कूणिए राया भिभसार-पुत्ते' तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजर्लि कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी—जस्स णं देवाणुप्पिया दंसणं कंखंति, जस्स णं देवाणुप्पिया दंसणं पीहंति', जस्स णं देवाणुप्पिया दंसणं पत्थंति', जस्स णं देवाणु-पिया दंसणं अभिलसंति, जस्स णं देवाणुप्पिया णामगोयस्स वि सवणयाए हट्ठ-तुट्ठ'-'चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण हियया भवंति, से णं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे चंपाए णयरीए उवणगरग्गामं उवागए चंपं णर्गार पुण्णभद्दं चेइयं समोसरिजकामे । 'तं एयं णं'' देवाणु-प्पियाणं पियट्ठ्याए पियं णिवेदेमि, पियं भे भवउ ।

## सविहि-णमोत्यु-पदं

२१. तए णं से कूणिए राया भिभसारपुत्ते तस्स पवित्ति-वाउयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठ-तुट्ठ''- चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण-°हियए'' वियसिय-वरकमल-णयण-वयणे पयलिय-वरकडग-तुडिय-केऊर-मउड-कुंडल-हार-विरायंतरइयवच्छे'' पालंब-पलंवमाण-घोलंतभूसणधरे ससंभमं तुरियं चवलं नरिंदे सीहास-णाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता'' पाउयाओ ओमुयइ,

```
१. सेयवरचामराहि (ख) ।
```

- २. आगासफलियामएणं (क, ग); आगासगएणं फलियामएणं (ख)।
- ३. पउत्ति (क, वृ) ।
- ४. मंगल्लाइं (ग, वृ) ।
- ४. भंभसारपुत्ते (ग) ।
- ६ अंजुलि (क) ।
- ७. पेहेंति (ख) ।
- ५. पीच्छंति (फ); पिच्छंति (ख) ।
- ६. सं० पा०---हटुतुटु जाव हियया।

- १०. एतेणं (क); एएणं (ख)।
- ११. सं० पा०-हट्ठतुट्ठ जाव हियए।
- १२. 'धाराहयनीवसुरहिकुसुम व चंचुमालइयऊसवि-यरोमकूवे' इदं च विशेषणं क्वचिदेव दृश्यते (वृ) ।
- १३. विराइयवच्छे (ल)।
- १४. क्वचिदिदं पादुकाविशेषणं दृश्यते—वेरुलिय-वरिट्ठअंजणनिउणोवियमिसिमिसितमणिरयण् -मंडियाओ (वृ) ।

ओमुइत्ता' एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, करेत्ता आयंते चोक्खे परमसुइभूए अंजलि-मउलियहत्थे' तित्थगराभिमुहे सत्तट्ठपयाई अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचेइ, अंचेत्ता दाहिणं जाणुं धरणितलंसि साहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि निवेसेइ', निवेसेत्ता ईसि पच्चुण्णमइ, पच्चुण्णमित्ता कडग-तुडिय-थंभियाओ भुयाओ पडिसाहरइ, पडिसाहरित्ता करयल "•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि॰कट्टु एवं वयासी—-णमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थगराणं सहसंबुद्धाणं ' पुरिसोत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं' अभयदयाणं चवखुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं जीवदयाणं दीवो ताणं सरणं गई पइट्ठा धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाणदंसण-धराणं वियट्टछउमाणं जिलाणं जावयाणं तिल्लाणं तारयाणं मुत्ताणं मोयगाणं बुद्धाणं बोहयाणं सव्वण्णूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तगं सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं । णमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स आदिगरस्स तित्थगरस्स • • सहसंबुद्धस्स पुरिसोत्तमस्स पुरिससीहस्स पुरिसवरपुंड रीयस्स पुरिसवरगंध-हत्थिस्स अभयदयस्स चक्खुदयस्स मग्गदयस्स सरणदयस्स जीवदयस्स दीवो ताणं सरणं गई पइट्ठा धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टिस्स अप्पडिहयवरनाणदंसणधरस्स वियट्टछउमस्स जिणस्स जाणयस्स तिण्णस्स तारयस्स मुत्तस्स मोयगस्स बुद्धस्स बोहयस्स सव्वण्णुस्स सब्बदरिसिस्स सिवमयलमरुयमणंतमवखयमव्वाबाहमपुणरावत्तगं सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं॰ संपाविउकामस्स ममं धम्मायरियस्स धम्मोपदेसगस्स, वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए'\*, पासइ'' मे भगवं तत्थगए इहगयं ति कट्टु वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता सीहासणवर-गए पुरत्थाभिमुहे निसीयइ, निसीइत्ता तस्स पवित्ति-वाउयस्स अट्ठुत्तरं सयसहस्सं पीइदाणं दलयइ, दलइत्ता सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता एवं वयासी—जया णं देवाणु-प्पिया ! समणे भगवं महावीरे इहमागच्छेज्जा इह समोसरिज्जा इहेव चंपाए णयरीए बहिया पुण्णभद्दे चेइए" अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरेज्जा तया ण मम एयमट्ठं निवेदिज्जासि त्ति कट्टु विसज्जिए'' ।।

## भगवओ उवागमण-पदं

२२. तए णं समणे भगवं महावीरे कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पल-कमल-

- १. तथेदमपि 'अवहट्टु पंच रायककुहाई, तं जहा-लग्गं छत्तं उप्फेसं वाहणाओ वालवीयणं' (वृ); 'क' आदर्शेपि एष पाठो लभ्यते ।
- २. मउलियग्गहत्थे (ख) ।
- ३. णिनेमि (क); णमेइ (ख); णिमेइ (ग)।
- ४. सं० पा०---करयल जाव कट्टु ।
- ४. अरिहंताणं (ख)।
- ६. सयंसंबुढाणं (क, ख, ग) ।
- ७. °गंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोग-हियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोयगराणं

- (ক, অ) ৷
- संपत्ताणं नमोजिणाणं (क, ख) ।
- १. सं० पा०-तित्थगरस्स जाव संपाविउकामस्स
- १०. इहमागए (ख, ग) ।
- ११. पासउ (क, ख, ग) ।
- १२. चेइए अरहा जिणे केवली समणगणपरिवृुडे (क)।
- १३. एवं सामित्ति आणाए विषएणं वयणं पडिसुणेइ ति वाचनान्तरे वाक्यम् (वृ) ।

#### समोसरण-पयरणं

कोमलुम्मिलियंमि अहपंडुरे' पहाए रत्तासोगप्पगास-किंसुय सुयमुह-गुंजद्ध-रागसरिसे कमलागरसंडबोहए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिमि दिणयरे तेयसा जलंते' जेणेव चंपा णयरी जेणेव पुणभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता' संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

#### समण-वण्णग-पदं

२३. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवाओ महावीरस्स अंतेवासी बहवे समणा भगवंतो---अप्पेगइया उग्गपव्वद्दया भोगपव्वद्दया राइण्ण-णाय-कोरव्व-खत्तियपव्वद्द्या भडा जोहा सेणावई पसत्थारो सेट्ठी इब्भा अण्णे य बहवे एवमाइणो उत्तमजाइ-कुल-रूव-विणय-विण्णाण-वण्ण-लावण्ण-विक्कम-पहाण-सोभग-कंतिजुत्ता 'बहुधण- धण्ण- णिचय - परियाल'-फिडिया' णपवइगुणाइरेगा इच्छियभोगा सुहसंपललिया किपागफलोवमं च मुणियविसय-सोक्खं, जलबुब्बुयसमाणं कुसग्ग-जलविंदुचंचलं जीवियं य णाऊण, अढुवमिणं रयमिव पडग्गलग्गं संविधुणित्ताणं, चइत्ता हिरण्णं चिच्चा सुवर्ण्णं चिच्चा धणं एवं---धण्णं बलं वाहणं कोसं कोट्ठागारं रज्जं रट्ठं पुरं अंतेउरं, चिच्चा विउलधण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिलप्पवाल-रत्तरयणमाइयं संत-सार-सावतेज्जं, विच्छडुइत्ता विगोवइत्ता, दाणं' च दाइयाणं परिभायइत्ता, मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वद्दया--अप्पेगइया अद्धमासपरियाया अप्पेगइया मासपरियाया अप्पेगइया दुमासपरियाया अप्पेगइया तिमास-दियाया जाव अप्पेगइया एक्कारसमासपरियाया अप्पेगइया वासपरियाया अप्पेगइया दुवासपरियाया अप्पेगइया तिवासपरियाया अप्पेगइया अणेगवासपरियाया - संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥

#### निग्गंथ-वण्णग-पदं

२४ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी बहवे निग्गंथा भगवंतो—अप्पेगइया आभिणिवोहियणाणीं <sup>•</sup>अप्पेगइया सुयणाणी अप्पेगइया ओहिणाणी अप्पेगइया मणपज्जवणाणी अप्पेगइया° केवलणाणी अप्पेगइया मणबलिया अप्पेगइया वयबलिया अप्पेगइया कायबलिया<sup>°</sup> अप्पेगइया मणेणं सावाणुग्गहसमत्था अप्पेगइया वएणं सावाणुग्गहसमत्था अप्पेगइया काएणं सावाणुग्गहसमत्था अप्पेगइया

१. अहापंडरे (क); अहापंडुरे (स) ।

- २. जलते असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्ट-गंसि परत्याभिमुहे पलियंकनिसन्ने अरहा जिणे केवली समणगणपरिवुडे (क);'संपलियंक-निसन्ते' इदं च वाचनान्तरपदम् (वृ) ।
- ३. ओगिण्हित्ता आगासगएणं चक्केणं जाव सुहं-सुहेणं विहरमाणे (क) ।
- ४. परिवार (ग) ।
- भ्र. बहुधणधण्णणिचय परिवारठिइगिहवासा (वृपा) ।
- ६. आचारचूलायां (१४।१३) 'दायं' इति पाठः स्वीकृतोस्ति प्रस्तुतप्रकरणे एष एव पाठः समीचीनः प्रतीयते, किन्तु प्रस्तुतसूत्रादर्शेषु 'दायं' इति पाठः क्वापि नोपलब्धः, तेन 'दाणं' इति पाठः स्वीकृतः ।
- ७. सं० पा०---आभिणिबोहियणाणी जाव केवली-णाणी ।
- 'नाणवलिया दंसणवलिया चारित्तवलिया' वाचनान्तराधीतं चेदं विशेषणत्रयम् (वृ) ।

खेलोसहिपत्ता 'अप्पेगइया जल्लोसहिपत्ता अप्पेगइया विप्पोसहिपत्ता अप्पेगइया आमो-सहिपत्ता अप्पेगइया सव्वोसहिपत्ता'' अप्पेगइया कोट्ठबुद्धी अप्पेगइया वीयबुद्धी अप्पेगइया पडबुद्धी अप्पेगइया पयाणुसारी अप्पेगइया संभिष्णसोया अप्पेगइया खीरासवा अप्पेगइया महुयासवा अप्पेगइया सप्पियासवा अप्पेगइया अक्खीणमहाणसिया' अप्पेगइया उज्जूमई अप्पेगइया विउलमई अप्पेगइया विउव्वणिडि्ढपत्ता अप्पेगइया चारणा अप्पेगइया विज्ञाहरा अप्पेगइया आगासाइवाई' अप्पेगइया कणगावलि तवोकम्म पडिवण्णा' अप्पेगइया एगार्वील तवोकम्म पडिवण्णा अप्पेगइया खुड्डागं सीहनिक्कीलियं तवोकम्मं पडिवण्णा अप्पेगइया महालयं सीहणिक्कीलियं तवोकम्मं पडिवण्णा अप्पेगइया भद्दपडिमं तवोकम्मं पडिवण्णा अप्पेगइया महाभद्दपडिमं तवोकम्मं पडिवण्णा अप्पेगइया सव्वओभद्दपडिमं तवोकम्मं पडिवण्णा अप्पेगइया आयंविलवद्धमाणं' तवोकम्मं पडिवण्णा अप्पेगइया मासियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा अप्पेगइया दोमासियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा अप्पेगइया तेमासियं भिक्खपडिमं पडिवण्णा जाव अप्पेगइया सत्तमासियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा अप्पेगइया पढमसत्तराइंदियं भिक्खुपंडिमं पडिवण्णा अप्पेगइया बीयसत्तरा-इंदियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णा अप्पेगइया तच्चसत्तराइंदियं भिक्खुपडिमं पडि-वण्णा अप्पेगइया राइंदियं भिवखुपडिमं पडिवण्णा अप्पेगइया एगराइयं भिवखुपडिमं पडिवण्णा अप्पेगइया सत्तसत्तमियं भिवखुपडिमं पडिवण्णा अप्पेगइया अट्ठअट्ठमियं भिवखु-पडिमं पडिवण्णा अप्पेगइया णवणवर्मियं भिक्खु शिमं पडिवण्णा अप्पेगइया दसदसमियं भिक्खुपडिमं पडिवण्णां अप्पेगइया खुड्डियं मोयपडिमं पडिवण्णा अप्पेग़इया महल्लियं

- १. एवं जल्लोमहिपत्ता विष्पोसहिपत्ता आमोसहि-पत्ता सब्वोसहिपत्ता (क, ग)।
- २. पयाणुसारा (क, ख) ।
- ३. °महाणसीया (वृ) ।
- ४. आगासावासी (क, ख) ।
- ५. पडिवण्णगा (वृ) ।
- ६. 'बद्धमाणकं (क, ख)।
- ७, ८. अहोराइंदियं (क, ख, ग) । एक्कराइंदियं (क, ख, ग); अर्थदृष्ट्या उभावपि पाठो न संगच्छेते । प्रथमे पाठे 'अहो' 'दियं' ढावपि शब्दो दिवसवाचिनो स्तः । ढितीये पाठे 'दियं' शब्दोधिकोस्ति । तेनास्माभिर्वृत्तिगतः पाठः स्वीकृतः ! एकादश्याः प्रतिमायाः कृते 'राइं-दियं' तथा ढादश्याः प्रतिमायाः कृते 'एगराइयं' पाठो लभ्यते । समवायाङ्गे (१२।१) उक्त-प्रतिमयोः कृते 'अहोराइया' तथा 'एगराइया' पाठः प्राप्यते । दशाश्रुत्तरुक्च (७।३१,३२)

वृत्तौ एकादश्याः प्रतिमाया व्याख्या इत्यमस्ति-एकादशी अहोरात्रप्रमाणा---अहोरात्रिकी' ! द्वादश्या व्याख्या तत्रैवेत्थमस्ति----'एकरात्रि-दिवा---एकरात्रिप्रमाणा । अत्र रात्रिदिवा शब्दादपि रात्रिरेव ग्राह्या, अन्यथा एक-रात्रिकी इत्यस्य विरोधात् ।' अत्र वृत्तिकृता द्वितीयः पाठः समीचीनो नोपलब्ध इति प्रति-भाति । इत्यं प्रतीयते क्वचिद् 'अहो' शब्द आसीत् क्वचिच्च 'दिवा' । प्रतिलिपिषु जाय-मानामु द्वयोरेकत्रयोगो जातः । तथैव 'राइयं' इत्यत्रापि पूर्वप्रतिमायाः 'राइंदियं' पाठानुसृति-र्जाता ।

#### समोस रण-पय रणं

मोयपडिमं पडिवण्णा अप्पेगइया जवमज्झं चंदपडिमं पडिवण्णा अप्पेगइया वइरमज्झं चंदपडिमं पडिवण्णा'—संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ।।

#### धेर-वण्णग-पदं

२४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी बहवे थेरा भगवंतो—जाइसंपण्णा कुलसंपण्णा बलसंपण्णा रूवसंपण्णा विणयसंपण्णा णाणसंपण्णा दंसणसंपण्णा चरित्तसंपण्णा लज्जासंपण्णा लाघवसंपण्णा ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जसंसी, जियकोहां जियमाणा जियमाया जियलोभा जिइंदिया जियणिद्दा जियपरीसहा जीवियास-मरणभय-विष्पमुक्ता, वयप्पहाणा गुणप्पहाणा करणप्पहाणा चरणप्पहाणा णिग्गहप्पहाणा निच्छयप्पहाणा अज्जवप्पहाणा मद्दवप्पहाणा लाघवष्पहाणा खंतिप्पहाणा मुत्तिप्पहाणा विज्जपहाणा मंतप्पहाणा वेयप्पहाणा बंभप्पहाणा नयप्पहाणा नियमप्पहाणा सच्चप्पहाणा सोयप्पहाणा, चाह्रवण्णा लज्जा तवस्सी जिइंदिया सोही अणियाणा अप्पोसुया अवहिल्लेसा अपडिलेसा सुसामण्णरया दंता—इणमेव णिग्गंथं पावयणं पुरओकाउं विहरतिं ॥

२६. तेसि णं भगवंताणं 'आयावाया वि'' विदिता भवंति, 'परवाया वि'' विदिता भवंति, आयावायं जमइत्ता नलवणमिव' मत्तमातंगा अच्छिद्षसिणवागरणा रयणकरंडगस-माणा कुत्तियावणभूया परवाइपमद्दणां" दुवालसंगिणो समत्तगणिपिडगधरा सब्बक्खरसण्णिवाइणो सब्वभासाणुगामिणो अजिणा जिणसंकासा जिणा इव अवितहं वागरमाणा संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ।।

#### अजगार-वण्णग-पर्व

२७. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी वहवे अणगारा भगवंतो इरियासक्षिया भासासमिया एसणासमिया आयाण-भंड-मत्त-णिक्खेवणा-समिया उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमिया मणगुत्ता वयगुत्ता काय-

- श. वाचनान्तराधीतमथ पदचतुष्कम्⊸ विवेगपडिमं पडिवण्णा विउसग्गपडिमं पडिवण्णा उवहाण-पडिमं पडिवण्णा पडिसंलीणपडिमं पडिवण्णा' (वु)।
- २. जियकोहे (क) अग्रे सर्वत्र 'एकारः' ।
- ३. क्वचिदेवं च पठ्यते----- 'बहूणं आयरियाणं बहूणं उवज्झायाणं बहूणं गिहत्थाणं पव्वइयाणं च दीवो ताणं सरणं गई पडट्ठा' (वृ) ।
- ¥. आयावाइणो (वृ)।
- ५. परवादा (ग); परवाइणो (वृपा) ।
- ६. नलवणा इव (वृपा) ।
- ७. परवाइयपमद्गा (वृ) ।

म. परवाईहि अणोक्कता इत्यादि चोह्सपुन्वी' इत्यन्तं वाचनान्तरं परवाईहि अणोक्कता अण्णउत्थिएहि अणोद्धंसिज्जमाणा विहरंति अप्पेगइया आयारधरा.....।' वृत्तिकृत्ता 'अप्पेगइया....सुगमामि' इति लिखितम्, तदा-धारेण एषा पाठपद्धति: सम्भाव्यते-----अप्पे-गइया आयारधरा एवं सूयगड-ठाण-समवाय-विवाहपण्णत्ति - नायाधम्मकहा - उवासगदसा-अंतगडदसा-अणुत्तरोववाइयदसा- पण्हावागरण-दसा-विवागसुयधरा एगारसंगधरा दुवालसंग-धरा नवपुल्वी दसपुल्वी चोह्सपुल्वी (वृ) । १. जिणो (क, ख) । गुत्ता गुत्ति विया गुत्तबंभयारी अममा अकिंचणा निरुवलेवा कंसपाईव मुक्कतोया, संखो इव निरंगणा , जीवो विव अप्पडिहयगई, जच्चकणगं पिव जायरूवा, आदरिसफलगा इव पागडभावा, कुम्मो इव गुत्तिदिया, पुक्खरपत्तं व निरुवलेवा, गगणमिव निरालंबणा, अणिलो इव निरालया, चंदो इव सोमलेसा, सूरो इव दित्ततेया , सागरो इव गंभीरा, विहग इव सब्बओ विप्पमुक्का, मंदरो इव अप्पकंपा, सारयसलिलं व मुद्धहियया, खगाविसाणं व एगजाया, भारुंडपक्खी व अप्पक्तपा, कुंजरो इव सोंडीरा, वसभो इव जायत्थामा, सीहो इव दुद्धरिसा, वर्सुंधरा इव सब्वफासविसहा, सुहुयहुयासणो इव तेयसा जलंता ।

अपडिबंध-विहार-परं

२८. नर्तिथ 'णं तैसिं'' भगवंताणं कत्थइ पडिबंधें । [से य पडिबंधे चउव्विहे भवइ, तं जहा<sup>\*--</sup>दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ। दव्वओ--सचित्ताचित्तमीसिएसु'' दव्वेसु । खेत्तओ---गामे वा णयरे वा रण्णे वा खेत्ते वा खले वा घरे वा अंगणे वा । कालओ---समए वा आवलियाए वा<sup>।\*</sup> •आणापाणुए वा थोवे वा लवे वा मुहुत्ते वा अहोरत्ते वा पक्खे वा

- १. वाचनान्तरे 'अकोहे' त्यादीन्येकादणपदानि दृश्यन्ते—'अकोहा व्यमाणा अमाया अलोभा संता पसंता उवसंता परिष्पिव्व्या अणासवा अग्गंथा छिण्णसोया' (वृ); सूत्रकृताङ्गे-(२।२।६४) प्येष पाठो विद्यते ।
- २. संख (क, ग) ।
- ३. निरंजणा (ग) ।
- ४. तेयंसि (ख,ग)।
- ५. खग्गिविसाणं (क्वचित्)।
- ६. भारंडपक्खी (ख, वृ) ।
- ७. वृत्तिकृता 'कंसपाईव मुक्कतोया' इत्यादिपदानां व्याख्या द्वितीयाचाराङ्गस्य भावनाघ्ययतान्तर्ग-तसङ्ग्रहगाथे अनुसूत्य कृतास्ति, तथा वाचना-न्तरेपि तथैव पाठो लब्धः---निरुवलेपतामेवो-पमानैराह---वक्ष्यमाणपदानां च भावनाध्यय-नाद्युक्ते इमे संग्रहगाथे ---

कंसे संखे जीवे, गयणे वाए य सारए सलिले । पुक्खरपत्ते कुम्मे, विहगे खग्गे य भारंडे ।।१।। कुंजर वसहे सीहे, नगराया चेव सागरमखोहे । चंदे सूरे कणगे, वसुंधरा चेव सुहुयहुए ।।२।। उक्तगाथानुकमेण तानि पदानि व्याख्यास्यामः, वाचनान्तरे इत्थमेव दृष्टत्वादिति (वृ० पृ० ६७); वृत्तिकृता सर्वेषां विशेषणानामन्ते प्रस्त- कान्तरे विशेषणानि सर्वाण्येतानीदं चाधिकम् 'आदरिसफलगा इव पायडभावो'— इति यृहीतम्, प्रतिषु विशेषणमिदं 'जच्चकणमं' अतोनन्तरमस्ति । द्रष्टव्यं अंगमुत्ताणि भाग १ : परिशिष्ट २ आलोच्यपाठ तथा वाचना-न्तर ।

- तेसिणं (क, ख)।
- ९. पडिबंधे भवइ (ग, वू) ।
- १०. वाचनान्तरे पुनः 'तं जहा' इत्यतः परंगमान्तं (सुत्र २५, २९ पर्यन्तं) यावदिदं पठ्यते— अंडए इ वा पोयए इ वा 'अंडजे इ वा बोंडजे इ वा' इत्यत्र पाठान्तरे उग्गहिए इ वा पगग-हिए वा जं णं जं णं दिसं इच्छति तं णं तं णं दिसं विहरंति सुइभ्रुया लघुभ्रुया अणप्पगंथा (वृ); सूत्रक्रताङ्गे (२।२।६६) प्येतादृशः पाठो विद्यते—अंडए इ वा पोयए इ वा उग्गहे इ वा पग्गहे इ वा जण्णं जण्णं दिसं इच्छति तण्णं तण्णं दिसं अपडिवदा सुइभ्रुया लहुभूया अप्पग्गंथा संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरति ।
- ११. भीसएसु (क, ख, ग)।
- १२. सं० पा०-आवलियाए वा जाव अयणे।

मासे वा° अयणे वा अण्णयरे वा दीहकालसंजोगे । भावओ—कोहे वा माणे वा मायाए वा लोहे वा भए वा हासे वा । एवं तेसिं ण भवइ° ] ।।

२६ तेणं भगवंतो वासावासवज्जं अट्ठ गिम्ह-हेमंतियाणि मासाणि गामे एगराइया णयरे पंचराइया वासीचंदणसमाणकप्पा समलेट्ठुकंचणा समसुहदुक्खा इहलोगपरलोग-अप्पडिबद्धा संसारपारगामी कम्मणिग्घायणट्ठाए अब्भुट्ठिया विहरंति ॥

## लबोवहाज-वण्णग-पदं

३०. तेसि णं भगवंताणं एएणं विहारेणं विहरमाणाणं इमे एयारूवे सब्भितर-वाहिरए तवोवहाणे होत्थां, तं जहा--अब्भितरए वि' छव्विहे, वाहिरए वि छव्विहे ॥

३१ से किं तं बाहिरएँ ? बाहिरए छव्विहे, तं जहा—अणसंणे ओमोयरिया भिक्खायरिया रसपरिच्चाए कायकिलेसे पडिसंलीणया ॥

३२. से कि तं अणसणे ? अणसणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा--इत्तरिए य आवकहिए य ।

से<sup>1</sup> कि तं इत्तरिए ? इत्तरिए अणेगविहे पण्णत्ते, तं जहा—चउत्थभत्ते, छट्ठभत्ते, अट्ठमभत्ते, दसमभत्ते, वारसभत्ते, चउद्दसभत्ते, सोलसभत्ते, 'अद्धमासिए भत्ते'' मासिए भत्ते, दोमासिए भत्ते, तेमासिए भत्ते, चउमासिए भत्ते, पंचमासिए भत्ते, छम्मासिए भत्ते । से तं इत्तरिए ।

से किं तं आवकहिए ? आवकहिए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पाओवगमणे य भत्तपच्चक्खाणे य ।

से किं तं पाओवगमणे' ? पाओवगमणे' दुविहे पण्णत्ते, तं जहा---वाघाइमे य

- १. दशाश्रुतस्कन्धस्य पर्युषणाकल्पे (७९) अन्या-न्यपि पदानि दृश्यन्ते—पेज्जे वा दोसे वा कलहे वा अब्भवखाणे वा पेसुन्ने वा परपरिवाए वा अरतिरती वा मायामोसे वा मिच्छादंसणसल्ले वा ।
- २. कोष्ठकवत्तिपाठो व्याख्यांशः प्रतीयते ।
- वाचनान्तरे 'जायामायावित्ति' 'अदुत्तरं वा' (वृ); सूत्रकृताङ्गे (राशद६) प्येतावृगः पाठो विद्यते— 'तेसि णं भगवंताणं इमा एया-रूवा जायामायावित्ती होत्था'।
- ¥. × (क)।
- ४. बाहिरए तवे (ख, ग) ।
- ६. भगवत्यां (२४।४६०) प्रतिप्रग्नस्य सूत्रसंख्या स्वतंत्रा विद्यते । प्रस्तुतसूत्रे प्रतिविषयस्य एकैव सूत्रसंख्यास्ति । अयं भेदः यद्यपि समालो-च्योस्ति, तथापि नात्र परिवर्तनं कर्तुं णक्यम् । प्रस्तुतसूत्रस्य अनेकानि सूत्राणि अने-केषु आगमेषु साक्ष्यरूपेण उट्टड्कितानि वर्तन्ते,

तेन तत्र तत्र स्थले सूत्रसंख्या विपर्ययो न स्यात् इत्यागङ्क्षयैव एतत्परिवर्तनमशक्यमस्ति ।

- ७. × (क, ख, ग)।
- पायवगमणे (क) ।
- १. स्थानाङ्गे (२।४१५,४१६) भगवत्यां उत्तरा-ध्ययने च भिन्ना पाठपरम्परा लभ्यते—पाओ-वगमणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—नीहारिमे य, अणीहारिमे य। नियमं अपडिकम्मे । भत्त-पच्चनखाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—नीहारिमे य, अणीहारिमे य। नियमं सपडिकम्मे (भ० २५।५६२, ५६३); अहवा सपरिकम्मा अपरिकम्मा य आहिया। नीहारिमणीहारी आहारच्छेओ य दोसु वि (उत्त० ३०।१३) भगवत्याराधनाया: भक्तप्रत्याख्यानस्य (सवि-चारं अविचारं' इति भेवद्वयं क्वतमस्ति— दुविहं नुभत्तपच्चनखाणं सविचारमध अविचारं (२१६५) ।

निव्वाधाइमे यः णियमा अप्पडिकम्मे । से तं पाओवगमणे ।

से किंत भत्तपच्चवखाणे ? भत्तपच्चवखाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा-वाघाइमे य निव्वा-घाइमे य । णियमा सपडिकम्मे । से तं भत्तपच्चवखाणे । [से तं आवकहिए' ? ] । से तं अणसणे ॥

३३. से किंतं ओमोदरियाओ ? ओमोदरियाओ दुविहा पण्णत्ताओ, तं जहा— दब्वोमोदरिया य भावोमोदरिया य ।

से किं तं दब्वोमोदरिया ? दब्वोमोदरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—उवगरणदब्वो-मोदरिया य भत्तपाणदब्वोमोदरिया य ।

से किं तं उवगरणदव्वोमोदरिया ? उवगरणदव्वोमोदरिया तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—एगे वत्थे, एगे पाए, चियत्तोवकरणसाइज्जणया । से तं उवगरणदव्वोमोदरिया ।

से किं तं भत्तपाणदव्वोमोदरिया ? भत्तपाणदव्वोमोदरिया अणॆगविहा पण्णत्ता, तं जहा---अट्ठ कुक्कुडअंडगप्पमाणमेत्ते' कवले आहारमाहारेमाणे' अप्पाहारे, दुवालस कुक्कुडअंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे अवड्ढोमोदरिए, सोलस कुक्कुडअंड-गप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे दुभागपत्तोमोदरिए, चउवीसं कुक्कुडअंडगप्पमाण-मेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे पत्तोमोदरिए, 'एक्कतीसं कुक्कुडअंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे किंचूणोमोदरिए', वत्तीसं कुक्कुडअंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे किंचूणोमोदरिए', वत्तीसं कुक्कुडअंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहार-माहारेमाणे पमाणपत्ते, एत्तो एगेण वि घासेणं' ऊणयं आहारमाहारेमाणे समणे णिग्गंथे णो पकामरसभोइ त्ति वत्तव्वं सिया । से तं भत्तपाणदव्वोमोदरिया । से तं दव्वोमोदरिया ।

से किंतं भावोमोदरिया ? भावोमोदरिया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा---अष्पकोहे, अष्पमाणे, अप्पमाए, अप्पलोहे, अप्पसद्दे, अप्पझंझे'। से तं भावोमोदरिया । से तं ओमो-दरिया ।।

३४. से किं तं भिक्खायरिया ? भिक्खायरिया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा-दव्वाभिग्गहचरए खेत्ताभिग्गहचरए कालाभिग्गहचरए भावाभिग्गहचरए उक्खित्तचरए णिक्खित्तचरए उक्खित्तणिक्खित्तचरए णिक्खित्तउक्खित्तचरए वट्टिज्जमाणचरए साहरि-ज्जमाणचरए उवणीयचरए अवणीयचरए उवणीयअवणीयचरए अवणीयउवणीयचरए संसट्ठचरए असंसट्ठचरए तज्जायसंसट्ठचरए अण्णायचरए मोणचरए\* दिट्ठलाभिए अदिट्ठलाभिए पुट्ठलाभिए अपुट्ठलाभिए भिक्खलाभिए अभिक्खलाभिए अण्णगिलायए ओवणिहिए परिमियपिंडवाइए भुद्धेसणिए संखादत्तिए । से तं भिक्खायरिया ॥

३५. से किं तं रसपरिच्चाएँ ? रसपरिच्चाए अणेगविहे पण्णत्ते, तं जहा—निव्विइए\*,

- १. एतन्निगमनं भगवत्यां (२४।४६३) उपलभ्यते । अत्रापि अपेक्षितमस्ति, परन्तु आदर्श्वेषु नोपलभ्यते ।
- २. कुक्कड° (क); कुक्कुडि° (क्वचित्) ।
- ३. आहारेमाणे (ग) ।
- ४. चिन्हाङ्कितः पाठः भगवत्यां (७।२४) नोपलभ्यते । तद्वृत्तावपि नास्ति व्याख्यतः ।

द्रष्टव्यं व्यवहारस्य (=1१७) पादटिप्पणम् ।

- ५. गासेणं (क) ।
- ६. अप्पभांभो अप्पतुमंतुमे (भ० २४। ४३८) ।
- ७. मोणचरए दिट्ठचरए अदिट्ठचरए (ख,ग) ।
- "पिडलाभिए (ख, ग) ।
- १. निब्बीए (क, ख);निव्वीयए (वृ); निव्विगितिए (भ०२४।५७०)

पणीयरसपरिच्चाए, आयंविलए°, आयामसित्थभोई, अरसाहारे, विरसाहारे, अंताहारे, पंताहारे, लूहाहारे° । से तं रसपरिच्चाए ।।

३६ से किं तं कायकिलेसे ? कायकिलेसे अणेगविहे पण्णत्ते, तं जहा---ठाणट्ठिइए उक्कुडुयासणिए पडिमट्ठाई वीरासणिए नेसज्जिए आयावए अवाउडए अकंडुयए अणिट्ठहए सव्वगायपरिकम्म-विभूसविष्पमुक्के । से तं कायकिलेसे ।।

३७. से किंतं पडिसंलीणया ? पडिसंलीणया चउव्विहा पण्पत्ता, तं जहा— इंदियपडिसंलीणया कसायपडिसंलीणया जोगपडिसंलीयणया विवित्तसयणासणसेवण्या।

से कि तं इंदियपडिसंलीणया ? इंदियपडिसंलीणया पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा-सोइंदियविसयप्पयारनिरोहो वा सोइंदियविसयपत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा, चर्विखदियविसयप्पयारनिरोहो वा चर्क्खिदियविसयपत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा, घाणिदियविसयप्पयारनिरोहो वा घाणिदियविसयपत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा, जिब्भिदियवियप्पयारनिरोहो व। जिब्भिदियविसयपत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा, फॉर्सिदियविसयप्पयारनिरोहो वा फॉर्सिदियविसयपत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा, फॉर्सिदियविसयप्पयारनिरोहो वा फॉर्सिदियविसयपत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा, कॉर्सिदियविसयप्पयारनिरोहो वा फॉर्सिदियविसयपत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा। से तं इंदियपडिसंलीणया।

से किं तं कसायपडिसंलीणया ? कसायपडिसंलीणया चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा-कोहस्सुदयनिरोहो वा उदयपत्तस्स वा कोहस्स विफलीकरणं, माणस्सुदयनिरोहो वा उदयपत्तस्स वा माणस्स विफलीकरणं, मायाउदयणिरोहो वा उदयपत्ताए वा मायाए विफलीकरणं, लोहस्सुदयणिरोहो वा उदयपत्तस्स वा लोहस्स विफलीकरणं। से तं कसायपडिसंलीणया।

से कि तं जोगपडिसंलीणया ? जोगपडिसंलीणया तिविहा पण्णत्ता, तं जहा— मणजोगपडिसंलीणया वइजोगपडिसंलीणया कायजोगपडिसंलीणया ।

से किं तं मणजोगपडिसंलीणया ? मणजोगपडिसंलीणया—अकुसलमणणिरोहो वा, कुसलमणउदीरणं वा\* । से तं मणजोगपडिसंलीणया ।

से कि तं वइजोगपडिसंलीणया ? वइजोगपडिसंलीणया—अकुसलवइणिरोहो वा, कुसलवइउदीरणं वा । से तं वइजोगपडिसंलीणया ।

से किं तं कायजोगपडिसंलीणया ? कायजोगपडिसंलीणया—जण्णं सुसमाहियपाणि-पाएं कुम्मो इव गुत्तिदिए सब्वगायपडिसंलीणे' चिट्ठइ। से तं कायजोगपडिसंलीणया।

- १. आयंबिलिए (वृ) ।
- २. लुक्खाहारे (क); लूहाहारे तुच्छाहारे (वृणा) ।
- ३. ठाणाइए (ग, वृपा); ठाणातिए (ठाणं ४१४२);ठाणादीए (भ० २४१४७१) ।
- ४. 'दंडायए लगंडसाई' ति क्वचिद् दृश्यते (वृ) 1
- ४. 'धुषकेसमंसुलोम' ति क्वचिद् दृश्यते (वृ) ।
- ६. कोहोदय° (ख, ग) ।

- ७. वा, मणस्स वा एगत्तीभावकरणं (भ० २५। ४७७) ।
- म. वर्ईए वा एगत्तीभावकरणं (भ० २४।४७७) ।
- सुसमाहिय-पसंत-साहरियपाणिपाए (भ० २५।५७५) ।
- १०. अल्लीण-पल्लीणे (भ० २४।४७८) ।

[से तं जोगपडिसंलीणया ?'] ।

28

से कि तं विवित्तसयणांसणसेवणया ? विवित्तसयणासणसेवणया---जण्णं आरामेसु उज्जाणेसु देवकुलेसु सहासु पवासु 'पणियगिहेसु पणियसालासु' इत्थी-पसु-पंडगसंसत्तविर-हियासु कासुएसणिज्जं पीढफलगसेज्जासंथारगं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। [से तं विवित्तसयणासणसेवणया ?] से तं पडिसंलीणया। से तं बाहिरए तवे।।

३८. से किं तं अब्भितरए तवे ? अब्भितरए तवे छव्विहे पण्णत्ते, तं जहा— 'पायच्छित्तं विणओ वेयावच्चं सज्फाओ झाणं विउस्सग्गो''।।

३९. से किं तं पायच्छित्ते ? पायच्छित्ते दसविहे पण्णत्ते, तं जहा—आलोयणारिहे पडिक्कमणारिहे तदुभयारिहे विवेगारिहे विउस्सग्गारिहे तवारिहे छेदारिहे मूलारिहे अणवट्ठप्पारिहे पारंचियारिहे । से तं पायच्छित्ते ।।

रे. से किं तं विणए ? विषए सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—णाणविणए दंसणविणए चरित्तविणए भणविणए बइविणए कायविणए लोगोवयारविणए।

से कि तं णाणविणए ? णाणविणए पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा-आभिणिबोहियणाण-विणए सुयणाणविणए ओहिणाणविणए मणपज्जवणाणविणए केवलणाणविणए। से तं णाणवणिए।

से किं तं दंसणविणए ? दंसणविणए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा---सुस्सूसणाविणए य अणच्चासायणाविणए य ।

से किं तं सुस्सूसणाविणए ? सुस्सूसणाविणए अणेगविहे पण्पत्ते, तं जहा--अब्भु-ट्ठाणेइ' वा, आसणाभिग्गहेइ वा, आसणप्ययाणंति' वा, सक्कारेइ वा, सम्माणेइ वा, किइकम्मेइ वा, अंजलिप्पग्गहेइ वा, एंतस्स अभिगच्छणया', ठियस्स पज्जुवासणया, गच्छंतस्स पडिसंसाहणया । से तं सुस्सूसणाविणए ।

से कि तं अणच्चासायणाविणए ? अणच्चासायणाविणए पणयालीसविहे पण्णत्ते, तं जहा—अरहंताणं अणच्चासायणा अरहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स अणच्चासायणा आयरियाणं अणच्चासायणा एवं उवज्झायाणं थेराणं कुलस्स गणस्स संघस्स किरियाणं संभोगस्स आभिणिवोहियणाणस्स सुयणाणस्स ओहिणाणस्स मणपज्जवणाणस्स केवलणाणस्स. एएसि चेव भत्ति-बहुमाणेणं, एएसि चेव वण्णसंजलणया । से तं अणच्चासायणाविणए । से तं दंसणविणए ।

- १. एतन्निगमनं भगवत्यां (२४।५७०) उपलभ्यते । अत्रापि अपेक्षितमस्ति परन्तु आदर्जेषु नोपलभ्यते ।
- २. × (भ० २४।४७९) ।
- ३. पंडगविवज्जियासु (भ० २४।४७९) ।
- ४. पायच्छित्तं विणओ, वेयावच्चं तहेव सज्भावो। भाषं विउसग्गो, (क.स) ।
- ५. भगवत्यां (२४।४८४) पदानां ऋमभेदो

लभ्यते— सक्कारे इ वा सम्माणे इ वा किइकम्मे इ वा अब्भुट्ठाणे इ वा अंजलिपग्गहे इ वा झासणाभिग्गहे इ वा आसणाणुप्पदाणे इ वा, एंतस्स पच्चुग्गच्छाणया ठियस्स पज्जुवासणया, गच्छंतस्स पडिसंसाहणया ।

- ६. आसणप्याणाति (ख, ग) ।
- ७. अणुगच्छणया (क, ख) ।

से किं तं चरित्तविणए ? चरित्तविणए पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—सामाइयचरित्त-विणए छेदोवट्ठावणियचरित्तविणए परिहारविसुद्धिचरित्तविणए' सुहुमसंपरायचरित्त-विणए अहक्खायचरित्तविणए । से तं चरित्तविणए ।

से किं तं मणविणए ? मणविणए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा---पसत्थमणविणए अपसत्थ-मणविणए ।

से<sup>°</sup> किं तं अपसत्थमणविणए ? अपसत्थमणविणए जे य मणे सावज्जे सकिरिए सकक्कसे कडुए णिट्ठुरे फरुसे अण्हयकरे छेयकरे भेयकरे परितावणकरे उद्दवणकरे भूओव-घाइए तहप्तगारं मणो णो पहारेज्जा । से तं अपसत्थमणविणए ।

से किं तं पसत्थमणविष्पए ? पसत्थमणविष्पए '\*जे य मणे असावज्जे अकिरिए अकवकसे अकडुए अणिट्ठुरे अफरुसे अणण्हयकरे अछेयकरे अभेयकरे अपरितावणकरे अणुद्वणकरे अभूओवघाइए तहप्पगारं मणो पहारेज्जा। से तं पसत्थमणविणए। से तं मणविणए।

से किं तं वइविणए ? वइविणए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पसत्थवइविणए अपसत्थवइ-विणए ।

से किं तं अपसत्थवइविणए ? अपसत्थवइविणए जा य वई सावज्जा सकिरिया सकक्कसा कडुया णिट्ठुरा फरुसा अण्हयकरी छेयकरी भेयकरी परितावणकरी उद्दवणकरी भुओवघाइया तहष्पगारं वहं णो पहारेज्जा । से तं अपसत्थवइविणए ।

से कि तं पसत्थवइविणए ? पसत्थवइविणए जा य वई असावज्जा अकिरिया अकवकसा अकडुया अणिट्ठुरा अफरुसा अणण्हयकरी अछेयकरी अभेयकरी अपरिता-वणकरी अणुद्दवणकरी अभूओवघाइया तहप्पगारं वइं पहारेज्जा । से तं पसत्थवइविणए° । से तं वइविणए ।

से कि तं कायविषए ? कायविषए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा---पसत्थकायविषए अपसत्थकायविषए ।

से कि तं अपसत्थकायविणए ? अपसत्थकायविणए सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा— अणाउत्तं यम थे अणाउत्तं ठाणे अणाउत्तं निसीदणे अणाउत्तं तुयट्टणे अणाउत्तं उल्लंघणे अणाउत्तं पल्लंघणे अणाउत्तं सब्विदियकायजोगजुंजणया । से तं अपसत्थकायविणए ।

से किं तं पसत्थकायविणए ? पसत्थकायविण ए '•सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—आउत्तं गमणे आउत्तं ठाणे आउतं निसीदणे आउत्तं तुयट्टणे आउत्तं उल्लंघणे आउत्तं पल्लंघणे

- २. स्थानाङ्गे (७।१३१-१३४) भगवत्यां (२५। ५८९-५९३) च मनोवाग्विनययोः प्रकारभेदो लभ्यते । उदाहरणरूपेण---से किं तं पसत्वमण-विणए ? पसत्यमणविणए सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा —अपावए असावज्जे अकिरिए निरुव-करेसे अज्मह्वकरे अच्छविकरे अभुयाभिसंकणे ।
- सेत्तं पसत्थमणविणए । अग्रे सूत्रत्रयेपि सप्तैव भेदा विद्यन्ते ।
- ३. सं० पा०--तं चेव पसत्थं नेयव्वं, एवं चेव वइतिणओवि एएहि पएहि चेव णेयव्वो ।
- ४. सव्विदियजोगजुंजणया (ठाणं ७।१३६, भ० २५।५९६) ।
- ५. सं० पा०-एवं चेव पसत्थं भाणियव्वं ।

१. परिहारविशुद्ध<sup>°</sup> (क) ।

२६

आउत्तं सब्विदियकायजोगजुंजणया॰ । से तं पसत्थकायविणए । से तं कायविणए ।

से किं तं लोगोवय।रविणए ? लोगोवयारविणए सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—अब्भास-वत्तियं परच्छंदाणुवत्तियं कज्जहेउं कयपडिकिरिया' अत्तगवेसणया देसकालण्णुया सव्वत्थेसु अप्पडिलोमया । से तं लोगोवयारविणए । से तं विणए ।।

४१. से किं तं वेयावच्चे ? वेयावच्चे दसविहे पण्णत्ते तं जहा—आयरियवेयावच्चे उवज्झायवेयावच्चे सेहवेयावच्चे गिलाणवेयावच्चे तवस्सिवेयावच्चे थेरवेयावच्चे साहम्मिय-वेयावच्चे कुलवेयावच्चे गणवेयावच्चे संघवेयावच्चे । से तं वेयावच्चे ॥

४२. से किं तं सज्झाए ? सज्झाए पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा-वायणा पडिपुच्छणाः परियट्टणा अणुप्पेहा धम्मकहा । से तं सज्झाए ॥

४३. से किंत झाणे ? झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा--अट्टे झाणे रुद्दे झाणे धम्मे झाणे सूक्के झाणे ।।

अट्टे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—अमणुण्ण-संपओग-संपउत्ते तस्स विप्पओग-सतिसमण्णागए यावि भवइ, मणुण्ण-संपओग-संपउत्ते तस्स अविप्पओग-सतिसमण्णागए यावि भवइ, आयंक-संपओग-संपउत्ते तस्स विप्पओग-सतिसमण्णागए यावि भवइ, परिजुसिय-कामभोग-संपओग-संपउत्ते तस्स अविप्पओग-सतिसमण्णागए यावि भवइ।

अदुस्स	णं झाणस्स	चत्तारि लक्खणा	पण्णत्ता, त	iं जहा—कंदणया	सोयणया	तिप्पणया
विलवणया <sup>*</sup>				-		

रुद्दे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—हिंसाणुबंधी मोसाणुबंधी तेणाणुबंधी' सार-क्खणाणुबंधी ।

रुद्दस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा—ओसण्णदोसे बहुदोसे<sup>•</sup> अण्णाणदोसे आमरणंतदोसे ।

धम्मे झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते, तं जहा—आणाविजए अवायविजए विवागविजए संठाणविजए ।

धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा-आणारुई णिसग्गरुई 'उवएसरुई सुत्तरुई''।

- १. कयपडिकइया (ठाणं ७।१३७, भ० २४। ४९७) ।
- २. स्थानाङ्गे (१०।१७) भगवत्यां (२४।४९८) च पदानां ऋमभेदो विद्यते ।
- ३. पुच्छणा (क) ।
- ४. परिदेवणता (ठाणं ४।६२); परिदेवणया (भ० २४।६०२)।
- ५. तेयाणुबंधी (भ० २५।६०३) ।

६. बहुलदोसे (भ० २**४।६०४); भगवतीवृत्तौ** 

(पत्र १३६) 'बहुदोसे' इति पाठो व्याख्या-तोस्ति----'बहुदोसे' त्ति बहुष्वपि सर्वेष्वपि ।

- ७. विवादविजए (ग) ।
- म् सुत्तरुई ओगाढरुई (ठाणं ४।६६); सुत्तरुयो ओगाढरुयो (भ० २४।६०६); स्थानाङ्गे भगवत्यां च 'उवएसरुई' पदस्य स्थाने 'ओगाढरुई' इति पदं लभ्यते । उत्तराध्ययने (२८।१६) स्थानाङ्गस्य दश्रमे (१०४) स्थाने 'उवएसरुई' इत्येव लभ्यते । भगवत्यां

धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पण्णत्ता, तं जहा—वायणा पुच्छणा परियट्टणा धम्मकहा ।

धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—'अणिच्चाणुप्पेहा असरणाणुप्पेहा एगत्ताणुप्पेहा संसाराणुप्पेहा''।

सुक्के झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते, तं जहा—पुहत्तवियक्के सवियारी एगत्त-वियक्के अवियारी 'सुहुमकिरिए अप्पडिवाई समुच्छिण्णकिरिए अणियट्री''।

सुक्कस्स' णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा-- 'विवेगे विउसग्गे अव्वहे असम्मोहे'' ।

सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पण्णत्ता, तं जहा-खंती मुत्ती अज्जवे मद्दवे ।

सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुष्पेहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा— 'अवायाणुष्पेहा असुभाणुष्पेहा अणंतवत्तियाणुष्पेहा विषरिणामाणुष्पेहा'' । से तं झाणे ॥

४४. से किं तं विउस्सग्गे ? विउस्सग्गे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा --दव्वविउस्सग्गे य भावविउस्सग्गे य !

से कि तं दव्वविउस्सग्गे ? दव्वविउस्सग्गे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा---'सरीर-विउस्सग्गे गणविउस्सग्गे'' उवहिविउस्सग्गे भत्तपाणविउस्सग्गे ।

से कि तं भावविउस्सग्गे ? भावविउस्सग्गे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—कसायविउस्सग्गे संसारविउस्सग्गे कम्मविउस्सग्गे ।

- अवगाढरुचेयों वैकल्पिकोर्थः क्रुतस्तेन अनयो-र्द्रयोः पदयोरेकार्थत्वमवसीयते—अथवा 'ओगाढ' त्ति साधुप्रत्यासन्नीभूतस्तस्य साधू-पदेशाद् रुचिरवगाढरुचिः ।
- १. एमाणुप्पेहा अणिच्चाणूप्पेहा असरणाणुप्पेहा संसाराणुप्पेहा (ठाणं ४।६८); एकत्ताणुप्पेहा अणिच्चाणुप्पेहा असरणाणुप्पेहा संसाराणुप्पेहा (भ० २५।६०८)।
- २. अत्र द्वे परम्परे उपलभ्येते । प्रस्तुतसूत्रे उत्तराध्ययने (२९७३) च सूक्ष्मकिय-अप्रति-पाति, समुच्छिन्नक्रिय-अनिवृत्ति इति पाठो लभ्यते । स्थानाङ्गे (४१६९) भगवत्यां (२९ ६०९) च सूक्ष्मक्रिय-अनिवृत्ति, समुच्छिन्न-क्रिय-अप्रतिपाति इति पाठो दृश्यते । उत्तर-वर्तिग्रन्थेषु प्रायः प्रस्तुतसूत्रपरम्परेव अनुसृता दृश्यते ।

लक्षणानां आलम्बनानां च व्यत्ययो लभ्यते— मुक्कस्स णं फाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा—खंती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे । सुक्कस्स णं फाणस्स चत्तारि आलंबणा पण्णत्ता, तं जहा—अव्वहे, असंमोहे, विवेगे, विउस्सग्मे । असौ व्यत्ययश्च चिन्तनीयोस्ति । स्थानाङ्गे (४७००,७१) उत्तरवर्तिसाहित्ये च सर्वत्रापि प्रस्तुतसूत्रसम्मता परम्परा अनुस्यू-तास्ति ।

- ४. अब्बहे असम्मोहे विवेगे विउस्सम्गे (ठाणं ४। ७०) ।
- ४. अणंतवत्तियाणुप्पेहा विप्परिणामाणुप्पेहा असुभाणुप्पेहा अवायाणुप्पेहा (ठाणं ४।७२, भ० २४।६१२) ।
- ६. गर्णावउसगो सरीरविउसगो (भ० २४। ६१४)।
- ३. भगवत्यां (२५१६१०,६११) शुक्लध्यानस्य

से किं तं कसायविउस्सग्गे ? कसायविउस्सग्गे चउब्व्व्हे पण्णत्ते, तं जहा--कोहक-सायविउस्सग्गे माणकसायविउस्सग्गे मायाकसायविउस्सग्गे लोहकसायविउस्सग्गे । से तं कसायविउस्सग्गे ।

से किं तं संसारविउस्सग्गे ? संसारविउस्सग्गे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—णेरइय-संसारविउस्सग्गे तिरियसंसारविउस्सग्गे मणुयसंसारविउस्सग्गे देवसंसारविउस्सग्गे । से तं संसारविउस्सग्गे ।

से किं तं कम्मविउस्सग्गे ? कम्मविउस्सग्गे अट्ठविहे पण्णत्ते, तं जहा—णाणावर-णिज्जकम्मविउस्सग्गे दरिसणावरणिज्जकम्मविउस्सग्गे वेयणीयकम्मविउस्सग्गे मोहणीय-कम्मविउस्सग्गे आउयकम्मविउस्सग्गे गोयकम्मविउस्सग्गे अंतरायकम्मविउस्सग्गे । से तं कम्मविउस्सग्गे । से तं भावविउस्सग्गे । [से तं अब्भितरए तवे ?] ।।

#### अणगार-वण्णग-पर्व

४५. 'तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे अणगारा भगवंतो''—अप्पेगइया आयारधरा<sup>°</sup> अप्पेगइया सूयगडधरा अप्पेगइया ठाणधरा अप्पेगइया समवायधरा अप्पेगइया विवाहपण्णत्तिधरा अप्पेगइया नायाधम्मकहाधरा अप्पेगइया उवासगदसाधरा अप्पेगइया अंतगडदसाधरा अप्पेगइया जणुत्तरोववाइयदसाधरा अप्पेगइया पण्हावागरणदसाधरा अप्पेगइया अंतगडदसाधरा अप्पेगइया अणुत्तरोववाइयदसाधरा अप्पेगइया पण्हावागरणदसाधरा अप्पेगइया विवागसुयधरा, अप्पेगइया वायंति अप्पेगइया पडि-पुच्छंति अप्पेगइया परियट्टंति अप्पेगइया अणुप्पेहंति, अप्पेगइया जब्खेवणीओ विक्खेवणीओ संवेयणीओ णिब्वेयणीओ चउब्विहाओ कहाओ कहंति, अप्पेगइया उड्ढंजाणू अहोसिरा झाणकोट्ठोवगया—संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहराति ॥

४६. संसारभउव्विग्गा जम्मण-जर-मरण-करण-गंभीर-दुक्ख-पक्खुभिय-पउर-सलिलं संजोग-विओग-वीचि-चिंता-पसंग-पसरिय-वह-बंध-महल्ल-विउल - कल्लोल-कलण-विलविय-लोभ-कलकलेंत-वोलबहुलं अवमाणण-फेण-तिव्वखिसण-पुलंपुलप्पभूय'-रोगवेयण-परिभव-विणिवाय-फरुसधरिसणा-समावडिय-कढिणकम्मपत्थर-तरंग-रंगत'-निच्चमच्चुभय- तोयपट्ठं कसाय-पायाल-संकुलं भवसयसहस्स-कलुसजल-संचयं पइभयं अपरिमियमहिच्छ-कलुसमइवाउ-वेग-उद्धम्ममाणदगरयरयंधकार'-वरफेण-पउर-आसापिवास-धवलं मोहमहावत्त-भोगभम-माण - गुप्पमाणुच्छलंत'- पच्चोणिवयंतपाणिय - पमायचंडबहुदुट्ठसावय- समाहयुद्धायमाण-पब्भार-घोरकंदियमहारव-रवंत-भेरवरवं अण्णाणभमंतमच्छ-परिहत्थ-अणिहुर्तिदियमहामगर-तुरिय-चरिय-खोखुब्भमाण-नच्चंत - चवल-चंचल-चलंत-धुम्मंत-जल-समूहं अरइ-भय

- १. तेणं इत्यादि (क) ।
- २. सं० पा०—आयारधरा जाव विवागसुयधरा ।
- ३. अतः परं वृत्तौ वाचनान्तरस्य निर्देशोस्ति 'तत्थ-तत्थ तर्हि-तर्हि देसे-देसे गच्छागच्छि गुम्मागुम्मि फुडाफुर्डिं । 'ख,ग' आदर्श्वयोरपि एष पाठो लभ्यते ।
- ४. बहुबिहाओ (क) ।
- ५. भवोव्विग्गा (क); भउव्विग्गाभीया (ख,ग) ।
- ६. पलुंपणप्पभूव (वृपा) ।
- ७. तरंग (क) ।
- प्रद्धुव्वमाण<sup>°</sup> (ख,वृपा); उद्धव्वमाण<sup>°</sup>(ग)।
- १. सुप्पमाणुच्छलंत (वृ) ।

विसायसोग-मिच्छत्त-सेलसंकडं अणाइसंताण-कम्मबंधणकिलेसचिक्खल्ल'-सुदुत्तारं' अमर-णर-तिरिय-णिरयगइ'-गमण-कुडिलपरियत्त-विउल-वेलं चउरंतमहंतमणवयग्गं रुंदं' संसारसागरं भीमदरिसणिज्जं' तरंति धिइ-धणिय-निष्पकंपेण तुरियचवलं' संवर'-वेरग्ग-त्ंग-कूवय-सुसंपउत्तेणं णाण-सिय-विमलमूसिएणं सम्मत्त-विसुद्ध-लद्ध-णिज्जामएणं धीरा संजमपोएण सीलकलिया पसत्थज्झाण-तववाय-पणोल्लिय-पहाविएणं उज्जम-ववसाय-गहिय-णिज्जरण-जयण-उवओग-णाण-दंसणविसुद्धवयभंड'-भरियसारा जिणवरवयणोव-दिट्ठमग्गेण अकुडिलेण सिद्धि-महापट्टणाभिमुहा समणवरसत्थवाहा सुसुइ-सुसंभास-सुपण्ह-सासा गामे-गामे एगरायं णगरे-णगरे पंचरायं दूइज्जंता जिइंदिया णिढभया गयभया सचित्ताचित्तमीसएसु दब्वेसु विरागयं गया 'संजया विरता'' मुत्ता लहुया णिरवकंखा साहु णिहुया चरंति धम्मं ।।

## भवणवासि-वण्णग-पदं

४७. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स वहवे असुरकुमारा देवा अंतियं पाउब्भवित्था—काल-महाणीलसरिस-णीलगुलिय-गवल-अयसिकुसुमप्पगासा वियसिय-सयवत्तमिव पत्तल-निम्मल' -ईसीसियरत्ततंव-णयणा गरुलायत-उज्जु-तुंगणासा ओयविय''-सिल-प्पवाल-विवफलसण्णिभाहरोट्ठा पंडुर-ससिसयल-विमल-णिम्मल-संख-गोखीर-फेण-दगरय-मुणालिया-धवलदंतसेढी हुयवह-णिद्धंत-धोय-तत्त-तवणिज्ज-रत्ततलतालु-जीहा अंजण-षण-कसिण-रुयग-रमणिज्ज-णिद्धकेसा वामेगकुंडलधरा अद्दचंदणाणुलित्तगत्ता ईसीसिलिध-पुप्फप्पगासाइं असंकिलिट्ठाइं सुहुमाइं वत्थाइं पवरपरिहिया वयं च पढमं समइक्कंता बिइयं च असंपत्ता भद्दे जोव्वणे वट्टमाणा तलभंगय-तुडिय-पवरभूसण-निम्मल-मणि-रयण-मंडिय-भुया दसमुद्दा-मंडियग्गहत्था 'चूलामणि-चिधगया''', सुरूवा महिडि्ढया महज्जुइया महब्बला'' महायसा महासोक्खा महाणुभागा'' हारविराइयवच्छा कडग-तुडिय-थंभियभुया अंगय-कुंडल-मट्ठ-'गंड-कण्णपीढधारी''' विचित्तहत्थाभरणा'' विचित्तमाला-मउलि-मउडा कल्लाणग-पवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणा भासुरबोंदी'' पलंबवणमालधरा दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं रूवेणं रूवेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं

- १. 'चिक्खिल (क); 'चिक्खिल्ल (ख)।
  २. सुदुत्तरं (क, ख, ग)।
  ३. णरय' (क)।
  ४. रुद्दं (ख), अशुद्धं प्रतिभाति।
  ४. भीमं दरिसणिज्जं (क)।
  ६. तुरियं चवलं (क); तुरियचंचलं (ख)।
  ७. संवेग (क)।
  ६. संवेग (क)।
  ६. संचयाओविरया (वृपा)।
  १०. निम्मला (क, ख)।
  ११. उवचिय (ख)।
- १२. चूडामणिचिंधया (क, ख) ।
- १३. × (ग) ।
- १४. अतोग्रे वृत्तौ वाचनान्तरस्य निर्देशोस्ति— हारविराइयवच्छा••••पलंबवणमालधरा । पूर्णः पाठों मूले स्वीक्वतोस्ति ।
- १४. गंडतलकण्णपीढधारी (क); गंडगलकण्ण-पीढधारी (ख)
- १६. विचित्तवत्याभरणा (क); विचित्तहत्थाभरणा विचित्तवत्थाभरणा (ख) ।
- १७. भासरबोंदी (क) ।

संघाएणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए' दिव्वाए जुईए' दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए दस दिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं आगम्मागम्म रत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो 'आयाहिण-पयाहिणं'' करेंति', करेत्ता वंदंति, णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता' 'णच्चासण्णे णाइदूरे'' सुस्सूसमाणा णमंसमाणा अभिमुहा विणएणं पंजलिउडा पज्जुवासंति ॥

४८. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे असुरिंदवज्जिया भवणवासी देवा अंतियं पाउब्भवित्था—

णागपइणो सुवण्णा, विज्जू अग्गीया दीवा। उदही दिसाकुमारा य, पवणथणिया य भवणवासी॥१॥ णागफडा-गरुल-वइर-'पुण्णकलस-सीह'°-हयवर-'गयंक-मयरंकवर''-मउड-वद्धमाण-णिज्जुत्त-विचित्त-चिंधगया सुरूवा महिडि्ढया जाव' पज्जुवासंति ॥

## वाणमंतर-वण्णग-पदं

४९. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे वाणमंतरा देवा अंतियं पाउब्भवित्था—पिसायभूया'' य जक्ख-रक्खस-किण्णर-किंपुरिस-भुयग-पइणो य महाकाया गंधव्वणिकायगणा'' णिउणगंधव्वगीयरइणो अणवण्णिय-पणवण्णिय-इसिवादिय-भूयवा-दिय''-कंदिय-महाकंदिया य कुहंड-पययदेवा चंचल-चवल-चित्त-कीलण-दवप्पिया 'गंभीर-हसिय-भणिय-पिय-गीय-णच्चणरई''' वणमालामेल-मउड-कुंडल-सच्छंदविउव्वियाहरण-चारुविभूसणधरा सब्बोउयसुरभि-कुसुम-सुरइयपलंव-सोभंत-कंत-वियसंत-चित्तवणमाल-रइय-वच्छा कामगमा कामरूवधारी णाणाविहवण्णराग-वरवत्थ-चित्तचित्लय-णियंसणा विविह-देसीणेवच्छ-गहियवेसा पमुइय-कंदप्प-कलह-केली-कोलाहलप्पिया हासबोलबहुला'' अणेग-मणि-रयण-विविह-णिज्जुत्त-चित्त''-चिंधगया सुरूवा महिड्ढया जाव'' पज्जुवासंति ॥

## जोइसिय-वण्णग-पदं

४०. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स (बहवे ?) जोइसिया देवा अंतियं पाउब्भवित्था—विहस्सती चंदसूरसुक्कसणिच्छरा राहू धूमकेतुबुहा य अंगारका

```
१. रिद्धीए (वृ) ।
```

```
२. जुत्तीए (क, ग) ।
```

```
३. आयाहिणं पयाहिणं (ख) ।
```

- ४. करेइ (क, ख) ।
- ५. वाचनान्तरे दृश्यन्ते— 'साइं साइं नामगोयाइं साविति (वृ)ा
- ६. णच्चासण्णा णाइ**दूरा** (क) ।
- ७. इह सूत्रं 'पुण्णकलससंकिण्णउप्फेससीहे' त्येवं क्वचिद्विक्षेषो दृश्यतो (वृ) ।
- म्यकमलायरमयंकवर (ख) ।

- १. ओ० सू० ४७।
- १०. पिसायाभूया (ग) !
- ११. गंधव्वाणिकायगया (क, ख); गंधव्वपइगणा (वृपा) ।
- १२. भूयवादी य (क)।
- १३. गहिरहसियगीयणच्चणरइ ति क्वचिद् दृश्यते (वृ) ।
- १४. हासकेलिबहुला (वृपा) ।
- १४. चित्राणि चिह्नानि (वृ) ।
- १६. अो० सू० ४७ ।

य तत्ततवणिज्जकणगवण्णा जे य गहा जोइसंमि<sup>\*</sup> चारं चरंति केऊ य गइरइया अट्ठावीस-तिविहा य णक्खत्तदेवगणा णाणासंठाणसंठियाओ य पंचवण्णाओ ताराओ ठियलेसा<sup>°</sup> चारिणो य अविस्साममंडलगई पत्तेयं णामंक-पागडिय-चिधमउडा महिडि्ढया जाव<sup>°</sup> पज्जुवासंति ।।

# वेमाणिय-वण्णग-पदं

५१. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स (बहवे ? ) वेमाणिया देवा अंतियं पाउब्भवित्था--सोहम्मीसाण-सणंकुमार-माहिंद-बंभ-लंतग-महासुक्क-सहस्सा-राणय-पाणयारण-अच्चुयवई' पहिट्ठा देवा जिणदंसणुस्सुयागमण'-जणियहासा पालम-

```
१. जोइसं (क, ख) ।
```

- २. चित्तलेसा (ख), वियाल (ग) ।
- ३. ओ० सू० ४७।
- ४. वैमानिकवर्णकोपि व्यक्तो, नवर वाचनान्तरगतं किञ्चिदस्य व्याख्यायते, तदन्तरगतं किञ्चद-धिकृतवाचनान्तरगतं च---तत्र सामाणियतायत्तीससहिया सलोगपालअग्गमहिसिपरिसाणियआयर-क्लेहि संपरितुडा कोष्ठकवर्तिवृत्तेर्मूलपाठो नोपलभ्यते— (देवसहस्रानुयातमागँ सुरवरगणेश्वर्रः प्रयतैः) समणुगम्मतसस्सिरीया (सर्वादरभूषिता सुरसमूहनायकाः सौम्यचारुरूपाः) देवसघजय-मिगमहिसव राहछगलदद्दु रहयगयवइभ्यगखग्गउसभंकविडिमपागडियचिधमउडा सदकयालोया पालगथुष्फगसोमणससिरिवच्छनंदियावट्टकामगमपोतिगममणोगमविमलसय्वओभट्टनामधेउफेहि विमा-णेहि तरुणदिवागरकरातिरेगप्पहेहि मणिकणगरयणधडियजालुज्जलहेमजालपेरंतपरिगएहि सपयरवर-मुत्तदामलंबंतभूसणेहि पचलियघंटावलिमहूरसद्दवंसतंतीतलतालगीयवाध्यरदेणं महरेणं मणोहरेणं पूरयंता अंबरं दिसाओ य, सोभेमाणा तुरियं संपट्टिया थिरजसा देविंदा हट्टतुट्टमणसा, सेसावि य कप्पवरविमाणाहिवा सविमाणविचित्तचिघनामंकविगडपागडमउडाडोवसुभदंसणिज्जा समन्निति, लोयतविमाणवासिणो यावि देवसंघा य पत्तेयविरायमाणविरइयमणिरयणकुंडलभिसंतनिम्मलनिय-गंकियविचित्तपागडियचिंधमउउा दायंता अप्पणो समुदयं, पेच्छंतावि य परस्स रिद्वीओ जिणिदव-दणनिमित्तभत्तीए चोइयमई (हर्षितमानसाक्त्व जीतकल्पमनुवर्तयमाना देवाः) जिणदसणुसूयाग-मणजणियहासा विउलवलसमूहपिडिया संभमेणं गगणतलविमलविउलगमणगइचवलचलियमण-पवणजइणसिग्धवेगा णाणाविहजाणबाहणगया ऊसियविमलधवलआयवत्ता विउव्वियजाणवाहण-विमाणदेहरयणप्पभाए उज्जोएंता नहं वितिमिरं करेंता, सब्विड्ढीए हुलियं (प्रयाताः) ।

गमान्तररमिदम्—पसिढिलवरमउडतिरीडधारी मउडदित्तसिरिया रत्ताभा पउमपम्हगोरा सेया ।

पुस्तकान्तरे देवीवर्णको दृष्यते, स चैवम् ....तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे अच्छरगणसंघाया अंतियं पाउब्भवित्था । ताओ णं अच्छराओ घंतधोयकणगरुयग-सरिसप्पभाओ समइक्कंता य बालभावं अणइवरसोम्मचारुरूवा निरुवहयसरसजोव्वणकक्कसतरुण-वयभावमुवगयाओ निच्चामवट्टियसहावा सव्वंगसुंदरीओ इच्छियनेवत्थरइयरमणिज्जगहियवेसा कि ते हारद्धहारपाउत्तरयणकुंडलवामुत्तगहेमजालमणिजालकणगजालसुत्तमजरितिरिय (तिय) कडगखड्डुगएगावलिकंठसुत्तमगहगधरच्छगेवेज्जसोणिसुत्तगतिलगफुरुलगसिद्धत्थियकण्णवालियससिसूर- पुष्फग-सोमणस'-सिरिवच्छ-णंदियावत्त-कामगम-पीइगम-मणोगम-विमल-सब्वओभद्र'-णाम-धेज्जेहिं विमाणेहि ओइण्णा 'वंदणकामा जिणाणं'' मिग-महिस-वराह-छगल-दद्दुर-हय-गयवइ-भुयग-खग्ग-उसभंक-विडिम-पागडिय-चिधमउडा पसिढिल<sup>\*</sup>-वरमउड-तिरीडधारी कुंडलुज्जोवियाणणा मउड-दित्त-सिरया रत्ताभा पउम-पम्हगोरा सेया सुभवण्णगंधफासा उत्तमवेउब्बिणो विविहवत्थगंधमल्लधारी महिडि्ढया जाव' पज्जुवासंति ॥

## परिसा-निग्गमण-पदं

५२. तए णं चंपाए णयरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु महया 'जणसद्देइ वा', जणवूहेइ वा' जणवोलेइ वा जणकलकलेइ वा जणुम्मीइ वा जणुक्क-लियाइ वा जणसण्णिवाएइ वा वहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ-एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे सहसंबुद्धे पुरिसोत्तमे जाव' संपाविउकामे, पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव' चंपाए णयरीए बहिया'' पुण्णभद्दे चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तं महप्फलं खलु भो देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं णामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-

उसभचक्कयतलभंगयतुडियहत्थमालयहरिसकेऊरवलयपालंबपलंबअंगुलिज्जगवलक्खदीणारमालियाचंद-मूरमालियाकंचिमेहलकलावपयरगपरिहेरगपायजालघटियाखिखिणिरयणोरुजालखड्डियवरनेउरचलण -मालियाकणगणिगलजालगमगरमुहविरायमाणणेऊरपचलियसद्दालभूसणधारणीओ दसद्धवण्णराग-रइयरत्तमणहरे (महार्घाणीनासानिःश्वासवायुवाह्यानि चक्षर्हराणि वर्णस्पर्श्वयुक्तानि) हयलाला-पेलवाइरेगे धवले कणगखचियंतकम्मे आगासफालियसरिसप्पहे अंसुयणियत्याओ आयरेण तुसारगोखीरहारदगरयपंडुरदुगुल्लसुकुमालसुकयरमणिज्जउत्तरिज्जाइं पाउयाओः वरचंदणचत्त्वियाओ वराभरणभूसियाओ सब्वोउयसुरभिकुसुमसुरइयविचित्तवरमस्लधारिणीओ सुगंधिचःणंगरागवर-वासपुष्कपूरगविराइया अहियसस्सिरीया उत्तमवरधूवधूविया सिरीसम्मणवेसा दिध्वकुसुममल्लदाम-पञ्भंजलिपुडाओ (उच्चत्वेन) चंदाणणाओ चंदविलासिणीओ चंददसमललाडाओ चंदाहियसोम-दंसणाओ उक्काओ विव उज्जोयमाणाओ विज्जुघणमिरीइसूरदिष्पंततेयअह्रियतरसन्तिगासाओ संगयगयहसियभणियचेट्रियविलाससललियसंलावनिउणजुत्तोवयारकुसलाओ सिंगारागारचारुवेसाओ सुंदरथणजघणवयणकरचरणनयणलावण्णरूवजोब्वण विलासकलियाओ सुरवधूओ सिरीसनवणीय-मउयसूक्रमालतुल्लफासाओ ववगयकलिकलुसाओ धोयनिद्वंतरयमलाओ सोमाओ कंताओ पियद-सणाओ सुरूवाओ जिणभत्तिदंसणाणुरागेणं हरिसियाओ ओवइयाओ यावि जिणसगासं दिव्वेणं सेसं तं चेव नवरं ठियाओ चेव (वृ) !

```
    ५. जिणदंसणूसगागमण (ख, ग)।
    ६. क्वचिद् 'बहुजणसद्दे इवा' (बृ)।

    १. सोमणस्स (क, ख)।
    ७. क्वचित्पठ्यते 'जाणवाए इ वा' 'जणुल्लावे इ.

    २. सव्वओ भट्सरिस (क, ख)।
    वा' (वृ)।

    ३. वंदका जिणिदं(ग)।
    ६. झह (ख, ग. वृ)।

    ४. सिढिल (क, ख)।
    ६. इह (ख, ग. वृ)।

    ५. ओ० सू० ४७।
    १०. बाहि (क)।
```

णमंसण-पडिष्चछण-पञ्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स' धम्मियस्स सुवयणस्स सवण-याए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामो णं देवाणुष्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामो णमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामो ।

एयं णे पेच्चभवे 'इहभवे य'' हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ त्ति कट्टु वहवे उग्गा उग्गपुत्ता भोगा भोगपुत्ता एवं दुपडोयारेणं—राइण्णाै खत्तिया माहणा भडा जोहा पसत्थारो मल्लई लेच्छई' लेच्छईपुत्ता अण्णे य वहवे राईसर-तलवर-माडंबिय'-कोडुंविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभितयो' अप्पेगइया वंदणवत्तियं अप्पेगइया पूयणवत्तियं अप्पेगइया सक्कारवत्तियं अप्पेगइया सम्माणवत्तियं अप्पेगइया दंसणवत्तियं अप्पेगइया कोऊहलवत्तियं' अप्पेगइया' अस्सुयाइं सुणेस्सामो सुयाइं निस्सं-कियाई करिस्सामो` अप्पेगइया मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सामो, अप्पेगइया पंचाणुव्वइयं सत्तसिवखावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामो, अप्पेगइया जिण-भत्तिरागेणं अप्पेगइया जीयमेयंति कट्टु ण्हाया कयबलिकम्मा कय-कोउय-मंगल-पाय-च्छित्ता' सिरसा कंठे मालकडा आविद्धमणि-सुवण्णा कप्पिय-हारद्वहार-तिसर-पालंब-पलंब-माण-कडिसुत्त-सुकयसोहाभरणा पवरवत्थपरिहिया चंदणोलित्तगायसरीरा, अप्पेगइया हयगया अष्पेगइया गयगया अष्पेगइया रहगया'' अष्पेगइया सिवियागया'' अष्पेगइया संद-माणियागया अप्पेगइया पायविहार-चारेणं'' पुरिसवग्गुरा-परिक्खिता'' महया उक्किट्ठ-सीहणाय-वोल- कलकलरवेणं 'पक्खुभियमहासमुद्दरवभूयं पिव''' करेमाणा '' चंपाए णयरीए मज्झंमज्झेणं णिगगच्छंति, णिगगच्छित्ता जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छंति, उवाग-च्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते छत्तादीए तित्थगराइसेसे पासंति, पासित्ता जाणवाहणाइ ठवेंति,' ठवेत्ता जाणवाहणेहितो पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता जेणेव

- १. आयरियस्स (क) ।
- २. × (ख,वृ);इहभवेय परभवेय (वृपा)।
- ३. क्वचित्पठ्यते 'इक्खागा नाया कोरव्वा' (वृ) ।
- ४. लच्छइ (क, ख) ।
- ४. मांडबिय (वृ) ।
- ६. \*पभिइओ (ख)।
- ७. कोऊल्ल<sup>°</sup> (ग)।
- c. अप्पेगइया अटुविणिच्छयहेउं (क्वचित्) ।
- अट्ठाइं हेऊइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छिस्सामो' त्ति क्वचिद् दृश्यते (वृ) ।
- १०. 'उच्छोलणपधोय' ति क्वचिद् दृश्यते (वृ) ।
- ११. वाचनान्तराधीतमथपदपञ्चकम् --- जाणगया जुग्गगया गिल्लिगया थिल्लिगया पत्रहणगया

- (वृ) ।

- १२. सौया° (वृ) ।
- १३. चारिणो (क, ख, ग)।

१४, वग्गावगिंग गुम्मागुम्मिति ववचिद् दुश्यते

१६. अतः परं वृत्तो वाचनान्तरस्य निर्देशः---

क्वचिदिदं पदचतुष्टयं दृश्यते--पायदद्रेणं

भूमि कंपेमाणा अंबरतलं पिव फोडेमाणा

एगदिसि एगाभिमुहा। भगवत्या (९।१४७)

मेतद् मूलपाठरूपेण उपलभ्यते ।

(वृ) ।

१५. °भूयमिव (क, ख)।

१७. विटुब्भंति (वृपा) ।

समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता' समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करेत्ता वंदति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणा णमंसमाणा अभिमुहा विणएणं पंजलिउडा<sup>°</sup> पज्जुवासंति ।।

## पवित्ति-वाउयस्स निवेदण-पदं

५३. तए णं से पवित्ति-वाउए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठ'-'चित्तमाणं-दिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण 'हियए ण्हाए' क्यवलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंग्रलाइं वत्थाइं पवरपरिहिए' अप्पमहत्त्वा-भरणालंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता 'चंपं णयरिं'' मज्झंमज्झेणं जेणेव वाहिरिया ''उवट्ठाणसाला जेणेव कूणिए राया भिभसारपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी—जस्स णं देवाणुप्पिया दंसणं कंखंति, जस्स णं देवाणुप्पिया दंसणं पीहंति, जस्स णं देवाणुप्पिया दंसणं पत्थंति, जस्स णं देवाणुप्पिया दंसणं पीहंति, जस्स णं देवाणुप्पिया दंसणं प्रत्थंति, जस्स णं देवाणुप्पिया दंसणं पीहंति, जस्स णं देवाणुप्पिया दंसणं प्रत्थंति, जस्स णं देवाणुप्पिया दंसणं अभिलसंति, जस्स णं देवाणुप्पिया णामगोयस्स वि सवणयाए हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाणहियया भवंति, से णं समणे भगवं महावीरे पुब्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे चंपं णगरिं पुण्णभद्दं चेइयं समोसढे। तं एयं णं देवाणुप्वियाणं पियट्ठयाए पियं णिवेदेमि, पियं भे भवउ ॥

# सविहि-णमोस्थु-पदं

४४. तए णं से कूणिए राया भिभसारपुत्ते तस्स पवित्ति-वाउयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण-हियए वियसिय-वरकमल-णयण-वयणे पयलिय-वरकडग-तुडिय-केऊर-मउड-कुंडल-हार-विरायंतरइयवच्छे पालंब-पलंबमाण-घोलंतभूसणधरे ससंभमं तुरियं चवलं नरिंदे सीहासणाओ

१. इतो वाचनान्तरगतं बहु लिख्यते—जाणाइं मुयंति वाहणाइं विसज्जेंति पुष्फतंबोलाइयं आउहमाइयं सचित्तालंकारं पाहणाओ य एगसाडियं उत्तरासंगं (करेंति ?) आयंता चोक्खा परमसुइभूया अभिगमेणं अभिगच्छंति, चक्खुफासे मणसा एगत्तीभावकरणेणं सुसमाहि-यपसंतसाहरियपाणिपाया अंजलिमउलियहत्था एवमेयं भंते ! अवितहमेयं असंदिद्धमेयं, इच्छियमेयं, पडिच्छियमेयं इच्छियपडिच्छियमेयं, इच्छियमेयं, पडिच्छियमेयं इच्छियपडिच्छियमेयं, सच्चेणं एसमट्ठे, माणसियाए—तच्चित्ता तम्मणा तल्लेसा तदज्फ्रवसिया तत्तिञ्चज्फ्त-वसाणा तदप्पियकरणा तयट्ठोवउत्ता तब्भावणा-भाविया एगमणा अविमणा अण्णणमणा जिणवयणधम्माणुरागरत्तमणा वियसियवर-कमलनयणवयणा पञ्जुवासह समोसरणाइं गवेसह आगंतारेसु वा आरामागारेसु वा आए-सणेसु वा आवसहेसु वा पणियमेहेसु वा पणियसालासु वा जाणगिहेसु वा जाणसालासु वा कोट्टागारेसु वा सुसाणेसु वा सुण्णागारेसु वा परिहिंडमाणा परिघोलेमाणा (वृ) ।

- २. पंजलिकडा (ग)।
- ३. सं० पा०-हट्ठतुट्ठ जाव हियए।
- ४. सं० पा०--ण्हाए जाव अव्य० ।
- चंपाणयरि (क) ।
- ६. सं० पा०----सच्चेव हेट्ठिल्ला वत्तव्वया जाव णिसीयइ ।

अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमु-इत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, करेत्ता आयंते चोक्खे परमसुइभूए अंजलि-मउलियहत्थे तित्थगराभिमुहे सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचेइ, अंचेत्ता दाहिणं जाणुं धरणितलंसि साहट्टू तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि निवेसेइ, निवेसेता ईसि पच्च-ण्णमेइ, पच्चुण्णमित्ता कडेँग-तुडिँय-थंभियाओ भुयाओ पडिसाहरइ, पडिसाहरित्ता करयल-परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टू एवं वयासी—णमोत्थुणं अरहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थगराणं सहसंबुद्धाणं पुरिसोत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरि-सवरगंधहत्थीणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं जीवदयाणं दीवो ताणं सरणं गई पइट्ठा धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं अष्पडिहयवरणाणदंसणधराणं वियट्छउमाणं जिणाणं जावयाणं तिण्णाणं तारयाणं मुत्ताणं मोयगाणं बुद्धाणं वोहयाणं सव्वण्णूणं सव्व-सिवमयलमस्यमणंतमवखयमव्वावाहमपुणरावत्तगं सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं-दरिसीण संपत्ताणं । णमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स आदिगरस्स तित्थगरस्स सहसंबुद्धस्स पुरिसोत्तमस्स पुरिससीहस्स पुरिसवरपुंडरीयस्स पुरिसवरगंधहत्थिस्स अभयदयस्स चक्खु-दयस्स मग्गदयस्स सरणदयस्स जीवदयस्स दीवो ताणं सरणं गई पइट्ठा धम्मवरचाउरंत-चक्कवट्टिस्स अप्पडिहयवरणाणदंसणधरस्स वियट्टछउमस्स जिणस्स जाणयस्स तिण्णस्स तारयस्स मुत्तस्स मोयगस्स बुद्धस्स बोहयस्स सव्वण्णुस्स सव्वदरिसिस्स सिवमयलमच्य-मणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तगं सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपाविउकामस्स मम धम्मा-यरियस्स धम्मोवदेसगस्स । वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए, पासइ मे भगवं तत्थगए इहगयं ति कट्टू वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे॰ णिसीयइ, णिसीइत्ता तस्स पवित्ति-वाउयस्स अद्धतेरस-सयसहस्साइं पीइदाणं दलयइ, दलइत्ता सक्का-रेइ सम्माणेइ, सक्कारेता सम्माणेता पडिविसज्जेइ ।।

# बलवाउय-निद्देस-पदं

५५. तए णं से कूणिए राया भिभसारपुत्ते वलवाउयं आमंतेइ, आमंतेत्ता एवं वयासी— खिप्पामेव भो देवाणुष्पिया ! आभिसेक्तं' हत्थिरयणं पडिकप्पेहि, हय-गय-रह-पवरजोह-कलियं च चाउरांगिण सेणं सण्णाहेहि, सुभद्दापमुहाण' य देवीणं वाहिरियाए उवट्ठाण-सालाए 'पाडियक्क-पाडियक्काइं'' जत्ताभिमुहाइं' जुत्ताइं' जाणाइं उवट्ठवेहि, चंपं णयरिं सब्भितर-बाहिरियं 'आसित्त-सम्मज्जिओवलित्तं सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु'' आसित्त-सित्त-सुइ'-सम्मट्ठ-रत्थंतरावण-वीहियं मंचाइमंचकलियं णाणा-

१. अभिसेक्कं (ख) ।

```
२. सुभद्दपमुहाण (क) ।
```

३. पाडेक्कं (वृ) !

```
४. जत्तागमणाइं (वृ) ।
```

```
५. क्वचिद् युग्यानि पठ्यन्ते (वृ) ।
```

```
६. आसियसमज्जिउवलित्तं (क); ख, ग'
```

प्रत्योक्त्विन्हाङ्कितः पाठो नोपलभ्यते । 'आसिय-समष्जिओवलित्तं' 'सिघाडगतियचउक्तचच्चर-चउम्मुहमहापहपहेसु' इदं च वाक्यद्वयं क्वचिन्नोपलभ्यते (वृ) ।

७. सुचिय (क, ख, ग) ।

विहराग-ऊसिय-'ज्झय-पडागाइपडाग-मंडियं' लाउल्लोइय-महियं गोसीस-सरसरत्तचंदण'-•दद्दर-दिण्णपंचंगुलितलं उवचियवंदणकलसं वंदणघड-सुकय-तोरण-पडिदुवारदेसभायं आसत्तोसत्त-विउल-वट्ट-वग्धारिय-मल्लदामकलावं पंचवण्ण-सरससुरभिमुक्क-पुप्फपुंजोवयार-कलियं कालगुरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरक्क-धूव-मघमघेंत-गंधुद्धुयाभिरामं सुगंधवरगंधगंधियं° गंधवट्टिभूयं करेहि य कारवेहि य, करेत्ता य कारवेत्ता य, एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि । णिज्जाहिस्सामि समणं भगवं महावीरं अभिवंदए ।।

# हत्थिवाउय-निद्देस-पदं

४६. तए णं से वलवाउए कूणिएणं रण्णा एवं वृत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ'-\*चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण° हियए करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु एवं सामि ! त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता हत्थिवाउयं आमंतेइ, आमंतेत्ता एवं वयासी---खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! कूणियस्स रण्णो भिभसारपुत्तस्स आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेहि, हय-गय-रह-पवरजोहकलियं चाउरंगिणि सेणं सण्णाहेहि, सण्णाहेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि ।।

५७. तए णं से हत्थिवाउए वलवाउयस्स एयमट्ठं सोच्चा<sup>\*</sup> आणाए विणएणं वयणं<sup>\*</sup> पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता<sup>\*</sup> छेयायरिय-उवएस-मइ-कप्पणा-विकप्पेहिं सुणिउणेहिं 'उज्जल-णेवत्थि-हव्व-परिवच्छियं" सुसज्जं धम्मिय [वम्मिय ?] सण्णढ<sup>\*</sup>-वद्धकवइयउप्पीलिय-

- १. पडाग-मंडियं (क) ।
- २. सं० पा०—°चंदन जाव गंधवट्टिभूयं ।
- ३. सं० पा०--हटुतुटु जाव हियए।
- ४. एवं वयासी (ख, ग) ।
- ¥. × (क, ग)।
- ६. × (क) ।
- ७. × (क, ग)।
- c. अत्तोग्रे 'आभिसेयं हत्थिरयणं' ति यत् क्वचिद्-दृश्यते सोऽपपाठः (वृ) ।
- ह. उज्जलणेवत्थेहि (वृपा); भगवत्यादर्शे 'एवं जहा ओववाइए' इति पाठो लभ्यते, द्रष्टव्यं ७।१७५ सूत्रस्य पञ्चमं पादटिप्पणम् । भगवतीवृत्ती (पत्र ३१७) औपपातिकस्य पाठो लिखितोस्ति, तत्र ये ये पाठभेदा: सन्ति ते यथास्थानं दर्शयिष्यन्ते उज्जलणेवत्यं हब्द परिवच्छियं ।
- १०. भगवतीवृत्तौ (पत्र ३१७) उद्धृते औपपातिक-

पाठे 'चम्मियसण्णद्ध' इति पाठो व्याख्यातोस्ति-चर्मणि नियुक्ताश्चार्मिमकास्तैं: सन्दद्धः ক্ব<del>ু</del>ন-सम्नाहश्चार्मिमकसन्नद्धः । प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ च 'धम्मियसण्णद्ध' इति पाठो व्याख्यातोस्ति— धर्मणिनियुक्ता धार्मिकाः तै: सन्नद्ध—कृत-सन्नाहं यत्तद्वार्मिकसन्नद्वम् । अनयोर्द्वयोरपि सूत्रयोव्यांख्याकाराः अभयदेवसूरिणो वर्तन्ते । तैर्यथा यथा पाठो लब्धस्तथा तथा व्याख्यातः प्राचीनलिप्यां धकार-चकार-वकाराणां प्रायः साद्श्यमस्ति, तेन अर्वाचीनलिप्यामत्र वर्णन-विपर्ययो जातः इति कल्पनापि नास्वाभाविकी । अस्मिन् प्रकरणे 'वस्मिय' इति पाठो सर्वथा उपयूक्तोस्ति । 'सण्णद्धबद्धवम्मियक् बए' (भ० ७।१८४) इति विशेषणं सैनिकस्य लभ्यते । युद्धसज्जे हस्तिनि चापि एतद्विशे-षणमुपयुक्तमस्ति । सम्भाव्यते अस्य विपर्ययः 'ध्रम्मिय, चम्मिय' रूपेण जातः ।

कच्छवच्छ'-'गेवेज्जवद्धगल-वरभूसणविरायंतं'' अहियतेयजुत्तं' 'सललियवरकण्णपूरविराइयं पलंवओचूल -महुयरकयंधयारं′' चित्तपरिच्छेयपच्छयं' पहरणावरण'-भरिय-जुद्धसज्जं सच्छत्तं सज्झयं सघंटं′ंपंचामेलय`-परिमंडियाभिरामं ओसारिय-जमलजुयलघंटं विञ्जुषिणद्वं व कालमेहं उप्पाइयपव्वयं व चंकमंतं' मत्तं गुलगुलंतं'' मण-पवण-जइणवेगं'' भीमं संगामिया-ओज्झं'' आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेइ, पडिकप्पेत्ताः हय-गय-रह-पवरजोहकलियं चाउ रंगिणि सेणं सण्णाहेइ, सण्णहेत्ता जेणेव बलवाउए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एयमाण-त्तियं पच्चप्पिणइ ।।

### जाणसालिय-निद्देस-पदं

४=. तए णं से वलवाउए जाणसालियं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी---खिप्पामेव भो देवाणुष्पिया ! सुभद्दापमुहाणं देवीणं वाहिरियाए उवट्ठाणसालाए पाडियक्क-पाडियक्काई जत्ताभिमुहाई जुत्ताई जाणाई उवट्ठवेहि, उवट्ठवेत्ता एयमागत्तियं पच्च-ष्पिणहि ॥

४६ तए णं से जाणसालिए वलवाउयस्स एयमट्ठं आणाए विणएणं वयणं पडि-सुणेइ, पडिसुणेत्ता जेणेव जाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाणाइं पच्चुवेक्खेइ, पच्चुवेक्खेत्ता जाणाइं संपमज्जेइ, संपमज्जेत्ता जाणाइं संवट्टेइ, संवट्टेत्ता जाणाइं णीणेइ, णीणेत्ता जाणाणं दूसे पत्रीणेइ, पत्रीणेत्ता जाणाइ समलकरेइ", समलकरेत्ता जाणाइ वरभंडग-मंडियाइं करेइ, करेत्ता जेणेव वाहणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वाहणसालं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता वाहणाइं पच्चुवेक्खेइ, पच्चुवेक्खेत्ता वाहणाइं संपमज्जेइ, संपमज्जेत्ता वाहणाइं णीणेइ, णीणेत्ता वाहणाइं अप्फालेइ, अप्फालेत्ता दूसे

- १. °वच्छकच्छ (वृपा, भ० वृत्ति पत्र ३१७) ।
- गबद्धगलगभूसणविराइयं (भ० वृत्तिपत्र ३१७)
- ३. 'अहियाहियतेयजुत्तं' ति क्वचिद् दृश्यते (वृ) ।
- ४. पलंबवचूल (क) ।
- ५. वाचनान्तरं त्वेवं ज्ञेयं (नेयं---मुद्रितवृत्ति)---'विरइयवरकण्णपूरं सललियपलंबओचूल-चानरुकरकयंधयारं' (वृ);विरइयकण्णपूरस-ललियपलंबावचूलचामरुकरकरंधयारं (भ० वृत्तिपत्र ३१७) ।
- ६ चित्तपरिच्छोयपच्छयं (क, ख); चित्त-परिच्छोयपच्छयं कणगघडियं सुत्तगसुबद्ध-कच्छं (भ० वृत्तिपत्र ३१८) ।
- ७. सचावसरपहरणा (वृषा); बहुपहरणावरण १४. समलंकारेइ (क); समालंकारेइ (ग, वृ)। (भ० वृत्तिपत्र ३१८)।

- ्र. 'सपडागं' इत्यपि दृश्यते । (वृ) ।
- १०. सक्खं (वृपा, भ० वृत्तिपत्र ३१८) ।
- ११. क्वचित् 'महामेहमिव' दृश्यते (वृ); मेहमिव गुलगुलंतं (भ० वृत्तिपत्र ३१=) !
- १२. सिग्घवेगं (वृपा) ।
- १३. संगामियाओगगं । (क, वृ); संगामियपाओगां (ख); संगामियअयोगं (ग); संगामिया-ओज्जं, संगामियाओज्भं (वृथा);वृत्तेद्वितीय-पाठान्तरं मूलपाठरूपेण स्वीकृतम् । भगवत्यां (७।१७१) 'संगामियं अओज्में' इति पाठो लभ्यते । अर्थसमीक्षया एव पाठः सम्यक् प्रति-भाति ।

पवीणेइ, पवीणेत्ता वाहणाइं समलंकरेइ, समलंकरेत्ता वाहणाइं वरभंडग-मंडियाइं करेइ, करेत्ता 'वाहणाइं जाणाइं जोएइ, जोएत्ता पओय-लट्ठि पओय-धरए य समं आडहइ, आडहित्ता वट्टमग्गं गाहेइ, गाहेत्ता'' जेणेव वलवाउए तेणेव उवागच्छइ, उवगच्छित्ता बलवाउयस्स एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ'।।

### णयरगुत्तिय-निह्नेस-पदं

्द०. तए णं से वलवाउए णयरगुत्तियं आमंतेइ, आमंतेत्ता एवं वयासी─िखिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चंपं णयरिं सब्भितरवाहिरियं आसित्त'-सम्मज्जिओवलित्तं जाव" कारवेत्ता य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि ॥

६१. तए णं से णयरगुत्तिए वलवाउयस्स एयमट्ठं आणाए विणएणं वयणं' पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता चंपं णयरि सब्भितर-बाहिरियं आसित्त-सम्मजिओवलित्तं जाव' कारवेत्ता य जेणेव बलवाउए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ ।।

### बलवाउयस्स निवेदण-पदं

६२. तए णं से वलवाउए कोणियस्स रण्णो भिभसार-पुत्तस्स आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पियं पासइ, हय-गय"-"रह-पवरजोह-कलियं चाउरंगिणि सेणं° सण्णाहियं पासइ, 'सुभद्दापमुहाण य' देवीणं पडिजाणाइं उवट्ठवियाइं पासइ, चंपं णयरिं सब्भितर"-बाहिरियं जाव" गंधवट्टिभूयं कयं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए" पीइमणे" "परमसोमण-स्सिए हरिसवस-विसप्पमाण हियए जेणेव कूणिए राया भिभसारपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करथल-परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंर्जाल कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वेद्धावेत्ता एवं वयासी--कप्पिए णं देवाणुप्पियाणं आभिसेक्के हत्थिरथणे, हय-गय-रह-पवरजोहकलिया य चाउरंगिणी सेणा सण्णाहिया, मुभद्दापमुहाण य देवीणं वाहिरियाए उवट्ठाणसालाए पाडियक्क-पाडियक्काइं जत्ताभिमुहाइं जुत्ताइं जाणाइं उवट्ठावियाइं, चंपाणयरी सब्भितर-वाहिरिया आसित्त-सम्मज्जिओवलित्ता जाव" गंधवट्टिभूया कया, तं णिज्जंतु णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं अभिवंदया ॥

### कूणिय-सज्जा-पदं

६३. तए णं से कूणिए राया भिभसारपुत्ते वलवाउयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ''-"चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्तिए हरिसवस-विसप्पमाण °-हियए

१. दशाश्रुतस्कन्धे (१०।१०) चिह्नाङ्कितपाठस्य	७. सं० पा०हयगय जाव सण्षाहियं ।
स्थाने भिन्न: कमो लभ्यतेजाणाइं जोएति,	<b>∽. सुभदापमुहाणं (ग)</b> ।
जोएत्ता वट्टमग्गं गाहेति, गाहेत्ता पत्रोय-	६. अब्भितर (क)।
लर्ट्वि पओयधरए य समं आडहइ, आडहित्ता।	१०. ओ० सू० ५४ ।
२. पच्चप्पिषाइ (क) ।	११. चित्तमाणंदिए णंदिए (ग) ।
३. आसिय (क, ख)।	१२. सं० पा०पीइमणे जाव हियए ।
४. झो० सू० ४४ ।	१३. ओ० सू० ४४ ।
乂. × (布,ग) ।	१४. सं० पा० हट्ठतुट्ठ जाव हियए ।
६. ओ० सू० ४४ ।	

जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अट्टणसालं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता अणेगवायाम-जोग्ग-वग्गण-वामद्दण-मल्लजुढकरणेहि संते परिस्संते सयपाग-सहस्सपागेहि सुगंधतेल्लमाईहिं पीणणिज्जेहिं दप्पणिज्जेहिं मयणिज्जेहिं विहणिज्जेहिं सव्विदियगायपल्हाय-णिज्जेहिं" अब्भिगेहि अब्भिगिए समाणे तेल्लचम्मंसि-पडिपुण्ण-पाणि-पाय-सुउमाल-कोमल-तलेहि पुरिसेहि छेएहि दक्खेहि पसट्ठेहि कुसलेहि मेहावीहि निउणसिष्पोवगएहि अब्भिंगण'-परिमद्दणुव्वलण-करण-गुणणिम्माएहि अट्ठिसुहाए – मंससुहाए तयासुहाए रोमसुहाए—चउव्विहाए संबाहणाए संबाहिए समाणे अवगय-खेय\*-परिस्ममे अट्टण-सालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता समत्तजालाउलाभिरामे' विचित्त-मणिरयण-कूटिटमतले रमणिज्जे ण्हाणमंडवंसि णाणामणि-रयण-भत्तिचित्तंसि ण्हाणपीढंसि सुहणिसण्णे सुहोदएहि गंधोदएहि पुष्फोदएहि सुद्धोदएहि पुणो-पुणो कल्लाणग-पवर-मज्जणविहीए मज्जिए तत्थ कोउयसएहिं बहुविहेहिं कल्लाणगपवरमज्जणावसाणे पम्हल-सूक्रमाल-गंध-कासाइ'-लूहियंगे सरस-सुरहि-गोसीस-चंदणाणुलित्तगत्ते अहय-सुमहग्ध-दूसरयण-सुसंवुए° सुइमाला′-वण्णग-विलेवणे य आविद्धमणिसुवण्णे कष्पियहारद्वहार-तिसरय-पालंब-पलंबमाण-कडिसुत्त-सुकयसोभे पिणद्ध`-गेवेज्जग-अंगुलिज्जग-ललियंगय-ललियकया-भरणे वरकडग-तुडिय-श्रंभियभुए अहियरूवसस्सिरीए मुद्दियपिंगलंगुलीए'' कुंडलउज्जोविया-णणे मउडदित्तसिरए हारोत्थय-सुकय-रइयवच्छे पालंब-पलंबमाण-पड-सुकयउत्तरिज्जे'' णाणामणिकणग-रयण-विमल-महरिह-णिउणोविय-मिसिमिसंत-विरइय-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-लट्ठ-आविद्ध-वीरवलए, किं बहुणा ? कप्परुक्खए चेव अलंकियविभूसिए णरवई सकोरंट-मल्लदामेणं'' छत्तेणं'' धरिज्जमाणेणं चउचामरवालवीइयंगे''-मंगल-जयसद्द-कयालोए''

- १. एतानि पदानि वाचनान्तरे कमान्तरेणाधीयन्ते ११. सुकय-पडउत्तरिज्जे (ना० १।१।२५, जं०
  - (वृ) ।
- २. पट्ठेहि (ख, ग) ।
- ३. अब्भंगण (क, ग, वृ) ।
- ४. सेय (क, ख) ।
- ५. समुत्त० (वृपा) ।
- ६. कासाइय (ख, ग) ।
- ७. संवृए (ग, वृ); सुसंवुए (वृपा)।
- -. सुरभिमाला (ख, ग)।
- पिणिद्ध (क, ख, ग)।
- १०. मुद्दियापिंगलंगुलीए (ख, ग); × (वृ); मुद्दि-यपिंगलंगुलीए (वृषा) ।
  - १. मुद्रितवृत्तौ 'विचित्तिय' पाठस्तथा 'विचित्रितम्' व्याख्या विद्यते, किन्तु हस्तलिखितवृत्तौ !चित्तिय' पाठस्तथा 'चित्रितम्' इति व्याख्या

- ३१६) ।
- १२. सकोरेंट० (क, ग) ।

विद्यते ।

- २. भूसणघरेणं (हस्तलिखितवृत्ति) ।
- ३. उउ (मुद्रितवृत्ति) ।

मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता अणेगगणनायग-दंडनायग-राईसर-तलवर-माडंविय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-संधिवालसद्धि संपरिवुडे धवल-महामेहणिग्गए इव गहगण-दिप्पंत-रिक्ख-तारागणाणां मज्झे ससिव्व पिअदंसणे णरवई जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव आभिसेक्के हत्थिरयणे तेणेव उवागच्छइ, उवा-गच्छित्ता अंजणगिरिकूडसण्णिभं गयवइं णरवई दुरूढे ।।

#### परिकर-सज्जा पदं

६४. तए णं तस्स कूणियस्स रण्णो भिभसारपुत्तस्स आभिसेक्कं हत्थिरयणं दुरूढस्स

- वेरुलियदंडसज्जिएणं वइरामयवत्थिनिउणजोइ-यअट्टसहस्सवरकंचणसलागनिम्मिएणं सुणिम्मल-रययसुच्छएणं निउषोवियमिसिमिसितमणिरय-णसूरमंडलवितिमिरकरनिग्गयग्गपडिहयपुणर -विपच्चापडंतचंचलमिरिइकवयं विणिमुयंतेणं सपडिदंडेणं धरिज्जमाणेणं आयवत्तेणं विरायंते (वृ) ।
- १४. वाचनान्तरेतु----'चउहिय' पवरगिरिकुहर-विवरणसमुइयनिरुवहयचमरपच्छिमसरीरसंजा -यसंगयाहि अमलियसियकमलविमलुज्जलियरय-यगिरिसिहरविमलससिकिरणसरिसकलधोय निम्मलाहि पवणाहयचवलललियतरंगहत्थनच्च-तवीइपसरियखीरोदगपवरसागरूप्यूरचंचलाहि माणससरपरिसरपरिचियावासविसयवेसाहि क-णगगिरिसिहरसंसियाहि ओवइयउप्पइयतुरिय-चवलजइणसिग्धवेगाहि हंसवधूयाहि चेव कलिए । णाणामणिकणगरयणविमलमहरिह-तवणिज्जुज्जलविचित्तदंडाहि चिल्लियाहि नरवइसिरि' समुदयपगासणकरीहि वरपट्टणुमा-याहि समिद्धरायकुलसेवियाहि कालागरु पवर-कुंदुरुवकतुरुवकवरवण्णवासगंधुद्धुयाभिरामाहि सललियाहि उभओपासंपि उक्खिप्पमाणाहि चामराहिं सुहसीयलवायवीइयंगे' (वृ) ।
- १५. अतः परं 'जेणेव' अतः पूर्व भगवतीवृत्त्यां (पत्र ३१८०) औषपातिकस्य यः पाठः उद्धृ-तोस्ति स प्रस्तुतपाठात् भिग्नो लभ्यते—'एवं

```
१. 'ताहि य' त्ति क्वचित् (वृ) ।
```

२. सरि (हस्तलिखितवृत्ति) ।

जहा उववाइए जाव' इत्यनेनेदं सूचितम्----अणेगगणनायगदंडनायगराईसरतलवरमाडंबिय -कोडुंबियमंतिमहामंतिगणगदोवारियअमच्चचेड -पीढमदणगरनिगमसेट्रिसेणावइसत्यवाहदूयसंधि -पालसदिं संपरिवुडे धवलमहामेहनिगगए विव गहगणदिष्पंतरिक्खतारागणमज्भे ससिव्व पिय-दंसणे नरवई मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ मज्जणघराओ पडिनिक्खमित्ता जेणेव । प्रस्तूत-सूत्रस्यअष्टादशे सूत्रे भगवतीवृत्तौ (४६३) च परिवारवर्णनेपि ईद्शः पाठो लभ्यते----अणेगगणनायगदंडनायगराईसरतलवरमाडंबिय -कोडुंबियमंतिमहामंति गणगदोवारियअमच्च -चेडपीढमदनगरनिगमसेट्रिसत्थवाहद्र्यसंधिवाल -सहि संपरिवृडे। यत्र राज्ञः परिवारवर्णनं तत्रैतादृश: पाठो लभ्यते, यत्र च जनसमूह-वर्णनं तत्र मतिमहामंति' आदिपदानि नैव दृश्यन्ते । इष्टव्यं प्रस्तुतसूत्रस्य ४२ सूत्रं तथा भगवतीवृत्तावपि (पत्र ४६३) उद्धृतः औषपा-तिकपाठ:----'माहणा भडा जोहा मल्लई लच्छई अण्णेय बहवे राईसरतलवरमाडबिय-कोडुंबियइब्भसेट्विसेणावइ त्ति । प्रस्तूतप्रकरणे जनसमूहवर्णकः पाठः केनापि कारणेन प्रविष्टो-भूत् इति सम्भाव्यते ।

- १. तारागण (क) ।
- २ गयवरं (क) ।
- ३. कालागरुः---क्वष्णागरुः (हस्तलिखितवृत्ति) । ४. कलित इति वर्तते (वृ) ।

समाणस्स तप्पढमयाए इमे अट्ठट्ठ मंगलया पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया, तं जहा— सोवत्थिय-सिरिवच्छ-णंदियावत्त-वद्धमाणग-भद्दासण-कलस-मच्छ-दप्पणया ।

तयाणंतरं च णं पुण्णकलसभिगारं 'दिव्वा य छत्तपडागा'' सचामरा दंसण-रइय-आलोय-दरिसणिज्जा वाउद्धय'-विजयवेजयंती य ऊसिया गगणतलमणुलिहंती पुरओ अहाणुपुव्वीए संपद्ठिया ।

तयाणंतरं च णं वेरुलिय-भिसंत-विमलदंडं पलंबकोरंटमल्लदामोवसोभियं चंदमंडलणिभं समूसियं विमलं आयवत्तं पवरं सीहासणं वरमणिरयणपादपीढं सपाउयाजोयसमाउत्तं\* बहुकिंकर<sup>\*</sup>-कम्मकर-पुरिस-पायत्तपरिविखत्तं पुरओ अहाणुपुब्वीए<sup>५</sup> संपट्ठियं ।

तयाणंतरं च णं बहवे लट्ठिग्गाहां कुंतरगाहा 'चामरग्गाहा पासंग्गाहा चावग्गाहा'' पोत्थयग्गाहा फलगग्गाहा पीढग्गाहा वीणग्गाहा कूवग्गाहा' हडप्पग्गाहां पुरओ अहाणु-पुब्वीए संपद्ठिया ।

तयाणंतरं च ण बहवे दंडिणो मूंडिणो सिहंडिणो जडिणो पिछिणो' हासकरा डमरकरा दवकारा चाडुकरा कंदप्पिया कोक्कुइया किङ्डकरा य वायंता य गायंता य णच्चंता य हसंता य भासंता य 'सासंता य''' सावेंता य रक्खंता'' य आलोयं च करेमाणा जयजयसद्दं'' पउंज-माणा'' पुरओ अहाणुपूव्वीए संपठि्ठया।

तयाणंतरं 'च णं''' जच्चाणं तरमल्लिहायणाणं'' थासग-अहिलाण-चामर-गंड-

- १. दिव्वायवत्तपडागा (राय० सू० ४०) । राय-पसेणइयसूत्रस्य वत्तौ (पृ० १०८) 'दिव्यात-पत्रपताका' इति व्याख्यातमस्ति, अतः 'दिव्वा-यवत्तपडागा' इति पाठः फलितो भवति । सम्भाव्यते लिपिदोषेण वकारस्य स्थाने छकारो जातः, तेन पाठपरिवर्त्तनमुरत ।
- २. वाउद्धूय (ख) ।
- ३. सपाउयाजुग° (भ० वृत्तिपत्र ४७१) ।
- ४. दासीदासकिंकर (वृपा) ।
- ५. अहाणुपुव्वी (क) ।

```
६. असिलट्टिग्गाहा (वृषा) ।
```

- ७. चावग्गाहा चामरग्गाहा पासग्गाहा (क, ख) ।
- कूवयग्गाहा (भ० वृत्तिपत्र ४७६) ।
- १. हडप्पयग्गाहा (क); हडप्कयग्गाहा (ख) ।
- १०. पिच्छिणो (ग) ।
- ११. × (क, ख); सासिताय (वृ)।
  - १. दंडप्पग्गाहे (हस्तलिखिवृत्ति) ।
  - २. पिच्छी (मुद्रितवृत्ति) !

- १२. रावेंता (वृपा) ।
- १३. जयसहं (ग) ।
- १४. सङ्ग्रहगाथाक्त्वास्य गमस्य क्वचिद् दृक्यम्ते, तद्यथा----
  - असिलट्ठिकुंतचावे, चामरपासे य फलगपोस्थे य । वीणाकूयग्गहे, तत्तो हडप्पग्गाहे<sup>र</sup> य । दंडी मुंडिसिहंडी, पिछी<sup>र</sup> जडिणो य हासकिड्ढा य । दवकार<sup>र</sup> चडुकारा, कंदप्पिय-कुक्कुइ गायए ।। गायंता वायंता, नच्चंता तह हसंतहासेंता । सावेंता रावेंता, आलोयजयं पउंजंता ।। (वू) ।
- ११. × (क, ग)।
- १६. वाचनास्तरेत्वेवमधीयते 'वरमल्लिभ)सणाणं हरिमेलामउलमल्लियच्छाणं चंचुच्चियललिय-पुलियचलचवलचंचलगईणं लंघणवग्गमधावण-धोरण तिवई<sup>\*</sup> जइणसिक्खियगईणं ललंतलाम-गललायवरभूसणाणं मुहभंडगओचूलगवासग-
  - ३. दबकारा (हस्तलिखितवृत्ति) ।
  - ४. तिवइ (हस्तलिखितवृत्ति) ।

परिमंडियकडीणं किंकरवतरुणपरिग्गहियाणं' अट्ठसयं वरतुरगाणं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं।

तयाणंतरं च णं ईसीदंताणं 'ईसीमत्ताणं ईसीत्ंगाणं'' ईसीउच्छंगविसाल-धवलदंताणं कंचणकोसी-पविट्ठदंताणं कंचणमणिरयणभूसियाणं' वरपुरिसारोहगसंपउत्ताणं' अट्ठसयं गयाणं पुरओ अहाणुपुब्वीए संपट्ठियं ।

तयाणंतरं च ण सच्छत्ताण सङ्भयाणं सर्घटाणं सपडागाणं सतोरणवराणं सणंदि घोसाणं सर्खिखिणीजालं -परिविखत्ताणं हेमवय-चित्त-तिणिस-कणग-णिज्जुत्त-दास्याणं कालायससुकयणेमि-जंतकम्माणं सुसिलिट्ठवत्तमंडलधुराणं आइण्णवरतुरगसुसंपउत्ताणं कुसलनरच्छेयसारहिसुसंपग्गहियाणं बत्तीसतोणपरिमंडियाणं सकंकडवडेंसगाणं सचावसरपहरणावरणभरिय-जुद्धसज्जाणं अट्ठसयं रहाणं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं ।

तयाणंतरं च णं असि-सत्ति-कुंत-तोमर-सूल-लउल-भिडिमाल-धणुपाणिसज्ज पायत्ताणीयं'' पुरओ अहाणुपुव्वीए संपद्ठियं ॥

# कूणियस्स निग्गमण-पदं

६५. तए णं से कूणिए राया हारोत्थय-सुकय-रइयवच्छे'' कुंडलउज्जोवियाणणे मउडदित्तसिरए णरसीहे णरवई णरिंदे णरवसहे मणुयरायवसभकष्पे अब्भहियं रायतेय-लच्छीए दिष्पमाणे हत्थिवखंधवरगए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवर-चानराहि उद्धुव्वमाणीहि-उद्धुव्वमाणीहि वेसमणे विव'' णरवई अमरवइसण्णिभाए इड्ढीए पहियकित्ती हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए समणुगम्ममाणमग्गे जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

- मिलाणचमरीगंडपरिमंडियकडीणं किंकरवर तरुणपरिग्गहियाणं' (वृ); हरिमेलामउल-मल्लियच्छाणं चंचुच्चियललियपुलियचलचवल-चंचलगईणं लंघणवग्गणधावणधोरणतिवई-जइणसिविखयगईणं ललंतलामगललायवरभूस-णाणं मुहभंडगओचूलग (क, ख, ग), भगवती-वृत्तौ (पत्र ४७६) वाचनान्तररस्य पाठे 'वर-मल्लिहाणाणं' इति मूलपाठत्वेन तथा 'वर-मल्लिहायणाणं' वरमल्लिभासणाणं' एतद् द्वयं पाठान्तरत्वेन उल्लिखितमस्ति ।
- $\mathfrak{l} \cdot \times \mathfrak{l}$
- २. ईसीमंताणं (क, ग) ।
- ३. × (ग, वृ) ।
- ४. × (ग, वृ); वरपुरिसारोहगसंपउत्ताण (वृपा)।

- ४. सखिखणीजाला (ग) ।
- ६. क्वचिद्दृश्यते 'सुसंविद्धचक्कमंडलधुराणं (वृ)।
- ७. तुरगसंपउत्ताणं (क, ख) ।
- म. क्वचित्पठ्यते ----'हेमजालगवक्खजालॉखखि-णीधंटजालपरिक्खित्ताणं (वृ) ।
- ६. बत्तीसतोरण° (क, ग, वृणा) ।
- १०. वाचनान्तरे पुनः—'सन्तद्वबद्धवम्मियकवयाणं उष्पीलियसरासणवट्टियाणं पिणद्धगेवेज्ज-विमलवरवद्वचिधपट्टाणं गहियाउहप्पहरणाणं ' (वृ) ।
- ११. अतः परं भगवतीवृत्तौ (पत्र ३१९) 'पालंब-पलंबमाणपडसुकयउत्तरिज्जे' इति पाठ; उल्लि-खितोस्ति, परन्तु प्रस्तुतसूत्रे नैष पाठो लभ्यते । १२. चेव (वृ) ।

४२

६६. तए' णं तस्स कूणियस्स रण्णो भिभसारपुत्तस्स पुरओ महं आसा आसधरा', उभओ पासि णागा णागधरा', पिट्ठओ रहसंगेल्लि ॥

६७. तए णं से कूणिए राया भिभसारपुत्ते अब्भुग्गयभिंगारे पग्गहियतालियंटे' ऊसवियसेयच्छत्ते पवीइयवालवीयणीएं सव्विड्ढीए सव्वजुतीए सव्वबलेणं सव्वसमुदएणं सव्वादरेणं सव्वविभूईए सव्वविभूसाए सव्वसंभमेणं' सव्वपुष्फगंधमल्लालंकारेणं' सव्व-तुडिय-सहसण्णिणाएणं महया इड्ढीए महया जुईए महया बलेणं महया समुदएणं महया वरतुडिय-जमगसमग-प्पवाइएणं संख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-हुडुक्क-मुरय'-मुइंग-दुंदुहि-णिग्घोसणाइयरवेणं चंपाए णयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ ॥

### आसीवयण-पदं

६८ तए णं तस्स कूणियस्स रण्णो 'चंपाए णयरीए' मज्झमज्झेणं निग्गच्छमाणस्स बहवे अत्थत्थिया कामत्थिया भोगत्थिया लाभत्थिया किव्विसिया'' कारोडिया कारवाहिया संखिया चक्किया नगलिया मुहमगलिया वद्धमाणा पूसमाणया'' खंडियगणा ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं मणाभिरामाहि'' हिययगमणिज्जाहिं वग्नूहिं जय-विजयमंगलसएहिं अणवरयं अभिणंदता य अभित्थुणंता य एवं वयासी--जय-जय णंदा ! जय-जय भद्दा ! भद्दं ते, अजियं जिणाहि जियं पालयाहि, जियमज्झे वसाहि । इंदो इव देवाणं चमरो इव असूराणं धरणो इव नागाणं चंदो इव ताराणं भरहो इव मणुयाणं बहुइं

- १. जम्बुद्वीपप्रज्ञप्तौ (३।१७९) एतत्सूत्रं पूर्वं विद्यते, ततश्च राजवर्णकं सूत्रं वर्तते । इह च राजवर्णकं सूत्रं पूर्वमस्ति तत्तश्च 'आसा आस-धरा' एतत्सूत्रमस्ति । जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ते: क्रम: सभ्यक् प्रतिभाति । प्रस्तुतसूत्रे न जाने केन-कारणेन कमविपर्ययो जात: ।
- २. आसवरा (क, ख, वृषा) ।
- ३. णागवरा (क, ख, वृपा) ।
- ४. "तालयंटे (ख, ग) ।
- ¥. °वीजिणीए (क,ख) ।
- ६. सव्वजुत्तीए (क, वृ); सव्वजुईए (ख)।
- ७. क्वचिदिदं पदचतुष्कमधिकं दृश्यते—'पगईहि नायगेहि तालायरेहि सब्वोरोहेहिं' (वृ) ।
- ५. क्वचिद्दृश्यते—'सव्वपुष्कवत्थगंधमल्लालंकार-विककसाए' (वृ) ।
- ६. मुरव (क, ख, ग) ।
- १० चंपं णयरि (ख) ।
- ११. 'इड्ढिसिय' त्ति रूढिगम्याः 'किट्टिसिय' त्ति किल्विषिका भाण्डादय इत्यर्थः, क्वचित्

किट्टिसिक स्थाने 'किल्विसिय' त्ति पठ्यते (भ० वृत्तिपत्र ४८१) ।

- १२. पूसमाणवा (भ० वृत्तिपत्र ४६१); अतः परं भगवतीवृत्तौ 'खंडियगणा' इति पाठो नास्ति, किन्तु तत्र त्रीणि पाठान्तराणि उल्लिखितानि सन्ति----'इज्जिसिया पिंडिसिया घंटिय'पि क्वचिद्दूग्र्यते, तत्र च इज्यां----पूजामिच्छन्त्ये-षयन्ति वा ये ते इज्यैषास्त एव स्वाधिके क प्रत्ययविधानाद् इज्यैषिका:, एवं पिण्डैषिका अपि, नवरं पिण्डो---भोजनम्, घाण्टिकास्तु ये घण्टया चरन्ति तां वा वादयन्ति ।
- १३. मणोभिरामाहि (क); वाचनान्तराधोतमथ प्रायो वाग्विशेषणकदम्बकम्—'उरालाहि कल्ला णाहि सिवाहि धण्णाहि मंगल्लाहि सस्सिरिया-हि हिययगमणिज्जाहि हिययपस्हायणिज्जाहि मियमहुरगंभीरगाहिमाहि (मियमहुरगंभीर-सस्सिरियाहि' त्ति क्वचिद्दृथ्यते—भ० वृत्तिपत्र ४८२) अट्ठसइयाहि अपुणरुत्ताहि' (वृ) ।

वासाईं बहूईं वाससयाईं 'बहूईं वाससहस्साई'' 'बहूईं वाससयसहस्साइं'' अणहसमग्गो हट्ठतुट्ठो परमाउं पालयाहि इट्ठजणसंपरिवुडो चंपाए णयरीए अण्णेसिं च बहूणं गामागर-णयर-खेड-कब्बड-'दोणमुह-मडंव''-पट्टण-आसम-निगम'-संवाह-संणिवेसाणं आहेवच्चं पोरेवच्चं 'सामित्तं भट्टित्तं'' महत्तरगत्तां आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे महयाहय-नट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल- तुडिय-घण-मुइंगपडुप्पवाइयरवेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहराहि त्ति कट्टु जय-जय सद्दं पउंजति ॥

# कूणिय-पज्जुवासणा पदं

६६. तए णं से कूणिए राया भिभसारपुत्ते नयणमालासहस्सेहि पेच्छिज्जमाणे-पैच्छिज्जमाणे हिययमालासहस्सेहि अभिणंदिज्जमाणे'-अभिणंदिज्जमाणे मणोरहमालास-हस्सेहि विच्छिप्पमाणे-विच्छिप्पमाणे वयणमालासहस्सेहि अभिथुव्वमाणे-अभिथुव्वमाणे कंतिसोहग्गगुणेहिं° पत्थिज्जमाणे-पत्थिज्जमाणे' बहूणं नरनारिसहस्साणं दाहिणहत्थेणं'' अंजलिमालासहस्साइं पडिच्छमाणे-पडिच्छमाणे 'मंजुमंजुणा घोसेणं आपडिपुच्छमाणे''-आपडिपुच्छमाणे''' भवणपंतिसहस्साइं समइच्छमाणे-समइच्छमाणे'' चंपाए नयरीए मज्झं-

- १. × (ग) ।
- २. × (ख) ।
- ३. मडंबदोणमुह (ग, वृ) ।
- ४. × (ग, वृ) ।
- **५. भट्टित्तं सामित्तं (वृ)** ।
- ६. उन्नइज्जमाणे (वृषा) ।
- ७. कंतिदिव्वसोहगगगुणेहि (क, ख); कंतिरूव-सोहग्गजोव्वणगुणेहि (भ० वृत्तिपत्र ४८३) ।
- द. पिच्छिज्जमाणे (क, ग); पेच्छिज्जमाणे (ख); पच्छिज्जमाणे (वृ)।
- ६. अंगुलिमाल।सहस्सेहि दाइज्जमाणे २ दाहिण-हत्थेणं वहूणं नरनारिसहस्साणं (भ० वृत्तिपत्र ४८३) ।
- १०. अपडिबुज्भमाणे (क, वृपा); पडिबुज्भमाणे
  - १. 🗙 (भ० वृत्तिपत्र ४८३) ।
  - २. °मीसएणं----जयेति शब्दस्य यद् उद्घोषणं तेन मिश्री यः (भ० वृत्तिपत्र ४८३) ।
  - ३. अपरिबुज्भमाणे (हस्तलिखितवृत्ति) ।
  - ४. अयं पुनर्दण्डक: क्वचिदन्यथा दृश्यते— कंदर-दरिकुहरविवरगिरिपायारट्टालचरियदारगोउर-ापसायदुवारभवणदेवकुलआरामुज्जाणकाणण–

(स, वृपा); प्रस्तुतसूत्रस्य वाचनान्तरे पर्यु-षणाकल्पे (सूत्र ७४) 'अपडिबुज्फमाणे' तथा जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तौ (३।१५६) 'अपडिवुज्फमाणे' इति पाठो लभ्यते ।

- ११. × (भ० वृत्तिपत्र ४⊏३) ।
- १२. वाचनान्तरे त्वेचं ... 'तंती-तल-ताल-तुडिय'-गीयवाइयरवेणं महुरेणं मणहरेणं जयसद्दुम्धोस-विसएपं' मंजुमंजुणा घोसेणं अपडिबुज्फमाणे' 'कंदरगिरिविवरकुहरगिरिवरपासादुढघणभवण-देवकुलसिंधाडगतिगचउक्कचच्चरआरामुज्जाण-काणणसभापवापदेसदेसभागे'' 'पडिसुयासय-सहस्ससंकुलं' करेंते'' हयहेसियहत्थिगुलगुलाइय-रहघणघणसद्दमीसएणं महया कलकलरवेण जणस्स 'महुरेणं पूर्यते'' सुगंधवरकुसुमचुण्ण-प्रायत्रप्र' कि (स. क्लिक २०)

सभापएस' त्ति (भ० वृत्तिपत्र ४८३)।

- ५. पडिसद्द° (डिसुआ) (मुद्रितवृत्ति) ।
- ६. पडिसुयासयसहस्ससंकुले करेमाणे (भ० वृत्ति-पत्र ४८३) ।
- ७. सुमहुरेणं पूरेंतोंऽबरं समंता (भ० वृत्तिपत्र ४९३) ।

मज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते छत्ताईए तित्थयराइसेसे पासइ, पासित्ता आभि-सेक्कं हत्थिरयणं ठवेइ, ठवेत्ता आभिसेक्काओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता अवहट्टु पंच रायकउहाइं, तं जहा—खग्गं छत्तं उप्फेसं वाहणाओ वालवीयणयं, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ, [तं जहा—खग्गं छत्तं उप्फेसं वाहणाओ वालवीयणयं, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ, [तं जहा—सचित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए अचित्ताणं दव्वाणं अविओसरणयाए एगसाडिय'-उत्तरासंगकरणेणं चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेणं' मणसो' एगत्ति-भावकरणेणं ] । समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ । [तं जहा—काइयाए वाइयाए माणसियाए । काइयाए—ताव संकुइयग्गहत्थपाए सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासइ । वाइयाए—जं जं भगवं वागरेइ एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छियपडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुब्भे वदह अपडिकूलमाण' पज्जुवासइ । माणसियाए—महयासंवेगं जणइत्ता तिव्वधम्माणुरागरत्ते पज्जुवासइ ] ।।

### देवी पज्जुवासणा-पदं

७०. तए णंताओ सुभद्दप्पमुहाओं देवीओ अंतोअंतेउरंसि ण्हायाओं' •ैकयबलि-कम्माओ कय-कोउय-मंगल॰-पायच्छित्ताओ सब्वालंकारविभूसियाओं' बहूहि खुज्जाहि चिलाईहि वामणीहिं वडभीहिं' बब्वरीहिं पउसियाहिं जोणियाहिं पल्हवियाहिं' ईसिणि-याहिं'' थारुइणियाहिं'' लासियाहिं लउसियाहिं सिहलीहिंदमिलीहिं आरवीहिं पुलिदीहिं

उब्विद्धवासरेणुकविलं' नभं करेंते कालागुरु-कुंदुरुक्क<sup>\*</sup>-तुरुक्क-धूवनिवहेणं जीवलोगमिव वासयंते समंतओखुभियचक्कवालं पउरजणबालवृड्ढपमुइयतुरियपहावियविउलाउलबोलवहुलं नभं करेंते' (वृ); भगवतीवृतौ (पत्र ४८३) एतद् वाचनान्तरं मूलपाठस्वेन उल्लिखितमस्ति । एतस्मिन् ये ये पाठभेदाः सन्ति ते थथास्थानमुपदर्णिताः ।

- १. वालवीयणियं (क); वालवीयणिज्जं (ख,ग)
- २. एगसाडिएणं (भ० २१९७) ।
- ३. 'हत्थिखंधविट्ठंभणयाए' त्ति वाचनान्तरम् (वृ)
- ४. मणसा (ग) ।
- ५. एगत्तिकरणॆणं (स); एगत्तीकरणॆणं (भ० २।९७)। कोष्ठकवर्तिपाठो व्यास्थांद्याः प्रतीयते ।
- ६. पंजलिकडे (ग) ।
- ७. अपडिकूलेमाणे (ग) ।
- कोष्ठकवतिपाठो व्याख्यांशः प्रतीयते ।
- ٤. धारिणीप्पमुहाओ (वृवा) ।
- १. °रेणुमइलं (भ० वृत्तिपत्र ४८३) ।

- १०. सं० पा०--ण्हायाओ जाव पायच्छित्ताओ ।
- ११. वाचनान्तरं 'वाहुयसुभगसोवत्थियवद्धमाण-पुस्समाणवजयविजयमंगलसएहिं अभिधुव्व-माणीओ कप्पाछेयायरियरइयसिरसाओ महया गंधढणि मुयंतीओ' (वृ) ।
- १२. वडभियाहि (वृ)।
- १३. पण्हवियाहि (ख,ग)।
- १४. ईसिगिणियाहि (भ० ९।१४४ का पाद-टिप्पणम्) ।
- १४. चारुणियाहि (ख); चाराणियाहि (ग)।
  - २. पवरकुंदुरुक्क (भ० वृत्तिपत्र ४८३) ।

पक्कणीहिं वहलीहिं मरुंडीहिं सबरीहिं पारसीहिं णाणादेसीहिं विदेसपरिमंडियाहि' इंगिय-चिंतिय-परिथय'-वियाणियाहिं सदेसणेवत्थ-गहियवेसाहिं चेडियाचवकवाल-वरिसधर-कंचुइज्ज-महत्तरवंदपरिक्खिताओ अंतेउराओ निग्गच्छंति, निगाच्छित्ता जेणेव पाडियक्क-जाणाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पाडियक्क-पाडियक्काइं जत्ताभिमुहाइं जुत्ताइं जाणाइं दुरूहंति, दुरूहित्ता णियगपरियालसदिं संपरिवुडाओ चंपाए णयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते छत्तादीए तित्थयराइसेसे पासंति, पासित्ता पाडियक्क-पाडियक्काइं जाणाइं ठवेंति, ठवेत्ता जाणेहितो पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता बहूहिं खुज्जाहिं जाव चेडियाचक्कवाल-वरिसधर-कंचुइज्ज-महत्तरवंदपरिक्खित्ताओ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छंति । [तं जहा- सचित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए अचित्ताणं दव्वाणं अविओ-सरणयाए' विणओणयाए गायलट्ठीए चक्खुप्फासे अंजलिपग्तहेणं मणसो' एगत्तिभावकर-णेणं]'। समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेति, करेत्ता वंदति णमंसंति, बंदित्ता णमंसित्ता कूणियरायं पुरओ कट्टु ठिइयाओ चेव सपरिवाराओ अभिमुहाओ विणएणं पंजलिकडाओ पज्जुवासंति ।।

# धम्मदेसणा-पदं

७१. तए णं समणे भगवं महावीरे कूणियस्स रण्णो भिभसारपुत्तस्स सुभद्दापमुहाण य देवीणं तीसे य महतिमहालियाए इसिपरिसाए मुणिपरिसाए जइपरिसाए देवपरिसाए अणेगसयाए अणेगसयवंदाए अणेगसयवंदपरियालाए' ओहवले अइवले महब्बले अपरिमिय-वल-वीरिय-तेय-माहप्प-कंतिजुत्ते सारय-णवत्थणिय-महुरगंभीर-कोंचणिग्घोस-दुंदुभिस्सरे जरे वित्थडाए कंठे वट्टियाए सिरे समाइण्णाए अगरलाए' अमम्मणाए 'सुव्वत्तक्खर-सण्णिवाइ-याए'' पुण्णरत्ताए सव्वभासाणुगामिणीए सरस्सईए जोयणणीहारिणा सरेणं अद्धमागहाए भासाए भासइ-अरिहा' धम्म परिकहेइ । तेसि सब्वेसि आरियमणारियाणं अगिलाए धम्म आइक्खइ । सावि य णं अद्धमाहगा भासा तेसि सब्वेसि आरियमणारियाणं अप्लाए धम्म अाइक्खइ । सावि य णं अद्धमाहगा भासा तेसि सब्वेसि आरियमणारियाणं अप्लणो'' सभासाए परिणामेणं परिणमइ, तं जहा-अत्थि लोए अत्थि अलोए, अत्थि जीवा अत्थि अजीवा अत्थि बंधे अत्थि मोक्खे अत्थि पुण्णे अत्थि पावे अत्थि आसवे अत्थि संवरे अत्थि वेयणा अत्थि णिज्जरा, अत्थि अरहंता अत्थि चक्कवट्टी अत्थि वलदेवा अत्थि वासुदेवा, अत्थि नरगा अत्थि णेरइया अत्थि तिरिक्खजोणिया अत्थि तिरिक्खजोणिणीओ, अत्थि

- १. 'विदेसपरिपिडियाहि' ति वाचनान्तरम् (वू) ।
- २. पत्थियमणोगय (वृपः) ।
- ३. अविमोयणयाए (भ० ६।१४६) ।
- ४. मणस्स (भ० ६।१४६) ।
- ५. कोष्ठकथतिपाठो व्याख्यांशः प्रतीयते ।
- ६. °परिवाराए (क, ख, ग) ।
- ७. द्रष्टव्यं रायपसेणइयसुत्रस्य ६१ सुत्रस्य पाद-

टिप्पणम् ।

- ५. सब्वक्खरसण्णिवाइयाए (ग); क्वचिदिदं विशेषणढयम्— 'फुडविसयमहुरगंभीरगाहियाए सब्वक्खरसण्णिवाइयाए (वृ) ।
- ९. अरहा (क) ।
- १०. अप्पणो-अप्पणो (ख) ।

माया अत्थि पिया अत्थि रिसओ, अत्थि देवा अत्थि देवलोया, अत्थि सिद्धा अत्थि सिद्धी अत्थि परिणिव्वाणे अत्थि परिणिव्वुया, अत्थि पाणाइवाए मुसावाए अदत्तादाणे मेहुणे परिग्गहे अत्थि कोहे माणे माया लोभे अत्थि पेज्जे दोसे कलहे अब्भक्खाणे पेसुण्णे परपरि-वाए अरइरई मायामोसे मिच्छादंसणसल्ले, अत्थि पाणाइवायवेरमणे मुसावायवेरमणे अदत्तादाणवेरमणे मेहुणवेरमणे परिग्गहवेरमणे' अत्थि कोहविवेगे माणविवेगे मायाविवेगे अदत्तादाणवेरमणे मेहुणवेरमणे परिग्गहवेरमणे' अत्थि कोहविवेगे माणविवेगे मायाविवेगे लोभविवेगे पेज्जविवेगे दोसविवेगे कलहविवेगे अब्भक्खाणविवेगे पेसुण्णविवेगे पर्परिवाय-विवेगे अरतिरतिविवेगे मायामोसविवेगे° मिच्छादंसणसल्लविवेगे', सब्वं अत्थिभावं अत्थि त्ति वयइ, सब्वं णत्थिभावं णत्थि त्ति वयइ, सुचिण्णा कम्मा सुचिण्णफला भवंति दुचिण्णा कम्मा दुचिण्णफला भवंति फूसइ पुण्णपावे पच्चायंति जीवा सफले कल्लाणपावए ॥

७२. धम्ममाइक्खइ – इणमेव णिग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवलिए' संसुद्धे पडि-पुण्णे णेयाउए सल्लकत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे 'णिज्जाणमग्गे णिव्वाणमग्गे'' अवितहमवि-संधि' सव्वदुक्खण्पहीणमग्गे । इत्थंठिया' जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणिव्वायंति सव्वदुक्खाणमंतं करेंति । एगच्चा पुण एगे भयंतारो' पुव्वकम्मावसेसेणं अण्णयरेसु देवलो-एसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति – महड्विएसु' 'महज्जुइएसु महव्वलेसु महायसेसु॰ महा-सोक्खेसु महाणुभागेसु दूरंगइएसु चिरट्ठिइएसु । ते णं तत्थ देवा भवंति महिड्व्या' •महज्जुइया महब्बला महायसा महासोक्खा महाणुभागा दूरंगइया॰ चिरट्ठिइया हारविराइय-वच्छा'' •कडग-तुडिय-थंभियभुया अंगय-कुंडल-मट्ठगंड-कण्णपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमाला-मउलि-मउडा कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणा भासुरवोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं रुवेणं दिव्वेणं कासेणं दिव्वेणं संघाएणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए दस दिसाओ उज्जोवेमाणा॰ पभासेमाणा कप्पोवगा गतिकल्लाणा आगमेसिभद्दा'' •पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूखा॰ पडिरूबा ॥

७३. तमाइक्खइ– एवं खलु चउर्हि ठाणेहि जीवा णेरइयत्ताए कम्म पकरेंति, पकरेत्ता णेरइएसु उववज्जति, तं जहा-–महारभयाए महापरिग्गहयाए पंचिदियवहेणं कुणिमा-हारेणं ।

•''एवं खलु चउहि ठाणेहि जीवा तिरिक्खजोणियत्ताए कम्मं पकरेंति, पकरेत्ता

१. सं० पा०-परिग्गहवेरमणे जाव मिच्छादंसण-	७. भवंतारो (क) ।
सल्लविवेगे ।	<ul> <li>सं० पा०महिड्दिएसु जाव महासोक्खेसु ।</li> </ul>
२. मिच्छादंसणसल्लवेरमणे (ख) ।	१. सं० पा०
३. केवलि (ख, ग); केवले (वृ) ।	१०. सं० पा०हारविराइयवच्छा जाव पशासे-
४. जिञ्चाणमग्गे णिज्जाणमग्गे (क, ग) ।	माणा।
<b>४. अ</b> वितहमविसंधे (क); अवितहमसंदिद्धे	११. सं० पा०――आगमेसिभदा जाव पडिरूवा ।
(ख) ।	१२. सं० पा०एवं एएणं अभिलावेणं तिरिक्ख-
६. इहट्टिया (ग, वृ) ।	जोणिएसु ।

तिरिक्खजोणिएसु उक्वज्जंति तं जहा°—माइल्लयाए अलियवयणेण उक्कंचणयाए वंचण-याए ।

•'एवं खलु चउहि ठाणेहि जीवा मणुस्सत्ताए कम्मं पकरेति, पकरेत्ता मणुस्सेसु उववज्जंति, तं जहा°---पगइभद्दयाए पगइविणीययाए साणुक्कोसयाए अमच्छरिययाए ।

•'एवं खलु चँउहि ठाणेहि जीवा देवत्ताए कम्म पकरेंति, पकरेत्ता देवेसु उववज्जंति, तं जहा°—सरागसंजमेणं संजमासंजमेणं अकामणिज्जराए वालतवोकम्मेणं ॥

७४. तमाइक्खइ—-

जह णरगा गम्मती, जे णरगा जा य वेयणा णरए। सारीरमाणसाइं', तिरिक्खजोणीए ॥१॥ दुवखाइ माणुस्सं च अणिच्चं, वाहि-जरा-मरण-वेयणा-पउरं। य देवलोए, देविड्ढि देवे देवसोक्खाइं\* ॥२॥ णरगं तिरिक्खजोणि, माणुसभावं च देवलोगं च। सिद्धे य सिद्धवर्साहं, छज्जीवणियं परिकहेइ ।।३।। जह जीवा वज्झंती, मुच्चंती जह य संकिलिस्संति। जह दूक्खाणं अतं, करेंति केई अपडिवद्धा ॥४॥ 'अट्टा अट्टियचित्ता'', जह जीवा दुक्खसागरमुवेंति । कम्मसमुग्गं विहाडेंति ॥१॥ वेरग्गमूवगया, जह जह रागेण कडाणं, कम्माणं पावगो फलविवागो। जह य परिहीणकम्मा, सिद्धा सिद्धालयमुवेंति'॥६॥

७१. तमेव धम्मं दुविहं आइक्खइ, तं जहा—अगारधम्मं<sup>®</sup> अणगारधम्मं च ॥ ७६. अणगारधम्मो ताव—इह खलु सव्वओ सव्वत्ताए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइयस्स सब्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं मुसावाय-अदत्तादाण-मेहुण-परिग्गह-राईभोयणाओ वेरमण । अयमाउसो ! अणगारसामाइए धम्मे पण्णत्ते । एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए णिग्गंथे वा णिग्गंथी वा विहरमाणे आणाए आराहए भवति ॥

७७. अगारधम्मं दुवालसविहं आइवखइ, तं जहा—पंच अणुव्वयाइं, तिण्णि गुणव्वयाइं, चत्तारि सिक्खावयाइं । पंच अणुव्वयाइं, तं जहा—थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, थूलाओ मुसावायाओ वेरमणं, थूलाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, सदारसंतोसे, इच्छापरिमाणे । तिण्णि गुणव्वयाइं, तं जहा—'दिसिव्वयं, उवभोगपरिभोगपरिमाणं,

- १. सं० पा०---मणुस्सेसु ।
- २. सं० पा०—देवेसु।
- ३. सारीरमाणुसाइं (क, ख, ग) ।
- ४. देवभोगाइं (ख) ।
- ५. अट्टदुह्रहिृथचित्ता (क, स, वृपा); अट्टणिय-ट्रियचित्ता (वृपा) ।
- ६. वाचनास्तरे गाथा: कमान्तरेणाधीयन्ते तदन्ते

च एवं खलु जीवा निस्सीलेत्याद्यधीयते---'एवं खलु जीवा निस्सीला णिव्वया णिग्गुणा णिम्मेरा निप्पच्चविद्याणपोसहोववासा अक्कोहा णिक्कोहा छीणक्कोहा' एवं मानाद्यभिलापका अपि अणु--पुब्वेणं अणमिच्छमीससम्ममित्यादिना क्रमेण (वृ)।

७. आगारधम्म (क, ग) ।

### समोसरण-पयरणं

अणत्थदंडवेरमणं"। चत्तारि सिक्खावयाइं, तं जहा—सामाइयं, देसावयासियं, पोसहोववासे, अतिहिसंविभागे। अपच्छिमा मारणंतिया संलेहणाझूसणाराहणां। अयमाउसो ! अगार-सामाइए धम्मे पण्णत्ते। एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए समणोवासए वा समणो-वासिया वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ।।

### धम्मयडिवत्ति-पदं

७ व. तए णं सा महतिमहालिया मणूसपरिसां समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ'-'चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण°हियया उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण'-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता अत्थेगइया मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पब्बइया, अत्थेगइया पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवण्णा ॥

### परिसा-पडिग<mark>मण-प</mark>दं

७१. अवसेसा णं परिसा समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी---सुअवखाए ते भंते ! निग्गंथे पावयणे, "भुपण्णत्ते ते भंते ! निग्गंथे पावयणे, सुभासिए ते भंते ! निग्गंथे पावयणे, सुविणीए ते भंते ! निग्गंथे पावयणे, सुभाविए ते भंते ! निग्गंथे पावयणे°, अणुत्तरे ते भंते ! निग्गंथे पावयणे । धम्मं" णं आइक्खमाणा उवसमं आइक्खह, उवसमं आइक्खमाणा विवेगं आइक्खह, विवेगं आइक्खमाणा वेरमणं आइक्खह, वेरमणं आइक्खमाणा अकरणं पावाणं कम्माणं आइक्खह । णत्थि णं अण्णे केइ समणे वा माहणे वा जे एरिसं धम्ममाइक्खित्तए, किमंग पुण एत्तो उत्तरतरं ? एवं वदित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ।।

### कृणिए-पडिगमण-पदं

०. तए णं से कूणिए राया भिभसारपुत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ'- 'चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण° हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी---सुयक्खाए ते भंते ! निग्गंथे पावयणे'', 'सुपण्णत्ते ते भंते ! निग्गंथे पावयणे, सुभासिए ते भंते ! निग्गंथे पावयणे, सुविणीए ते भंते ! निग्गंथे पावयणे, सुभाविए ते भंते ! निग्गंथे पावयणे, अणुत्तरे ते भंते ! निग्गंथे पावयणे । धम्मं णं आइक्खमाणा उवसमं आइक्खह, उवसमं आइक्ख-

१. अणत्थदंडवेरमणं दिसिध्वयं उवभोगपरिभोग-	६. सं० पा०एवं सुपण्णत्ते सुभासिए सुविणीए
परिमाणं (क, ग) ।	सभावित ।
२. °जूसणा° (क) ।	सुभाविए । ७. धम्मे (क, ख, ग) ।
३. महज्ज्वपरिसा (ग, वृ) ।	∽. वंदित्ता (क, ग) ।
४. सं० पा०—हट्टतुट्ठ जाव हियया ।	१. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए ।
४. आयाहिणं (ख) ।	१०. सं० पा०-पावयणे जाव किमंग ।

माणा विवेगं आइक्खह, विवेगं आइक्खमाणा वेरमणं आइक्खह, वेरमणं आइक्खमाणा अकरणं पावाणं कम्माणं आइक्खह । णत्थि णं अण्णे केइ समणे वा माहणे वा जे एरिसं धम्ममाइक्खित्तए°, किमंग पुण एत्तो उत्तरतरं ? एवं वदित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए ।।

### देषी-पडिगमण-पदं

द१. तए णं ताओ सुभद्दापमुहाओ देवीओ समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ'- 'चित्तमाणंदियाओ पीइमणाओ परमसोमणस्सियाओ हरिसवस-विसप्पमाण 'हिययाओ उट्ठाए उट्ठेंति, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करेत्ता वंदत्ति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी---सुयक्खाए ते भंते ! निग्गंथे पावयणे,' 'सुपण्णत्ते ते भंते ! निग्गंथे पावयणे, सुभासिए ते भंते ! निग्गंथे पावयणे, सुविणीए ते भंते ! निग्गंथे पावयणे, सुभासिए ते भंते ! निग्गंथे पावयणे, सुविणीए ते भंते ! निग्गंथे पावयणे, सुभाषिए ते भंते ! निग्गंथे पावयणे, अणुत्तरे ते भंते ! निग्गंथे पावयणे । धम्मं णं आइक्खमाणा उवसमं आइक्खह, उवसमं आइक्खमाणा विवेगं आइक्खह, विवेगं आइक्खमाणा वेरमणं आइक्खह, वेरमणं आइक्खमाणा अकरणं पावाणं कम्माणं आइक्खह । णरिथ णं अण्णे केइ समणे वा माहणे वा जे एरिसं धम्ममाइक्खित्तए', किमंग पुण एत्तो उत्तरतरं ? एवं वदित्ता जामेव दिसं पाउब्भुयाओ तामेव दिसं पडिगयाओ ॥

#### १. सं० पा०--- हटतद जाव हियए ।

२. सं० पा०---- पावयणे जाव किमंग।

# ओवाइय-पयरणं

### गोयम-वण्णग-पदं

५२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई णामं अणगारे 'गोयमे गोत्तेणं'' सत्तुस्सेहे समचउरंससंठाणसंठिए वइररिसहणाराय-संघयणे कणग-पुलग-णिघस-पम्ह-गोरे उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे महातवे' ओराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्तविउलतेयलेस्से' समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाण् अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

५३. तए णंसे भगवं गोयमे जायसङ्ढे जायसंसए जायकोऊहल्ले, उप्पण्णसङ्ढे उप्पण्णसंसए उप्पण्णकोऊहल्ले, संजायसड्ढे संजायसंसए संजायकोऊहल्ले, समुप्पण्णसड्ढे समुप्पण्णसंसए समुप्पण्णकोऊहल्ले उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता नच्चासण्णे नाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासमाणे एवं वयासी—

### कम्मबंध-पदं

ь४. जीवे णं भंते ! असंजए<sup>\*</sup> अविरए अप्पडिहयपच्चवखायपावकम्मे सकिरिए असंबुडे एगंतदंडे एगंतवाले एगंतसुत्ते पावकम्मं अण्हाइ ? हंता अण्हाइ ।।

ँ दर्भ. जीवे णं भंते ! असंजए' 'अविरए अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे सकिरिए असंवडे एगंतदंडे एगंतदाले° एगंतसूत्ते मोहणिज्जं पावकम्मं अण्हाइ ? हंता अण्हाइ ।।

ँद६ जीवे णं भंते ! मोहणिज्जं कम्मं वेदेमाणे कि मोहणिज्जं कम्मं बंधइ ? वेय-णिज्जं कम्मं बंधइ ? गोयमा ! मोहणिज्जं पि कम्मं बंधइ, वेयणिज्जं पि कम्मं बंधइ, णण्णत्थ चरिममोहणिज्जं कम्मं वेदेमाणे वेयणिज्जं कम्मं बंधइ, णो मोहणिज्जं कम्मं बंधइ ॥

१. गोयमसगोत्ते णं (भ० १।६) ।	विशेषणान्यपि दृश्यन्ते—'चोट्सपुव्वी चउनाणो-
२. महातवे घोरतवे (क, ख, ग) । भगवत्यामपि	वगए सब्बक्खरसन्तिवाती' ।

- (१।६) एतद् विशेषणं नास्ति ।
- ४. अस्संजए (क) । ४. संव पाव-असंजय आव प्रांतस्य
- ३. बतः परं भगवत्थां (११९) निम्ननिर्दिष्टानि १. सं० पा०----असंजए जाव एगतसुत्ते ।
- 49

#### णेरइय-उववाय-पदं

८७. जीवे णं भंते ! असंजए' •अविरए अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे सकिरिए असंबुडे एगंतदंडे एगंतवाले॰ एगंतसुत्ते उस्सण्णं³ तसपाणघाई कालमासे कालं किच्चा णेरइएसु उववज्जइ ? हंता उववज्जइ ।।

### वाणमंतर-उववाय-पदं

दद जीवे णं भंते ! असंजए अविरए अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे इओ चुए पेच्च देवे सिया ? गोयमा ! अत्थेगइया देवे सिया, अत्थेगइया णो देवे सिया ।।

८१. से केणट्ठे भंते ! एवं वुच्चइ--अत्थेगइया देवे सिया ? अत्थेगइया णो देवे सिया ? गोयमा ! जे इमे जीवा गामागर-णयर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टणासम-संबाह - सण्णिवेसेसु अकामतण्हाए अकामछुहाए अकामबंभचेरवासेणं अकामअण्हाणग-सीयायव-दंसमसग-सेय-जल्ल-मल -पंक-परितावेणं अप्पतरो वा भुज्जतरो वा कालं अप्पाणं परिकिलेसंति, परिकिलेसित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु वाणमंतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति । तहिं देसिं गई, तहिं तेसिं ठिई, तहिं तेसि उववाए पण्णत्ते । तेसि णं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! दसवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता । अत्थि णं भंते ! तेसि देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा 'जसेइ वा' बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा ? हंता अत्थि । ते णं भंते ! देवा परलोगस्स आराहगा ? णो इणट्ठे समट्ठे ।।

१०. से जे इमे गामागर-णयर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टणासम-संबाह-सण्णिवेसेसु मणुया भवंति, तं जहा--अंडुवद्धगा णियलवद्धगा हडिवद्धगा चारगवद्धगा हत्थछिण्णगा पायछिण्णगा कण्णछिण्णगा नक्कछिण्णगा ओट्ठछिण्णगा जिब्भछिण्णगा सीसछिण्णगा मुखछिण्णगा मज्झछिण्णगा वद्दकच्छछिण्णगा हियउप्पाडियगा णयणुप्पा-डियगा दसणुप्पाडियगा वसणुप्पाडियगा तंदुलछिण्णगा कागणिमंसक्खावियगा ओलंवियगा लंवियगा वंसियगा घोलियगा फालियगा° पीलियगा' सूलाइयगा मूलभिष्णगा खारवत्तिया वज्झवत्तिया सीहपुच्छियगा दवग्गिदड्ढगा पंकोसण्णगा पंके खुत्तगा वलयमयगा वसट्टमयगा णियाणमयगा अंतोसल्लमयगा गिरिपडियगा तह्पडियगा मरुपडियगा भेगिरिपक्खंदोलगा तरुपक्खंदोलगा मरुपक्खंदोलगा' जलपवेसी जलणपवेसी विसभक्खियगा सत्थोवाडियगा बेहाणसिया गेद्धपट्ठगा कंतारमयगा दुब्भिक्खिमयगा असंक्तिटिट्ठपरिणामा ते'' कालमासे काल किच्चा अण्णयरेसु वाणमंतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति । तहि तेसि गई, तहि तेसि ठिई, तर्हि तेसि जववाए पण्णत्ते । तेसि णं भंते ! देवाणं केवइयं काल ठिई

```
१. सं० पा० — असंजए जाव एगंतसुत्ते।
२. ओसण्णं (ग)।
३. थेच्चा (क); पच्छा (ख)।
४. मल्ल (क, ख, ग)।
४. नल्ल (क, ख, ग)।
१९. तं (ख)।
६. जसे इ वा उद्वाणेइ वा कम्मे इ वा (वुपा)।
```

पण्णत्ता ? गोयमा ! वारसवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता । अस्थि णं भंते ! तेर्सि देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा ? हता अस्थि । ते णं भंते ! देवा परलोगस्स आराहगा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥

११. से जे इमे गामागर'- 'णयर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टणा-सम-संबाह°-सण्णिवेसेमु मणुया भवंति, तं जहा—पगइभद्दगा पगइउवसंता पगइपतणुकोह-माणमायालोहा' मिउमद्दवसंपण्णा अल्लीणा' विणीया अम्मापिउसुस्सूसगा' अम्मापिऊणं' अणइक्कमणिज्जवयणा अप्पिच्छा अप्पारंभा अप्परिग्गहा अप्पेणं आरंभेणं अप्मापिऊणं' अणइक्कमणिज्जवयणा अप्पिच्छा अप्पारंभा अप्परिग्गहा अप्पेणं आरंभेणं अप्पेणं समा-रंभेण अप्पेणं आरंभसमारंभेणं त्रित्ति कप्पेमाणा वहूई' वासाइ आउयं पालेंति, पालित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु वाणमंतरेसु 'देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति । तहि तेसि गई, तहि तेसि ठिई, तहि तेसि उववाए पण्णत्ते । तेसि णं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! चउद्दसवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता । अत्थि णं भंते ! तेसि देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा वलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा ? हंता अत्थि । ते णं भंते ! देवा परलोगस्स आराहगा ? णो इणट्ठे समट्ठे° ।।

६२ से जाओ इमाओ यामागर'- ण्यर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टणासम-संवाह°-सण्णिवेसेसु इत्थियाओ भवंति, तं जहा—अंतोअंतेउरियाओ गयपइयाओ मयपइयाओ वालविहवाओ छड्डियल्लियाओ माइरक्खियाओ पियरक्खियाओ भायरक्खि-याओ' पइरक्खियाओ कुलघररक्खियाओ ससुरकुलरक्खियाओ' परूढणह-केस-कक्ख-रोमाओ' ववगयपुष्फगंधमल्लालंकाराओ अण्हाणग-सेय-जल्ल-मल-पंक-परितावियाओ ववगय-खीर-दहि-णवणीय-सप्पि-तेल्ल-गुल-लोण-महु-मज्ज-मंस-परिचत्तकयाहाराओ अप्पि-च्छाओ अप्पारंभाओ अप्पपरिग्गहाओ अप्पेणं आरभेणं अप्पेणं समारंभेणं अप्पेणं आरंभ-समारंभेणं वित्ति कप्पेमाणीओ अकामबंभचेरवासेणं तामेव पइसेज्जं णाइक्कमंति । ताओ णं इत्थियाओ एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणीओ बहूइं वासाइं • ''आउयं पार्लेति पालित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु वाणमंतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति । तहि तेसि गई, तहि तेसि ठिई, तहि तेसि उववाए पण्णत्ते । तेसि णं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! चउसट्ठिवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता । अत्थि णं भंते ! तेसि देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा वलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा ? हंता अत्थि । ते णं भंते ! देवा परलोगस्स आराहगा ? णो इणट्ठे समट्ठेणा।

- १. सं० पा०---गामागर जाव सण्णिवेसेसु।
- २. °उवसंतक्का (ग) ।
- ३. पगइतणुँ (क, ग) ।
- ४. आलीणा (वृ); भद्दगा (वृपा)।
- ५. अम्मापिउण° (ख); अम्मापिऊण° (ग) ।
- ६. अम्मापिईणं (क, ख, ग) ।
- ७. बहु (क) ।
- म. सं॰ पा॰---तं चेव सव्वं णवरं चउद्स~

वाससहस्साइं ।

- सं० पा०—गामागर जाव सण्णिवेसेसु ।
- १०. भातिरक्लियाओ (क)।
- ११. 'मित्तनाइनिययसंबंधिरक्खियाओ' त्ति क्वचित् (वृ) ।
- १२. मंसुरोमाओ (वृपा) ।
- १३. सं॰ पा०---सेसं तं चेव जाव चउसट्ठिवास-सहस्साइं ठिई पण्णत्ता ।

६३. से जे इमे गामागर'- ण्यर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टणा-सम-संवाह°-सण्णिवेसेसु मणुया भवंति, तं जहा—दगविइया दगतइया दगसत्तमा दग-एक्कारसमा गोयम-गोव्वइय-गिहिधम्म-धम्मचितग-अविरुद्ध-विरुद्ध-बुड्ढसावगप्पभितयो। तेसि णं मणुयाणं णो कप्पंति इमाओ नव रसविगईओ आहारेत्तए, तं जहा—खीरं दहिं णवणीयं सप्पि तेल्लं फाणियं महुं मज्जं मंसं। णण्णत्थ' एक्काए सरिसवविगईए। ते णं मणुया अप्पिच्छा "अप्पारंभा अप्परिग्गहा अप्पेणं आरंभेणं अप्पेणं समारंभेणं अप्पेणं आरंभसमारंभेणं वित्तिं कप्पेमाणा बहूई वासाई आउयं पार्लेति, पालित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु वाणमंतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति। तहि तेसिं गई, तहिं तेसि ठिई, तहिं तेसि उववाए पण्णत्ते। तेसि णं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! चउरासीइवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता। अत्थि णं भंते ! तेसि देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कारपरक्तमेइ वा ? हंता अत्थि। ते णं भंते ! देवा परलोगस्स आराहगा ? णो इणट्ठे समट्ठे°।।

### जोइसिय-उववाय-पदं

६४. से जे इमे गंगाकूला' वाणपत्था तावसा भवंति, तं जहा--होत्तियां पोत्तिया कोत्तिया जण्णई सड्ढई थालई हुंबउट्ठा' दंतुक्खलिया उम्मज्जगा सम्मज्जगा निमज्जगा संपक्खाला दक्खिणकूलगा उत्तरकूलगा संखधमगा' कूलधमगा मिगलुद्धगा हत्थितावसा उद्दंडगा दिसापोक्खिणो वाकवासिणो' बिलवासिणो' जलवासिणो रुक्खमूलिया अंबुभक्खिणो वाउभक्खिणो सेवालभक्खिणो मूलाहारा कंदाहारा तयाहारा पत्ताहारा पुष्फाहारा फलाहारा बीयाहारा परिसडिय-कंद-मूल-तय-पत्त-पुष्फ-फलाहारा जलाभिसेयकढिणगाया'' आयावणाहि'' पंचग्गितावेहि इंगालसोल्लियं कंदुसोल्लियं कट्ठसोल्लियं पिव अप्पाणं करेमाणा बहूइं वासाइं परियागं पाउणंति, पाउणित्ता कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं जोइसिएसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति । •''तहि तेसि गई, तहि तेसि ठिई, तहि तेसि उववाए पण्णत्ते । तेसि णं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं ठिई पण्णत्ता । अत्थि णं भंते ! तेसि देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जरेइ वा वादेर द पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा ? हंता अत्थि । ते णं भंते ! देवा परलोगस्स आराहगा ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥

१. सं० पा०—गामागर जाव सण्णिवेसेसु ।	५. संखधम्मगा (वृ्) ।
२. अण्णत्य (क) ।	६. वाकवासिणो अंबुवासिणो (क, स, ग);
३. सं० पा०तं चेव सव्वं णवरं चउरासीइ	·वक्कलवासिणो <sup>'</sup> त्ति बल्कलवाससः (भ०
वाससहस्साई ठिई पण्णत्ता ।	वृत्तिपत्र ४१६) ।
४. गंगाकूलक (ख) ।	१०. वेलवासिणो (वृपा) ।
५. द्रब्टव्यं भगवतीसूत्रं (११।५६) तत् टिप्पणं	११. °कढिणगायभूया (क, ख, ग, वृपा) ।
चें।	१२ आयावणेहि (ग) ।
६. वालई (क) ।	१३. सं० पा०पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं
७. हुंपउट्ठा (क, ख) ।	ठिई सेसं तं चेव ।

### कंदष्पिय-उववाय-पदं

६५. से जे इमे गामागर'- ण्यर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंव-पट्टणासम-संवाह°-सण्णिवेसेसु पव्वइया समणा भवंति, तं जहा—-कंदप्पिया कुक्कुइया मोह-रिया गीयरइप्पिया नच्चणसीला । ते णं एएणं बिहारेणं विहरमाणा बहूइं वासाइं सामण्ण-परियागं पाउणंति, पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं सोहम्मे कप्पे कंदप्पिएसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति । तहि तेसि गई, 'तहि तेसि ठिई, तहि तेसि उववाए पण्णत्ते । तेसि णं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं ठिई पण्णत्ता । अस्थि णं भंते ! तेसि देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्तारपरकमेइ वा ? हंता अस्थि । तेणं भंते ! देवा परलोगस्स आराहगा ? णो इणट्ठे समट्ठे° ।।

# परिवायग-चरिया-पदं

९६. से जे इमे गामागर<sup>\*</sup>-<sup>●</sup>णयर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टणासम-संवाह°-सण्णिवेसेसु परिव्वाया भवंति, तं जहा—संखा जोगी काविला भिउव्वा हंसा परमहंसा बहुउदगा कुलिव्वया` कण्हपरिव्वाया। तत्थ खलु इमे अट्ठ माहणपरिव्वाया भवंति, तं जहा—

कंडू<sup>९</sup> य करकंटे य, अंबडे य परासरे । कण्हे दीवायाणे चेव, देवगुत्ते य नारए ॥१॥ तत्थ खलु इमे अट्ठ खत्तिय-परिव्वाया भवंति, तं जहा—

९८८. ते णं परिच्वाया दाणधम्मं च सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणा पण्ण-वेमाणा परूवेमाणा विहरंति । जं णं अम्हं किं चि असुई भवइ तं णं उदएण य मट्टियाए य पक्खालियं समाणं सुई भवइ । एवं खलु अम्हे चोक्खा चोक्खायारा सुई सुइसमायारा भवित्ता अभिसेयजलप्रयप्पाणो अविग्घेणं सग्गं गमिस्सामो ॥

٤٤. तेसि णं परिव्वायाणं णो कष्पइ अगडं वा तलायं वा नइं वा वावि वा पुक्खरिणि वा दीहियं वा गुंजालियं वा सरं वा सागरं वा ओगाहित्तए, णण्णत्थ अढाणगमणेणं ।।

१००. (तेंसि ण परिव्वायाण ?) णो कप्पइ सगड वा' • रह वा जाण वा जुग्ग वा

- १. सं० पा०--गामागर जाव सण्णिवेसेसु ।
- २. °अपडिक्कंता (ख) ।
- ३. सं० पा०---सेसं तं चेव जवरं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियाइं ठिई ।
- ४. सं० पा०—गामागर जाव सण्णिवेसेसु ।
- ५. कुडिव्वया (ख, ग) ।

- ६. कन्ने (क) ।
- ७. समंहारे (क); ससिंहारे (ग) ।
- <. वाचनान्तरे---परिव्वायएसु य नएसु (वृ) ।
- **१**. सरिसं (वृषा) ।
- १०. सं० पा०-सगडं वा जाव संदमाणियं।

गिल्लि वा थिल्लि का पवहणं वा सीय वा॰ संदमाणियं वा दुरुहित्ता णं गच्छित्तए ।।

१०१. तेसि णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ आसं वा हॉिंथ वा उट्टं वा गोणं वा महिसं वा खरं वा दुरुहित्ता णं गमित्तए, जण्णत्थ बलाभिओगेणं ॥

१०२. तेसि णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ नडपेच्छा इ वा<sup>t</sup> णट्टगपेच्छा इ वा जल्ल-पेच्छा इ वा मल्लपेच्छा इ वा मुट्ठियपेच्छा इ वा वेलंबगपेच्छा इ वा पवगपेच्छा इ वा कहगपेच्छा इ वा लासगपेच्छा इ वा आइक्खगपेच्छा इ वा लंखपेच्छा इ वा मंखपेच्छा इ वा तूणइल्लपेच्छा इ वा तुंबवीणिपेच्छा इ वा भुयगपेच्छा इ वा° मागहपेच्छा इ वा पेच्छित्तए ॥

१०३. तैसिं परिव्वायगाणं णो कप्पइ हरियाणं लेसणया वा घट्टणया वा थंभणया वा 'लूसणया वा'' उप्पाडणया वा करित्तए ॥

१०४. तेसि परिव्वायगाणं णो कप्पइ इत्थिकहा इ वा भत्तकहा इ वा रायकहा इ वा देसकहा इ वा चोरकहा इ वा जणवयकहा इ वा अणत्थदंडं करित्तए ।।

१०५ तेसि णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ अयपायाणि वा तंबपायाणि वा तउय-पायाणि वा सीसगपायाणि वा रयय-जायरूव-काय-वेडंतिय-वट्टलोह-कंसलोह-हारपुडय-रीतिया-मणि-संख-दंत-चम्म-चेल-सेल-पायाणि वा अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं महद्धण-मोल्लाइं धारित्तए, णण्णत्थ अलाउपाएण वा दारुपाएण वा मद्रियापाएण वा ।।

१०६. तेसि णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ अयबंधणाणि वा<sup>र्</sup> "तंब-बंधणाणि वा तउय-बंधणाणि वा सीसगबंधणाणि वा रयय-जायरूव-काय-वेडंतिय-वट्टलोह-कंसलोह-हारपुडय-रीतिया-मणि-संख-दंत-चम्म-चेल-सेल-बंधणाणि वा अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं °महद्धण-मोल्लाइं धारित्तए ॥

१०७. तेसि णं परिव्वायगाणं णो कष्पइ णाणाविहवण्णरागरत्ताइं वत्थाइं धारित्तए, णण्णत्थ एगाए धाउरत्ताए ॥

१०६ तेसि णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ हारं वा अद्धहारं वा एगार्वील वा मुत्तार्वील वा कणगार्वील वा रयणालि वा मुरवि वा कंठमुरवि वा पालंबं वा तिसरयं वा कडिसुत्तं वा दसमुद्दिआणंतगं वा कडयाणि वा तुडियाणि वा अंगयाणि वा केऊराणि वा कुंडलाणि वा मउडं वा चूलामणि वा पिणिद्धत्तए, णण्णस्थ एगेणं तंविएणं पवित्तएणं ॥

१०६. तेसि णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ गंथिम-वेढिम-पूरिम-संघाइमे चउव्विहे मल्ले धारित्तए, णण्णत्थ एगेणं कण्णपूरेणं ॥

११० तेसि णं परिव्वायगाणं णो कप्पइ अगलुएण वा चंदणेण वा कूंकुमेण वा गायं अणुर्लिषित्तए, णण्णत्थ एक्काए गंगामट्टियाए ॥

- १. सं० पा०--नडपेच्छाइ वा जाव मागहपेच्छा ।
- २. × (वृ); लूसणया वा (वृपा) ।
- ३. अणट्टादंडं (ग) ।
- ४,७. बहुमुल्लाणि (क, ख, ग); आचारचूलायां (६।१३) 'विरूवरूवाइं महद्वणमुल्लाइं' इति
- पाठो विद्यते ।
- सं० पा०—-अयबंधणाणि वा जाव महद्धण∹ मोल्लाइं।
- ६. पुस्तकान्तरे समग्रमिवं सूत्रद्वय (१०४, १०६) मस्त्येव (वृ) ।

१११. तेसि णं परिव्वायगाणं कष्पइ भागहए पत्थए जलस्स पडिगाहित्तए, से विय वहमाणए णो चेव णं अवहमाणए, से विय थिमिओदए णो चेव णं कद्मोदए, से विय बहुप्पसण्णे णो चेव णं अबहुप्पसण्णे, से विय परिपूए णो चेव णं अपरिपूए, से विय दिण्णे णो चेव णं अदिण्णे, से विय पिवित्तए णो चेव णं हत्थ-पाय-चरु-चमस-पक्ष्यालणट्ठाए सिणाइत्तए वा ।।

११२. तेसि णं परिव्वायगाणं कप्पइ मागहए अद्धाढए जलस्स पडिग्गाहित्तए, से वि य वहमाणए' णो चेव णं अवहमाणए, से वि य थिमिओदए णो चेव णं कद्मोदए, से वि य वहुप्पसण्णे णो चेव णं अवहुप्पसण्णे, से वि य परिपूए गो चेव णं अपरिपूए, से वि य दिण्णे° णो चेव णं अदिष्णे, से वि य हत्थ-पाय-चरु-चमस-पक्खालणट्ठाए णो चेव णं पिबित्तए सिणाइत्तए वा ॥

११३. तेसि णं परिव्वायगाणं कष्पइ मागहए आढए जलस्स पडिग्गाहित्तए, से वि य वहमाणए<sup>3</sup> णो चेव णं अवहमाणए, से वि य थिमिओदए णो चेव णं कद्दमोदए, से वि य वहुष्पसण्णे णो चेव णं अवहुष्पसण्णे, से वि य परिपूए णो चेव णं अपरिपूए, से वि य दिण्णे° णो चेव णं अदिण्णे, से वि य सिणाइत्तए णो चेव णं हत्थ-पाय-चरू-चमस-पक्खालणट्ठाए पिबित्तए वा ॥

११४. ते णं परिव्वायगा एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा बहूइं वासाइं परियायं पाउणंति, पाउणित्ता कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवंति । तहिं तेसिं गई, "तहिं तेसिं ठिई, तहिं तेसिं उववाए पण्णसे । तेसि णं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! दससागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता । अत्थि णं भंते ! तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ? हंता अत्थि । ते णं भंते ! देवा परलोगस्स आराहगा ? णो इणट्ठे समट्ठे° ॥

# अम्मड-अंतेवासि-पदं

११५. तेणं कालेणं तेणं समएणं अम्मडस्स परिव्वायगस्स सत्त अंतेवासिसया गिम्ह-कालसमयंसि जेट्ठामूलमासंमि गंगाए महानईए उभओकूलेणं कंपिल्लपुराओ णयराओ पूरिमतालं णयरं संपट्ठिया विहाराए ।।

११६. तए णं तेसि परिव्वायगाणं तीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्वाए अडवीए कंचि देसंतरमण्यत्ताणं से पूव्वग्गहिए उदए अणुपुव्वेणं परिभुंजमाणे झीणे ॥

११७. तए णंते परिव्वाया झीणोदगा समाणा तण्होए पारब्भमाणा-पारब्भमाणा उदगदातारमपस्समाणा अण्णमण्णं सद्दावेति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुष्पिया ! अम्हं इसीसे अगामियाएं •छिण्णावायाए दीहमद्धाए॰ अडवीए कचि देसंतरमणुपत्ताणं से पुट्वग्गहिए उदएं •अणुपुठ्वेणं परिभुंजमाणे॰ झीणे । तं सेयं खलु देवाणुष्पिया ! अम्हं १,२. सं० पा०—वहमाणए जाव णो । ४. सं० पा०—अगामियाए जाव अडवीए । ३. सं० पा० —दससागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता सेसं ४. सं० पा० — उदए जाव भीणे । तं चेव ।

इमीसे अगामियाए' 'छिण्णावायाए दीहमद्धाए' अडवीए उदगदातारस्स सव्वओ समंता मगगण-गवेसणं करित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता तीसे अगामियाए' 'छिण्णावायाए दीहमद्धाएº अडवीए उदगदातारस्स सव्वाओ समता मग्गण-गवेसणं करेंति, करेत्ता उदगदातारमलभमाणा दोच्चंपि अण्णमण्णं सद्दावेंति,सद्दावेत्ता एवं वयासी-इहण्णं देवाणुष्पिया ! उदगदातारो णत्थि तं णो खलु कष्पइ अम्हं अदिण्णं गिण्हित्तए\*, अदिण्णं साइज्जित्तए, तं मा णं अम्हे इयाणि आवइकालं पि अदिण्णं गिण्हामो, अदिण्णं साइज्जामो, मा णं अम्हं तक्लोबे' भविस्सइ । तं सेयं खलु अम्हं देवाणुष्पिया ! तिदंडए य कुडियाओ य कंचणियाओ य करोडियाओ य भिसियाओ य छण्णालए य अंकुसए य केसरियाओ य पवित्तए य गणेत्तियाओ य छत्तए य वाहणाओ य धाउरत्ताओ य एगते एडित्ता गंगं महाणई ओगाहित्ता वालुयासंथारए संथरित्ता संलेहणा-झूसियाणं भत्त-पाण-पडियाइक्खियाणं पाओवगयाणं कालं अणकंखमाणाणं विहरित्तए सि कट्टु अण्ण-मण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता तिदंडए य' कुंडियाओ य कंचणियाओ य करोडियाओ य भिसियाओ य छण्णालए य अंकुसए य केसरियाओ य पवित्तए य गणेत्तियाओं य छत्तए य वाहणाओं य धाउरत्ताओं य° एगंते एडेंति, एडेत्ता गंगं महाणइं ओगाहेति, ओगाहेत्ता वालुयासंथारए संथरति, संथारित्ता वालुयासंथारयं दुरुहंति, दुरुहित्ता पुरत्थाभिमुहा संपलियंकनिसण्णा करयल<sup>५</sup>-°परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि° कट्टु एवं वयासी---णमोत्थु णं अरहंताणं जावे सिद्धिगइणामधेयं ठाणं संपत्ताणं । णमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव संपाविउकामस्स । णमोत्थु णं अम्मडस्स परिव्वायगस्स अम्हं धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स । पुव्वि णं अम्हेहिं अम्मडस्स परिव्वायगस्स अंतिए 'थूलए पाणाइवाए'' पच्चक्खाए जीवज्जीवाए, मुसावाए अदिष्णादाणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, सब्वे मेहुणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए जावज्जीवाए । इयाणि अम्हे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामो जावज्जीवाए, "• सव्वं मुसावायं पच्चक्खामो जावज्जीवाए, सव्वं अदिण्णादाणं पच्चक्खामो जावज्जीवाए, सव्वं मेहूणं पुच्चवखामो जावज्जीवाए°, सब्वं परिग्गहं पुच्चक्खामो जावज्जीवाए, सब्वं कोहं माणं मायं लोहं पेज्जं दोसं कलहं अब्भक्खाणं पेसुण्णं परपरिवायं अरइरइं मायामोसं मिच्छादंसणसल्लं 'अकरणिज्जं जोगं''' पच्चक्खामो जावज्जीव।ए, सव्वं असणं पाणं खाइमं साइमं—चउब्विहं पि आहार पच्चक्खामो जावज्जीवाए । जं पि य इम सरीर इट्ठ केतं पियं मणुण्णं मणाणं पेज्जं<sup>१९</sup> वेसासियं संमयं वहुमयं अणुमयं भंडकरंडगसमाणं<sup>१०</sup> मा णं सीयं, मा ण<sup>ॅ</sup>उण्हं, मा णं खहा, मा ण पिवासा, मा ण वाला, मा ण चोरा, मा ण दसा, मा ण मसगा, मा ण वाइय-

१.२. सं०पा०——अंगामियाए जाव अडवीए । ३. भुंजित्तए (वृषा) । ४. तववयलोवे (क) । ४. सं० पा०——तिदंडए य जाव एगंते । ६. सं० पा०——करयल जाव कट्टु । ७,द. ओ० सू० २१ ।

```
९. थूलगपाणाइवाए (क)।
१०. सं० पा०—एवं जाव सब्वं परिग्गहं।
१९. × (क, ख, ग)।
१२. थेज्जं (क, ख, वृपा)।
१३. रयणकरंडग° (ख)।
```

### ओवाइय-पय रणं

पित्तिय-सिभिय-सण्णिवाइय' विविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंतु त्ति कट्टु एयंपि णं चरिमेहिं ऊसासणीसासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु संलेहणा-झूसिया' भत्तपाणपडियाइक्खिया पाओवगया कालं अणवकंखमाणा विहरंति । तए णं ते परिव्वाया वहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति, छेदित्ता आलोइय-पडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववण्णा । तहिं तेसिं गई, 'तहिं तेसिं ठिई, तहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते । तेसि णं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता° ? गोयमा ! दससागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता । अस्थि णं भंते तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्तार-परक्कमेइ वा ? हंता अस्थि । ते णं भंते ! देवा परलोगस्स आराहगा ? हंता अस्थि ॥

### अम्मड-चरिया-पदं

११८. बहुजणे णं भंते ! अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ---एवं खलु अम्मडे परिव्वायए कंपिल्लपुरे णयरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए वर्साह उवेइ । से कहमेयं भंते ! एवं खलु गोयसा ! जं णं से वहुजणे अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ<sup>\*</sup> •एवं भासइ एवं पण्णवेइ॰ एवं परूवेइ---एवं खलु अम्मडे परिव्वायए कंपिल्लपुरे \*णयरे घरसए आहारमाहरेइ,॰ घरसए वर्साह उवेइ, सच्चे णं एसमट्ठे अहंपि णं गोयमा ! एवमाइक्खामि \* •एवं भासामि एवं पण्णवेमि एवं॰ परूवेमि एवं खलु अम्मडे परिव्वायए \* कंपिल्लपुरे णयरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए॰ वर्साह उवेइ ॥

११६. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—अम्मडे परिव्वायए किंपिल्लपुरे णयरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए वसहि उवेइ ? गोयमा ! अम्मडस्स ण परिव्वायगस्स पगइभद्दयाए • पगइउवसंतयाए पगइपतणुकोहमाणमायालोहयाए मिउमदवसंपज्जयाए अल्लीणयाए विणीययाए छट्ठंछट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण उड्ढ वाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स सुभेण परिणामेण पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं लेसाहिं विसुज्झमाणीहि 'अण्णया कयाइ' तदावरणिज्जाणं कम्माणं खओ-वसमेणं ईहापूह''-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स वीरियलद्धीए ' वेउव्वियलद्धीए ओहिणाण-लद्धी' समुप्पण्णा । तए णं से अम्मडे परिव्वायए तीए वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिणाणलद्धीए समुप्पण्णाए जणविम्हावणहेउं कंपिल्लपुरे णयरे घरसए' •आहारमाहरेइ,

- १. इह प्रथमाबहुवचनलोपो विद्यते ।
- २. भूसणा भूसिया (वृपा) ।
- ३. सं० पा० दससागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता परलोगस्स आराहगा सेसं तं चेव ।
- ४. सं० पा०----एवमाइक्खइ जाव एवं ।
- ५. सं० पा०--- कंपिल्लपुरे जाव घरसए।
- ६. सं० पा०--- एवमाइक्खामि जाव परूवेमि ।
- ७,इ. सं० पा०---परिव्वायए जाव वसहि ।
- ६. स॰ पा॰ ----पगइभदयाए जाव विणीययाए । वृत्तिकृता ६१ सूत्रे क्वचित् (भहगा' इत्युल्लि-

खितम् । प्रस्तुतसूत्रस्य पूर्तिर्वृत्तौ कृतास्ति, तत्र 'भद्याए' इति पाठः स्वीकृतः, इत्यस्ति समी-क्षास्पदम् ।

- १०. × (क, ख, ग)।
- ११. ईहाबूहे (ग); ईहाबूह (वृ) ।
- १२. वाचनान्तरे 'वीरियलढी वेउव्वियलढी' ति पठ्यते (वृ) ।
- १३. ओहिणाणलद्धीए (क) ।
- १४. सं० पा०---घरसए जाव वसहि।

घरसए° वसहि उवेइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—अम्मडे' परिव्वायए कंपिल्लपुरे णयरे घरसए' \*आहारमाहरेइ, घरसए° वसहि उवेइ।।

१२०. पहू णं भंते ! अम्मडे परिव्वायए देवाणुप्पियाणं अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ? णो इणट्ठे समट्ठे । गोयमा ! अम्मडे णं परिव्वायए समणोवासए अभिगयजीवाजीवे' •उवलद्धपुण्णपावे आसव-संवर-निज्जर-किरियाहिगरण-बंध-मोक्ख-कुसले असहेज्जदेवासुरणाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किन्तर-किंपुरिस-गरुल<sup>\*</sup>-गंधव्व-महोरगाट-एहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे इणमो निग्गंथे पावयणे णिस्संकिए णिक्कं-खिए निव्वितिगिच्छे लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे अभिगयट्ठे विणिच्छियट्ठे अट्ठिमिज-पेमाणुरागरत्ते 'अयमाउसो ! निग्गंथे'' पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे चउद्दस-अट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं अणुपालेमाणे समणे निग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंवल-पायपुच्छणेणं ओसहभेसज्जेणं पाडिहा-रिएणं पीढफलगसेज्जा-संधारएणं पडिलाभेमाणे सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोव-वासेहिं अहापरिग्गहिर्एहि तवोकम्मेहिं° अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

१२१. अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स थूलए पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए<sup>°</sup> •मुसावाए अदिण्णादाणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए सव्वे मेहुणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए थुलए परिग्गहे पच्चक्खाए जावज्जीवाए<sup>°</sup>।।

्र्रि२२. अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ अक्खसोयप्पमाणमेत्तंपि जलं सयराह उत्तरित्तए, णण्णत्थ अद्धाणगमणेणं ॥

१२३. अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कष्पइ सगडं वा \* •रहं वा जाणं वा जुग्गं वा गिल्लि वा थिल्लि वा पवहणं वा सीयं वा संदमाणियं वा दुरुहित्ताणं गच्छित्तए ॥

१२४. अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ आसं वा हत्थिं वा उट्टं वा गोणं वा महिसं वा खरं दुरुहित्ताणं गमित्तए, णण्णत्थ बलाभिओगेणं ॥

१२५. अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ नडपेच्छाइ वा णट्टगपेच्छाइ वा जल्ल-पेच्छाइ वा मल्लपेच्छाइ वा मुट्ठियपेच्छाइ वा वेलंबगपेच्छाइ वा पवगपेच्छाइ वा कहग-पेच्छाइ वा लासगपेच्छाइ वा आइक्खगपेच्छाइ वा लंखपेच्छाइ वा मंखपेच्छाइ वा तूणइल्लपेच्छाइ वा तुंववीणियपेच्छाइ वा भुयगपेच्छाइ वा मागहपेच्छाइ वा पेच्छित्तए ॥

१२६. अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ हरियाणं लेसणया वा घट्टणया वा थंभगया वा लूसणया वा उप्पाडणया वा करित्तए ॥

- १. क्वचित् 'अम्बडे' दृश्यते तदयुक्तम् (वृ) ।
- २. सं० पा०---घरसए जाव वर्साह ।
- ३. सं० पा०—-अभिगयजीवाजीवे जाव अप्पार्थ भावेमाणे विहरइ, अवरं ऊसियफलिहे अवंगुयदुवारे चियत्तंतेउरघरदारपवेसी (क्वचित् 'चियत्तघरंतेउरपवेसी' ति—-वृ) एयं ण वुज्चइ ।
- ४. क्वचित् भारुडे' ति नाधीयते (वृ) ।
- ५. क्वचित् 'इणमो निग्गंथे' इति दृश्यते (वृ.) ।
- ६. स॰ पा०---जावज्जीवाए जाव परिग्गहे णवर सब्वे मेहुणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए ।
- ७. सं० पा०----सगडंवातं चेव भाणियव्वं जाव णण्पत्थ एक्काए संगामट्रियाए ।

१२७. अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ इत्थिकहाइ वा भत्तकहाइ वा राय-कहाइ वा देसकहाइ वा चोरकहाइ वा जणवयकहाइ वा अणत्थदंडं करित्तए ॥

१२८. अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ अयपायाणि वा तंवपायाणि वा तउयपायाणि वा सीसगपायाणि वा रयय-जायरूव-काय-वेडंतिय-वट्टलोह-कंसलोह-हारपुडय-रीतिया-मणि-संख-दंत-चम्म-चेल-सेल-पायाणि वा अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं महद्धण-मोल्लाइं धारित्तए, णण्णत्थ अलाउपाएण वा दारुपाएण वा मट्टियापाएण वा ॥

१२६. अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ अयबंधणाणि वा तंवबंधणाणि वा तउयबंधणाणि वा सीसगबंधणाणि वा रयय-जायरुव-काय-वेडंतिय-वट्टलोह-कंसलोह-हारपुडय-रीतिया-मणि-संख-दंत-चम्म-चेल-सेल-बंधणाणि वा अण्णयराइं वा तहष्पगाराइं महद्वणमोल्लाइं धारित्तए ॥

े १३०. अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ णाणाविहवण्णरागरत्ताइं वत्थाइं धारित्तए, णण्णत्थ एगाए धाउरत्ताए ।।

१३१. अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ हारं वा अद्वहारं वा एगार्वील वा मुत्तावर्लि वा कणगावर्लि वा रयणावर्लि वा मुर्रीव वा कंठमुरवि वा पालंब वा तिसरयं वा कडिसुत्तं वा दसमुद्दिआणंतगं वा कडयाणि वा तुडियाणि वा अंगयाणि वा केऊराणि वा कुंड-लाणि वा मउडं वा चूलामर्णि वा पिणिद्धत्तए, णण्णत्थ एगेणं तंबिएणं पवित्तएणं ॥

१३२. अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ गंथिम-वेढिम-पूरिम-संघाइमे चउव्विहे मत्से धारित्तए, णण्णत्थ एगेणं कण्णपूरेणं ॥

१३३. अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ अगलुएण वा चंदणेण वा कुंकुमेण वा गायं अणुलिपित्तए°, णण्णत्थ एक्काए गंगामट्टियाए ।।

१३४. अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ आहाकम्मिए वा उद्देसिए वा मीस-जाएइ वा अज्झोयरएइ वा पूडकम्मेइ वा कीयगडेइ वा पामिच्चेइ वा अणिसिट्ठेइ वा अभिहडेइ वा 'ठवियएइ वा'' 'रइयएइ वा'' कंतारभत्तेइ वा दुब्भिक्खभत्तेइ वा गिलाण-भत्तेइ वा वहलियाभत्तेइ वा पाहुणगभत्तेइ वा भोत्तए वा पायए वा ।।

१३५. अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स णो कप्पइ मूलभोयणेइ वा<sup>क्ष</sup>कंदभोयणेइ वा फलभोयणेइ वा हरियभोयणेइ वा° वीयभोयणेइ वा भोत्तए वा पायए वा ।।

१३६. अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स चउव्विहे अणट्ठादंडे पच्चकखाए जावज्जीवाए, तं जहा—अवज्झाणायरिए पमायायरिए हिंसप्पयाणे पावकम्मोवएसे ॥

१३७. अम्मडस्स कप्पइ मागहए अद्धाढए जलस्स पडिग्गाहित्तए, से वि य वहमाणए णो चेव णं अवहमाणए<sup>\*</sup>, <sup>•</sup>से वि य थिमिओदए णो चेव णं कद्दमोदए, से वि य वहुप्पसण्णे णो चेव णं अवहुप्पसण्णे°, से वि य परिपूए णो चेव णं अपरिपूए, से वि य सावज्जे त्ति काउं<sup>\*</sup> णो चेव णं अणवज्जे, से वि य जीवा ति काउं<sup>\*</sup> णो चेव णं अजीवा, से वि य दिण्णे

१. ठवइत्तए वा (ख) ।

४. सं० पा०----अवहेमाणए जाव से ।

२. रइत्तए वा (क, ख,) ; × (ग) ।

- ४. कट्टुं (ग, वृ) ।
- २. सं० था० मूलभोयणे इ वा जाव बीयभोयणे । ६. कट्टुं (क, ग, वृ)।

णो चेव णं अदिण्णे, से वि य हत्थ-पाय-चरु-चमस-पक्खालाणट्ठयाए पिबित्तए वा णो चेव णं सिणाइत्तए ॥

१३८. अम्मडस्स कप्पइ मागहए' आढए जलस्स पडिग्गाहित्तए से वि य वहमाणए' •णो चेव णं अवहमाणए, से वि य थिमिओदए णो चेव णं कद्दमोदए, से वि य बहुप्पसण्णे णो चेव णं अबहुप्पसण्णे, से वि य परिपूए णो चेव णं अपरिपूए, से वि य सावज्जे त्ति काउं णो चेव णं अणवज्जे, से वि य जीवा ति काउं णो चेव णं अजीवा, से वि य दिण्णे° णो चेव णं अदिण्णे, से वि य सिणाइत्तए णो चेव णं हत्थ-पाय-चरु-चमस-पक्खालणट्ठयाए पिबित्तए वा ।।

१३९. अम्मडस्स णो कप्पइ अण्णउत्थिए' वा अण्णउत्थियदेवयाणि वा अण्णउत्थिय-परिग्गहियाणि 'वा चेइयाइं'' वंदित्तए वा णमंसित्तए वा' 'पूइत्तए वा सक्कारित्तए वा सम्माणित्तए वा कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं° पज्जुवासित्तए वा, णण्णत्थ 'अरहंतेहिं वा''।।

१४०. अम्मडे णं भंते ! परिव्वायए कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! अम्मडे णं परिव्वायए उच्चावएहिं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं समणोवासय-परियायं पाउणिहिति, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति । तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दससागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता । तत्थ णं अम्मडस्स वि देवस्स दससागरोवमाइं ठिई ।

#### दढपइण्ण-पदं

१४१. से णं भंते ! अम्मडे देवे ततो' देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्ख-

- १. मागहए य (क) ।
- २. सं० पा०-वहमागए जाव गो।
- ३. अण्णउत्थिया (ख) ।
- ४. अरहंतचेइयाइं (क) ; अरहंतचेइयाणि वा (ग) ।
- ४. सं० पा०—ण्मसित्तए वा जाव पज्जुदा-सित्तए।
- ६. अरहंतेहिं वा अरहंतचेइयाइं वा (क,ख, ग); वृत्तौ 'णण्णस्थ अरहंतेहिं वा' एतदेव व्याख्यात-मस्ति 'अरहंत चेइयाइं वा' इति व्याख्यातं नास्ति । आदर्शेषु एतद् वाक्यं लभ्यते । 'अण्णत्थ' योगे पंचमी विभक्तिर्भवति । तदपे-क्षया 'अरहंतचेइयाइं वा' इति वाक्यमशुद्धमपि विद्यते ।
- ७. भगवत्याः एकादशगतके (१६९) औपपातिक-स्य अम्मडप्रकरणस्य सूचनमस्ति तथा वृत्तौ (पत्र ४४९) स पाठः उद्धृतोस्ति—यथौपपा-तिके अम्बडोधीतस्तथायमिह वाच्यः, तत्र च यादत्करणादेतत्सूत्रमेवं दृश्यं — 'गहगणनवस्तत्त-तारारूवाणं बहूइं जोयणाइं बहूइं जोयणस-याइं बहूइं जोयणसहस्साइं बहूइं जोयणसयसह-स्साइं बहूइं जोयणसहस्साइं बहूइं जोयणसयसह-स्साइं बहूइं जोयणसहस्साइं बहूइं जोयणसयसह-स्साइं बहूइं जोयणनोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता सोहम्मीसाणसणंकुमारमाहिंदे कप्पे वीइवइत्त' ति । किन्तु प्रस्तुतसूत्रादर्शेषु वृत्तौ च एष पाठः सम्प्रति नंव लभ्यते । केनापि कारणेन त्रुटितो भूदिति सम्भाव्यते ।
- ∝. ताओ (ख)।

एणं अणंतरं चयं' चइत्ता कहिं गच्छिहिति' ? कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! महाविदेहे वासे जाइं कुलाइं भवंति अड्ढाइं दित्ताइं वित्ताइं वित्थिण्ण-विउल-भवण-सयणासण-जाण-वाहणाइं बहुधण-जायरूव'-रययाइं आओग-पओग-संपउत्ताइं विच्छड्डिय-पउर-भत्तपाणाइं बहुदासी-दास-गो-महिस-गवेलगप्पभूयाइं बहुजणस्स अपरिभूयाइं तहप्पगारेसु कुलेसुँ पुमत्ताए' पच्चायाहिति ॥

१४२. तए<sup>९</sup> णं तस्स दारगस्स गब्भत्थस्स चेव समाणस्स अम्मापिईणं धम्मे दढा पद्दण्णा भविस्सइ ॥

१४३. से णं तस्थ णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण' राइंदियाणं वीइक्कं-ताणं' सुकुमालपाणिपाए' 'अहीणपडिपुण्ण-पंचिदियसरीरे लक्खण वंजण-गुणोववेए माणु-म्माण-प्यमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सब्वंगसुंदरंगे' ससिसोमाकारे कंते पियदंसणे सुरूवे दाराए पयाहिति ॥

१४४. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे ठिइवडियं काहिति, तइय-दिवसे'' चंदसूरदंसणियं काहिति, छट्ठे दिवसे जागरियं'' काहिति, एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते णिव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे संपत्ते वारसाहे'' अम्मापियरो इमं'' एयारूवं गोणं''

- १. चई (ग) ।
- २. गमिहिति (ग) ।
- ३. तत्तय (क) ।
- ४. कुले (वृपा) ।
- <u> ५. पुसत्ताए (क) ।</u>
- ६. प्रस्तुतागमे रायपसेणइयसूत्रे च दृढप्रतिज्ञस्य प्रकरणं प्रायः समानमस्ति, केवलं पाठरचना-याः किञ्चित्-किञ्चिद् भेदो दृश्यते ।
- ७. अढट्टमाण य (ख) ।
- द. आदर्श्वेषु 'दारए' इति कर्तृपदं लभ्यते । वस्तुतः इदं कर्मपदं स्यादिति युक्तमस्ति 'पयाहिति' इति क्रियापदस्य सन्दर्भे तथा स्थानाङ्ग (११६२) रायपसेणइय (६०१) सूत्रयोः साक्ष्येण च अस्य कर्मपदस्य पुष्टि जीयते । तदेवं पाठरचना एवं भवति--वीङक्कंताणं सा सुकुमालपाणिपायं.... सूरूवं दारयं पयाहिति ।
- १०. बिइय० (ग); 'चंदसूरदंसणियं' तृतीय दि~ वसस्य उत्सवो विद्यते । विपाकवृत्तौ (२।४७) एतत् संवादी उल्लेखोपि लभ्यते, यथा----'चंद-

सूरपासणियं व' त्ति अन्वर्थानुसारिणं तृतीय दिवसोत्सवम् । रायपसेणइय (८०२) सूत्रस्य 'दढपइण्णा' प्रकरणे 'ततियदिवसे' इति पाठो-स्ति, नायाधम्मकहाओ (१।१।८१) सूत्रेपि इत्थमेवास्ति, तेन 'बिइय' इति अझुद्धं प्रति-भाति ।

- ११. धम्मजागरियं (क) ।
- १२. बारसाहे दिवसे (क, ख, ग, वृ); विपाकसूत्रे (२।४८) 'संपत्ते बारसाहे' पाठोस्ति । केषु-चिदादर्शेषु 'संपत्ते बारसमे दिवसे' इति पाठोस्ति । 'बारसाहे दिवसे' अनयो: संयुक्तरूपं प्रतिभाति । वृत्तिकारस्य सम्मुखे एष एव पाठ आसीत् । अस्य पाठस्य वृत्तिर्यथा तथा कृतास्ति। यथा---तत्र 'बारसाहे दिवसे' ति द्वादशाख्ये दिवसे इत्यर्थ:, अथवा द्वादशाना-मह्नां समाहारो द्वादशाहं तस्य दिवसो येनासौ पूर्णो भवतीति द्वादणाहदिवसस्तत्र (पृ० १९३) वस्तुतः 'बारसमे दिवसे', अथवा 'बारसाहे' अनयोर्मेच्ये एकेन पाठेन भवितव्यम् । अस्माकं सम्मुखे एका स्तबकप्रतिरस्ति तस्यां केवलं 'बारसाहे' पाठोस्ति । रायपसेणइयसूत्रे

गुणणिष्कर्ण्ण णामधेउजं काहिति—जम्हा णं अम्हं इमंसि दारगंसि गब्भत्थंसि चेव समाणंसि धम्मे दढापइण्णा', तं होउ` णं अम्हं दारए दढपइण्णे णामेणं । तएणं तस्स दारगस्स अम्मा-पियरो णामधेज्जं करेहिति दढपइण्णत्ति<sup>\*</sup> ।।

१४५. तं दढपइण्णं दारगं अम्मापियरो साइरेगट्ठवासजायगं' जाणित्ता सोभणंसि तिहि-करण'-णवखत्त-मुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेहिति ॥

१४६. तए णं से कलायरिए तं दढपइण्णं दारगं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणस्थपज्जवसाणाओ वावत्तरिं कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य करणओ य सेहाविहिति सिक्खाविहिति, तं जहा--१. लेहं २. गणियं ३. रूवं ४. णट्टं ५. गीयं ६. वाइयं ७.

- (८०२) पि खारसमे दिवसे' पाठोस्ति । अस्माभिरत्र स एव स्तबकप्रतिगतः पाठः स्वीकृतः ।
- १३. अयं (वृषा) ।
- १४. गोण्णं (क) ।
  - १. दढपड्ण्णा (क, ख, ग)।
  - २. होऊ (क,ख)।
  - ३. इह स्थाने पुस्तकान्तरे पंच धाइपरिम्गहिए' इत्यादि ग्रन्थो दृश्यते, स च प्राग्वद् व्याख्येयः, किचिच्च तस्य व्याख्यायते—'हत्था हत्थं संहरिज्जमाणे' ति हस्ताद्धस्तान्तरं संह्रियमाणो— अङ्कादङ्कं परिभुज्यमानः–– नीयमानः, उत्सङ्गादुत्सङ्गान्तरं परिभोज्यमानः उत्सङ्ग-स्पर्शसुखमनुभाव्यमानः, 'उवनच्चिज्जमाणे' ति उपनत्त्यंमानो नर्तनं कार्यमाण इत्यर्थः, उपगीय-मानः—तथाविधबालोचितगीतविशेषैगीयमानो गाप्यमानो वा, 'उदलालिज्जमाणे' त्ति उपलाल्य-मानः क्रीडादिलालनया, 'उवगूहिज्जमाणे' त्ति उपगूह्यमानः आलिङ्ग्यमानः 'अवयासिञ्जमाणे' त्ति अपत्रास्यमानः अपगतत्रासः कियमाणः, अपयास्यमानो वा उत्कण्ठातिरेकान्निर्दया-लिङ्गनेनावीड्यमानः, अप्रयास्यमानो वा समीहितपूरणेन प्रयासमकार्यमाणः, 'परित्रंदि-ज्जमाणे' त्ति परिवन्द्यमानः स्तूयमानः परि-चुम्ब्यमानः—इति व्यक्तं, 'परंगिज्जमाणे' ति प्ररङ्ग्यमाणः चङ्क्रम्यमाणः, एतेषां च संह्रिय-

माणादिपदानां दिर्वचनाभीक्ष्यविवक्षयेति 'निव्वायनिव्वाधाय' ति निर्वातं निर्व्याधातं च यद् गिरिकन्दरं तदालीन इति (वृ)। भगवती-वत्तावपि (पत्र १४४) । औषपातिकस्य एष पाठः उद्धतोस्ति—- जहा दढपइन्ने' त्ति औप-दुढप्रतिज्ञोधीतस्तथायं पातिके वक्तव्यः, तच्चैतं----'मउजणधाईए मंडणधाईए कीलावण-धाईए अंकधाइए' इत्यादि, 'निव्वायनिव्वाघा-यंसि' इत्यादि च वाक्यमिहैवं संबन्धनीयं 'गिरिकंदरमल्लीणेव्व चंपगपायवे निव्वाय-निव्वाधायंसि सुहंसुहेणं परिवड्ढइ' त्ति 'परंगामणं' ति भूमौ सप्पर्णं 'पयचंकामणं' ति पादाभ्यां सञ्चारणं 'जेमामणं' ति भोजन-'पिडवद्धणं' ति कवलवृद्धिकारणं कारणं 'पज्जपावणं' ति प्रजल्पनकारणं 'कण्णवेहणं' ति प्रतीतं 'संवच्छरपडिलेहणं' ति वर्षग्रंथि-करणं 'चोलोयणं, ति चूडाधरणं 'उवणयणं' ति कलाग्राहणं भब्भाहाणजम्मणमाइमाइं कोउयाइं करेंति' त्ति गर्भाधानादिषु यानि कौतुकानि---रक्षाविधानादीनि तानि गर्भाधानादीन्येवोच्यन्त इति गर्भाधानजन्मादिकानि कौतूकानीत्येवं समानाधीकरणतया निर्देशः कृतः । द्रष्टव्यं रायपसेणइयसूत्रस्य ५०३,५०४ सूत्रद्वयम् ।

४. साइरेगट्टवरिसजायगं (वृ) । ४. करण-दिवस (क, ख) ।

#### जो**वाइय-पयर**षं

सरगयं म. पुक्खरगयं ६. समतालं १०. जूयं' ११. जणवायं' १२. पासगं १३. अट्ठावयं १४. पोरेकव्वं' १४. दगमट्टियं १६. अण्णविहि १७. पाणविहि १८. वत्थविहि १९. विलेवणविहि' २०. सयणविहि २१. अज्जं २२. पहेलियं २३. मागहियं २४. गाहं २४. गीइयं २६. सिलोयं २७. हिरण्णजुत्ति २८. सुवण्णजुत्ति' २६. गंधजुत्ति' ३०. चुण्णजुत्ति ३१. आभरणविहिं ३२. तरुणीपडिकम्मं ३३. इत्थिलवखणं ३४. पुरिसलक्खणं ३४. हयलक्खणं ३६. गयलक्खणं ३७. गोणलक्खणं ३८. कुक्कुडलक्खणं ३६. छत्तलक्खणं ४०. दंडलक्खणं ४१. असिलक्खणं ४२. मणिलक्खणं ४३. काकणिलक्खणं ४४. वत्युविज्जं ४४. खंधावारमाणं ४६. नगरमाणं ४७. वूहं ४८. पडिवूहं ४६. चारं ४०. पडिचारं ४१. चक्कवूहं ४२. गरुलवूहं ४३. सगडवूहं ४४. जुद्धं ४४. निजुद्धं ५६. जुद्धाइ-जुद्धं ४७. मुट्ठिजुद्धं ५६. वाहुजुद्धं ४६. लयाजुद्धं ६०. ईसत्थं ६१ छरुप्पवादं' ६२. धणु-वेदं'' ६३. हिरण्णपागं ६४. सुवण्णपागं ६४. वट्टखेडुं'' ६६. सुत्तखेडुं ६७. णालियाखेडुं ६८. पत्तच्छेज्जं ६९. कडगच्छेज्जं ७०. सज्जीवं ७१. निज्जीवं ७२. सउणस्यं—इति सेहा-वित्ता सिक्खावेत्ता अम्मापिईणं उवणेहिति ॥

१४७. तए णं तस्स दढपइण्णस्स दारगस्स अम्मापियरो तं कलायरियं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थगंधमल्लालंकारेण य सक्कार्रीहति सम्माणेहिति, सक्कारित्ता सम्माणेत्ता विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलइस्संति, दलइत्ता पडिविसज्जेहिति ।।

१४८. तए णं से दढपइण्णे दारए<sup>1</sup> वावत्तरिकलापंडिए नवंगसुत्तपडिबोहिए अट्ठारसदेसी-भासाविसारए गीयरई गंधव्वणट्टकुसले हयजोही गयजोही रहजोही बाहु-जोही बाहुप्पमद्दी वियालचारी साहसिए अलंभोगसमत्थे यावि भविस्सइ ।।

१४६. तए णं तं दढपइण्णं दारगं अम्मापियरो वावत्तरिकलापंडियं" क्वंगसुत्तपडि-बोहियं अट्ठारसदेसी-भासाविसारयं गीयरइं गंधव्वणट्टकुसलं हयजोहि गयजोहि रहजोहि बाहुजोहिं बाहुप्पमर्दि वियालचारि साहसियं॰ अलभोगसमत्थं च वियाणित्ता विउलेहि अण्णभोगेहिं पाणभोगेहि लेणभोगहिं वत्थभोगेहिं सयणभोगेहिं कामभोगेहि उवणि-मतेहिति ॥

१४०. तए णं से दढपइण्णे दारए तेहि विउलेहि अण्णभोगेहि" •पाणभोगेहि लेणभो-गेहि वत्थभोगेहि॰ सयणभोगेहि कामभोगेहि णो सज्जिहिति णो रज्जिहिति णो गिज्झि-

१. दूर्य (स)।	<b>१. छरुप्पवाहं (क)</b> ।
२. जणवयं (स, म) ।	१०. धणुब्वेहं (क) ।
<b>३</b> . पुरेकव्व <b>(</b> ग) ।	११. चक्सेहुं (स);बंधुसेहुं (स);पञ्भसेहुं (ग)।
४. लेणबिहि (क); लेणबिहि विलेवणविहि (स) ।	
<u>थ.</u> × (क, ख, ग)।	१२. 'विन्नयपरिणयभेत्ते' त्ति क्वचित् (वृ) ।
६. × (क) ।	१३. सं० पा० 'पंडियं जाव अलंभोगसमत्थं ।
७. कागिणि (क) ।	१४. सं० पा०अण्णभोगेहि जाव सयणभोगेहि ।
द, बंधारमाणं (क, ग)।	

हिति णो मुज्झिहिति' णो अज्झोववज्जिहिति । से जहाणामए उप्पलेइ वा पउमेइ वा कुमुएइ वा नलिणेइ वा सुभगेइ वा सुगंधिएइ' वा पोंडरीएइ वा महापोंडरीएइ वा सयपत्तेइ वा सहस्सपत्तेइ वा' पंके जाए जले संवुड्ढे णोवलिप्पइ पंकरएणं णोवलिप्पइ जलरएणं, एवामेव दढपइण्णे वि दारए कामेहि जाए भोगेहि संवुड्ढे णोवलिप्पिहिति कामरएणं णोवलिप्पिहिति भोगरएणं णोवलिप्पिहिति मित्त-णाइ-णियग-सयण-संबंधि-परिजणेणं ।।

१४१. से ण तहारूवाणं थेराणं अंतिए केवलं बोहि बुज्झिहिति, बुज्झित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिति ॥

१४२. से<sup>\*</sup> ण<sup>ं</sup>भविस्सइ अणगारे भगवंते इरियासमिए<sup>、 •</sup>भासासमिए एसणासमिए आयाग-भंड-मत्त-निक्खेवणासमिए उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणिया-समिए मणगुत्ते वयगुत्ते कायगुत्ते गुत्तिं गुत्तिंदिए<sup>०</sup> गुत्तबंभयारी ।।

१५३. तस्स णं भगवओं एएणं विहारेणं विहरमाणस्स अणंते अणुत्तरे णिव्वाधाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरणाणदंसणे समुप्पज्जिहिति ॥

११४ तए णं से दढपइण्णे केवली बहूइं वासाइं केवलिपरियागं पाउणिहिति, पाउ-णित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता सटिंठ भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुंडभावे अण्हाणए अदंतवणए केसलोए बंभचेरवासे अच्छत्तगं अणोवाहणगं भूमिसेज्जा फलहसेज्जा कट्ठसेज्जा परघरपवेसो लढावलढं परेहि हीलणाओ निदणाओ खिसणाओ गरहणाओ 'तज्जणाओ तालणाओ'' परिभवणाओ पव्वहणाओ उच्चावया गामकंटगा बाबीसं परीसहोवसग्गा अहियासिज्जंति तमट्ठमाराहित्ता चरिमेहि उस्सास-णिस्सासेहि सिज्मिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति ॥ देवकब्विसय-उववाय-पदं

१५५. सेज्जे इमे गामागर' ण्णयर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टणासम-संबाह°-सण्णिवेसेसु पव्वइया समणा भवंति, तं जहा---आयरियपडिणीया उवज्झायपडिणीया तदुभयपडिणीया कुलपडिणीया गणपडिणीया आयरिय-उवज्झायाणं अयसकारगा अवण्णकारगा अकित्तिकारगा बहूहि असब्भावुब्भावणाहि मिच्छत्ताभिणिवेसेहि य अप्पाणं च परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणा वुप्पाएमाणा' विहरित्ता बहूइं वासाइं सामण्ण-परियागं पाउणंति, पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिवकता'' कालमासे कालं किच्चा

- १. × (क, ख, वृ)।
- २. सुगंधेति (क) ।
- ३. वा सयसहस्सपत्ते इ वा (क, ख, ग); 'सयसहस्सपत्ते इ वा' एष पाठः चिन्तनीयोस्ति प्रायः 'सहस्सपत्ते' इत्येव पाठो दृश्यते । मतसहस्रपत्रं इति पदं विश्रुतं नास्ति ।
- ४. प्रस्तुतसूत्रे आदर्शेषु 'गुत्तबंभयारी' इति पर्यन्त: पाठो लभ्यते । १६४ सूत्रे पाठः किञ्चिद् विस्तृतोस्ति । अतः इयोरपि संक्षिप्तपाठ्यो:

संकेतौ भिन्नौ वर्तेते, तेनैव पाठयोः पूर्त्तिभिन्न-स्थलाभ्यां कृतास्ति ।

- ४. सं० पा०---इरियासमिए जाव गुत्तजंभयारी ।
- ६. अदंतधावणए **(क)** ।
- ७. फलहकसेज्जा (क, ख) ।
- <. तालणाओ तज्जणाओ (क, स, ग)
- सं० पा०—गामागर जाव सण्णिवेसेसु
- १०. उप्पाएमाणा (क, ख)।
- ११. 'अपडिक्कता (ख, ग)।

#### कोवाइय-पयरणं

उक्कोसेणं लंतए कप्पे देवकिब्बिसिएसु देवकिब्बिसियत्ताए उववत्तारो भवंति । तहि तेसिं गई, <sup>\*●</sup>तहि तेसि ठिई, तहि तेसि उववाए पण्णत्ते । तेसि णं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! तेरससागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता । अत्थि णं भंते ! तेसि देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा ? हंता अत्थि । तेणं भंते ! देवा परलोगस्स आराहगा ? णो इणट्ठे समट्ठे ।°

### सहस्सार-उववाय-पदं

१९७. तए णंते समुप्पण्णजाइ-सरणा समाणा सयमेब पंचाणुव्वयाइं' पडिवज्जंति, पडिवज्जित्ता बर्हूहि सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणा बहूइं वासाइं आउयं पालेंति, पालेत्ता भक्तं पच्चक्खंति, पच्चक्खित्ता बहूइं भक्ताइं अणसणाए छेदेंति, छेदेत्ता आलोइयपडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा उक्को-सेणं सहस्सारे कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवंति । तहिं तेसिं गई, "तहिं तेसि ठिई, तहिं तेसि उववाए पण्णत्ते । तेसि णं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता । अस्थि णं भंते ! तेसि देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा ? हंता अस्थि ! ते णं भंते ! देवा परलोगस्स आराहगा ? हंता अस्थि ॥

### आजीवयाणं-अच्चूय-उववाय-पदं

१४८. से जे इमे गामागर'- ण्यर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टणासम-संबाह°-सण्णिवेसेसु आजीवया भवंति, तं जहा—दुघरंतरिया तिघरंतरिया सत्तघरंतरिया उप्पलवेंटिया घरसमुदाणिया विज्जुयंतरिया उट्टियासमणा। ते णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा बहूइं वासाइं परियायं पाउणंति, पाउणित्ता कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववत्तारो भवंति। तहिं तेसि गई, •'तहिं तेसि ठिई, तहिं तेसि उववाए पण्णत्ते। तेसि णं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! बावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। अत्थि णं भंते ! तेसि देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कारपरक्कमे इ वा ? हंता अत्थि। ते णं भंते ! देवा परलोगस्स आराहगा ? णो इणट्ठे समट्ठे<sup>0</sup> ।।

### समणाणं आभिओगिय-उववाय-पदं

१४६. सेज्जे इमे गामागर°-°णयर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-

- २. खत्रोवसमएणं (क) ।
- ३. पंचणुव्वयाहि (क) ।
- ४. सं० पा०-अद्वारस सागरोवमाइं ठिई पण्णता
- परलोगस्स आराहगा सेसं तं चेव ।
- ४. सं० गा०---गामागर जाव सण्णिवेसेसु ।
- ६. सं० पा०—बावीसं सागरोवमाइं ठिई अणारा-हगा सेसं तं चेव ।
- ७. सं० पा०-गामागर जाव सण्णिवेसेसु ।

पट्टणासम-संबाह°-सण्णिवेसेसु पव्वइया समणा भवंसि, तं जहा~~अत्तुक्कोसिया' परपरि-वाइया भूइकम्मिया भुज्जो-भुज्जो को उयकारगा। ते णं एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणा वहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणंति, पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणालो इयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे आभिओगिएसु देवेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति । तहि तेसिं गई, ° तहि तेसि ठिई, तहि तिसि उववाए पण्णत्ते । तेसि णं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! बावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता । अत्थि णं भंते ! तेसि देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा ? हंता अत्थि । ते णं भंते ! देवा परलोगस्स आराहगा ? णो इणट्ठे समट्ठे° ॥

### णिण्हगाणं गेवेज्ज-उववाय-पदं

१६०. सेज्जे इमे गामागर' •-णयर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टणा-सम-संवाह°-सण्णिवेसेसु णिण्हगा भवंति, तं जहा—वहुरया, जीवपएसिया, अव्वत्तिया, सामुच्छेइया, दोकिरिया, तेरासिया, अबद्धिया इच्चेते सत्त पवयणणिण्हगा केवलं चरिया-लिंग-सामण्णा मिच्छद्दिट्ठी वहूहि असब्भावुब्भावणाहि मिच्छत्ताभिणिवेसेहि य अप्पाणं च परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणा वुप्पाएमाणा विहरित्ता 'बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणंति, पाउणित्ता' कालमासे कालं किच्चा उक्कोसेणं उवरिमेसु गेवेज्जेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति । तहि तेसि गई, • तहि तेसि ठिई, तहि तेसि उववाए पण्णत्ते । तेसि णं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! एक्कतीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता । अत्थि णं भंते ! तेसि देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा ? हता अत्थि । ते णं भंते ! देवा परलोगस्स आराहगा ? णो इणद्ठे समट्ठे ॥

### देस-विरय-वण्णग-पदं

१६१. सेज्जे इमे गामागर'-<sup>●</sup>णयर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टणासम-संवाह°-सण्णिवेसेसु मणुया भवंति, तं जहा---'अप्पारंभा अप्पपरिग्गहा''' धम्मिया धम्माणुया धम्मिट्ठा धम्मक्खाई धम्मप्पलोई'' धम्मपलज्जणा धम्मसमुदायारा धम्मेणं चेव वित्ति कप्पेमाणा सुसीला'' सुव्वया सुप्पडियाणंदा साहूहि, एगच्चाओ'' पाणाइवायाओ

```
१. अत्तुक्कसिया (ग) ।
```

- सं० पा०----वावीसं सागरोवमाइं ठिई परलो-गस्स अणाराहगा सेसं तं चेव।
- ३. सं० पा० -- गामागर जाव सण्णिवेसेसु।
- ४. सामुच्छिया (क, ख); सामुच्छित्तिया (ग)।
- ४. अव्वद्धिया (क,ख,ग)।
- ६. मिच्छद्दिर्द्विहि (क, ग) ।
- ৩. 🗙 **(**क) ৷
- मं० पा०-एक्कतीसं सागरोवमाइं ठिई प्रलोगस्स अणाराहगा।

१. सं० पा०-गामागर जाव सण्णिवेसेसू ।

- १०. १६३ सूत्रे 'अणारंभा अपरिग्महा' इति पाठो विद्यते । तथैव पद्धत्या अत्रापि चिह्नान्तर-वर्तिपाठो युज्यते । सूत्रकृताङ्गे (२।२।७१) पि एष पाठो लभ्यते ।
- ११. धम्मप्पलोइया (ग) ।
- १२. सूत्रकृताङ्गे (२।२।७१) एतत्पदं दृश्यते । प्रस्तुतसूत्रस्य पाठशोधनाय अत्रयुक्तेषु आदर्श्वेषु एतत्पदं लभ्यते ।
- १३ एगइयाओ (वृपा)

पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अपडिविरया' । \*एगच्चाओ मुसावायाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अपडिविरया । एगच्चाओ अदिष्णादाणाओ पडिविरया जाव-ज्जीवाए, एगच्चाओ अपडिविरया। एगच्चाओ मेहणाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अपडिविरया । एगच्चाओ परिग्गहाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अपडिविरया॰ । एगच्चाओ कोहाओ माणाओ मायाओ लोहाओ पेज्जाओ दोसाओ कलहाओ अब्भक्खाणाओ पेसुण्णाओ परपरिवायाओ अरइरईओ मायामोसाओ मिच्छादंसणसल्लाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अपडिविरया । एगच्चाओ आरंभ-समारंभाओ पडि-विरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अपडिविरया । एगच्चाओ करण-कारावणाओ पडिविरया जावज्जीवाए एगच्चाओ अपडिविरया । एगच्चाओ पयण-पयावणाओ पडिविरया जाव-ज्जीवाए, एगच्चाओ 'पयण-पयावणाओ'' अपडिविरया । एगच्चाओ कोट्टण-पिट्रण-तज्जण-तालण-वह-बंध-परिकिलेसाओ पडिविरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अपडिविरया । ण्हाण-मद्दण-वण्णग-विलेवण-सद्द-फरिस-रस-रूव-गंध-मल्लालंकाराओ पडि-एगच्चाओ विरया जावज्जीवाए, एगच्चाओ अपडिविरया। जे यावण्णे तहप्पगारा सावज्जजोगो-वहिया' कम्मंता परपाणपरियावणकरा कज्जंति, तओ वि एगच्चाओ पडिविरया जावज्जी-वाए, एगच्चाओ अपडिविरया ॥

- र. सं० पा०—–अपडिवित्त्या एवं जाव परिग्ग-हाओ ।
- २. एतादृश्याऽावृत्तिरन्यवाक्येषु नास्ति ।
- ३. वाचनान्तरे 'सावज्जा अबोहिया' (वृ) !
- ४. से जहाणामए ति क्वचित् (वृ) ।
- X. × (क, ग)।

- ६. पुरघरदार<sup>°</sup> (क); घरदार<sup>°</sup> (ग)।
- ७. वत्थमंध (ग) ।
- पडिहारिएण (क) ।
- १. सं० पा०----बाबीसं सागरोवमाइं ठिई आरा-हगा सेसं तं चेव । तहेव (क, ख) ।

परक्कमेइ वा ? हंता अत्थि । ते णं भंते ! देवा परलोगस्स आराहगा ? हंता अत्थि॰ ।। सब्व-विरय-वण्णग-पदं

१६३. सेज्जे इमे गामागर'-ण्यर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्वड-दोणमुह-मडंब-पट्टणासम-संबाह°-सण्णिवेसेसु मणुया भवंति, तं जहा—'अणारंभा अपरिग्गहा'' धम्मिया' •धम्माणुया धम्मिट्ठा धम्मक्खाई धम्मपलोई धम्मपलज्जणा धम्मसमुदायारा धम्मेणं चेव वित्ति कप्पेमाणा सुसीला सुब्वया सुपडियाणंदा साहू, सब्वाओ पाणाइवायाओ पडि-विरिया<sup>°</sup> <sup>•</sup>सव्वाओ मुसावायाओ पडिविरया, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ पडिविरया, सव्वाओ मेहूणाओ पर्डिविरया,° सव्वाओ परिग्गहाओ पडिविरया । सव्वाओ कोहाओ माणाओ मायाओ लोभाओ ' पेज्जाओ दोसाओ कलहाओ अब्भक्खाणाओ, पेसुण्णाओ परपरिवायाओ अरइरईओ मायामोसाओ° मिच्छादमणसल्लाओ पडिविरया । सव्वाओ आरंभ-समारंभाओ पडिविरया । सव्वाओ करण-कारावणाओ पडिविरया । सव्वाओ पयण-पयावणाओ पडिविरया । सव्वाओ कोट्टण-पिट्टण-तज्जण-तालण-वह-बंध-परिकिलेसाओ पडिविरया । सव्वाओ ण्हाण-मद्दण-वण्णग-विलेवण-सद्द-फरिस-रस-रूव-गंध-मल्लालंका-राओ पडिविरया । जे यावण्णे तहप्पगारा सावज्जजोगोवहिया कम्मता परपाणपरियावण-करा कज्जंति, तओ वि पडिविरया जावज्जीवाए 🛮

१६४. 'से जहाणामए'' अणगारा भवंति—इरियासमिया भासासमिया ' 'एसणा-समिया आयाण-भंड-मत्त-णिक्खेवणासमिया उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिद्रा-वणिआसमिय। मणसमिया वइसमिया कायसमिया मणगुत्ता बइगुत्ता कायगुत्ता गुत्ता गुत्तिदिया गुत्तबंभयारी चाई लज्जू धन्ना खंतिखमा जिइंदिया सोहिया अणियाणा अप्पु-स्सुया अबहिल्लेसा सुसामण्णरया दता॰ इणमेव निग्गंथं पावयणं पुरओकाउं विहरति ॥

१६४ तेसि ण भगवंताण एएण विहारेण विहरमाणाण अत्थेगइयाण अणंते' •अणुत्तरे णिव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे॰ केवलवरणाणदसणे समुप्पज्जइ । ते बहूइ वासाइ केवलपरियाग पाउणंति, पाउणित्ता भत्तं पच्चक्खंति, पच्चविखत्ता बहूइ भत्ताइं अणसणाए छेदेंति, छेदेत्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे' \* मुंडभावे अण्हाणए अदंत-वणए केसलोए बंभचेरवासे अच्छत्तगं अणोवाहणगं भूमिसेज्जा फलहसेज्जा कट्टूसेज्जा पर-घरपवेसो लद्धावलद्धं परेहि हीलणाओ निदणाओ खिसणाओ गरहणाओ तज्जणाओ ताल-णाओ परिभवणाओ पव्वहणाओ उच्चावया गामकंटगा वावीसं परीसहोवसग्गा अहिया-सिज्जंति, तमट्ठमाराहिता चरिमेहि उस्सासणिस्सासेहि सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिणि-व्वायंति सव्वद्रक्खाण° मंतं करेंति ॥

१६६. जेंसि पि य णं एगइयाणं णो केवलवरणाणदंसणे समुष्पज्जइ । ते बहूइं

- १. सं० पा०---गामागर जाव सण्णिवेसेसु ।
- २. × (ख,ग)।
- **३. सं० पा०-––धम्मिया जाव कप्पेमा**णा ।
- ४. साहूहि (ख) ।
- ५. पडिविरिया जाव सव्वाओ ।
- मं० पा०---भासासमिया जाव इणमेव ।
- ६. सं० पा०—लोभाओ সাৰ
- ९. सं० पा०-अणंते जाव केवलवरणाणदंसणे ।

सल्लाओ ।

मिच्छादंसण- १०. सं० पा०----नग्गभावे जाव मंतं।

७ से जहाणामए ति क्वचिन्न (व) ।

वासाइं छउमत्थ-परियागं पाउणंति, पाउणित्ता आबाहे उप्पण्णे वा अणुप्पण्णे वा भत्तं पच्चक्खंति । ते वहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति, छेदेत्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे •मुंडभावे अण्हाणए अदंतवणए केसलोए बंभचेरवासे अच्छत्तगं अणोवाहणगं भूमिसेज्जा फलहसेज्जा कट्ठसेज्जा परघरपवेसो लद्धावलद्धं परेहिं हीलणाओ निंदणाओ खिंसणाओ गरहणाओ तज्जणाओ तालणाओ परिभवणाओ पव्वहणाओ उच्चावया गामकंटगा वावीसं परीसहोवसग्गा अहियासिज्जंति°, तमट्ठमाराहित्ता चरिमेहिं उस्सासणिस्सासेहिं अणंतं अणुत्तरं निव्वाघायं निरावरणं कसिणं पडिपुण्णं केवलवरणाणदंसणं उप्पाडेंति<sup>\*</sup>, तओ पच्छा सिज्झिहिति<sup>\*</sup> •बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाण° मतं करेहिति<sup>\*</sup> ॥

१६७. एगच्चा पुण एगे भयंतारो पुव्वकम्मावसेसेणं कालमासे कालं किच्चा उक्को-सेणं सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववत्तारो भवंति । तर्हिं तेसिं गई, "तर्हि तेसिं ठिई, तर्हि तेसिं उववाए पण्णत्ते । तेसिं णं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता । अत्थि णं भंते ! तेसिं देवाणं इड्ढीइ वा जुईइ वा जसेइ वा वलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा ? हंता अत्थि । ते णं भंते ! देवा परलोगस्स आराहगा ? हंता अत्थि ॥

१६८. सेज्जे इमे गामागर<sup>\*</sup>-<sup>•</sup>णयर-णिगम-रायहाणि-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टणासम-संबाह<sup>•</sup>-सण्णिवेसेसु मणुया भवंति, तं जहा—सव्वकामविरया सव्वरागविरया<sup>6</sup> सव्वसंगातीता सव्वसिणेहाइक्कंता अक्कोहा निक्कोहा खीणकोहा <sup>\*</sup> अमाणा निम्माणा खीणमाणा अमाया निम्माया खीणमाया अलोहा निल्लोहा खीणलोहा<sup>•</sup> अणुपुव्वेणं अट्ठ कम्मपयडीओ खवेत्ता उपिंप लोयग्गपइट्ठाणा भवंति ॥

# केवलिसमुग्धाय-पदं

१६६. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा केवलिसमुग्घाएणं समोहए' केवलकप्पं लोयं फुसित्ता णं चिट्ठइ ? हंता चिट्ठइ । से णूणं भंते ! केवलकप्पे लोए तेहिं निज्जरापोग्गलेहिं फुडे ? हंता फुडे । छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से तेसिणिज्जरापोग्गलाणं किंचि वण्णेणं वण्णं गंधेणं गंधं रसेणं रसं फासेणं फासं जाणइ पासइ ? गोयमा ! णो इणटठे समटठे ॥

१७०. से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—छउमत्थे णं मणुस्से तेसि णिज्जरापोग्गलाणं णो किंचि वण्णेणं वण्णं "गंधेणं गंधं रसेणं रसं फासेणं कासं" जाणइ पासइ ? गोयमा ! अयं णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए सव्वखुड्डाए वट्टे तेल्लापूयसंठाण-संठिए, वट्टे रहचक्कवालसंठाणसंठिए, वट्टे पुक्खरकण्णियासंठाणसंठिए, वट्टे पडिपुण्ण-

१. सं० पा०नग्गभावे जाव तमट्ठमाराहिता ।	हगा चेव सेसं तं चेव।
२. समुप्पार्डिति (क) ।	७. सं० पा०—गामागर जाव सण्णिवेसेसु ।
३. सं० पा०—सिज्फिहिति जाव मंत ।	<. × (क, ख, ग) ।
४. काहिति (ख, ग) ।	१. सं० पा०माणे माया लोहा ।
<b>प्र. तेहिं (क, ख, ग)</b> ।	१०. समोहणइ २ त्ता (क, ख, ग)
६. सं० पा० तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई आरा-	११. सं० पा०वण्णं जाव जाणइ।

चंदसंठाणसंठिए, एक्कं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं तिण्णि जोयणसयसहस्साइं सोलससहस्साइं दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे अट्ठावीसं च धणुसयं तेरस य अंगुलाइं अद्धंगुलियं च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते। देवे णं महिड्ढीए महज्जुतीए महब्बले महाजसे महासोक्खे महाणुभावे सविलेवणं गंधसमुगगयं गिण्हइ, गिण्हित्ता तं अवदालेइ, अवदालेत्ता जाव इणामेव ति कट्टु केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं तिहिं अच्छरा-णिवार्एहि तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टिता णं हब्वमागच्छेज्जा। से णूणं गोयमा ! से केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे तेहि घाणपोग्गलेहिं फुडे ? हंता फुडे। छउमत्थे णं गोयमा ! से केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे तेहि घाणपोग्गलेहिं फुडे ? हंता फुडे। छउमत्थे णं गोयमा ! मणुस्से तेसि घाणपोग्गलाणं किचि वण्णेणं वण्णं' 'गंधेण गंधं रसेणं रसं फासेणं फासं' जाणइ पासइ ? भगवं ! णो इणट्ठे समट्ठे। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ— छउमत्थे णं मणुस्से तेसि णिज्जरा-पोग्गलाणं णो किचि वण्णेणं वण्णं' क्यां' रसं फासेणं फासं' जाणइ पासइ । एसुहुमा णं ते पोग्गला पण्णत्ता समणाउसो ! सब्बलोयं पि य णं ते फुसित्ता णं चिट्ठंति ।

१७१. कम्हा णं भंते ! केवली समोहणंति ? कम्हा णं केवली समुग्घायं गच्छंति ? गोयमा ! केवलीणं चत्तारि कम्मंसा अपलिक्खीणां भवंति, तं जहा-वेयणिज्जं आउयं णामं गोत्तं । सव्ववहुए से वेयणिज्जे कम्मे भवइ, सव्वत्थोवे से आउए कम्मे भवइ, विसमं समं करेइ, बंधणेहि ठिईहि य, विसमसमकरणयाए, बंधणेहि ठिईहि य । एवं खलु केवली समोहणंति, एवं खलु केवली समुग्धायं गच्छंति ।।

१७२. सब्वे वि णं भंते ! केवली समुग्धायं गच्छंति ? णो इणट्ठे समट्ठे ।

'अकिया ण'' समुग्घाय, अणंता केवली जिणा। जरमरणविष्पमुक्का,' सिद्धिं वरगइं गया ॥ १॥

१७३. कइसमए णं भंते ! आवज्जीकरणे पण्णत्ते ? गोयमा ! असंखेज्जसमइए अंतो-मुहत्तिए पण्णत्ते ।।

१७४. केवलिसमुग्घाए णं भंते ! कइसमइए पण्णत्ते, ? गोयमा ! अट्ठसमइए पण्णत्ते, तं जहा---पढमे समए दंडं करेइ, वीए समए कवाडं करेइ, तइए समए मंथं करेइ, चउत्थे समए लोयं पूरेइ, पंचमे समए लोयं पडिसाहरइ, छट्ठे समए मंथं पडिसाहरइ, सत्तमे समए कवाडं पडिसाहरइ, अट्ठमे समए दंडं पडिसाहरइ, पडिसाहरित्ता सरीरत्थे भवइ ॥

१७५. से णं भंते ! तहा समुग्घायगए कि मणजोगं जुंजइ ? वयजोगं जुंजइ ? काय-जोगं जुंजइ ? गोयमा ! णो मणजोगं जुंजइ, णो वयजोगं जुंजइ, कायजोगं जुंजइ ॥

१७६ कायजोगं जुंजमाणे कि ओरालियसरीरकायजोगं जुंजइ ? ओरालियमीसा-सरीरकायजोगं' जुंजइ ? वेउव्वियसरीरकायजोगं जुंजइ ? वेउव्वियमीसासरीरकायजोगं जुंजइ ? आहारगसरीरकायजोगं जुंजइ ? आहारगमीसासरीरकायजोगं जुंजइ ? कम्मग-

- १, २. सं० पा०—–वण्णं जाव जाणइ । ४. जाइजरामरणविष्पमुक्का (ख, ग) ।
- ३. 'अवेइया अनिज्जिणा' त्ति क्वचिद् दृश्यते ६. "मीससरीर" (ख, ग); "मिस्ससरीर" (वृ)। (क्वचित्)। ४. अकिरियाण (ख); अकिताणं (क्वचित्)।

७२ \_\_\_\_\_ सरीरकायजोगं' जुंजइ ? गोथमा ! ओरालियसरीरकायजोगं जुंजइ, ओरालियमीसासरीर-कायजोगं पि जुंजइ, णो वेउव्वियसरीरकायजोगं जुंजइ, णो वेउव्वियमीसासरीरकायजोगं जुंजइ णो आहारगसरीरकायजोगं जुंजइ, णो आहारगमीसासरीरकायजोगं जुंजइ, कम्मगसरीरकायजोगं पि जुंजइ । पढमट्ठमेसु समएसु ओरालियसरीरकायजोगं जुंजइ, बिइय-छट्ट-सत्तमेसु समएसु ओरालिमीसासरीरकायजोगं जुंजइ, तइय-चउत्थ-पंचमेहि कम्मसरीरकायजोगं जुंजइ ॥

१७७ से णं भंते ! तहा समुग्धायगए 'सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिणिव्वाइ'<sup>३</sup> सव्वदुक्खाणमंतं करेइ ? णो इणट्ठे समट्ठे । से णं तओ पडिणियत्तइ, पडिणियत्तित्ता इहमागच्छइ, आगच्छित्ता तओ पच्छा मणजोगं पि जुंजइ, वयजोगं पि जुंजइ, कायजोगं पि जुंजइ ।।

१७८. मणजोगं जुंजमाणे कि सच्चमणजोगं जुंजइ ? मोसमणजोगं जुंजइ ? सच्चामोसमणजोगं जुंजइ ? असच्चामोसमणजोगं जुंजइ ? गोयमा ! सच्चमणजोगं जुंजइ, णो मोसमणजोगं जुंजइ, णो सच्चामोसमणजोगं जुंजइ, असच्चामोसमणजोगं पि जुंजइ ॥

१७९. वयजोगं जुंजमाणे कि सच्चवइजोगं जुंजइ ? मोसवइजोगं जुंजइ ? सच्चा-मोसवइजोगं जुंजइ ? असच्चामोसवइजोगं जुंजइ ? गोयमा ! सच्चवइजोगं जुंजइ, णो मोसवइजोगं, जुंजइ, णो सच्चामोसवइजोगं जुंजइ, असच्चामोसवइजोगं पि जुंजइ ॥

१८०. कायजोगं जुंजमाणे आगच्छेज्ज वा चिट्ठेज्ज वा णिसीएज्ज वा तुयट्टेज्ज वा उल्लंघेज्ज वा पल्लंघेज्ज वा, उक्खेवणं वा अवक्खेवणं वा तिरियक्खेवणं वा करेज्जा, पाडिहारियं वा पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगं पच्चप्पिणेज्जा ।।

### जोग-निरोह-पदं

१८१. से णं भंते ! तहा सजोगी सिज्झइ \* •बुज्झइ मुच्चइ परिणिव्वाइ सव्वदुक्खाण॰ मंत करेइ' ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥

१८२. से णं पुव्वामेव सण्णिस्स पंचिंदियस्स पज्जत्तगस्स जहण्णजोगिस्स' हेट्ठा असंखेज्जगुणपरिहीणं पढमं मणजोगं निरुंभइ, तयाणंतरं च णं बिदियस्स' पज्जत्तगस्स जहण्णजोगिस्स हेट्ठा असंखेज्जगुणपरिहीणं विइयं वइजोगं निरुंभइ, तयाणंतरं च णं सुहुमस्स पणगजीवस्स' अपज्जत्तगस्स जहण्णजोगिस्स'' हेट्ठा असंखेज्जगुणपरिहीणं तइयं कायजोगं णिरुंभइ । से णं 'एएणं उवाएणं''' पढमं मणजोगं णिरुंभइ, णिरुंभित्ता वयजोगं

 १. कम्मसरीर° (क); कम्मासरीर° (ख, ग)।
 ६. जहण्णमणजोगिस्स (ख); जहण्णनोगस्स

 २. सिजिफहिइ बुज्भिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वा-हिइ (क, ख, ग)।
 (ग)।

 हिइ (क, ख, ग)।
 ७. पंचिदियस्स (क, ख)।

 ३. पक्खेवणं (क)।
 ५. जहण्णवयजोगस्स (ख)।

 ४. सिज्भिहिति (क, ख, ग); सं० पा०-सिज्भइ जाव मंतं।
 १०. जहण्णकायजोगस्स (ख, ग)।

 ४. करिहिति (क, ख)।
 १९. प्रउत्तेणं उवाएणं (क)

 णिरुंभइ, णिरुंभित्ता कायजोगं णिरुंभइ, णिरुंभित्ता जोगनिरोहं करेइ, करेत्ता अजोगत्तं' पाउणइ, पाउणित्ता ईसिंहस्सपंचक्खरुच्चारणद्वाए' असंखेज्जसमइयं अंतोमुहुत्तियं' सेलेसि पडिवज्जइ । पुव्वरइयगुणसेढीयं च णं कम्मं तीसे सेलेसिमद्वाए असंखेज्जाहिं गुणसेढीहिं अणंते कम्मंसे खवयंतो' वैयणिज्जाउयणामगोए इच्चेते चत्तारि कम्मंसे जुगवं खवेइ, खवेत्ता ओरालियतेयकम्माइं' सव्वाहिं विप्पजहणाहिं विप्पजहित्ता' उज्जुसेढीपडिवण्णे अफुसमाणगई उड्ढं' एक्कसमएणं अविग्गहेणं गंता' सागरोवउत्ते सिज्झइ ।।

#### सिद्ध-वण्णग-पदं

१८३. ते णं तत्थ सिद्धा हवंति सादीया अपज्जवसिया असरीरा जीवघणा दंसण-णाणोवउत्ता निट्ठियट्ठा निरेयणा नीरया णिम्मला वितिमिरा विसुद्धा सासयमणागयद्धं चिट्ठंति ।

१८४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—ते णं तत्थ सिद्धा भवंति सादीया अपज्ज-वसिया' "असरीरा जीवघणा दंसणणाणोवउत्ता निट्ठियट्ठा निरेयणा नीरया णिम्मला विति-मिरा विसुद्धा सासयमणागयद्धं चिट्ठंति ? गोयमा ! से जहाणामए बीयाणं अग्निदड्ढाणं पुणरवि अंकुरुप्पत्ती ण भवइ, एवामेव सिद्धाणं कम्मबीए दड्ढे पुणरवि जम्मुप्पत्ती न भवइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—ते णं तत्थ सिद्धा भवंति सादीया अपज्जवसिया'' "असरीरा जीवघणा दंसणणाणोवउत्ता निट्ठियट्ठा निरेयणा नीरया णिम्मला वितिमिरा विसुद्धा सासयमणागयद्धं चिट्ठंति ॥

१८५. जीवा णं भंते ! सिज्झमाणा कयरम्मि संघयणे सिज्झंति ? गोयमा ! वइरोसभणारायसंघयणे सिज्झंति ।।

१८६. जीवा णंभते ! सिज्झमाणा कयरम्मि संठाणे सिज्झंति ? गोयमा ! छण्हं संठाणाणं अण्णयरे संठाणे सिज्झंति ।।

१८७. जीवा णं भंते ! सिज्झमाणा कयरम्मि उच्चत्ते सिज्झंति ? गोयमा ! जहण्गेणं सत्तरयणीए उक्कोसेणं पंचधणुसइए सिज्झंति ॥

१८८. जीवा णं भंते ! सिज्झमाणा कयरम्मि आउए सिज्झंति ? गोयमा ! जहण्णेणं साइरेगटठवासाउए, उक्कोसेणं पुव्वकोडियाउए सिज्झंति ।।

१८९. अस्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पहाए पुढवीए अहे सिद्धा परिवसंति ? णो इणटठे समट्ठे । एवं जाव<sup>13</sup> अहेसत्तमाए ।।

१९०. अत्थि णं भंते ! सोहम्मस्स कष्पस्स अहे सिद्धा परिवसंति ? णो इणट्ठे समट्ठे । एवं सब्वेसि पुच्छा—ईसाणस्स सणंकुमारस्स जाव'' अच्चुयस्स गेवेज्जविमाणाणं

१. अजोगयं (वृ) ।	७. × (वृ) ।
२. ईसिपंचरहस्सक्खरुच्चारणद्वाए (ख, ग) ।	<ol> <li>द. उड्ढं गंता (वृ) ।</li> </ol>
३. अंतोमुहुत्तं (ग) ।	१. भगगगगढं कालं (ख)।
४. खवेइ (स) ।	१०, ११. सं० पा०अपज्जनसिया जाव चिट्ठंति ।
<u>५</u> . *तेयाकम्माइं (क, ग) ।	१२. भ० २१७५।
६. विष्यजहइ, २ त्ता (क) ।	१३. खो० सू० ५१ ।

#### जीवाइय-पयरणं

#### अणुत्तरविमाणाणं ।।

ँ १९१ अत्थि णं भंते ! ईसीपब्भाराए पुढवीए अहे सिद्धा परिवसंति ? णो इणट्ठे समट्ठे ॥

### ईसीपब्भारापुढवी-वण्णग-पदं

१९२. से कहि खाइ णं' भंते ! सिद्धा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्रहाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिम-सूरिय-गहगण-णक्खत्त-तारारूवाणं' बहूइं जोयणाइं, बहूइं जोयणसयाइं, बहूइं जोयणसहस्साइं, बहूइं जोयणसयसहस्साइं, बहूओ जोयणकोडीओ बहूओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता सोहम्मीसाण-सणंकुमार-माहिंद-बंभ-लंतग-महासुक्क-सहस्सार-आणय-पाणय-आरण-अच्चुए तिण्णि य अट्ठारे गेविज्जविमाणावाससए वीईवइत्ता विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजिय-सब्वट्ठसिद्धस्स य महाविमाणस्स सव्वुवरिल्लाओ' थूभियग्गाओ दुवालसजोयणाइं अबाहाए एत्थ णं ईसीपब्भारा णाम पुढवी पण्णत्ता-पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयाम-विक्खंभेणं, एगा जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइं तीसं च सहस्साइं दोण्णि य अउणापण्णे जोयणसए किंचि विसेसाहिए परिरएणं । ईसीपब्भाराए णं पुढवीए बहुमज्झदेसभाए अट्ठ-जोयणिए खेत्ते अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेणं, तयाणंतरं च णं मायाए-मायाए' परिहायमाणी-परिहायमाणी सब्वेसु चरिम-पेरंतेसु मच्छियपत्ताओ तणुयतरी' अंगुलस्स असंखेज्जइभागं बाहल्लेणं पण्णत्ता ।।

१९३. ईसीपब्भाराए णं पुढवीए दुवालस णामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—ईसीइ वा ईसीपब्भाराइ वा तणूइ वा तणुयरीइ' वा सिद्धीइ वा सिद्धालएइ वा मुत्तीइ वा मुत्तालएइ वा लोयग्गेइ वा लोयग्गथूभिगाइ वा लोयग्गपडिबुज्झणाइ' वा सव्वपाण-भूय-जीव-सत्त-सुहावहाइ वा ।।

१९४. ईसीपब्भारा णं पुढवी सेया संखतल -विमलसोल्लिय -मुणाल -दगरय-तुसार-गोक्खीर-हारवण्णा उत्ताणयछत्तसंठाणसंठिया सब्वज्जुणसुवण्णगमई अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया णिम्मला णिप्पंका णिक्कंकडच्छाया समरीचिया'' सुप्पभा पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

#### सिद्ध-वण्णग-पदं

१९५. ईसीपब्भाराए णं पुढवीए सीयाए जोयणंमि लोगंतो । तस्स जोयणस्स जे से उवरिल्ले गाउए, तस्स णं गाउयस्स जे से उवरिल्ले छब्भागे, तत्थ णं सिद्धा भगवंतो<sup>१९</sup> सादीया अपज्जवसिया 'अणेगजाइ - जरा-मरण-जोणि-वेयणं संसारकलंकलीभाव-पुणब्भव-

```
१. × (क, ख, ग) ।
```

```
२. ताराभवणाओ (ग) ।
```

```
३. सव्वुप्परिल्लाओ (क, ग)।
```

```
४. माताए पएसपरिहाणीए (पण्ण० २।६४) ।
```

```
४. तणुयरी (ग) ।
```

```
६ तणुतणूई (क); तणूअरीइ (ग) ।
```

७. 'पडिपुच्छणाइ (ग) ।

- <. आयंस (वृ); संखतल (वृपा)।</li>
- १. विमलसोत्थिय (पण्ण० २।६६)।
- १०. मुयालिय (ख) ।
- ११. समीरिचिया (क) ।
- १२. भगवंता (ग) ।

गब्भवासवसही-पवंच अइक्कता'' सासयमणागयद्धं चिट्ठंति' ।

कहिं पडिहया सिद्धा ? कहिं सिद्धा पइट्रिया ? । कहि वोंदि चइत्ताणं, कत्थ गंतूण सिज्झई ? ॥१॥ अलोगे पडिहया सिद्धा, लोयग्गे य पइट्ठिया। इहं बोर्दि चइत्ताणं तत्थ गंतूण सिज्झई ॥२॥ जं संठाणं तू इहं, भवं चयंतस्त चरिमसमयंमि । आसी य पएसघणं, तं संठाणं तींह तस्स ।।३।। दीहं वा हस्सं वा, जं चरिमभवे हवेज्ज संठाणं। तत्तो तिभागहीणा, सिद्धाणोगाहणा भणिया ॥४॥ तिष्णि सया तेत्तीसा, धणुत्तिभागो थ होइ बोद्धव्वो । एसा खलु सिद्धाणं उक्कोसोगाहणा भणिया ।। १।। चत्तारि य रयणीओ, रयणितिभागूणिया य बोद्धव्वा। एसा खलू सिद्धाणं, मज्झिमओगाहणा भणिया ॥६॥ एक्का य होइ रयणी साहीया" अंगुलाइ" अट्ठ भवे। एसा खलु सिद्धाणं, जहण्णओगाहणा भणिया ॥७॥ ओगाहणाए सिद्धा 'भव-तिभागेण'' होंति परिहीणा । संठाणमणित्थंथं, जरामरणविष्पमूतकाणं ॥द॥ जत्थ य एगो सिद्धो, तत्थ अणंता भवनखयविमूनका । अण्णोण्णसमोगाढा, पुट्ठा सन्वे लोगंते ॥ ह॥ य फुसइ अणंते सिद्धे, सव्वपएसेहि णियमसा' सिद्धो। ते वि असंखेज्जगुणा, देसपएसेहि जे पुट्ठा ॥१०॥ असरीरा जीवघणा, उवउत्ता दंसणे य णाणे य। लक्खणमेयं ਰ੍ਹੋ सिद्धाणं ॥११॥ सागारमणागारं केवलणाणुवउत्ता'', जाणंती सव्वभावगुणभावे । पासंति सन्वओ खलू, केवलदिट्रीहि'' णंताहि ॥१२॥

१. पाठान्तरमिदम् अणेगजाइजरामरणजोणि-	४. चरम (ख) ।
संसारकलकलीभावपुणब्भवगब्भवासवसहिपवच-	५. हुस्सगं (ख) ।
समइक्कत'त्ति (वृ) ।	६. साहिया (ख) ।
२. कालं चिट्ठति (पण्ण० २।६७) ।	७. अंगुलाइं (क, ख) ।
३. अतः पूर्व प्रज्ञापनायां (२।६७) एषा गाथा	<. भव-भागेण (ख)।
द्श्यते—	१. णियमसो (ग) ।
तत्य वि य ते अवेदा, अवेदणा निम्ममा	१०. केवलनाणोउवत्ता (ख)
असंगया थ ।	११. केवलदिट्ठीहिं (ग) ।
संसारविष्पमुक्ता, पदेसा निव्वत्तसंठाणा ॥१॥	

ण वि अत्थि माणुसाणं तं सोक्खं ण वि य सव्वदेवाणं । सोनखं, अन्वाबाहं उवगयाणं ॥१३॥ जं सिद्धाणं जं देवाणं सोवखं, सव्वद्धापिंडियं अणंतगुणं। ण य पावइ मुत्तिसुहं, णंताहिं' वग्गवग्गूहिं ॥१४॥ सिद्धस्स मुहो रासी, सव्वद्धापिडिओ जइ हवेज्जा। सोणंतवग्गभइओ, सव्वागासे ण माएज्जा ॥१४॥ जह णाम कोइ मिच्छो, नगरगुणे बहुविहे वियाणतो । न चएइ परिकहेउं, उवमाए तहि असंतीए ॥१६॥ इय सिद्धाणं सोक्खं, अणोवमं णत्थि तस्स ओवम्मं । किंचि विसेसेणेत्तो, ओवम्ममिणं सूणह वोच्छं ॥१७॥ जह सव्वकामगुणियं, पुरिसो भोत्तूण भोयणं कोई। तण्हाछहाविमुक्को, अच्छेज्ज जहा अमियतित्तो ।।१०।। इय सव्वकालतित्ता, अउलं निव्वाणमुवगया सिद्धा। सासयमव्यावाहं, चिट्ठंति सुही सुहं पत्ता ।।१९।। सिद्धत्ति य बुद्धत्ति' य, पारगयत्ति य परंपरगय ति। उम्मूक्क-कम्म-कवया, अजरा अमरा असंगा य ॥२०॥ णिच्छिण्णसव्वदुक्खा, जाइजरामरणबंधणविमुक्का । अव्वाबाहं सुनेखं अणुहोती सासयं सिद्धा ॥२१॥ अतुलसुहसागरगया, अव्वाबाहं अणोवमं पत्ता । सब्बमणागयमद्धं, चिट्ठंति 'सुही सुहं पत्ता" ॥२२॥

#### प्रन्थ-परिमाण

अक्षर-परिमाण	:	४६४१६
अनुष्टुप-इलोक	:	१४१३ अक्षर ३

१. अणंताहि वि (ख)।

२. बुद्धित्ति (ख); बौद्धत्ति (ग) ।

# परिशिष्ट

# परिशिष्ट-१

# संक्षिप्त-पाठ, पूर्त-स्थल और आधार-स्थल निर्देश ओ<mark>वा</mark>इयं

संक्षिप्त-पाठ	पूर्त-स्थल सूत्र	पूर्ति आधार-स्थल सूत्र
अगामियाए जाव अडवीए	११७	११६
अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता परलोगस्स		
आराहगा सेसं तं चेव	१४७	32
अणंते जाव केवलवरणाणदंसणे	१६४	<b>{X</b> }
अण्णभोगेहि जाव सयणभोगेहि	名书口	5×6
अपज्जवसिया जाव चिट्ठति	१८४	१८३
अपडिविरया एवं जाव परिग्गहाओ	१६१	११७
अभिगयजीवाजीवे जाव अप्पाणं भावेमाणे		
विहरइ, णवरं ऊसियफलिहे अवंगुयदुवारे		
चियत्तंतेउरघरदारपवेसी' एयं ण वुच्चई	१२०	वृत्ति, पृष्ठ १्रद
अयबंधणाणि वा जाव महद्यणमोल्लाइं	१०६	१०४
अवहमाणए जाव से	१३७	888
असंजए जाव एगंतसुत्ते	<b>६</b> १,८७	ፍሄ
आगमेसिभद्दा जाव पडिरूवा	७२	वृत्ति, पृष्ठ १५३
आभिणिबोहियणाणी जाव केवलणाणी	२४	नंदी सू० २
आयारधरा जाव विवागसुयधरा	<u> </u>	नंदी सू० ७६
आवलियाए जाव अयणे	२म	वृत्ति, पृष्ठ ६ <del>०</del>
इरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी	१४२	२७
उदए जाव भीणे	११७	११६
एक्कतीसं सागरोवमाइं ठिई परलोगस्स		
अणाराहगा सेसं तं चेव	१६०	37
एवं एएणं अभिलावेणं तिरिक्खजोणिएसु	৬ই	<b>হ</b> ে
एवं चेव पसत्थं भाणियव्वं	80	80
१ क्वचित (चियत्तघरंते उरपवेसी' ति (व) ।		

१. क्वचित्--- 'चियत्तघरंतेउरपवेसी' ति (वृ) ।

एवं जाव सव्वं परिग्गहं	११७	११७
एवं माण माया लोहा	१६८	१६⊏
एवं सुपण्णत्ते सुभासिए सुविणीए सुभाविए	૭૯	30
एवमाइक्खइ जाव एवं	११८	११ू
एवमाइक्खामि जाव परूदेमि	११म	११८
कंदमंते आव पविमोयणे	ς	४,७
कंदमंतो एएसि वण्णओ भाणियव्वी जाव सिविय	म १०	¥,9
कंपिल्लपुरे जाव धरसए	११८	११८
करयल जाव एवं	<b>£?</b>	२०
करयल जाव कट्टू	२१,११७	२०
गामागर जाव सण्णिवेसेसु	<b>६१ से ६३,६५,६६</b>	58
-	१४४,१४८ से १६१,	
	१६३,१६५	
घरसए जाव वर्सीह	388	११द
°चंदण जाव गंधवट्टिभूयं	XX	२
जावज्जीवाए जाव परिगगहे णवर सब्वे मेहुणे		
पच्चक्खाए जावज्जीवए	१२१	११७
णमंसित्तए वा जाव पज्जुवासित्तए	358	२
ण्हार् जाव अप्प०	ХŚ	२०
ण्हायाको जाव पायच्छित्ताओ	00	२०
तं चेव पसत्यं णेयव्वं, एवं चेव वइविणओवि		
एएहि पएहि चेव णेयव्यो	۶o	४०
तं चेव सब्वं णवरं चउरासीइ वाससहस्साइं ठि	ई पण्णसा ६३	83
तं चेव सव्वं णवरं ठिई चउट्सवाससहस्साइं	83	58
तित्वगरस्स जाव संपाविउकामस्स	२१	39
तिदंडए य जाव एगंते	<b>88</b> 0	880
तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई आराहगा चेव सेसं त	ांचेव १६७	58
तेरस सागरोवमाइं ठिई अणाराहगा सेसं तं चेव		52
दस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता परलोगस्स		
आराहगा सेसं तं चेव	8 <b>8</b> 0	37
दस सागरोवमाई टिई पष्णता सेस तं चेव	888	5
देवेसु ••••	७३	ড ই
धर्मिया जाव कप्पेमाणा	१६३	१६१
नग्गभावे जाव तमट्ठमाराहित्ता	<b>१</b> ६६	ちだみ
नमाभावे जाव मंतं	१६४	१४४
नडपेच्छा इ वा जाव मागहपेच्छा	१०२	२

°पंडियं जाव अलंभोगसमत्थं	388	१४८
पगइभट्टयाए जाव विणीययाए	388	83
पडिविरया जाव सब्वाओ	१६२	११७
परिग्गहवेरमणे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे	৬१	ठाण ११११४-१२४
परिब्वायए जाव वसहि	११८,११६	११५
पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं ठिई सेसं त	तंचेव ६४	3=
पावयणे जाव किमंग	<b>८०</b> ,८१	30
पीइमणे जाव हियए	६२	२०
बावीसं सागरोवमाइं ठिई अणाराहमा सेसं तं	चेव १४६	57
बाबीसं सागरोवमाइ ठिई आराहगा सेसं 'त	चेव <sup>/†</sup> १६२	<del>م</del> و
बावीसं सागरोवमाइं ठिई परलोगस्स अणारा	हगा	
सेस त चेव	329	37
भासासमिया जाव इणमेव	१६४	भगवती २।१
मणुस्सेसु	Ę	ওই
महिड्डिएसु जाव महासोक्खेसु	७२	পত
महिड्दिया जाव चिरट्विइया	७२	७२
मूलभोयणे इवा जाव बीयभोयणे	१३४	वृत्ति
लउया जाव णंदिरुक्खा	१०	3
लोभाओ जाव मिच्छादंसणसल्लाओ	१६३	७१
लोभे अत्थि जाव मिच्छादंसणसल्ले	હર્	হার্ম র্রে১০০-১০৫
वण्णं जाव जाणइ	890	१६६
वहमागए जाव मो	११२,११३	\$ \$ \$
वहमाणए जाव णो	१३५	१३७
सगडं वा एवं तें चेव भाषिपठवं जाव णण्णत्थ		
एक्काए गंगामट्टियाए	१२३-१३३	800-880
सगडं वा जाव संदमाणियं	800	वृत्ति, पृष्ठ १७६
सच्चेव हेट्ठिल्ला वत्तव्वया जाव णिसीयइ	X\$,\$X	२०,२१
सिज्भइ जाव मंत	१५१	800
सिजिमहिति जाव मंतं	<b>१</b> ६६	<b>\$</b> XX
सुक्रुमालपाणिपाए जाव ससिसोमाकारे	<b>6</b> R3	१४
सेसं तं चेव जाव चउसट्ठिवाससहस्साइं ठिई प	ण्णता ६२	53
सेसं तं चेव णवरं पलिओवमं वाससयसहस्समब	ञ्महियं ठिई ९५	न्
हट्टतुट्ट जाव हियए	२१,४३,४६,६३,८०	२०
हट्ठतुट्ठ जाव हियया	२०,७८	२०

१. तहेव (क, ख)।

हटुतुट्ठ जाव हिययाओ	ج ۶	२०
हयगय जाव सण्णाहियं	६२	<b>২</b> ৬
हारविराइयवच्छा जाव पभासेमाणा	७२*	४७

४२२

# रायपसेणइयं

अकंताहिं जाव अमणामाहि७६७७१०अगापियाए जाव अडवीए७७४७७४अगापियाए जाव किंचि७६५७७४अमापहिसीहिं जाव सोलसहि१४७७४अच्चणिज्जाओ जाव पञ्जुवासणिज्जाओ२४०,२७६वृत्ति, गृष्ठ २२४अच्छां जाव पडिरूवा२२०,२४,३६२१अच्छां जाव पडिरूवा१४७२१अच्छां जाव पडिरूवा१४७२१अच्छां जाव पडिरूवा१४५२१अच्छां जाव पडिरूवा१४५२१अच्छां जाव पडिरूव२३२१अच्छां जाव पडिरूव२३२१अच्छां जाव संग्रण्प१६८१अच्छां जाव संग्रण्प१६८,७६११अच्छां जाव संग्रण्पण२६१,७६६१अच्छां जाव संग्रण्पण२६१,७६६१अच्छां जाव संग्रण्पण२६१२४४अन्ग्रां ताव संग्रण्पणण२६११४४अट्ठां चा व पुन्छइ७१११४अन्गतां हाहृवद्या६५४२१अण्याताहृवद्या९६११४अण्यत्ते वा नाव लहुयत्ते७६२,७६३६२अण्णभोरोहिं जाव भाणविमाणं१२१२अण्णभोरोहिं जाव संयणभोर्गेहिं६११६१अण्णभोरोहिं वाव संयणभोर्गेहिं६२११२अप्येतीतिया गयगया जाव गायविहारचारेणं६२६२अभ्यभीतिता गयगया जाव गायविहारचारेणं६२६२अभ्यभीतिता गयगया जाव पायविहारचारेणं६२६२अभ्यभीतितिया गयगया जाव नायविहारचारेणं६२६२अभ्यभीतिता गयगया जाव नायविहारचारेणं६२६२अभ्यभीतिता गयगया जाव नायविहारचारेणं६२६२अ	अंकामया••••उवरिपुंछणीओ	038	१३०;जी० २६४
अगामियाए आव किंचि     ७६५     ७७४४       अग्मप्रहिसोहि जाव सोलसाँह     १८     ७       अच्छा जाव पाठजुवासणिज्जाओ     २४०,२७६     वृत्ति, गुण्ठ २२४       अच्छां जाव पाठिरूवा     २२,२४,३६     २१       अच्छा जाव पाठिरूवा     १४७     २१       अच्छा जाव पाठिरूवाओ     १४४     २१       अच्छा जाव पाठिरूवाओ     १८६,७९६     १       अउक्तरियए जाव समुप्पण्णं     १७६,७९६     १       अठकरिययां जाव समुप्पण्णं     २७६,७९६     १       अठकरिययां चाव संकष्पं     ७३     १       अड्डाई जाव पुड्डा     ७१६     १       अट्डाई जाव पुड्डा     ७६६     १       अर्डुरे जाव वा पुड्डा     ७६२     १       अर्ज्यायाई वा वा पुड्डा     ७६२     १       अर्ज्या सार्य याव वा वा प्रि     ५	अकंताईि जाव अमणामाहि	७६७	19¥ 0
अग्माहिसीहि जाव सोलसीह४८७अच्चपिञ्जाओ जाव पञ्जुवासणिज्जाओ२४०,२७६वृत्ति, पृष्ठ २२१अच्छं जाव पडिरूवा३२,३४,३६२१अच्छा जाव पडिरूवा१४७२१अच्छा जाव पडिरूवा१४५२१अच्छा जाव पडिरूवा१४५२१अच्छा जाव पडिरूवा१४५२१अच्छा जाव पडिरूवा१४५२१अच्छा जाव पडिरूवा१४५२१अच्छा जाव पडिरूवा१४५२१अच्छा जाव पडिरूवा१२३११अज्मतियए जाव समुप्पण्जित्था६८,७३२,७३७,७७७९,७६१,७६३१अञ्मतियां जाव संकष्पं७३६१अञ्मतियां जाव संकष्पं७३६१अञ्मतियां जाव समुप्पण्णं२५६,७३६१अङ्गतियां जाव समुप्पण्णं२५६१अङ्गतियां जाव समुप्पण्णं२६११अङ्गतियां जाव समुप्पण्२५६११अङ्गतियां जाव बङ्गणसे६७११अण्याताहवद्वणो जाव अण्णवि२६०१७अण्णत्ते वा जाव लङ्गयत्ते७६२,७६३७६२अण्णत्ते वा जाव लङ्गयत्ते७६२,७६३७६२अण्णत्ते वा जाव तङ्गयत्ते७६२७६२अण्णतत्ते वा जाव त्रयत्ते१२१२अण्यताि वा चर्वरते४६४७६४अत्तरिय जाव सञ्वतो१२१२अप्पेतिता गयगया जाव पायविहारचारेणं६२६२अप्यतितिया गयगया जाव नरिमे६२६२अप्यतितिय जाव चरिमे६२६२अप्यतितिय जाव नरिमे६२६२अप्यतितिय जाव नरिमे६२६२अप्यतिति प्र प्र६२६२ <td>अगामियाए जाव अडवीए</td> <td>૪૯/૭</td> <td><b>४</b>७७</td>	अगामियाए जाव अडवीए	૪૯/૭	<b>४</b> ७७
सञ्चपिण्जाओ जाव पञ्जुवासणिज्जाओ२४०,२७६वृत्ति, षृष्ठ २२५अच्छं जाव पडिरूवां२२,३४,३६२१अच्छां जाव पडिरूवां१४७२१अच्छा जाव पडिरूवां१४५२१अच्छा जाव पडिरूवां१४५२१अच्छो जाव पडिरूवां१४५२१अच्छो जाव पडिरूवां१४५२१अच्छो जाव पडिरूवां१४५२१अच्छो जाव पडिरूवां१२,७३५,७३७,७३६१अज्फरियए जाव समुप्पार्ज्जत्था६८६,७३६१अज्फरियरं जाव समुप्पार्ण२५६,७३६१अज्फरियरं जाव समुप्पार्ण२७६,७४६१अर्ज्फरियरं जाव समुप्पार्ण२७६,७४६१अरुक्ति जाव पविट्ठा७६१११अरुद्धं जाव वुच्छइ७१६७६४१अरुवारसएहिं जाव विहरमाणे६७५३२१अर्णतत्ते वा जाव लहुवत्ते७६२,७६३१२अर्णतत्ते वा जाव लहुवत्ते७६२,७६३१२अर्णतत्ते वा जाव लहुवत्ते७६२,७६३७६२२अर्णतत्ते वा जाव सव्यत्ते७६२७६२२अर्णतत्ते वा जाव सव्यत्ते६२१२१२अर्णतत्ते वा वा त्वत्ते१२१२१२अर्णतत्ते वा नाव सव्यतो१२१२१२अर्गतत्ति वा नाव त्वततो१२१२१२अर्गतत्तिय जाव सव्यतो१२१२१२अप्यतत्तिय गाव ता वा वारविहारचारेणं६२६२६२अर्गततिया गायगता जाव पायविहारचारेणं६२६२६२अप्यतत्तिता चारगता जाव रिये६२६२६२अर्गततिय जाव नारीरे </td <td>अगामियाए जाव किंचि</td> <td>७<b>६ १</b></td> <td>(9<b>9</b>8</td>	अगामियाए जाव किंचि	७ <b>६ १</b>	(9 <b>9</b> 8
अच्छं जाव पडिरूवां       २२,३४,३६       २१         अच्छाझे जाव पडिरूवाझं       १४७       २१         अच्छाओ जाव पडिरूवाझो       १४४       २१         अच्छो जाव पडिरूवाझो       १४४       २१         अच्छो जाव पडिरूवाझो       १४४       २१         अच्छो जाव पडिरूवो       २३       २१         अच्छो जाव पडिरूवो       २३       २१         अच्छो जाव पडिरूवो       ७६४       ६         अउफरियए जाव संमुप्पण्जित्या ६८८,७३६,७३७,७७७,७७६१,७६३       ६         अउफरिययं जाव संमुप्पण्णं       २७६,७४६       ६         अउफरिययं जाव समुप्पण्णं       २७६,७४६       ६         अउफरिययं जाव समुप्पण्णं       २७६,७४६       ६         अउफरिययं जाव समुप्पणणं       २७६,७४६       ६         अउक्ठियां जाव पुच्छाइ       ७१६       ७१६         अरुद वे जाव बहुजण्मस       ६७४       ७६४         अरुवा संहुवराजे जाव वाणविमाणं       १५       ६५६         अर्ण्यासंभसयसण्णिविट्ठं जाव जाणविमाणं       १५       ५५         अर्ण्या ता व लहुयते       ७६२,७६३       ७६२         अर्ण्या ता व सहुयते       ७६२       ७६२         अर्ण्या ता व स्राय भोगोहि       ६१२       ६२         अर्ण्या ता व सर्व तो       १२       १९         अर्ण्या ता व सर्व तो	अग्गमहिसीहि जाव सोलसहि	प्रद	9
अच्छाई जाव पढिरूवाई११७२१अच्छाओ जाव पडिरूवाओ१४५२१अच्छो जाव पडिरूवाओ१४५२१अच्छो जाव पडिरूवे२३२१अच्फरियए जाव संकप्पे७६८६अडफरियए जाव समुप्पण्जित्या६८८,७३२,७३७,७६३६अडफरियमं जाव संकप्पं७३८६अडफरियमं जाव समुप्पण्णं२७६,७४६६अडफरियमं जाव समुप्पण्णं२७६,७४६६अडफरियमं जाव समुप्पण्णं२७६,७४६६अड्राई जाव पुच्छइ७१६७१६अडाई जाव पुच्छइ७१६७१६अडाई जाव पविट्ठा७६५७६४अर्जगत्त्वं भ्रस्यसण्पिविट्ठं जाव जाणविमाणं१८६८२अर्ण्यात्ते वा जाव लहुयत्ते७६२,७६३७६२अण्णात्ते वा जाव लहुयत्ते७६२,७६३७६२अर्ण्या वा वा तोरं७६२,७६३७६२अर्ण्या वा वा तोरं७६२,७६३७६२अर्ण्या ताव वाते१२१२अत्तुरिय जाव सन्वतो१२१२अप्वासिद्विए जाव चरिमे६२१२अप्वासिद्विए जाव चरिमे६२१२	अच्चणिउजाओ जाव पञ्जुवासणिज्जा	मो २४०,२७६	वृत्ति, पृष्ठ २२४
अच्छात्रो जाव पडिरूवाझो       १४५       २१         अच्छो जाव पडिरूवे       २३       २१         अच्छो जाव पडिरूवे       २३       २१         अज्फरियए जाव संकप्पे       ७६८       ६         अज्फरिययं जाव संकप्पं       ७३८       ६         अज्फरिययं जाव संकप्पं       ७३८       ६         अज्फरिययं जाव संकप्पं       ७३८       ६         अज्फरिययं जाव संमुप्पण्णं       २७६,७४६       ६         अन्गरिययं जाव समुप्पण्णं       २७६,७४६       ६         अन्गरिययं जाव समुप्पण्णं       २७६,७४६       ६         अन्गरिय जाव समुप्पण्णं       २७६,७४६       ६         अन्गरिय जाव समुप्पण्णं       २७६,७४६       ६         अन्गरिय जाव पविट्ठा       ७१६       ७१६         अन्गरा सएहि जाव विहरमागे       ७६९४       ७६४         अग्गरा खंभसय सण्पिविट्ठ जाव जाणविमाणं       १८       ६८         अण्णत्ते वा जाव लहुयत्ते       ७६९२,७६३       ७६२         अण्णत्ते वा जाव लहुयत्ते       ७६२       ७६२         अण्णत्ते वा जाव लहुयत्ते       ७६२       ६२         अण्णत्ते वा नाव लहुयत्ते       ७६२       ७६२         अण्णत्ते वा नाव संन्यते       ६२       ६२०         अण्णत्ते वा ना संक्यते       ६२       ६२०         अप्णप	अच्छं जाव पडिरूवं	३२,३४,३६	२१
अच्छे जाव पडिरूवे       २३       २१         अच्छे जाव पडिरूवे       २३       २१         अच्फरियए जाव संकर्ष्पे       ७६८       ६         अच्फरिययं जाव समुप्पण्जित्था       ६८,७३६,७३७,७७७,७६१,७६३       ६         अच्फरिययं जाव समुप्पण्जं       ६८,७३६       ६         अच्फरिययं जाव समुप्पण्णं       ६८,७३६       ६         अच्फरिययं जाव समुप्पण्णं       १७६,७३६       ६         अन्गरिययं जाव समुप्पण्णं       २७६,७३६       ६         अन्गरिययं जाव समुप्पण्णं       २७६,७४६       ६         अन्गरिय जाव प्रविट्ठा       ७१६       १४         अन्गरिय जाव बहुजणस्स       ६७४       ७१६         अन्गरा सएहि जाव विहरमाणे       ७११       ६८         अण्गार सएहि जाव विहरमाणे       ७११       ६८         अण्गरा संपरिं जाव अण्पवि       २६०       १७         अण्गत्तं वा जाव लहुयत्ते       ७६२,७६३       ७६२         अण्णत्ते वा जाव तातुयत्ते       ७६२       ७६२         अण्णत्ते वा जाव तातुयत्ते       ७६२       ६२०         अण्णत्ते वा जाव तात्तुयत्ते       ७६२       ७६२         अण्णत्ते वा नाव तहुयत्ते       ७६२       ७६२         अण्णत्ते वा संयणभोगेहि       ६१२       १२         अप्लेगतिया गयगया जाव पार्विहारचारेणं       ६८       ६२	अच्छाइं जाव पडिरूवाइं	१४७	२१.
सर्जस्र तिय गाव संकप्पे ७६६ ६ अङम्रत्थिए जाव समुप्पछिंतत्था ६८६,७३२,७३७,७७७,७६१,७६३ ६ अङम्रत्थियं जाव समुप्पण्णं ६८६,७३६ ६ अङ्ग्रत्थियं जाव समुप्पण्णं २७६,७४६ ६ अद्रजोयणाइं २६१ २४४ अद्रुद्धे जाव पुत्त्छ्ड ७१६ ७१६ अडॉव जाव पुत्त्र्छ्ड ७१६ ७१६ अडॉव जाव पुत्त्र्छ्ड ७१६ ७१६ अडॉव जाव पद्ट्रा ७६४ ७६४ अर्च, जाव बहुग्णस्स ६७४ ओ० १४ अणगारसएहिं जाव विहरमाणे ७११ ६८६ अणगारसएहिं जाव विहरमाणे ७११ ६८६ अणगारसएहिं जाव विहरमाणे १८० ७ अणगत्ते वा जाव लहुयत्ते ७६२,७६३ ७६२ अण्णस्ते वा जाव लहुयत्ते ७६२,७६३ ७६२ अण्णस्ते वा जाव लहुयत्ते ७६२,७६३ ७६२ अण्णस्ते वा गाव लहुयत्ते ७६२,७६३ ७६२ अण्णभोगेहिं जाव सयणभोगेहिं ८१४ ७६४ अत्तुरिय जाव सव्वतो १२ १२ अप्पे	अच्छाओ जाव पडिरूवाओ	<i><b>6</b> X X</i>	२१
अङभरिषए जाव समुप्पण्जित्था ६८६,७३२,७३७,७७७,७६१,७६३ ६ अज्भरिषयं जाव समुप्पण्णं ६८६,७३६ ६ अज्भरिषयं जाव समुप्पण्णं २७६,७४६ ६ अद्रजोयणाइं २६१ २४४ अट्ठाइं जाव पुच्छइ ७१६ ७१६ अडविं जाव पविट्ठा ७६१ ७१६ अडवें जाव बहुजणस्स ६७१ अो० १४ अर्ज्यु जाव बहुजणस्स ६७१ ४ो० १४ अर्ज्यु जाव बहुजणस्स ६७१ ४ो० १४ अर्ज्यु जाव बहुजणस्स ६७१ ४ो० १४ अर्ज्यु जाव बहुजणस्स ६७१ ४ अर्ज्यु जाव बहुजणस्स ६७१ ४ अर्ण्या स्वर्ड्यु जाव जाणविमाणं १५ १७ अर्ण्या स्वर्ट्यु जाव जाणविमाणं १८ ४७ अर्ण्या से वा जाव लहुयत्ते ७६२,७६३ ७६२ अर्ण्या जाव लहुयत्ते ७६२,७६३ ७६२ अर्ण्या जाव लहुयत्ते १२ ६२ अर्ज्यु राव सन्वतो १२ १२ अर्ज्यु राव सन्वतो १२ १२ अप्ये प्रतिया गयगया जाव पायविहारचारेणं ६६८ अरे अरे रिय अप्ये सुसिद्धिए जाव चरिमे ६२ ६२	अच्छे जाव पडिरूवे	२३	२१
अज्भतिययं जाव संकष्पं७३६६अज्भतिययं जाव समुष्पण्णं२७६,७४६६अद्ठजोयणाइं२६१२४४अट्ठांच जाव पुच्छइ७१६७१६अहाँव जाव पुव्छा७६५७६५अहाँव जाव पविट्ठा७६५७६५अहते जाव बहुजणस्स६७५४ो० १४अज्यगरसएहिं जाव विहरमाणे७११६६६अण्यारसएहिं जाव विहरमाणे७११६६६अण्यारसएहिं जाव विहरमाणे७११६६६अण्यार्त्तवा जाव अण्णवि२५०१७अण्यत्ते वा जाव लहुयत्ते७६२,७६३७६२अण्णत्ते वा जाव लहुयत्ते७६२,७६३७६२अण्णत्ते वा जाव लहुयत्ते७६२७६२अण्णत्ते वा जाव लहुयत्ते७६२७६२अण्णत्ते वा जाव लहुयत्ते७६२७६२अण्णत्ते वा जाव लहुयत्ते७६२७६२अण्णते वा जाव लाव त्रारं७६२७६२अण्णभोगेहिं जाव सयणभोगेहिं६१४७६४अत्तुरिय जाव सञ्वतो१२१२अपवर्त्तिय जाव चरिमे६२६२अपवर्त्तिय जाव चरिमे६२६२	अज्फत्थिए जाव संकप्पे	७६६	3
अज्भतिय यं जाव समुप्पण्णं २७६,७४६ ६ अट्ठजोयणा इं २६१ २४४ अट्ठा इं जाव पुच्छड् ७१६ ७१६ अडविं जाव पविट्ठा ७६४ ७६४ अड्ढे जाव बहुजणस्स ६७४ औ० १४ अज्य गारसएहिं जाव विहरमाणे ७६१ ६६६ अणियाहिवडणो जाव अण्णेवि २६० ७ अणेग खंभसयसण्पिविट्ठं जाव जाणविमाणं १८ १७ अण्णत्ते वा जाव लहुयत्ते ७६२,७६३ ७६२ अण्णत्ते वा गाव लहुयत्ते ७६२,७६३ ७६२ अण्णत्ते वालहुयत्ते ७६२,७६३ ७६२ अण्णत्ते वा	अडफ्रत्थिए जाव समुप्पज्जित्या	६८५,७३२,७३७,७७७,७११,७	3 53
अट्ठजोयणाइं२६१२४४अट्ठजोयणाइं७१६७१६अट्ठांइ जाव पुत्च्छइ७१६७१६अर्डांव जाव पविट्ठा७६५७६५अर्ड् के जाव बहुजणरस६७५४१४अर्ड् के जाव बहुजणरस६७५४१०अणगारसएहिं जाव विहरमाणे७११६६६अणगारसएहिं जाव विहरमाणे९६२७अणगारसएहिं जाव विहरमाणे९६२७अणगत्ते वा जाव अण्यवि२८०१७अण्णत्ते वा जाव लहुयत्ते७६२,७६३७६२अण्णत्ते वा जाव लहुयत्ते७६२,७६३७६२अण्णत्ते वा जाव लहुयत्ते७६२७६२अण्णत्ते वा जाव स्वयणभोगेहिं६११६१अण्णत्ते वा गाव चोरं७६४७५४अप्रेगतिया गयगया जाव पायविहारचारेणं६२१२अभवसिद्धिए जाव चरिमे६२६२	अज्भत्यियं जाव संकष्पं	७३म	3
अट्ठाइ जाव पुच्छइ ७१६ ७१६ अर्डाव जाव पविट्ठा ७६५ ७६५ अड्ढे जाव बहुजणस्स ६७५ भो० १४ अणगारसएहि जाव विहरमाणे ७११ ६६६ अणियाहिवइणो जाव अण्णेवि २६० अण्गत्ते वा जाव अण्णेवि २६० अण्णत्ते वा जाव लहुयत्ते ७६२,७६३ ७६२ अण्णत्ते वा गग लहुयत्ते ७६२,७६३ ७६२ अण्णत्ते वा गग लहुयत्ते ७६२,७६३ ७६२ अण्णत्ते वा गग लहुयत्ते ७६२,७६३ ७६२ अण्णत्ते वा गा लहुयत्ते ७६२,७६३ ७६२ अण्णत्ते वा गा लहुयत्ते ७६२,७६३ ७६२ अण्णत्ते वा गा लहुयत्ते ७६२ ७६२ अण्णभोगेहि जाव सयणभोगेहिं ६११ ७६४ अतुरिय जाव सव्वतो १२ १२	अज्मत्थियं जाव समुष्पण्णं	२७६,७४६	3
अर्डीव जाव पविट्ठा ७६४ ७६४ अर्ड् जाव बहुजणस्स ६७४ ओ० १४ अणगारसएहिं जाव विहरमाणे ७११ ६६६ अणियाहिवइणो जाव अण्पेवि २६० ७ अणेगसंभसयसण्पिविट्ठं जाव जाणविमाणं १६० १७ अण्णत्ते वा जाव लहुयत्ते ७६२,७६३ ७६२ अण्णत्ते वा गाव लहुयत्ते ७६२,७६३ ७६२ अण्णत्ते वा गान लहुयत्ते ७६२ ७६२ अण्णत्ते वा गान हुयत्ते ७६२ ७६२ अण्णत्ते वा गान हुयत्ते ७६२ ७६२ अण्णत्ते वा गान हुयत्ते १२ ११ अर्प्	अट्ठजोयगाइं*****	२६१	5 <b>88</b>
अड्ढे जाव बहुजणस्स ६७५ थो० १४ अणगारसएहिं जाव विहरमाणे ७११ ६६६ अणियाहिवइणो जाव अण्णेवि २६० अणेगसंभसयसण्णिविट्ठं जाव जाणविमाणं १६ १७ अण्णत्ते वा जाव लहुयत्ते ७६२,७६३ ७६२ अण्णत्ते वा ग्गलहुयत्ते ७६२,७६३ ७६२ अण्णत्ते वा ग्गलहुयत्ते ७६२ ७६२ अण्णत्ते वा ग्गलहुयत्ते ७६२ ७६२ अण्णत्ते वा ग्गलहुयत्ते ७६२ ७६२ अण्णभोगेहिं जाव सयणभोगेहिं ६११ ९१४ अत्प्रिय जाव सव्वतो १२ १२ अप्पेगतिया गयगया जाव पायविहारचारेणं ६६६ अो० ४२ अभ्येगतिया गयगया जाव पायविहारचारेणं ६६६ अगे० ४२	अट्ठाइं जाव पुच्छइ	390	390
अणगारसएहिं जाव विहरमाणे ७११ ६६६ अणियाहिवइणो जाव अण्पेवि २६० अणेगसंभसयसण्पिविट्ठं जाव जाणविमाणं १६ १७ अण्णत्ते वा जाव लहुयत्ते ७६२,७६३ ७६२ अण्णत्ते वा गा-लहुयत्ते ७६२,७६३ ७६२ अण्णत्ते वा गा-लहुयत्ते ७६२ ७६२ अण्णभोगेहिं जाव सयणभोगेहिं ६४१ ६१ अण्णभोगेहिं जाव सयणभोगेहिं ६४१ अप्रे अन्तुरिय जाव सव्वतो १२ १२ अप्पेगतिया गयगया जाव पायविहारचारेणं ६६६ ओ० ४२ अभवसिद्धिए जाव चरिमे ६२ ६२	अर्डीव जाव पविट्ठा	હદ્ય	હદ્ય
अणियाहिवइणो जाव अण्पेवि २६० ७ अणेगसंभसयसण्पिविट्ठं जाव जागविमाणं १६ १७ अण्णत्ते वा जाव लहुयत्ते ७६२,७६३ ७६२ अण्णत्ते वा ग्गलहुयत्ते ७६२,७६३ ७६२ अण्णभोगेहिं जाव सयणभोगेहिं ६११ ९१२ अण्णभोगेहिं जाव सयणभोगेहिं ६११ ७६४ अण्णया जाव चोरं ७६४ ७१४ अतुरिय जाव सब्बतो १२ १२ अप्पेगतिया गयगया जाव पायविहारचारेणं ६६६ अो० ४२ अभवसिद्धिए जाव चरिमे ६२ ६२	अड्ढे जाव बहुजणस्स	<b>६७</b> ४	ओ० १४
अणेगसंभसयसण्पिविट्ठं जाव जाणविमाणं १८ १७ अण्णत्ते वा जाव लहुयत्ते ७६२,७६३ ७६२ अण्णत्ते वा गान् लहुयत्ते ७६२,७६३ ७६२ अण्णभोगेहिं जाव सयणभोगेहिं ८११ ९१ अण्णया जाव सोरं ७६४ ७१४ अतुरिय जाव सब्बतो १२ १२ अप्पेगतिया गयगया जाव पायविहारचारेणं ६६६ अो० ४२ अभवसिद्धिए जाव चरिमे ६२ ६२	अणगारसएहि जाव विहरमाणे	990	<b>६</b> स ६
अण्णत्ते वा जाव लहुयत्ते ७६२,७६३ ७६२ अण्णत्ते वा गग्लहुयत्ते ७६२ ७६२ अण्णभोगेहिं जाव सयणभोगेहिं दृ११ दृ१० अण्णया जाव स्वोरं ७६४ ७६४ अतुरिय जाव सब्वतो १२ १२ अप्पेगतिया गयगया जाव पायविहारचारेणं ६६६ अो० ४२ अभवसिद्धिए जाव चरिमे ६२ ६२	अणियाहिवइणो जाव अण्पेवि	२६०	9
अण्णत्ते वालहुयत्ते ७६२ ७६२ अण्णभोगेहिं जाव सयणभोगेहिं ५११ ६१ अण्णया जाव चोरं ७६४ ७१४ अतुरिय जाव सब्बतो १२ १२ अप्पेगतिया गयगया जाव पायविहारचारेणं ६६६ अो० ४२ अभवसिद्धिए जाव चरिमे ६२ ६२	अणेगसंभसयसण्णिविट्ठं जाव जाणवि	माणं १५	१७
अण्णभोगेहिं जाव सयणभोगेहिं ८११ ८१० अण्णया जाव चोरं ७६४ ७१४ अतुरिय जाव सव्वतो १२ १२ अप्पेगतिया गयगया जाव पायविहारचारेणं ६८८ १२ अभवसिद्धिए जाव चरिमे ६२ ६२	अण्णत्ते वा जाव लहुयत्ते	७६२,७६३	७६२
अण्णया जाव चोरं ७६४ ७१४ अनुरिय जाव सव्वतो १२ १२ अप्पेगतिया गयगया जाव पायविहारचारेणं ६६६ अो० ४२ अभवसिद्धिए जाव चरिमे ६२ ६२	अण्णत्ते वालहुयत्ते	७६२	७६२
अनुरिय जाव सव्वतो १२ <b>१</b> २ अप्पेगतिया गयगया जाव पायविहारचारेणं ६५५ अो० ४२ अभवसिद्धिए जाव चरिमे ६२ ६२	अण्णभोगेहि जाव सयणभोगेहि	582	<del>न</del> १०
अप्पेगतिया गयगया जाव पायविहारचारेणं ६८८ को० ४२ अभवसिद्धिए जाव चरिमे ६२ ६२ ६२	अण्णया जाव चोरं	७६४	७४४
अभवसिद्धिए जाव चरिमे ६२ ६२	अत्रिय जाव सब्वतो	१२	<b>१</b> २
अभवसिद्धिए जाव चरिमे ६२ ६२	2	वारेणं ६८५	ओ० ४२
			<b>६</b> २
	अभिगमेणं जाव वंदइ	500	अगे० ६१

१. वृत्तौ विशेवणानि किञ्चिद्न्यूनानि दृश्यन्ते ।

अभिगयजीवाजीवें ····विहरइ	ઉદ્ય દ	६ <b>६</b> ८
अभिगयजीवा सब्वो वण्णओ जाव अप्पाणं	७१२	<i>६</i> ह.म
अयभारगं वा जाव परिवहित्तए	७६०,७६१	७६०
असणं जाव अलंकारं	688	७९४
असणं जाव साइमं	96X	७=७
असोयवरपायवे पुढविसिलापट्टए वत्तव्वया		
उववाइयगमेण नेया	३,४	अगो० ८,१३
अहापडिरूवं जाव विहरइ	७१३	७११
आइण्णं तं चेव जाव सद्दावेत्ता	ওও४	৬৩४
आपूरेमाणाओ जाव चिट्ठंति	85 X	80
आपूरेमाणा जाव चिट्ठंति	१३२	80
आराम वा जाव पर्व	१२	१२
आरामगयं वा तं चेव सब्वं भाणियव्वं		
आइल्लएणं गमएणं जाव अप्पाणं	390	380
अलिघरगेसु जाव आयंसघरगेसु	१८३	१=२
अासत्तोसत्तंकयग्गहगहियघूवं	२९६	<b>83</b> 5
आसत्तोसत्त जाव धूवं	<b>¥3</b> 5	835
अस्यंति जाव विहरति	<b>१ म</b> ७	१८४
इट्ठं जाव फुसंसु	હદદ્	अरे० ११७
इट्ठतराए चेव जाव गंधेण	₹o	२४
इट्टतराए चेव जाव फासेण	<b>३</b> १	२४
इट्ठतराए चेव जाव वण्णे	RA	<b>૨</b> ×
इट्ठतराए चेव जान वण्णेणं	२६ से २९	2X
इट्ठे··· किमंग	<b>હ</b> પ્ર ર	७४०
इरियासमिए जाव सुहुयहुयासणे	<del>4</del> 83	को० २७
इहमागए जाव विहरइ	<b>६</b> म १	६ <b>द</b> ७
ईसर-तलवर जाव सत्थवाह <sup>°</sup>	608	<b>६</b> द द
उक्किट्ठाए जाव जेणेव	२७६	१०
उक्किट्ठाए जाव तिरियमसंखिज्जाणं	<b>%</b> Ę	१०
उक्किट्ठाए जाव वीईवयमाणा	85	१०
उच्चत्तेणं वण्णको	२१०	20E
उच्छुब्भइ जाव अरमणिज्जे	७६४	95¥
उप्पलाइ जाव सहस्सपत्ताई	२००	28
उप्पायपव्वएसुः ज्युक्लदोलएसु	१५१	१८०
उम्मुक्कबालभावं जाव वियालचारि	580	307
उषट्ठवेह जाव पच्चध्पिणह	<i>६</i> <b>८१,७१४</b>	६ द <b>२</b>

उबट्ठवेह जाव सच्छत्तं उबट्ठवेंति	937.52	5 - 4 5 - 5
उबट्टबेहि जाव पच्चप्पिणहि	६९०,६९१ ७२४	<b>६<b>५१</b>,६६२ ७२४</b>
उपट्ठपाह जाय पर्यसम्प्रतह जवट्ठाणसालाए जाव विहरामि	७२७ ७ <b>४</b> ६	250 X 101
उदवायसभाए जाव उववण्णे	७ <b>२.</b> ५ ७८६	४४७ २६८६ - की
उब्दायसमाए जाप उपपण्ण उबस्सयगयंग्ण	92 GC G	জী০ ২।২২৪
उपरस्तपाज उवागच्छइ तं चेव	३१०	390 305
उवागण्छर त पप उवागण्छति तहेव जेणेव	२७६	
उवागच्छता पहर जनन उवागच्छता	२०४	२७६ २ <b>९४</b>
उवागाच्छराः पूर्ण एएण वि जाव लभइ	હર્શ્	
	७२० ७७१	<b>3</b> 50
एयंतं जाव तं तं चन्नन्तं त्यव तिगा	२८२ ६द३	9 <i>00</i>
एयमट्ठं जाव हियए न्यं जन्मरा प्रियावे जवाने माणण्णे		560
एवं अब्भूए सिंगारे उराले मणुण्णे	७५	ଓସ
एवं आहार-नीहार-उस्सास-नीसास-इड्ढि-महज्जुइ	७७२	
अप्यतराए <sup>†</sup> चेव		<b>500</b>
एवं जाव संक्षेज्जहा : : :	৬হুখ ৬৫২	७६४
एवं तंबागरं रुप्पागरं सुवण्णागरं रयणागरं वइरागरं	<i>४७७</i> ४४७ ८४४	<i>প্</i> তান্ত মন্দ্র
एवं पंतीओ वीही मिहुणाई —	885-888 885-888	<b>8x š</b>
एस जाव नो	७६४	७४४
एस सण्णा जाव एस समोसरणे	3¥0	৬४৯
एस सण्णा जाव समोसरणे	६७७,०४७	७४८
एस सण्णा जाव समोसरणे	६७७	şee
एस सवणातयाणंतरं	Fele	5 <b>0</b> 0
ओरालेचउदसपुब्वी	<b>६ द ६</b>	मो० ५२; भ० १।ह
ओहिनाणं भवपच्चइयं खमोवसमियं	७४३	नंदी ७
कंखंति जाव अभिलसंति	હટ્રર	७१३
कंते जाव पासणयाए	७४१,७४२	७४०
कंते जाव मणामे	ওওর	ঙ <b>ল্ল</b> ০
कयग्गहगहिय जाव धूवं	२८४	835
कयग्गहगहिय जाव पुंजोवयारकलियं	२९३	१२
कयबलिकम्मा जाव पायच्छित्ता	હદ્વર	६९२
कयबलिकम्मा जाव लंकिया	502	६९२
कयबलिकम्मा जाव हव्वमागच्छेइँ	७६४	<b>\$</b> 87
कयबलिकम्मे जाव सरीरे जेणेव चाउग्धंटे जाव		
दुरुहित्ता सकोरेंटमहयाभडचडगरेण तं चेव		

१. अंतराए (क,ख,ग**,घ,च,छ)** ।

जाव पज्जुवासइ । धम्मकहाए जाव तए णं	७१६,७१७	₹ <i>₹</i> <b>२</b> - <b>६४</b>
करयल जाव कट्टु	७२३	१०
करयल जाव वद्घावेति	580	१२
करयल जाव वढावेत्ता	७०८	१२
करयलपरिमाहियं जाव एवं	७०७	<b>٤5</b>
करयलपरिग्गहियं जाव कट्टु	६ द ३	१०
करयलपरिग्गहियं जाव पच्चेष्पिणति	४६	१२
करयलपरिग्गहियं जाव पडिसुपेइ	१५	१०
करयलपरिग्गहियं जाव वद्धावेत्ता	७२,६८६	१२
करेमिः •••णो	७६४	७६४
कलकलरवेणंःःएगदिसाए जहा उववाइए जाव		
अप्पेगतिया	$\xi \subset \Box$	वृत्ति, पृष्ठ २६६
कलसाणं जाव अट्ठसहस्सेणं	२५०	२७६
कल्लं जाव तेयसा	ឲ្យក្រ	<i>ତାତା ତା</i>
कालागरुपवर जाव चिट्ठंति	२३६	१३२
किण्हचामरज्फए जाव सुक्किल्लचामरज्फए	२१	वृत्ति, पृष्ठ ६०
किण्होभासा	१७०	ओ० ४
किण्होभासे जाव पडिरूवे	७०३	ओ० ४
कुसुमियाओ सव्व रयणामईओ	<b>5</b> .87	ओ ० ५
कोडुंबियपुरिसा जाव खिप्पामेव	68X	<b>६</b> ब २
कोरव्वा जाव इब्शा	६ <b>८ ८</b>	वृत्ति, पृष्ठ २⊏४
कोहं जाव मिच्छादंसणसल्लं	७६६	ओ० ११७
खुड्डागमहिंदज्फए तं चेव	<i>38</i> 8	३४२
गिज्जइ जाव णो रमिज्जइ	७६३	७८ ३
गिण्हित्ता तहेव जेणेव	२७६	<b>२७६</b>
गोसीसचंदणेणं••••पुष्कारुहणं आसत्तोसत्त••••धूवं	३१२	835
चरमाणेसमोसढे जाव विहरइ	७१३	७१३
च्चताए जाव तिरियमसंखेज्जाणं जाव वीतिवयमा	णा २७६	१०
चालेइ जाव णो गंधव्वो	ક છછ	900
चित्तमाणंदिए जाव परमसोमणस्सिए	६३	5
छिज्जइ जाव तया णं	<b>ଜ</b> ⊄⊀	ওন্ধ
छिड्वेइ वा जाव अणुपविट्ठा	હપ્રદ્	<b>હ</b> પ્રદ્
छिड्डेइ वा जाव निग्गए	ওই४	७४४
छिहुेइ वा जाव राई	७१४ से ७१६	ওখুষ
छिट्ठेइ वा… जेणं	৩২৩	৬২৬
जणसण्णिवाए इ वा जाव परिसा पज्जुवासइ	<b>६</b> म् ७	ओ० ४२

जराजज्जरियदेहे जाव परिकिलंते	ওহ্০	७६०
जहा मणोगुलिया जाव णागदंतया	२३६	<b>२३</b> ४
जाइमंडवएसु जाव मालुयामंडवएसु	१८५	१८४
जाणविमाणं जाव दाहिणिल्लेण	४८	ያደ
जाणह जाव उवदंसित्तए	<del>ς</del> χ	६३
जिणपडिमा तं चेव	३१७-३२०	३०६-३० <b>६</b>
जीवो तं चेव	૭xx,७x <b>દ</b> ,७७१,७७२	७४३
जुण्णे जाव किलंते	७६०,७६१	७६०
जोयणाई जाव अहाबायरे	१ू	şo
जोयणाई जाव दोच्चं	૨૭૬	१०
णाइअणिट्ठाहि जाव णाइअमणामाहि	ଓଟ୍ଓ	(9X0
णाइ जाव परिजणं	507	म०२
णाइ जाव परिजणेण	502	= 0 <b>२</b>
णिच्चं कुसुमियाओं ••••	5.RX	ओ० १२
णोवलिप्पिहितिमित्त	ፍየየ	ओ० १५०
ण्हाए जाव उप्पि	७१०	৬৩४
ण्हाए जाव स <b>रीरे</b> सकोरेंट <sup></sup> महया	900	<b>६</b> १२
ण्हाएणं जाव सव्वालंकारभूसिएणं	હપ્ર	७४१
ण्हायस्स जाव पायच्छित्तस्स	<b>\$</b> 3e	६१२
तउषभंडे जाव मणामे	<b>৬৩४</b>	৬৬४
तउयभंडे जाव सुबहुं	હાહપ્ર	४७७४
तज्जीवो तं चेव	७४८,७६२	७४२
तत्युप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं	२७६	039
तरुणे जाव सिष्पावगए	૭૪૦,૦૪૯	83
तहेव केवलनाण सब्वं भाणियव्वं	9 <b>8</b> 8	नंदी २६
तिक्खुत्तो जाव वंदित्ता	१२	१०
तिट्ठाणकरणमुद्धंपगीयाणं	१७३	હદ
तेणेव तहेव जेणेव	२७६	२७६
तेल्लसमुग्गाणं जाव अंजणसमुग्गाणं	२४८,२७६	१६१
तारणाण सया छत्ताइछत्ता य णेयव्वा	१७६-१७६	२०-२३
दक्खा ज।व उवएसलंद्धा	6960	હદ્દ્
दप्पणा जाव पडिरूवा	२१	वृत्ति, पृष्ठ १९
दलयइ जाव कूडागारसालं	<u>७</u> द्द	৩ন৩
दाहिणिल्जे दारे तहेव अभिसेयसभासरिसं		
पुरस्थिमिल्ला नंदा पुक्खरिणी जेणेव हरए		
उवागच्छइ २ ता तोरणे य तिसोवाणे य		

बालरूवए य तहेव । ३४७-६४३ २६४-३४० दाहिणिल्ले दारे पञ्चरियमिल्ला खंभपंती उत्तरिल्ले दारे तं चेव पुरस्थिमिल्ले दारे तं चेव ३३४-३३७ २६६-२६६ दिव्वेहिं जाव अज्भोववण्णे ७४३ ७४३ दुपय जाव सिरोसिवाणं ७०३ ७४३ दुपय जाव सिरोसिवाणं ७०३ ७०३ दुहाफालिए वा जाव संखेज्जहा ७६४ ७६४ दुहाफालियंसि वाजोति ७६४ ७६४ दुहाफालियंसि वाजोति ७६४ ७६४ दुहाफालियंसि वाजोति ७६४ ७६४ देवसयणिज्जे तं चेव ३४३ वृत्ति, प्रष्ठ २३४ देवा जाव अव्भणुण्णायमेयं ११ १ देविंड्ढ जाव दिव्वं ४६ ९६७ देविंड्ढ जाव दिव्वं ४६ ४६ देविंड्ढ जाव दिव्वं १६७ ६६७ देवे जाव पच्चपिणंति ६४४ १२ धम्मिए जाव विंहराहि ७४२ ७४२ धम्मिए जाव विंहराहि ७४२ ६७१ दोम्मया जाव विंत्त ७४२ ६७१ नमंसइ जाव पज्जुवासेइ ७१६ ७१६	भंजियाओ वालरूवए य तहेव, जेणेव अभिसेयसभा तेणेव उवागच्छइ २ ता तहेव सीहासणे च मणि- पेढियं च सेसं तहेव आययणसरिसं जाव पुरस्थि- मिल्झा नंदा पुक्खरिणी जेणेव अलंकारियसभा तेणेव उवागच्छइ २ ता जहा अभिसेयसभा तहेव सब्वं जेणेव ववसायसभा तेणेव उवागच्छइ २ ता तहेव लोमहत्थ्यं परामुसइ पोत्थ्यरयणे लोमहत्थ- एणं पमज्जइ २ ता दिब्वाए दगधाराए अग्गेहि वरेहि य गंधेहि मल्लेहि य अच्चेइ २ ता मणि- पेढियं सीहासणे च सेसं तं चेव, पुरस्थिमिल्ला नंदा पुक्खरिणी जेणेव हरए तेणेव उवागच्छइ २ ता तोरणे य तिसोवाणं य सालिभंजियाओ थ		
दाहिणिल्ले दारे पच्चरियमिल्ला खंभपंती उत्तरिल्ले दारे तं चेव पुरस्थिमिल्ले दारे तं चेव ३२४-३३७ २६६-२६६ दिख्वेहि जाव अज्मोववण्णे ७४३ ७४३ दुप्य जाव सिरीसिवाणं ७०३ ७०३ दुहाफालिए वा जाव संखेज्जहा ७६४ ७६४ दुहाफालिए वा जाव संखेज्जहा ७६४ ७६४ दुहाफालियंसि वा***जोति ७६४ ७६४ दुहाफालियंसि वा***जोति ७६४ ७६४ देवसयणिज्जे तं चेव ३४३ वृत्ति, पृष्ठ २३४ देवसयणिज्जे तं चेव ३४३ वृत्ति, पृष्ठ २३४ देवा जाव अब्भणुण्णायमेयं ११ १ देविड्ढि जाव दिब्वं ४६ ४६ देविर्ड्ढ जाव दिब्वं १६ ४६ देविर्ड्ढ जाव दिब्वं १६ १६ देविर्ड्ढी जाव देवाणुभागे ६६७ ६६७ देवे जाव पच्चपिपणंति ६४४४ १२ धम्मिए जाव विहराहि ७४२ ७४२ धम्मिया जाव वित्ति ७४२ ६७१ वर्ममया जाव वित्ति ७४२ ६७१		३४७-६४३	२१४-३४०
तं चेव ३३४-३३७ २१६-२१६ दिब्बेहिं जाव अज्भोववण्णे ७४३ ७४३ दुपय जाव सिरीसिवाणं ७०३ ७०३ दुहाफालिए वा जाव संक्षेज्जहा ७६४ ७६४ दुहाफालियंसि वा***जोति ७६४ ७६४ दुहाफालियंसि वा***जोति ७६४ ७६४ देवसयणिज्जे तं चेव ३४३ वृत्ति, पृष्ठ २३४ देवसयणिज्जे तं चेव ३४३ वृत्ति, पृष्ठ २३४ देवा जाव अब्भणुण्णायमेयं ११ ११ देविद्हिंढ जाव दिव्वं ४६ ११ देविद्हिंढ जाव दिव्वं ४६ ४६ देविङ्ढी जाव देवाणुभागे ६६७ ६६७ देवे जाव पच्चपिपांति ६४४ १२ धम्मरिथकायं जाव णो ७७१ ७७१ धम्मरिथकायं जाव णो ७७१ ७७१ धम्मया जाव वित्ति ७४२ ६७१ नमंसइ जाव पञ्जुवासेइ ७१६ ७१६			
विक्वेहिं जाव अज्भोववण्णे     ७४३     ७४३       दुप् जाव सिरोसिवाणं     ७०३     ७०३       दुहाफालिए वा जाव संखेज्जहा     ७६४     ७६४       दुहाफालियंसि वाजोति     ७६४     ७६४       दुहाफालियंसि वाजोति     ७६४     ७६४       दुहाफालियंसि वाजोति     ७६४     ७६४       देवसयणिज्जे तं चेव     ३४३     वृत्ति, पृष्ठ २३४       देवा जाव अव्भणुण्णायमेयं     ११     ११       देविंड्ढी जाव देवाणुभागे     ६६७     ६६७       देविंड्ढी जाव देवाणुभागे     ६६७     ६६७       देवे जाव पच्चप्पिणंति     ६४४     १२       धम्मरिथकायं जाव णो     ७७१     ७७१       धम्मए जाव विंहराहि     ७४२     ७४२       धर्ममए जाव विंहराहि     ७१२     ६९१       नमंसइ जाव पञ्जुवासेइ     ७१६     ७१६       नमंसामि जाव पज्जुवासामि     ४८     ६			
दुपय जाव सिरीसिवाणं७०३७०३दुहाफालिए वा जाव संखेज्जहा७६४७६४दुहाफालियंसि वाजोति७६४७६४दुहाफालियंसि वाजोति७६४७६४देवसयणिज्जे तं चेव३४३वृत्ति, पृष्ठ २३४देवसयणिज्जे तं चेव३४३वृत्ति, पृष्ठ २३४देवसयणिज्जे तं चेव१४३११देवसयणिज्जे तं चेव१९११देवसयणिज्जे तं चेव१९११देवा जाव अव्भणुण्णायमेयं१९११देविहिंढ जाव दिव्वं४६१६देविहिंढ जाव दिव्वं१६१६देविहढी जाव देवाणुभागे६६७६६७देवे जाव पच्चपिर्णति६४४१२धम्मरिथनायं जाव णो७७१७७१धाम्मए जाव विहराहि७४२७४२धाम्मया जाव वित्ति७१६७१६नमंसइ जाव पञ्जुवासेइ७१६७१६नमंसामि जाव पज्जुवासामि४५६	तं चेव	२२४-३३७	335-735
दुहाफालिए वा जाव संक्षेज्जहा ७६४ ७६४ दुहाफालियंसि वार्ग्गजोति ७६४ ७६४ देवसयणिज्जे तं चेव ३४३ वृत्ति, पृष्ठ २३४ देवा जाव अब्भणुण्णायमेयं ११ ११ देविहिंढ जाव दिव्वं ४६ ११ देविहिंढ जाव दिव्वं १६६ ११ देविहिंढ जाव दिव्वं १६६ ११ देविहरढी जाव देवाणुभागे ६६७ ६६७ देवे जाव पच्चप्पिणति ६४४ १२ धम्मरिथकायं जाव णो ७७१ ७७१ धम्मिए जाव विहराहि ७४२ ७४२ धम्मिया जाव वित्ति ७४२ ६७१ नमंसइ जाव पज्जुवासेइ ७१६ ७१६	दिब्वेहि जाव अज्मोववण्णे	૭૪૨	ĘXU
जुहा सासिप सि साम्म से स्वा     ७६४     ७६४       दुहा फालियंसि वाम्म जोति     ७६४     ७६४       देवसयणिज्जे तं चेव     ३४३     वृत्ति, पृष्ठ २३४       देवा जाव अब्भणुण्णायमेयं     ११     ११       देविड्ढि जाव देवव्वं     १६     ११       देविड्ढि जाव दिव्वं     १६     १६       देविड्ढी जाव देवाणुभागे     ६६७     ६६७       देवि जाव पच्चपिपगंति     ६४४     १२       देवे जाव पच्चपिपगंति     ६४४     १२       धम्मदिथकायं जाव णो     ७७१     ७७१       धम्मपि जाव विहराहि     ७४२     ७४२       धर्ममया जाव वित्ति     ७४२     ६१       नमंसइ जाव ५०जुवासेइ     ७१६     ७१६       नमंसामि जाव पज्जुवासामि     ४५     ६			500 F
देवसयणिज्जे तं चेव३४३वृत्ति, पृष्ठ २३४देवा जाव अब्भणुण्णायमेयं११११देविड्ढि जाव दिव्वं१९११देविड्ढी जाव देवाणुभागे६६७६६७देविड्ढी जाव देवाणुभागे६६७६६७देवे जाव पच्चप्पिणंति६४४१२देवे जाव पच्चप्पिणंति६४४१२धम्मतिथकायं जाव णो७७१७७१धम्मति जाव विहराहि७४२७४२धर्ममया जाव वित्ति७४२६७१नमंसइ जाव पञ्जुवासेइ७१६७१६नमंसामि जाय पञ्जुवासामि४५६			પ્રફ <b>પ્ર</b>
देवा जाव अब्भणुण्णायमेयं११देवी ड्ढ जाव दिव्वं४६देवि ड्ढी जाव देवाणुभागे६६७देवि ड्ढी जाव देवाणुभागे६६७देवे जाव पच्चपिपगंति६४४देवे जाव पच्चपिपगंति६४४धम्मरिथकायं जाव णो७७१धम्मरिथकायं जाव विह राहि७४२धम्मिया जाव वित्ति७४२ए मंसइ जाव पञ्जुवासेइ७१६नमंसा जाव पज्जुवासामि४५			
देविड्ढि जाव दिव्वं     १६     १६       देविड्ढी जाव देवाणुभागे     ६६७     ६६७       देविड्ढी जाव देवाणुभागे     ६४४     १२       देवे जाव पच्चपिणंति     ६४४     १२       धम्मरिथकायं जाव णो     ७७१     ७७१       धम्मरिथकायं जाव णो     ७७१     ७७१       धर्ममरिथकायं जाव गो     ७४२     ७४२       धर्ममरि जाव विहराहि     ७४२     ५४२       धर्ममया जाव वित्ति     ७४२     ६७१       नमंसइ जाव ५०जुवासेइ     ७१६     ७१६       नमंसामि जाव पण्जुवासामि     ४५     ६			
देबिड्ढी जाव देवाणुभागे       ६६७       ६६७         देवे जाव पच्चप्पिगंति       ६४४       १२         देवे जाव पच्चप्पिगंति       ६४४       १२         धम्मतिथकायं जाव णो       ७७१       ७७१         धम्मति       ७४२       ७४२         धम्मिया जाव वित्ति       ७४२       ६७१         नमंसइ जाव ५०जुवासेइ       ७१६       ७१६         नमंसामि जाव पच्जुवासामि       ४५       ६			
देवे जाव पच्चप्पिणंति     ६४४     १२       धम्मस्थिकायं जाव णो     ७७१     ७७१       धम्मए जाव विहराहि     ७४२     ७४२       धम्मिया जाव वित्ति     ७४२     ६४१       नमंसइ जाव ५७जुवासेइ     ७१६     ७१६       नमंसामि जाव पण्जुवासामि     ४५     ६	देविडि्ढ जाव दिव्वं		
धम्मरिथकायं जाव णो७७१७७१धम्मिए जाव विहराहि७४२७४२धम्मिया जाव वित्ति७४२६७१नर्मसइ जाव १०जुवासेइ७१६७१६नर्मसाम जाव पज्जुवासामि४८६९१			
धम्मिए जाव विहराहि ७१२ ७१२ धम्मिया जाव वित्ति ७१२ ६७१ नमंसइ जाव १ण्जुवासेइ ७१९ ७१९ नमंसामि जाव १ण्जुवासामि ४५ ६			
धम्मिया जाव विति ७४२ ६७१ नर्मसइ जाव १ज्जुवासेइ ७१६ ७१६ नर्मसामि जाव पज्जुवासामि ४५ ६		-	
नमंसइ जाव पञ्जुवासेइ ७१६ ७१६ ७१६ नमंसामि जाव पञ्जुवासामि ४५ ६	धम्मिए जाव विहराहि	७४२	
नमंसामि जाव पज्जुवासामि १५ ६		હપ્રર	
नमंसामि जाव पज्जुवासामि १४ ६	नमंसइ जाव ५७जुवासेइ		૭૧૯
नमंसिस्संति जाव पज्जुवाससिस्संति ७०४ ६	नमंसामि जाव पज्जुवासामि		3
-	नमसिस्संति जाव पज्जुवाससिस्संति	७०४	3
नागदंता तं चेव जाव गणदंतसमाणा १३२ १३२	नागदंता तं चेव जाव गणदंतसमाणा	१३२	१३२
नानामणि जाव पीवरं ७० ६९	नानामणि जाव पीवरं	60	ĘĒ
निसिरति अहाबायरे अहासुहमे दोच्चंपि	निसिरति अहाबायरे अहासुहमे दोच्चंपि		
वेउव्वियसमुग्धाएणं आव बहुसम ६५ १०	वेउव्वियसमुग्घाएणं आव बहुसम <sup>°</sup>		
पद्रण्पा तहेव ७६० ७४३	पद्ण्णा तहेव	७६०	१४७

पडमलयाओ जाव सामलयाओ	6×X	अगे० ११
पउमलयापविर्भात्त जाव समलयापविर्भात्त	१०१	ओ ०११
पउमे इ वा जाव सयसहस्सपत्ते इ वा	<b>⊏११</b>	ओ० १५०
पएसी तं चेव	७६३	৩ৼ३
पएसी ! तहेव	७४७	७४३
पच्चक्खाए जाव परिग्गहे	હદદ્	837
पच्चनखामि जाव परिग्गहं	હહદ્	६९३
पच्चत्थिमिल्ले दारे तं चेव, उत्तरिल्ले दारे		
तं चेव, पुरस्थिमिल्ले दारे तं चेव, दाहिणे		
दारे तं चेव	३०१ से ३०४	२८६
पञ्जुवासंति जाव पवियरित्तए	<b>७</b> ई ७	७३२
पज्जुवासंति जाव बूया	७३२	७३२
पडिरूवा जाव पतीतो वीहीतो मिहुणाणि		
लयाओ	737-838	685-685
पण्णत्ताओ	२३३	१७४
पतणतणार्थति जाव जोयणपरिमंडलं	१२	<b>१</b> २
पत्तं वा तहेव	१२	E
पत्तट्ठे जाव उवएसलद्धे	હદ્ય	હદદ્
पाडिहारिएणं जाव संथारएणं	589	હશ્ર
पावकम्मं जाव उववज्जिहिसि	७४०	७४०
पासाईयाओ	१३६	२१
पासाईयाओ जाव चिट्ठति	१३३	জী০ ২।২০২
पासादीए जाव पडिरूवे	६६८,६७०	२१
पासादीया जाव पडिरूवा	38	२१
पासायवरगए जाव विहरंतो	6698	19198
पासायवरगए जाव विहरमाणे	<b>8</b> 690	<b>80</b> 0
पिहावेमि जाव पच्चइएहि	હથદ્	৫র্থ
पीढफलग जाव उवनिमंतिज्जाह	७०६	608
पुण्णोवचयं जाव उववज्जिहिसि	હપ્રર	७४२
पुष्कचंगेरीणं जाव लोमहत्थचंगेरीणं	२५८,२७६	१५६
ु पुष्फपडलगाइं जाव लोमहत्थपडलगाइं	820	१४६
पुप्कपडलगाणं जाव लोमहत्थपडलगाणं	२५९,२७६	१४६
पुष्कारुहणंआसत्तोसत्तं जाव धूवं	३००,३०४,३४४	835
पुरिसेहि जाव उवक्खडावेत्ता	955	<u>9</u> 79
पेच्छाघरमंडवे एवं थूभे जिणपडिमाओ		

### पेच्छाघरमंडवे एवं थूमे जिणपडिमाओ चेइयरुक्खा महिंदज्भया नंदापुक्खरिणी

#### ४२५

तं चेव जाब धूवं दलइ २ त्ता	३३ष-३५०	वृत्ति, पृष्ठ २६४; <b>सू०</b> ३००, २९६, २९७,२९६, २९९, ३०४, ३०६,३०६, ३०६,३०६, ३१०, ३१ <b>१,</b> ३ <b>१</b> २
पोसहोववासस्स जाव विहरिस्सामि	ଡ଼ୣ୴ଡ଼	७५६
फरिस जाव विहरइ	ও <b>१०</b>	<b>६८५</b>
फरिस जाव विहरति	608	<b>६</b> म ४
बहुहि य जाव देवेहि	<b>\$3</b> 5	છ
बाले जाव मंदविण्णाणे	૭૪૬,૭૪૬	७४=
भंते जाव नो	७६२	७४४
मंते जाव विहरामि	७६२	७४४
भंते ••••वणसंडे	७६२	७६१
भूमिभागा उल्लोया	२१६	<b>२१३</b>
मंगलगा सज्भया जाव छत्तातिछत्ता	<b>१</b> ६६ <b>,१</b> ६७,१६ द	२१,२२,२३
मणपज्जवणाणे	688	नंदी २३
मणसंकष्पं जाव कियायमाणं	७६४	७६४
मणसंकप्पे जाव भिर्यायसि	હદ્દ્ય	७६४
मणिपेढियं चदिव्वाए	Хой	२१४
महच्चपरिसाए जाव धम्मं	300	६९३
महत्थं जाव उवणेइ	200	000
महत्य जाव गेण्हइ	90 <b>4</b>	६ म १
महत्थं जाव पडिच्छइ	300	६ <b>५४</b>
महत्थं जाव पाहुडं ६८०,६ <b>८१,</b> ६८	३,६६४,६९९,७००	<b>६्द</b> 0
महत्वं जाव विसज्जिए । तं चेव		
जाव समोसरह	902	000
महयाहिमवंत जाव विहरइ	इ७१	अरे० १४
महाकम्मतराए चेव तं चेव	<i>৬७२</i>	<b>२</b> ७७
महाकिरिय आव हुंता	500	500
महावीरं जाव नमंसित्ता	৬४	3
महिंदज्भएतं चेव	386	<b>ই</b> ০২
महिडि्ढिया जाव पलिओवमद्वितीया	१८६	ओ० ४७
महिड्ढीए जाव महाणुभागे	÷ <b>€ €</b>	द् ६ ६
माहणं वा जाव पञ्जुवासेइ	380	390
मित्त जाव परिजणस्स	503	۲۵۶ <del>۲</del> ۵۶
मुच्छिए जाव अज्मोववण्णे	હપ્રર	ક્રપ્રથ

रज्ज च जाव अतेउर	930	030
रट्ठं जाव अंतेउर	930	030
रयणाणं जाव रिट्ठाणं	१२	٤٥
रयणीए जाव तेयसा	<b>20</b> 0	୰୰୰
रयणेहि जाव रिट्ठेहि	१६४	१०
रायंगणं वा जाव सव्वतो	१२	१२
रायकज्जाणि य जाव रायववहाराणि	६९८	६८०
वइरामया सुवण्णरुप्पामया फलगा नाणामणिमया	860	जी० ३।२६४
वंदइ जाव एवं	પ્રહાર	६२
वंदणवत्तियाए जाव महया	550	को० ४२; राग० ६⊏⊏
वणसंडे इ वा	७६६	१ न्नर
वणसंडे इ वा जाव खलवाडे	ଡ଼ୣୣ୴ଡ଼	७५१
वण्णओ सभाए सरिसो	568-568	२०६,२१०,२३७,२४१
वरकमलपद्टाणा जाव महया	१४८	१३१
वरकमलपइट्ठाणा तहेव	<b>8</b> 80	\$ <del>5</del> \$
वामेणं जाव वट्टिता	७७६,७७७	७६७
बामेणं जाव विवच्चासं	७६्म	ওহ্ও
वावीणं जाव बिलपंतियाणं	१७४,१८०	१७४
वासधरपव्वया तहेव जेणेव	305	305
विउलेणं जाव पडिलाभेइ	380	380
विविहतारारूवोवचिया जाव पडिरूवा	२०	१७
वीसाएमाणा जाव विहरति	હદ્ય	۳° <b>۶</b>
संखंकसब्बरयणामया	<b>२२</b> २	१६०
संठिय जाव जोयणसहस्समूसिएणं	Xé	४२
सच्छतं जाव चाउग्घंट	६ <b>द १</b>	१७३
सण्णद्ध जाव गहियाउहपहरणेहि	६ द ३	ह्द ३
सत्थप्पओगेण वा जाव उद्वेत्ता	930	\$30
सद जाव विहरइ	६७२	ओ० १४
सद्हेज्जाजहा अण्णो जीवो तं चेव	৩४६,७४८	७४४
सद्हेज्जा तं चेव	७६२,७६४	ও <b>শ্</b> ষ
सद्हेज्जा तहेव	७६०	ও X &
सम्हिजणित्ता जाव देवलोएसु	७४२	७४२
समणं वा जाव पञ्जुवासेइ	390	390
समणं वा तं चेव जाव एएण	380	380
समण जाव परिभाएमाणे	945	95,9
समाणा जाव पडिसुणेता	5 X X	رم ال
समाणा जाव पत्र्वतुगरा। समिद्धे****	र ७६ इ७इ	र् इ.इ.स.
सानद्ध समुदया जाव सिरीए	२०२ १३ <b>२</b>	80
הקשאו אוד נוגול	***	•••

280

A · · · >		
सरीरं तं चेव	૭ ૬૬,૭૬૪	७४२
सरूविस्स जाव ससरीरस्स	१७७	७७ <b>१</b>
सव्वंतरणईओ जेणेव	305	३७२
सव्वतूयरे तहेव जेणेव	२७६	२७६
सञ्वत्यरोहि जाव सञ्वोसहिसिद्धत्यएहि	२६०	305
सव्विड्ढीए जाव (णा) नाइयरवेण	१३,६१७	ओ० ६७
ससक्ल जाव उवणेति	७४६	७४४
सामाणियसाहस्सीहि जाव सोलसहि	र्भ	U
सिंघाडग••••महया जणसद्देइ वाः•••परिस	। ७१२	<b>६</b> द ७
सिया जाव गंभीरा	७७२	હપ્રય
सिरिवच्छ जाव दप्पणा	38	२१
सीहासणे जाव सण्णिसण्णे	२६६	२द३
सीहासणे तं चेव	३४२	वृत्ति, पृष्ठ २६६
सुकुमालपाणिपाए जाव पडिरूवे	६७३	5 ° 4 5 ° 5
सुकुमालपाणिपाया धारिणी वण्णको	६७२	ओ० १४
सुबहुं जाव उववण्णा	5 X ei	७४२
सुबहुं जाव उववण्णे	७४१	920
सुसिलिट्ठ जाव पडिरूवे	২४७	238
सुरियाभविमाणवासिणो जाव देवीओ	३=६	
सोच्चा जाव हट्टउट्ठाए जाव एवं	600	48X
सोत्थियं जाव दप्पणं	835	२१
हंसासणाई जाव दिसासोवत्थियासणाई	१५३	१८१
हट्ठ जाव करयल जाव पडिसुणंति	७४	१०
हटु जाब जेणेव	৬২	७१३
हट्ठ जाव पडिसुणेत्ता	<b>६</b> द १	१०
हटु जाव भवह	७१३	৬१३
हटु जाव समणं	Ęo	६२
हटु जाव हियए	४७,६९४,७१०	, ر ح
हट्ठ जाव हियया	307,708	5
हट्ठतुट्ठ जाव अप्पमहग्धाभरणालंकियसर्र		७१६
हटुतुटु जाव आसणाओ	688	5
हटुतुटु जाव सूरियाभं	0.35	<u>ج</u>
हटुतुट्ठ जाव हियए	१३,१४,१७,१८,६२,२७७,	
	500,27,022,022,005	5
-	,१६,२=१,७०७,७१३,७७४	
हट्टनुट्ट तहेव एवं	৬१ন	र इहर्
हत्यच्छिण्णगं वा जाव जीवियाओ	<b>હય</b> ર	હાર
हत्थेण वा आव आवरेताण	380	390
-		010

हयकंठाणं जाव उसभकंठाणं	२४ू	822
ह्यसंघाडा जाव उसभसंघाडा	883	888
हिरण्णं तं चेव जाव पव्वइत्तए	48X	ĘĘX
जीवाजीवा	भगमे	
अकंततरगा चेव जाव अमणामतरगा	३। <b>द</b> ४	३।२७=
अणिट्ठा जाव अमणामा	३।६२	भ० १।२२४
अपढमसमयबेइंदिया जाव पढमसमयपंचिदिया	<b>ह</b> ।१	818,818
अप्पा वा एवं जाव विसेसाहिया	2188	8186
आयामेणं जाव दो	३।३७६	<b>६</b> 1३७२
आसयंति आव विहरंति	31780	31780
आसादणिण्जे जाव इट्ठतराए चेव आसादे	३।द६६	₹!=६०
आसादणिज्जे जाव पल्हायणिज्जे	३।८७२	₹15€0
आहारसण्णा जाव परिग्गहसण्णा	8120	तक्ता० टाई
आहेवच्चं आव दिव्वाइं	३।३४०	अगे०सू० ६=
आहेवच्चं जाव पालेमाणा	३।६३६	<b>1</b> 13×0
इंगाले जाव तत्थ नियमा	११७द	पण्ण० १।२६
ईहामियउसभ जाव पउमलयभत्तिचित्ता	21288	३।२५५
उक्किट्ठाए जाव दिव्वाए	<b>31</b> 8,8X	<b>३</b> ।स६
उदाइता सो चेव विही एवं धायइसंडेवि	३१७१८,७२०	३१४७४,४७६
उप्पलाइ तं चेव	\$1 <b>8</b> .88	31888
उबवेते जाव सन्विदियगातपल्हायणिज्जे	31595	३।८६०
उवागच्छित्ता जाव कट्टु	31222	<u> </u>
एएणं अभिलावेणं जाव दसविहा	१११०	8180
एवं चत्तारिवि गमा, पढमबिइयभंगेसु अपरियाइत्ता		
एगंतरियगा अच्छेत्ता अभेत्ता, सेसं तहेव (क,ख,		
ग,ट,त्रि); तेच्चेव आलावता ह्व जाव हंता पभू		
(ता)	0 <b>33-X3</b> 315	F33-8331F
एवं जहा अच्चीणि णवर एवतियाइ पंच ओवासंतराइ	३।१७⊏	३।१७६
एवं जहा पण्णवणाए जाव सेत्तं	81X	पण्ण० १।३
एवं जहा पण्णवणापदे जाव पंचहि	३।२२५	দক্ষা০ ঠানও
कतरेहितो जाव विसेसाहिया	२११३४-१३६	8185
कयम्गहग्गहित जाव पुंजोवयारकलितं	३।४ <b>४</b> ⊏	31880
कयग्गाह जाव धूवं	31850	ź <b> </b> ⊁X⊏
कामावत्ताइं जाव कामुत्तरवडिसयाइ	30915	३।१७४
कालं जाव असंखेज्जा	X1=	वण्ण० १६।२६
काल जाव आवलियाए	XIE	ণত্যত १৯।३
गेण्हित्तातं चेव	<u> </u>	31888

गोसीसचंदणेणं जाव चच्चए दलयति आसत्तोसत्त		
कयग्गाह धूर्व	३।४६१	318XE
चेव जाव फ़ासेणं	३।२८४	<b>३</b> ।२५३
चेव जाव मणामतराए	३।२५३	<b>३</b> ।२७ <b>८</b>
चेव जाव वण्णेणं	३।२७६-२५२	<b>ই</b> ।२७ <b>দ</b>
जहा अच्चीणि गवरं सत्त ओवसंतराई विक्कमे सेसं तहेव	३११८०	<b>३।</b> १७६
जहा अविसुढलेस्सेणं छ आलावगा एवं विसुढलेस्सेणवि		
छ आलावगा भाणितव्वा जाव विमुद्धलेस्से	३।२०४-२०८	505-33915
जहा णईओ	<u> 51888</u>	\$188X
जातीकुलकोडीजोणीपमुह जाव पण्णत्ता	३११६६	३११६०
जातीकुल जाव समक्खया	३।१६८	२११६७
जोयणकोडी जाव अब्भंतरपुक्खरद्वस्स	31=3X	३।५३२
जोयणसहस्साइं जाव परिक्खेवेणं	3602	३।५२
णं जाव केवचिरं	E188'23	3513
तं चेव जाव महावेदणतरा	३।१२६	३।१२६
तं चेव णं जाव णो	39915	३।११द
तहेव जाव सायासोक्खबहुले	31888	31 <b>68</b> =
तित्थसिद्धा जाव अणेगसिद्धा	१।द	पण्ण० १११२
तित्थाइं तहेव जहेव	318.8 <b>X</b>	<u> इ</u> ।८९४
तुरियाए जाव दिव्वाए	३।१७६	३।८६
पगतिभद्गा जाव विणीता	३। <b>८४१</b>	X301F
पच्छावि जाव आणुगामियत्ताए	<b>३</b> ।४४२	ź1886
पणिहाय जाव सव्ववसुडिया	३।१२४	<b>३</b> ११२४
पण्णत्ता जाव तेसु	31384	03515
पत्तेयं जाव णिसीयंति	३११६०	31885
पयलाएज्ज वा जाव उसिणे	38815	३।१ <b>१</b> ⊏
पुढवी जाव सव्वक्खुड्डिया	३।१२४	<u>इ</u> 1हेरप्र
पुष्फारुहणं जाव धूवं	ई।४ <i>६</i> ४	318XE
पोग्गला य जाव असासयावि	३।७२७	३।७२४
भविस्सइ जाव अवद्विए	31320	३।२७ <b>२</b>
महज्जुतीए जाव महाणुभावे	313X0	३।⊏६
महताहतनट्टगीयवादितरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाण	् ३ <b>।</b> ८४४	३।५४२
महिड्ढीए जाव महाणुभागे	३। द६	वृत्ति, पत्र १०६
मुत्ताजालंतरुसिया तहेव जाव समणाउसो	३।३०२	३।३०२
लवणस्स णं पएसा धायइसंड दीवं पुट्ठा तहेव		
जहा जंबूदीवे धायइसंडेवि सो च्चेव गमो	३।७१ <b>४-७१</b> ८	31X,08-X0X
वट्टे जाव <del>वि</del> ट्ठति	३।८६२,८६४,८७१,	
	द७७, <b>६</b> २४	३१७०४

वलयागार जाव चिट्ठति	31 <b>⊏ X €</b>	31008
वलयागारसंठाणसंठिते जाव चिट्ठति	३।८६८	¥0015
वलयागारसंठाणसंठिते जाव संपरिविखत्ताणं	३।=४=	31908
वलयागारे तहेव जाव जे	3180	३।४६
सब्बतुवरे य तहेव	\$18 <b>R</b> X	<b>JIXXX</b>
सम्वपाणा जाव देवसाए देविसाए आलण जाव हता	318830	३।११२म
सन्दपुष्फे तं चेव	31888	3IXXX
सामाणियसाहस्मीहि जाव अण्णेहि	21XX0	31886
पिज्मंति जाव अंत	१।१३२	ओ० सू० ७२
सेरियागुम्मा जाव महाजाइगुम्मा	३१४८०	जंबु० २।१०
सेस त चेव	३।१७ <b>८,१८२</b>	३।१७६
त्रोहम्मीसाण जाव अणुत्त <b>रेसु</b>	318035	पण्ण० २१४६
हटुतुट्ठ जाव हियए	ś <b>!</b> &&ś	वृत्ति, पत्र २४३
हट्टनुट्ठ जाव हियया	<b>३</b> ।४ <b>४</b> ४	<b>Śł</b> arź
हट्टतुट्ठा करतल आव कट्टु एवं देवोत्ति जाव पडिसुणेत्ता	₹ા	31888
हट्ठतुट्ठा जाव हरिसवसविसप्पमाणहियया	31880	३।४४१
हथकंठगाणं जाव उसभकंठगाणं पुष्फचंगेरीणं जाव		
् लोमहत्थचंगेरीणं पुष्फपडलगाणं अट्ठसयं		
तेल्लसमुग्गाणं जाव धूवकडुच्छुयाणं	31885	३।३२८-३३४;
	- •	वृत्ति, पत्र २३४
हिमे जाव जे	१ा६५	पण्ण० १।२३

## परिशिष्ट-२

#### तुलनात्मक

#### राज-वर्णक

ओवाइय सूत्र १४

जंबुद्दीवपण्णत्ती ३।२,३ अत्र राजवर्णकस्य प्रकासन्तरं चापि लभ्यते ।

#### देवी-वर्णक

ओवाइय सूत्र १५

नायाधम्मकहाओ १।२।५

### नमोत्थु-पूर्वावस्था-वर्णक

ओवाइय सूत्र २१,१४ रायपसेणइयं सूत्र ८,७१४ नायाधम्मकहाओ २।१1११

### नमोत्थु-सूत्र

बोबाइय सूत्र २१ :

रायपसेणइयं सूत्र = :

णमोत्यु णं अरहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थगराणं सहसंबुढाणं पुरिसोत्तमाणं पुरिससी-पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं हाणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं जीवदयाणं दीवो ताणं सरणं गई पइट्ठा धम्मवर-चाउरंतचनकवट्टीणं अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं विषट्छउमाणं जिणाणं जावयाणं' तिण्णाणं तारयाणं मुत्ताणं मोयगाणं बुद्धाणं बोहयाणं सब्वण्णूणं सब्वदरिसीणं सिवमयलमरुयमणंतमवख-यमव्वाबाहमपुणरावत्तगं सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं ।

- १. २६२ सूत्रे नास्ति ।
- २. १९ सूत्रे 'जाणए' पाठो विद्यते ।

नमोत्यु णं अरहंताणं भगवंताणं आदिगराणं तित्थगराणं सर्यसंबुढाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोय-गराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं जीव-दयाणं "सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्म-देसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवर-चाउरतचक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाणदसणधराणं वियट्रछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिष्णाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं सव्वर्ण्णूणं सब्ब-दरिसीणं सिवमयलमरुगमणंतमवखयमव्वाबाहम-पुणरावत्तयं' सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं ।

३. २९२ सूत्रे सिवं अयलं अरुअं अणंतं अक्खयं अव्वाबाहं अपुणरावित्ति ।

in Education International

रायपसेणइयं सूत्र ७७७ : कल्लं पाउष्पभाए रयणीए फुल्लुप्पल-कमल-कोमलु-

—नायाधम्मकहाओे १।१।७ —अणुत्तरोववाइयदसाओे ३।७४

ओवाइय सूत्र २२ : कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमल-कोमलुम्मिलियंमि अहपंडुरे पहाए रत्तासोगप्पगास-किंसुय-सुयमुह-गुंजद्वराग-सरिसे कमलागरसंडबोहए उट्ठियस्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते । रायपसेणइयं सूत्र ७२३ : कल्लं पाउष्पभायाए रयणीए फुल्लुष्पलकमल-कोमलुम्मिलियम्मि अहापंडुरे पभाए कयनियमाव-स्सए सहस्सररिसम्मि दिणयरे तेथसा जलंते ।

#### प्रभात-वर्णक

जावएणं तिण्णेणं तारएणं बुढेणं बोहएणं मुत्तेणं मोयगेणं सव्वण्णुणा सव्वदरिसिणा सिवमयलमच्य-क्षेयं ठाणं संपाविउकामेणं । भगवती ११७ समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे सहसंबुद्धे पुरिसोत्तमे पुरिससीहे पुरिसवरपोंडरीए पुरिसवर-गंधहत्थी लोगुत्तमे लोगनाहे लोगपदीवे लोगपज्जो-यगरे अभयदए चक्खुदए मग्गदए सरणदए धम्म-धम्मवरचाउरंतचककवट्टी देसए धम्मसारही अव्यडिहयवरनाणदंसणधरे विषट्छउमे जिणे जाणए बुद्धे बोहए मुत्ते मोयए सब्बण्णू सब्बदरिसी सिव-मयलमस्यमणंतमक्खयमव्वाबाहं सिद्धिगतिनामधेयं ठाणं संपाविउकामे । ----जंबुद्दीवपण्णत्ती श्र।२१

समवाओ १।२ : समणेणं भगवया महात्रीरेणं आदिगरेणं तित्थगरेणं सर्यसंबुद्धेणं पुरिसोत्तमेणं पुरिससीहेणं पुरिसवर-पोंडरीएणं पुरिसवरगंधहत्थिणा लोगोत्तमेणं लोगनाहेणं लोगहिएणं लोगपईवेणं लोगपज्जोय-गरेणं अभयदएणं चक्खुदएणं मगगदएणं सरणदएणं जीवदएणं धम्मदएणं धम्मदेसएणं धम्मनायगेणं धम्मसारहिणा धम्मदत्त्वाउरंतचक्कवट्टिणा अप्पडिहयवरणाणदंसणधरेणं वियट्टच्छउमेणं जिणेणं जावरूणं तिण्णेणं तारएणं बुढेणं बोहएणं मुत्तेणं मोयगेणं सव्वश्णुणा सव्वदरिसिणा सिवमयत्तमघ्य-मणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्त्त्यं सिद्धिगइनाम-धेगं राणं गंपानिजनागेणं ।

समणे भगवं महावीरे आइगरे••••विभक्ति भेदेनैव पाठो निर्दिष्टसूत्रांकेषु विद्यते सूत्र १६,२१,५४

म्मिलियम्मि अहापंडुरे पभाए रत्तासोगपगास-किंसुय-सुयमुह-गुंजद्धरागसरिसे कमलागर-णलिणि-संडबोहए उट्टियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते ।

भगवती २।१।६६

कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पल-कमल कोमलुम्मिलियम्मि अहपंडुरे पभाए रत्तासोयप्पकासे किंसुय - सुयमुह - युंजढरागसरिसे कमलागरसंड-बोहए उट्टियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते ।

नायाधम्मकहाओ १।१।२४

(अतिरिक्त पाठ)

अणुओगदारं, लोइयं दव्वावस्सयं सू० १९

#### अनगार-प्रवज्या

क्षोवाइय सूत्र २३ : चइत्ता हिरण्णं चिच्चा सुवण्णं चिच्चा धणं एवं— धण्णं बलं वाहणं कोसं कोट्ठागारं रज्जं रट्ठं पुरं अंतेउरं, चिच्चा विउलधण - कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिलप्पवाल-रत्त-रयणमाइयं संत-सार-सावतेज्जं, विच्छडुइत्ता विगोवइत्ता, दाणं च दाइ-याणं परिभायइत्ता, मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया । अयार-चूला १४।२६ :

चिच्चा हिरण्णं, चिच्चा सुवण्णं, चिच्चा बलं, चिच्चा बाहणं चिच्चा धण-धण्ण-कणय-रवण-संत-सार-साबदेज्जं, विच्छड्डेता, विगोवित्ता, विस्साणित्ता, दायारेसुणं दायं पज्जभाएता

रायपसेणइयं सूत्र ६९४ :

चिच्चा हिरण्णं, एवं---धणं धण्णं बलं वाहणं कोसं कोट्टागारं पुरं अंतेडरं, चिच्चा विउलं धण-कणग-रयण-मणि - मोत्तिय - संख-सिल-प्पवाल-संतसार-सावएज्जं, विच्छड्रित्ता विगोवइत्ता, दाणं दाइयाणं परिभाइत्ता, मुंडा भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पच्ययंति ।

निर्ग्रन्थ-तप-वर्णक

सूत्र २४,३२,३४,३४,३६ सूत्र २४,२६	पण्हावागरणाइं ६।६ रायपसेणइयं सूत्र ६ <b>-</b> ६ भगवती २। <b>९</b> ४
सूत्र २७	नायाधम्मकहाओ १।१।४ भगवती २।४४ रायपसेणइयं सूत्र ५१३
सुत्र २७,२८,२६	निरयावलियाओ ३।४ पण्हावागरणाइ १०।११

	जंबुद्दीवपण्णक्ती २।६८ से ७०
	पज्जोसवणाकष्पो सूत्र ७८,७१,८०
	द्र <sup>६</sup> टव्यम्—अंगसुत्ताणि भाग-१
	परिशिष्ट २ : आलोच्यपाठ तथा वाचनान्तर
सूत्र २७,२=,२६,३२,३४-३६	सूयगडो २।२।६४ से ६६
सूत्र ३०-४४	भगवती २५।५४७ से ६१⊏
	उत्तरज्कस्यणाणि ३०३७-३६
	बोह्यतप
सूत्र ३१	ठार्था ६३६४
	यावत्कथिक
सूत्र ३२	ठाणं २।२००,२०१
	<b>ऊनोदरिका</b>
सूत्र ३३	भगवती ७३२४
	ववहारो, ६।१७
	कायक्लेश
सूत्र ३६	ठाणं ७१४६
	प्रतिसंलीनता
सूत्र ३७	ठाणं ४।११०,११२
	ठाणं ४।१३४
	आभ्यन्तरतप
सूत्र ३५	ठागं ६।६६
	प्रायश्चित्त
सूत्र ३१	ठाणं १०१३७
	विनय
सूत्र ४०	ठाणं ७।१३०-१३७
	वैयावृत्त्य
सूत्र ४१	- ठाणं १०११७
.,	स्वाध्याय
सूत्र ४२	
H1 01	ठाणं ४१२२०
	ध्यान
सूत्र ४३	ठाणं ४३६०-७२
	देव-वर्णक
सुत्र ४७-५१	पण्णवणा २१४०-६३

352

परिषद्-ग	ग्रसन-वर्ण्क
सूत्र ४२	रायपसेणइयं सूत्र ६८८,६८१
नगरी-स	रज्जा-वर्णक
सूत्र ४४	जंबुद्दीवपण्णसी ३७७
नित्यव	हर्म-वर्णक
सूत्र ६३	नायाधम्मकहाओ १।१।२४
	जंबुद्दीवपण्णत्ती ३।६
<b>निग</b> म	न-वर्णक
	भगवती १।२०४ से २०१
सूत्र ६४-६९	जंबुद्दीवपण्णत्ती ३।१७७-१८६
सूत्र ६९	पञ्जोसवणाकप्पो सूत्र ७५
पर्युपास	ना-वर्णक
सूत्र २९,७०	भगवती ९।३३, १४५,१४६
वासी	निम
মুঙ্গ ৬০	रायपसेणइयं सूत्र ५०४
	जंबुद्दीवपण्णत्ती ३।११
	नायाधम्मकहाओ १।१⊥≤२
परिष	( <b>द्-</b> वर्णक
सूत्र ७१ :	रायपसेणइयं सूत्र ६१ :
तीसे य महतिमहालियाए इसिपरिसाए मुणि	- तीसे य महतिमहालिताए इसिपरिसाए मुणि-
	परिसाए जतिपरिनाए विदुपरिसाए देवपरिसाए
अजेगसयवंदाए अणेगसयवंदपरियालाए ओहबले …	
	परिसाए अणेगसयाए अणेगवंदाए अणेगसयवंद-
	परिवाराए महतिमहालियाए कोहबले … ।
देवलोक अं	ौर देव-वर्णक
सूत्र ७२	सूयगडो २।२
અ	ायुवंध
सूत्र ७३	ठाणं ४।६२४,६२८
	भगवती ⊏!४२५ से ४२⊏
धर्मश्रद्धा	-प्रकटन
सूत्र ७६	रायपसेणइयं सूत्र ६९४
-	भगवती २।४२,६।१६४
	नायाधम्मकहाओ १।१।१०१
	उवासगदसाओे १।५१

	गौतम-वर्णक
सूत्र ८२	भगवती १।६
	उवासगदसाओ ११६९
	वाणमंतर-उपपात
सूत्र ५६,⊂१	भगवती १।४९
	गंगाकूलवासी-वानप्रस्थक-तापस
सूत्र १४	भगवती ११। ४६
	निरयावलियाओ ३।३
	परिन्नाअक-वर्णक
सूत्र १७	भगवती २।२४ ।
	अम्मड-परिव्राजक
सूत्र ११२-११४	भगवती १४।११० से ११२
	दुढप्रतिज्ञ
सुत्र १४१-१५४	रायपसेणइयं सूत्र ७६६-⊏१६

X¥0

# ७२ कलाएं

सूत्र १४६	रायपसेणइयं	जंबुद्दीवपण्णत्ती	समबाओ	णायाधम्मकहाओ
_	सूत्र ८०६	वृत्ति पत्र १३६,१३७	७२७७	8181=x
१. लेह	लेह	लेहं	लेह	लेहं
२. गणिय	गणियं	गणियं	गणियं	गणियं
३. रूव	रूवं	रूव	रूवं	रूव
४. णट्टं	ਜਟ੍ਟਂ	नट्टं	नट्टं	नट्टं
५. गीयं	गीयं	गीअं	गीयं	गोयं
६. वाइयं	वाइयं	वाइयं	वाइयं	वाइयं
७. सरगयं	सरगयं	सरगयं	सरगयं	सरगयं
≤. पुक्खरगयं	पुक्खरगयं	पोक् <b>ख र</b> गयं	पुक्खरगय	पोक्खरगयं
१. समतालं	समतालं	समतालं <sup>र</sup>	समतालं	समतालं
१०. जूयं	जूयं	जूअं	जूयं	जूयं
<b>११</b> • जण <b>व</b> ायं	जणवायं	जेणवासं	<b>জ</b> ण <b>ৰ</b> !य	जणवायं
१२. पासगं	पासगं		पोरेकव्द	वासयं
१३. अट्ठावयं	अट्टावयं		अट्टावयं	अट्ठावयं
१४. पोरेकव्वं	पो रे <b>क</b> ब्व		दगमट्टियं	ण्ठापय पोरेकव्व
१५. दगमट्टियं	दगमट्टियं		अस्तविहि	रामट्टियं
<b>u</b> .	<b>U</b>	<b>C</b> .		******2*

१. क्वचित् 'तालमान'मिति पाठ: ।

१६. अण्णविहि	अन्नविहि	अन्नविहि	पाणविहि	अण्णविहि
१७. पाणविहि	पाणविहि पाणविहि	पाणविहि	नाजायाह लेणविहि	पाण <b>वि</b> हिं
१५. वत्यविहि	ৰখেৰিচি	वत्थविहि	लगायगृ सयणविहि	पाणापाह वस्थविहि
१९. विलेबणविहि	पत्पापारु विलेवणविहि	परमापाह विलेवणविहि	त्तवणावाह सङ्जं	परपापाह विलेवणविहि
२०. सथणविहि २०. सथणविहि	ायलवण्डवाह् संयणविहि	ाव गवणावाह सयणविहि	_	-
	-		पहेलियं 	सयण विहि जन्म
२ <b>१.</b> अज्ञं	अउन >ि	अङ्ज	मागहियं — :	अज्ज -> ে
२२. पहेलियं	पहेलिय 	<b>पहेलियं</b> ि	गाहं	पहेलियं
२३. मागहियं	मागहियं	मागहिअं	सिलोग	मागहियं
२४. गाहं	गाहं	गाहं	गंधजुत्ति	गाह
२५. गीइयं	गीइयं	गीइअं	मधुसित्य	गीइयं
२६. सिलोयं	सिलोगं	सिलोगं	आभरणविहि	सिलोयं
२७. हिरण्णजुत्ति	हिरण्णजुत्त <u>ि</u>	हिरण्णजुत्ति	<b>तरु</b> णीपडिकम्म	हिरण् <b>ण</b> जुत्ति
२८. सुवण्प्रजुत्ति	<del>सु</del> वण्णजुत्ति	सुवण्णजुत्ति	<b>इत्</b> थीलक्खण	सुवण्णजुत्ति
२१. गंधजुत्ति	आभ <b>र</b> णविहि	चुण्णजुत्ति	पुरिसलक्खणं	चुण्णजुत्ति
३०. चुण्पजुत्ति	तरुणीपडिक <b>म्म</b>	आभरणविहि	हयलक्खणं	आभरणविहि
३१. आभरणविहि	इस्थिलकखणं	तरुणीपरिकम्मं	गयलक्खणं	तरुणीपडिकम्म
३२. तरुणीपडि कम्म	पुरिसलव <i>ख</i> णं	इत्थिलक्खणं	गोणलक्खणं	इत्थीलक्खणं
३३. इत्थिलक्खणं	हयलक्खणं	पुरिसलक्खणं	कुक्कुडलक्खणं	पुरिसलक्खणं
३४. पुरिसलक्खण	गयलक्खणं	हयलक्खणं	मिढयलक्खण	हयलक्खणं
३४. हयलक्खणं	गोणलक्खणं	गयलक्खण	चनकलवखण	गयलक्खणं
३६. गयलक्खण	कुक्कुडलक्खण	गोगलक्खणं	छत्तलवखण	गोणलक्खणं
३७. गोणलक्खण	छत्तल क्खण	कु <b>क्कु डल</b> बखणं	दंडलवखण	कुक्कुडलक्खणं
३८. कुक्कुडलक्खणं	चक्कलक्खणं	छत्तलक्खणं	<b>अ</b> सिलक्खणं	छत्तलक्खणं
३१. छत्तलक्खण	दंडलक्खण	दंडलवखण	मणिलवखणं	दंडलक्खणं
४०. दंडलक्खणं	असिलक्खणं	असिलक्खणं	काकणिलक्खणं	असिलक्खण
४१. असिलक्खणं	मणिलक्खणं	मणिलक्खणं	चम्मलवखणं	मणिलवखणं
४२. मणिलक्खणं	कागणिल <b>क्खणं</b>	कागणिलवखण	चंदचरियं	कागणिल <b>नखणं</b>
४३. काकणिलक्खणं	वत्थुविज्जं	वत्थुविज्जं	सूरचरियं	वत्युविज्जं
४४. वत्युविज्जं	णगरमाण	खंधावारमाणं	राहुचरियं	खंधारमाणं
४५. खंधावारमाणं	खंडावारमाण	नगरमाणं	गहचरियं	नगरमाणं
४६. नगरमाणं	चारं	चारं	सोभाकरं	
	पडिचारं	पडिचारं	दोभाकरं	वूह पडिवूहं
४७. वूहें ४ <b>८. पडिवू</b> हें			विज्जागयं	चारं
४६. चारं	वूह पडिवूह	वूह पडिवूहं	मंतगर्य मंतगर्य	पडिचारं
				-
५०. पडिचार ४१ जन्मचन	चक्कवूह यहचतरं	चक्कबूहं सम्बदनं	रहरसगयं सभाग	चक्कवूह गण्डवत
<b>५१. चरक्तवूहं</b>	गरुलवूहं प्रयत्वन्न	गरुडवूह <u>ं</u> समज्जूतं	सभासं जन्म	गरुलवूह सन्दर्भ
¥२. गरुलवूहं	सगडवूहं न्न्नं	सगडवूह ——	चारं <del>प्रतिपारं</del>	सगडवूहं —∹
४३. सगडवूह	जुद्धं	जुद्ध	पडिचारं	जुद्धं

X¥Ş

जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुंडभावे अण्हाणए अदंतवणए केसतोए बंभवेरवासे अच्छत्तगं अणोवाहणगं भूमिसेज्जा फलहसेज्जा कट्ठसेज्जा परघरपवेसो लढावलढं परेहि हीलणाओ तिवणाओ खिसणाओ गरहणाओ तज्जणाओ तालणाओ परिभवणाओ पब्बहणाओ उच्चावया जस्सट्टाए कीरइ णग्गभावे मुंडभावे केसलोए बंभ-वेरवासे अण्हाणगं अदंतवणगं अच्छत्तगं अणुवाहणगं भूमिसेज्जाओ फलहसेज्जाओ परघरपवेसो लढावल-ढाइ माणावमाणाइं परेहि हीलणाओ निद्रणाओ खिसणाओ तज्जणाओ ताडणाओ गरहणाओ उच्चावया विरूवरूवा बावीसं परीसहोवसग्गा

#### सूत्र १४४

**१**४. जुद्धं

**४**४. निजुद्धं

निजुद्धं

जुद्धजुद्धं

### राइपसेणइयं सूत्र ५१६

	3~ 3~	30.110.30		उकारयुख
४६. जुद्धाइजुद्धं	अट्ठिजुद्धं	दिट् <mark>ठि</mark> जुद्ध	खंधावारमाण	अट्रिजुद्धं
<b>४७. मुट्ठि</b> जुद्वं	मुट्ठिजुद्धं	मुट्ठिजुद्धं	नगरमाणं	मुट्ठिजुद्धं
४५. बाहुजुद्ध	बाहुजुद्धं	बाहुजुद्धं	वत्थुमाणं	बाहुजुद्धं
५९. लयाजुद्धं	लयाजुद्धं	लयाजुद्धं	खंधावारनिवेसं	लयाजुद्धं
६०. ईसत्थं	ईसत्यं	इसत्थं	नगरनिवेसं	ईसत्थं
६१. छरुप्पवादं	छरुप्पवार्य	छरुष्पवायं	वत्थुनिवेसं	छरुप्पदायं
६२. धणुवेद	धणुवेयं	धणुव्वेयं	ईसत्थं	धणुवेयं
६३. हिरण्णपागं	हिरण्णपागं	हिरण्णपागं	छरूप्पगयं	हिरण्णपागं
६४. सुवण्णपागं	सुवण्णपागं	सुवण्णपागं	आससिवखं	सुवण्णपागं
६५. वट्टखेड्डं	सुत्तखेड्डं	सुत्तखेड्डं	हत्यिसिक्लं	वट्टखेड्ड
६६. सुत्तखेड्डं	वट्टखेड्डं	वत्थखेड्डं	धणुव्वेयं	सुत्तखेड्डं
६७. णालियाखेड्ड	णालियाखेड्डं	नालिआखेड्ड	हिरण्णपागं	नालियाखेड्ड
६द. पत्तच्छेज्जं	पत्त <del>च</del> छे <del>ऽ</del> जं	पत्तच्छेज्जं	सुवण्णपागं मणिपागं धातुपागं बाहुजुढं दंडजुढं मुट्ठिजुढं अट्ठिजुढं	पत्तच्छेज्जं
<b>६१. कडगच्छे</b> ज्जं	कडगच्छेउजं	<b>क</b> डच्छ्रेड्जं	निजुद्धं जुद्धाति- जुद्धं नालियाखेड्डं वट्टखेड्डं	क <b>डच्छेज्जं</b>
७०. सज्जीवं	सज्जीवं	सञ्जीव	पत्तच्छेज्जं कडगच्छेज्जं	सज्जीवं
७१. निज्जीवं	निज्जीवं	निज्जीवं	सञ्जीवं निज्जीवं	निज्ञीवं
७२. सउणस्य	सउणस्यं	सउणरुअं मुनित्व आराहणा	सउणरुयं	सउणरुतं

X¥7

वूह

पडिवूहं

निजुद्धं

जुदाइजुद्ध

नियुद्धं

जुद्धातियुद्धं

गामकंटगा बावीसं परिसहोक्सग्गा अहिया- सिज्जंति तमट्टमाराहित्ता···· ।	गामकंटगा अहियासिज्जति, तमट्ठं आराहेहिइ, आराहित्ता…। सूयगडो २।२।६७ जस्सट्ठाए कीरइ णग्गभावे मुंडभावे अण्हाणगे अदंतवणये अछत्तए अणीवाहणए भूमिसेज्जा फलगसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोए बंभचेरवासे परघरपवेसे लढावलद्धं माणावमाणणाओ हीलणाओ जिवणाओ खिसणाओ गरहणाओ तज्जणाओ ताल- णाओ उच्चावया गामकंटगा बावीसं परीसहोवसग्गा अहियासिज्जति तमट्ठं आराहेति, तमट्ठं आराहेत्ता…। ठाणं ६।६२ से जहानामए बज्जो ! मए समणाणं जिग्गंथाणं नग्गभावे मुंडभावे अण्हाणए अदंतवणए अच्छत्तए मणुवाहणए भूमिसेज्जा फलगसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोए बंभचेरवासे परघरपवेसे लढावलढवित्तीओ पण्णत्ताओ। भगवती १।४३३ जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुंडभावे अण्हाणयं अदंतवण्यं अच्छत्तयं अणोवाहण्यं भूमिसेज्जा फलहसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोओ बंभचेरवासो परघरप्पवेसो लढावलढी उच्चावया गामकंटगा
	बावीसं परिसहोवसग्गा अहियासिज्जति तमट्ठं
	अगराहेइ, आराहित्ता"" ।
	नायाधम्मकहाओ १।१६।३२४ निरयावलियाओ ४।१
	षक-उपपात
सूत्र १४४	भगवती ६।२४०
আ বেষ	त-वर्णक
सूत्र १६१, १६२	सूयगडो २।२।७१,७२
सूत्र १६२	रायपसेणइयं सुत्र ६९८
	भगवती २।१४
	र-वर्णक
सूत्र १६३-१६६	सूयगडो २।२:६३,६४,६७

www.jainelibrary.org

#### ¥X¥

	केवली-समुद्घात	
सूत्र १६६-१६४	पण्णवणा ३६१७६-६४	
	गंधसमुद्गक विकिरण	
सूत्र १७०	भगवती ६।१७३	
	ईषत्प्राग्भाराष्ट्रश्वी	
सूत्र १६२-१६४	पण्णबणा २१६४-६६	
सूत्र १६२,१६३	ठाणं मा१०६,११०	
	समवाओ १२।११	
	सिद्ध-वर्णक	
सूत्र १९४	पण्णवणा २१६७	

# परिशिष्ट-३ सह्सूची

#### प्रमाणविधि

- बब्यय, सर्वनाम, क्ला, तुम्, यप्, प्रत्यय के रूप और धातुरूप के साक्ष्य-स्थल का निर्देश प्रायः एक बार दिया गया है।
  - रूट (√) अंकित शब्द धातुएं हैं। उनके रूप डैस ( -- ) के बाद दिए गए हैं।

 शब्द के बाद साक्ष्य-स्थल का अंक सूत्र का है, तथा दो अंक प्रतिपत्ति व सूत्र का है, तीसरा अंक सूत्र के अन्तर्गत गाथा का है । जहां एक या दो संगहणी गाथाएं हैं वहां उसके प्रमाण उसी सूत्रांक में दे दिए गए हैं।

#### अ

अ [च] रा ६७१ अइ [अयि] रा० ११,४९,६२ अइ [अति] रा० ७६७ अइककंत [अतिकान्त] जी० ३।४९७ अइककंत [अतिकान्त] ओ० १६८,१९४ √अइक्कम [अतिने-कम्] – अइक्कमंति ओ० ६२ अइक्कोलावास [अतिकीडावास] जी० ३।७४६, ७४७ अइगाढ [अतिगाढ] रा० ७७४ अइग्राढ [अतिगाढ] रा० ७७४ अइदूर [अतिदूर] ओ० ४७,४२,८३. रा० ६८७ अइबल [अतिबल] ओ० ७१. रा० ६१ अइमदिटय [अतिमृत्तिक] रा० ६ आइमुत्तकलया [अतिमुक्तकनता] जी० ३।४८४ अइमुत्तकराया [अतिमुक्तकनता] जी० ३।४८४ अइमुत्तयलयापविभत्ति [अतिमुक्तकलताप्रविभक्ति] रा० १०१ अइच्गय [अचिरोद्गत] रा० ४५ अइच्गय [अचिरोद्गत] रा० ४५ अइदेग [अतिरेक] ओ० २३. जी० ३।५६०,७२६, ७३१,७३२ अद्दविकिट्ट [अतिविकृष्ट] रा० ६८३ अद्दविकिट्ट [अतिविकृष्ट] जो० ५२,६६,७०. जी० ३।५९८ अर्डेव [अतीव] रा० १३२. जी० ३।५८० अउणापण्ण [एकोनवञ्चासत्] जी० ३।५२३ अउणापण्ण [एकोनपञ्चासत्] जो० १६२ अउणासोति [एकोनाग्गीति] जी० ३।५७० अउत [अयुत] जी० ३।८४१

#### **अ**उल-अंजगगिरि

अउल [अतुल] ओ० १९४।१९. जी० ३।११६ अओकुंभी [अयस्कुम्भी] रा० ७१४,७१६ अओज्म [अयोध्य] ओ० ५७ अओमय [अयोमय] रा० ७१४,७४६. जी० ३।११६ ग्रंक [अङ्गु] ओ० ४८,४१. रा० १०,१२,१८, २९,३८,६४,१३०,१६०,१६४,१७३,२२२, २४६,२७९,न०४. जी० ३।७,२न२,२न४, 300,382,333,3=8,880,885,58 ग्नंक (मय) (अङ्कमय] जी० ३।७४७ म्रंकघाई [अङ्कधात्री] रा० ५०४ ग्रंकमय अङ्गमय रा० १३०,२७०. जी० ३।२००,३२२,४३४ **ग्रंकवाणिय** [अङ्कदणिज्] रा० ७३७ **ग्रंकहर** [अङ्कधर] जी० ३।५९६ धकामय [अङ्गमय] रा० १३०,१४६,१६०,२५४. जी॰ ३।२६४,३००,४१४ संक्रिय [अङ्कित] ओ० १६. जी० २।५६६,५६७ झंकुर ]अङ्कुर ] ओ० ४,५,१५४. रा० २७, २२८. जी० ३।२७४,२८०,३८७,६७२ ग्रंकुस [अङ्कुश] रा० ३९,४०. जी० ३।३१३, ३३८,४९७,६३४,५९२ **म्रंकुसय** [अङ्कुशक] ओ० ११७ ग्रंकोल्ल [अङ्कोठ] जी० १।७४ ग्रंग [अङ्ग] ओ० १५,६३,१४३. रा० ≍०९, ५१०. जी० ३।४६६ **ग्रंगण** | अङ्गन | ओ० २५ ग्रंगपविद्व [अङ्गप्रविष्ट] रा० ७४२ ग्रंगबाहिरक [अङ्गबाह्यक] रा० ७४२ अंगमंग [अङ्गाङ्ग] ओ० १४. रा० ७०,६७१. जो०३।४९८ **ग्रंगय** (अङ्गक) ओ० ६३ ग्रंगय [अङ्गद] ओ० ४७,७२,१०८,१३१. रा० २८४. ३१४४१ म्रंगारक (अङ्गारक] ओ० ४०

¥¥Ę

श्रंगुल [अङ्गुल] ओ० १९,१७०,१९२,१९४१७. रा० ५६,१८८,७९६. जी० १।१६,७४,८६,९४, १०१,१०३,१११,११२,११६,११६,१२१, १२३ से १२४,१३०,१३४; ३।५२,६१,२६०, 8098,8050,8056,8888; 8153,56; 808,03,88,0813 **श्रंगुलक** [अङ्गुलक] जी० ३।२६० **म्रंगुलग** [अङ्गुलक] जी० ३।**१**०७४ **मंगुलय** [अङ्गुलक] जी० ३।८२ श्रंगुलि ]अङ्गुलि | रा० २१२. जी० ३।४४७ **श्रंगुलिज्जग** [अङ्गुलीयक] ओ० ६३ ग्रंगुलितल [अङ्गुलितल ] ओ० २,४५. रा० ३२, २८१,२६३,२६४. जी० ३।३७२,४४७,४४८, ४६०,५५४ **संगुलिय** [अङ्गुलिक] ओ० १७० **संगुली** [अङ्गुली] ओ० १६ **श्रंगुलीय** [अङ्गुलीक] क्षोर्० ६३. जी० ३।५**९**६, 2819 मंगुलेज्जग [अङ्गुलोयक] जी० ३।४१३ √ग्रंच [कृष्]---अंचेइ ओ० २१. रा० ५. জী৹ ২৷४২৩ **ग्रंचितरिभित** [अञ्चितरिभित] जी० ३।४४७ श्रंचित्ता [कृष्ट्वा] रा० २६२ म्रंचिय [अञ्चित] रा० १०५,११६,२५१. জী০ ২।४४७ **ग्रंचियरिभिय** [अञ्चितरिभित] रा० १०७,२८१ ग्नंचेता [कृष्ट्वा] ओ० २१. रा० म. जी० ३।४४७ ग्नंजण [अञ्जन] ओ० ४७. रा० १०,१२,१६,२४, ६४,१६१,१६४,२४८,२७६. जी० ३७,२७८, **३३४,४१९,४४**४ **ग्रंजणकेसिगा** [अञ्जनकेशिका] जी० ३।२७६ **श्रंजणकेसिया** (अञ्जनकेशिका ] रा० २६ फ्रंजणग [अञ्जनक] ओ० १३. जी० ३।८८२, ==३,६१०,६१३ से ६१६ **ग्रंजणगिरि** [अञ्जनगिरि] ओ० ६३

**भ्रंजणपुलय** ]अञ्जनपुलक] रा० १०,१२,१८,६५, १६४,२७१. जी० ३१७ **ग्रंजणमय** [अञ्जनमय] जी० ३।==२ ग्रंजणा [अञ्जना] जी० ३।४,६८७ **ग्रंजलि** [अञ्जलि] ओ० २०,२१,५३,५४,५६, ६२,६९,११७. रा० ८,१०,१२,१४,१८,४६, ७२,७४,**११**≈,२७६,२७६,२=२,२€२,६४४, ६८ १,६८३,६८६,७०७,७०८,७१३,७१४, ७२३,७९६. জী৹ ২।४४२,४४४,४४८,४४८, \*\*\* **म्रंजलिपग्गह** ]अञ्जलिप्रग्रह] जो० ६९,७०, য়া০ ওওল मंजलिप्पागह (अञ्जलिप्रग्रह) ओ० ४० **শ্বালু** [अञ्जू] জী০ ২।**৩**০০ ग्नंडग [अण्डक] ओ० ३३ संसय [अण्डज] जी० ३।१४७,१४८,१६१ **ग्रंड्यदग** [अन्दुबद्धक] ओ० ६० संत [अन्त] ओ० ७२,७४।४,१४४,१६४,१६६, १७७,१८१. रा० ३७,७७१,८१६. जी० 8 833; 3175,852,857,368,682,683, ७२३,७४४,७६२,७६= से ७७९ ग्रंतकम्म [अन्तकर्मन्] रा० २५४. जी० ३।४५१ ग्नंतगडदसाघर [अन्तकृतदशाधर] ओ० ४५ ग्रंतर [अन्तर] रा० १३२,२८१,७५४ से ७५७, ७६३,७६४. जी० १११४१,१४२; २१६३,६६, ५६,५८,६२,१२४,१२६,१३३,१४०,१४१; ३१६० से ६३,६४,६६,६८ से ७२,११८,११९, २५५,३०२,४४७,१७०,४६८,७**१**४,५०२,५**१**४, दर७,द३द!र७,द४र,**६**४र,१०२२,११३६, **११**३७; ४1१६,१७; ४1१७,२३,२४,३०; 5180; 3183; 518; 618,87,83,86,72, २६,३३,३४,३६,४९ से ४४,४९,६०,६४,७१, ७२,८३,८४,८६,१२,१३,१०५ से १०७, १११,११७,११९,१२६ से १२८,१३६,१३७, **ફરૂદ, ૧૪૬, ૧**૫૨, ૧૫૨, ૧૬૫, ૧૭૬, ૧૭૭,

१७६,१८०,१६३ से १९४,२०४ से २०७, २१६ से २१९,२२८ से २३०, २४१ से २४४, २४६,२४९,२६२ से २६४,२७७ से २८४ **ग्रंतरणई** [अन्तर्नदी] रा० २७६ संतरणवी [अन्तर्नदी] जी० ३।४४५,६३७ म्रांतरबीव [अन्तर्द्वीप] जी० २।६१ **म्रंतरदीवक** |अन्तर्द्वीपज,°क | जी० २।⊏६ श्रंतरदीवग (अन्तद्वींपज,°क) जी० १।५५,१०१, 886,876; 7138,00,02,00,5X,88, **१**०६, **१**१६, **१२४, १३३, १३७, १३**८, **१४७**, १४६ ; ३। १५४,२१४,२१६,२२७,⊏३६ **ग्रंतरदीवय** [अन्तर्द्वीपज,<sup>0</sup>क] जी० १।१०१ स्रंतरदीविया [अन्तर्दीपिका] जी० २।११,१३,६६, 389,02,980,00 अंतरा [अन्तरा] ओ० ४४. रा० २०,६८३,७०६. जी० ३।७२€ **ग्रंतराय** [अन्तराय] ओ० ४४ **ग्रंतरित** [अन्तरित] जी० २।४३९ ग्रंतरिय [अन्तरित] रा० ७९६. जी० ३।=३=।२१ **ग्रंताहार** [अन्त्याहार] ओ० ३१ श्चंतिय (अन्तिक) ओ० २१,४७ से ५१,५४,६३, ७८,८०,८१,११७,१२०,१२१ १४१. रा० १२, १३,१४ से १७,४७,६२,२७७,६६७,६५१, इत्र,इत्र, द्र0, द्र8 से द्रद, ७००,७०६, ७**१०,७१३,७१४,७१६,७१८,७२**६,७२७,७२६, ७७४,७७४,७६६,⊏१२. जी० ३।४४३ म्रांतेजर [अन्तःपुर] ओ० २३,७०,१६२. TTO & UN, EEX, EE, UX 7, UUU, UUE, ७८७ से ७९१ ग्रंतेउरिया [अन्तःपुरिकी] ओ० ६२ ग्नंतेपूर (अन्तःपुर) जी० ३।२८४ भ्रंतेवासि [अन्तेवासिन्] ओ० २३ से २४,२७,०२, ११५. रा० ६७६ ग्नंतो [अन्तर् | ओ० ७०,६२ रा० २४,३३,६६, 850,850,800,588,088,088,088

- ७७२. जी० १।१२७;३।७७,१११,११८,२१४, २७७,२९८,३००,३०७,३०१,३३६,३५२, ३५९,३६०,३६४,३६८,३६६,३१९,४१५, ६४८,६७३,७४४,७४७,८३८।१४,८३६,८४०, ८४२,६०४
- श्रंतोमुहुस [अन्तर्मुहूर्त] जी० १।१२,१६,६१,७४, ७९,५२,५७,५५,१०१,१०३,१११,११९,१२१, १२३ से १२४,१२७,१२८,१३३,१३७ से १४०,१४२; २१२० से २२,२४ से ३४,४९, ४०,४३ से ६१,६३,६४ से ६७,७८,०२ से न४,८७,८८,६१,१०७,१०६ से १११, ११३,११४,११६,११६ से १३३; ३।१४६, १६१,१६२,१६४,१८६ से १८१,२१४,११३२, ११३४ से ११३७; ४1३ से ११,१६,१७; ५1५, ७,८,१० से १६,२१ से २४,२८ से ३०;६।३, न से ११; ७।१३,१४; ९।२३ से २६,३१,३३, ३४,३६,४१,४७,४२,४७ से ६०,६८ से ७३, 00,05,53,53,03,32,82,52,000 १०२,१०३,१०४,११४,११४,११७,११८, १२३,१२४,१२६,१२८,१३२,१३६,१४४, १४६,१४०,१४२,१४३,१६०,१६४,१६४, १७२,१७३,१७६ से १७८,१८६ से १९१. १ E = , ? E × , ? E = , ? o ? , ? o ¥ , ? o 9 , ? ? ? , २१६ से २१८,२२२,२२३,२२४,२२८,२२६, २४१,२४२,२५७ से २६०,२६२,२६४,२७७, २७६ ग्रंतोमुहुत्तिय (अन्तर्मुहुर्तिक | ओ० १७३,१८२ ग्रंतोसल्लमयग [अन्तर्शल्यमृतक] ओ० ६० ग्रंदोलग [अन्दोलक] रा० १८०. जी० ३।२९२ **ग्रंदोलय** [अन्दोलक] रा० १८१
- **म्रंथकार** [अन्धकार] ओ० ४६
- **ग्रंथयार** [अन्वकार] ओ० ४,८,४७. जी० ३।२७४
- ग्रंषिया [अस्थिका] जी० शब्द
- श्रांब [आम्र] जी० १।७१
- म्रंबड [अम्बड] ओ० १६
- **श्रंबपल्लवपविभत्ति** [आम्रपल्लवप्रविभक्ति] रा०१००

**ग्रंबरतल** [अम्बरतल] झो० ४२. रा० ६८८ श्रंबसालवण [आभ्रणालवन] रा० २,द से १०, 82,83,8%,8% मंबिल [अम्ल] जी० १1४; ३1२२ श्रंखिलोदय [अम्लोदक] जी० १।६५ ग्रंब्मक्सि ]अम्तुभधिन् ] ओ० ६४ **ग्रंसुय** [अंगुक] जी० ३।४९४ **अकंटय** [अकण्टक] ओ० ६,१४. रा० ६७१. জী৹ **২**।২৬২ अकंडुयय [अकण्डूयक] ओ० ३६ अकंत [अकस्त] रा० ७६७. जी० १:९४; ३।९२ अक्तेतरक [अकास्ततःक] जी० ३।=४ **अकक्कस** (अकर्कश] ओ० ४० अकडुय [अकट्क] ओ० ४० अकण्ण (अकर्ण) जी० ३।२१६ अकम्मभूमक [अकर्मभूमक | जी० २।१३३ अकम्मभूमग [अकर्मभूमक] जी० १।४१,४४, १०१,११९,१२६;२।३०,३२ से ३४,७७,५४, 25, 205, 225, 228, 230, 280, 280; 286; **३। १४४,२१४,**२२५,५**३**६ अकम्मभूमि [अकर्मभूमि] जी० २।१३७ अकम्मभूसिक [अकर्मभूमिज,°क] जी० २।५७,५८, ፍሂ अकम्मभूमिग [अकर्मभूमिज, क] जीव २१४९ से £ 8, 5 5, 90, 97, 835, 889, 886 अकम्मभूमिय (अकर्मभूमिज ) जी० १।१०१ अकम्मभूमिया [अकर्मभूमिजा] जी० २।११,१३, 388,088,500,00 अक्यत्थ [अकृतार्थ] रा० ७७४ अकयलक्लण [अकृतलक्षण] रा० ७७४ अकरंडुय [अकरण्डक] ओ० १९. जी० ३।५९६, 28:3 अकरण [अकरण] ओ० ७८ से ८१ अकरणिज्ज [अकरणीय] ओ० ११७. रा० ७९६ अकसाइ ! अकपायिन् ] जी० १। १३१; ६। २८,

१४८,१**५१,१**५४,१५५

अकाइय [अकायिक] जी० श १८ से २०,१८२, १८४ अकामछुहा [अकामक्षुध्] ओ० ५६ अकामणिज्जरा (अकामनिर्जरा ] ओ० ७३ अफामतण्हा [अकामतृष्णा] ओ० = ६ अकामबंभचेरवास [अकामब्रह्मचर्यवास] ओ० ८६ अकाल [अकाल] रा० १३,१४ से १७ अकिंचण [अकिञ्चन] ओ० २७. रा० = १३ अकित्तिकारग [अकीर्तिकारक] ओ० १५४ अकिया [अकृत्वा] ओ० १७२ अकिरिय [अफिय] ओ० ४० **अकुडिल** {अकुटिल | ओ० ४६ अकुणतर [एकोनसप्तति] जी० ३। ५२७ **अकुव्यमाण** [अकुर्वत्] रा० ७६२ अकुसल [अकुशल] रा० ७४८,७४६ अकुसलमण [अकुशलमनस्] ओ० ३७ **अकुसलवय** [अकुशलवचस्] ओ० ३७ अकोसायंत [अकोशायमान, विकसत्] ओ० १९ अक्किट्ट [अक्लिष्ट] जी० ३।६३० अवकोह [अकोध] ओ० १६ द अवल [अक्ष] ओ० १२२ अक्खय [अक्षय] ओ० १६,२१,४४. रा० ८,२००, २६२. जी० ३।४९,२७२,३४०,४४७,७६० अक्सर [अक्षर] ओ० ७१,१८२. रा० ६१,२७०. জী৹ ২।४३४ अक्खाइगपेच्छा [आख्यायकप्रेक्षा] जी० ३।६१६ अक्खाडम [अक्षवाटक] रा० ३४,६६,२१८,३००. জী৹ ই।ই৩৩,४६४,⊂**६१** अक्लाडय [अक्षवाटक] रा० ३६,२१७,३००, ३२१,३३८. जी० ३।४६५,४८६,४०३,८६० अक्खात [आख्यात] जी० ३।२३२ अवलामित्ता [अक्षमयित्वा] रा० ७७६ अक्साय [आख्यात] रा० १२४,१२९,१६३,१६९. जी० १११;३१७७,१६१,१७४,२४७,३३४, **३४४,३४४,३४७**,६४५,७२५,७३३**,१**०**३**५

**अक्लीण** [अक्षीण] रा० ७११ अक्खीणमहाणसिय [अक्षीणमहानसिक] ओ० २४ अक्लुभियजल [अक्षुभितजल] जी० ३।७८३,७८४ अक्खेवणी [आक्षेपणी] ओ० ४५ अखंड [अखण्ड] ओ० १९. जी० ३।५९६ अखूभियजल [अक्षुभितजल] जी० ३।७८३ अगड [अवट] ओ० १,६६ अगडमह [अवटमह] रा० ६६८ अगणि [अग्नि] रा० ७४७. जी० ३७७७ अगणिकाय [अग्निकाय] रा० ७६७. জী৹ ঝাদ্ব ४१ अयत्थिगुम्म [अगस्तिगुल्म] जी० ३।५८० अगरला [अगरला,अगरल्लि] ओ० ७१. रा० ६१ अगरलघुयत्त [अगरलघुकत्व] रा० ७६३ अगलुय [अगरुक] ओ० ११०,१३३ अगामिया [अग्रामिका] ओ० ११६,११७. रा० ७६४,७७४ क्षगार [अगार] ओ० १४,२३,४२,७६,७८,१२०, १४१. रा० ७०,१३३, ६७२, ६८७, ६८, ₹€X, 50€, 580, 582 अगारधम्म [अगारधर्म] ओ० ७४,७७ अगारसामाइय [अगारसामायिक] ओ० ७७ अगिला [दे० अग्लानि] ओ० ७१. रा० ७२० अगुरु [अगुरु] रा० ३० अगेज्झ [अग्राह्य] ओ० ५ जी० ३।२७४ अगग [अग्र] ओ० २३,६९. रा० ६९,७०,१३३, २९१,३४१,४९४. जी० ३।३०३,४५७,५१६, ४४७,४८०,४६७,६७४ अःगमहिसी [अग्रमहिषी] रा० ७,४२,४७,५६,५८, २८०,६५९. जी० ३।३४०, ३५०, ३४१, ४४६,४४८,४५७,४५६,४६३,९१६ से ६२२, १०२३,१०२६ अग्गय [अग्रक] जी० ३।४९१ अग्गलपासाय [अर्गलाप्रासाद] रा० १३०. জী০ ই।ই০০

अग्गला [अर्यला] रा० १३०. जी० ३।३०० अग्गसिहर [अग्रशिखर] ओ० ५,८. रा० ३२. জী৹ ই।২৬४,३৬২ अग्गसो [अग्रशस्] जी० ११४८,७३,७८,८१ अग्गहत्य [अग्रहस्त] ओ० ४७. रा० १२,७१४, ७४८ से ७६१. जी० ३।११८ अगिग [अग्नि] ओ० ४८,१८४. रा० ७९१. जीव हाइव्ह, नइइ अग्गेज्स [अग्राह्य] ओ० ५ अग्गोदय (अग्रोदक) जी० ३१७३३ सर्चड [अचण्ड] जी० ३। १९ १ जीव अचक्खुदंसणि [ अचक्षुदंर्शनिन् ] जी० १।२९,८६, 80; E1838, 833,830,880 अखरिम [अचरम] रा० ६२. जी० ६।६३,६५,६६ असवल [अचपल] रा० १२ अचिस [अचित्त] ओ० २८,४६,६९,७०. रा० ७७८ अचिर [अचिर] जी० ३।४६० अचोक्स [दे० अचोक्ष] रा० ६,१२. जी० ३।६२२ √अच्च [अर्च्]-अच्चेइ ओ० २. रा० २९१. जी० ३।४१६-अच्चेति जी० ३।४४७ अच्चंत [अत्यन्त] ओ० १४. रा० ६७१ अच्चणिज्ज [अर्चनीय] ओ० २. रा० २४०,२७६. जी० ३।४०२,४४२,१०२४ अच्चणिया [अर्चनिका] रा० ६५४,६४४. जी० ३।४६३,४६६,४१७,४४४,४४४ अच्चा [अर्चा] ओ० ७२ **अच्छासण्ण** [अत्यासन्त ] ओ० ४७,४२,५३. रा० ६०,६८७,६९२,७१६ अच्चि [अर्चिस्] ओ० ४७,७२. रा० १७,१८,२०, ३२,१२६. जी० १७५; झन्४,१७४,२८८, 300,362 अच्चिकत [ अचिःकान्त ] जी० ३।१७४ अच्चिकुड [अचि.कूट] जी० ३।१७५ अण्चिज्याय [अचिध्वंज | जी० ३।१७४ **अच्चिप्पभ** [अचिःप्रभ] जी० ३।१७१

अच्चिमालि [अचिमांलिन्] रा० १२४ अच्चिमाली [अचिर्मालिनी] जी० ३। ६२०,१०२३, १०२६ अण्चियावत्त [अचिरावत्तं] जी० ३। १७५ अचिचलेस्स [अचिलेंश्य] जी० ३।१७५ अच्चियण्ण [अचिर्वर्ण] जी० ३।१७४ अच्चिसिंग (अचि: श्रुङ्ग) जी० २।१७५ अण्चिसिट्ठ [अचि: शिष्ट] जी० ३।१७४ अच्चूत [अच्युत] जी० ३११०३८,११२२ अच्युत्तरवर्डिसग [अचिरुत्तरावतंसक] जी० ३।१७४ अच्चुय [अच्युत] ओ० १४५,१४६,१६२,१६०; १९२. जीव २१९६; ३११०४४,१०५४,१०५२, १०६६,१०७४,१०==,१०६१,११११,१११२, 8884,8888 अच्चुयवद्द [अच्युतपति] ओ० ५१ अच्चेत्ता [अचित्वा] रा० २९१. जी० ३।४४७ अच्चोबग [अत्युदक] रा० ६,१२. जी० ३१४४७ अच्चोयग [अत्युदक] रा० २८१ अच्छ [अच्छ] ओ० १२,१६४. रा० २१ से २३. ३२,३४,३६,३८,१२४ से १२८, १३१,१३२, १३४,१३७,१४१,१४४ से १४८,१४० से १४३,१४४ से १४७,१६०,१६१,१७४,१८० से १९५,१८८,१६२,१६७,२०६,२११,२१८, २२१,२२२,२२४,२२६,२३०,२३३,२३८, २४२,२४४,२४६,२**५३**,२**५६,२६१,२७**३, २६१. जी० ३।११८,११९,२६१ से २६३, २६६,२६८,२६९,२८६,२८६ से २९७,३०१, ३०२,३०४,३०७,३०८,३१२,३१८,३१९, ३२३ से ३२६,३२८ से ३३०,३३२,३३४, <u> ३३७,३४७,३४८,३४२,३४३,३४४,३६१,</u> **२६४,३७२,३७७,३**८०,३८१,३८३,३८४, \$E7,3EX,3EE,800,808,80E,80E, ४१०,४**१३**,४**१**४,४१८,४२२,४२४,४२७, ४३७,४१७,६३२,६**३**९,६४४,**६४६,६४९**, ६४४,६६१,६६८,६७१,६७४,६८९,७२४, ७२७,७३६,७४०,७४८,८३८,८४२,८४४,

द४७,द६३,दद१,दद२,द६१,द६३ से द६४, -EU,-EE,E08,E08,E02,E09,E80, E ? ?, E ? =, E X 19, ? 0 3 =, ? 0 3 E, ? 0 = ? √अच्छ ]आस्] —अच्छेज्ज ओ० १६५।१८ अच्छ [ऋक्ष] जी० ३।६२० अच्छणधरग [आंसनगृहक] रा० १०२,१०३. ৰ্গীত হাৰ্হাই अच्छपण [आच्छन्त] जी० ३।४८१ अच्छत्तग [अछत्रक] ओ० १४४,१६४,१६६-रा० ५१६ अच्छरस [अच्छरस] रा० १९२. जी० ३।४५७ अच्छरा [दे०] ओ० १७०. जी० ३।८६ अच्छरा [अप्सरस्] रा० ३२,२०६,२११. जी० ३।३७२,५९७,६२९,११२२ अच्छि [अक्षि] ओ० १९. रा० २५४. जी० ३1१२९१८,३०३,४१४,५९६ ष्ठचिछज्जांत [आच्छिद्यमान] रा० ७७ अच्छिह [अच्छिद्र] ओ० ४,५,१९,२६. जी० ३।२७४,४९६,४९७ अच्छिपत्त [अक्षिपत्र] रा० २५४. जी० ३।४१५ अच्छिवेदणा [अक्षिवेदना] जी० ३१६२८ अच्छेता [अछित्वा] जी० ३।९९० अच्छेयकर [अछेदकर] ओ० ४० अच्छेरग [आश्चर्य ] जी० ३।१९७ अज [अज | जी० ३।६१५ अजरा | अजरा ] ओ० १९४।१८ अजहण्ण [अजघन्य] जी० ३।५९७ अजहण्णमणुक्कोस [अजधन्योत्कर्ध] जी॰ १४८, X٥ अजिल [अजिन] ओ० २६ **अजित** [अजित] जी० ३।४४८ अजिय [अजित] ओ० ६८. रा० २८२. জী০ ২।४४८ अजीरग [अजीरक] जी० ३।६२८ अजीव [अजीव] ओ० ७१,१२०,१३७,१३८,१६२. अजीवाभिगम [अजीवाभिगम] जी० १।२ से ५ अजोगत्त [अयोगत्व] ओ० १५२ अजोगि [अयोगिन्] जी० १।१३३; १।२१,४६, 86,23,883,885,885,820 अज्ज [अद्य] रा० ६५५,६५९ अज्ज [आर्य] ओ० १४६ अज्जग [आर्यक] रा० ७४०,७४१,७७३ अज्जय [आर्यक] रा० ७४०,७४१ अज्जव [आर्जव] ओ० २५,४३. रा० ६८६,८१४ अज्जा [आर्या | रा० ८०६ अण्जिया [आयिका] ओ० १९. रा० ७४२,७४३ अज्जूम [अर्जुन] ओ० ६,१०. जी० ३।५८३ अ**ज्जुणसुवण्णगम**य [अर्जुनसुवर्णकमय] ओ० १९४ अज्वतियय [आध्यात्मिक] रा० ६,२७५,२७६, ६नन,७३२,७३७,७३न,७४६,७६न,७७७, ७६१,७१३. जी० ३।४४१,४४२ अज्झयण [अध्ययन] जी० १।१ अज्झबसाण [अध्यवसान] ओ० ११९,१४६. জী৹ ২।१২৪।૬ अज्झोयरय [अध्यवतरक] ओ० १३४ √अज्झोववज्ज [अधि+उप+पद्] --- अज्भोववज्जिहिति ओ० १५०. रा० ५११ अज्झोववण्ण [अध्युषपन्न] रा० ७५३ अट्ट [आर्त] ओ० ७४ अट्ट (झाण) [आर्तध्यान] वो० ४३ अट्रज्झाण |आर्तध्यान ] रा० ७६५ अट्टणसाला [अट्टनशाला] ओ० ६३ अट्टालग [अट्टालक] जी० ३।५९४,६०४ अट्टालय [अट्टालक] ओ० १. रा० ६५४,६५५. জী৹ ২।২২४ अट्टियचित्त [अर्तितचित्त ] ओ० ७४। १ अद्र ] अर्थ | औ० २०,२१,५२,५४,५७,५९,६१, ६३,८९ से ६४,१११ से ११४,११७ से १२०, १५४,१५५,१५७ से १६०,१६२,१६५ से १६७,१६६,१७०,**१**७२,१७७,१८**३,१**८४, १८६ से १९१. रा० १३,१६,२५ से ३१,४५,

रा० ६६८,७४२,७८६

X0, & X, & ZZ, & 03, & 09, & E0, & E, Z00, E = 3, इन७,इ९०,इ९न,७०१,७१३,७१४,७१६, ७१९,७२६,७४१ से ७४३,७४४,७४७,७४९, ७६१,७६३,७६४,७७१,७७४,७७६ से ७७८, ७८६,७८६,७६२,८१६. जी० ३।४८,८४,८४, १६८ से २०३.२३६,२४७,२५६,२६६,२७१, २७८ से २८४,३४०,४४३,४७७,४९९,६०१, ६०२,६०४ से ६०७,६०६,६१०,६१२ से ६१७,६२२ से ६२४,६२६,६२८,६३७,६४१, *६७४,७००,७०९,७२१,७३१,७३*८,७४१, ७४३,७४६,७१०,७६०,७६३,७६४,७६८, 000,00E,0=2,0=E,0=0,=0=,=8E, दर्ह,द३३,द३६,द४०,द४४,द४७,द६०, द६३,६६६,६६८,५७२,६७४,६७८,५५०,६२३, हरू, हर७, ह४१, ह४८, ह४६, हव से हहर. १०२४ से १९६, १९१, १०२४, १०२४, १०४२, १०४४,१०४६,१०४६,१०५१ से १०५३ अट्ट [अष्टन्] ओ० १२. रा० ५. जी १।३९ अहुअट्ठमिया [अष्टाष्टकिका] ओ० २४ **अट्टतीस** [अष्टात्रिशत्] जी० ३१७० अट्टपिट्टणिट्टिता [अष्टपिष्टनिष्ठिता] जी० ३१८६० अहुभाइया [अध्टभाषिका] रा० ७७२ अद्वभाग [अष्टभाग] जी० २।३९,४४ अट्टम [अष्टम] ओ० १७४,१७६ अट्टमभत्त [अष्टमभक्त] ओ० ३२. जी० ३। १९९ अट्टमी [अष्टमी] ओ० १२०,१६२. रा० ६९८, ७४२,७८९. जी० ३।७२३,७२९ अद्रया [अर्थ] ओ० २०,१३७,१३८ अट्टविष्ठ [अष्टविध] जी० ११५,१०;२११७; ₹1€ १७; =1 १, २३; 81880, २०६, २२० अट्ठसिर [अष्टशिरस्] ओ० १३ अद्वार [अष्टादशन्] ओ० १९२ अट्ठारस [अष्टादणन्] ओ० १४८. जी० २।४८ अट्ठारसबिह [अष्टादशविध] रा० ५०६,५१० अट्ठावण्ण [अष्टपञ्चाशत्] जी० ३।६६१

अट्ठावय [अब्टापद] ओ० १४६. रा० ८०६. জী০ ২। হু হু ৩ अट्ठावीस [अष्टाविंशति] ओ० १७०. रा० १८८. জী০ ইাধ্ अट्ठावीसइविह [अष्टाविंशतिविध] जी० २।१२ अट्टावीसतिषिध [अष्टाविंशतिविध] जी० २।२१६ अट्ठावीसतिविह (अष्टाविंशतिविध) ओ० ५० अट्ठासीत [अष्टासीति ] जी० २। = ३७ अद्वि [अस्थि] ओ० १२०. रा० ६९८,७४२, ७८६. जी० ११९४,१३४;३१६२,१०६० अट्ठिजुढ [अस्थियुद्ध] रा० ८०६ **अट्ठिसुह** [अस्थिसुख] ओ० ६३ अडड [अटट] जी० ३। ५४१ अडतालीस [अध्टचरवारिशत्] जी० ३१८२७ अडयाल [अष्टचत्वारिशत्] रा० १२६. জী০ ই।ইধুং अडयासीस [अष्टचरवारिशत्] रा० २३५. জী০ ই।হ্দ अडयालीसग्रंसिय [अष्टचत्वारिशदस्तिक] रा० २३६ अडयालीसइकोडीय [अप्टचत्वारिशत्कोटीक] रा० २३९ अडयालीसइविग्गहिय (अष्टचत्वर्धारणद्विग्रहिक) रा॰ २३१ अडवी [अटवी] ओ० ११६,११७. रा० ७४४,७६५ अडहत्तर (अध्टसप्तति) जी० ३।७७ **अड्ट** [आढघ] ओ० १४,१४१. रा० ६७१,६७५, ७९९. जी० ३।५९४ अड्ड [अर्ध] जी० ३।६६२ अडुबावट्टि (अर्धद्विषपटि ) जी० ३।६६३ अड्डाइज्ज [अर्धतृतीय | २१० १२६. जी० ३१६१, २३७,२३८,२४३,३४४,६३२,६४७,६४९, ६७३,६७४,९७३,१०५३,१०५५; ५।२९ अणइक्कमणिज्ज [अनतिक्रमणीय] ओ० १२०, १६२. रा० ६६८,७५२,७८६ अणइक्कमणिज्जवयण [अनतिक्रमणीयवचन] ओ० ६१ अणईइ [अनीति'] ओ० ५,८. जी० ३।२७४

ईति रहित ।

अर्णत (अनन्त) ओ० १६,२१,५४,१५३,१६४, १६६,१७२,१८२,१९४15. TIO 5,787,588, जी० १।६,६७,७३,७४,१३६; २१६३,६४,००, १३२; ३१४४७; ४१६,२४,२९,४१ से ४१,४६ से ५८; ८१४; ६१२३,२६,३३,६६,७१,७३,७५, १६४,१६४,१७८,२०२,२०४,२३५ अणंतक [अनन्तक] जी० ३।४५१ अणंतखुत्तो [अनन्तकृत्वस्] जी० ३।१२७,६७५, ११२म से ११३० अर्णतम [अनन्तक] ओ० १०८,१३१. रा० २८५ अणंतगुण | अनन्तगुण ] ओ० १९५।१४. जी० १।३४,३७,४०,१४३; २। १३४,१३६, 83= 8x8' 8x5' 8x8' 8x8' 8x8' 8x8' ३।११३=;४।१९ से २१,२५; ४।१०,२०,२५, २७,३१,३३,३६,४२,६०;६।१२;७।२१ से २३; नार, हार से ७,१४,१७,२०,२७ से २९,३४,६१,६२,६६,७४,८७,१४,१००,१०८, ११२,१२०,१३०,१४०,१४७,१४४,१४५, १६६,१६९,१५१,१५४,१९६,२०५,२२०, २३१,२५१,२४३,२५४,२६६,२८७,२८६, २९२,२९३ अणंतपएसिय [अनस्तप्रदेशिक] जी० १।३३ अर्णतर [अनन्तर] ओ० ६४,१४१,१८२,१६२. रा० ४० से ४४,७०,२१२,७७३,७९१. जी० १।४३,६१,११६;३।१२१,१४६,६६५, **५३८।२४,५५२,११२७** अणंतरसिद्ध [अनन्तरसिद्ध] जी० १।७,५ अणंतवाग [अनन्तवर्ग ] ओ० १६५।१५ अणंतवत्तियानुपेहा [अनन्तवृत्तिता(का)नुप्रेक्षा] ओ० ४३ अणंतसंसारिय [अनन्तसंसारिक] रा० ६२ अणगार [अनगार] ओ० २७,४४,०२,१५२, **१६४,१६९. रा० ६८६,७११,८१३.** जी० ३।१९८८ से २०९ अणगारधम्म [अनगारधर्म] ओ० ७४,७६

अणगारसामाइय [अनगारसामायिक] ओ० ७६ अणगारिया [अनगारिता] ओ० २३,४२,७६,७८, १२०,१४१. रा० ६८७,६८६,६९५,८१२ अणच्चासायणा [अनत्याशातना] ओ० ४० अणच्चासः यणाविणय [अनत्याशातनाविनय] ओ० ४० अणट्ठ [अनर्थ] ओ० १२०,१६०. रा० ६६⊏, ७४२,७८६ अणद्वादंड [अनथंदण्ड] ओ० १३६ अणण्हयकर [अनास्नवकर] ओ० ४० अणस्थवंड [अनथंदण्ड] ओ० १०४,१२७ अणत्यवंबवेरमण [अनर्थदण्डविरमण] ओ० ७७ अणवर्कसमाण [अनवकांक्षत्] ओ० ११७ अणवज्ज [अनवद्य] ओ० १३७,१३८ अणवटुप्पारिह [अनवस्थाप्याई ] अो० ३६ अणवद्वित [अनवस्थित] जी० ३।८३८।१० अणवट्टिय [अनवस्थित] जी० ३।५३८।३२,५४१ **अणवण्णिय** [अनपस्तिक] ओ० ४९ अणवयग्ग [अनवदग्र] ओ० ४६ अणवरय [अनवरत] ओ० ६८ अणलण (अनशन ) ओ० ३१,३२,११७,१४०,१५४, १४७,१६२,१६४,१६६. रा० ८१६ अणह [अनघ] ओ० ६८ अणाइ [अनादि] ओ० ४६ अणाइय | अनादिक | जी० ६।११,१३,१६,६५, £E,= E, 2 EX, 20E अणाउत्त अनायुक्त ओ० ४० अणागम [अनागत] ओ० १८३,१८४,१९५ अणामार (अनाकार) ओ० १९५।११. जी० १।३२,८७; ३।१०६,१४४,१११०; हाइ६,इ७ अणाढायमाण [अनादियमाण] रा० ७६०,७६१ अणाढित [अनादृत] जी० ३।७०० अणाढिय [अनावृत] जी० २।६८०,७००,७० १, ¥30

अणादिया [अनादुता] जी० ३:७००,७०१

अणाणुपुरुवी (अनानुपूर्वी | जी० १।४८ अणादिय [ अनादिक ] जी० ६।२५,१३३ अणावीय [अनादिक] जी० ६।२३,३१,३४,६४, ७२,**८१,११०,१७४**,२०२,२०६ अणारंभ (अनारम्भ | ओ० १६३ अणारिय (अन्धर्य) ओ० ७१. जी० ३।६२व अणालोइय | अनाजोचित | ओ॰ ६५,११५,१५६ अणाहारग [अनाहारक] जी० ६ा३व,५१ से ५५ अणाहारय (अनाहारक) जी० ९।४२ से ४= **अणिव |** अनिल्द्र | जी० ३।११२० अणिविय | अगिन्द्रिय | जीव हा १५ से १७,१६७, **१**६६,२<u>४</u>६,२६**१**,२६<del>४</del>,२६६ अणिकिसत [अनिक्षिप्त] ओ० ११६ अणिगण [अनग्न | जी० ३।५९५ अणिच्च (अनित्य) ओ० ७४ अणिच्चाणुपेहा |अनित्यानुप्रेक्षा | औ० ४३ अणिजिजण्ण [अनिर्जीर्ण] रा० ७४१ अणिट्र [अनिष्ट] रा० ७६७, जीव १।६५; 3167,60,877,873,875,875 अणिद्वतरक [अनिप्टतरक] जी० ३१८४,८४ अणिटुलरय [अनिष्टतरक] जी० ३।११६,११६ अणिट्ठुर [अनिष्ठुर] ओ० ४० अणिट्ठ्हय |अनिष्ठीवक| ओ० ३६ अणित्थंत्य (अनित्यंस्य ) ओ० १९४१८, জীত ধাহত,৩४ अणिय | अनीक | रा० ७,४७,४६,४८,२८०. जी० ३।३४०,४४६,४४७,५६३ अणियट्टि [अनिवृत्ति] ओ० ४३ अणियाण [अनिदान] ओ० २५,१६४ **अणियाहिवइ** [अनीकाधिपति] रा० ७,४६,४≍, २८०. जी० ३।३४०,४४६,४४७,४६३ अणियाहिवति [अनीकाश्चिपति] ए० ४३. जी० ३।३४४,४६१ अणिल [अनिल] ओ० २७. रा० ५१३ अणिसिट्ठ [अनिसृष्ट] ओ० १३४

अणिहुतिदिय [अनिभूतेन्द्रिय] ओ० ४६ अणीय [अनीक] रा० ५६ **अणीयाहिवइ** [अनीकाञिपति] रा० ५३ अणु [अणु] जो० १,४४; ३।९९८,९९९ अणुगंतव्व [अनुगन्तव्य] जी० ३।५,१२,३५५, ৬৩২ √अणुगच्छ [अनु | गम् ] — अणुगच्छइ ओ० २१, रा० ५---अणुगव्छंति जी० ३।४४५ अणुगच्छित्ता [अनुगम्य | ओ० २१. रा० ५ अणुग्धसित [अनवर्घापत] रा० १४९ **√अणुचर** [अनु/+चर्]---अनुचरति जी० सेदरेदा११ अणुचरंत [अनुनरत्] जी० ३।८३८।१० अणुचरिय [अनुचरित] ओ० १ अणुचिण्ण | अनुचीर्ण ] जी० १।१ √अणुजाण [अनु+ ज्ञा]---अणुजाणउ रा० ६८. -अणुनाणंति रा० ७१३.--अणुजाणेज्जाह **Tio 60E** अणुताव (अनुताप) जी० ३।१२८ अणुत (अणुत्व) जी० ३१९९९ अणुत्तर [अनुत्तर] ओ० ७२,७९ से ८१,१५३, १६४,१६६. रा० ५१४. जीव ३११२,७७, ११७,१०३५,१०५६,१०५४,१०५६,१०९२, ११०४,११०६ से ११११,१११३,१११⊂, ११२०,११२३,११२५ अणुत्तरविमःण [अनुततरविमान] औ० १९०. जी० ३।१०६६,१०७०,१०७२,१०७४,१०७७ से १०५२,१०५६,११३० अणुत्तरोववाइय [अनुत्तरोपपातिक] जी० १।१२३; 318058,8080 अणुत्तरोववाइयदसाधर [अनुत्तरोपपालिकदशाधर] ओ ०४४ अणुत्तरोववातिय | अनुत्त रोधपातिक ] जी॰ २१९३, 65,885,886; 318005,8080,8085, १०६८,१०६६,११०६,११०८,१११४,१११६, 1115,1822

अनुद्दवणकर [अनुद्दवणकर] ओ० ४० अणुपत्त [अनुप्राप्त] ओ० ११६,११७. रा० ५०६, **५१०** अणुपदाहिण [अनुप्रदक्षिण] जी० ३।४४३ **अणुपयाहिणोकरेमाण** [अनुप्रदक्षिणीकुर्वत्] TIO 80,85,200,253,255,383,305, ¥₹¥,88€€,XX€,€8€ **अणूपरियट्टिसा** [अनुपरिवर्त्य] ओ० १७० अणुपरियद्विताणं [अनुपरिवर्त्यं] जी० ३।५६ **√अणुपरियड** [अनु+परि+वृत्]---अणुपरिय-डंति जी० ३।५४२ अण्पविट्ठ [अनुप्रविष्ट] रा० ७४६,७४७,७६४, ৬৩४ √अण्पविस [अनु-+प्र+विश्]---अणुपविसइ अो० १९. रा० २७७.-अणुपविसति रा० २८३. जी० ३।४४३ **अणुपविसमाण** [अनुप्रविशत् ] रा० ७४३,७६४ अणुपविसित्ता [अनुप्रविश्य] ओ० ४६. रा० २७७. जी० ३।४४३ **√अणुपाल [अनु**+पालय्] ---अणुपालेंति ३।२१८ अगुपालेला [अनुपाल्य ] ओ० १६२. जी० २।६३० अणुपालेमाण [अनुपालयत् ] ओ० १२०. रा० ६९८,७४२,७८९ अज्युख्य [अमुपूर्य ] ओ० ४,८,१९,११६,११७, १६८. रा० ८०३. जी० ३।११८,११९,२७४, 288,280 अणुष्पण्ण [ अनुत्पन्त ] ओ० १६६ अणुम्पत [अनुप्राप्त] रा० ७६४,७७४ अणुप्पदाहिणीकरेमाण [अनुप्रदक्षिणीकुर्वत् | जी० ३।४१२ अणुप्पयाहिण [अनुप्रदक्षिण] जी० ३।४४५ **अजुप्पयाहिणोकरेमाण** [अनुप्रदक्षिणीकुर्वत्] जी० ३१४४९,४४४,४४७,४७८,४५२,४२२, **પ્ર**હ,પ્ર૪૪,પ્ર૪**१**,પ્ર<del>પ્</del>રદ્ **अजुप्पविद्व** [अनुप्रविष्ट] रा० १२२,१२३

**√अणुप्पविस** [अनु+प्र+विश्]---अणुप्पविसति रा० ७४४. जी० ३।४४३ अणुप्पविसमाण [ अनुप्रविशत् ] जी० ३।१११ अणूप्पविसित्ता [अनुप्रविश्य] रा० ७१५. জী০ ২৷४४২ अण्पविसित्ताणं [अनुप्रविध्य] रा० १२३ **√अणुप्पेह** [अनु+प्र+ईक्ष्]---अणुप्पेहंति জী০ ४५ अणुष्पेहा (अनुप्रेक्षा) ओ० ४२,४३ अणुबद्ध [अनुबद्ध] जी० ३।११६,१२६ अणुब्भड [अनुद्भट] जी० ३।५९७ अणुभाव [अनुभाव] जी० ३।१२९।६;=३=।१६ अणुमय [अनुमत] ओ० ११७. रा० ७४० से ७४३,७६६. जी० १1१;३।५६७ अजुयत्तेमाज [अनुवर्तमान] रा० १६ अणुरत्त [अनुरक्त] ओ० १४. रा० ६७२ अणुराग [अनुराग] ओ० ६६,१२०,१६२. रा० ६६८,७५२,७८६ √अणुलिप [अनु+लिम्प्]-अणुलिपइ रा० २९१. जी० ३।४४७.--अणुलिपति रा० २=५. जी० ३।४५१ **अणुलिपइता** [अनुलिप्य] रा० २९१ अणुलिपित्तए { अनुलेप्तुम् ] ओ० ११०,१३३ अणु**लिपिता** [अनुलिप्त] रा० २५५. जी० ३।४५१ अणुलित [अनुलिप्ज] ओ० ४७,६३ अणुलिहंत [अनुलिहत्] ओ० ६४. रा० ५०,५२, ४६,१३७,२३१,२४७. जी० ३।३०७,३९३ अणुलेवण [अनुनेपन | अं।० ४७,७२ अणुवएस [अनुपदेश] रा० ७६४ अणुवत्तेमाण [अनुवर्तमान] रा० १६ अणुवाय [अनुवात] रा० ३०. जी० ३१२८३ अणुवाहणग [अनुपानलक] रा० ५१६ अणुविद्ध [अनुविद्ध] रा० २९२. जी० ३।४४७ अणुवीइ [अनुवीचि] जी० १।१

## 223

अणुवेलंघर [अनुवेलन्धर] जी० ३१७४७ से ७४० अणुक्वय [अणुब्रत] ओ० ७७ √अणुसज्ज [अनु+सञ्ज्]—अणुसज्जंति अणोवमा (दे) खाद्यविशेष अण्सज्जणा [अनुसज्जना] जी० ३।२१८,६३१ अणुसार [अनुसार] जी० ३।७७ √अण्हो [अनु+भू]--अणुहोंति ओ० १६५।२१ अणूण [अनून] जी० ३।५३५।२७ अजोग (अनेक) ओ० १,५ से ८,१०,१९,४९,६३, ७१,१९५. रा० ७,१७,१८,२४,३२,५२,५६, £ 8, EE, 808, 20E, 288, 238, 280,048, ७५६,७६२,७६४. जी० ३।११८,११६,२४६, २७४ से २७७,२८६,३७२,३७४,३९३,१८१, ४८४ से ५९६,६३६,६४६,६७३,६७४,७४६, द्द४,दद्द अणेगजीव [अनेकजीव] जी० १।७१ **अजेगवासपरियाय** [अने**क**वर्षपर्याय] ओ० २३ अजेगविश्व [अपनेकविध] जी० २।१०३ अणेगविह |अनेकविध ] ओ० ३२ से ३६. जीव ११६,६४,७१ से ७३,७५,५१,५४,५५, = E, 800, 805, 882, 888, 882; 216 अणेगसिद्ध [अनेकसिद्ध ] जी० १। ५ अणोगाढ [अनवगढ] जी० १।४२ अणोग्धसिय [अनवर्धावत] जी० ३।३२२ अणोवम |अनुपम | ओ० १६५।१७,२२. अणोवमा [दे०] खाद्यविशेष जी० ३।६०१ अजोवाहणग [अनुपानत्क] ओ० १५४,१६५,१६६ अण्ण [अन्य] ओ० १७,२३,५२,७९ से ५१. रा० ४०,५६,५८,१३२,१८४,२०५ से २०८, 280,205,250,252,256,268,580, इद७,इद्द,७०४,७४५ से ७६४,७७१ से ७७३,८०३,८०४. जी० १।५०,६५,७१ से ११४ से ११६,११८८,१२१; ३।२६७,३०२, ३१३,३४०,३४१,३६८ से २७१,३८८,३६०, ८०२,४४२,४४६,४४८**,४५५,४५७,५५७**,

४६३,४६९,६३७,६३८,६४२,६४८ से ६६०, ६६४,६६६,६७८,७१०,७१३,७२१,७३६, ७४७,७६०,७६१,७६३ से ७६६,७६८,७७० से ७७४,०००,०१४,०४३,०४६,९१७,१०२४ अण्ण [अन्न] ओ० १४९,१४०. रा० ५१०,५११ अण्णउत्थिय [अन्यय्थिक] ओ० १३६. जी० ३।२१०,२११ अण्णगिलायय [अन्तग्लायक] ओ० ३४ **अण्णजीविय** [अन्य तीविक] रा० ७३३,७३४,७३६ अण्णत अन्यत्व रा० ७६२,७६३ अण्णत्य (अन्यत्र) ओ० ५६ जी० ३।७२१ अण्णमण्ण [अन्योन्य] ओ० ५२,११७,११८. रा० १६,४०,१३२,१३३,६८७,७१३,७७४. जी० ३।२२,२७,११०,१११,२६५,३०३,६२०, ૬૨૪,૬૪૪ अण्णयर [अन्यतर] ओ० २८,७२,८ से ६३, १०५,१०६,१२८,१२६,१८६. रा० ७५० से ७४३,७९९. जी० १।३३;३।२३९ अण्णया [अन्यदा] वो० ११६. रा० ६८० अण्णलिमसित [अन्यलिङ्गसित ] जी० १। -अण्णविहि [अन्नविधि] ओ० १४६ अण्णाण [अज्ञान] ओ० ४६. जी० १।१०१,१२८; ३१४२ अण्णाणवोस [अज्ञानदोष] ओ० ४३ अण्णाणि (अज्ञानिन् ) जी० १।३०,५७,६६,११६, १३३,१३६;३।१०४,१५२,११०७,११०५; हाइ०,३२,३४,१४३,१४६,१६४ से १६६ अण्णाणिय [अज्ञानिक] जी० ९१२४ अण्णायचरय [अज्ञातचरक] ओ० ३४ अण्णोण्ण [अन्यांस्य] ओ० १९५१९ **√अण्ह** [आ+स्नु]—अण्हाइ ओ० ५४ अण्हयकर (आस्तवकर] ओ० ४० अण्हाणग [अस्तानक] ओ० ८६,६२. रा० ८१६ अण्हाणय [अस्नानक] आं० १५४,१६५,१६६ अति [अयि] रा० १२१,६६८

#### **अ**तिक्कम-अ**द्य**

**√ अतिककम** {अति + कम् ] ----अतिक्कमइ जी० ३,५३५।१६ अतित्यगरसिद्ध [अतीर्थकरसिद्ध] जी० १। म अतित्यसिद्ध [अतीर्थसिद्ध ] जी० १। = अतिदूर [अतिदूर] रा० ६०,६१२,७१६ अतिमट्टिय [अतिमृत्तिक] रा० १२,२५१. জী৹ ২।४४७ अतिमुत्तग [लया] [अतिमुक्तकलता] জী০ ইঃ২६ন अतिमुत्तमंडवग [अतिमुक्तमण्डपक] जी० ३।२९६ अतिमुत्तलयामंडवग [अतिमुक्तलतामण्डपक] रा० १८४ अतिमुत्तलयामंडवय [अतिमुक्तलतामण्डाक] TIO 15% अतिरस [अतिरस] जी० ३। १९२ अतिरेग [अतिरेक] रा० २=४. जी० ३।४५१, xE0,073,030,037 **√अतिवय** [अति + त्रज्] --अतिवयंति জী০ ২।१২৪ अतिहिसंबिभाग [अतिथिसंविभाग] ओ० ७७ अत्तीत [अप्तीत] ओ० १६ प अतीव [अतीव] रा० ४०,१३५,२३६. जी० ३।२६४,३०२,३०३,३०४,३१३,३९८, ५=१,५६६ अतुरिय [अखरित] रा० १२ अतुल | अतुल | जो० १९४।२२ अत्तगवेसणया [आर्तगवेवणता ] ओ० ४० अत्तय [आत्मज] रा० ६७३ अत्तुक्कोसिय [आत्मोत्कॉपक] ओ० १५६ अत्थ [अर्थ] ओ० ३७. रा० १४,२९२,७३७, ৬৬४. জী৹ ২।২২০,४২৩ अत्थ | अस्त ] जी० ३।१७६,१७८,१८८,१८०,१८२ अत्थओ [अर्थतम्] ओ० ४६. रा० ८०६,८०७ अत्थणिडर [अर्थनिकुर] जी० ६। म४ १

अत्यत्यिय [अर्थाथिक] ओ० ६० अत्यमणत्यमणयविभत्ति [अस्तमनास्तमनप्रविभक्ति] रा० ५६ अत्यरग [आस्तरक] रा० ३७. जी० ३।३११ अस्थसत्थ (अर्थभास्त्र) रा० ६७४ अत्यि [अधिन्] रा० ७७४ अत्यि (अस्ति) ओ० ७१. जी० ३।२२ अत्यिभाव [अस्तिभाव] ओ० ७१ अत्थिय [अस्थिक] जी० १।७२ अवंतमणग [दे० अदन्तधावनक] रा० द१६ अवंतवणय [दे० अदन्तधावनक] सो० १५४, રે૬૪,**૧૬**૬ अवक्ल [अदक] रा० ७४८,७४६ अबत्तावाण [अदत्तादान] ओ० ७१,७६,७७ अदत्ताबाणवेरमण [अदत्तादानविरमण] ओ० ७१ अविद्रलाभिय |अदृष्टलाभिक | ओ० ३४ अविण्ण [अदत्त ] ओ० १११ से ११२,११७,१३७, १२५ अविण्णादाण [अवत्तादान] ओ० ११७,१२१,१६१, १६३. TIO ६६३,७१७,७६६ अदुत्तरं [दे०] जी० ३।२३९ अनुवा [दे०] जी० ३।१२७ अदूरसामंत [अदूरसामन्त] ओ० ४२,६१,७०,०२. रा० १२३,६८७,६६२,७१६,७३१,७३६, ৬४**८,७७१** अह [आर्ट्र] ओ० ४७ अहारिट्ट [आर्द्रीरिष्ट] रा० २४ जी० ३।२७व अद्ध [अर्थ ] ओ० १७०. रा० ४०,१२८,१४६, १८८, १८६,२०५ से २०८,२२७,२३१,२४७, ६६८,६६६,६८३,७०६,७११,७७२. जी० २।३८,३९,४१,४२ ; ३।८२,१०७,२३८, २४७,२४०,२४६,२६०,२६२,२६३,३००, ३१०,३१३,३४२ से ३४४,३४६,३६१ से ३६४,३६८ से ३७१,३७७,३८३,३८६,३९२, 383,808,808,805,805,805,822,826, र्यदद्, रदन से २७०, २१४, २१६, ६३४, ६४२,

६४४,६४६,६५२,६५३,६५५,६७२ से ६७४, ६७६,६न३,६न४,७०६,७०८,७११,७२७, ७३२,७३७,७१६,७१८,००,५१४,८२१, ≈५१,६३९,६४४,१०१२ से १०१४,१०२८, १०३०.१०३२,१०३३,१०७४,११२४ अद्वकविंदु अधंकपित्थ जीव ३।१००८ अद्धकविद्रक [अर्धकवित्थक] जी० २१२५७ अद्धकाय (अर्धकाय) जी० ३।३२२ अडचंद [अर्थचन्द्र] रा० १२४,१३०,१३७. জী০ ২।২০০,২০৬,২৬৬ अद्धच्छि | अर्धाक्षि ] रा० १३३. जी० ३।३०३ अत्तछद्र [अर्धषष्ठ] जी० ३।४३ अत्रद्रम [अर्घाष्टम] ओ० १४३. रा० ५०१. জী০ ২।২৫২,४০१,६২২ अग्रह्ठारस [अर्धाष्टादशन् ] जी० ३.१०५२ अद्यणयम [अर्धनवम] जी० ३।१०४९ अहतेरस [अर्धत्रयोदशन्] जो० ४४. रा० १२६, १७०. जी० ३।१६६,३५२,३७२,३७४,३७६, ३९४,४१२,४२४,९६= अतुनवम [अर्धनवम] जी० ३।१०४९ अद्धनाराय [अर्धनाराच] जी० १।११६ अत्रयंचम [अर्धपञ्चम] जी० २।३६;३।४२,४७, २४२,४०२,१०४६,१०४७ अद्यमागह [अर्धमागध] जी० ३।५९४ अद्धमागहा [अर्धमागधी | ओ० ७१ रा० ६१ अद्धमास [अर्धमास] जी० ३।११८, १२६ अद्धमासपरियाय | अर्धमासपर्याय | ओ० २३ अद्धमासिय [अर्थमासिक] ओ० ३२ अहसेलसुट्रिय | प्रधंशैलसुस्थित | जी० ३।५१४ अद्वसोलस [अर्धषोडणान्] जी० ३।३६८, ३६९, १०५१ अताहार | अर्घहार | ओ० ४२,६३,१०८,१३१ रा० ४०,१३२,२५४,६५७, से ६५६. जी० 31752,307,848,483 अद्वा [अद्धा, अध्वन्] ओ० ११६,११७,१८२ से

१८४,१९४११४,१४,२२. रा० ७६४,७७४ अद्वाउय (अञ्चायुष्क) जीव ३।२१४ अद्वाढय [अर्घाडक] ओ० ११२,१३७ अद्धाण [अध्वन्] ओ० ११,१२२ अद्धासमय (अध्वतमय ) जी० १।४ अद्भुद्व दि० | जी० ३।१०७,२३७,२४२,२४३ अद्धुव [अध्युव | ओ० २३ अद्धेकूणणउति [ अर्थैकोननवति | जी० ३।७१४ अद्वेकोणणउद्द | अर्धंकोननवति | जी० ३/७६२ अद्वेकोणणवति | अर्धकोननवति | जी० ३।७६८ अचण्ण [अधन्य] रा० ७७४ अधम्म (अधर्म) रा० ६७१ अधम्मकेड [अधर्मकेतु] रा० ६७१ अधन्मक्खाइ [अधर्माख्याति ] रा० ६७१ अषम्मत्यिकाय [अधमोस्तिकाय] रा० ७७१. জী০ १।४ अधम्मपलज्जग (अधर्मप्ररञ्जन ] रा० ६७१ अधम्मपलोइ | अधमंप्रलोकिन् | रा० ६७१ अधम्मसीलसमुयाचार [अधर्मशीलसमुदाचार] रा० ६७१ अधम्माणुय [अधर्मानुग] रा० ६७१ अधम्मिय [आर्धामक] रा० ६७१,७१८,७४०,७४१ अन्नमिद्ध अधमिष्ठ रा ६७१ अधर [अधर] जी० ३।४९७ अधिय (अधिक) जी० ३।३८७,८७८ अर्घ [अधस्] जी० ३।११११ अधेसत्तमा (अधःउप्तमी) जी० २।१००,१०८, १२७,१३८,१४६; ३१२१,३८,४४,४६,४७, ४० से ४२,४४ से ४६,४८,४६,८३ से बद्दुबद से ६०,६२,६६,१०२,१०४,१०७,१०६,११६, १२०,१२३,१२६ अषेसत्तमो [अधःसप्तमी] जी० ३।१६६ अन्न (अन्य) रा० ७ अन्नविहि (अन्नविधि ) रा० ५०६ अपंडिय (अपण्डित) रा० ७३२,७३७,७६५ अपच्छिम [अपश्चिम] ओ० ७७

१११

अपङ्जत्त (अपर्याप्त | रा० ७४६. जी० १।४१,६३, **६५,१०१; ३।१२६।६,१३३,१३४**; ४।२५; ५११७,२४,२६ से ३०,३३,३५,३६,३९४०, ४२,४४,४८,४०,५२,५४ से ६० अपज्जत्तम अपर्याप्तक | ओ० १०२. जी० १११४, र्द,६७,७३,७५,५१,५४,५५,५६,६२,१००, १०३,१११,११२,११६,११८,११८,१२६,१३४; 31835,836,880,885, 812,8,85,20, २२,२३,२४; ४।३,४,७,११,१८ से २२,२४ से २७,३१ से ३४,३६; ६।६०,६३,६४ अयज्जत्तय (अपर्यातक) जी० ११५५,१०१; ४११० अपज्जति [अपर्याप्ति] जीव शार७, ६६, १०१, ११९,१२५,१३३,१३६ अपज्जवसित [अपर्यवसित] जी॰ ६।२३,२४,६६, *٣१,٣२,६२,१०४,१२५,१७५,१६२,२०१,२४०* अपज्जवसिय (अपर्यवसित) ओ० १८३,१८४,१९४. जी० ६११० से १३,१६,२५,२६,३१,३३,३४, 84,48,45,45,50,54,55,68,62,55,65, ११०,११६,१३३,१३४,१४४,१६३,१६४,१७४. १७६,१=०,१९४,२०२,२०५,२०६,२१४,२१६, २२७,२३०,२४६,२६१,२६४,२७६,२≍४ अवहिकूलमाण (अप्रतिकूलयत् ) ओ० ६९ अपडिक्कत | अप्रतिकान्त | ओ ६४,१४४,१४६ **अपडिबद्ध** (अप्रतिबद्ध) ओ० ৬४।४ अपहिविरय [अप्रतिविरत ] ओ० १६१ अपढम (अप्रथम) जी० ११६; ७।१,३,५,१०,१२, १४,१६,१५,२१ से २३; ६:१ से ७,२३२, २३४,२३६,२३५, २४२,२४४,२४६ २४८, २४१ से २४३ २४४,२६७,२६९,२७१,२७३, २७६ २७८,२८०,२८२,२८५,२८७ से २९३ अपतिद्वाण | अप्रतिष्ठान | जी० ३।१२ अपत्तद्व [अप्राध्तार्थ] ग० ७४८,७४६ अपद [अपद] जी० ३।१९६ अपराइत [अपराजित] जी० ३१९४१ अपराइय [अपराजित] जी० ३। १६ ६

अपराजित (अपराजित) जीव ३११८१,२६६,७०७, ७१३,५२४ अपराजिय विषराजित | ओ० १६२.जी० ३।७६६, **८१३** अपराजिया [अपराजिता] जी० ३ ९१६, १०२६ अपरिमाह | अपरिग्रह | अ.० १६३ अपरितायणकर [अपरितापनकर] और ४० अपरित [अपरीत] जी० ११६७,७४; ६।७५,७६, রও अपरिषुय [अपरिषुत] ओ० १११ से ११३,१३७, १३द अवरिभूय [अपरिभूत] ओ० १४१. रा० ६७४, 330 अवरिमिय [अपरिमित] ओ० ४६,७१. रा० ६१ अपरियाइता [अपर्यादाय] जी० ३। १९० अपरियाविय [अपरितापित] जी० ३१६३० अपरिवार [अपरिवार | रा० २०७,२६४,२६७, २६६. जी० ३।४२८,४३१,४३४ अपरिसेसिय [अपरिशेषित] जी० ३।७५१ अपलिक्सीण [अपरिक्षीण] ओ १७१ अपवरक अपवरक जी० ३। ५१४ अपसत्यकायविणय | अप्रशस्तकायविनय | ओ० ४० अपसत्थमणविणय | अप्रशस्तमनोविनय | ओ० ४० अपसत्यवइविणय अप्रश्वस्तवाक्विनय ; ओ० ४० अपस्समाण जिपस्यत् ) और ११७ अपासमाण (अपश्यत्) रा० ७६५ अपि [अपि] ओ० २३. रा० १६. जी० १।३४ अपुद्ध अस्पृष्ट जी० ११४१ अपुद्रसाभिय (अपृष्टलःभिक) ओ० ३४ अयुणरावत्तग [अपुनरावर्तक] ओ० १९,२१,५४ अपुणरायत्तय [अपुनरावर्तक | रा० व अपुणराविति [अगुनसवृत्ति, अगुनरावतिन् ] रा० **২**. হে. জীত ২:४**২**৩ अपुणचत्त [अपुनक्ती] राज २६२, जीव ३।४४७ अपुरुष [ अपूर्ण] रा० ७६३ अघुण्ण [अपुण्य] रा० ७७४

अपुरोपुह्य [अपुरोहित] जी० ३१११२० अपुरुष [अपूर्व] जी० ११४० अपूह' [अपोह] ओ० ११६,१५६ अपेज्ज [अपेय] जी० २।७२१ अप्प अल्प ] ओ० २०,५३,६१ से ६३. रा० १२, ६८४,६९२,७००,७१९,७२६,७४३,७४८, ७४६,७७२,७७४,००२. जी० १।१४३; २१६० से ७२,७४,६६,१३४ से १३८,१४१ से १४६; 31885,858,8030,8835; 8:88,22, २४ ; १११६,२०,२६,२७,३२ से ३६,५२, xe, to ; 9170, 77, 77 ; E19, 8x, xx, २४० से २४३,२४४ २८६ से २९३ अष्प [अत्मन्] ओ० २१ से २६,४४,४२,७१,५२, =E,EX,E=, & 20, & X0, & XX, & XX, & X4, & X4, १६०. रा० ८,९,२८४,६८६,६८७,६८६,६९८, ,378,078,078,047,047,047,058, द१४,द१६,द१७. जी० ३१४६६,६४४ अप्यकंष [अप्रकम्प] ओ० २७. रा० ५१३ अप्पकम्मतराय [अल्पकर्मतरक] रा० ७७२ **अप्पकिरियतराय [अ**ल्पक्रियातरक] रा० ७७२ अ**प्पकोह** [अल्पकोघ] ओ० ३३ अप्पगति [अल्पगति] जी० ३।११२० अष्पज्जुइतराय [अल्पचुतितरक] रा० ७७२ अष्पन्नंझ [अल्पझञ्झ] ओ० ३३ अप्यविकन्म [अप्रतिकर्मन्] ओ० ३२ अष्पडिबद्ध [अप्रतिवद्ध] ओ० २९ **अच्यडिलेस** [अप्रतिवेश्य] ओ० २४ अप्पडिलोमया [अप्रतिलोमता] ओ० ४० अप्पडिवाइ [अप्रतिपातिन्] ओ० ४३ अप्पडिहय [अन्नतिहत] ओ० १९,२१,२७,१४,५४, 54,59,55,710 5,787,944,949,583. ৰী৹ ২া४४৬ अव्यणया [आत्मन्] जी० १.५०,६६ अप्यतर [अल्पतर] ओ० ८६ १. वृत्तौ-वूह [व्यूह] इति व्याख्यातमस्ति ।

अप्पतराय [अल्पतरक] रा० ७७२ अप्पतिद्वाण [अप्रतिष्ठान] जी० ३।११७ अष्यदुस्समाग [अप्रद्रिषत्] रा० ७९६ अप्पनीसासतराथ [अल्पनिःश्वासतरक] रा० ७७२ अण्पनीहारतराय [अल्पनीहारतरक] रा० ७७२ अप्पपरिग्गह [अल्पपरिग्रह] ओ० ६१ से ६३, १६१,१६३ अप्पबहु [अल्पबहु] जी० २।१४१;४।२५ अप्पबहुम [अल्पबहुक] जी० ९।६ अप्पमत्त[अप्रमत्त] ओ० २७ रा० ८१३ अष्पमहतराय [अल्पमहत्तरक] रा० ७७२ अष्यमाण [अल्पमान] ओ० ३३ अप्पमाय (अल्पमाय) ओ० ३३ अप्पलोह (अल्पलोभ) ओ० ३३ अप्पसद्द [अल्प्सप्तब्द] ओ० ३३ अष्पाण [अस्मन्] जी० ३।१९८० से २०९,४५१ अप्पाबहु [अल्ग्बहु] जी० ४।२२;७।२१;६।३७ अप्पाबहुग [अल्पबहुक] जी० ४।२४,७।२०; दार; हार७ अप्पाबहुय [अल्पबहुक] जी० २। १४, ५। १८, ३१; £185,6180,70,3X,68,66,00, =0,68, १००,१०८,११२,१२०,१३०,१४०,१४७, २०८,२२०,२३१ २४४,२६६. अप्पारंभ [अल्पारम्भ] ओ० ६१ से ६३,१६१,१६३ अष्पासवतराय [अल्पाश्रवतरक] रा० ७७२ अप्पाहार[अल्याहार] ओ० ३३ अष्पाहारतराय [अल्पाहारतरक] रा० ७७२ अण्पिचछ [अल्रेच्छ] आ० ६१ से ६३ जी० ३।५९८ अप्पिड्रितराय [अल्पधितरक] रा० ७७२ अप्पिड्रिय [अल्पधिक] जी० ३।१०२१ अण्पिय (अप्रिय) रा० ७६७ जी० १।६४; ३।६२ अण्पियतरक [अप्रियतःक] जी० ३।८४ अप्पुस्सासतराय [अल्पोच्छ्वासतरक] रा. ७७२ अष्युस्सूय [अल्पौत्सुक्य] को० १६४

## **ज**प्पेस-अब्भूट्ठ

अप्येस [अप्रेष्य] जी० ३।११२० अप्पोस्य अल्पौत्सुक्य ) ओ० २५ √अप्फाल [आ+स्फाल्]-अप्फालेइ ओ० ४६ अप्कासिक्जमाग [आस्फाल्यमान] रा० ७७ अष्फालेला [आस्फाल्य] ओ० ४६ अय्फुडिय (अस्फुटित) ओ० १९ जी० ३।४९६ **√अप्फोड** [आ-+ स्फोटय् | --अप्फोडेंति रा० ২ন্থ জী০ ২০४४৬ अप्फोतामंडवग [दे० अप्फोयामण्डाक] जी० ३।२९६ अप्फोयामंडदग [दे० अप्फोयामण्डपक] जी० १८४ अष्कोयासंडवय [दे० अष्कोयामण्डपत्र] रा० १८५ अफरस [अपरष] ओ० ४० अफुसमाणगइ [अस्पृशद्गति | ओ० १५२ अबद्धिय [अबद्धिक] ओ० १६० अबहिल्लेस [अबहिलेंश्य] ओ० २५, १६४ अबहुप्पसण्ण [अबहुप्रसन्न] छो० १११ से ११३, १३७, १३५ अबाधा [अबाधा] जी० २।१३९; ३।३३ से ३६, ६० से ६३, ६४, ६६, ६८, से ७२, ३००, \* ६६, ४७०, ६६२, ६६१,७१४, = २७, १०२२ अबाहा [अवाधा] ओ० १९२. रा० १७०. जी० २।७३, ६७; ३।६६, ३४५, ४६६, ६३९, ७१४, ५०२, ५१४, ५२७, ५४२, १००१ से १००६, १०२२ अबाहूणिया [अबाधोनिका] जी० २।७३, ९७, 359 अब्म [अभ्र] ओ० १९. जी० ३।५९७, ६२६ अब्भंतर [अभ्यन्तर] अ.० १७०. जी० ३।५३८।१२ अब्मंतरय [अभ्यन्तरक] जी० ३। ५६, २६०. ६५१ अब्भवखाण [अभ्याख्यान] ओ० ७१, ११७, १६१, १६३. रा० ७९६ अब्भक्खाणबिवेग (अभ्याख्यानविवेक) ओ० ७१ अब्भणुण्णाय [अभ्युनुज्ञात ] रा० ११, ४६ अब्मरूक्स [अभ्ररुक्ष] जी० ३ ६२६

अज्भवद्दलय [अभ्रवार्दलक] रा० १२, १२३ अन्महित [अभ्यधिक] ओ० ६४,९४,९४, जी० २।३६.४१,४६,४६,५३ से ५५,५७ से ६१,६६,९३,९४,१२९; ३।१०२७ से १०३०, ११३४; ४१९६; ४११०,२६; ६१६; ७११२, १३; ६१४,१७२,१७६,१८६ से १६१,१६३, २०३,२१२,२२४,२२९,२३८,२४१,२७३,२७७ अब्भासवत्तिय [अभ्यासवतित ] ओ० ४० अविभंग (अभ्यङ्ग ) ओ० ६३ अहिमंगण [अभ्य झुन] ओ० ६३ अब्भिमिय (अभ्यञ्जित ) ओ० द् ३ अब्भिंतर [आभ्यन्तर] ओ० ६,३०,५५,६० से ६२. रा० ४३. जी० ३।२३९,२४४,२७४,४४७, ६४३,६४८,७६६,७६७,७७४,८३१ से ८३४, १०५५ अस्मितरय [आभ्यन्तरक] ओ० ३०,३८,४४. जी० ३।६५ द अन्भितरिय [आभ्यन्तरिक | रा० ६६०,६८३. जी० ३।२३४ ते २३६,२४१ से २४३,२४६, २४७,२४९,२४० २४४ से २४६, २४८, ३४१, ५६०,७३३,१०४० से १०४२,१०४४,१०४६, ४०४७,४०९६,४०४३,४०२४ अब्भिंतरिल्ल (आभ्यन्तरिक) जीव ३११००७ **√अब्भुक्ख** [अभि+उक्ष्]—अब्भुक्खइ জী০ ২।४७০ — अब्भुक्खति जी० २,४५८ –-अब्भुवखेइ रा० २९३--अव्भुवखेति জী০ হা४६০ अब्भुविखत्ता [अभ्युक्ष्य] जी० ३।४५८ अब्भुवखेला [अभ्युक्ष्य] रा० २९३. जी० ३।४६० अब्भुग्गत [अभ्युद्गत] जी० ३।३०२,३४९,३६८, ३७०,६३४,१००न अब्भुमाय [अभ्युद्गत] ओ० ६७. रा० ३२,१३२, १३७,१८६,२०४ से २०६,२०८. जी० ३।३०७ **३**४४,३६४,३६**६,३७१,३**७२,४९७,६७३ √अब्भुट्ठ [अभि+ उत्+ षठा] -- अब्भुट्ठेइ

१९२

ओ० २१. रा० ५. जी० ३।४४३--- अब्भुट्ठेति रा० २७७ जी० ३।४५४ अब्भुट्ठेमि. रा० ६९५ अब्भुद्वाण (अभ्युत्थान) ओ० ४० **मन्भुद्विय [अ**म्युत्थित] ओ० २९ अब्भुट्ठेत्ता [अभ्युत्थाय] ओ० २१. रा० ५. জী০ ২।४४২ । अटभुण्णय (अभ्युन्नत) रा० १३३. जी० ३।३०३, १९७ अब्भुव [अद्भुत] रा० ७२ अभयवय | अनयदय | ओ० १९,२१,५४. रा० =,२१२. जी० ३।४५७ अभवसिद्धिय [अभवसिद्धिक] रा० ६२. जी० हा१०ह से ११२ अभासग [अभाषक] जी० ६ ४६,६०,६१ अभासय [अभाषक] जी० हार्यद अभिष्ठ [अभिजित्] जी० ३।८३८।३२,१००७ अभिक्लणं |अभीक्षणम् | रा० १७३. जी० ३ २८५ अभिक्ललाभिय [अभिक्षालाभिक] ओ० ३४ √अभिगच्छ [अभि + गम्]---अभिगच्छइ ओ० ६९. रा० ७१९--अभिगच्छंति अो० ७०.---अभिगच्छामो रा० ७३४ अभिगच्छणया [अभिगमन] ओ० ४० अभिगम [अभिगम] ओ० ६६, ७०. रा० ७७= अभिगमण [अभिगमन] ओ० ५२. रा० ६,१२, **४७,६**८७. जी० ३।**८४**१ अभिगमणिज्ज (अभिगमनीय) रा० ७०३,७३५ अभिगय [अभिगत] ओ० १२०,१६२. रा० ६९८, ७४२, ७८६ अभिगिज्झ |अभिगृह्य] जी० ३। १६२ अभिष्ठट्टिज्जमाण [अभिषट्यमान ] रा० १७३. জী০ ২।২৭২ अभिणंबंत [अभिनन्दत्] ओ० ६० अभिणं दिज्जमाण | अभिनन्द्यमान | ओ० ६९ अभिणय (अभिनय] रा० ११७,२८१. जी० ३।४४७ अभिणिवट्टित्ताणं [अभिनिवंस्यं] रा० ७७०

अभिमुह |अभिमुख | ओ० ४७,५२,६९,७०,८३. रा० ६०,६८७,६६२,७१४,७१६

अभिराम [अभिराम] औ० २,४५,५७,६३. रा० ६,१२,१७,१८,२०,३२,३७,४२,५६,१२६, १३२,२३१,२३६,२४७,२६६. जी० ३।२८८, ३००,३०२,३११,३७२,३६३,३६८,४४७, ४८६

- अभिरूष [अभिरूप] ओ० १,७,८,१० से १३,१४, ७२,१९४ रा० १,१९ से २३,३२,३४,३६ से ३८, १२४,१३०,१३३,१३६,१३७,१४४,१४७, १७४,१७४,२२८,२३१,२३३,२४४,२४७,२४६, ६६८,६७०,६७२,६७६,७००,७०२. जी० ३।२३२,२६१,२६६,२६६,२७६,२८६ से २८८,२६०,३३०३,३०६,३०७,३११, ३८७,३६३,४०७,४१०,४८१,५८५,४८६, ४६६,४६७,६३६,६७२,८४,८५,६६३,११२१, ११२२
- √अभिलस [अभि-+ लष्]—अभिलसइ रा० ७१३ ----अभिलसंति ओ० २०. रा० ७१३

अभिलाव [अभिलाप] जी० ३।४,५,१२,४१,४३, ४४,७७,द६,१२५,२२६,४५१

अभिवंदए [अभिवन्दितुम्] ओ० ५५. रा० १३ अभिवंदया [अभिवन्दितुम्] ओ० ६२ अभिसमण्जागय [अभिसमन्त्रागत] रा० ६३,६५, ଟ୍ଟ୍ଡ,ଓ୍ଟିଓ √अभिसमागच्छ [अभि+सं+आ+गम्] ----अभिसमागच्छइ रा० ७१६. ----अभिक्षमागच्छति रा० ७५३ √अभिसिच [अभि-----अभिसिचति रा० २८०. जी० ३।४४६ अभितिचित्ता [अभिषिच्य] रा० २८२. जी० ই।४४८ अभिसित्त [ त्रभिषिक्त ] रा० २०३. जी० ३।४४९ अभिसेक (अभिषेक) जी० ३ ४३९ अभिसेगसभा [अभिषेकतभा] रा० २६४,२६७ अभितेय [अभिवेक] ओ० ९८. रा० २६६,४७४. জী৹ ২।४४७,५३४,५९७ अभिसेयसभा [अभिषेकसभा] रा० २७७,२७६, રત્તર,૪૭૪,૪૭૬,૪૭૭,૪૬૬,૨,१४,૨,૨ all a \$'ASE'R50'R56'P2ARA'RR8'R ४४६,४५३,४३४ से ४३९ अभिहड [अभिहत] ओ० १३४ अभिहणमाण [अभिष्तत्] जी० ३।११० अभिहय [अभिहत] जी० ३।११८,११९ अभूओवधाइय [अभूतोपधातिक] ओ० ४० अमेला [अभित्वा] जी० ३। ११० अभेयकर [अभेदकर] ओ० ४० अमच्च [अमास्य] ओ० १८. रा० ७५४,७५६, ७६२,७६४ अमण्छरियया [अमत्यरिकता] ओ० ७३ अमणाम [दे० अमन 'आप'] रा० ७६७. जी० ११९४; ३ ६२,१२२,१२३, १२५ अमणामतरक [दे० अमन 'आप' तरक] जी० ३।५४,५४ अमणुणा [अमनोज्ञ] ओ० ४३. रा० ७६७. जी॰ शहर; ३ राहर अमणुण्णतरक [अमनोज्ञतरक] जी० ३१८४ अमत [अमत] जी० ३.३१२,४१७ अमम [अमम] ओ० २७. रा० ५१३ जी० ३।६३१

अमम्मन [अमन्मन] ओ० ७१. रा० ६१ अमय [अमृत] रा० ३८,१६०,२२२,२५६. जी० ३।३३३,३८१,३८७,८४ अमयरस [अमृतरस] रा० २२८. जी० ३:२८६ अमर अमर ओ० ४६,१९४१२०. रा० ४१ अमरवइ [अमरपति | ओ० ६४ अमलगंधिय (अमलगन्धिक) ओ० १२. रा० २२ अमलगंषीय [अमलगन्धिक] जी० ३।२१० अमला (अपला) जी० ३। ६२१ अमाण [अमान] ओ० १६८ अमाय [अमाय] औ० १६= अमिय [अमृत] ओ० १९४।१व अमेहावि [ अमेधाविन् | रा० ७१८,७१६ अमोह [अमोघ] जीव ३।६२६,५४१ अमोहा [अमोघा | जीव ३।६९९,६१० अम्मड | अम्बड | ओ० ११४,११७ से १४१ अम्मापिइ (अम्बापितृ | अं।० १४२,१४६ अम्मापिड [अम्बापितृ] ओ० १४७,१४९. रा० 500,509 अम्मापिउसुस्सूसग (अम्बापितृज्ञुश्रूषक ) ओ० ९१ अम्मापियर [अम्बापितू] ओ० १४४,१४५. राठ ५०२,५०३,५०४,५०५,५१० अम्ह (अस्मत्) रा० ५. जी० ३,४४१ अय [अयस्] रा० ७५४,७५६,७५७,७७४ अयकोट्ट [अय:कोष्ठ] जी० ३।७= अयगर [अजगर] जी० १+१०५,१०६; ३१६२५ अयगरी [अजगरी] जी० २।व अयम [अयन] ओ० २८. जी० ३।८४१ अयपाय [अयस्पात्र] ओ० १०५,१२८ अयपिंड [अयस्पिण्ड] जी० ३१११८,११६ अयप्रगल अयस्पुद्गलो रा० ७७४ अयबंधण [अयोबन्धन] ओ० १०६,१२६ अयमंड [अयोभाण्ड ] रा० ७७४ अयभार [अयोभार] रा० ७७४ अयभारग [अयोभारक] रा० ७६०,७६१,७७४

XEX

अयभारय [अयोभारक] रा० ७७४ अयभारय [अयोहारक, अयोभारक] रा० ७७४,७७४ अयल [अचल] ओ० १६,२१,५४. रा० ८,२६२. জী০ ২।४५৬ अयसकारग [अयजःकारक] ओ० १५५ अयसि [अतसी] ओ० १३,४७. रा० २६. जी० 31298 अवहारय [अयोहारक, अयोभारक] रा० ७७४,७७४ अया [अजा] जी० ३।६१९ अवागर [अयआकर] रा० ७७४, जी० ३ ११न अयोगि | अयोगिन् ) जीव ६।११६ अयोमय [अयोमय] जी० ३।११६ अयोमुह [अनमुख] जी० ३।२१६ अरह [अरति] ओ० ४६. जी० ३:१२८ १० अरहरइ [अरतिरति] ओ० ७१,११७,१६१,१६३ ৰাণ ওহন্থ अरकमंडस [अरकमण्डल] रा० १७३,६८१. जी० ३।२⊂५ अरणि [अरणि] रा० ७६५ अरति [अरति] जी० ३।१२न अरतिरतिविवेग [ अरतिरतिविवेक ] ओ० ७१ अरमणिज्ज [अरमणीय] रा० ७८१ से ७८७ अरसाहार [अरसाहार] ओ० ३४ अरह [अर्ह] रा० ७७१,न१४,न१७ अरहंत [अहंत्] ओ० २१,४०,५२,५४,७१,११७, 236. TIO 5,28,46,767,988,986, ৬৪६. जी॰ ३१४४७,७९४,५४१ अरि [अरि] जी० ३।६१२,६३१ अरिस [अर्शस्] जी० ३।६२न अरिह [अहं] ओ० ७१,१४७. रा० ६१, ७१४, ७७६, ५०५ अवग [अरुण] जी० रे। १२७, १२५, १४० अरुणप्पम [अरुणप्रम] जी० ३,७४८,७४६,७५३ अरुणमहावर [अरुणमहातर] जी० ३। ६३० अरुणवर [अरणवर] जी० ३।७७५,९२९,९३०

अरुणवरभद्द [अरुणवरभद्र] जी० ३। १२१ अरुणवरमहाभद्द [अरुणवरमहाभद्र] जी० ३: १२१ अरुणवरोद [अरुणवरोद] जी० ३।६३०,६३१ अरुणवरोभास [अरुणवरावभास] जी० ३। ६३१, £\$3 अरुणवरोभासभद्द [अरुणवरावभासभद्र] जी० 31E38 अरुणवरोभासमहाभद् [अरुणवरावभासमहाभद्र] তী০ হাংহং अरुणवरोभासमहावर [अरुणवरावभासमहावर] জী০ ২।১২২ अरुणवरोभासवर [अरुणवरावभासवर] जी० ३ ९३२ अरुणोद [अरुणोद] जी० ३: १२८, १२१ अरुम [अरुज ] ओ० १९ २१,५४. रा० ८,२१२. জী০ ২।४২ও अरूवि [अरूपिन्] जी० १।३,४ असं [अलम्] ओ० १४८ रा० ८०१ अलंकार [अलङ्कार] त्रो० ६७,७०,९२,१४७, १६१,१६३. रा० १३,५३,१७३,२८६,६५७, ७१४,७५१,७९४,५०२,५०४,५०५.जी० ≹∶ર≒¥,४४६,४५५ अ**लंकारिय** [अलङ्कारिक] रा० २६६,२६४,**५३५**. জী৹ ২।४३२,५४१ अलंकारियसभा |अलङ्कारिकसभा] रा० २६७, २६६,२=३,२=६,४३४,४३६, ४३७,४४६, ४७४,४७४. जी० ३,४३१,४३३,४३४,४४९ ४५२,५४०,५४२ से ५४६ अलंकित [अलंकृत] जी० ४।४१२ अलंकिय [अलङ्कत] ओ० २०,५३,६३ रा० 830,75%,75%,65%,65%,65%,6800, ७१६,७२६,८०२. जीव ३१३००,४४१ अलभमाग [अलभमान] ओ० ११७ अलाउपाय [अलाबुपात्र] ओ० १०५,१२= अलाय [अलात] जी० १७७८; सन्ध् अलियवयण [अलीकववन] ओ० ७३

असेस [मनेस्य] जी॰ १।१३३; ६।२६,१६४

अलेस्स [अलेश्य] जी० ६।१०५,१६२,१६६ अलोग [अलोक] ओ० १९५१२ अलोग [अलोक] ओ० ७१ अलोह [अलोभ] ओ० १६८ अल्लई [आईकी] जी० ३।२८१ अल्लकी [आर्द्रकी] रा० २५ अल्लोण [आलीन] ओ० १९,६१ रा० ५०४. जी० ३।५९६ से ५९८,७९४,८४१ अल्लीणया [आलीनता] ओ० ११६ अवउडग [दे० अवकोटक] रा० ७५४,७४६,७६४ अवंक [अवक] रा० ७६,१७३. जी० ३।२५४ अवंग [अपाङ्ग] रा० १३३. जी० ३।३०३ अवंगुयदुवार [दे० अपावृतद्वार] औ० १६२. TIO 485,022,058 अवक्कम [अप + कम्] --- अवन्कमंति रा० १०. जी० ३। ८७ --- अवन्क मसि रा० १८ अवक्कमिला [अपक्रम्य] रा०. १० जी० ३।४४४ अवक्खेवण [अवक्षेपण] ओ० १८० अवगय [अपगत] ओ० ६३ अवगाह [अवगाह] रा० ७७४ अवज्याणायरिय [अपध्यानाचरित] ओ० १३६ अवद्वित [अवस्थित] जी० ३।५९ ५९६ अवट्टिय [अवस्थित] ओ० १९. रा० २०० जी० रे।२७३, ३५०, ७६०, ५३८।११ अवद्भ [अपार्ध] जी० २।६४, ८८,१३२; ३।५३६;६।२३,२६,३३,६६,७१,७३,७४, १४६, १६४, १६४, १७=, २०२, २०४ अवड्ठोमोदरिय [अपार्धायमोदरिक, उपार्धा०] ओ० ३३ अवगद्ध [अवनद्ध] रा० ७६०, ७६१ **√अवणी** [अप+नी]---अवणेमो रा०७२६ अवगीत [अपनीत] जी० ३।५७५ अवणीयउवणीयचरय [अपनीत उपनीतचरक] ओ० ३४ अवणीयचरय [अपनीतचरक] ओ० ३४

अवणेमाण [अपनयत्] रा० ७३२ अवण्णकारग [अवर्णकारक] ओ० १५४ अवतासिज्जमाण [अपत्रास्यमान] रा० ८०४ √अवदाला [अव+-दलय्]---अवदालेइ ओ० १७० अवदालिय (अवदालित) ओ०१९ अवदालेत्ता [ अवदल्य ] ओ० १७० अवधिणाणि |अवधिज्ञानिन् | जी० ३।१०४,११०७ अवमाण [अपमान] रा० ५१६ अवसाणण [अपमानन] ओ०४६ अवयंसग [अवतंगक] रा० १७३, ६८१ अवर [अपर] रा० ४०, १३२, १६३, १६९ जी० ३।२६४, २८४, ३४८, ४६४ √ अयरज्झ [अप्+गघ्] --- अवरज्झइ रा० ७६७ अवरण्ह [अपराह्ल] रा० ६८४ अवरस |अपरात्र | रा० १७३ अवरविदेह [अपरविदेह] जीव २।२६,५६,७०, ७२,८४,९६,११४,१२३,१३७, १३८, १४७, 886;31888, 668 अवरविदेहक [अपरविदेहक] जी० २।१३२ अवरविदेहिया [अपरविदेहिका] जी० २।६४ अवराहि [अपराधिन्] रा० ७४१ अवरुत्तर [अपरोत्तर] रा० ४१,६४ .. जी० ३।३३९,४४८,६३४,६४७,६८० अवलंबण [अवलम्बन] रा० १९, १७४. জী০ ৠ২দ৬, দহ০ अवलंबणबाहा [अवलम्बनबाह]] रा० १९,१७५. জী০ ३।२९७ अवलद्ध [अपलब्ध] ओ० १५४,१६४,१६६. ৰাণ দাংহ अवलि | अवलि ] रा० २९ जी० ३।२८२ अवलिया अवलिका रा० २५ जी० ३।२७५ **अवव** [अवव] जी० ३।५४१ अवसाण [अवसान] ओ० ६३ अवसेस [अवशेष] ओ० ७२, ७९, १६७ रा० ४८, ४७, १६४ जी० १।५९, ६७; ३।२४०, ૨૪૬, ૨૬૬, ૬૨૦, ૯૬૪, ૯૬૬, ૧૦૨૬

अवयहारि [अव्यवहारिन्] रा० ७६१ **अवहट्टु** [अपहृत्य] ओ०६९ अवहमाणय [अवहमानक] ओ० १११से ११३, १३७,१३≍ **अयहार** [अपहार] जी॰ ३।१२७ अवहित [अपहृत] जी० ३११० अवहिय [अपहृत] जी० ३।१०८५, १०८६ √ध्वहीर [अप+ह]-अवहोरंति जी० ३।६० अवहीरमाण [अपह्रियमाण] जी० ३१६०, १०८६ अवाईण [अवातीन, अवाचीन] ओ० ५, ८ जी० ३।२७४ अवाउडय [अप्रावृतक] ओ. ३६ अवाय [अवाय] रा० ७४० **ग्रवायविजय** [अपायविचय] ओ० ४३ अवायाणुप्पेहा [अपायानुप्रेक्षा] ओ० ४३ ग्रवि [अपि] रा० १२ जी० १।१६ ग्रविग्रोसरणया [अव्युत्सर्जन] ओ० ६९, ७० যা৹ ৩৩দ अविग्गह [अविग्रह] ओ० १८२ अविग्ध [अविघ्न] ओ० ६५ अवितह [अवितय] ओ० २६, ६६,७२. रा॰ ६९९ अविद्धत्य [अविध्वस्त] जी० ३।११म अविष्पग्रोग [अविप्रयोग] ओ० ४३ अवियारि [अविचारिन्] ओ० ४३ अविरत्त [अविरक्त] ओ० १५ रा ६७२ अविरय [अविरत] ओ० म४, मध्र, म७, मम अविरल [अविरल] ओ० ४, ८, १९ जी० 31208, 288, 280 अविरहिय [अविरहित] जी० ३।८३८। १७ अविराय [दे० अप्रस्कुटित] जी० ३।११८ अविरुद्ध [अविरुद्ध] ओ० ९३ अविलीण [अविलीम] जी० ३।११८ अविसंधि [अवितन्धि] ओ० ७२ अविसय [अविषय] जी० १।४७

१६६

अविसु इसेस्स [अविशुद्धलेश्य] जी० ३।१९९ से २०४, २०६, २०५ अविस्ताम [अविश्वाम] ओ० ५० अवेइय [अवेदित] रा० ७५१ अवेदग [अवेदक] जी० ६।२२, २६, २७,१२६, \$30 अवेदय [अवेदक] जी॰ ११२४, २५ अवेध [अवेद] जी० १।१३३ अवेयग [अवेदक] जी० ६ १२१ अवेयय ] अवेदक ] ६।१२५ अच्वत्तिय जिन्यक्तिक] ओ० १६० अध्वय [अव्यय] रा० २०० जी० ३।५९,२७२, ३५०, ७६० ग्रम्बवहारि [अव्यवहारिन् ] रा ७६६ **ग्रम्यह** [अव्यथ] ओ० ४३ अन्वहित [अव्यथित] जी० ३।६३० अव्याबाह [अव्याबाध] ओ० १९, २१, ५४, १९४।१३ रा० म,२१२ जीव ३।४५७ अण्याहित [अव्याहत] जी० ३।२३९ √अस [अस्] --अत्थि, ओ० २८ रा० २०० जी० १।८२ — अत्थु ओ० २१ रा० ५ जी। ३।४१७---असि रा० ७४७ ----आसि रा० २०० जी० ३।२१ --- आसी ओ० १९४। इं रा० ६६७---सिप रा० १९८----सिया अो० ३३ रा०१२ असई [असकृत्] जी० २।६७५ असंकिलिट्ठ [असंक्लिप्ट] ओ० ४७ असंकिलिट्टपरिणाम | असंक्लिष्टपरिणाम ] क्षो० ६० असंख [असंख्य] जी० १।१२८ असंखिजन [असंख्येय] रा० १६ जी० ११००, १२१; ३।८६ असंखेज्ज [असंख्येय] ओ० १७३,१८२. रा० १० १२,१२४,१२६,२७६,७७२. जी० १।३३,५१ . પ્રય, પ્ર૬, પ્ર⊂, ૬૪, ૬૪, ૬૪, ७३, ७७ से ७१ ~ ₹, ~ ₹, ~ ७, ~ ~, ٤0, **€ ξ, १०१, १०३, ११२**;

११६,११६,१२३,१२२,१३३,१३६,१३६, १४०; २११२०,१३१; ३११६,२१,२६,२७, ५१,६४,६४,२१,२२,२०,११०,१४४,१६४, २४७,२४६,३४१,४४४,६३२,७०१,७१०,७३६, ७४७,७६१,७६४,७६२,७६६,७७६ से ७७६, २१४,२३८१,७६४,७६२,७६६,७७६ से ७७६, १०७३,१०७४,१०८३,१००२,१००६,११११, १११४; ५१८, ६,२२,२३,२६,४१ से ४० ५६,४८; ६१४; ६,४०, ४१,६७,१७१,२४७

- असंखेङजइभाग [असंख्येयतमभाग ] रा० ७९६. जी० १।१६५,७४,≈६,९४,१०१,१०३,१११, ११२,११६,११९,१२१,१२३,१२४,१३०, १३४,१३६; २।२४, ३० से ३४,४३,४७ से ६१,७३; ६।९७,१५६
- असंखेजजगुण [असंख्येयगुण] ओ० १०२,१६५।१०. जी० २।६०,७१,७२,६४,६६,१३४ से १३६, १३८,१४३ से १४६; ३।१९४, ११३०; ४।२३,२४; ४।१९ से २०, २४,२७,३१ से ३६,४२,४६,६०; ६।१२; ७।२०, २२,२३; ८।४; ६।६, ७,४४,१००,१२०,१४०,१४७, १४८,१६६,१८४,१६४,२०८,२२०,२३१, २४० से २४२, २४४,२६६,२०६ से २००, २६०,२६१,२६३

असंखेज्जजीविय [असंख्येयजीविक] जी० १७७१,७२ अक्षेंखेज्जतिभाग [असंख्येयतमभाग] जी० २।१३६; ३१६१, १५६,२१८, ४३६,६२६,६६६,१०८६,

१०५७,१०८६,११११; ४।६, २३,२४,२६; ६,४०, ५१,१७१,१८७,१८८ असंखेज्जभाग [असंख्येयथाग] ओ० १९२. जी० ३।६१

असंग [असङ्ग] ओ० २०

**असंघयण** [असंहनन | जी० ३।१२९।४

असंघयाणि [असंहनिन्] जो० १।६५, १३५; ३।६२,१०६०

```
असंजय [असंयत] ओ० ५४,५५,५७,५५.
```

जी० ६ १४१, १४३,१४६,१४७ असंत | असत् ] ओ० १६५।१६ असंबिद्ध [असन्दिग्ध] ओ० ६९. रा० ६९९ असंनिहि (असन्निधि ) जी० ३। १९६० असंपत्त [असम्प्राप्त ] ओ० ४७,८४,८४,८७,८७ ४०,५६, १३२. जी १।४८, ७३,७८,८१; ર;૨૬૪ असंबद्ध (अगम्बद्ध] जीव ३।११०,१११५ असंभंत [अलम्झान्त] रा० १२ असंबुड [असंवृत] ओ० ५४,५४,५७ असंसट्टचरय [असंसृष्टचरक] ओ० २४ असंसारसमावण्ण [असंसारसमापन्त] जी शृद् से ह असच्चामोसमणजोग [अमत्यमृषामनोयोग] জী৹ १७⊂ असच्चामोसवइजोग [असःयमृषावाभ्योग] ओ० 309 असण [अशन] ओ० ११७,१२०,१४७,१६२. 10 EE=,00X,08E,0X7,0EX,00E,050 से ७८६,७९४ से ७९६,८०२,८०८ असणग [अशनक] ओ० १३ असणि [अशनि] जी० २।७५ असण्जि [असंज्ञिन्] जी०. १।२४, ८६,६६,१०१, ११९,१२८,१३६; ३1८८; ६1१०१,१०३, ् १०६,१०८ असति [अल्कृत्] जीव ३।१२७-असब्भावपद्रवणा [असद्भावप्रस्थापना] जी० ३:१०६,११५,११६ असब्भावुब्भावणा [असद्भावोद्भावना] ओ० १५५,१६० असमोहत (असमवहत) जी० १।१२५; ३।१४५, 8E=, 8EE, 308, 20% असमोहय [असमवहत] जी० ११४३,६०,५७ असम्मोह [असम्मोह] ओ०४३ असरणाणुप्पेहा [अशरणानुप्रेक्षा] ओ० ४३ असरिस [असदूश] जी० ३१११०,१११४

असरीर [अगरीर] ओ० १५३,१५४,१६५।११. ৰাত ৬৬१ असरीरि [अगरीरिन्] जी० हाइ२,१७०,१७५, १८०,१८१ असहिज्ज [असहाय्य] रा० ६६८,७४२,७८६ असहेज्ज [असाहाय्य] ओ० १२०,१६२ असावज्ज [असावद्य] ओ० ४० असासत [अग्राम्वत ] जी० रे।५७,५६ असासय [अगाश्वत] रा० १९८,११६. जी० ३१८७, 200,208,028,020,8058 असि [असि] बो० ६४. जी० ३।११०,६०७,६३१ असिइ [अशीति] जी० ३।४ असिट [असित ] जो० हाह,११,१३,१४,१६,२६, ६२ असिपस [असिपत्र] जी० ३।८४ असिय [असित] रा० १३३. जी० ३।३०३ असिलक्खण [असिलक्षण] ओ० १४६. रा ८०६ असिलिट्ट [अहिलब्ट] रा० ७७४ असील [अशीति] जी० ३।३४५ असोति [अशीति] जी० ३११७ असीय [अमीति] रा० १६३. जी० ३।३३४ असुइ [अशुचि] ओ० ६८,१४४. रा० ६,१२,७५३, न०२ जी० ३।न४,६२२ असुभ [अशुभ] रा० ७४३. जी० ११९४; ३,७७, ११६,१२६।४ असुभाणुप्पेहा [अशुमानुप्रेक्षा] औ ४३ असुध [अश्रुत] रा० १६ असुर [असुर] ओ० ६८,१२०,१६२. रा० २८२, ६९८,७४२,७७१,७८९,९१५. जी० ३।२३२, ४४८,५६४ असुरकुमार [असुरकुमार] ओ० ४७. जी० २।१६, ३७; ३।२३३,२३४,२४० **असूरकुमारराय** [असुरकुमारराज] जी० ३।२३४ से २३६,२४३ असुरकुमारिद [असुरकुमारेन्द्र] जी० ३।२३४

असुरद्दार [असुरद्वार] जी० ३१८८५ असुरिव ] असुरेन्द्र ] ओ० ४८. जी० ३।२३५ से २३९,२४३ असुह [अशुभ] जी० ३: ६२,१२६।१० असोग [अशोक] ओ० ८,६,१२,१३. रा० ३,४, १३३. जी० १।७१; ३।३०३,६२७ असोगलया [अशोकलता] क्षो० ११. रा० १४५. जी० ३.२६८,४८४ असोगसयापविभक्ति [अर्शः कलताप्रविभक्ति] रा० १०१ असोगवडेंसय [अशोक।वतंसक] रा० १२५ असोगवण [अशोकवन] रा० १७०. जी० ३।३५८ असोय [अशोक] रा० १८६. जी० ३ ३५९,५९० असोयपल्सवपविभत्ति [अशोकपल्लवप्रविभक्ति] रा० १०० अस्स [अश्व] जी० ३।७१३ अस्सकण्णि [अश्वकर्णी] जी० १।७३ अस्साब [आस्वाद] जी० ३।९४८ अस्साय [असात] जी॰ ३।१२६।५,१० अस्सुय [अश्रुत] ओ० १२ अह [अथ] ओ० २२ अहन्तायचरित्तविणय | यथाख्यातचरित्रविनय ] अरे० ४० अस्तत [अहत] जी० ३।४५१ अहमिर [अहमिन्द्र] जी० ३।१०५६,११२० अहय [अहत] ओ० ६३. रा० ७,२९१. जी० ३।४५७ अहर [अधर] ओ० १९,४७. जी० ३।५९६ अहव [अथवा] जी० ३।५९४ अहवा [अथवा] जी० १।१३३ अहम्वणवेव [अथर्वणनेद] ओ० ६७ अहाणुपुरवी [यथानुपूर्वी] ओ ६४. रा० ४९ से ષ્ટ્ર૪,७७४ अहा [अय] रा० ७२३ अहापडिरूव [यथाप्रतिरूप] ओ० २१,२२,४२. TIO 5, E, E = E, E = 0, E = E, 00 E, 08 8, 08 3

५६्⊏

# **अहापरिग्गहिय-**आइय

अहापरिग्गहिय [यथापरिगृहीत] ओ० १२० अहाबायर [यथाबादर] रा० १०,१२,१८,६५, २७९. जी० ३।४४५ अहातुह [यथासुख] रा० ६६४,७७४ अहासुहुम [यथासूक्ष्म] रा० १०,१२,१८,६५, २७९. जी० ३।४४५ अहि [ अहि ] जी० १।१०५,१०६,१०५; ३।=४,६४,६२४,६३१ अहिगय [अभिगत] रा० ६८८ अहिगरण [अधिकरण] ओ० १२०,१६२. रा० ६९८,७४२,७८६ अहिय [अधिक] ओ० ५७,६३ रा० ७०, १३३, २३८. जी० २1१४१; ३ार२६ार,४,३०३, £62,8825; 61826,82; E18,288,286, २८०,२८२,११२२ अहिययर [अधिकतर] रा० १३३. जी० ३।३०३, ११२२ √अहि्यास [अधि+आस्, सह ]---अहियासिज्जति ओ० १५४. रा० ८१६ अहिलाण [अमिलान] ओ० ६४ अही [अही] जी० २। द अहीग [अहीन] ओ० १४,१४३.रा० ६७२,६७३ 508 अ**हणा** [अधुना] जी० ३।४४८ अहुणोववण्ण [अधुनोपपन्न] रा० ७४१,७४३ अहणोववण्णमित्तय [अधुनोपपन्नमात्रक] **रा**० २७४ अहुणोववण्णय [अधुनोपपन्तक] रा० ७५१,७५३, ७९७ आहे [अधस्] ओ० १८९ रा० १३२ जी० १।४५ अहेसत्तमा [अधःसप्तमी] जी० ११९२,११९, १२२; २1१३५,१४८,१४६; ३1११ से १३, 20,32,83,80,86,23.02,00,06,50,52, ८३ से ६४,६७,१०३,१०४,१०६,१०८, ११४,११७,१२१ से १२३,१२४,१२७,१२न

अहो [अहो] रा० ६६६ अहोनिस [अहनिंग्र] जी० ३।१२६। अहोरस [अहोरात्र] ओ० २८ जी० ३।८४१ अहोदहिय [आधोवधिक] रा० ७३३,७३४,७३६ अहोदाय [अधोवात] जी० १।८१ अहोसिर [अधःशिरस्] ओ० ४४,८२

#### आ

आइ [आदि] ओ० २३,६३,६९. जी० १।१३३; ३।१०२७ आइं [दे०] रा० ७०५ √आइक्स [आ+चक्ष,स्या] – आइक्सइ ओ० ५२. रा० ६८७-आइक्खंति जी० ३।२१०---आइक्खह ओ० ७९—आइक्खामि जी० ३।२११---आइक्खिस्सामो रा० ७१६ যা০ ও২০ आइक्खग [आख्यायक] ओ० १,२ आइक्खगपेच्छा [आख्यायकप्रेक्षा] ओ० १०२, १२४ आइक्लमाण [आचक्षाण,अख्यात्] ओ० ७१ से ८१ रा० ७२०,७३२ आइक्लितए [आचक्षितुम्,अख्यातुम्] ओ० ७१ आइगर [आदिकर] ओ० १६,२१,५२,५४ **য**়ি দ आइच्च [आदित्य] जी॰ ३।५३५।४ आइज्ज [आदेय] ओ० १९ आइण [आजिन] रा० ३१ आइणग [आजिनक] जी॰ ३:४०७,५९५ आइण्ण [आकीर्ण] ओ० १,१४,१९,६४. TTO 203, 502, 504, 55 2,008. जी० ३।२५४,६६४ आइण्ज [आचीर्ण] रा० ११,५९ आइण्ण दि० | जात्यस्व जी० ३१४९६ आइय [आदिक] ओ० २३,१२०,१४६,१६२ জী৹ ২।২,২,६

आईणग [आजिनक] ओ० १३ रा० ३७,१८५, २४५. जी० ३।२९७,३११ आउ [आयुष्] जी० १।१२व आउ | दे० अप्] जी० २११३०,१३६; ३११२३, ९७४; ४१८,१२,२०,२७,२९,३३,३६; 812४७ आउकाइय (अप्कायिक) जीव १।१२; ३।१८२, **१**=४,२५६,२६२,२६६; ४।६,**१**=; =।४ आउकाय [अव्काय] जी० ३।१३४,७२४,७२८ अाउक्काइय अप्कायिक जी० १।६३,६४; २।१०२,१३न,१४६,१४६;३।१३४; ४।१, १९,२०; =।१ आउक्लय [आयुःक्षय] ओ० १४१. रा० ७९९ आउज्ज [आतोद्य] रा० ७०,७१,७१ आउधागार [आयुधागार] ओ० १४. रा० ६७१ आउय | आयुष्क ] ओ० ४४,९१ से ६३,१५७, १७१,१८८. रा० ७४३. जी० १।५१,५५,६१, = 0, 20 8, 228, 270, 233; 312XX, 530 आउर | आतुर | रा० ७६०,७६१. जी० ३।११८, 398 आउल [आकुल] ओ० ६३. जी० ३। ५४ आउस | आयुष्मत् | ओ० ७६,१२०,१७०. रा० १३१,१३२,१४७ से १५१,१०४,१९७,६९८, ७४०,७४२,७८६. जी० १.४६,६२,६४,८२,६६, १२८,१४०; ३११७६,१७८,१८८,१८२,२५६, २६६,२६७,३०१,३०२,३२१ से ३२४,४≍२, ४८६ से ४९४,४९८,६००,६०३ से ६०७,६०९ से ६१७,६२०,६२२ से ६२४,६२७,६२८,६३०, 844,8044,8820 आउसेस [आयुःशेष] रा० ५१६ आउह [आयुध] रा० ६६४,६८३. जी० ३।५६२ आएज्ज [आदेय] जी० ३। १९७ आएस [ आदेश ] जी० २।१५०, ६।१२२ आओग [आयोग] ओ० १४,१४१ रा० ६७१,७९९ आओस [आकोश] रा० ७६६

आओसित्तए [आकोप्टुम्] रा० ७६६ आकति [आकृति | रा० १४८ आकारभाव [आकारभाव] जी० ३।२५९ आकासतल [अकाशतल] जी० ३। ५९४ आकिति [आकृति] जी० ३।४४४ आकोसायंत (आकोशायमान, विकसत् ] जी० 31285,280 आगइ |आगति | जी० १।१४ आगइय [आगतिक] जी० १।७४,७७,८७,८८,६६, 808 आगंतुं [आगन्तुम्] रा० ७४० √आवच्छ [आ+ गम्]--आगच्छइ ओ० १७७ --- आगच्छति जी० ३।२३६----आगच्छिज्जा रा० ७०६ -- आगच्छेज्ज ओ० १८०.---अःगच्छेज्जा अो० २१. जी० ३।८६---आगच्छेह ा० ७६५ आगच्छित्तए [आगन्तुम्] रा० ७४१ आगत |आगत | रा० १७३. जी० ३।२६४,२८४ आगति | आगति | रा० ५१४ आगतिय | आगतिक ] जी० १। १६,६२,६४,६४, £9,96, = 0, = 7, **? 0 3, ? ? ?, ? ? ?, ? ? 2 5, ? ? ?**, १२१,१२३,१२५,१३४,१३६ आगमण [आगमन] ओ० ५१. रा० ६८६ अगमणागमणपविभत्ति [आगमनागमनप्रविभक्ति] 710 50 आगमेसिभद्द [अगगमिष्यद्भद्र] ओ० ७२ आगम्म |आगम्य | ओ० २ आगय | आगत | ओ० ४२. रा० ४०,७०,१३२, ६न४,६न७,६न६,७१३,७६४,न०२. জাঁ০ হা৪হ आगर जिंकर | ओ० ६८,८६ से ६३,९४,९६, १४४,१४० से १६४,१६३,१६८. रा० ६६७. জী৹ ३।৯४१ आगार | आकार | ओ०१९. जी० ३।४८ से ५०, ३०३,३४६,३४७,६३७,६४९,७३८,७४३, હદર,શ્શ્વર

आईण [आजिन] जी० ३।२५४,१०७१

आगारभाव [आकारभाव] जी॰ ३।२१८,४७८, ¥EE,XE9 आगास [आकाश] ओ० १२,१९ आगासस्थिकाय [आकाशःस्तिकाय] रा० ७७१. जी० १।४ आगासयिग्गल [आकाश 'थिग्गल'] रा० २५ জী৹ হাহওদ आगासफलिह [आकाशरफटिक] जी० ३१४११ आवासफालिह [आकाशसफटिक) । रा० २२४ आगासाइवाइ [आकाशातिपातिन्] ओ० २४ आगासिय [आकाशिक] ओ० १९ आगिति [आकृति] रा० २८८. जी० ३।३२१ √आघव [अा+ख्या]--आधविज्जति जी० ₹।**८४१** आधवण आख्यान] रा० ७७४ आघवित्तए [आख्यातुम्] रा० ७३४ **आघरेमाण** [आख्यात्] ओ० १८ **आजीवविट्ठंत** [आजीवदृष्टान्त ] जी० **२११**७४ आजीवय [आजीवक] ओ० १५५ √झाडह [आ∔धा]-आडहइ, ओ० ५६ **आडहित्ता** [आधाय] ओ० ५९ आहम [आढक] ओ० ११३,१३८. रा० ७७२ √आढा [आ+द]-आहाइ रा० ६४.---आढाति रा० ७४३ आणंदा [आनन्दा] जी० ३।९१४ आणंदिय (आनन्दित ] ओ० २०,२१,५३,५४,५६, ६२,६३,७८,८०,८१. रा० ८,१०,१२ से १४, १६ से १८,४७,६०,६२,६३,७२,७४,२७७, २७६,२८ १,२९०,६४४,६८१,६८३,६८०,६९४. 182917280128018801088901000 ७२६,७७४,७७८. जी० ३।४४३,४४४,४४७, યપ્રપ્ર आणण [ आनन ] ओ० ४१,६३,६४ आणत [आनत] जीव २।६२,६६,१४८,१४६; 318058,8055,8055

आणसिया [आज्ञप्तिका] ओ० ४४ से ६१. रा० 6, 27, 20, 84, 03, 224, 448, 448, 448, £=7,5E0,5E8,605,088,088,078, ও খ ২ জী ০ খ ২ ४, ১ ২ ২ आणपाणपज्जति [ अानप्राणपर्याप्ति, आनापान-पर्याप्ति रा० २७४,७९७ आणयाणु पञ्जत्ति [आनप्राणपर्याष्ति, आनापान-पर्याप्ति ] जी० १।२६ आणय [आनत] ओ० ५१,१६२. जी० ३।१०३८, १०५३,१०६२,१०६६,१०६⊏,१०७६,११११ √आणव [अा+ज्ञापय्] — आणविज्जइ रा० ७६७. ---आणवेइ रा० १३. ---आणवेज्जा रा० ७७६ आणा [आजा] ओ० ४६,४७,४९,६१,६८,७६, 00. TTO 80,88,85,08,208,757,54X, ६=१,७०७. जीव ३1३४०,४४४,४४=,४४४, \*\*\*\* आणापाण, [आनापान, आनप्राण] ओ० २८. जी० ३।८४१ आणापाण् अपज्जति [ आनापान पर्याष्ति, आनाप्राणा-पर्याण्ति | जी० १।२७ आणापाणुपज्जति (आनापानपर्याप्ति, आनन्नाण-पर्याण्ति]जी० ३।४४० आणामित [आनामित] जी० ३। १९७ आणामिय [आनामित] ओ० १९ जी० ३। १९६ आणारुइ | आज्ञारुचि | ओ० ४३ आणाविजय ]आजाविचय | ओ० ४३ **√आणी [आ**+नी]--आणेस्सामि रा० ७२० आणुमामियत (आनुगामिकत्व ) ओ० ५२. रा० २७४,२७६,६८७. जी० ३:४४१,४४२ आणपुरुव ∫आनुपूर्व्य | रा० १७४. जी० ३।२५६ आणपुच्वी [आनुपूर्वी] जी० १४८ आतंक [आतङ्क] जी० ३।६२० आतंब [आताम्र] जी० ३। १९६ **आतपत्त** [आतपत्र] जी० ३।४**१**६ आताडिज्जंत [आताड्यमान] रा० ७७

#### अतिय-आमंतेत्ता

आतिय [आदिक] रा० ६३,६४ आतोज्ज [आतोद्य] जी० ३।५८८ आवंसग [आदर्शक] जी० ३।३४४ आदंसमूह [आदर्शमुख] जी० ३।२२६ आदर [आदर] ओ० ६७. रा० १३,६४७ आदरिसफलग [आदर्शफलक] ओ० २७. रा० ५ १३ आदि [आदि] ५२,७०. जी० १।४६;२।१३१; ३१२२६,२४०,८६९,५७२,८७४,८७६,८७९, दद १,६२६,६२७,६३७,**६४१,**६४६,६४६, EX2, 20=8, 20= E; E1 28E आदिगर [आदिकर] ओ० ५४. रा० ५,२६२. জী০ ২।४५७ आदिय | आदिक | रा० ७४,५२,११८. जो० 3.889 आदीय [आदिक] जी० ३।२५९,९५० आदेज्ज [आदेय] जी० ३१४६६,४६७ आदेस [आदेश] जी० १।४८,७३,७८,८१;२।२०, ሄፍ आधार [आहार] जी० १.१२८ √आधाव [आ+धाव्]---आधावति जी० ३.४४७ आवडिपुच्छमाण [आप्रतिपृच्छत्] ओ० ६९ आपुच्छणिज्ज [आपच्छनोय] रा० ६७५ आपूरॅत [आपूर्यमाण] जी० ३।७३१ आपूरेमाण [आपूर्यमाण'] रा० ४०,१३२, १३५,२३६. जी० ३।२६४,३०२,३०४,३६८. आबाह [आबाध] ओ० १६६ आबाहा (आवाधा ] जीव ३ ६२०,६२४ आभरण [आभरण] ओ० २०,५२,५३,५३. राo ६९,७०,१५६,१५७,२४८,२७९,२८१, २८६,२९१,२९४,२९६,३००,३०४,३१२, ३५५,६८४,६८७,६८९,६९२,७००,७१६, ७२६,००२. जी० ३,३२९,४१९,४४७,४४२, १---आपूरयन्ति भात्रन्तस्य शाबिद रूपम् |जी०

वृत्ति ∣ ।

xx0,xx6,x£8,x£2,x£x,x00,x00, ५१६,५२०,५४७,७७५,६३६,११२१ से ११२३ आभरणचित्त [आभरणचित्र] जी० ३ ४९४ आभरणविहि [अ।भरणवित्रि] ओ० १४६ रा० ५०६ आभा | आसा | ओ० ४१ आभासित | आमाषिक | जी० ३।२१६ आभासिय (आभाषिक) जी० ३।२१९ आभासियदोव (आभाषिकद्वीप] जी० ३।२१६, 223 आभासिया (आभाषिता] जी० २।१२ आभिओगिय (आभियोगिक) ओ० १५९. रा० ६,१०,१२,१३,१७ से १९,२४,३२,४१,४६, ५४,२७८,२७९,२१०,६५४,६५५, जी० \$!&&&'&AX'AX'0'AXS'AXE'XXA'XX' ६१० आभिणिबोधियणाणि [आभिनिबोधिकज्ञानिन्] जी० ३।१०४,११०७ आभिणिबोहियणाण (आभिनिबोधिकज्ञान) ओ० ४० रा० ७३१ से ७४१,७४६ आभिणिबोहियणाणविणय (आभिनिबोधिकज्ञान-विनय] औ० ४० आभिणिबोहियणाणि | आभिनिबोधिकज्ञानिन् ] ओ० २४. जी० १।८७,६६,११६,१३३; **६। १**४६,१६०,**१६५,१६६.१**६≍,२०४,२०≍ आभिणिबोहियनाणि [आमिनिवोधिकज्ञानिन्] जी॰ হ।१६७ आभियोग (अभियोग्य) रा० ४७ आभियोग्ग [अःभियोग्य] रा १० आभिसेक्क [अाभिषेक्य] अगे० ११ से ५७,६२ से ६४,६९ आभोएता (अधिम्य) सब दश्द अभोएमाण [आभागयत् | रा० ७ √आमंत |आ + मन्त्रय् | ---आमंतेइ बो० ५५ आमंतेला (आमन्त्र्य] ओ० ४५. रा० ६६८

ৼড়ৼ

## **आमरणंतदोस-आयावणभूमि**

आमरणंतदोस [आमरणान्तदोष] ओ० ४३ आमलकष्पा [आमलकल्पा] रा० १,२,५ से १०, **१**३,१४,४६ आमलग [आमलक] रा० ७७१ जी १।७२ आमलय [आमलक] रा० ७७० आमेल [अपीड] ओ० ४९ रा० ६९,७० आमेलग [आपीडक] रा० १३३ जी० ३।३०३, थ ९ ७ आमेलय [आपीडक] ओ० १७ आमोट [आमोट] रा० ७७ आमोडिज्जंत [आमोट्यमान] रा० ७७ आमोसहिपत्त [आमधौषधिप्राप्त] औ० २४ आय [आत्मन्] जी० १। ५० आयंक [आतङ्क] ओ० ४३,११७. रा० १२,७५८, ৬২,৬৪६. जी॰ ३।११८ आयंत [आचान्त] ओ० २१,४४. रा० २७७, २८८,७६४,८०२ जी० ३।४४३ आयंब [आताम्र] ओ० १९ आर्यंबिलय [अचाम्लक] ओ० ३४ **सायंबिलवतमाण** [आचाम्लवर्धमान] ओ० २४,३४ आयंस [आदर्श] रा० १४६,२५८,२७६, जी० इ।४६७ आयंसग (आदर्शक) जी० ३ ३२२,४१९,४४५ आयंसघरग [आदर्शगृहक] रा० १८२,१८३. জী০ ২৷২৫४ आगंसघरय [आदर्शगृहक] जी० ३।२९५ आयंसमंडल [आदर्शमण्डल] रा० २४ जी० ই।২৩৩ आयंसमुह [आदर्शमुख] जी० ३।२१६,२२६।४ आयंसय [आदर्शक] ओ० १३ आयत [आयत] ओ० १९,४७. रा० १२४. जी० શાય; રાયછા, પ્રદ૬, ૬ રેટ, રે૦ રેદ आयपच्चइय (आत्मप्रत्ययिक, °प्रात्ययिक) रा० હ્યૂઝ,હ્યૂલ્ आयय [आयत] जी० ३.२२,४६७ आयर [मादर] जीं० ३।४४६

आयरक्ख [आत्मरक्ष] रा० ७,४४,५६,५८,२८०, २८२,२८६,२९१,६४७,६६४. जी० ३।३४४, ३४०,३४९,४४६,४४८,५४७,५६२,५६३, ६३७,६४९,६८०,७००,१०२४,१०३८ आवरिय [आचार्य] ओ० ४०,४१,१५५. বাত ওওহ आयब [आतप] ओ० ८९ आयवस [आतपत्र] ओ० ६४. रा० ५०,५१,२५५ आयवाभा [आतपाम] जी० ३।१०२६ आयाए [आदाय] रा० ७७४ आयाण [आदान] ओ० १९. जी० ३।५९६ आयाणमंडमलणिक्खेवणासमिय [ यादानभाण्डामत्र-निक्षेपणासमित | ओ० २७,१६४ आयाणमंडमत्तनिक्खेवणासमिय (आदानभाण्डामत्र-निक्षेपणासमित] ओ० १५२. रा० ⊏१३ आयाम [आयाम] ओ० १३,१७०,१६२. रा० ३६,१२४,१२६,१२८,१३७,१७०,१८८,२०६, २११,२१८,२२१,२२१,२२२,२२४,२२६,२२७, २३०,२३३,२३८,२४२,२४४,२४६,२५१ से २४३,२६१,२६२,२७२. जी० - ३:४१ =१,=२, ₹\$\$,₹\$\$\$,₹\$\$5,₹\$€,₹€\$,₹€8,₹€\$, ३६८ से ३७२,३७४,३७६,३७७,३८०,३८१, ईन३,**३**न५,३न६,३९२,३९४,४००,४०४, ४०६,४०९,४१२ से ४१४,४२२,४२५,४२७, 830,200,200,532,538,536,582, £88,£86,£86,£82,£88,£86,£68,£03 से ६७४,६७९,६८३,७३६ ७३७,७४४,७४८, ७६२,७६४,७६८,५३४,५४२,५४,५५७, = 8, = 8 से = 84, = 80, = 8, 80 200,220,2020 夜2025,2003,2003 आयामसित्यभोइ |आयामसिक्थभोजिन् | ओ० ३५ आधारधर [आचारधर] ओ० ४४ आयारवंत [आकारवत् ] ओ० १ आयावणभूमि [आतापनभूमि] ओ० ११६

### Yey

आयावणा [आतापना] ओ० ९४ आयावय [आतापक] ओ० ३६ आयावाय (आत्मवाद ) ओ० २६ आयावेमाण [आतापयत्] अा० ११६ आवाहिण | आदक्षिण | ओ० ४७,४२,६६,७०,७५, ५४,५१. रा० ६,१०,१२,४६,४५,६४,७३,७४, ११८,१२०,६८७,६९२,६९४,७००,७१६, ৬१৯,৩৩৯ आयिण [आजिन ] जी० ३१९३७ आरंभ [आरम्भ] ओ० ६१ से ६३,१६१,१६३ आरंभसमारंभ [आरम्भसपारम्भ] ओ० ६१ से ६३ आरण [आरण] ओ० ५१,१६२. जी० ३।१०३८, १०५४,१०६६,१०६८,१०७६,१०८८,११११ आरबी [आरबी] ओ० ७०. रा० ५०४ आरभड [आरभट] रा० १०८,११६,२८१. जी० ३१४४७ आरभडमसोल [आरभटभसोल] रा० ११०,२०१. जी० ३।४४७ आराम [आराम] ओ० १,३७. रा० १२,६५४, ६५५,७१९. जी० ३।४४४ **√आराह** [आ+राष्]--आराहेहिइ रा० ५१६ आराहग [आराधक] ओ० ८६ से ६५,११४,११७, १५५,१५७ से १६०,१६२,१६७ आराहणा [आराधना] ओ० ७७ आराहय [आराधक] ओ० ७६,७७. रा० ६२ आराहिता [आराघ्य] ओ० ११४. रा० ५१६ आरिय | आयं | ओ० ४२,७१. रा० ६६७,६८७. जी० स२२६ आरुहण आगोहण रा० २६१,२६४,२६६,३००, ३०४,३१२,३४४, जी० ३१४४७,४४९,४६१, XES'XEX'XA0'YA00'X SE'X SO'XA0'XA0'XEX आरोहग [आरोहक] ओ० ६४ **आलंकारिय** [आलङ्कारिक] जी० ३।४१० **आलंबण** [आलम्बन | ओ० ४३. रा० ६७५ आलंबणभूय [आलम्बनभूत] रा० ६७५

आलय [आलय] रा० ५१४ आलवंत [आलपत्] रा० ७७ आलावग [आलापक] जी० ३।६२; १।५१,५८ आलिग [आलिङ्ग] रा० २४,६५,६७,१७१. जी० 31285,200,208,205,255,500,022, 523 आलिगक [आलिङ्गक] जी० ३।७५ आलिगणवट्टिय [आलिज्जनवर्तिक] रा० २४५. জী০ ২া४০৩ आलिघरग [आलिगृहक] रा० १८२,१८३. जी० ३।२१४,८४७ आलिघरय [आलिगृहक] जो० ३।२६४,८४७ √आलिह [आ+लिख्]--आलिहइ रा० २९१. ----आलिखति जी० ३।४४७ आलिहिसा [आलिख्य] रा० २६४. जी० २१४४७ **आलुय** [आलुक] जी० १।७३ आलोइय [आलोचित] ओ० ११७.१४०,१४७, १६२,१६४,१६५ रा० ७६६ आलोय [आलोक] ओ० ६३,६४. रा० १०,६८, २६१,३०६. जी० ३१४४७,४७१,४१६ आलोयगारिह [आलोचनाई] ओ० ३१ आवइ [आपत् ] रा० ७५१ आवइकाल (आपटकाल] ओ० ११७ आवकहिय [यावत्कथिक] ओ० ३२ आवज्जीकरण [आवर्जीकरण] ओ० १७३ आवड [अवृत्त] रा० २४. जी० ३१२७७ आवडपच्चावडसेढिपसेढिसोत्थियसोवत्थियपूसमाणव-वद्धमाणगमच्छंडमगरंडाजारामाराफुल्लावलि-**यज्ञम**यत्तसागरतरंगवसंतलतायजमलयभत्तिचित्त [ लावृत्तप्रत्यावृत्तश्रेणिप्रश्रेणिस्वस्तिकसौवस्तिक पुष्यमाणक्वर्धमाणकमत्स्याण्डमकराण्डकजारकमार-कफुल्लावलिपद्मप**त्रस ग**रतरङ्गवासन्तीलताप-बलताभक्तिचित्र] रा० ५१ आवडिय [आपतित] रा० १४ आवण [आपन] ओ० १,१४. रा० २८१. जी० 31880,468

आवत्त [आवर्त ] रा० ६९. जी० ३१८३८११० अवत्तणपेढिया [आवर्तनपीठिका] रा० १३०. জী০ ২।২০০ आवबहुल [आपबहुल] जी० २।६,१०,१७,२४, ३०,६३ आवरण [आवरण] ओ० ४७,६४. रा० १७३, ६८१. जी० ३।२९४ **आवरणावरणपविभत्ति** [आवरणावरणप्रविभक्ति] **T**[0 55 आवरिता [आवृत्य] रा० ७१६ √आवरिस [आ+वृष्]—आवरिसेज्जा रा० १२ आवरेता [आवृत्य] रा० ७१९ आवरेत्ताणं [आवृत्य] रा० ७१६ आवलिपविभत्ति [आवलिप्रविधक्ति] रा० ५५ **आवलियपविट्ठ** [कावलिकाप्रविष्ट] जी० ३।७म आवलियबाहिर [आवलिकाबाह्य] जी०३।७५ आवलिया [आवलिका] ओ० २८ जी० १।१३६, ३,५४१ **आवलियापविद्व** [आवलिकाप्रविष्ट] जी० ३११०७१ आवलियाबाहिर [आवलिकाबाह्य] जीव ३।१०७१ आवस्सय [आवश्यक] रा० ७२३ आवास [आवास] ओ० १, १९२. रा० ६९४, ६८४, ७००, ७०६. जी० ३।२४७ ७३४ से ७४३, ७४४ से ७४७,७४९ से ७४१, ७७४, ৪ইও आबाह [आवाह] जीव रा६१४ आविव (जाद्धविद्ध) औ० ४२, ६३. रा० ६९, 30, 838, 889, 885, 250, 558, इन्छ से इन्ह, जीव ३।३०१, ४४६ आविल [आविल] जी० ३७२१ आवीकम्म [आविष्कर्मन् ] रा० ५१५ आस [अश्व] ओ० ६६, १०१,१२४. रा०

७२०, ७२३, ७२४, ७२९, ७३१, ७३२. जी० २१८४; ३१६१८, ६३१, १०१५ आसकण्ण [अश्वकर्ण] जी० ३।२१६, २२६ आसग (आस्यक) जी० ३। १०६ आसण (आसन) ओ० १४, १४१. रा० १८४, ६७१, ६७५ ७१४, ७९९, जी० ३।२९७ ५७९, ६८३, ११२८, ११३० आसणप्याण [आसनप्रदान] ओ० ४० आसणाभिग्गह [आसनाभिग्रह] ओ० ४० आसत्त [आसक्त] ओ० २. ११. रा० ३२, २०१ २९१,२९४,२९६,३००,३०४,३१२,३४४. जी० ३।३७२, ४४७, ४४९, ४६१, ४६२, 800, 800, 285, 270 आसधर [अक्ष्वधर] ओ० ६६ आसम [आश्रम] ओ० ६८, ८९ से ६३, ६४ हद, १५४, १५व से १६१, १६३, १६व. বা০ হ্ছণ্ড आसमुह [अश्वमुख] जी० ३।२१६, २२६ √आसय [आस्]--आसयंति रा० १=४ जी० ३।२१७---आसयह रा० ७**५**३ आसरह [अश्वरथ] रा० ६८१ से ६८३,६८४।६९० से ६९२, ६९७, ७०६, ७१०, ७१४, ७१६, ७२२,७२४,७२६ आसल |आसल ] जी० ३।८१९, ८६०, ९५६ आसव (आश्रव) ओ० ७१,१२०,१६२. रा० ξ €=, 9×2 9=€ आसव (आसव) जी० ३।४८६ आसवोद [आसवोद] जी० ३।२८६ आसवोयग | आगवोदक | रा०१७४ आसा |आशा] ओ० २४, ४६, रा० ६८६ आसाएमाग [आस्वादयत्] रा० ७६५, ८०२ आसाद [आस्वाद] जीव २ ५६०, ५६६, ५७२ **५७८, ९४४, ९६०** आसादणिज्ज [आस्वादनीय] जी० ३१६०२, ५६० **≂૬**૬,**ઽ७**૨,ઽ७ઽ,૯**૫૫,૯૬**० आसाय [आस्याद] जी० राइ०१ ६०२, ६६१

## ৼ७६

आतालिय [आगालिक] जी० १११०५, ११०, १३३;२।१०५ आसित [आसिक्त] ओ० ४४, ६० से ६२ आसिय [आसिक] रा० २८१. जी० ३।४४७ आसीत [अशीति] जी० ३१४ आसीबिस |आमीविष] जी० १।१०७ √आह [बू]--आहंसु जी० १।१०--आहिज्जति जी० १।१० आहत [आहत] जी० ३।५४४ आहम्मंत [आहन्यमान] रा० ७७ ग्राहय [आहत] ओ० ६८ √आहर [आ+ह]--आहरेइ ओ० ११० काहरण (आभरण) ओ० ४९. रा० ६८८ ग्राहाकम्मिय (अधार्क्तिक) ओ० १३४ आहार [आहार] ओ०३३,७३,६२,११७ से ११९. रा० ७३२,७३७,७७२,७९६. जी०१।१४,३३, ४०,४६,६४,५२,५७,६६,१०१,११६,१३३, १३६; २१९७,१२७,१२९,४८९,६००,६०३, द्दे१;हाद्द आहार | आधार ] रा० ६७५ √आहार [आ-+हारय]--आहारेइ रा० ७३२--आहारति रा० ७०३. जी० १।३३ आहारअपज्जति [आहारापर्याप्ति] जी० १२७ आहारम | आहारक | जी० ६।३८ से ४०,४६, 20,22 आहारगमीसासरीर [आहारकमिश्वकशनीर] ओ० १७६ आहारगसरीर [ वाहारकशरीर ] ओ० १७६ जी० 81805 आहारगसरोरि [आहारकशरीरिन्] जी० ९।१७०, १७३,१८१ आहारत | आहारत्व | जी० ३।११०० आहारपज्जति | आहारपर्याप्ति | २१० २७४,७९७ জী০ **१**।२६;३।४४० आहारभूय [आवारभूत] रा० ६७५ आहारय [आहारक] जी० ९।३९,४१

आहारसण्णा [आहारसंजा] जी० १।२०,१३२; ३।१२५ आहारिता [आहार्य] जी० ३।६०३ आहारिता [आहर्त्य] जी० ३३. रा० ७६५ आहारेमाण [आहरत्] जी० ३३. रा० ७६५ √आहाव [आहरत्] जी० ३।५३८।३ आहिय [आख्यात] जी० ३।५३८।३ आहिणिज्व [आहवनीय] जी० २ आहिणिज्व [आहवनीय] जी० २ आहिणिज्व [आहत्य] रा० ६ आहेरच्च [आधिपत्य] जो० ६५. रा० २५२. जी० ३।३५०,३५६,४४५,५६३,६३७,६५६, ७६०,७६३

# [इ]

🐮 [चित्] ओ० ७४।४ इ [इति] जी० ३। ६५ √इ [इ]--एति जी० ३।१७६---एह रा० ७२३ इइ [इति] रा० २४ इओ [इतस्] ओ० मम इंगाल [अङ्गार] रा० ४४, जी० १।७८; ३।८४, ११५ इंगालसोल्लिय [अङ्गारपक्व] ओ० ९४ इंगिय [इङ्गित] ओ० ७०. रा० ८०४ इंद [इन्द्र] ओ० ६८. रा० २८२. जी० ३।४४८, ७११,८४३,८४६,८४७,९३७,१०४८ इंदकोल | इन्द्रकील | ओ० १. रा० १३० **इंदखील** | इन्द्रकील } जी० ३।३०० इंदगोव [इन्द्रगोप] रा० २७ इंदगोवय [इन्द्रगोपक] जीव ३।२८० इंदगाह [इन्द्रश्रह्] जीव शद्रद इंदट्ठाण [इन्द्रस्थान] जी० ३१८४८,८४७ इंदमण् [इन्द्रधनुष्] जी० ३।६२६,०४१ इंदभूइ (उन्द्रभूति | ओ० द२ इंदमह [इन्द्रमह] रा० ६८८,६८६ जी० ३।६१४ इंदाभिसेग [इन्द्राभिषेक] रा० २८२,२८३. জী৹ ২।४४६,४४७

# इंदामिसेय-इब्भ

इंदाभिसेय [इन्द्राभिषेक] रा० २७८ से २८१ র্বী০ ২।४४४,४४८,४४६ इंदिय [इन्द्रिय] ओ० ६३. जी० १।१४,२२,५६, नन,६०,६६,१०१,११६,१२न,१३६;३१५६२, ६०२,९७६ इंदियपज्जत्ति [इन्द्रियपर्याप्ति] रा० २७४,७९७. জীত १।२६;३।४४० इंदियपडिसंलीणया [इन्द्रियप्रतिसंलीनता] ओ० 30 इंदु [इन्दु] रा० २४४. जी० ३।४१६ इक्कमिक्क [एकक) जी० ३।१२७ इक्खाग (इक्ष्वाकु) रा० ६८८ इक्लगपरिसा [इक्ष्वःकुपरियद् ] ग० ६१ इक्खुवाड [इक्षुवाट] रा० ७५१,७८४,७८६, ৩ন৩ इगयालीस [एकचत्वारिशत्] जी० २।७१८ √इच्छ [इष्]--इच्छइ रा० ७४१-- इच्छसि रा० ७६४--- इच्छसी जी० ३।=३=।२६ ---इच्छामि रा० ६३---इच्छेज्ज रा० ७४१ इच्छा [इच्छा] ओ० ४६ इच्छापरिमाण [इच्छापरिमाण] ओ० ७७ इच्छिय [इष्ट] ओ० २३,६१. रा० ६९४ इच्छियपहिच्छिय [इष्टप्रतीप्ट] ओ० ६९. रा० ६९४ इट्ठावाय [इष्टकापाक] जी० ३।११६ इट्ठ [इच्ट] झो० १४,६८,११७. रा० ६७२,६८४, ७१०,७४० से ७४३,७७४,७९६. जी० १।१३४; ३।१०६०, १०६६,११२४ इट्टतर [इण्टतर] जीव ३११०७८, १०७९ इट्ठतराय [इष्टतरक] रा० २५ से ३१,४५. जी० ३।२७८ से २८४,६०१,६०२,८६०,८६६, 493,383,707,507 इड्ररग [दे०] रा० ७७२ इड्रुरय [दे०] रा० ७७२

इड्डि [ऋटि] को०४७,६५,६७,७२,≓६ से ६५, ११४,११७,१५५,१५७ से १६०.१६२,१६७. रा० १३,१५ से १७,४५,५६,५८,२८०,२९१, ६ ४७,७७२,००३,००४. जी० ३।४४६,४४८, ४४७,४४७,६०९ इण | एतत् | जी० ३१४ इणं [इदम्] ओ० ७२ इति [इति ] रा० ५. जी० ३।११५ इतिहास [इतिहास] ओ० ६७ इसरिय [इत्वरिक] ओ० ३२ इति [इति] जी० १।१३९ इत्ती [इतस्] ओ० १९४।१७. ग० २४. জী০ ২৷২৬দ इस्थ [अत्र] जी० ३।२४४ इत्यंठिय [इत्यंस्थित] ओ०७२ इस्यि [स्त्री] जीव २।१०५ इत्थिकहा [स्त्रीकथा] आे० १०४,१२७ इत्थिया [स्त्री] ओ० ६२. जी० २।११,१५ से १९, ३७,६७ से ७२,७४,१४४,१४६ से १४८,१५१; ३।८८ इस्थिसक्खण [स्त्रीलझण] ओ० १४६. रा० ८०६ इरियवेव [स्त्रीवेद] जी० १।१३६; २।७३,७४; શારરદ્ इस्थियेदग [स्त्रीवेदक] जी० ६।१३० इत्यिवेय [स्त्रीवेद] जी० १।२५,१३३ इस्थिवेयग [स्त्रीवेदक] जी० ६।१२१ इत्थिवेयय [स्त्रीवेदक] जी० ९११२२ इत्थी [स्त्री] ओ० ३७. जी० २।१ से ३,६,१०, १४,२० से ३०,३२ से ३६,३८ से ४८,५४, ४६ से ६६,७०,७६,७८,००,८३,८५,८८, १०४,१४१ से १४१; ३।१४८,१४९,१६४ इरथोलिंगसिद्ध [स्त्रीलिङ्गसिद्ध] जी० १।= इदाणि [इदानीम्] जी० शाद४३ इक्स [इक्य] ओ० २३,४२,६३. रा० ६८७ से *६८६.६९४,७०४,७४४,७४६,७६२,७*६४. জী০ ২।২০১

#### इब्भपुत्त-उनकोस

इन्भपुत्त [इभ्यपुत्र] रा० ६८८,६८६,६८६
इम [इदम्] ओ० ७. जी० १।१०
इयाणि [इदानीम्] ओ० ११७. रा० ७५३
इरियासमिय [ईयोिमित] ओ० २७,१५२,१६४
इव [इव] ओ० २३. रा० ७०. जी० ३।४४८
इतिपरिसा [ऋषिपरिपद्] ओ० ७१. रा० ६१, ७६७
इसिवादिय [ऋषिवादिक] ओ० ४६
इह [इह] ओ० २१. रा० ६८७. जी० ३।११
इह [इह] ओ० २१. रा० ६८७. जी० ३।११
इहगत [इहगत] रा० ८
इहगत [इहगत] रा० ८
इहभव [इहभव] ओ० २२. रा० ६८७
इहभव [इहलोक] ओ० २२. रा० ६८७

# ई

**ईयाल [एकचत्त्वा**स्थित्] जी० ३।७३६ ईरियासमिय [ईर्यासमित] रा० ८१३ **ईसत्य** [इष्वस्त्र] ओ० १४६. रा० प०६ ईसर [ईश्वर] ओ० १८,२२,६३,६८. रा० २८२, ६८७,६८८,७०४,७४४,७४६,७६२,७६४. जी० दाइग्र०, ४४८,४६३,६०६,६३७,७२३ **ईसा** (ईषा) जी० ३।२५४ ईसाण [ईशान] ओ० ५१,१६०, १६२. 动の ミリメモ; マリミモ,メロ,モモ,ミメエ,ミメモ; 31868,828,8034,8083,8088,8088,8086, 8054,8056,8008,8008,8004,8003 से १०८३,१०८४,१०८७,१०६०,१०६१, १०६३, १०६७ से १०६६,११०१,११०५, ११०७,११०६ से १११२,१११४,१११५, १११७,१११६,११२१,११२२,११२२४,९१२५ ईसाणग |ईशानक] जी० ३।१०४३ ईसि [ईषत् | ओ १३. रा० ४. जी० ३।२६५ ईसिणिया [ईशानिका] ओ० ७०. रा० ५०४ ईसी [ईवत्] ओ० ४७ ईसीयब्भारा (ईषत्प्राग्भारा] को० १९१ से १९४

ईहा [ईहा] ओ० ११९,१४६. रा० ७४० ईहामइ [ईहामति] रा० ६७५ ईहामिअउसभतुरगनरमगरविहगवालगकिन्नरस्द-सरभचमरकुंजरवण्लयपउमलयभत्तिचिस [ईहामृगवृषभतुरगनरमकरविहगव्यालक-किन्नररुरुसरभचमरकुञ्जरवनलतापदालता भक्तिचित्र] रा० ८३ ईहामिय [ईहामृग] ओ० १३. रा० १७,१८,२०, ३२,३७,१२९. जी० ३।२८८,३००,३११,३७२

# ব

ত [तु] জী০ ২।१५१ उंबर [उदुम्बर] जी० १।७२ उंबरपुष्फ [उदुम्बरपुष्प] रा० ७५० से ७५३ उक्कांचण [दे०] रा० ६७१ उक्कंचणया दि०] ओ० ७३ उक्कलिधावाय [ उल्कलिकावात ] जी० शदश उक्कस [उत्कर्ष] जी० ४।२८ उक्का (उल्का) रा० ७०,१३३. जी० १।७८; ३।११८८,३०३,५६०,११२३ उषकापात [उल्कापात] जी० ३।६२६ उक्कामुह [उल्कामुख] जी० ३।२१६,२२६ उक्किट्ट [ उत्कुष्ट] ओ० ५२. रा० १०,१२,५६, २७९,६८७,६८८. जी० ३१८६,१७६,१७८, 8=0,8=0,888,=85,=88 उक्किट्ठि [उत्कृष्टि] जी० ६।४४७ उक्किट्रिया [उरकृष्टिका] रा० २५१ उक्किरिज्जमाण [उत्कीर्यमाण] रा० ३०. জী০ ২।২নই उक्कुड्यासणिय [उत्कुटुकासनिक] ओ ३६ उक्कोडिय [ औत्कोटिक ] ओ० १ उक्कोस [ उत्कर्ष ] ओ० ६४,६४,११४,१५५,१४७, १×€,१६०,१६२,१६७,१८७,१८८,१८८, जी० १।१६,५२.५९,६४,७४,७९,५२,५६ से 55, E0, EX, EE, 208, 203, 888, 887, 888, ११६,१२१,१२३ से १२५,१३०,१३३,१३५

से १४०,१४२; २।२० से २२,२४ से ५०, ४३, से ६१,६३,६४ से ६७, ७३,७९,०२ से ५४,८६ से ८८,१० से ६३,६७ १०० से १११, ११३,११४,११६ से १३३,१३६; सालर, बर, हर, १०७, ११न से १२०, १२८ १२, १३६, १६१, १६२,१६४,१७६,१७८,१८०,१८२,१८६ से **१ ह२, २ १ ८, ६** २ ह, ५४४, ५४७, ५६०, १ ६६, १०२२,१०२७ से १०३६,१०८३,१०८४, १०८७,१०८६,११११,११३१,११३२,११३४ से ११३७; ४।३ से ११,१६.१७; ४१४,७,५, १० से १६,२१ से २४,२० से ३०; ६।२,३, ६,ज से ११; ७।३,५.६,१०,१२ से १०; हार से ४,२३ से२६,३१,३३,३४,३६,४०,४१, ४३,४७,४९,४१,४२,४७ से ६०,६८ से ७३, ,09,05,50,53,53,52,50,60,60,50,50,50,50 १२३ से १२८,१३२,१३४,१३६,१३८,१४२, १४४,१४६,१४६,१४०,१४२,१४३,१६० से १६२,१६४,१६४,१७१ से १७३,१७६ से १७० इत्द से १९१,१९३,१९४, १९८ से २००, २०२ से २०४,२०६,२०७,२१० से २१४, २१६ से २१०,२२२ से २२४,२२०,२२६, २३४,२३६,२३⊏,२४१ से २४४,२४६,२५७ से २६०,२६२,२६४,२६९,२७१,२७३,२७७ स २६२ उक्कोसपद [उत्कर्षपद] जी॰ ३।१९४ से १९७ उक्कोसपय [उत्कर्धपद] जी० ३।१९५ उक्लिल [उल्झिग्त] रा० ११४. जी० ३१४४७ उक्लित्तचरय [उत्क्षिप्तचरक] ओ० ३४ उक्तितराणिक्तित्तचरय [ उत्तिभव्तनिक्षिप्तचरक क्षो० ३४ उक्खित्ताय [उत्क्षिप्तक] रा० १७३,२८१. জী৹ ২। ২ দ ২ उक्स्सु [इक्षु] जी० ३।६२१ उक्खेवण [उत्क्षेपन] औ० १८०

उग्गत [ उद्गत ] जी॰ ३ 1३००,५९५ उग्गतव [उग्रतपस्] ओ० ५२ उग्गपुत्त [उग्रपुत्र] ओ० ४२. रा० ६८७ से ६८९. 837 उग्गमणुगमणपविभत्ति [उद्गमनोद्गमनप्रविभक्ति] रा० द६ जग्गय [ उद्गत ] रा० १७,१८,२०,३२,१२६. জী০ ই।২নন,३७२,५१০ √उग्गलच्छाव [दे०]--उग्गलच्छावेमि ग० ७१४ उग्गलच्छाविसा [दे०] रा० ७५४ उग्गह [अवग्रह] रा० ७४०,७४१ उः घोसेमाण [ उद्घोषयत् | २१० १३,१५ उच्च (उच्च) जी० ३।३१३ उच्चतम [उच्चन्तक] रा० २६. जी० ३।२७९ उच्चत [उच्चत्व ] ओ० १८७. रा० ४०,१२७ से १२६,१३७,१८६,१८६,२०४ से २१२,२२२, २२७,२३१,२३६,२४७,२४१,२४३. जी० ३।१२७,२६१ से २६३,३००,३०७, ३४२ से ३४४,३४९,३६४,३६८ से ३७४, ३७६,३५१,३५६,३९३,४०१,४१२,४१४, ४६६,४६७,६३२,६३४,६४६,६४७,६५२ ६६१ ६६३,६७२ से ६७४,६७९,६५९,७०६,७१३, ७३६,७३७,७४६,७६४,**५३**८,८८२,८८४, £52,550,555,568,565,600,600, 88,685,8050,8058,8000 उच्चार [उच्चार] रा० ७९६ उ**च्चारण** [उच्चारण] ओ० १८२ उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिट्रावणियासमिय [ उच्चा रप्रस्न वणक्ष्वेलसिंघाण उल्जपारिष्ठापनि-कीसमित ] ओ० २७,१४२,१६४. रा० ५१३ उच्चावय [उच्चावच] ओ० १४०,१५४,१६५, १६६. रा० ७६६, ५१६. जी० २।२३९, १८२ उच्छंग [उत्सङ्ग] ओ० ६४ √उच्छल [उत्+शल्]—उच्छलेति रा० २५१. জী৹ ২।४४৬

√उट्ठा [उत्+ का]---उट्ठेइ. ओ० ७व. रा०६९४

उच्छायणया [उच्छादना] रा० ६७१ उच्छ [ इक्षु ] ओ० १. जी० ३ा≍७८,६६१ √उच्छुभ [ उत्+क्षिप़[ --उच्छुब्भइ. रा० ७०५ उच्छूद [उल्क्षिप्त] को १९. जी० ३।४९६ उच्छूदसरोर [उत्क्षिप्तशरीर] ओ० ८२. रा० ६८६ उज्जम [उद्यम] ओ० ४६ उज्जल (उज्वल) ओ० ४,८,१९,४७. रा० ३२, ६९,७०,२४९,७९४. जी० ३।११०,१११, ११७,२७४,३७२,४१०,४८९ से ४९१,४९६ उज्जाण [उद्यान] ओ० १,३७. रा० १२,६४४, £XX, 500, 00 \$, 08 8, 08 3, 08 8, 08 6, ७२९. जी० ३।५५४ उज्जाणपासग [उद्यानपालक] रा० ७०७,७१३,७१४ उज्जाणपालय [उद्यानपालक] रा० ७०६ उज्जाणभूमि | उद्यानभूमि | रा० ७३२,७३७,७४७ उज्जालिय (उज्वालित) जी० २।४८६ उज्जु [ ऋजु ] ओ० १९,४७. जी० ३।५९६,५९७ उज्जुमइ [ऋजुमति] ओ० २४. रा० ७४४ उन्जुय [ऋजुक] त्रो० १९. जी० २।४९६,४९७ उज्जुसेढो [ऋजुश्रेणी] ओ० १८२ उजनोइय [ उद्द्योतित ] जी० ३.४१८ उज्जोएमाण [उद्योतयत्] जी० ३।३०३ उज्जोय [उद्योत] ओ० १२. रा० २१, २३,२४, ३२, ३४,३६,१२४,१४४,१४७,२२८,२४७. जी० २।२६१,२६६,२६६,२७७,३८७,५८६, ४९०,६७२ √उज्जोव [उद्+ द्युत ]---उज्जोवेइ. रा० ७७२, जी० ३.३२७ - उज्जोवेति. रा० १५४. जी० ३।३२७ -- उज्जोवेति. रा० १५४ जी० ३।७४१ उज्जोविय [उद्द्योतित] ओ० ५१,६३,६५ उज्जोवेमाण [ उद्दोतयत् ] ओ० ४७,७२. रा० ७०, १३३. जो० ३।११२१,११२२ उट्ट [उष्ट्र] ओ०१०१,१२४. जी० ३।६१८ उट्टियासमण [उष्ट्रिकाश्रमण] ओ० १५८

उट्ठा [उत्था] ओ० ७८.५०.५१,५३. रा० ६०,६२, ££2,000,085,050 उट्टिय [उत्थित] ओ० २२. रा० ७७७,७७८, ច្រភភ उट्टेशा [उत्थाय] को० ७व. रा० ६० उडव [उटज] तापसगृह जी० ३।७म √ खडु [दे०] — उडुइज्जइ. रा० ७८५ उडुबइ [उडुपति] ओ० १९ उडुयति [उडुपति] जी० ३।४१६ उड्ड [उर्घ्व] अरे० ११९.१५२,१९२. रा० १२४, . १२७ से १२९,१३७,१८६,१८८,२०४ से २१२, २२२,२२७,२३१,२३६,२४७,२४१,२४३, ७४३. जी० १४४; ३ २४७,२६१ से २६३, ३००,३०७,३४२ से ३४४,३४९.३६४,३६८ से ३७४,३७६,३८१,३८६,३८३,४०१,४१२, ¥**१**४,**५६६,६३**२,६३४,**६४**६,६४७,६६१, ६६३,६७२ से ६७४,६७९,६८६,७०६,७१३, ७३६,७३७,७३६,५३८,११२,८३८,८४२,८४४, E00, 200, 28, 285, 8035, 805, 805, 805, 8000,8888 उड्हंआण् [उध्वंजानु] ओ० ४४. दर उङ्हवाय [ ऊर्ध्ववात ] जी० १। ५१ उड्ढीमुह [ . उडी'मुख ] जी० ३। ८४२ उण्णइय [उन्नतिक] ओ० ६ जी० ३।२७५,२८६, ६३९,५४७,५६३ उण्णत [उन्नत] रा० २४४ √उण्णम [उत् +नम्] — उण्णमंति. रा० ७४ उण्णमित्ता [उन्तम्य] रा० ७४ उण्णय [उन्नत] ओ० १,१९. जी० ३।४०७,५१६, શ દે છે उण्णयासण [उन्नतासन] रा० १८१,१८३, জী০ ২।২৫২

उट्टी [उष्ट्री] जी० ३।६१९

४ू⊏०

√उण्णाम [उद्-⊢नामय्]---उण्णामिज्जइ. জী০ ইাও্হিং चण्ह [उष्ण] ओ० ११७. रा० ७२८,७९६. जी० ३।११८,११६ उत्ताल [उत्तप्त] रा० ७३२,७३७ उत्तम [ उत्तम ] ओ० २३,५१. रा० २६२. जी० ३।४१७,४९२,४९६ से ४९= उत्तमंग [उत्तमाङ्ग] जी० ३। ४६६ उत्तर [उत्तर] ओ० २१. रा० १९,४०,४१,४४ १३२,१७०,१७३,२१०,२१२,२३५,२३६, **६५**८,६६४,६८४,७**६५**,८०२. जी० २।४८; इ।४,२२,२७,६३,६६ से ७२,७७,२२६,२२७, २३२,२४७.२६५,२८४,३३६,३४४.३४८, **૱૱૱૱૱**૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱ <u> ५७७,४९५,४९७,६०१,</u>६६४,६३**स,६३**९, ६४७,६४७,६६०,६६१,६६४,६६६,६७३, ६८०, ६८२,६८६,६**९**२,६९४,६९६,७०१, ७११, ७**१३,**७२२,७३६,७४४,७४७,**८१**२, 438,442,448,602,8008,8008,8008 उत्तरंग [उत्तरङ्ग] रा० १३०. जी० ३।३०० उत्तरकुरा [उत्तरकुरु] जी० २।१३;३।१७८, से १९६७,६०५ से ६२८,६३१,६३२,६३६,६६६, ६६८,७०२ उत्तरकुरा [उत्तरकुरा] जी० ३।६१६,६३७ उत्तरकुर [उत्तरकुरु] जी० २ ३३,६०,७०,७२, हइ,१३७,१३८,१४७,१४६; ३१२१८,२२८, ¥30 उत्तारकुरुद्दह [उत्तरकुरुद्रह] जी० ३।६६६ **उत्तारकूलग** [उत्तरकूलक] अं°० ६४ उत्तारतर [उत्तरतर] ओ० ७९ से ८१ **उत्तारपच्चस्थिम** [उत्तरपाक्ष्वात्य] जी० ३।२२५, ६५५,७४३ उत्तरपच्चस्थिमिल्ल [उत्तरपाश्चात्य] जी० ३१२२१, ६९६,६९७,६१९,९२२ उत्तरपासग [उत्तरपाद्यंक] रा० १३० उत्तरपासय [उत्तरपार्श्वक] जी० ३।३००

१०,१२,१८,४१,५६,६५,२०९,२४६,२४१, 740,742,744,740,746,707,703, २७९,६४८,६७०,६७८. जी० ३।३३९,३७२, xo='x65'x56'x58'x56'x56'x56'x38' ¥30, ¥3=, ¥XX, XX=, £3X, £X0, EE=, ६८०,६८३,७४० उत्तरपुरत्थिमिल्ल | उत्तरपौरस्त्य ] जी० ३।२१७, 777, \*\* \*\* \*\* \*\* \*\* \*\* \*\*\* \*\*\* उत्तरमंदा [उत्तरमन्द्रा उत्तरमन्दा] रा० १७३. জী০ ২।২৮২ उत्तरवेउव्दिय [उत्तरवैक्रिय] रा० १०,४७. जी० ११६४,६६,१३५,१३६;३१९१,६३,४४६, १०८७,१०८५,१०६१,११२२१,११२२ उत्तरागार [उत्तराकार] रा० १६५ उत्तरासंग [उत्तरासङ्ग] ओ० २१,५४. रा० ८, ७१४ उत्तरासंगकरण [उत्तरासङ्गकरण] वो० ११. যাত ওওদ उत्तरिज्ज [उत्तरीय] ओ० ६३ उत्तरित्तए [उत्तरीतुम्] ओ० १२२ उत्तरिल्ल [ औदीच्य, औत्तराह ] रा० ४८,४६, ४७,२९७,३०२,३०७,३१३ से ३१६,३१८, इ२१ से इ३१,३३६,३४१ इ४६,३७६,३९४, XIX, XXI,XEE,XXX,XXE,XOX,EZE, ६३४. जी० ३।३३,३६,३८,२२७,२४०,२४८, २४०,२४६,४६२,४६७,४७२ ४७= से ४८१, ४=३,४=६ से ४९६,४०१,४०६,४११,४२३, X5X,X56,X30,X30,X34,XXX,XXX, xxx,xxx,६७३,६९७,६९८८,**६१**६ उसाणग [उतानक] ओ० १ उसाणयछत्त [उत्तानकछत्र] ओ० १९४ उत्तालिज्जंत [उत्ताड्यमान] रा० ७७ उत्तासणय [उत्त्रासनक] जी० ३।५३ उत्तिमंग [उत्तमाङ्ग] ओ० १९. जी० ३।४९७ उद [उद] जी० ३।२८६

उत्तरपुरत्थिम [उत्तरपौरस्त्य] ओ० २. रा० २,

**তৰ্বক** [ তৰজু ] জী০ ২। থদও उदक] रा० २६. जी० ३।५१६ उदकजोणिय [उदकयोनिक] जी० ३।७५७ उदग [उदक] ओ० ६३,११७. रा० १५१,२७९, २८१. जी० ३१४४४,४४७,७२१,७२६,८५४, 583,0%2 **उदगत्ता** [उदकत्व] जी० ३।७८७ उदगमच्छ [उदकमत्स्य] जी० ३।६२६,५४१ उदगमाल [उदकमाल] जी॰ ३।७९२ उदगरस [उदकरस] रा० २३३. जी० ३।२८६, **८१९,८१४,९१६,९१७,९६४** उदगवारग [उदकवारक] जी० ३।११८ उदम्ग [ उदग्र ] जी० ३। ५३९ उदधि [ उदधि ] जी० ३।१०६,५९७ उदय जिदय ] ओ० ३७,११६,११७ उदय [उदक] ओ० ६,१११ से ११३,११७,१३७, १३८, रा० ६,२८०,२८२,२९१,३५१. जी० ३।३२४,४४६,४४८,७२९,८६०,८६६, 593,505,**6**85,682,680,505 उदयपत्त (उदयप्राप्त) ओ० ३७ उदर [उदर] जी० ३।५९६ उदहि [उदधि] स्रो० ४८ √उदि [उद्+इ]—उदेंति. जी० ३।१७६ उदीण [उदीर्चन] रा० १२४. जी० ३।४७७, 8038 उदौणवाय [उदीचीनवात] जी० शब्द √ उदीर [उद्+ईरय्] -- उदीरइ. रा० ७७१. —उदीरेंति, जी ३।११० उदीरंत | उदीरयत् ] रा० ७७१ उदीरण [उदीरण] ओ० ३७ उदीरिय [ उदीरित ] रा० १७३,७७१. জী০ ইাহ্লধ্ उदु [ऋतु] जी० ३। १४१ उद्दंडग उद्दंडक ] ओ० ६४ **उद्दवणकर** [उद्द्रवणकर] ओ० ४० उद्देवेत्ता [उद्दुत्य] रा० ७९१

४९२

उद्दा(ग) [दे०] जी० २। = ७२ उद्दाइता [अवद्राय, अवद्रत्य] जी० ३।५७५ उद्दाल [अवदाल] रा० २४४. जी० ३१४०७ उद्दाल [उद्दाल] जी० २।६३१ उद्दालक [उद्दालक] जी० ३। १८२ उद्दिट्ट [उद्दिष्ट] जी० ३१८३८।२५ उद्दिद्वा [दे० उद्दिष्टा] ओ० १२०,१६२. रा० ६९८,७४२.७८९. जी० ३।७२३,७२९ उद्देसिय [ औदेशिक ] ओ० १३४ उद्धं सणा [उद्धर्षणा] रा० ७६६ उद्धं सिसए [उद्धर्षितुम्] रा० ७६६ उद्धंमत [उद्धमत्] जी० ३।७३१ उद्धम्ममाण [उद्हन्यमान] ओ० ४६ उद्वायमाण [उद्धावत्] क्षो० ४६ उद्धार [उद्धार] जी० ३१९७३ उद्वारसमय [उद्धारसमय] जी० ३।९७३ उद्धारसागरोवम[ उद्धारसागरोपम] जी० ३१९७३ उद्धिय [उद्धृत] ओ० १४. रा० ६७१ उद्षुय [उद्भत] ओ० २,४५,६४. रा० १,१२३२, \*\*,\*\*,\*\*,\*\*\*,\*\*\*,\*\*\*,\*\*\*,\*\*\*,\*\*\* २८१. जी० ३।८६,१७६,१७९,१८०,१८२, ₹07,**₹0**0,307,383,385,88¥,88¥,886, ४४१ उद्धुमंत [उर्ध्मायमान] रा० ७७ उद्युव्वमाण | उद्ध्यमान | ओ० ६५ उद्धूय [उद्धूत] रा० १०,१२,५६,२७९ उग्नइय [उन्नतिक] जी० ३।११८,११९ उन्नय [उन्नत] ओ० १९ जी० ३।४९७,४९८ उपप्पुय | उपप्लुत ] जी० ३।११६ उप्पइता [उत्पत्म] ओ० १६२. जी० ३,१०३८ उष्पण्ण [उत्पन्न] ओ० १६६. रा० ७७१ उप्पण्णकोऊहल्ल [उत्पन्नकौतूहल्ल] ओ० ५३ उप्पणसंसय [ उत्पन्तसंशय ] ओ० ८३ उप्पण्णसङ्घ [उत्पन्नश्चद्ध] ओ० ५३ उप्पतित्ता [उत्पत्य] जी० ३।२५७

उदंक-उप्पतित्ता

#### उप्पत्ति-उराल

**उप्पत्ति** [उत्पत्ति] ओ० १८४ उष्पत्तिया [ औत्पत्तिकी ] रा० ६७१ √उष्पव [उत्+पत्]—उष्पयंति. रा० २५१. জী০ ই।४४৬ उष्पस [उत्पल] ओ० १२,२२,१५०. रा० २३, १३१,१४७,१४८,१७४,१६७,२७६ से २८१, 255,75E,073,000,005,055. जी० ३।११८, ११९,२५९,२६९,२८६,२९१, #08,88X, 880,8X8,8XX,X6=,650, **६४६,६६४,७३**८,७४३,७**४०**,७६३,७६४, 053,588,E30 उष्पलगुम्म [उस्पलगुल्म] जी० ३।६८६ उष्पसर्वेटिय [उस्पलवृन्तिक] ओ० १५८ उप्पला [उत्पला] जी० ३।६८६ उप्पलुज्कला [उत्पलोज्वला] जी० ३१६८६ उप्पाइता [उत्पादा] जी० १।५० उप्पाइयपन्वय [अरिपातिकपर्वत] ओ० ५७ √उप्पाड [उत्-| पाद्य]-- उप्पार्डेति ओ० १६६ उप्पारणय [उत्पाटना] ओ० १०३,१२६ उप्पालपत्वतम [उत्पातपर्वतक] जी० ३१९४८ उप्पालपस्वय [उत्पातपर्वत] जी० ३१८५७ उप्पाव [उत्पाद] जी० ३१९१७ उप्पाय [उत्पाद] जी० ३।१२६।१० उप्पायनिवायपसत [उत्पादनिपातप्रसक्त] स० १११,२८१. जी० ३१४४७ उप्पायपव्यत [उत्पातपर्वत] जीव ३.२९३ उप्पायपव्य [उत्पालपर्वत] रा० १८१. जी० ३।२९२,५१७ उप्पायपध्ययग [उत्पातपर्वतक] रा० १८० उष्पि [उपरि] ओ० १६८. रा० २१. जी० ३।८० जण्पिधसभूत [ उत्पिञ्जलभूत ] रा० ७५ √उप्पीस [उत्∔पीड्]--अप्पीलेति. जी० 31688 उष्पीलिय [उत्पीडित] ओ० ४७. रा० ६९,६६४, ६्≒३. जी० ३।५६२

उप्फेस दि० ] ओ० ६९ √ उब्भाम [उद्+ भ्रामय]—उब्भामेइ. रा० ७२७ उल्भिज्जमाण [ उद्भिद्यमान ] जी० ३।२०३ उभजी [उभतस्] ओ० ६६,११५. रा० १३१ से १३८,२४४,२४६,२७६. जी० ३।३०१ से 309,382,322,00,889,632,636, ७८८ से ७६०,८३१ जभय [जमय] जी० ३।४४४ उभयओ [उभयतस्] जी० ३।८८६ उम्मक्जग [उन्मज्जक] ओ० ६४ उम्माण [उन्मान] जो० १४,१४३. रा० ६७२, ६७३,≂०१ उम्मि [ऊमि] रा० ६८७ उम्मिसित [उन्मीलित] जी० ३।३०७ उम्मिलिय [उन्मीलित] ओ० २२. रा० १३७, ७२३,७७७,७७५,७५५ उम्मिसिय [उन्मिषित] जी० ३।११८,११६ उम्मुबक [उन्मुक] ओ० १६५।२० रा० ८०६, ८१० उयगरस [उदकरस] रा० १७४ उयर [उदर] ओ० १९ **उर** [उरस्] ओ० ७१. रा० ६१,७६ उरग [उरग] जी० ३।५५ उरगपरिसप्य [ उरगपरिसर्ग ] जो० २।११३ उरत्य [ उरःस्य ] जी० ३।४्१३ उत्तपरिसप्प [ उरःपरिसर्प ] जी० १।१०४,१०५, १११,१२२ से १२४; रा२४,१२२; इा१४३, 188,182 उरपरिसप्पी [ उर:परिसपिणी ] जीव २१७,५,१२ उरक्म [ उरभ्र ] रा० २४,२७. जी० २।२७७,२५० उरस्स [ औरस्य ] रा० १२,७५८. जी० ३। ११ द उराल [दे० उदार] रा० ४०,७८,१३२,१७३, 629

**उ***स***ल** [आर्द्र] रा० ७१३

- √उस्लंघ [उत्+लङ्ख्]---उल्लंघेज्ज. ओ० १८०
- उल्लंघण [उल्लङ्घन] ओ० ४०
- √उल्लाल [उत्+ लालय्]---उल्लालेति. रा० १४
- उल्लालिय [उल्लालित] रा० १४
- उल्लालेमाण [उल्लालयत्] रा० १३
- उल्लिहिय [उल्लिखित] ओ० १५ रा० ६७२
- उल्लोइय [दे०] ओ० २,१५. रा० ३२,२८१. जी० ३।३७२,४४७
- उल्लोग [उल्लोक] जी० ३१३४४, प्यत
- उझ्लोय [उल्लोक] रा० ३४,६६,१३०,१६४, १द६,२०४ से २०७,२१३,२१६,२६७,२४१, २६०. जी० ३।३००,३०८,३३७,३४६,३४६, ३६४.३६८ से ३७१,३७४,३१९,४१२,४२१, ४२६,६३४,६४८,६७३,१०४
- उबह्य [उपचित] ओ० १९. जी० ३।४९६
- उद्यउत्ता [उपगुक्त] ओ० १८२ से १८४,१९४।११. रा० १४. जी० १।३२,८७,१३२,१३३;
  - 31804,828,8880;8134,30
- उद्यएस [उपदेश] ओ० ४७. रा० ७४= से ७४०, ७६४,७६६,७७०,७७३
- उवएसरुइ [उपदेशरुचि] ओ० ४३
- उवओग [उपयोग] ओ० ४६. जी० १।४,९६,
- १०१,११९,१२४,**१३३.१३**६; ३।१२७,४, १६०; ६।६६
- उवकरण [उपकरण] ओ० ३३
- उवकरणत्त [उपकरणत्व] जी० ३।११२६,११३०
- **उवकारियलयण** [उपकारिकालयन] रा० १८६
- **√ उवक्लङ** [उप-|-**स्क्र**]—उत्रक्वडावेरसंति.
- रा० ८०२
- उवक्खड [उपस्कृत] जी० ३।५९२
- उववखडावेता [उपस्कृत्य] रा० ७८७
- उवग [उपग] जी० ३। ५३८। २१
- उधगत [उपगत] रा० ७६०. जी० ३।११९.३०३ जयगय [उपगत] ओ० ६३,७४।४,१९४।१३.

रा० १२,१३३,६८६,७३२,७३३,७३७,७४८, ७४९,७६१,७६५. जी० ३।११८ उवगरण [उपकरण] ओ० ३३. रा० ७४९,७६१ उवगाइज्जमाण [उपगीयमान] रा० ६८५,७१०, 508 उवगारियालयण [ उपकारिकालयन | रा० १८८. जी० ३।३६१ से ३६४ उधगिज्जमाण [ उपगीयमान | रा० ७७४ उबगूढ [उपगूढ़] रा० ७६,१७३. जी० ३।२८५ उवगूहिण्जमाण [ उपगूह्यमान ] रा० ८०४ उवचय [उपचय] रा० ७४२,७४३ उवचित [उपचित] जी॰ ३।२१९ उवचिय [ उपचित ] ओ० २,१९,११. रा० २०, ३२,३७,१३०,१७४,२८१. जी० ३।११८ ११६,२=६,२==,३००,३११,३७२,४४७,५६६ उवच्छइ [उपस्तूत] रा० ७७४ उवजुंजिझण [उपयुज्य] जी० ३१७७ उवज्झाय [उपाध्याय] ओ० ४०,१५५ उचजतायवेयावच्च [उगाव्यायवैयावृत्त्य] ओ० ४१ √उवट्ठव [उप+स्थापय्]---उबट्ठवेइ. रा० ७२५ ---- उवट्टवेंति. रा० २७१. जी० ३।४४५ उवट्ठवेता [उपस्थाप्य] ओ० ४८. रा० ६८१ उवट्ठाणसाला [उपस्थानशाला] ओ० १८,२०,५३, ४५,४८,६२,६३. रा० ६८३,६८४,७०८, ७१४,७१६,७६२,७६४ उषट्ठाविय [ उपस्थापित ] जो० ६२ उवट्टिय [उरस्थित ] ओ० ७६,७७ उवणगरम्गाम [उतनगरग्र म | ओ० १६,२० उवणव्चिज्जमाण [उपनू-यम:न] रा० ७१०,७७४, 508 उवणिग्गय [ उपनिर्गत ] ओ० ४, द **√ उवणिमंत** [उप + नि – मन्त्रय्] — उवणिमंति-ज्जाह. रा० ७०६ - उवणिमतिस्संति. रा०

७०४---उवणिमंतेज्झा. रा० ७७६.

----उवणिमंबेह्ति ओ० १४६. रा० द१० उवणिविद्व | उपनिविष्ट | रा० १३६. जी० ३।२८८

√उवजी [उव+ती] ---उवणेइ. रा० ६८३ --- जवणेहि. रा० ६८० --- जवणेहिइ. रा० ८०७ उवणेहिति ओ० १४६ उवणीत [उगनीत] जी० ३। मम्द उवणीय [उपनीत] रा० ७२०,७२३. जी० ३।५९२,६०१ उचणीयअवगीयचरव [ उपनीतअपनीतरचरक ] জী৹ ३४ उवणीयचरय [उपनीतचरक] ओ० ३४ उवणेय [ उपनेय ] रा० ७२० √उवदंस [उप+दर्शय]---उवदंसिस्सामि. रा० ७७१ - उवदंसेंति. रा० ७९. जी० ३।४४७ ---- उवदंसेह. रा० ७३ उववंसित्तग् | उगदर्शयितुम् | रा० ६३ उवदंसिता [उपदर्श्य ] रा० ७३ उबवंसेमाण [उपदर्शयत्] रा० १६ उबदिह [उपदिष्ट] ओ० ४६ **उवद्दव** [उपद्रव] जी० ३।६२४ उवनचिवज्जमाण ( उपनृत्यमान | रा० ६५१ **√ उवनिमंत** [ उप + नि-| मन्त्रय् ]----- उवानेमंतंति. ৰাণ ওগ্ৰ उवनिविद्व [उपनिविष्ट] रा० २० उवप्पयाण ( उपप्रदान ] रा० ६७४ **उवभोगपरिभोगपरिमाण** [ उपभोगपरिभोग-परिमाण] ओ० ७७ उवमा [उपमा] ओ० १३,२३,१९४।१६. रा० **१५६,७**५२,७५४,७५६,७५८,७६०,७६२, ७६४. जीव ३।१२७,२३२ उवमा [दे०] खाद्य-विशेष जी० ३।६०१ उवयार ( उपचार ) अंग्व २,१५,४५. राव १२,३२, ७०,२८१,२९१,२९३ से २९६,३००,३०५, ३१२,३४४,६७२,८०६,८१०. जी० ३७२, ४४७,४५७ से ४६२,४६५.४७०,४७७,५१६, ४२०,४१४,४८०,४९१,४६७

उवयारियालयण [ उपकारिकालयन ] रा० २०३

उषयारियालेण [उपकारिकालयन] रा० २०१, २०२ उबरि [उपरि] रा० १३०. जी० ३।२६४ उर्वार (उपरि) ओ० १२. रा० ३७. जी० ३।७७ उवरिचर | उपरिचर ] जी० ३।११७ उवरिम [उपरितन] अंग् १६०. जी० ३।७१,७२, ३१७, ३४६,३४७ उवरिमगेविज्ज [ उपरितनजे वेथ | जी० २। १६ उवरिमगेवेज्ज ( उपरितनप्रैवेय ) जी० २।१४८,१४९ **उवरिमगेवेज्जग** [उपरितनप्रैंवेयक] जी० ३ १०५६ उवरिल्स [उपरितन] जो० १९२,१९५. जी० ३।६० से ७०,७२,६७४,७२५,७२८,१००३ से 8000,8888 √उवलंभ [उग+लभ्]---उवलभेज्जा. जी० ३।११८----उवलाभस्साम. रा० ७६व उवलत (उपलब्ध) ओ० १२०,१६२. रा० ६६८, 370,580 उवलालिज्जमाग [ उपलाल्यमान ] रा० ६५५, ७१०,७७४,५०४ √ उबलिप ( उप + लिप् ) ---- उवलिप्पइ. ओ० १४०. रा० ५११--- उवलिष्पिहिति. ओ० १५०. ५११ उबलित्त [उपलिष्त] अन्ति ४४,६० से ६२. राव २५१,८०२ जी० ३।४४७ उबलेवण | उपलेपन ] रा० ७७२ **√उववज्ज** [उन+पद्]—उनवज्जइ. ओ० ८७ ---- उववज्जंति. ओ० ७३. जी० १ ५१ ---उववज्जिहिति ओ० १४०---उववज्जिहिसि ৰাত ওখত उदवण्ण [ उपपन्न ] ओ० ११७. रा० २७६,७५० से ७५३,७६६. जीव ३१४३,११७,१२८१५, \*\*\*\*\*\* उबवण्णग | उपान्नक | रा० २७६ से २७५,२५४, २८७,६६६. जीव ३।४४३ से ४४४,न४२, = ४५

उववण्णपुरुव | उपपन्नपूर्व ] जी० ३।४३,९७४,

X=**4** 

**११**२८,११३० उवयत्तु [उपपत्तृ] ओ० ७२, ८ से ६४,११४, १४४,१४७ से १६०,१६२,१६७ उववन्नपुल्ध [उपपस्नपूर्व] जी० ३।१२७ उबबात [उपपात] जी० १।१२८; २१८८, ४४, < x 6, a x 8, a a o, e x 8, 8 0 = 7 उववातसभा [उपपातसभा] रा० २७४. जी० ३१४३९ उसवाय [उपपात] ओ० दृ से ६४,११४,११७, १४४,१४७ से १६०,१६२,१६७. रा॰ ५१४. जी० १११४,४१,४९,६४.७६,८२,८७,६६, 202,226,233,234; 3122013,22614, 250 उवदायसभा [उपपातसभा] रा॰ २६०,२६२, २६**६,२७७,४१४ से ४१६,४३४,४**५३,४५४, ७९६. जी० ३१४२१,४२४,४२४,४४३,५२६ से ५३१ उवविणिग्गय [ उपविनिर्गत ] जी० ३।२७४ √उवविस [उप+विश्]--उवविसइ. रा० ७४८ ---- उवविसामि. रा० ७४७ उबवेत [ उपवेत ] जी० ३।६०१,६०२,८६०,८६६, 592,595 उववेय [उपपेत] ओ० १,१४,१४३. रा० ६९,७०, १७३,६७२,६७३,६७४,८०१. जी० ३१२८४, ४८६ से ४९६ उवसंत [उपशान्त] ओ० ६१. रा० ६,१२,२५१. जी० ३१४४७,७९४,५४१ **उवसंतया** [उपमान्तता] ओ० ११६ **उधसंपज्जिल्लाणं** [उवसंपद्य] ओ० ३७. रा० **६९**६. जीव ३१९४३ उवसगा [ उपसर्ग ] औ० ११७,१४४,१६५,१६६. To 003,085,585 उवसम [उपशम] ओ० ७९ से ८१ √ उवसम [उप-+ शम्] - उवसमंति रा० १२ --- जवसामंति रा० १२

उवसमिसा (उपशम्य) रा० १२ उवसामिसा [उपशाम्य] रा० १२ उवसोभित [उपशोभित] जी० ३।२६४,३०२, ३४६ उवसोमिय [उपशोभित] आ० ६४. रा० २४,४०, ४१,१२८,१३२,१६४,१७१,२३७. जी० ३।३०६,३४३,३४७,३६० उवसोमेमाण [उपशोभमान] रा० ४०,१३२, १३४,१६१,२३६,७८२. जी० ३।२६४,३०२, ३०५,३१३,३६८८,५८०,५८१ उवसोहिय [ उपशोभित ] जी० ३।२७७ उवस्तय [उपाध्य] रा० ७१६ उचहाण (उपधान) ओ० ३० उवहिविउस्समा [ उपधिव्युत्सर्ग ] ओ० ४४ √उवागच्छ [उप-∔आ-†गम्[—उवागच्छइ. জা০ ২০. ২০ ४৬. जो० ३।४१७ जी० ३।४४२-उवागच्छति रा० १४. जी० ३।४४३---- उवायच्छामि. रा० ७१४ उवागच्छित्ता [उपागम्य] ओ० २०. रा० १०. জী০ ২।४४২ उवागय [उपागत] ओ० १६,२० उबाय [ उपाय ] ओ० १९२ उवायण [उपायन] रा० ७२०,७२३ √ उवालंभ [उप+आ-लभ्]---उवालब्भइ. বাঁ০ ওইও उवालभित्ता [उनालम्य] रा० ७६७ **उवासगदसाधर** [उपासकदशाधर] आ० ४५ √उबे [उप+इ]—उवेइ ओ॰ ११८.—उवेंति. ओ० ७४. जी० रा६०२ उम्बद्रणा [ उद्वर्तना ] जी० १।६६; ३।१२१,१२७। ५,१५६; ६३१।३ उम्बद्दिता [उद्वर्स्य] जी० १। १४ उब्बट्टिय [उद्वृत्त] जी० ३।११८,११६,१२१ उथ्वलण [उद्वलन] ओ० ६३ उदिवग्ग [ उद्विग्न ] ओ० ४६. जी० ३।२१६

उब्दिद्ध [उद्विद्ध] ओ० १ उम्वेग [उद्वेग] जी० ३।६२५ उब्वेध [ उद्देध ] जी० ३।७३६,७१४,१००,१०१, 880,888 उल्वेह [उद्देध] रा० २२७,२३१,२३३,२३६,२४७, २६२. जी० ३।३५६,३६३ ३६४,४०१,४२४, ६३२,६३९,६४२,६४३,६६१,६७२,६७९, £=3,&=E,023,028,0==,0E8,0EX, **५३६,५५२,६१**५ उसङ्ख [उल्सृत] रा० १८० उसड्डय [ उत्सृत क ] रा० १०१ उसस [उत्सक्त] ओ० २,४४. रा० ३२,२८१,२९१, २९४,२९६,३००,३०५,३१२,३५५. जी० ¥1307,880,882,858,862,862,863,800, 800,485,450 उसम [ऋषभ, वृषभ] ओ० १३,१९,४१. रा० १७ १८,२०,३२,३७,१२९,१४१,१९२. जी० ३१२७७,२८८,३०० ३११,३१८,३७२,४९३, १९४ से १९७ उसभकंड [ ऋषभकण्ठ ] रा० ११५,२५८. जी० ३।३२९ उसभकंठग किष्यभकण्ठक | जी० ३।४१६ उसभज्मय [ऋषभध्वज] रा० १६२. जी० ३।३३४ उसभनाराय [ऋषभनाराच] जी० १।११६ उसभमंडलपविभत्ति [ ऋषभमण्डलप्रविभक्ति ] रा० 83 उसमा [ऋषभा] रा० २२५. जी० ३।३८४,८६६ उसिण [उष्ण] जी० १।५; ३।२२,११२ से ११५, 388 उसिणभूत [उष्णीभूत] जी० ३।११९ उसिणभूय [उप्णीभूत] जी० ३।११६ उसिणवेदणा [उष्णवेदना] जी० ३।११२,११४, 225 उसिभवेदणिज्ज [उष्णवेदनीय] जी ३,११म

उसिय [ उल्सृत ] रा० १३२. जी० ३।२०२ उसीर [उशीर] रा० ३०. जी० ३।२८३ उसु [रषु] रा० ७४९. जी० ३।६३१ उस्सण्ण [दे०] बाहुल्यतः ओ० ८७. जी० ३।१६४ उस्सप्पिणी [उत्नपिणी] जीव १:१३६,१४०; २ ==,१२०;३१६०,१६४,=४१,१०=५;५१=, 8,23,26; 6123,80,80,720 उस्सण्पिय / उत्सपित / जी० ३।५८९ उस्सविय ( उच्छित ] रा० ७४० से ७४३ उस्सास [ उच्छ्वास ] ओ० १४४,१६४,१६६. रा० ७७२,८१६. जी० ३११२८ उस्सासत्त [उच्छ्वासत्व] जी० ३।१०६६ उस्सिय [उच्छित] जी० ३।९१९ **उस्सुय** [उत्सुक] ओ० **५१** उस्तेष [उत्सेध] जी० ३१६७६,७८९,७९४,८९६ अस्तेह [उत्सेध] ओ० १३, ५२. रा० ६, १२, १३०, २२४,२४४,२७६. जी० ३।३००,३८४,४१५, ४४२,७६९,७९४

## 35

- डरण [उन्न] रा० १८८. जी० २१४७,६१,७३;३,५, ३४,३६,४१,४३,४४,४६७;४६; ४६; ५७,२८; ७१३,४,६,१०,१२,१४,१७; ६१२ से ४,४०,५१, १७१,२३४,२३६,२३८,२४३,२६६,२७१, २७३,२७६,२८१
- ऊणग [ऊनक] जी० २।३०,३१,४८ से ६०,१३६; ३।२१८≒,६२६
- जणय [जनक] ओ० ३३. जी० २।३२ से ३४
- कणिया [ऊनिका] ओ० १९४।६
- ऊह [ऊह] ओ० १९. रा० १२,२५४,७४८,७५९. जी० ३।११८,४१४,५९६ से ४९८
- **ऊरुजाल** [ ऊरुजाल ] जी० रे।५९३
- जसड [उत्मृत] जी० ३।२९२
- **ऊसविय** [ उच्छित ] भो० ६७
- असास [उच्छ्वास] ओ० ११७. रा० ७९६. ३।१२७।३

उसिणोवय [उध्णोदक] जी० १।६५

एइय [एजित] रा० १७३. जी० ३।२८५ एऊपपण्ण [एकोनपञ्चाशत्] जी० ३।८३२ **एक ( एक ) जी० १**,७२ एकस [एकत्व] जी० ३।११० एकत्तीस | एकत्रिंशत् जी० ३.६३४ एकाणउति [एकनवःत] जी॰ ३.५१२ एकावलि [एकावलि] जी० ३।४५१ एकासीइ | एकासीति | जीव ३।७०६ एकासोति | एक:शीति | जीव ३ ७१४ एकाह [एकाह] जी० ३ १७६,१७८,१८०,१८२ एकूणवीसति [ एकोनविंशति ] जी० ३.४७७ एकोवग (एकोदक) जी० ३:७१४ एक्क [एक] ओ० ३. रा० ४. जी० २।४८ एककतीस [एकविंशत्] ओ० ३३. रा० २०७. जी० ३।६१ एक्कबोस (एकविंशति) जी० ३।७३६ एक्कार [एकादशन्] जी० ३ १००२ एकारस [ एकादशन् ] रा० १७३. जी० ३।२८५ एक्कारसम [एकादश] ओ० १४४. रा० ५०२ एक्कारसमासपरियाय [एकःदशमालपर्याय] ओ० २३ एक्कासीत [एकाशीति] जी० ३।६३२ एक्कासीय [एकाशीति] जीव ३.२२६।४ एकिकथिकय [एकैकक] रा० द२

# (ए)

ऊसिय [उच्छित] अ.० ४६,५५,६४,१६२. रा० ४०,४२,४६,१३७,१८६,२०४ से २०६, २०५,२५१,७७४,७५९. जी० ३ ३५९,३६४, ३६८ से ३७१,४४७,४९७,४९८,५९८,५४३,९७३, 330,520,820 ऋष्छज्मय (ऋूक्षध्वज) रा० १६२. जी० ३३५

**ऊसित** [उच्छ्ति] जी० ३।२१९,३०७,३४४,६३४, £82,6X8,622,622,662,660,662,8002 **ऊसितोदग** [उच्छितोदक] जी० ३ ७८३,७८४

कसासत्ता | उच्छ्वासता ] जी० ३।१७

एमतिय [एकक] रा० १७४,१=४,२=१,२=६, २९०,६४८,६४९, जी० १।१३३; ३,८६, १०४,१ ५६,१७५.१८०,१५२,२८६,२९७, ४४७,२७२,२७६,७१९,७२०,८०६,८०७, **५५७,१०**५० एगतो [एकतस्] रा० २७९. जी० ३।२५५,४४५ एगरा [एकत्व] जी० ३,११०,१११४,१११६

एकरेक्क स् [एकरेकक] जी० ३।८३८।४ एक्कोणवीसति [ एकोनविंशति ] जी० ३,५७७ एक्कोदक [एकोदक] जी० ३.७९५ एककोदग (एकोदक ) जीव ३।७९४ एग [एक] जो० १६. २१० ३. जी० १११० एगइय एकको ओ० २३,४५,५२,७८,८८,१४०, १४६,१६४,१६६, रा० १६,१७४,२५१,६५७, ६८६. जी० १।९६,११६; ३।८६,१०४,४४७, **ጞ**ቾጞ एगओ [एकतस्] रा० ८४,१७३ एगओखह [एकत:खह] रा० ५४ एगओचक्कवाल [एकतश्चकवाल] रा० ५४ **एगओवंक** [एकतोवक] रा० ५४ एगंत [एकान्त] ओ० ११७. रा० ६,१२,१४, ૭१३,७६५ एगंतदंड [एकान्तदण्ड] ओ० ५४,५५,५७ एगंतवाल [एकल्तवाल] ओ० =४,=५,=७ एगंतसुत्त [एकान्तसुप्त] अं१० ८४,८४,८७ एगखुर [एकखुर] जी० १।१०३,१२१;२।६ एगगुण [एकगुण] जी० १1३५,३७,४० एगगग एकछ ] रा० १५ एगच्च [एकार्च] ओ० ७२,१६७ एगच्चाओ | एकस्मात् ] ओ० १६१ एगजाय (एकजात) थो० २७. रा ५१३ एगजीव (एकजीव ) जी० १।७२ एगजोविय (एकजीविक) जी० १७२ एगद्व [ए का ब्टि] जी० ३।७१६ एगट्टिय [एकास्थिक] जी० १७७०,७१

एककेकक [एकके] जी० ३।६६७

एमेव [एवमेव] जी० ३।२२६

एगरावियक्क [एकत्द्रवितर्क] ओ० ४३ एगत्ताणुष्पेहा [एकत्वानुत्रेक्षा] ओ० ४३ एगत्तिभावकरण [एकत्वीभावकरण | ओ० ६९,७० एगर्गीभावकरण (एकत्वी यावकरण) रा० ७७व एगवंत (एनदन्त) जीव ३१४९६ एगदिसा (एकदिशा) रा० ६८२ एगपदेसिय (एकप्रदिशिक) जीव २१७२२,७२६ एगभूय | एकभूत् | रा० ११६ एगमेग (एकेंक) रा० १२९,१६२ से १६४,१९१. जी० ३।१०६,२६४,३४४,३४४,६३२,६६१, ७२३,७२६,६०१,१०००,१०२३ एगराइया [एकरात्रिकी] ओ० २४ एगसद्धि ( एकधप्टि ) जीव ३।११व एकसाडिय | एकसाटिक | ओ० २१,५४,६६. र⊺० ६,७१४,७७६ एगसालग [एकशालक] जीव ३।५९४ एगसिद्ध | एकसिद्ध | जी० १। -एगागार (एकाकार) जी० १।१०६,११६;३।० से 88,283,888 एगाभिमुह [ एकाभिमुख | रा० ६८८ एगावलि (एकावलि) ओ० २४,१०८,१३१. रा० ६९,२५५. जी० ३।४९३ एगावलिपविभत्ति [ एकाततिप्रविभक्ति | रा० ५४ एगासीइ (एकाशीति ) जीव ३ ७०६ एगाह । एकाह | जीव सबद,११८,११६ एगाहच्च (एकाहत्य) रा० ७४१,७६७ एगाहिय [एकाहिक] जी० २।६२व एगिदिय ] एकेन्द्रिय ] जी० १।५५; २।१०१,१०२, ११०,१११,१२०,१२९,१३६,१३६,१४६,१४६; ३।१३० से १३४,१११४; ४।१ से ३, ५ से ७,१०,११,१६,१९ से २२,२४; हार से ७, १६७,१६९,२२१,२२२,२२५,२३१ एपुणयाल (एकोनचत्वारिशत्) जी० ३।७१४ एगूणपण्ण (एकोनवञ्चाधत् ) रा० ७१. জী০ **१।**খন एगूणवोस | एकोनविंशति ] जा० ३।१०५३ एगुणासीति | एकोनाशीति | जी० ३।२१८

एगूरुइया [एकोहकिका] जीव २।१२ एगूरुव [एकीनक] जी० ३।२१९ से २२२,२२७ एगूरुपदीव [एकोरकद्वीप ] जी० ३।२२२,२२७ एगोणचत्तालीस [एकोनचत्वािंकत्] जी० ३।७९६ एगोगवीस [ एकोनविंशति ] जीव ३।१०५३ एगोदग (एकोदक] जीव ३।७९४ एगोरुय [एकोहक] जी० ३।२१६,२१७,२२६ एगोरुवदीब | एकोरुइद्वीव | जीव ३ २१७,२१८ एज्जमाण [एजमान] रा० ४०,१२३,१३२. জী৹ ২।২६২ √एड [इल्,एड्]----एडेइ. रा० ७६५—एडेंति. रा० १२- एडेट, रा० ६ एडित्ता [एजित्वा,एडित्वा] ओ० ११७. रा० १२ एडेसा [एलित्वा,एडित्वा | रा० ६ एणो [एणी] अति १९. जीव शप्रहद् एतारूब [एतद्रूप] जी० ३।२७८ से २८२,२८४, २= ४,३८७,४४२,८६०,८६६,८७२,८७४ एत्तो [इतस् | ओ० ३३. रा० २६. जी० ३।८४ एत्थ [अत्र] ओ० १३. रा० ३. जी० ३७७७ एमहज्जूईय (इयन्महद्युतिक) ग० ६६६ एमहज्जुतीय [ यन्महद्युतिक | जी० ३। १६१ एमहब्बल [इयन्महाबल] रा० ६६६. জী০ ২। ধ্হম্ एमहाणुभाव ( डवन्नहानुवाग ) रा० ६६६. জাঁত ২াগ্র্থ, ১৫৩ एमहायस (इयल्महायशस् | रा० ६६६, জী৹ ইাংহ্য एमहालत ( ध्यस्म (त् ) जीव शेव६,१७६,१७६ एमहालय [ इयन्महत् ] रा० ७३२,७३७. जी० ३।१९५२,१०५० एमहासोक्ख [ इयन्म हासौख्य ] रा० ६६६. জীত হাধ্যথ एमहिड्रिय (इक्ल्महधिक) जी० ३।६३व एमहिट्टीय [ स्वन्महथिक]ा० ६६६. जी० ३।५६५, ४६८,७०१,७६४

जी° ३।७२९ एयंत [एजमान] रा० ७७१ एयरूव [एतदरूप] रा० ६३,६५ एवारूव [एतद्रूप] ओ० ३०,६२,१४४,१४८, १४६. रा० ६,१९,२०,२४ से ३१,३७,४४, १३४,१४६,१७३,१७४,१६०,२२८,२४४, 7xx,200,20x,20&,&==,032,030, 635,088,088,088,085,000,088,083, ५१६. जी० ३।८४,८४,११८,२६४,२७८ से २८३,२९४,२९७,३०४,३११,३२२,४०७, x { X, X 3 X, X X {, X E 0, E 0 {, E 0 2, E X 3, E X X एरच्णवत [ऐरण्यवत] जी० २।१४४ एरण्णवय [ऐरण्यवत] रा० २७९. जी० २। १३, 38,85,00,62 एरवत [ऐरवत] जी० २।६६,१३६,१४७,१४६ एरवय [ऐरवत] रा० २७६. जी० २।१४,२=, xx, 60, 65, 88x, 823; 3122E, xx, 0Ex एरावणहह [ऐरावणद्रह] जी॰ ३१६६७ एरिस [ईदृश] ओ० ७९ से ५१ एरिसग | ईदुशक ] जी० ३।१०६ **एल** (एड) जी० ३।६१८ एला [एला] रा० ३०,१६१,२५८,२७६. जी० ३।२५३,३३४,४१९ एलिगा [एडिका] जी० ३।६१६ एलुय [एलुक] रा० १३० जी० ३।३०० एव [एव] रा० १० एवइय (एतावत्) जी० ३।१८२,८३८।२,३ एवं [एवम्] ओ० २०. रा० द. जी० १।१० एवंभूत | एवंभूत ] जी० ३।२८४ एवतिय [एतावत्] जी० ३।१७६,१७८,१८०, १७२,१७३ एवमेव [एवमेव] रा० ७०३. जी० ३।१७४

एम्महिद्वीय [इयन्महधिक] जी० ३।९१४

एय [एतत्] ओ० २१. रा० ६३. जी० १।११

√एय [एज्]---एयइ. रा० ७७१---एयंति.

ৰাণ দাই ₹10 EE=,9x2,99E,9=E एसुहुम [इयत्सूक्ष्म] जी० ३। १९३, १९७ आे ओइण्म [अवतीर्ण] ओ० ५१ ओगाढ [अवगाढ] रा० ६५४,६५४,७००,७०६. जी० १।३३, ४२,४३,४०; ३।२२ जी० ३।११८--- ओगाहति. जी० ३।११९ कोगाहणा [अवगाहना] ओ० १९४।४ से ५. रा० ७९६. जी० १११४,१६,७४,८६,८८, 20,28,203,282,282,284,286,228, १२३ से १२४,१३०,१३४; ३।९१,२३६, 838,858,80=0,80=8 ओगाहित्तए [अवगाहितुम्] ओ० १९ कोगाहिता [अवगाह्य] ओ० ११७. जी० ३,७७ अोगाहेता [अवगाह्य] ओ० ११७. रा० २४० ओगिण्हित्ता [अवगृहय] ओ० २१. रा० द ओग्गह (अवग्रह) ओ० २१,२२,५२. रा० ५,६, *६५६,६५७* ६५<u>७</u>,७१३ ओग्गिम्ह [अव + ग्रह,]---ओग्गिण्हइ. रा० ६८६ ओघ [ओघ] रा० १३,१४ ओचूल [अवचूल] ओ० १७ ओच्छण्ण (अवच्छन्त) ओ० ६ ओच्छन्त [अवच्छन्त] ओ० ६. जी० ३।२७४ ओटु [ओष्ठ] ओ० १९,४७. रा० २५४. जी० **३।४१४,४९६,४९७,**८६० **ओद्वछिण्णग** [ओध्ठछिन्नक ] ओ० १० √ओणम [अव+नम्]--ओणमंति. रा० ७४ ओणमित्ता [अवनम्य] रा० ७४

एसणासमिव [ एषणासमित ] ओ० २७,१४२,१६४. एसणिज्ज [एकणीय] ओ० ३७,१२०,१६२.

एम्महिड्वीय-ओणमित्ता

# **कोणय-**ओहस्सर

ओणय [अवनत] ओ० ७० **ओत्यय** [अवस्तृक] ओ० ६३,६५ ओवन [ओदन] जी० ३।४९२ **√ओधार** [अव+धारय्]---ओधारेंति. रा० ७१३ √ झोभास [अव+भास्]-अोभासइ. जी० ३।३२७---- ओभासेइ. रा० ७७२ ----अनेभासेति. रा० १५४. जी० ३।३२७ ओभासमाण [अवभासमाण] जी० ३।२४६ ओभिज्जमाण [ उद्भिद्यमान ] रा० ३० क्रोमत्त [ अवमत्व[ रा० ७६२,७६३ √अोमुय [अव+मुच्]---ओमुयइ. लो० २१. থা০ ওথি बोमुइत्ता [अवमुच्य] ओ० २१ **वोमोदरिया** [अवमोदरिका] ओ० २३ क्रोमोयरिया [अवमोदरिका] ओ० ३१ ओगंसि [ओजस्विन्] ओ० २५. रा० ६८६ कोयविय दि०] ओ० १९,४७. रा० ३७,२४४. जी० ३।३११,४०७,५९६ ओराल [दे० उदार] ओ० ८२. रा० ३०,१३२, १३५,१७३, २३६,६८६, जी० ११७५,८३, १३६; ३!२६४,२८३,२८४,३०२,३०४, ७२६,७९५,७९६,९४१ ओरालिय [औदारिक] ओ० १८२. जी० १।१५, ४९,६४,७४,७९,५२,५४,१०१,११९,१२५, १३० **ओरालियमीसासरीर** [औदारिकमिश्रकशरीर] अने० १७६ **कोरालियसरीर** | औदारिकशरीर ] ओ० १७६ अोरालियसरीरि [ औदारिकश रीरिन् ] जी० ६।१७०,१७१,१७६,१८२ ओरोह (अवरोध ] ओ० १ **ओलंबियग** (अवलम्बितक | ओ० ६० ओसित्त [दे० उपलिप्त] ओ० ४२. रा० ६८७ से ६८९

ओवइय [दे०] जी० शब्द **ओवणिहिय** [औपनिधिक, औपनिहितिक] क्षो० ३४ ओवम्म [औपम्य] ओ० १९४।१७. जी० ३।१२७।४ **√ओवय** [अव+ पत्] —ओवयंति. रा० २५१. জী০ ২়াস্বস্তুও **ओवयमाण** [अवपतत्] रा० १६ ओवहिय [ औपधिक ] ओ० १६१,१६३ ओवासंतर [अवकाशान्तर] जी० ३।१३,१६,२१, २६,२७,३०,३२,६४,६७,१७६,१७८,१८०, १न२,१०६२ से १०६४ **ओविय** [दे०] परिकमित ओ० ६३. रा० १७, १८,६९,७०. जी० इाय्हइ জী৹ ३।৩৪ ধ্ ओस दि० अवश्याय ] जी० शह्य ओसण्णकारण [अवसन्तकारण] जी० शाष्ट्र०,९४, १३६ ओसण्णग [अवसन्नक] ओ० ६० ओसण्णदोस [उत्सन्नदोष] ओ० ४३ ओसप्पिणी [अवसपिणी] जी० १।१३६,१४०; २1१२०; ३१६०,१६४,५४१,१०५४; ४१५, 6,23,26; 6123,80,80,240 √ओसर [अप+सृ] -- ओसरति. रा० २६२. র্ত্তী০ ২।४४७ ओसरित्ता [अपसुत्य ] रा० २६२. जी० ३,४४७ ओसह [ओषध] ओ० १२०,१६२. रा० ६९८, ૭૪૨,७૬૬ **कोसहि** [ओषबि] रा० १५२,२७९,२८०. जी० १।६९; ३।३२४,४४४,४४६,४४= ओसारिय | अवसारित | ओ० १७ ओहबल [ओघवल] ओ० ७१. रा० ६१ ओहय | उपहत, अवहत ] ओ० १४. रा० ६७१, હદ્દય ओहस्सर [ओवस्वर] रा० १३४. जीव ३।३०४, X85

ओहाडणी [दे० अवघाटनी] रा० १३०,१६०. जी० ३।२६४,३०० ओहि [अवधि] जी० ३११०७, ११११ ओहि - ओह | ओघ ] रा० ६,१२ ओहिणाण [अवधिज्ञान] ओ० ४०. रा० ७३९, ७४३,७४६ ओहिणाणलद्धि | अवधिज्ञानलब्धि | ओ० ११६ ओहिणाणविनय [अवधिज्ञानविनय] ओ० ४० ओहिणाणि [अवधिज्ञानिन्] ओ० २४. जी० १।११६,१३३; ६।१६१,१६५,१६६, 80,888,208,205 ओहिदंसणि [अवधिदर्शनिन्] जी० १।२९, ५६; हारेडर,रेडर,रेड्ड, १४० ओहिनाणि | अवधिज्ञानिन् ] जी० १।६६; ६।१५६ ओहिय [ औधिक ] जी० २।४१; ४।२४,२९.३० ओहीनाण (अवधिज्ञान ] जी० २।११११

क [क] रा० ६५ कइ [कति] ओ० १७३. रा० ७६९,७७६. जी० १ा१५,२१ से २३,२६,२७,६४; ३।७६, १६९ से १७१,७४८, =० ६ कइसमइय | कतिसामयिक | ओ० १७४ कओ | कुतस् | जी० १। ५१; २। १५५, १००२ कंक [कङ्क] जी₀ ३।४,६⊏ कंकड [कङ्कट] ओ० ६४. रा० १७३,६६१. জী৹ হাহব্য √कंख [काङ्क्] — कंखइ. रा० ७१३ – कंखति. ओ० २०.रा० ७१३ कंखिय | काङ्किको रा० ७७४ कंचण [काञ्चन] जो० २९,६४. रा० ३२,१५९, २६२. जीव ३:३३२,३७२,४४७,४८७,४८६, ५६३,५६७ कंचणकोसी [काञ्चनकोशी] औ० ६४ कंचलग (काञ्चनक) जी० ३।६६१,६६२,६६४, ६६६

**कंचणमय** [काञ्चनमय] जी० ३।६६१ कंचणिया [काञ्चनिका] ओ० ११७ कंचि [किञ्चित्] आं० ११६,११७. रा० ७६५ कंची (काञ्ची) जी० ३। १९२३ कंचुइ | कञ्चुकिन् | रा० ६८८ से ६९०,८०४ कंचुइज्ज (कञ्चुकीय) आं० ७० कंच्य [कञ्चुक] २१० ६६,७० कंटक [कःटक | जी० ३।६६२ कंटय [कण्टक] ओ० १४. रा० ६७१. जी० ३।न५,६२२ कंठ [कण्ठ ] जो० ७१. रा० ६१,६९,७६ कंठमुरवि दि० कण्ठमुरवी ] ओ० १०८,१३१. रा० २९४ कंठसुत्त [कण्ठसूत्र] जी० ३.४९३ कंठेगुण [कण्ठेगुण] रा० १३१,१४७,१४८,२८०. জী০ **३**।३०१,४४६ कठेमालकड [कृतकण्ठेमाल] ओ० ५२. रा० ६८७ से ६८६ कंड [काण्ड] रा० ६६४. जी० ३१६,७,९,१०,१६, १७,२४,२५,६० से ६३,५६२ कंडग काण्डक] रा० ७४८,७४६ कंड्रय (कण्डिंक) रा० ७४८,७४६ कंडु [कण्डु] ओ० ९६ कंडू किन्दु] जी० ३।७ द कांत [कान्त] ओ० १४,४६,६८,११७ १४३. रा० १७,१८,६७२,६७३,७४० से ७४३, ७७४,७९६,५०१. जी० १।१३४;३।४१७, 597,8060,8088 कंततराय [कान्ततरक] रा० २५ से ३१,४५. जी० ३।२७५ से २५४,६०१ कंतारभत्त [कान्तारभक्त ] ओ० १३४ कंतारभयग ) कान्तारभृतक ) ओ० १० कंति [कान्ति] ओ० २३,६६,७१. रा० ६१ कंद किन्द अो० ६४,१३५. रा० २२८. जी० ११७१;३1३=७,६४३,६७२ **कंदणया** [ऋन्दन] ओ० ४३

# **कंदप्प-क**डुच्छुंय

कंदम्प [कन्दर्भ] ओ० ४९ कंबण्पिय [कान्दपिक] ओ० ६४,९४ कंदमंत [कन्दवत्] ओ० ५,८,१०. जी० ३।२७४, ३८१,४८१ कंदरा [कन्दरा] रा० ५०४ कंदाहार (कन्दाहार) अंछ १४ कंबिय [ क्रन्दित ] ओ० ४६,४९ कंदूसोल्लिय [कन्दुपक्व] ओ० ह४ कंषिय [कम्पित] रा० १७३. जी० ३।२८४ कंपिल्लपूर [काम्पिल्यपुर] ओं० ११४,११व कंपेमाण [कम्पमान] ओ० ५२ कंबल [कम्बल] ओ० १२०,१६२. रा० २७, ६९८,७४२,७४२,७८९. जीव ३।२५०,४९४ कंबिया [कम्बिका] रा० २७०. जी० ३।४३५ कंबू [कम्बु] ओ० १९. जी० ३१४९६,४९७ कंबोय [कम्बोज] रा० ७२०,७२३ कंस (कांस्य) जी० ३।६०८ कंसताल [कांस्यताल] रा० ७७. जी० ३।४८८ कंसपाई [कांस्यपात्री] ओ० २७ रा० ८१३ कंसलोह | पाय | कांस्यलोहपात्र ] ओ० १०५, **१**२५ कंससोह [बंधण] [कांस्यलोहबन्धन] ओ० १०६, 398 ककारलकारगकारघकारङकारपविभत्ति [ ककारख-कारगकारघकारङकारप्रविभक्ति] रा० ९५ ककारयविभत्ति [ ककारप्रविभक्ति ] रा० ६४ **मक्करो** [कर्करो] जी० ३।५०७ कक्कस [कर्कश] रा० ७९५. जी० ३;११० कक्कोड किर्कोट ] जीव ३।७५० कक्कोडग ककोटक | ३१७१० कक्कोडय [कर्कोटक] जीव ३१७४८ से ७४० कक्ख [कक्ष] ओ० ६२ जी० ३। ४६७ कक्खड [कत्रखट] जी० ११४,३६,४०,४०;३१२२ कच्छ [बक्ष] ओ० ५७. जी० ३ १३७ कच्छभ [कच्छप] रा० १७४, जी० १।९९,११०;

31884,888,344,884 कच्छभी [कच्छपी] रा० ७७. जी० ३।५८व **कच्छु** [कच्छू | जी० ३।६२ ⊏ √ कज्ज [कृ]---कज्जति. ओ० १६१ कज्ज [कार्य] रा० ६७५. जी० ३।२३९,१११५ कज्जल किंज्जल ओ० १९. रा० २५. जी० ३।२७⊏,४६४,४६६ कज्जलंगी [कज्जलाङ्गी] औ० १३ कज्जलप्पभा [कज्जलप्रभा] जी० ३।६८७ कज्जहेउ | कः र्यहेतु ] ओ० ४० कट्टु [कृत्वा] ओ० २०. रा० ५. जी० ३।५६ कट्ठ [काष्ठ] रा० ६,१२,७६५ कट्ठसेज्जा [काण्ठशया] ओ० १५४,१६५,१६६ कट्ठसोल्लिय [काष्ठपक्व] ओ० ९४ कड [कृत] ओ० ७४,६ रा० १८४,१८७,८१४ जी० ३।२१७,२९७,२९८,३५८ कडंब [कडम्ब] रा० ७७ कडक्ल [कटाक्ष] रा० १३३. जी० ३।३०३ कडग [कटक] ओ २१,४७,१४,६३,७२. रा० ८, ६६,७०,२=४,७१४. जी० ३।४४१,४६३ कडगच्छेज्ज [कटकच्छेद्य] ओ० १४६. रा० ८०६ कडच्छाय कटच्छाय] ओ० ४. रा० १७०,७०३. জী০ ই।২৬ই कडच्छ्य [दे०] रा० ७४३ कड्य (कटक) ओ० १०८,१३१. रा० ८. জী৹ ই।४४७ कडाह [कटाह] जी० ३१७८ कडि [कटि] ओ० १९,६४. जी० ३।५९६ कडिय [कटित] ओ० ४. रा० १७०,७०३. जी० ३।२७३ कडिसुत्त [कटिसूत्र] ओ० ४२,६३ १०५,१३१. TTO & 50,858 कडिमुत्तग [कटिसूत्रक] रा० २०५ **कडिसुत्ताय** [कटिसूत्रक] रा० ६८८ कडुच्छुग [दे०] जी० ३।६०५ कडुच्छुय [दे०] रा० २५५,२७६,२५१,२६०,

२९२. जी० ३१४१९,४४४,४४७,४४६,४४७, ६७६ कडूय [कटुक] ओ० ४०. रा० ७९५. जी० ११५; 3122,880,628,540,628 कड्विज्जमाग [कृष्यमान] रा० ५६ कढिण [कठिन] ओ० ४६,९४ कढिय [क्वथित] जी० ३।५९२,६०१ कणइर [कणवीर] जी० ३।४९७ कणइरगुम्म [कणवोरगुल्म] जी० ३।४८० कणग [कनक] ओ० १९,२३,४०,६३,६४,०२. TIO 24,32,48,00,828,830,830,803, २१०,२१२,२५४,६५१,६९४. जो० ३।२५१, २८४,३००,३०७,३४४,३७२,३७३,४४१, X=E,XE3,XE5,XE0.580,080,=58, नन्द्र,ह३६ कणगजाल [कनकजाल] रा० १९१. जी० ३।२६५ कणगजालग [कनकजालक] जी० ३। १९३ कणगत्तायरत्ताभ [कनकत्वग्रक्ताभ] जी० ३।१०६३ कणगप्यभ [कनकप्रभ] जी० ३।८६९ कणगमय [कनकमय] जी० ३।४१५,६४३,६४४, 588 कणगामय [कनकमय] रा० २४४. जी० ३।३४२, ૪**१**x,૬३२,૬४३,૬x४,૬xx,७३६ कणगावलि [कनकावलि] ओ० २४,१०८,१३१. जी० ३।४४१ **कणगावलिपविभत्ति** [कनकावलिप्रविभक्ति] रा० दथ् कणिया [नवणिता] जी॰ ३।५८८ कण्ण [कर्ण] रा० १४,४०,१३२,१३४,१७३. जी० ३।२६४,२६४,३०४ **कण्णछिण्णग** [कर्णछिन्नक] ओ० ६० कण्णपाउरण [कर्णप्रावरण] जी० ३।२१६ कण्णपीठ [कर्णपीठ] ओ० ४७,७२ कण्णपूर [कर्णपूर] ओ० ४७,१०९,१३२ कण्णवासी [कर्णवाली] जी० ३।५९३ कण्णवेयणा [कर्णवेदना] जी० ३१६२५

कण्णवेहण [कर्णवेधन] रा० ८०३ कण्णिका [कणिका] जी० ३।३३२ कण्णिया [कणिका] ओ० १७०. रा० १५९. जी० ३१६४३ से ६४४,६४४ से ६४६ कण्णियार [कण्णिकार] जी० ३। ८७२ कण्ह [कृष्ण] ओ० १६. जी० ३।२७८,३४८ कण्हकंब [कृष्णकन्द] जी० १७३ कण्हकेसर (कृष्णकेसर) जी० ३।२७८ कण्हपरिव्वाया [कृष्णपरिव्राजक] ओ० १६ **कण्हबंधुजीव** [कृष्णवन्धुजीव] जी० ३।२७८ **कण्हमत्तिया** [कृष्णमृत्तिका] जी० ११४८ कण्हराई [कृष्णराजी, कृष्णराजी] जी० ३। ६१६ कण्हलेस [कृष्णलेश्य] जी० हा १८६,१६३ कण्हलेसा [ऋष्णलेख्या] जी० १।१३३; ३।१५० कण्हलेस्स [कृष्णले थ्य] जी० ६। १८५, १६६ कण्हलेस्सा [इष्डणलेश्या] जी० श२१ कण्हसप्प [कृष्णसर्प] जी० ३१२७५ कण्हासोय [कुष्णाणोक] जी० ३।२७८ कत [कृत] जी० ३। ५११ कलमाल [कृतमाल] जी० ३।४ू = २ कतर [कतर] जी० २।६८ से ७२,६५,६६,१३४ से १३८,१४१ से १४८; ३।११३८; ४।४२, ४६; ७१२०; ६१२४३,२८६ से २६१,२६३ कति [कति] रा० ७६७. जी० १।१९,२०,५६, १२८,१३०,१३४; ३१७७,६८,१०८,१४०, १४७,१६०,१६४,१६७,१७२ से १७४,२३४ से २३७,२४१,२४२,२४५,२४६,२४९,२४४, २४४,२४८,२९८,७०३,७०७,७२२,७३३ से 632,686,066,406,423,420,428, ≈३७,≈४१,≈४४,९६३ से ६६६,१०१४, १०१७,१०२३,१०२६,१०४०,१०४१,१०४४, १०७४,११०१,१११२ कतिकखूत्तो [कतिकृत्वस्] जी० ३।७३० कतिविध [कतिविध] जी० ३।६ से ११,३७,३८, **१४७, १६१, १**८४, ६३**१**; ४1३७

कतिविह [कतिविध ] जी० ३। १८३,६७६,६७७; ४।३८,३९,४३ से ४४ कतो [कुतस्] जी० ३। ५ ५ कत्तिया [कृत्तिका] जी० ३। १३७ कत्थ [कुत्र] ओ० १९४।१ कत्य [कथ्य] रा० १७३. जी० ३।२५४ कत्यइ [कुत्रचित्] ओ० २५ कस्युलगुम्म [कस्तुलगुल्म] जी० ३।४८० कतंब [कदम्ब] जी० २। ५८३ **कहम (क**र्दम] जी० ३।७११ कट्टमय [कर्दमक] जी० ३।७४८ कहमोदय [कर्दमोदक] ओ० १११ से ११३,१३७, **१**३५ कविहसिय [कपिहसित] जी० ३। ५४१ सम्प [ कल्प ] ओ० २६,६४,६४,६७,११४,११७, **१४०,१४४,१**४७ 社 १४€,१६२,१€०. TTO 0, 82, XE, 828, 208, 08 E. जी० २186,४६,६६,१४८,१४६; ३।७७४, ८४२,८४४,६३७,१०३६,१०४७ से १०४६, 2052,2024,2020,2058,2058,2058 से १०८३,१०८४ से १०८७,१०६०,१०६१, १०६३,१०६७ से १०६६,११०१,११०५, ११०७,११०६ से १११२,१११४,१११४, १११७,१११६,११२२१,११२२,११२४,११२= √कप्प [कृप्] – कप्पइ. ओ० ६६.---कप्पंति. ओ० १३. — कप्पेज्जा. रा० ७७६ कप्पणा [कल्पना] ओ० ५७ कप्परक्ल [कल्परूक्ष] ओ० ६३ कप्परक्खग [कल्परूक्षक] रा० २८४ कष्परुक्सय [कल्परुक्षक] रा० ३।४५१ कष्पिय [कल्पित] ओठ ४२,६२,६३. रा० ६८७ से ६८६ कप्पूर [कर्पूर] रा० ३०. जी० ३।२८३ कप्पेमाण [कल्पमान] ओ० ६१ से ६३,१६१,१६३. रा० ६७१,७१२

कष्पोवग [कल्पोपग] ओ० ७२ कम्बह [कबंट] ओ० ६८,८९ से ६३,६४,६६, १४४,१४८ से १६१,१६३,१६८. रा० ६६७ कम [कम] जी० ३।७७८,८३८:१४ कमंडलु [कमण्डलु] जी० ३।४९७ कमल [कमल] ओ॰ २१,२२,५४. रा॰ ८,१३१, **१४७,१४८,१७४,**२८०,**७१**४,७२**३**,७७७,७७८, ७८८. जी० ३।११८,११६,२८६,३२१,४४६, ४४८,४१७ कमलगर [कमलाकर] ओ० २२. रा० ७७७, <u>1995,955</u> कम्म [कर्मन्] ओ० २९,४६,७१ से ७४१४,७९ से **८१,८६,११९,१४६,१**६७,१७१,१८२,१८४, \$EXIZO. TTO \$= \$, \$=0,0\$ 0,0\$ 2,00 \$, ७७२. जी० २ ७३,६७,१३६; ३।१२६१६, 780,786,784 कम्मंत [दे० कमन्ति] ओ० १६१,१६३ कम्संस [कमांश] व्यो० १७१,१८२ कम्मकर [कर्मकर] ओ० ६४ कम्मग [कर्मक] जी० ६। १७६ कम्मगसरीर [ कर्मकशरीर ] ओ० १७६ कम्मगसरोरि [कर्मकघारीरिन्] जी० ६।१७०,१७४ कम्मठिति [ कर्मस्थिति ] जी० २१७३,६७,१३६ कम्मणिसेग [कर्मनिषेक] जी० २।१३६ कम्मणिसेय [कर्मनिषेक] जीव २१७३,६७ कम्मययदि [ कर्मप्रकृति ] ओ० १६८ कम्मभूमक [कर्मभूमक] जी० २। ८६,१३२ कम्मभूमग [ कर्मभूमक ] जी० १।१५६; २।१४,२८, २६,७७,५४,६६,१०६,११४,१२३,१३५,१४७, १४६; ३.२१२,२२६,५३६ कम्मभूमय [कर्मभूमज] जी० २।२७ कम्मभूमि [कर्मभूमि] जी० २।१३७ कम्मभूमिग [कर्मभूमिज] जी० २३७०,७२,१३८, 880,886 कम्मभूमिय [कर्मभूमिज] जी० १।१०१ कम्मभूमिया [कर्मभूमिजा] जी० २।११,१४,४४,

389,087,886,888 कम्मय [कर्मक] जी० १।१५,५९,६४,७४,७९,८,८,२ \*, 83, 80 \*, 888, 875, 830, 87\* कम्मया [कर्मजा] रा० ६७५ कम्मविउस्सम्ग | कर्मकृत्यमं ] ओ० ४४ कम्मसरोर [कर्मशरीर] ओट १७६. जीव 3137818 **कम्मसरीरि [क**र्मशरीरिन्] जी० ह। १८१ कम्मार दि० | जी० ३।११८,११९ कम्मारय | दे० | जी० ३।६१० कम्हा [ कस्मात् ] ओ० १७१. रा० ७०३. जी० ३।७२३ कय [कत] ओ० २,२०,४२,४३,४७,६२,६३,७०, ٤२. ३३० १४,१३१,१४७,१४८,२८०,६८३, **६** - ४, ६ - ७ से ६ - ६, ६ ६ - , ७००, ७१०, ७१६, 623,625,628,623,622,668,628, ८०२,८०५. जी० ३।३०१,४४६ कय [कच] ओ० ६३. रा० १२,२६१,२९३ से २९६,३००,३०४,३१२,३४४. जी० ३१४४७ से ४६२,४६५,४७०,४७७,४१६,५२०,५५४ कयंब (कदम्ब) जी० ३।३८८ कयपडिकिरिया [ कृतप्रतिकिया ] ओ० ४० कयर [कतर] ओ० १८४ से १८८, रा० ६६७. जीव १।१४३; ३।१००७,१०२०,१०२१, १०२७; ४११९,२२,२४; ४११९,२०,२६,२७, ३२ से ३६,६०; ७।२२,२३; १।७,१४,४४, २४० से २४२,२४५,२९२ **कयलिघरग** [कदलीगृ*ह*क] रा० १८२,१८३. জী০ ২।২ ছখ कयली [कदली] जी० ३।५९७ मयवर | कचवर ] जी० ३।६२२ कया [कदा] जी० ३ २७२ कयाइ [कदाचित्] ओ० ११९. रा० ६८०. জী০ ২। ২ হ कयाइं [कदाचित्] रा० ७१४

**कयाति** [कदाचित्] रा० २०० कयांति [कदापि, कदाचित् ] जी० ३।७०२ कर [कर] ओ० १४. जी० ३।४८६,४६७ √कर [कृ]- करावेंति रा० ७७४.- करिस्सइ रा० ७७१- करिस्संति रा० ८०३ ४२. रा० ६८७.--करेइ. ओ० २१. रा० ५६. जी० ३।४६१.—करेंति. ओ० ४७. रा० १०. जी० १ १२७.--- करेज्ज. जी० ३। ११७. रा० म. जी० ३।४४३.--करेमि. रा० ७६४. करेस्संति.रा० ८०२. - करेह.रा० १. - करेहि. ओ० ४४. रा० ६९४.--करेहिति. ओ० १४४. कारवेहि. ओ० १५. –काहिति. ओ० १४४. -- कीरइ. ओ० १४४, रा० ७६७ करंडग [करण्डक] ओ० ११७. रा० ७९६ **करकंट | करकण्ट | ओ० ६६ करग** [करक] जी० ३। १८७ करड [ करट ] रा० ७७ करडी [करटी] जीव २।५८८ करण [करण] ओ० १९,२५.४६,६३,१४४,१४५, १६१,१६३. २० ७६,१७३,६८६,५०२,८०३, ५४. जी० ३।२८४,४१६,८४४ करणओ [करणतस्] ओ० १४४. रा० ८०६,८०७ करणया | करणता | ओ० १७१ करणिज्ज [करणीय] रा० ११, ५६, २७४, २७६. जी० ३।४४१,४४२ करतल [करतल] रा० २४. जी० ३।२७७,४४४, ४४६,४४८,४४८ से ४६२,४६४,४७०,४७७, ર્પર, પ્રર૦, પ્રપ્ર૪, પ્રયૂ **करभरवित्ति** [करभरवृत्ति] रा० ६७१,७०३,७१८, ७४०,७४१ करय [करक] जी० १।६५ करयल [करतल] ओ० १४,२०,२१,४३,४४,४६,

६२,११७, रा० =,१°,१२,१४,१८,४६,७२ ७४,११८,२७६,२७६,२५०,२५२,२६१ से ૨૯૬, ૨૦૦, ૨૦૨, ૨ १२, ૨ ૧૪, ૬ ૧૫, ૬ ७२३,७६४,७७०,७७१,७९६. जी० ३१४४२ 820 करवत करंपत्र] जीव ३।११० करित्तए [कर्तुम्] ओ० १०३ करिय [कृत्वा] रा० २९२. जी० ३।४१७ करेता [कृत्वा] ओ० २१. रा० ६. जी० ३।४४३ करेमाण[कुर्वाण] ओ० ५२,६४,६४,११६,१५६. स० ६९७,६९९, जीव ३।४४३,४४४,९४२, =84,889 करोडिया [कसेटिका] ओ० ११७ करोडी [करोटी] जी० ३।४८७ कलंक [कलङ्क] जीवन्ध्र १८ व कलंकलोभाव [कलङ्कलीभाव] ओ० १९५ कलंब [कदम्ब] ओ० ६,१० कलंबचीरियापत्त [क़दुम्बचीरिकापत्र] जी० ३।५५ कलंबुय [कदम्बक] जी० राजरेनार,१४,५४२ -कसकल [कलकल] भो० ४२. रा० ६८७,६८८. জী৹ ইাদ্ধহ,দ্বধ্ कलकलेंत [कलकलायमान] ओ० ४६ कलण [कलन] ओ० ४६ कलमसालि [कलमशालि] जी० ३।४९२ कलस [कलश] ओ० २,१२,६४. रा० २१,४९, २७६,२८०,२९१, जी० ३।२८६,४४५,४४६, ४४५,४५७,४६७ कलसिया [कलशिका] रा० ७७ कलह [कलह] ओ० ४६,७१,११७,१६१,१६३ য়া০ ৬৪৭, জী০ ৰাহ্যত कलहंस | कलहंस ] ओ० ६. जी० ३।२७४ **फलहविवेग** [कलहविवेक] ओ.०. ७१ : कला [कला] ओ० १४६,१४८,१४९. रा० ८०६, **৯<b>৩**,৯০€,৯₹৫

कलायरिय (कलाचार्य) ओ० १४५ से १४७ रा० ७७६,५**०५ से** ५०५ कसाव [कलाप] ओ० २,११. रा० ३२,१३२, २३४,२८१,२६१,२६४,२६६,३००,३०४,३१२; ३५५,६६४. जी० ३।३०२,३७२,३९७,४४७, xx6'xes'xes'xex'xao'xaa'xse'xso' પ્રદ્દર,પ્રદર कलिंग [कलिङ्ग] जी० ३।४९५ कलिकलुस [कलिकलुष] रा० ७४०,७४१ कलित [कलित] जी० ३।३७२,४४७,४४७,४४६, 840,888,888 कलित्त [कटित्र] ओ० १३ कलिव [कलित] ओ ० १,२,११,४६,४५ से ४७, ६२,६४. राव १२,१७,१८,२०,३२,४२,४६, १२६,१३७,२३१,२४७,२५१,२६१,२६३ से २९६,३००,३०४,३१२,३५५. जी० ३।२८८, **३००,३०७,३७२,३६३,४४**८,४६०,४६२, <u>xéx'xao'xaa'x\$é'xxo'xxx'x=o'</u> XE1,XE6 **कलुस** [कलुष] बो० ४६ कलेवर [कलेवर] रा० १६०. जी० ३।२६४ कल्ल [कल्य] ओ० २२. रा० ७२३,७७७,७७८, 355 कल्लाण [कल्याण] क्षो० २,४२,७1,१३९. रा० ६, १०,४८,१८४,१८७,२४०,२७६,६८७,७०४, ७१९,७७६. जी० ३।२१७,२९७,२९८,३४८, 802,882,408,502 कल्लाणग [कल्याणक] खो० ४७,६३,७२. जी० ¥3,814 **कल्लोल** [कल्लोल] ओ० ४६ **कवइय [कव**चिक] ओ० ४७ कवड [कपट] रा० ६७१ कवय [कवच] ओ० १९४१२०. रा० ६६४,६८३. জী০ হাঁ ধ্বহ कवल [कवल] ओ० ३३

#### ५**६**५

कवाड [कपाट] ओ० १,१७४. रा० १३०. जी० 31300 कविट्ठ [कपित्थ] जी० १।७२ कवियच्छू [कपिकच्छू] जी० ३। ५४ कबिल [कपिल] ओ० ६. जी० सर७४ कविसीसग [कपिशीर्धक] ओ० १. रा० १२८. জী০ ৰাষ্থ্ৰ कविसीसय (कपिशीर्षक ) रा० १२८. जी० ३।३५३ कविहसिय [कपिहसित] जी० ३१६२६ कवेल्लुयावाय [कवेल्लुकापाक] जी० ३।११८ कवोत [कपोत] जी० ३। १९६८ कवोल [कर्पाल] ओ० १९. रा० २५४. जी० ३।४१४,४९६,४९७ कसाय [कषाय] ओ० ४४,४६. जी० १।४,१४, १६,= ६,६६,१०१,११६,१२=,१३६;३१२२; દાદ્દ कसायपडिसंलीचया [ कषायप्रतिसंलीनता ] ओ० ३६ कसायविउस्सग्ग [कवायव्युत्सर्ग] ओ० ४४ कसायसमुग्धाय [कथायसमुद्धात] जी० १।२३, न्म्; इ।१०न,१११२,१११३ कसिण [ कृष्ण ] ओ० १९,४७. जी० ३१४९६,४९७ कसिण [कृत्सन] ओ० १५३,१६४,१६६. **বা**০ দ**१**४ √कह [कथय्]---कईति. ओ० ४४--- कहेइ. रा० ६९३ कहं किथम्] ओ० ११न. रा० ७०३. जी० ३।२११ कहकहभूत [कहकहभूत] रा० ७८ कहग [कथक] ओ० १,२ कहगपेच्छा [कथकप्रेक्षा] ओ० १०२, १२५. জী০ হাহ্য্হ্ कहा [कथा] ओ० २०,४४,४३. रा० ७१३ कहि [बव] जी० १।१२७ कहिं [वव, कुत्र] ओ० १४०. रा० १२२. জী০ হাম্ব

काइय [कायिक] ओ० ६९ काउं [कुल्वा] ओ० १३७ **काउंबरोय** [काकोदुम्बरिका] जी० १।७२ फाउलेस [कापोतलेश्य] जी० ६।१६३ काउलेला [कापोत्तलेश्या] जी० हाहद,हह काउलेला [कापोतलेश्य] जी० ६।१८५,१८८,१९६ काउलेस्सा [कापोतलेश्या] जी० १।२१ काझ [कापोती] जी० ३१७७ **काकणिलक्खण** [काकिणीलक्षण] ओ० १४६ कागणिलवखण [काकिणोलक्षण] रा० ५०६ कागणिमंसक्यावियग [काकिणीमांसबादितक] জা০ ১০ कागण [कानन] रा० ६४४,६४४. जी० ३।४५४ कारिसायण [कापिशायन] जी० ३।८६० काम [काम] ओ० १४,४३,१४६,१४०,१६८. TIO EUS,EEX,U80,UX8,UX3,UUX,UE8, -११. जी० ३।१७९,११२४ कामकंत [कामकान्त] जी० ३। १७६ कामकूड [कामकूट] जी० ३।१७१ कामगम [कामकम] ओ० ४९,५१ कामगामि [कामकामिन्] जीव शप्रहद,६०६ कामजसय [कामडवज] जी० ३।१७६ कामत्यिय [कामाधिक] ओ० ६८ कामप्पभ [कामप्रभ] जी० ३।१७६ कामरय [कामरजस्] ओ० १४०. रा० ५११ कामरूवचारि [कामरूपधारिन्] ओ० ४१ कामलेस्स [कामलेश्य] जी० ३।१७६ कामवण्ण [कामवर्ण] जी० ३।१७६ कामसिंग [कामश्रङ्ग] जी० ३११७९ कामसिट्ठ [कामशिष्ट] जी० ३।१७९ कामावत्त [कामावत्तं] जी० ३।१७९ कामुत्तरवडिंसय [कामावतंसक] जी० ३११७९ काय [काय] ओ० २४. रा० १४६,८१४. जी० ३।११०,१११,१७४; हाद्द **√काय** [काचय्] ---- कायावेमि रा० ७४४ काय [पाय] [काचपात्र] ओ० १०५,१२८

# काय-कालमेह

काम [बंधण] [काचबन्धन] ओ० १०६,१२६ कायअपरित्त [कायापरीत] जी० ६।७६,५० कायकिलेस [कायक्लेश] ओ० ३१,३६ कायगुत्त [कायगुप्त] ओ० २७,१५२,१६४. ৰাণ নথ্য कायजोग [काययोग] ओ० ३७, १७५ से १७७, १८०,१८२ कायजोगि [काययोगिन्] जी० ११३१, ५७, १३३; ३११०५,१५२,११०६; ६१११३,११४,११८, १२० कायद्विति [कायस्थिति] जी० ३।११३३; ९१२२ कायपरिस [कायपरीत] जी० ६।७६,७७,८३ कायबलिय [कायबलिक] ओ० २४ कायच्व [कर्त्तव्य] रा० ७२,७०४. जी० ३।१२७; ४१६ कायविषय [कायविनय] ओ० ४० कायसमिय [कायसमित] ओ० १६४ कायापरिस [कायापरीत] जी० ६।=४ कारंडक [कारण्डक] ओ० ६. जी० ३।२७४ कारण [कारण] रा० १६,६७४,७१६,७२०,७४२, ७४४,७४६,७४८,७६०,७६२,७६४,७६८ कारवाहिय [कारवाहिक, कारवाधित] ओ० ६८ कारवेता [कारयित्वा] ओ० ५५. रा० ६ कारावण [कारण] ओ० १६१,१६३ कारेमाण [कारयत्] ओ० ६न. रा० २न२,७९१. जी० ३।३४०,४४८,५६३,६३७ कारोडिय [कारोटिक] ओ० ६= काल [काल] ओ० १,१८,२३ से २४,२७,२८,४४, ४७ से ५१,५२,५७,५९ से ६४,११४,११७, १४०,१४४,१४७ से १६०,१६२,१६७. रा० १,७,६३,६४,१७३,२७४,६६४,६६६, ६६८,६७६,६८४,६८६,७४०,७४१ से ७४३, ७७१,७९६,७९८,५१४. जी० ११४,२४,२४, ५०,५२,९६,१२७,१३७ से १४२;२।२० से २४,२६ से ३०,३२ से ३६,३९,४६,६३,६४,

६६,७३,७९,८६,८५,१२,१२,१७,१०७ से १०६, १११,११३,११४,११६,१२०,१२१,१२४, १२६,१३१ से १३३,१३६,१४०; ३ १२,२२,४४, ८२६,१३१ से १३३,१३६,१४०; ३ १२,२२,४४, ९२६,१३१ से १६७,२१४,२३८,१४६,१८२, १४२ से २४६,२४८,४३६,४६४,४६४,४८५, २४२ से २४६,२४८,४३६,४६४,४६४,४८५, २४२ से २४६,२४८,४३६,४६४,४६४,४८५, २४२ से २४६,२४८,४३६,४६४,४६४,४८६, २४२ से २४६,२४८,४३६,४६४,४६४,४८६, २४२ से २४६,२४८,४३६,४६४,४६४,४६५,४६६,३३,४७, २४३१,११३६,११३७,४३,२६,३३,४०, ४६,४१,४२,४६,६६,७१,७३,७८,६७,१६४, १७१,१७८,२०२,२०४,२४७ से २४६

कालओ [कालतस्] ओ० २८. रा० २००. जी० १।३३,१३६,१४०; २।४८,४६,५४,५७ से ६२,८२,८३; ३।२७२; ४।७ से ११; ४।८, ६,१२ से १६,२३,२६; ६।८; ७।६; ६।१०,११, २३,२४,३१,३६ से ४८,५७ ५८,६८,७८,७६, ९३,२४,३१,३६ से ४८,५७ १,१४,१९४,१२२, १३२,१४२,१६० से १६३, १७१,१८६ से १६१,१६३,१६४,१६८ से २०७,२१० से ११२,२१४,२१६,२२२ से २०७,२१० से २१२,२१४,२१६,२२२ से २०७,२१० से २३०,२३३ से २३८,२४० से २४४,२४६, २४६,२४७ से २६३,२६४,२६८ से २७३, २७४ से २८२,२८४,२९४

काससो [कालतस्] जी० २१=४,११७ से १२०, १२२ से १२४;३।४९,१९३,१९४,११३३ से ११३४;४।=,१०,२२;६।१६,२३,६४,७६,७७

कालबम्म [कालधर्म] रा० ७१३

- कालपोर [दे० कालपर्वन्] जी० ३। ८७ द
- कालमास [कालमास] ओ० ५७,५६ से ६४,११४, ११७,१४०,१४४,१४७ से १६०,१६२,१६७. रा० ७४० से ७४३,७६६. जी० ३।११७, ६३०
- कालमिगपट्ट [कालमुगपट्ट] जी० ३११९४

कालमेह [कालमेघ] ओ० ४७

कालय [कालक] जी० रे। ५१६ **फालसंघिय** [कालसन्धित] जी० ३।५८८६ कालागर [कालागुरु] रा०, १,१२,३२,१३२, २३६,२५१,२१२, जी० ३।३०२,३७२,३१८८, 886,886 कालागुरु [कालागुरु] ओ० २,४५ कालाभिग्गहचरय [कालाभिग्रहचरक] ओ० ३४ कालायस [कालायस] ओ० ६४, रा० १७३, ६८१, जी० ३।२८४ कालीद [कालोद] जी० ३।७७५,८१० से ८१२, द**१४,**५१६,५१८ कालोभास [कालावभास] जी० ३। ५३, १४ कालोय [कालोद] जी० ३।७७० से ७७३,५००, ८०३ से ८०७,८१३,८१४,८१६ से ८२१, 642,628,823,823,823,823,843 कालोयम [कालोदक] जी० ३।७७२ कावपेच्छा [कावप्रेक्षा] जी० ३१६१६ काविल [कापिल ] ओ० ९६ काविसायण [कापिशायन] जी० २। ५०६ कास [काश] जी० ३।६२५ कासिला [काशित्वा] जी० ३१६३० किइकम्म [कितिकर्मन्] की० ४० कि [किम्] रा० ६२. जी० १।२ किंकर [किङ्कर] ओ० ६४. रा० ५१ किंकरभूत [किङ्करभूत] जी० ३।४६२ किकरभूय [किन्दूरभूत] रा० ६६४ किचि | किञ्चित् | ओ० १६९. रा० ९. जीव इादर किंचूणोमोदरिय [किञ्चिद्रनावमोदरिक] ओ० ३३ किपागफल [किम्पाकफल] ओ० २३ किंगुरिस [किम्पुरुष] ओ० ४९, १२०, १६२. रा० १४१, १७३, १६२, ६६८, ७४२, ७७१, ७५६. जी० ३ २६६, २५४, ३१५ किंपुरिसकंड [किम्पुरुपकण्ठ] रा० ११४, २४६. জী০ ই।ই্ব্দ **किंदूरिसकंठम** [किंम्पुरुषकण्ठक] जी० ३,४१६ किमय (किम्मय) जीव राष्ठ, १०८१

किसुध [तिशुक] ओ० २२. रा० २७,७७७,७७८, ७८८.जीव २।११८, २८०, ५६० किच्च [कृत्य] राव् ११, ५६ किच्चा [कृत्वा] ओ० ८७. रा० ६६७, জী০ ২। ११७ किट्ठिया [कुध्टिका ] जी० १।७३ **फिडुकर** [कीडाकर] ओ० ६४ किणिय [किणित] राज ७७ किण्जर [किन्तर] ओ० १२, ४९. रा०: ६९८, ७४२, ७७१, ७८९. जी० ३।२६६, २८४, २मम, ३००, ३१८, ३७२ किण्णरकंट [किन्नरकण्ठ] जी० ३।३२९ किण्णरकंठग [किन्नरकण्ठक] जी० ३।४१९ किण्ण [जधम] रा० ६६७ किण्ह [कृष्ण] ओ० ४, १२, १३, १९. राठ २२, २४, २५, १२=, १३२, १४३, १६७, १७०, १७८, २३४, ७०३. जी० ३।७८%, २७३, 700, 205, 280, 285, 202, 225, ३३३, **३**४०, ३५२, **३**६७, ४५४, ४९७, नदना १७, १०७४ फिण्हफणयोर [कृष्णकणवार] रा० २५. ঁজী৹ ३।२७⊏ किण्हकेसर [कृष्णकेसर] रा० २४ किण्हच्छाय [कृष्णच्छाय] ओ० ४. रा० १७०, ৬০২ জী০ ২।২৬২ किण्हबंधुजीव (कृष्णबन्धुजीव) रा० २५ किण्हलेस [ कृष्णलेश्य ] जी० ३। १०१ किण्हलेस्सा [कृष्णलेख्या] जी० ३११०१, १०२ किण्हसप्प [कृष्णसर्प] रा० २५ किण्हासोय [कृष्णाशोक] रा० २४ किण्होभास [ कृष्णावभास ] ओ० ४. रा० १७०, . ७०३. जी० ३१२७३,२६८,३५८,५८४ √कित्त [कीर्तुब्] - कित्तति. रा० १इ४् कित्तिय कीति ओ० २

१. अगरु, मल्लातक, अर्जुन (आप्टे)

किन्तर [किन्तर] ओ० १२०,१६२. रा० १७, १८, २०, ३२, ३७, १२६, १४१, १७३,१६२. জী৹ ২।২११ किन्तरकंठ [किन्तरकण्ठ] रा० १४४, २४५ किमंग [किमङ्ग] ओ० ५२, रा० ६-७ किमि [कुमि] जी० सम४ किमिकुंभी [कुमिकुम्भी] रा० ७४६ किसिय [कृमिक] जी० ३।१११ किमिराग ]कृमिराग ] रा० २७. जी० ३।२८० किर [किल] जी० ३।१२९।१ किरण [किरण] ओ० १९. जी० ३।५९०,५९६, १९७ किरिया [ किया ] ओ० ४०,१२०,१६२. रा० ६९८, ७४२, ७८९, जी० ३।२१०,२११ किलंत [कलान्त] जी० इं११८, ११६ फिलाम [कलम] रा० ७२९, ७३१, ७३२ किलेस [क्लेश] ओ० ४६ किव्विसिय [ किल्विषिक ] ओ० ६न फिससय [किसलय] ओ० थे, प. रा० १३६. জী০ হাহও४, ২০২ किसि [कृषि] जी० ३।६०७ किसिय [कृशित] रा० ७६०, ७६१ √कोड कीड्| --- कीडॉत जी० ३।२६८ कीयगड [कीतकृत] ओ० १३४ **√कोल** [कीड्] --- कीलंति रा० १८४. जी० ३।२१७ कीलग [कीलक] रा० २४. जी० ३।२७७ **फीलण** [कीडन] ओ० ४९ कोलिया [कोलिका] जी० १।११६ कुंकुम [कुङ्कुम] ओ० ११०, १३३. रा० ३०. जी० ३।२९३ कुंचस्सर [कोञ्चस्वर] रा० १३४ कुंचिय [कुञ्चित] ओ० १६. जी० ३।५६६,५६६ क्तुंजर [कुञ्जर] ओ० १,१३,२७. रा० १७,१५, २०, ३२, ३७, १२६, ५१३. जी० ३।११८, ्र्थ्रि, २८८, ३००, ३११, २७२

कुंडधारपडिमा [कुण्डधारप्रतिमा] रा० २५७ জী৹ ২।४१६ कुंडल [कुण्डल] औ० १४, २१, ४७, ४९, ४१, १४, ६३, ६४, ७२, १०८, १३१. २० ८, २=४, ६७२, ७१४. जी० ३।४५१, ५९३, **कुंडलभद्द** [कुण्डलभद्र | जी० ३।९३३ **कुंडलमहाभद्द** [कुण्डलमहाभद्र | जी० ३१९३३ कुंडलमहावर [कुण्डलमहावर] जी० ३।६३३ कुंडलवर [कुण्डलवर] जी० ३। ६३३ **कुंडलवरभट्ट** [कुण्डलवरभद्र] जी० ३।१३३ **कुंडलवरमहाभद्द [कुण्डलवरमहाभद्र ]** जी० ३:६३३ **कुंडलवरोभास** [कुण्डलवराबभास | जी० ३ ९३३ **कुंडलवरोभासमहावर** [ कुण्डलॉवरावभासमहावर ] জী৹ ২ ১২২ **कुङलवरोभासवर** [कुण्डलवरावभासवर् | লী০ হাংহ্য कुंडिया [कुण्डिका ] ओ० ११७ **हंडियालंछणय** [कुण्डिकालाञ्छणक | रा०.७६७ क्तूंत | कुन्त | ओ० ६४. जी० ३।११० कुंतरग [कुन्ताग्र] जी० ३.५४ क्तग्गाह [कुन्तग्राह] ओ० ६४ क्रंध [कुन्थू] रा० ७७२. जी० ३.१११ कुंब [कुन्द] ओ० १९, रा० २९, ३८, १६०, २२२, २४४, २४६. जी० ३ २८२,३१२,३३३, 358, 885, 880, 265, 260, 568 **क्ंदगुम्म** [कुन्दगुल्म] जी० ३।५,५० कुंदलया [कुन्दलता] ओ० ११. रा० १४५,३,२६८, ५८४ कुंदलयापविभक्ति [कुन्दलताप्रविभक्ति] रा० १०१ कुंदुरक्क [कुन्दुरुक] ओ० २, ४५. रा० ६, १२, ३२, १३२, २३६,२८१, २६२. जीव ३।३०२, ३७२, ३९८, ४४७, ४४७ कूंभ [कुम्भ] जी० ३। ४ ६७ कुंभारावाय [कुम्भकारांपाक] जी० ३।११८ कुंभिवक[कौम्भिक, कुम्भाग्र]रा० ४०. जी० ३।३१३

६०२

क्तंभी [कुम्मी] रा० ७५६ कुक्कुइय [कौकुचिक] ओ० १४ कुक्कुढ [कुक्कुट] ओ० १, ३३ **कुक्कुडलक्खण** [कुक्कुटलक्षण] ओ० १४६. ₹∎০ ৯০६ कुच्छि [कुक्षि] ओ० १९. जी० ३।५९६ से ५९८, ওর্ব कुच्छिसूल [कुक्षिशूल] जी० ३।६२० कुज्जायगुक्म [कुब्जक्तगुल्म] जी० ३।५⊂० कुट्टिज्जंत [कुट्टचमान] रा० ७७ **कुट्टिमतल** [कुट्टिमतल] ओ० ६३ कट्ट किष्ठ] जी० ३।६२म कुडभी [कुडभी] रा० ४२,४६, २३१, २४७. जी॰ ३।३९३ कुड्य [कुटज] ओ० ६,१०. जी० ३।३८८, ५८३ कुहिल [कुटिल] ओ० १, ४६. जी० ३। १९७ कुढुंब [कुटुम्ब] रा० ६७४ कुड्ड [कुट्य] जी० ३।७२४, ७२७ कुणाला [ कुणाला ] रा० ६७६, ६७७, ६८३, ७०६ कुणिम [दे० कुणप] ओ० ७३. जी० ३।५४ **कुत्ंब** [कुस्तुम्ब] रा० ७७ **कुतुंबर** [कुस्तुम्बर] रा० ७७ कुत्तियावण [कुत्रिकापण] ओ० २६ कुस्तुंबक [कुस्तुम्बक] जी० ३।७म कुमार [कुमार] रा० ६७३, ६७४, ७९१ से ७९३ कुमारग्नह [कुमारग्रह] जी० ३।६२८ कुमारसमग [कुमारश्रमण] रा० ६५६, ६५७, इट्ट, इटर से इट७, ७०० से ७०इ, ७११, ७१३,७१४, ७१६ से ७२२,७३१ से ७३३, ७३६ से ७३६ ७४७ से ७८१, ७८७, ७६६ कुमुद [कुमुद] रा० २६, ३१. जी० ३।११व, ११९, २५९, २५२, २५४, ५९७ कुमुदम्यभा [कुमुदप्रभा] जी० ३।६८३ कुमुवा [कुमुदा] जी० २।६८२११ क्सुय [कुमुद] [कुसुद] ओ० १२,१५०.

XIO 808,880,708,758,755,588. जी० ३।२८२,२८६ कुम्म [कूर्म] ओ० १९,२७,३७. रा० न १९. जी॰ ३।४९६,४९७ कुरा [कुरु, कुर] जी० ३।४७० से ५९६,६०५ से **६**२८,६**३१,६३२,६३९,६**६६,६**६**८,**६**९,७०२, **कुर** [कुरु] जी० ३।७७४,।३ कुरुविंद [कुरुविन्द] ओ० १९. जी० ३।५९६ कुल [कुल ] ओ० १४,२३,४०,१४१,१४५. रा० ७९९. जी० ३११६० कुलकोडि [कुलकोटि] जी० ३।१६० से १६२, १६५ से १६६,१७१,१७४,९६६६,९६८ **कुलक्खय** [ कुलक्षय ] जी० **३**।६२६,६२८ कुलघररविखया [कुलगृहरक्षिता] ओ० ६२ कुलणिस्तिय [कुलनिश्चित] रा० ७७३ कुलरोग [कुलरोग] जी० ३।६२५ कुलव [कुडव] रा० ७७२ **कुलवेगावच्च** [कुलवैगावृत्य] ओ० ४**१** कुलसंपण्ण [कुलसम्पन्न] वो० २५. रा० ६८६ कुलिब्बय [कुटीवत] ओ० १६ कुक्लय [कुवलय] ओ० १३. जी० ३।४९७ कुस [कुश] ओ० ५,१०. रा० ३७. जी० ३।३११, ३८९,४८१ से ४८३,४८६, से ५९४ कूसग्ग (कुशाग्र) ओ० २३ कुसल | कुशल | मो० १४,३७,६३,६४,१२० १४८, १४६,१६२. रा० १२,७०,१७३,६७२,६८१, *६६८,७४२,७४८,७४६,७६४,७६६,७७०*, ७८९,८०४,८०९,८१०. जी० ३।११८८,२८४, 255,280 मसुम [कुसुम] ओ० १३,४७,४९. रा० ६,१२,२६ से २८,३१,२२८,२९१,२९३ से २९६,३००, ३०४,३१२,३५५. जी० ३।२७९ से २८१,

क्ंमी-कुसुम

२**२४,३२७,४**४७ से ४६२,४६४,४७०,४७७, **४१**६,४२०,**४४**४,४२०,१९०,६७२

√क्तुम [कुसुमय्]---कुसुमंति. जी० ३। १००

कुसुमघरग [कुसुमगृहक] रा० १५२,१५३. জী৹ ३।২৪४,≂২৩ **कुसुमघरय** [कुसुमगृहक] जी० ३।=१७ कुसुमदाम [कुसुमदामन्] जी० ३।५९१ कुसुमासव [कुसुमासव] ओ० ६. जी० ३।२७४ क्युमित [कुसुमित] जी० ३।५०६ क्सुमिय [कुसुमित] ओ० ४,५,१०,११. रा० १४४. जीव ३१२६८,२७४,३६०,४८४, 902,505,526 कुहंड [कूष्माण्ड] ओ० ४९ कुईंडिया [कूष्माण्डी] रा० २८. जी० ३।२८१ कुहजा [कुहणा] जी० १।६९,७२ कुहर [कुहर] रा० ७६,१७३. जी० ३।२०४ कुहिय [कुथित] जी० ३१८४ कुड [कुट] ओ० ६३. रा० १३०, १७१. जी० ३।११६,३००,६८६,६६०,६६२ से ६६८, 668,588,630 कुडागार [कूटाकार] ओ० १६. जी० ३।५६४, ४६६,६०४ कुडागारसाला [कूटाकारशाला] रा० १२३,७४५, 662,656,655 कुडाहच्च [कटाहत्य] रा० ७४१,७६७ क्लिय [कूणिक] ओ० १४,२०,२१,५३ से ५६, ६२ से ७१,८०. रा० ७७८ कुल [कूल] जो० ११४. रा० १७४,२७६. जी० ३।२८६,४४४,६३२,६३६,६६५ क् सबम्मग [कूलव्मायक] ओ० ९४ क्वग्गह [कूपग्राह] ओ० ६४ क्वमह [कूपमह] जी० २।६१५ कूबय (कूपक) अगे० ४६ केउ [केतु] ओ० ६ से ५,१०,५०. रा० १६२, १६३. जी० ३१२७४,२७६,३३४,३४४ केउकर [केतुकर | अरे० १४ रा० ६७१ केजर [केयूर] ओ० २१,४४,१०८,१३१. रा० ८,७१४

**केकय** [केकय] रा० ७०६ केतको [केतकी] जी० ३।२८३ केतगी [केत की ] रा० ३० केयइ [केकय] रा० ६६८, ६६९,६८३,७११ केमहालत [किंगन्महत्] जीव ३।१७६,१७८,१८८ केमहालय [कियन्महत्] जी० १।१६; ३। ६६ १, 28,850,722,020 \$ 027,222,8050, १०८७,१०२८ केयुय [केतुक] जीव ३।७२३ केयूर [केयूर] रा० २८४. जी० ३।४४१,४६३ केरिसग [कीदृशक]जो० ३। १४,११११ केरिसय [की दृशक | रा० १७३. जी० इ। धइ से न्र,६५ से ६७,१०१,११६,११८,११८,१२२, १२३,१२५,२१५,२४३, से २५४,४७९,४६६, ४९७,६०१,६०२,९४४,९४८,९६१,१०७७ से 2096, 20 E 3, 20 E 9 B 20 8, 300 8, 88 8, 300 8, 300 8, 80 8 १११७,११२१ से ११२४ केरिसिय (कीदृशक) जो० ३।११२२ केलास [कैलाश] जी० ३।७४८,७४९,७५२,९२३ केलासा (कैलाशा) जी० ३।७५२ केली [केली] ओ० ४६ केवद्द [कियत्] जी० १।४१,१४२ केवइय [कियत्] ओ० ८९ से ९४,११४,११७, १४४,१४७ से १६०,१६२,१६७. राव ६४४, ६६६. जीव ११४२; ३१७७,५१,२४६,७६८, न०२,न३०,१००४,१०४२,१०६२,१०६७, 8058; 813 केवचिरं [ कियच्चिरम् ] रा० २०० जी० ४।७ **केवच्चिरं** [कियच्चिरम्] जी० १।१३६ केवति [ कियत् ] जी० ३।६०,१९२,१९५ से १९७, XE केवतिय [कियत्] रा० ७९८ जी० १। १३७, १३८;

कवातय [फ्लयत्] राव ७२८ जाव १११३७,१३८; २।२० से २४,२६ से ३०,३२ से ३६,३९,४६, ६३,६६,७३,७९,८६,८६,८५,१०७ से

**१०६,१११,११२,११२**,११४, ११६,१२५,१२६, १३३,१३६,१४०; ३१४,१२,१४ से २१,३३. ३४,३६,४०,४२,४४,४१,६० से ६३,६६,७७, ००,०१,०६,१०७,१२०,१२६,१०६,१६२, 23=,283,280,280,282,885,868,868, X00,00€,68X,637,655,658,66X, द**१२,द१४,द२३**,द२७,द३२,द३४,द३४, ~\$E,=XX,=X0,=X0,EX3,EXX,E05' ह७३,१००० से १००६,१०१०,१०२२,१०२७, 2003,2053,2052,2222, 812,25,29; ग्राग्र,२१,२३,२४,२९,३०; ७१२; ९१२,४, ૨૪,૨૬,૨૨,૪૯,૧૨ केवल [केवल] ओ० १४१,१४३,१६०,१६४, १६६. रा० ५१२,५१४, जी० ३११०२४ केवलकप [केवलकल्प] ओ० १६९. रा० ७. जी०ः सन्द् केवलणाण [केवलज्ञान] ओ० ४०,१९४११२. रा० 580,280,350 केवलणाणविणय [केवलज्ञानविनय] औ० ४० केवलणाणि किवलज्ञानिन् अो० २४. जी० हा१६३, **१६५,१६६,१९७,२०१,२०५,२०**५ **केवलबंसणि** [केवलदर्शनिन्] जी० १।२६,८६; 61838,834,836,880 केवलदिट्टि [केवलदुष्टि] ओ० १९४।१२ केवलनाणि [केवलज्ञानिन्] जी० १।१३३ 81828,853 **केवलपरियाग** [केवलपर्याय] ओ० १६५ केवलि [केवलिन्] ओ० ७२,१५४,१७१,१७२. TIO 686,008,008,588,582,582. जी० १।१२६; ६।३६,४१,४२,४४ से ४८,५०, ४२ से ४४ **केवलिपरियाग** [केवलिपर्याय ] ओ० १५४. रा० ५१६ **केवलिसमुग्याय** [केवलिसमुर्घात ] ओ० १६९, १७४. जी० १।१३३ केस [केग] ओ० १३,४७,६२. रा० २८६.

জী০ ३।४५२

केसंतकेसभूमी [ केशान्तकेशभूमी ] ओ० १९. रा० २५४. जी० ३,४१४,५९६

- केसर [केसर] रा० २५,३७,१७४. जी० ३।११८, ११९,२४९ २७८,२८६,३११,६४३
- **केसरिवह** [केसप्टिदह] जीव ३।४४४
- केसरिद्दह | केसरिद्रह | रा० २७६
- केसरिया [केसरिका] ओ० ११७
- केसलीय [केशलोच] अगे० १४४,१६४,१६६. रा० ८१६

केसब [केशव | जी० ३।१२९

केसि [कैशि] रा० ६८६,६८७,६८९,६९१,२१२ से ६९७,७०० से ७०९,७११,७१३,७१४,७१६ से ७२२,७३१ से ७३३,७३६ से ७३९,७४७ से ७८१,७८७,७९६

केसि [केशिन्] रा० १३३. जी० ३।३०३

- **केसुध** [किंशुक] रा० ४४
- कोइल [कोकिल] ओ० ६. जी० ३।२७४,४९७
- कोडय [कौतुकं] औ० २०,४२,४३,६३,७०. रा० ६८३,६८४,६८७ से ६८६,६६२,७००, ७१६,७२६,७४१,७४३,७६४,९७४,८०२, ८०४
- कोउयकारग [कौतुककारक] ओव १४६
- कोउहल्ल [कौतुहल] जी० ३।६१६
- कोऊहल [कोतुहल ] ओ० ४२. रा० १४,१६ ६८७, ६८**६**
- कोंच [कौञ्च | रा० २१. जा० ३।२८२
- कोंचणिग्धोस [कौञ्चनिर्धोष] ओ० ७१. रा० ६१
- कोंचस्सर [कौञ्चस्वर] जीव ३।३०४,४६८

कोंचासण [कोञ्जासन] रा० १८१,१८३. जी० ३।२९३

कोंडलग [कोण्डलक] ओ० ६. जी० ३।२७५

कोकंतिय [कोकन्तिक] जी० ३।६२०

कोकासित [दे०] जी० ३। ५ ९ ६

कोक्कुइय [कौकुचिक] ओ० ६४

#### कौट्टग-कोह

कोट्टण [कुट्टन] ओ० १६१,१६३ **कोट्टिज्जमाण** [कुट्टचमान] रॉ० ३० कोट्टिमतल [कुट्टिमतल] रा० १३०,१७३,००४. जी॰ ३।२५४,३०० कोट्टिय [कुट्टयित्वा] जी० ३।११८,११६ कोट्टेज्जमाण [कुट्टचमान] जी० ३।२०३ कोट्ठ [कोष्ठ] रा० ३०,१६१,२४८,२७६. जी० ३।२३४,२८३,४१९,६३७,१०७८ कोट्टग [कोष्ठक] रा० ७११. जो० ३।४९४ कोट्टबुद्धि [कोष्ठबुद्धि] ओ० २४ कोट्रय कोष्ठक] रा० ६७८,६८६,६८७,६८६, 565,000,005 कोट्रागार [कोष्ठागार] ओ० १४,२३. X10 508,568,050,055,080,088 कोट्ठार [कोष्ठागार] रा० ६७४ कोडकोडी [कोटकोटी] जी० ३७००३,७२२,८०९, = 20, = 20, = 28, = 20, = 2=128, = 22, 8000 कोडाकोडि [कोटाकोटि] ओ० १६२ रा० १२४ कोडाकोडी [कोटाकोटी] जी० २१७३,६७,१३६; े ३१७०३,५०६,१०३५; ११२६ कोडि | कोटि ] ओ० १,१६२ रा० १२४ कोडिकोडी (कोटिकोटी ] जी० ३।१००० कोडी | कोटीं | रा० ६६४. जी० ३।२३२,५६२, ४७७,६४८,५२३,५३२,५३४,५३६,१०३५ कोडीय | कोटीक ] रा० २३६. जी० अ४०१ कोडुंब कीटुम्ब] जी० ३।२३९ कोडुंबि [ कौटुम्बिन् | जी० ३। १२९ कोडुंबिय [कौटुम्विक] ओ० १,१८,५२,६३. रा० ६५१ से ६=३,६=७.६==,६९०,६९१, ७०४,७०६,७१४ से ७१६,७४४,७४६,७६२, ७६४. जी० ३१६०९ कोण [देव्कोण] राव १७३. जीव ३।२८४ कोणिय ]कोणिक | आं० १४,१६,१५,२०,६२ कोत्तिय | कोत्रिक | ओ० ६४ कोद्दालक [कुद्दालक] जी० ३१४८२

कोमल [कोमल] ओ० ५,८,१९,२२,६३ रा० ७२३,७७७,७७८,७८८ जी० ३।२७४, 288,280 कोमुई [कौमुदी] ओ० १५. रा० ६७२. জী০ ২।২৫৬ कोयासिय [विकसित] ओ० १६ कोरंट [कोरण्ट] ओ० ६३,६४. रा० ५१,२५५ कोरंटक [कोरण्टक] रा० २८. जी० ३।२८१ **कोर्एटयगुम्म** [कोरण्टकगुल्म ] जी० ३।४८० कोरक कोरक] जी० ३।२७४ कोरव्व [कौरव्य] ओ० २३. रा० ६८८. জী০ ২।১১৩ कोरव्वपरिसा [कौरव्यपरिषद्] रा० ६१ कोरिल्लय [दे०] रा० ७५९ कोरॅंट [कोरण्ट] ओ० ६४. रा० ६=३,६९२, ७००,७१६. जी० ३।४१६ कालसुणग कोलशुनक] जी० ३।६२० कोलाहल [कोलाहल] औ० ४९ कोव [कोप] जी० ३।१२ द कोस [कोश] १४,२३,१७०. रा० १८८,२०७, २०८,२**३१,२४७**,६७१,६७४,६९४,७९०, ७९१. जी० ३१४३,४४,५२,२६०,३४२ से ₹XX, ₹XE, ₹4 8, ₹4¥ ₹4=, ₹4E, ₹07, ३७४, 363 36x,x0 8,x02,x65,x5x, 63x, ६४२,६४४,६४६,६४३,६४४,६६३,६६८, ६७३,६७४,६७९,६८३,६८४,६९१,७१४, ७३६,७४४,७४६,७६२,७६८ से ७७०,७७२, **५०२,५१४,**५३६,१०१२ से १०१४ कोसंब [कोशाम्म] जीव १७१ कोसंबपल्लवयविभत्ति [कोशाम्रपल्लवप्रविभक्ति] ৰ্যা০ १০০ कोसेज्ज ∫कोरोय ] ओ० १३. जी० ३।४९४ कोह [कोध] ओ० २८,३७,४४,७१,९१,११७, ११९,१६१,१६३,१६५. Tto ७९६. जी० ३1१२८,४६८,७६४,८४१

```
१. हे० ४।१६५
```

कोहकसाय [कोधकषाय] जी० १।१९ कोहवियेग [कोधविवेक] ओ० ७१ ख [ख] रा० ६५ सइय [क्षायिक] रा० ७६१,≈१४ सदय [ खचित ] जी० ३।३७२ सओवसम [क्षयोपशम] ओ० ११६,१५६ स्तंजजा [खञ्जन] ओ० १३. रा० २४. জী০ ২।২৩৭ संड [खण्ड] जी० ३। १९२,६०१, ५६६ संडरक्स [खण्डरक] ओ० १ संडिय [खण्डिक] ओ० ६= संति [सान्ति] ओ० २४,४३. रा० ६८६,८१४ संतिसम [सान्तिक्षम[ ओ० १६४ **संबग्गह [स्क**न्दग्रह] जी० ३ ६२व संदमह [स्कन्दमह] रा० ६८८. जी० ३१६१४ संघ [स्कन्ध] ओ० ४,५,१३,१६. रा० ४,१२, २२७,२२८,७४८,७४९. जी० ११४,७१,७२; 31268,355,356,356,462,662,663 संघमंत | स्कन्धवत् ] ओ० ४,८. जी० ३।२७४ संधावारमाण [स्कन्धावारमान ] अं₀० १४६. रा० ५०६ संधि [स्कन्धिन्] जी० ३।२७४ लंभ [स्तम्भ] रा० १७ से २०,३२,६६,१२६, *,*995,305,039,039,208,208,≈89,059 २७६,२६७,३०२,३२४,३३०,३३४,३४०. जी० ३।२६४,२६६,२५७,२५५,३००,३७२, ३७४,४२२,४६७,४६०,४९४,४००,४०४, **५६७,६४६**,६७३,**६**७४,७५६,दद४,दद७, ११२८,११३० खंभपुडन्तर [स्तम्भपुटान्तर] रा० १९७. जी० ३।२६९

संभवाहा [स्तम्भवाहु] रा० १९७. জী০ ২।২২১ खंभसीस [स्तम्भर्शार्थ] रा० १९७. जी० ३।२६९ **लकारपविभत्ति** [खकारप्रविभक्ति] रा० ९५ खम्ग [खड्ग] ओ० २७,४१,६१. रा० २४१,६६४, -१३. जी० ३।४६२ खम्मपाणि [खड्गपाणि] रा० ६६४. जी० ३११६२ खचित [खचित] जी० ३१४१० खचिय [खणित] रा० ३२,१६०,२४६,२८४. जी॰ ३।३३३,४४१ खज्जूर (सार) [ खर्जूरसार ] जी० ३।४८६ खज्बूरसार [खर्जूरसार] जी० ३।८६० सज्जूरिवण [खर्जूरीवन] जी० ३११८१ खट्टोदय [खट्टोदक] जी० १।६४ सडहडग [दे०] जी० ३।२९२ खण [क्षण] रा० ११६,७४१,७५३ खसिय [क्षत्रिय] ओ० १४,२३,४२. ৰা০ হও**१,হ**নড खत्तियपरिव्वाय |क्षत्रियपरिवाजक | ओ० १६ खत्तियपरिसा [क्षत्रियपरिषद्] रा० ६१,७६७ खन्म [दे०] जी० ३।७५१,७५२ लम [क्षम] ओ० ४२. रा० २७४,२७६,६८७. जीव ३।४४१,४४२ लग [क्षत्र] रा० ७११ खयर [खदिर] रा० ४४ खर [खर] ओ० १०१,१२४. जी० १।१७,५८; 3185.525 खरकंड [खरकाण्ड] जी० ३,६,७,१४,२३,२६ **सरपुढवो** [खरपृथ्वी] जी० ३।१८५,१९१ खरमुहिवाय [खरमुखीवादक] रा० ७१ खरमुही [खरमुखी | ओ० ६७. रा० १३,७१,७७, ६४७. जो० ३।४४६,४८८ खल [खल] ओ० २८ खलबाड [खलवाट] रा० ७८१,७५४ से ७८७

खलु [खलु] ओ० ५२. रा० ६. जी० १११

कोहंगक [कोभङ्गक] ओ० ६

कोहकसाइ [कोधकवायिन्] जी० १।१३१;

61885,886,882,888

√खव [क्षपय्]—खवेइ ओ० १८२. জী৹ হা**দহ**দাংদ खवयंत [क्षपयत्] ओ० १८२ खवेत्ता [ क्षपयित्वा ] ओ० १६५ स्वसर [खसर] जी० ३।६२८ खहयर [खेवर] ओ० १४६. जो० १।६८,११३, ११६,११७,१२४; २।२४,६६,७२,७६,५३, ८६,१०४,११३,१३१,१३६,१३६,१३८,१४६, १४९;३,१३७,१४४ से १४७, १६१ सहयरी [ खेचरी ] जी० २।३,१०,४३,६९,७२, 388,888 √सा [खाद्]--खञ्जइ. रा० ७५४--- खाइ. रा० ७३२ खाइ [दे०] ओ० १६२ खाइम [खाद्य] ओ० ११७,१२०,१४७,१६२. TIO EEG,008,086,022,052,005, ७८७ से ७८९,७९४,७९६,८०२,८०८ खाओवसमिय [क्षायोपशमिक] रा० ७४३ साण् |स्थाणु ] जी० ३।६२४,६३१ √खास [क्षमय्]--खामेइ. रा० ७७७ खामित्तए |क्षमयितुम् ] रा० ७७७ खाय [खात] ओ० १ लायमाण | खादत्] जी० ३।१११ खार [क्षार] जी० ३।६२७,६४४ खारय [क्षारक] जी० ३।७३१ सारवत्तिय | क्षारवतित | ओ० ६० सारा [खारा] जी० २।६ खारोवय [क्षारोदक] जी० १।६५ सिंखिणिजाल [ किङ्किणीजाल ] रा० १९१. जी० ३।२६५,३०२ सिंसिणी | किङ्किणी | ओ० ६४. रा० १३२,१७३, ६८१. जी० ३।२८४,४९३ सिंसण [ खिसन ] ओ० ४६ खिसणा [खिसना] ओ० १४४,१६४,१६६. रा० **⊑ १**६

सिक्जमाण [सिद्यमान] ओ० १३३. जी० ३।३०३ क्तित [क्षिप्त] जी० ३।६८६ खिण्पामेव [क्षिप्रमेव] ओ० ५५. रा० ६. जी० \$1888 सिविता [सिप्तवा] जी० शह्य **खीण [क्षीण]** ओ० १६८ खीर [क्षीर] ओ० ६२,६३,. रा० २६. जी० ३।२=२,७७४ सीरवाई [क्षीरधात्री] रा० ८०४ खीरपूर कीिरपूर ] रा० २६. जी० ३।२८२ सीरवर [क्षीरवर] जी० सम्बद्द, दृद्द, दृद्र **खीरासव** [क्षीराश्चव] ओ० २४ सीरोब [क्षीरोद] जी० ३।२८६,४४४,८६४,८६६ 573,3%3,577 खोरोदग [क्षीरोदक] जी० ३।४४४,९९३ सीरोबय [क्षीरोदक] जी० शद्र सीरोयग [सीरोदक] रा० १७४,२७६ खु[क्षुषु] जी॰ ३।१२७,४६२ खुक्ज [कुब्ज]जी० १।११६ **खुञ्जा** [कुब्जा] ओ० ७०. रा० ५०४ खुड्ड [क्षुद्र] रा० १७४,१७४,१८०. जी० ३।२६६, २८७,२६२,४१०,४७६,६३७,७३८,७४३, ७६३,८४७,८६३,८६६,८७४,८८१ खुडूखुडूग [क्षुद्रक्षुद्रक] रा० १८० खुड्डखुडुय [क्षुद्रक्षुद्रक] रा० १८१ खुडुय [क्षुद्रक] रा॰ २४७. जी॰ ३।४०१ खुड्डा [क्षुद्रक] रा० २४८,२४६. जी० ७।१७ खुड्डाग [क्षुद्रक] ओ० २४. रा० ३४४. जी० ३१४ १६; ७१४,६,१०,१२,१४,१६,१८; हार से ४,४०,४१,१७१,२३६,२३८,२४३,२४४,२४६, २७१,२७३,२७६ से २८२ खुडुापाताल [क्षुद्रकपताल] जी० ३।७२६,७२८, ७२६ खुड्डापायाल [क्षुद्र तथाताल] जी० ३।७२६,७२७, 350 खुड्राय [क्षुद्रक] ओ० १७०. जी० ३।८६,२६०

205

सुद्धिय (क्षुद्रिक) जी० ३।५९३ खुडिया [क्षुद्रिका] ओ० २४. रा० १७४,१७४, १८०,७७२. जी० ३।१२४,१२५,२८६,२८७, २६२,५७९,६३७,७३८,७४३,७६३,८५७,८६३, **८६६,८७१,८८**१ खुत्तग [दे०] ओ० ६० खुद्द [क्षुद्र ] रा० ६७१ √खुब्भ [क्षुभ्]-- -खुब्भंति जंरे० ३।७२६ स्भियजल ( क्षुभितजल ) जी० ३।७८३,७८४ खुरपत्त [क्षुरपत्र] जी० ३। दर खहा [क्षुधा] ओ० ११७. रा० ७९६. जी० 31806,885,886,825,888 खेड [खेट] ओ० ६=,= ६ से ६३,६५,६६,१५५, १५द से १६१,१६३,१६८. रा० ६६७ रेत [क्षेत्र] ओ० २८,१६२. जी० ११४०, २१२६ से २९,५४ से ४६,६४,८४,८८,११४,१२३, १३२;३११०७,७४१,७९१,५३५१२४, 2223 बेत्तओ [क्षेत्रतस्] ओ० २८. जी० १।३३,१३६, とろの; えいもちの; だいち, むえま、てき、 もいえま, 80,89,749 **खेलफ्छेद** [क्षेत्रछेद] जी० ३।४६,४७ खेत्तच्छेय [क्षंत्रछेद] जी० ३।२१ से २७,४५ खेताभिग्महचरय [क्षेत्राभिग्रहवरक] ओ० ३४ खेम | क्षेम | ओ० १,१४. रा० ६७१ खेमंकर [क्षेमञ्चर] ओ० १४. रा० ६७१ सेमंधर किंमधर ओ० १४. रा० ६७१ खेय [खेद] ओ० ६३ खेलूड [दे०] जी० १।७३ खेलोसहिपत्त | ध्वेलीषधिप्राप्त | आं० २४ खोखुब्भमाण [चोक्षुभ्यमान] ओ० ४६ खोत [क्षोद] जी० ३। ९६२ खोतरस | क्षोपरस | जी० ३। ९६४ खोतोव | क्षोदोद | जी०३।९६१ स्रोतोदग [स्रोदोदक] जी० ३। ९४ व

**खुडूर्गॉलजर** [दे० क्षुद्रकालिञ्जर] जी० ३।७२६

खोतोदय [क्षोदोदक] जी० १।६५ खोद [क्षोद] जी ३।६३१,६४६ खोदरस [क्षोदरस] जी० ३।८७८ लोस्वर | क्षोदवर ] जी० ३१८७४,८७४,८७७,९२७ **खोदोद** [क्षोदोद] जी० ३।८७७,८७८ ८८०, ६२४, १२९,१३२ खोदोदग [क्षोदोदक] जी० ३१८७४,८८१, ६१० खोदोय कोिदोद जि० ३।२८६ सोदोयग [क्षोदोदक] रा० १७४ सोमिव [क्वोमित] रा० १७३. जी० ३१२८४ खोम [क्षीम] रा० ३७,२४४ जी० ३।३११ 809,282 खोय [क्षोद] जी० ३।७७४ खोयरस [क्षोदरस] जी० ३।४८६ ग ग ग रा० ६५ गइ (गति] ओ० १९,२१,२७,४६,४०,५४,= ह से દય, ११४,११७, ૧૫૫, ૧૫७ સે ૧૬૦, १६२,१६७,१७२. रा० ७५५,७४७,८१३ जी० १।१४; ३।न३न।२२ गइय | गतिक ] जी० ११६४,७४,७७,८७,८८, 88,808 मइरइय | मतिरतिक ] ओ० १०

गंगा [गङ्गा] ओ० ११४,११७. रा० २४४,२७९. जी० ३१४०७,४४४,६३७

गंगाकूला [गङ्गाकूलक] ओ० ६४

- **यंगामट्टिया** [गङ्गामृत्तिका] ओ० ११०,१३३
- गंगावत्तग [गङ्गावत्तंक] ओ० ११
- गंगावलय [गङ्गावर्तक] जीव ३।४९६,४९७
- मंठि [ग्रन्थि] ओ० १. रा० २७०. जी० ३।४३५, ८७८,६९३,६९७
- गंड [गण्ड] ओ० ४७,६४,७२
- गंडमाणिया [गण्डमानिका] रा० ७७२
- गंडलेहा [गण्डलेखा] ओ० १४. रा० ६७२. जी० ३।४९७

# গঁ**তী**য**য**্যাস্স

- गंडीपय [गण्डीपंद] जींव १११०३
- **भंडोवहाणय** [गण्डोपधानक] रा० २४५
- गंडोवहाणिया [गन्डोपधानिका] जी० २१४०७
- गंता [गत्वा] ओ० १८२ जी० ३।७८८
- गतूंग [गत्वा] क्षो० १९५
- गंध [ग्रन्थ] रा० २१२. जी० ३।४५७
- गंथिम [ग्रन्थिम] ओ० १०६,१३२. रा० २५४. जी० ३।४५१,४६१
- गंच [गन्ध] ओ० २,१५,४७,५१,५५,६३,६७,७२. १२,१३,३०,३२,४४,१३२,१४६,१४७,१७२, १९६,२३६,२४८,२७९ से २८१,२९१,२९२, 648,643,668,668,668,502,505. जी० ११४,३६,५०,५८,७३,७८,८१;३१२२, ४८,८४,८७,९४,१२७,२७१,२८३,३०२,३०६, ३२६,३७२,३९८,४१९,४४४ से ४४७,४५१, ४४७,४१६,४४७,४७८,४८६,४९२,४१८,४१८, £07,682,685,626,626,002,560,566 F07, F0F, E30, E07, EF7, 2005, 205 2; 8069,8880,8885,8858 गंधओ [गन्धतस्] जी० १।३७,४० गंधकासाइ [गन्धकाषायिन्] ओ० ६३. रा० २८४. জী৹ ২।४५१ गंधग [गन्धाङ्ग] जी० ३।१७० गंत्रजुति [गन्धयुक्ति] ओ० १४६ गंधतो [गन्धतस्] जी० ३।२२ गंधद्वाणि [गन्धन्नाणि] ओ० ७,८,१०. जी० ३।२७६ गंधमंत [गन्धवत्] जी० १।३३, ३६; ३।४९२ गंधमावण [गन्धमादन] जी० ३।६६८ गंधमायण [गन्धमादन | जी० झा४७७
- गंधवट्टि [गन्धवति] ओ० २,४४,६२. रा० ६, १२,३२,१३२,२३६,२५१ जी० ३।३०२, ३७२, ४४७ गंधठव [गन्धर्व] ओ० ४६,१२०,१४८.१४९.

१६२. रा० १४१,१७३,१९२,६८२,६८४,६९८, ७४२,७७१,७८६. जी० २।१७; ३।२६६, २५४,३१५,४५५ गंधव्यकंठ [गन्धर्वकण्ठ] रा० १९५,२५८ जी० ३।३२९ गंबव्वकंठग [गन्धर्वकण्ठक] जी० ३।४१९ गंधव्यघरग [गन्धर्वगृहक] रा० १८२,१८३ जी० રારદ૪ गंधव्यणट्ट [गन्धर्वनृत्य] रा० ५०९,५१० गंधव्वनगर [गन्धर्वनगर] जी० ३।६२८ **गंधव्वाणिय** [गन्धर्वानीक] रा० ४७,४६ गंवहरिथ [गन्धहस्तिन्] ओ० १४,१९,२१,५४ रा० ८,२१२,६७१. जी० ३।४४७ गंबावति [गन्धापातिन्] जी० ३।७९५ गंघावाति [गन्धापातिन् ] रा० २७१. जी० ३/४४५ गंधिय [गन्धिक] ओ० २,९५. रा० ६,१२,२२,३२, १३२,२३६,२२१,२०५, जी० ३।३०२,३७२, 886,888 गंधीय [गन्धिक] जी० ३।२९० गंभीर [गम्भीर] ओ० १,४,८,१६,२७,४६,४९, 68. Tto 83,88,48,808,288,=83. जी० ३।=३,११६,११६,२७४,२८६,४०७, 285,280 गकारपविभत्ति [गकारप्रविभक्ति | रा० ६५ गगण [गगन] ओ० २७,६४. रा० ५०,४२,४६, १३७,२३१,२४७,८१३. जी० ३।३०७,३९३ √गच्छ [गम्] ---गच्छ. रा० ६८०.---गच्छइ. रा० १५--गच्छंति. ओ० १७१. जी० १५४. ---गच्छति. रा० १३. जी० ३।४४०----गच्छह रा० ६.-गच्छामि. रा० १६-गच्छामो. ओ० ४२. रा० ६८७.--गच्छाहि. रा० ६१९. - गच्छिहिति. ओ० १४० गच्छंत [गच्छत्] ओ० ४० गच्छित्तए [गन्तुम्] ओ० १००

- गज्ज [गदा] रा० १७३. जीव ३१२८५
- √गज्ज [गर्ज ]---गज्जति. रा० २८१.

# 8**1**0

জী০ ২,४४७ गज्जित [गजित] जी० ३।६२६ गड्ड [गर्त] जी० ३।६२३,६३१,३ √गढ [ग्रथ्]--गढेज्जा. जी० ३।१९३ गढित्तए [ ग्रथयितुम् ] जी० ३। ६६० गढिय [ग्रथित] रा० ७५३ गण [गण] ओ० ६,१९,४०,४१,४९,४०,६३,६८, १५५,१६२,१९२. रा० ३२,२०९,२११. जीव ३ ११८,११९,२७४,३७२,४८२,४८६ से ४६६, ६००,६०३ से ६१७,६२०,६२४,६२७, ६२५,६३०,६३६,७४६,११२० गणम [गणक] ओ० १८. रा० ७४४,७४६,७६२, ७६४ गणणायक [गणनायक] ओ० १८ गणनायक [गणनायक] ओ० ६३. रा० ७५४,७५६, ७६२,७६४ भगविउस्समा [गणव्युत्सर्ग] अो० ४४ गणिय | गणित ] ओ० १४६. रा० ८०६,८०७ गजवेयावच्च [गणवैयावृत्य] ओ० ४१ गणेत्तिया [दे०] ओ० ११७ गत [गत] रा० १२२,२५३,२५६. जी० ३।४४३, गता [गदा] जी० ३।११० गति [गति] रा० ५१४. जी० ३।४९७,५४२,५४४ गतिकल्लाण [गतिकल्याण] ओ० ७२ गतिय [गतिक] जी० १।४६,६२,६४,६७,७६,५०, *५२,१०३,१११,११२,११६,११९,१२३,१२*५, १३४,१३६ गत्त [गात्र] ओ० ४७,६३. रा० १२,३७,७४८ से ७६१ जी० ३।११८,३११,४०७ गत्तग [गात्रक] रा० २४५ गडभ [गर्भ] रा० २००,८०२. जी० ३.४१२ गब्भघर [गर्भगृह] जी० ३।५९४ गब्भघरग [गर्भगृहक] रा० १८२,१८३. জী৹ ३।२९४

गडभस्थ [गर्भस्थ] ओ० १४२,१४४

गढभवक्कंतिय [गर्भावकान्तिक] जी० ११६७,११७, १२४,१२६,१२६; ३।१३८,१४०,१४२,१४४, १४६,२१२,२१४,२२६

गब्भवास [गर्भवास] ओ० १९४

गब्भाहाण [गर्भाधान] रा० ५०३

- √गम [गम्]----गमिस्सामो. ओ ६व.---गमिहिति. रा० ७६६.---गम्मंती. ओ० ७४
- गम [गम] जी० ३।२१८,६६६,७१३,७४२,७४४, ७४५,६२८,६२६,१०४५,१०४८
- गमण [गमन] ओ० ४०,४६,६४,६९,१२२, रा० १७,१८,२०८,६५६,६६७,७७४,७७६, ७८०. जी० ३।४५४,४४६

गमय [गमक] रा० २५१,२६५. जी० ३७४१

- गमित्तए [गन्तुम्] ओ० १००
- गय [गज] ओ० १९,४८,४२,४५ से ५७,६२,६४, ६४. रा० २५,१४१,१४८,१९२,६८७ से ६८९. जी० ३।२६६,२७८,३१८,३२१,३४४,४५४, ६८६,४९६,४९७,१०१४
- गय [गत ] ओ० १५,१९,२१,४६ से ४९,६५,१७२, १७४,१७७,१९४।२२. रा० ८,४७,६८,१२२, १२३,१७३,२७४,२७७,२८१,२८६,२९०, ६४७,६७२,६८७ से ६८६,७१०,७१९,७४३, ७६४,७७४,७१४,८००,८०२,८०९,८१८,७४३, जो० ३।२८४,४४१,४४४,४६६,४६७ गयकंठ [गजकण्ड] रा० १४४,२४८. जी० ३।३२८ गयकंठग [गजकण्ठ] जी० ३।४१९ गयकंठण [गजकण्ठ] जी० ३।२१६,२२३
- गयकण्णदीय [गजकणंद्वीप] जीव ३ २२३
- गयकलभ [गजकलभ] रा० २४. जी० ३,२७८
- गयजोहि [गजयोधन्] ओ० १४८,१४६. रा० ८१०,८११
- गयदंत [गजदन्त] रा० २९,१३२. जी० ३।२५२, ३०२
- गयवहया [गतपतिका] ओ० ६२

गयलक्खण [गतलक्षण] ओ० १४६. रा० ८०६

#### गयवइ-गामरोग

गथवद्द [गजपति ] ओ० ५१,६३ गयविलंबिय [गजविडम्बित] रा० ११ गयविलसिय [गजविलसित] रा० ६१ गवा [गदा] ओ० १. रा० २४९ गरहणा [गईणा] ओ० १५४,१६५,१६६. रा० ५१६ गरुडज्मय [गरुडध्वज] रा० १६२. जी० रे। रे३४ गरुम [गरुक] जी० १।५; ३।२२ गरुवत्त [गरुकत्व] रा० ७६२,७६३ सरस [गरुड] ओ० १९,४७,४८,१२०,१६२. रा० ६९८८,७४२,७८९. जी० ३। १९६ गरलबूह [गरुडव्यूह] ओ० १४६. रा० ५०६ गरलासण [गरुडासन] २१० १८१,१८३. जी० ३।२६३ गस [गल] ओ० ४७. जी० २।४९७ मवस्त [गवाक्ष] जी० ३१६०४ गवरखजाल [गवाक्षजाल] रा० १३२,१९१. जीव ३।२६४,३०२ गवच्छिय [दे० आच्छादनम्] रा० १५३. জী০ ইাই২૬ गवल [गवल] ओ० ४७. रा० २५. जी० ३।२७५ गवेलग [गवेलक] ओ० १,१४,१४१. TTO EU8,988,988 गवेसण [गवेषण] ओ० ११७,११९,१४६ गवेसणया [गवेषणा] रा० ७६४,७७४ गवेसि [गवेषिन्] रा० ७७४ गह [ग्रह] ओ० ४०,६३,१६२. रा० १२,७६,१७३, २९१,२६३ से २९६,३००,३०४,३१२,३४४. जी० २।१८; ३।२८४,६३१,७०३,५०६, दइदाइ,६,६,२२,२६,३०,५४४,१०२०,१०२१, १०२६,१०३७,१०३५ गहुअवसम्ब [ग्रहापसव्य] जी० रे।६२६ गहगज्जित [ग्रहर्गाजत] जी० २।६२६ गहगण [ग्रहगण] रा० १२४. जीव ३।५८९, द३८1१०,२१,८४१,८४२,१०२० गहजुद्ध [ग्रहयुद्ध] जी० २।६२६

गहणया [ग्रहणता] ओ० १२. रा० ६८७ गहगी [ग्रहणी] जीव संश्रहन गहदंड [ग्रहदण्ड] जी० ३।६२६ गहमुसल [हहमुसल] जी० ३।६२६ गहविमाण [ग्रहविमान] जी० २।४२; ३। १००६, 8082,8080,8038 गहसंघाडग [ग्रहश्रङ्गाटक] जी० ३।६२६ गहाय [गृहीत्वा] रा० १२. जी० सा११व गहित [गृहीत] जी० ३१३०३,४४७,४५९,४६१ ४६४ गहिय [गृहीत] ओ० ४६,४६,७०,११६,१२०,१६२. रा० १२,६९,७०,१३३,२८१,२९३ से २९६, 300,30%,382,3%%.66%,653,656,684, ७४२,७८९,५०४. जी ३।४४८,४६०,४६२, १२०,११४,१६२ √गा [गै]---गायंति. रा० ११४. जी० ३।४४७. —⊸गिज्जइ. रा० ७=३ गाउग [गब्यूत, गब्यूति] ओ० १९४. जी० १।८८,१०३,१२१,१२४,१३०; ३११०७,७९९,६१९,१०२२ गाह [गाढ] रा० ७७४ गात [गात्र] जी० ३।४४१,४४७,६०२,८६०,८६६, 592,595 गातलद्वि [गात्रयष्टि] जी० ३।४६७ गाया [गाथा] जी० ३।८८ गाथा [गाथा] जी० ३।६३१ गाम [ग्राम] ओ १,२८,२९,४६,६८,८६ से ६३, १४,६६,१४४ १४० से १६१,१६३,१६न. रा० ६६७,७८७,७८८. जी० ३।६०६,६३१, 5¥8 गामकंटग [ग्रामकण्टक] ओ० १९४,१९५,१६६. रा० ५१६ गामदाह [ग्रामदाह] जी० ३।६२६ गामनारी [ग्राममारी] जी० ३।६२५

गामरोग [ग्रामरोग] जी० ३।६२५

गामाणुगाम [ग्रामाणुग्रोम] जो० १९,२०,५२,५३. TIO ERE, ERO, ERE, 00 E, 022, 023 गाय [गात्र] ओ० १,३६,३७,५२,६३,७०,९४, ११०,१३३. रा० २८४,२९१,६८७ से ६८६. जी० ३।११८ गाय [गो] जीव ३।६३१ गायंत [गायत्] ओ० ६४ गायलद्वि [गात्रयण्टि] ओ० ७०. रा० २५४. জী৹ ३।४१४ गावी [गो] जी० रा६१९ गाह [ग्राह] जीव ११९९,११८; ३१४४७ से ४६२, √गाह [ग्राहय्] —गाहेइ. ओ० ५६ गाहा [गायर] ओ० १४६. रा० ८०६. जीव ३१५, **१**२**,१**२७,३४४ गाहावद्वरिसा [गृहपतिपरिवद्] रा० ७६७ गाहेता [ग्राहयित्वा] अे० ४९ √ गिज्झ [गृथ्]---गिज्झिहिति ओ० १५०. ---रा० ५११ - - - - - - -**√मिण्ह** [ग्रह,]--मिण्हइ. ओ०ं १७०.—मिण्हंति. रा० २८१. जी० ३।४४४.---गिण्हति. रा० २८८- गिण्हामो. ओ० ११७ गिण्हित्तए [ग्रहीतुम्] ओ० ११७. जी० ३।६८८ गिण्हित्ता [गृहीत्वा] ओ १७०. रा० २८१. जी० ३।४४५ गिद्ध [गृद्ध] रा० ७१३ गिम्ह [ग्रीष्म] ओ० २६ गिम्हकाल [ग्रीप्मकाल] ओ० ११४ गिरा [गिर्] जी० ३।५९७ गिरि [गिरि] रा० ८०४. जी० ३।५९७,५३९ गिरिप्रक्लुंदोल्ग [गिरिपक्षान्दोलक | ओ० ६० गिरिपडियग [गिरिपतितक] ओ० ६० **गिरिमह** [गिरिमह.] राष्ट्रदेव के कि मिलाणभत्त [ग्लानमक्त] ओ० १३४

गिलाणवेयावच्च [ग्लानवेयावृत्य ] ओ० ४१ कि

√गिलाय [ग्लै]—गिलाएज्जाह. रा० ७२० गिल्लि [दे०] ओ० १००,१२३ जी० ३।५=१, ४८४,६१० 👘 गिह [गृह] ओ० २०,४३. रा० ६५१,६५३,७०५, \$\$0,6**\$3,6**73,675 गिहिधम्म [गृहिधर्म] ओ० ४२,७८,६३ रा० ६८७ ×00.733,88X,885.00X गिहिलिंगसिद्ध [गृहिलिङ्गसिद्ध] जी० १।= गीइया [गीतिका] ओ० १४६. रा० ५०६ 👘 गीत [गीत] जी० ३१५४२,५४४ गीय [गीत] ओ० ४९ ६८,१४६. रा० ७,७८, ००६. जीव ३.३५०,५६३,१०२३ गीयजस [गीतयशस्] जी० ३।२५६ गीयरइ [गीतरति] ओ० १४८, १४९, राठ १७३, 508,580 गीयरइण्पिय [गीतरतिप्रिय | ओ० ९४ गीयरति [गीतरति] जी० ३।२८५ 👘 गीवा [ग्रीवा] ओ० १९. राज २६. जीं० अ२७९, 882,225,280 गुंजत [गुञ्जत्] ओ० ६ रा० ७६,१७३. 👘 ्जी० ३।२७.४,२५४ .. . गुंजद्धराग [गुञ्जार्धराग] ओ० २२. रा० २७,७७७ ७७८,७८८,जी० ३।२८० गुंजा [गुञ्जा] रा० ७६,१७३. जी० ३।२८५ गुंजालिया [गुञ्जोलिका] क्षो० ९९. रा० १७४, १७४,१८०. जी० ३/२८६ **गुंजावाय [गुञ्जावात] जी० श**दश गुज्झ [गुच्छ] ओ० ६ से ५,१०. जी० १।६६; ই।२७४ गुज्झ [गुह्य] रा० ६७४ गुज्झदेस [गुह्यदेश] जी० ३।५९६ गुड [गुड] जी० ३/१९२ . . गुण [गुण] झो० १,१४,१४,२३,२४,६३,६९,१२० १४०,१४३,१५७. €To ६६,७०,१७३,६७१ i £03, £ 5 6, 6 £ 5, 9 \$ 7, 6 5 8, 5 0 \$.

**६१**२

जीव ११४०; ३१२०४,५१६,५१७ गुगणिण्पाण [गुणनिष्पतन ] ओ० १४४ गुणतर [गुणतर] रा० ७१८ गुणभाव [गुणभाव] ओ० १९४। १२ गुणयालीस [एकोनचत्वारिंशत्] रा० १२६ गुणव्वय [गुणव्रत] ओ० ७७. रा० ७८७ गुणसेढिया [गुणश्रेणिका] ओ० १८२ गुणिय [गुणित] जी० ३। द३ द। २६ गुत्त [गुष्त] ओ० २७,१४२,१६४. रा० १२३, ६६४,७७४,७७२,=१३. जी० ३।५६२ गुत्तदुवार [गुप्तद्वार] रा० १२३,७५४,७७२ गुत्तपालित [गुप्तपालिक] जी० ३।४६२ **गुत्तपालिय** [गुप्तपालिक] रा० ६६४ गुत्तवंभयारि [गुप्तब्रह्यचारिन्] ओ० २७,१४२, **१**६४. रा० ५१३ गुति [गुप्ति] रा० ६८६,८१४ गुत्तिदिय [गुप्तेन्द्रिय] ओ० २७,३७,१४२,१६४. ৰাণ নংই **गुप्पमाण** [गुप्यत्] ओ० ४६ गुष्फ [गुल्फ] ओ० १९. जी० ३,५१६ गुमगुमंत [गुमगुमायमान] ओ० ६. जी० ३।२७५ गुम्म [गुल्म] ओ० ६ से म, १०. जी० १। ६६; ३।२७४,४८०,६३१ गुरु [गुरु] रा० ६७१ गुल [गुड] ओ० १२. जी० ३।६०१, ८६६ गुलइय [दे०] ओ० ४,८,१०. रा० १४४. জী৹ ३।२६८,२७४ गुलगुलंत [गुलगुलायमान] ओ० ५७ गुलिका [गुलिका] ओ० ४७. रा० २४,२६,२<. जी० ३।२७५,२७६,२५१ गुहा [गुहा] रा० १७३. जी० ३,२८५ गूढ [गूढ] ओ० १९. जी० ३।५९६ **गूढदंत** [गूढदन्त] जी० ३।२१६ गेजन [ग्राह्य] रा० १३३. जी० ३।३०३

√ रोणह [ग्रह ] — गेण्हइ. रा० ७०८. जी० ३।४५१--- गेण्हंति. रा० ७५. जी॰ ३।४४४ गेण्हित्तए [ग्रहीतुम्] जी० २। ६८८ गेण्हिता [गृहीत्वा] रा० ७४. जी० ३१४४४ गेद्धपट्टग [गृझपृष्ठक] ओ० ६० गेय [गेय] रा० ७६,११५,१७३,२८१. জীত ২।২৫২,১১ও गेविज्ज [ग्रैवेय] रा० ६६४,६८३ गेविज्जविमाण [ग्रैवेयविमान] ओ० १९२ गेवेज्ज [ग्रैवेय] ओ० ५७,१६०. रा० ६९,७०. जीव २१९२; ३१४६२,४९३,१०३८,११०३, ११०५,११०७,१११६,१११७,११२०,११२३, **११२४,११२**६ **गेवेज्जक** [ग्रैवेयक] जी० २।१४⊂,१४६ गेवेज्जक [ग्रैवेयक] ओ० ६३ गेवेज्जविमाण [ग्रैवेयविमान] ओ० १६०. जी० ३।१०६३,१०६६,१०६९,१०७१,१०७३, १०७६ गेवेज्जा [ग्रैवेयक] जी० ३।१०६४,१०६६, १०६२,१०६५.११०३,११०५,११०७, १११६,१११७,११२०,११२३,११२४, 3588 गेह [गेह] जी० ३१६०५,६३१,८४१ गेहागार [गेहाकार] जी० ३।५९४ गेहाययण ∫गेहायतन] जी० ३।६०५ गेहाय [य?] ण [गेहायतन] जी० ३१८४१ गो [गो] ओ० १,१४,१४१. रा० ६७१,७७४, ৬৪৪. জী০ য়ানধ गोकण्ण [गोकर्ण] जी० ३।२१६,२२४ गोकण्णवीव [गोकर्णद्वीप] जी० ३।२२४ **गोकलिजग** [गोकिलिञ्जक] रा० १५**१**. জী৹ ३।३२४ गो**किलिज** [गोकिलिञ्ज] रा० ७७२ गोक्लीर [गोक्षीर] ओ० १६,१६४ जी० ३१६०१,

# ६१४

588,888 गोलीर | मोक्षीर | ओ० ४७ रा० १३०. जी० ३:३००,४९६ गोवयवर [गोधृतवर] जी० २।५७२,९६० गोच्छिय [गुच्छित] ओ० ५,५,१०. रा० १४५. जी० ३।२६८,२७४ गोण [गो] ओ० १०१,१२४,१४४. जी० ३।६१६ गोणलक्ष्यण [गोलक्षण] ओ० १४६ रा० ८०६ गोणस [गोनस] जी० १११०८ गोतमदीव [गौतमद्वीप] जी० २।७६२ गोतित्य [गोतीर्थ] जीव ३ ७६०, ७६१,७६३ गोधूम [गोस्तूप] जी० रे।७३४ से ७४०, ७४२, ৬४४,७४० गोथूमा [गोस्तूपा] जो० ३।७३०,६१९,६२१ गोधूम [गोधूम] जी० २१६२१ गोपुच्छ [गोपुच्छ] रा० १२७. जी० ३।२६१, ३४२,४९७,६३२,६६१,६८८,७३६,८८२ गोवर [गोपुर] ओ० १. रा० ६४४,६४५. जी० ३१४४४,५९४,६०४ गोफ्फ [गुल्फ] जी० ३।४१४ गोमयकीड [गोमयकीट] जी० १८८६; ३११११ मोमाणसिया [गोपानसिका] रा० १३०,२३६, २५१,२६४. जी० ३।३००,४१२,६०३ गोमाणसी [गोपानसी] जी० २।३९८८,४१२,४२१, ४२६ गोमुह [गोमुख] जी० ३१२१६ गोमूही [गोमुखी] रा० ७७ गोमेज्जमय [गेःमेदमय] रा० १३०. जी० ३।३०० गोय गिःत्र] ओ० २०,४४,५२,५३. रा० ६,११, ६८७,७१३. जी० ३।१२८ गोयम [गौतग] ओ० ५३,५६,८८ से ६४,११४, ११७ से १२०,१४०,१४१,१४४,१४७ से . १६०,१६२,१६७,१७०,१७१,१७३ से १७६,

१७८,१७९,१८४ से १८८,१६२. रा० ६३, ६४,७३,७४,११८,१२१,१२३,१२४,१७३, १९७ से २००,६६४,६६६,६६८,७९७ से ७६६,=१७. जी० १।१५ से ३७,३६ से ४६,४१ से १६,१९ से ६२,६४,७४,७९,०२,०१ से ०७, १०,६३ से १६,१०१,११९,१२७,१२८,१३० से १३४,१३७ से १४३; २।२० से २४,२६ से ३०,३२ से ३६,३९,४६,४८,४१,५४,५७ से ६३,६६,६८ से ७४,७९,८२ से ८४,८६,८८, हर, हर से हन, १०७ से १०६, ११३,११४, ११६ से ११९,१२२ से १२६,१३३ से १४०; ३१३ से १२,१४ से २१,२= से ३४,३७ से ४४,४८ से ६३,६६,७३,७६ से ६८,१०१ से १०४,१०६ से ११०,११२ से ११६,११= से १२०,१२२ से १२८,१४७,१४० से १६१, १६३,१६७ से १७४,१७६,१७८,१८०,१८०, १=३,१=४ से २०३,२११,२१४,२१७ से २२३, २२७,२३२,२३४ से २३६,२४१ से २४३, २४५ से २४७,२४९,२५०,२५५ से २५६, २६९ से २७२,२७८,२८४,२९९,३००,३४०, ३४१,४६४ से ४६६,४६⊂ से ४७०,४७२, १७४ से १००,४६६,४६७,४६६ से ६०४, ६२९ से ६३२,६३७ से ६३९,६४९,६६०, ६६४,६६६,६६८,७०० से ७०३,७०४ से ७०८,७१०,७११,७१४ से ७१६,७१८ से ७२३, ७२६,७३० से ७३६,७३८ से ७४३,७४४, ७४६,७४८ से ७४०,७४४,७६० से ७६६, ७६द से ७७०,७७२,७७६ से ७७८,७८३, ७८४,७८७ से ७१४,७९७ से २००,८०२, म०४,म०६,म०म,म०९,म११ से म१४,म१६, द२०,द२२ से द२४,द२७,द२**६,द३०**,द**३२** से द३६,द३९,न४०,द४२ से द४७,द४१ से **५१,५४४,५४७,५६०,५६३,५६६,५६**६, = 97, = 98, = 95, = = 7, = = 7, 88 =, 88 =, 58 = १४०,१४४,१५३ से १९१,१९३ से १९६,

हदह, ६७२ से ६७६,६८२ से ६८७,६८६, EEE 社 2005,2020,2022,2024, १०१७,१०२० से १०२३,१०२४ से १०२७, १०३७ से १०४२,१०४४,१०४७,१०५८, 2023,2024,2020,2026,2008, १०७३ से १०७४,१०७७ से १०८१,१०८३, १०८५ से १०८७,१०८९ से १०९३, १०६४,१०६५,१०६६,११०१,११०४,११०६ से ११२४,११२८ से ११३१,११३४ से ११३८; ४।३,४ से ११,१६,१७,१९,२२,२३,२४; ४। ४, ८, १०, १२ से १७, १६ से २४, २८ से ३०,३४,३४,३७ से ३९,४१ से ४०,४२ से ५६,५्द से ६०; ६ाद; ७।२,६,२०; ६।२,४, १० से १४,१६,२३ से २६,३१,३३,३६,४१ ₹ ४७,४९, १२, ११, १७, १८, ६४, ६८, ७७, ७८, 56,60,65,60,807,803,88X,88X, १२२,१३२,१४२,१६० से १६३,१७१,१न६ से १९१,१६३,१९४,१९८ से २०७,२१० से २१२,२१४ से २१९,२२२ से २२४,२२७ से २३०,२३३ से २३८,२४० से २४४,२४६, २४९ से २४३,२४४,२४७ से २६३,२६४, २६८ से २७३,२७४ से २८२,२८४ से 739 गोयमदीव [गौतमडीप] जी० २।७४४,७१५,७६०, હદ્દ १ गोयरग्ग [गोचराग्र] रा० ७१९ गोर [गौर] ओ० बर गोलबट्ट [गोलवृत्त] रा० २४०,२७६,३५१. जी० ३।४०२,४४२,५१६,१०२५ गोलियालिछ | गोलिकालिञ्छ | जी० ३।११८ गोव्वइय [गोत्रतिक] ओ० ९३ गोसीस | गोशीर्थ ] ओ० २,४५,६३. रा० ३२, २७६,२५१,२५४,२६१,२६३ से २६६,३००, ३०४,३१२,३४१,३४४,४९४. जी० ३:३७२, xxx'xx0'xx5'xx0'xE5'xEx'x00'x00'

52X \*\*\*\*\*\* गोहा [गोधा] जी० १।११२ गोहो [गोधी] जी० २। १ [घ] घ घि रा० ६४ घओद [ घृतोद ] जी० ३।२८६ घओवय [घृतोदक] जी० ११६५ घओयग | घृतोदक ] रा० १७४ घंटय [घण्टाक] जी० ३।२५४ घंटा [घण्टा] ओ० २,१२,५७,६४. रा० १३.१४, २३,३२,१३४,१७३,२४८,६८१. जी० 3,768,302,302,886 घंटाजाल [घण्टाजाल] रा० १३२,१९१. जी० 31252,302 घंटापास [धण्टाधार्थ्व ] रा० १३४. जी० ३।३०४ **धंटावलि** [धण्टावलि] रा० १७,१८,२० घंटिया [घण्टिका] रा० १७,१८. जी० ३।४६३ घंस [ घर्ष ] जी० ३।६२३ घंसियग [घषितक] ओ० १० घकारपविभत्ति [धकारप्रविभक्ति] रा० ९४ √घट्ट [घट्ट्] घट्टइ. रा० ७७१---घट्टंति जी॰ ३।७२१ घट्टंत [घट्टयत्] रा० ७७१ घट्टणया [ घट्टन ] ओ० १०३,१२६ घट्टिज्जंत |घट्टचमान] रा० ७७ धट्टिय [ धट्टित ] रा० १७३. जी० ३।२८५ घट्ठ [घृट्ट] ओ० १२,१९४. रा० २१,२३,३२, ३४,३६,१२४,१४४,१४७. जी० ३।२६१, २६६,२६९ घडग [घटक | जी० ३।१९८७ घडस [घटत्व] जी० ३।२२,२७,७८४,७८७ घण [धन] ओ० १,४,५,५,१३,१९,४७,६५. रा० ७,१२,११४,१३३,१७०,२५१,७०३.७५५, ७४८,७४९,७७२. जी० ३।६७,८०,११८, 203,208,300,303,340,840,453,

દ્દ્યવ્

रत्र, र्ट्, न४२, न४२, १०२२, १**१**२२ घणदंत | घनदन्त ] जी० ३।२१६,२२६ घणवंतद्दीव [धनदन्तद्वीप] जी० ३।२२६।६ घणवात [धनवात] जी० ३।१३,१६,२१,२६,२७, 30,80,86,40,58 घणवाय [धनवात] जी० १।८१; ३।३०,३८,४२, 8025,8028 घणोदधि [धनोदधि] जी० रा१२,२६,३०,३२, ३७ से ४०, ४४,४६,४८,४६,६० से ७२ घणोदहि [ घनोदधि ] जी० ३। १८,२०,२७,६३, १०४७ घम्मा [धर्मा] जी० ३।३ घय [घुत] जी॰ ३। ४६२,७७४ घयवर [घृतवर] जी० ३१८६८,८६१,८७१ घयोद [घ्तोद] जी० ३१८७१,८७२,८७४,९६०, શ્દ્₹ घयोदग [घृतोदक] जी० ३१८६१ घर [गृह ] ओ० २८,११८,११६,१५४,१६२, १६४,१६६. रा० ६९८,७४२,७८९. जी० 31XEX घरग [गृहक] जी० ३।४७६ घरय [गृहक] ओ० ७,५,१०. रा० १५३. जी० ३।४७९,५६३ घरसमुदाणिय [गृहसामुदानिक] ओ० १४८ घरह [गृहक] जी० ३। ५६३ घरोलिया [गृहकोकिला] जी० २। १ धाइ | धातिन् ] ओ० ५७ धाण | झाण | ओ० १७०. रा० ३०,१३२,२३६. जी० ३।२⊂३,३०२,३१⊂ घाणिदिय | झाणेन्द्रिय ] ओ० ३७. जी० ३।९७९ धातक वितिक जी० २१६१२ धाय [घात] रा० ६७१ धास (ग्रास) ओ० ३३

**घुण** [घुण] रा० ७६१ षुम्मंत [ घूर्ण्यमान] ओ० ४६ घोड [धोट] जी० ३।६१८ घोर [घोर] ओं० ४६,५२ रा० ६८६ घोरगुण [घोरगुण] ओ० ६२. रा० ६८६ घोरतवस्सि [घोरतपस्विन्] ओ० ८२. रा० ६८६ घोरबंभचेरवासि | घोरब्रह्मचर्यवासिन् | ओ० द२. **रা०** ६८६ घोलंत [घोलयत्] ओ० २१,४४. रा० ८,७१४ **घोलियग** [घोलितक] ओ० ६० घोस [घोध] ओ० ६१ घोसण [घोषण] रा० १४ घोसाडिया [कोशातकी] रा० २८. जी० ३।२८१ घोसेयब्व [घं.षयितव्य] जी० ३१८८ (ङ) **ङ** [ङ] रा॰ ९४ ङकारपविभत्ति [ङकारप्रविभक्ति] रा० ६४ (च) ध [च] ओ० ७, रा० ७, जी० श१ चइता [त्यभ्रता, चित्वा] ओ० २३. रा० ७९९ चइत्ताणं [त्यक्त्वा] ओ० १९५।१ चउ [चतुर्] ओ० १९. रा० ७. जी० १।१९ चउक्क [चतुष्क] ओ० १,४२,५४. रा० ६५४,६८७, ७१२. जी० ३।२२६ ५५४ चउक्कत [चतुष्कक] जी० ३।१४२,१४४ चउक्कय [चतुष्कक] रा० ६४५ चउणउय | चतुर्नवनि | जी० ३।८२३ चउत्थ [चतुर्थ] ओ० १७४,१७६. जी० १।१२१ चउत्थग [चतुर्थक] जी० १ १४६ चउत्थभत्त | चतुर्थं गक्त ] ओ० ३२ चउत्था | चतुर्थी ] जी० ३।२ चडरथी | चतुर्थी | जी० २।१४८,१४६; ३,४, £E,55,68.854,888 **चउदसपुव्वि** [चतुर्दशपूर्विन् ] रा० ६८६ चउद्दस [चतुर्दशन्] ओ० १९. जी० २।४५

# चछद्सी-चंददीव

चउद्दसी [चतुर्दशी] ओ० १२० चउद्दसभत्त [चतुर्दशभक्त] ओ० ३२ चउष्पई [चतुष्पदी] जी० २१४,६ चउष्पद [चतुष्पद] जी० २।११३,१२२; ३।१४२ चउष्पय (चतुष्पद) रा० ६७१,७०३,७१८. जी० १।१०१ से १०३,१२०,१२१; २।४,२३, X 8; 3155,888,882,863,9628 **चउष्पाइया | च**तुष्पादिका ] जीव २।१ खडस्माम (चतुर्भाग) जी० ३।२४७,२५०,२४६, १०२७ से १०३४ चउभाग [चतुर्भाग] जी० २।४० से ४३; ३।२४७ चउमासिय | चातुमांसिक | ओ० ३२ चउम्मूह [चतुर्मुख] ओ० ४२,४४. रा० ६१४, ६४४,६८७,७१२. जी० ३।४४४ चउरंगुल चितुरङ्गुल | रा० ४६. जी० ३। ५९६, द३५।१७ चउरंत [चतुरंत] ओ० ४६ चउरंस [चतुरस ] जी० ११४; ३।२२,७७,७८, 342,468,469,9098 चउरकप्प [चतुष्कल्प] जी० ३.४९२ चउरासीइ | चतुरशीति | ओ० ६३. जी० १११०३ चउरासीति | चतुरमीति | जी० ३।१६ चउरिदिय चितुरिन्दिय | जी० १।८३,६०; २।१०१,१०३,११२,१२१,१३६,१४६,१४६; ३। १३०,१३६,१६७;४।१,४,८,१४,१८ से २०,२४,२५; =!१,३,५; ६1१,३,५,७,१६७, **१६**६,२२१,२**२**३,२२६,२३१,२४६,२**४६**, **૨૬૪,**૨૬૬ चडविसाण (चतुर्विषाण ) रा० १६२. জী০ হাইহুথ चडवीस [चतुर्विशति ] ओ० ३३. जी० ३।२३६ चडविवध | चतुर्विध ] जी० ३११,४४७ चउब्विह | चतुर्विध ) ओ० २८,३७,४५,६३,११७. रा० ११४ से ११७, २८१,२८५,२८६,६७५, ७४०,७४६,७६६. जी० १।५,१०,५३,६१,

१०३,१०५,११३,१२१,१२५,१३५; २।६, १०,१५,७५; ३।२३०,४५१,४५२,५५६, ११३५; ६।११३,१२१,१३१,१४१,१४७ चउसद्वि [चतुष्पष्टि] औ० ६२. जी० ३।६११ चउसद्विया [चतुष्पष्टिका] रा० ७७२

- चउसालग [चतुःशालक] जी० ३।४९४
- चउहा [चतुर्धा] रा० ७६४,७६४
- चंकसंत [चंक्रम्यमाण] ओ० १७
- चंगेरी [चङ्गेरी] रा० १५६,२५६.२७९. जी० ३।३२६,३५५,४१९,४४५
- चंचल [चञ्चल | ओ० २३,४६,४९
- चंड |चण्ड ] ओ० ४६. रा० १०,१२,५६,२७९, ६७१,७९५. जी० ३।न६,११०,१७६,१७५, १=०,१=२,४४५
- चंडा [चण्डा] जी० ३।२३४,२३९,२४१,१०४०, १०४४
- चंद [चन्द्र] ओ० १९,२७,४०,६४ ६८,१७०. रा० २९,७०,१३३,२८२,८०२,८०३,८१३. जी० १।१८; ३।२५८,२८२,३०३,४४८,५९६, ४९७,७०३,७२२,७६२ से ७६४,७६६,७६८, ७७०,७७२,७७४ से ७७६,७७८,८०६८,८२०, ६३०,८३४,८३४,८४४,८७३,८७६,८५ २५ से २७.२९,३२,८४४,८७३,८७६, ६२६,९३७,९४३,१०१७,१०२०,१०२१, १०२३ से १०२६,११२२

चंदण [चन्दन] ओ० ६,१०,२६,४७,४२,६३, ११०,१३३- रा० ३०,१३१,१४७,१४८, १७३,२४८,२७६,२८०,२८४,२६१,२६३ से २६८,३००,३०४,३१२,३४१,३४४,५६४, ६८७ से ६८६. जी० ३।२८३,२८४,३०१, ४४४,४४१,४५७ से ४६२,४३४,४७०,४७७, ४१६,४२०,४४७,४४४,४८३,८३३,८३८

चंदस्थमणपविभक्ति [चन्द्रास्तमनप्रश्रिभक्ति] रा० ५६ चन्द्रीय [जन्द्रीय ] जीव २००८२ ००२२ ००२

चंददीव [चन्द्रद्वीप] जी० ३।७६२,७६३,७६६,

900,500,500,500,500,000,730 चंदहह [चन्द्रह] जी० ३।६६७ चंदद्दीव [चन्द्रद्वीप] जी० ३।७६३ चंदद्ध [चन्द्रार्ध] ओ० १९. रा० ७०,१३३. जी० ३।३०३,४९६,११२२ चंदपडिमा [चन्द्रप्रतिमा] ओ० २४ चंदपरिएस [चन्द्रपरिवेश] जी० ३।५४१ **चंदपरिवेस** [चन्द्रपरिवेश] जी० ३।६२६ चंदप्पभ [चन्द्रप्रभ] रा० १६०,२९२. জী০ ইাই ইই, ४ থড चंदंपभा [चन्द्रप्रभा] जी० ३।४८६,७६३,८६०, ६४८,१०२३ चंदप्पह [चन्द्रप्रभ | रा० २४६ জী০ ২।४१७ चंदमंडल [चन्द्रमण्डल] रा० २४,५१,१४६. जी० ३।२७७,३२२ चंदमंडलपविभत्ति [चन्द्रमण्डलप्रविभक्ति] रा० ६० चंदवर्डेसय [चन्द्रावतंसक] जी० ३।१०२४, 8038 चंदवण्ण चन्द्रवर्ण | जी० ३।७६३ चंदवण्णाभ [चन्द्रवर्णाभ] जी० ३१७६३,१००८, १०१०,१०१५ चंदविमाण [चन्द्रविमान] जी० २।१८,४०; ३।१००३ से १००६,१०२७ चंदविलासिणी [चन्द्रविलासिनी] रा० १३३. जीव ३।३०३,११२२ चंदसालिया [चन्द्रशालिका] जी० ३।५१४ चंदसूरदंसणग [चन्द्रसूरदर्शनक] रा० ८०२ **चंदसूरदंसिणया** [चन्द्रसूरदर्शत्निका] ओ० १४४ चंबा [चन्द्रा] जी० ३।७६४,७७६,७७८ चंदागमणपविभक्ति [चन्द्रागमनप्रविभक्ति] रा० द७ चंदागार [चन्द्राकार] रा० १५६. जी० २।३३२, હદર चंदाणणा [चन्द्रानना] रा० ७०,१३३,२२४.

६**१**द

जी० ३।३०३,३८४,८९६,११२२ चंदावरणपविभत्ति [चन्द्रावरणप्रविभक्ति] र[० ५५ चंदावलि [चन्द्रावलि] रा० २९ चंदावलिपविभत्ति [चन्द्रावलिप्रविभक्ति] रा० ५४ चंदिम [चन्द्रनम्] ओ० १९२, रा० १२४. जी० ३।२५७,०४१,०४२,०४५,०१ से १०००,१०२०,१०२१,१०३= **चन्दुग्गमणपविभत्ति**ोचन्द्रोद्गमनप्रविभक्ति] रा० ६६ चंषक चिम्प ह जी० ३।२८१ चंगग [ चम्पक ] य० २८,८०४. जी० ३।२८१ चंपग [लया] [ चम्पकलता] जी० ३।२६८ चंपगलया [चम्पकलता] ओ० ११. रा० १४५. জী৹ ২,২,১४ चंपगलयापविभत्ति [चम्पकलताप्रविभक्ति] **Elo 808** चंपगवडेंसय | चन्धकावतंसक | रा० १२४ चंगगवण [चम्बकवन] रा० १७०, जी० ३।३५८. चंपय [चम्झ] रा० २८,१८६. जी० ३।२८१, 378 चंपा [चम्पक] रा० २८,३०. जी० ३।२८१,२८३ चंगा [चम्पा] ओ० १,२,१४,१९ से २२,५२,५३ **५५,६०** सं ६२,**६७,**६न,७० चंपापविभत्ति | चम्पकप्रविभक्ति | रा० १३ चकारवग्ग (चकारवर्ग) रा० ६६ चक्क [चक्र] ओ० १६,१९. रा० १५०,१५१ जीव ३१११०,३२३,३२४,५९६,५९७ चक्कग [चक्रक] जी० ३। ५ ९३ चक्कज्झय विकध्वजो रा० १६२. जी० ३।३३५ चक्कद्धचक्कवाल | चकार्धयक्रताल | रा० ८४ चक्कपाणिलेहा ( वक्रपाणि/खा | जी० ३।५९६ चक्कल [दे०] रा० ३७. जी० ३।३११ चक्कलक्लण [चक्रलक्षण] रा० ५०६ चक्कबट्टि [चकवरतिन्] ओ० १६,२१,५४,७१.

रा० ८,१५४,२७९,२९२. जी० ३।३२७,४४५, ४४७,४९२,६०२,७९४,८४१,८६६,९४१ चक्कवाग | चक्रवाक | ओ० ६. जी० ३।२७४ चवकवाल [चक्रवाल] ओ० ७०,१७०. रा० २०१, ८०४. जी० ३।८६,२६०,२७३,३६२,४८६, ,730,030,230,730,750,700 दद २**,६१**६ चक्क्सचूह [चकव्यूह] ओं० १४६. रा० ८०६ चकिकय | चकिक | ओ० ६० चॉक्खदिय [चक्षुरिन्द्रिय] ओ० २७. जी० २१६७८ चक्तु [ चक्षुष् ] रा॰ ६७४. जी० ३।६३३ चक्ख्यूबंसणि | चक्षुर्दर्शनिन् ] जी० १।२९,५६,६०; 81838,837,834,880 चक्खुदय [चक्षुर्दय] ओ० १९,२१,५४. २१० ८, २९२. जी० ३१४४७ चक्खुप्फास [चक्षुस्स्पर्श ] ओ० ६९,७०. रा० ७७८ चक्खुभूग [चक्षुर्भूत] रा० ६७५ चक्खुल्लोयणलेस [चक्षुर्लोकनलेश] रा० १७,१८, २०,३२,१२६,१३३. जी० ३।२४८,३००,३०३, ३७२ चक्खुहर [चक्षुईर] रा० २८५. जी० ३।४५१ चच्चय [चर्चक] रा० २९४,२९६,३००,३०५, ३१२,३४१,३४४,४९४. जी० ३।४४९,४६१, 842,844,800,800,484,840 चच्चर [चल्वर] ओ० १,४२,४४. रा० ६४४, ६५्५,६८७,७१२. जी० ३।५५४ चल्खाग [दे० चर्चाक] रा० १३१,१४७,१४५. জী০ ২৷২০१ चच्चाय [दे० चर्चाक] रा० २८०. जी० ३।४४६ चडगर [दे०] रा० ४३,६०३,६९२,७१६ चत्तालीस (चत्वारिंशत् ) जी० ३।६९ चतुरासीति |चतुरशीति | जी० ३।८८२ चतुरिदिय | चतुरिन्द्रिय ] जी० २।१३५,१४६; યારશ चमर [चमर] ओ० १३,६८. रा० १७,१८,२०,

३२,३७,१२६,२५२, जी० ३.२३४ से २३६, 5x3,5xx,5x0,5x0,5x6,5x=,5==' 300,388,302,885 चमस [चमस] ओ० १११ ने ११३,१३७,१३८ चम्स [चर्मन्] रा० २४,६६४. जी० ३।२७७,१६२, चम्म [पाय] [चर्मपात्र] ओ० १०४,१२व चम्म [बंधण] [चर्मबन्धन] ओ० १०६,१२६ चम्मपक्ति (चमपक्षिन् ) जी० १।११३,११४,१२५ चम्मपक्ली | चर्मपक्षिणी | जी० २।१० चम्मपाणि | चर्म गणि | रा० ६६४. जी० ३। १६२ चम्मेट्टग [चर्मेव्टक] रा० १२, ७४८, ७४६. জী০ ২। ११ন चय [चय, च्यन] ओ० १४१. रा० ७१९. জী৹ **২।११**२७ √चय [ शक्]-चिएइ. ओ० १९४।१६ √चय | च्यु |--चयंति. जी० ३।८७ √चय [त्यज्]—चयइ. जी० ३।१२९।५ चयंत (त्यजन् ) ओ० १९४।३ चयण (च्यवन) जी० ३।१६० √चर [चर्]- -चएइ. जी० ३।८३८१२---चरति. ओ० ४६. जी० ३।७०३--चरति जी० ३।१००१ --- चरिसु. जी० ३।७०३ ---चरिस्संति जी० ३।७०३ चरण [चरण] ओ० १४, २४, रा० ६८६. জী০ ২।২**৫**৩ चरमअभिसेयनिबद्ध [चरमाभिषेकनिवद्ध] रा० ११३ चरमंत | चरमान्त | जी० ३।६६८ चरमकामभोगनिबद्ध [चरमकामभोगनिबद्ध] रा० ११३ **चरमचवणनिबद्ध** | चरमच्यद्रननिवद्ध | रा० ११३ **चरमजम्मणनिबद्ध** [ चरमजन्मनिवद्ध | रः० १**१**३ चरमजोव्यणनिबद्ध [ चरभयौवनविबद्ध | रा० ११३ चरमणाणुप्पायनिबद्ध [चरमज्ञानोत्पादनिबद्ध] रा० ११३

**चरमतवचरणनिबद्ध** [चरमतपश्चरणनिबद्ध] रा० ११३ चरमतिस्थपवतणनिबद्ध [चरमतीर्थप्रवर्तननिबद्ध] रा० ११३ चरमनिक्लमणनिबद्ध [चरमनिष्क्रमणनिबद्ध] रा० ११३ चरमनिदाधकाल | चरमनिदाधकाल ] जी० ३।११८, ११६ चरमनिबद्ध [चरमनिबद्ध] रा० ११३ चरमपरिनिब्वाणनिबद्ध [चरमपरिनिर्वाणनिबद्ध] र10 883 चरमपुष्वभवनिबद्ध [चरमपूर्वभवनिबद्ध] रा० ११३ चवलिय [चपलित | जी० ३) १८७ **चरमबालभावनिबद्ध** [चरमबालभावनिवद्ध] रा० ११३ चरमसाहरणनिबद्ध [चरमसंहरणनिबढ ] रा० ११३ चाउक्कोण [चतुरकोण ] रा० १७४. जी० ३।११८, चरमाण [चरत्] ओ० १९, २०, ५२, ५२. रा० ६८६, ६८७, ७०६, ७११, ७१३ **चरित** [ंचरित्र] रा० ६-६, *५१*४ चरित्तविणय (चरित्रविनय / ओ० ४० चरित्तसंपण्ण [चरित्रसम्पन्न] ओ० २४. रा० ६८६ चरिम [चरम] ओ० ११७, १४४,१६२, १६४१३. रा० ६२, ७१६, ५१६. जी० ११६३, ६४,६६ चरिमंत | चरमान्त | जी० ३।३३, ३४, ३७, ३८, ६० से ६८,२१७,२१९ से २२४, २२७,६३२, ERE, EEE, 8888 चरिमभव [चरमभव] ओ० १९४।४ चरिमसोहणिज्ज [चरममोहनीय] ओ० ५६ चरिय [चरित] ओ० ४६ चरिया [चरिका] ओ० १, १६०. रा० ६४४, ६४४. जी० ३।४४४, ४९४ चरियालिंगसामण्ण (चर्यालिङ्गसामान्य | ओ० १६० चर [चरु] ओ० १११ से ११३, १३७, १३८ √चल [चल्] --चलइ. रा० ७७१---चलंति. जी० ३।७२९ --चालेइ. रा० ७७१ चलंत [चलत्] ओ० ५, ८, ४६. रा० ७७१

জী৹ ३।२७४ चलण [चरण] ओ० १९. जी० ३।४९६, ४१७ चलणमालिया | चरणमालिका ] जी० ३। ५९३ चलणी [चलनी ] जी० ३।६२३ चलिय | चलित | रा० १७, १८, २० √चब (च्यू) -- चवति जी० ३।८४३ चवण [च्यवन] रा० ५१४. जी० १।१४ चबल [चपल] ओ० २१, ४६, ४६, ५४. रा० ८, १०, १२ १४, ३२, ४६, १७९, ७१४. जी० ३१८६, १७६, १७८, १८०, १८२, ४४४ चवलायंत (चालायमान) जीव ३१४९७ चसग (चपक) जी० ३।४८७ चाइ [त्यागिन् ] ओ० १६४ ११९, २न६ चाउग्घंट [चतुर्घण्ट] रा० ६८१ से ६८३, ६८४, ६६० से ६६२, ६९७, ७०६, ७१०, ७१४, ७१६, ७२२, ७२४, ७२६ चाउज्जालग [चतुर्जातक] जी० ३१८७८ चाउयाम [चातुर्याम] रा० ६९३,७१७,७७९ चाउज्जामिय [ चातुर्यामिक ] रा० ६९४,६९६ चाउत्थमाहिय | चानुत्र्यकाहिक ] जी० ३।६२८ चाउद्दस [चातुदंश] रा० ७७४ चाउहसी [चतुर्दशी | ओ० १६२. रा० ६६=, ३२७,५४४ चाउब्भाइया [चातुर्यागिका] रा० ७७२ चाउमासिय (चानुमांगिक) जी० २। १९७ चाउरंगणी [चतुरङ्गिणी] ओ० ४४ से ५७,६२, ٤X चाउरंत [चतुरन्त] ओ० १६,२१,५४. रा० ८, १४४,२६२. जी० ३।३२७,४४७,६०२,⊏६६, 323 चाउरक्क [चातुरवंग] जी० ३१६०१,८६६ चाडुकर [चाटुकर] ओ० ६४ चामर [चामर] ओ० १२,१९,६३ से ६५.

६२०

रा० २२,२३,४०,१६०,१६७,१७८,२५६, २७६. जी० ३।२६०,२६१,३३३,३४८,३४४, 3=5,880,886,888,860 चामरगगह [चामरग्राह] ओ० ६४ चामरधारपडिमा | चामरधारप्रतिभा | रा० २५६. जी० ३।४**१**७ चार [चार] ओ० ४०,१४६. रा० ५०६. জী০ ३।७०३,७२२,८०६,८२०,८३०,८३४, द३७,द३८१२,१३,२०,२२,८४२,८४४,१००१, १००३ से १००७ चारगवद्धग [चारकबद्धक] ओ० ६० चारण [चारण] ओ० २४. जी० ३।७९४,८४०, ५४१ चारि [चारित्] ओ० ५०. जी० ३।५९७ चारु [चारु] ओ० १५,१९,२५,४१. रा० ७०,७६, १३३,१७३,६६४,६७२,००६,०१०. जी० ३।२५४,३०३,४६२,४८७,४९६,४९७, ११२२ चारुपाणि [चारुपाणि] रा० ६६४. जी० ३। १६२ चालिय (चालित) रा० १७३. जी० ३।२८५ चालेमाण (चालयत्) जी॰ २।१११ चाव [चाप] ओ० १९,६४. रा० १७३,६६४, इन्. जीव ३१२न ४, ४६२, ४६६,४६७ चावभगह [चापशह] ओ० ६४ चावपाणि | चावपाणि | रा० ६६४. जी० ३।५६२ चास | चाय | रा० २६. जी० ३।२७९ चासपिच्छ | चापपिच्छ ] रा० २६. जी० ३।२७९ **चिउर** [चिकुर] रा० २८. जी० ३।२८१ चिउरंगराग (चिकुराङ्गराग] जी० ३।२८१ **चिउरंगरात** [चिकुराङ्गराग] रा० २५ चिता | चिन्ता | ओ० ४६. जी० ३। ६४८, ६४६ चितिय | चिन्तित | ओ० ७०. रा० ६,२७५,२७६, इन्न,७३२,७३७,७३न,७४६,७६न,७७७, ७९१,७९३,००४. जी० ३।४४१,४४२ चिंध | चिह्न | ओ० ४७ से ४१. रा० ६६४,६९३. जी० ३।५६२

- चिक्खल [दे०] ओ० ४६
- चिच्चा [त्यक्त्वा] ओ० २३. रा० ६९४
- √चिट्ठ [ष्ठा]—चिट्ठइ. ओ० ३७. रा० १२३. जी० ३।४८.--चिट्ठति ओ० १६३. रा० ४०. जी० ३।२२.-चिट्ठति. रा० २७६. जी० ३।४६. – चिट्ठह. रा० ७१३.---चिट्ठेज्ज. ओ० १६०
- चिट्ठं दे०] रा० ७२३
- चिट्टित (चेष्टित ) रा० १३३
- चिट्टिय [चेष्टित] रा० ७०,८०९,८१०
- चित्त [चित्त] आ० २०,२१,४६,५३,५४,५६,६२, ६३,७८,२०,८१. रा० ८,१०,१२ से १८,२०, २४,३२,३४,३७,४७,६०,६२,६३,७२,७४, १२६,२७७,२७६,२८१,२६०,६५५,६२,७२,७४, ६८३,६६०,६६५,७००,७०७,७१०,७१३. ७१४,७१६,७१८,७२४,७२६,७७४,७७८
- चित्त [चित्र, चित्त] रा० ६७४,६००,६०१,६०३ से ६०४,६०६६०,६९२,६९३,६९४ से ७१०,७१३,७१४,७१६ से ७३६,७४०
- चित्त [चित्र] ओ० १९,४९,४७,६४. रा० ६९, १३०,१३७,१४४,१६०,१७३,२४६,२४८, २७९,२८४,६८१. जो० ३।२८४,३००,३०७, ३२७,३३३,३४४,४१९,४४३,४४४,४४७, ४४१,४४४,४९६
- चित्तंग [चित्राङ्ग] जीव ३। ५९१
- चित्तंगय (चित्राङ्गक) जी० ३। ५९१
- चित्तंतरलेस [चित्रान्तरलेश्य | जी० ३।६४४
- चित्तंतरलेसाग [चित्रास्तरलेक्याक] जी० ३।¤३०।२
- चित्तघरग [चित्रगृहक] रा० १८२,१८३.
  - जी० ३।२६४
- **चित्तपट्ट** [चित्रपट्ट] रा० ६१
- चित्तरस (चित्र रस) जी० ३। ४६२
- चित्तल [चित्रल] जी० ३।६२०
- वित्तवीणा [चित्रवीणा] रा० ७७
- चित्तसाल | चित्रशाल | जी० ३। ४९४
- षियत्त [दे० प्रीत, सम्मत] ओ० ३३, १६२.
  - TTO EES, 022, 058

#### चिरट्विइय-चोयग

६२२

चिरद्विइय [चिरस्थितिक] ओ० ७२ चिराईय [चिरादिक, चिरातीत] ओ० २. रा० २ चिराहड [विराहत] रा० ७७४ चिलाइया | किरातिका | रा० ५०४ चिलाई | किराती | ओ० ७० चिल्लय [दे०] ओ० ४९. जी० ३।५८९ चिल्ललग | दे० | २१० ६६. जी० सद्दर चोणंसुय | चीतांशुक | जी० ३।४९४ चोणपिट्ठ [चीनपृष्ट] रा० २७. जी० ३।२८० चुण्ण | चूर्ण | रा० १४६, १४७, २४८, २७६, २८१,२६१. जी० ३।३२६, ४१६, ४४७,४५७ चुण्णजुति [चूर्णयुक्ति] ओ० १४६ चुग्र | च्युत | अरो० ५५ चलणिसूत | चुलनीसुत ] जी० ३।११७ **चुलसीत** [चतुरसीति] जी० ३।७२८ चुल्सहिमवंत [क्षुल्लहिमवत्] रा० २७६. जी० ३।२१७, २१९ से २२१, ४४४, ७६४, ৪ইও चूचुय [चूचुक] रा० २४४. जी० ३।४१५, ४९७ चुडामणि | चूडामणि | रा० २८४. जी० ३।४५१ भूत [चूत] जी० ३।३५९ चूतवग [चूतवन] जी० ३।३४८ चय चित रा० १८६ चूय (लया) | चूतलता | जी० ३।२६६ च्रयलया (चूतलता) ओ० ११. रा० १४५. जी० ३;१६४ चूयलयापविभत्ति [चूतलतःप्रविभक्ति] रा० १०१ च्रयवर्डेसय [चूतायतंसक] रा० १२५ च्यवण चितःश्व रा० १७०. जी० से ३४८ चूलामणि [चूडामणि] ओ० ४७, १०५. জী৹ ২।২৪২ चूलिया (चुलिका) ी० शव४१ चूलोबणय [ चूडीपनय ] २ा० ८०३ चूलोवणयण [ 'जूडेतनयन ] जी० ३।६१४ चेइय [चॅंग] ओ० १ से ३,१९ से २२, ४२, ४३, ६४, ६९, ७०, १३९. रा० २, न से १०,१२,

१२, १४, ४६, ४८, २४०,२७६, ६७८,६८६, ६८७, ६८९,६९२, ७००, ७०४, ७०६,७११, ७**१६, ७७**६ चेइयखंभ [चैत्यस्तम्म] रा० २३९ से २४२,२४४, ३५१. जी० ३।४०१ **चेइययूभ** [चैत्यस्तूत] रा० २२२ से २२४, २२६, २०४,३१६,३४३. जी० ३,३८१,३८२,३८५, ४७०, ४८१, २०८ चेइयमह [चैत्यमह] रा० ६८८. जी० ३।६१४ चेइयरक्ख | चैंत्यरूक्ष | २३० २२७ से २३०, ३१०, ३११, ३४८. जी० ३।३८६ से ३८८, ३९१, **३६२,४१२,४७४.४८०, ५१३** चेट्रिय | चेष्टित ] जी० ३।३०३, ४९७ चेड [चेट] ओ० १व. र⊧० ७४४, ७४६, ७६२, ७६४ चेडिया [चेटिका] ओ० ७०. रा० ८०४ चेतिय | चैत्य | जी० ३।४०२, ४४२ चेतियलंभ [चैत्यस्तम्भ] जी० ३।४०२ से ४०४, ४०६, ४४२, ५१६, १०२५ चेतियथूभ [चॅस्यस्तूष] जी० ३१३५३, ४५१,५९४, ૬૬૪, ૬૬७ चेतियरुक्ख [चैत्यरूक्ष | जी० ३१८९, ८९१ चेल (पाय) [चेलपात्र] ओ० १०४, १२८ चेल (बंधण) [चेलबन्धन] ओ० १०६, १२६ चेसुक्खेव [चेलोत्क्षेप] रा० २८१. जी० ३१४४७ चोउद्वि [चतुष्षष्टि] जी० ३।२१व चोक्ख [चोक्ष] ओ० २१, ४४, ६८. रा० २७७, २नन, ७६४, न०२. जी० ३।४४३ चोक्खायार [चोक्षाचार] ओ० ६८ चोत्तीस | चतुस्त्रिंशत् | जी० ३।६६६ चोद्दस [चतुर्देशन्] जी० ३।३६ चोप्शल [चोप्पाल] रा० २४६ जी० ३।४१०, ४२०,६०४ चोप्पालय (चोप्पालक) रा० ३५५ चोय [दे० ] रा० ३०. जी० ३।२८३,३३४,४१९,१८६ चोयग [रे०] रा० १६१,२४८,२७९

### चौयाल-छरु

चोयाल [ त्रतुश्वत्वारिंशत् ] जी० ३.८३० चोयासव [दे० चोयासव] जी० ३।५६० चोर [चोर] अगे० ११७ ग० ७४४,७४६,७६२ ७६४,७९६ चोरकहा | चोरकथा | ओ० १०४,१२७ चोवत्तरि [चतु.सन्तति ] जी० २।७३३ (छ) छ [षष्] रा० १७३ जी० १।४९ छउमत्प छिद्यस्य अो० १६९,१७०. रा० ७७१. जी० १११२६; ३१६६३, ३१६६७; ६ ३६,४२ से 88,88,28 छउमत्यपरियाग [छद्यस्थपर्याय] ओ० १६६ छंद [छन्द] ओ० ९७ रा० ७२० छकोडीय [पट्कोटीक] जीव ३१४०१ छगल [लगल] ओ० ५१ जी० ३ १०३० छज्जीवणिया [घट्जीवनिका] ओ० ७४। १ छट्ट विन्ड अो० ६७,१४४,१७४,१७६, रा० न०२ छर्ठछट्ठ [षब्ठंपब्ठ] ओ० ११६ छट्रभक्त [वड्ठभक्त] ओ० ३२ छट्टा [पण्ठी | जी० २।१३४,१३५; ३।२,६१ १११ छद्विया विष्ठका ] जी० ३।१२५ छट्टी विष्ठी जीव २११४,१४६; ३१४,३६ ७१ 68,68,66,66,888 छडिय छिटित | रा० १४० जी० ३।३२३ √छड्ड [छर्दय, मुच्] ---छड्डेंति. रा० ७७४---छड्डेस्सामि. रा० ७७३ -- छड्डेहि रा० ৬৩४ छड्डियल्लिया [ छर्दिना | ओ० ६२ छडूतए [छर्दयितुम्] रा० ७७४ छड्रेत्ता (छदिस्वा] ग० ७७४ छण्ण | छल्न | जी० ३,२७१ छण्णाउय | पण्णावति | जी० ३।०२० छण्णालय [दे० पण्णालक] ओ० ११७

छत्त [छत्र] ओ० २,१९,५२,५७,६३ से ६५, EU, EE, UO. TIO 848, 803, 708, EF? से ६८३,६९१,६९२,७००,७१४,७१६,७१६. जी० ३।२६६,२६४,३३२,३४५,४१६,४४५. 268,280,808 छत्तज्वाय (छत्रध्वज) रा० १६२. जी० ३।३३५ छत्तधारपडिमा [छत्रधारप्रतिमा] जी० ३।४१६ छत्तधारगपदिमा [छत्रधारकप्रतिमा] रा०२५५ छत्तय [छत्रक] ओ० ११७ छत्तलक्लण [छत्रलक्षण] ओ० १४६. रा० ८०६ छत्ताइच्छत्त [छत्रातिछत्र] रा० २०२,२०४, २०५ छत्ताइछत्त [छत्रातिछत्र] ओ० १२. रा० १३७, २२६. जी० ३।२६१,३१४,३४७,३७१,३७४, ४३३ छतातिच्छत्त [ छत्रातिछत्र ] रा० १२,५६,२०६, २**३१,२४७,२४**८,२४०,२४६ छत्तातिछत्त [छत्रातिछत्र] रा० २३,१६८,१७१, २०७,२०८,२२०,२२३,२३२,२३४,२६१, जी० ३।३०७,३४९,३५९,३६७ से ३७०, \$0E,3=7,3E8,3E3,3EX,3EE,Xo3, ४११,४२०,४२४,४३०,४३६,६६६ छत्तीस (पर्ट्तिशत्) ओ० १६. रा० २४०. जी० 31680 छत्तोव | छत्रोप | ओ० १,१०, जी० ३।४८३ छत्तोधग ∫छत्रोपक ∫ जी० ३।३८८ छप्पण्ण [घट्पञ्चाशत्] जो० ३१३०० छप्पन्न | पट्पञ्चाशत् | रा० १३० जी० ३।५६८ छल्पय (षट्पद) ओ० ६. रा० १३६,१७४. जी० 31285,288,288,258,256 छब्भाग | घड्भाग | ओ० १९४ छब्भामरी | पड्भागरी | रा० ७७ छम्मासिय [पाण्मासिक] ओ० ३२ छयाल [यट्चःवासित्] जी० ३। ५१५ छरु (रसरु) ओ० १६, जी० ३।५९६

छरुण्पवाव [त्सहप्रवाद] ओ० १४६ छरुप्पवाय (रसरुप्रवाद) रा० ५०६ छरुह [त्सहक] जी० ३।३२२ छलंस [पडंस] जी० ३।४०१ छलसीत [यडशीति] जी० ३।७३६ छल्ली [दे०] रा० २८. जी० ३।२८१ छवि [छवि] जी० ३। १६, ४१ म छविग्गहित | पड्विग्रहिक | जी० ३।४०१ छविच्छेद [छविच्छेद] जी० ३।६२० छविच्छेय [छविच्छेद] रा० ७६२. जी० शह्रश् छब्विह [यड्विध] ओ० ३०,३१,३५. जी० १।१०, ११६; ३।१०३,१५४,६३१; ४1१,६०; ६११४६, 856,800,858 छन्वीस [षड्विंशति | जी० ३।१०६६ छाउमरियय | छाद्म स्थिक | रा० १४६ छादण [छादन | रा० २७०. जी० ६।२६४,३००, প্রস্থ छायण [छादन] रा० १३०,१६० छाया [छाया] ओ० १२,४७,७२,१९४. रा० २१, JJYX,JJ,JX,JZ,JX,JZ,Y,YX,GXE, &XE,800' २२८,६७०,७०३. जी० ३।२६१,२६६,२६६, २७७,३२२,३३२,३८७,४६८,६०४,६७२ छाबट्ठ [षट्पब्टि] जो० ३।१०२२ छावट्टि [षट्षप्टि ] जी० ३१८३८।४ छावत्तर [पट्सप्तति] जी० ३।७०३ √छिद [छिद्] –छििद. रा० ६७१. –छिदति. रा० ২ন१. জী০ ২।४४৬ √छिज्ज |छिद् ]--छिज्जइ. रा० ७८४ छिज्जमाण [छिद्यमान] जी० ३१२२ से २४,२७, ४४ से ४७ छिट्ट [छिद्र] या० ७१४ से ७१७ छिण्णावाय [छिन्तापात] अा० ११६,११७. **বা**৹ ৬**६ৼ,७७**४ छित्त [क्षेत्र] ओ० १ छिद्द [छिद्र] रा० ७९३

छिप्पंत [स्पृश्यमान] रा० ७७ छिरा [शिरा] जीव १।६४,१३४;३।६२,१०६० छिरिया (दे०) जी० १।७३ छिवाडी दि० | रा० २६. जी० ३।२८२ छोइत्ता [क्षुत्वा] जी० ३।६३० छोरबिरालिया [क्षीराबिडालिका] जी० २।१ छोरविरलिया [क्षीरविडालिका] जी० १।७३ छुम [क्षिप्]---छुभइ रा० ७८८.---छुभिस्सामि **TIO 050** छुहा [क्षुघ्] ओ० १९४।१८ छुहिय [क्षुधित] जीव ३१११६ छेता [छित्त्वा] जी० ३। ६९१ √छेद [छिद्] -- छेदेंति ओ० ११७ छेदारिह [छेदाई] जो० ३६ छेदित्ता [छिल्वा] ओ० ११७ छेदेता [ छित्त्वा ] ओ० १६२ छेदोवट्ठावणियचरित्तविणय [छेदोपस्थापनीय चरित्रविनय] ओ० ४० √छेम [छेदय्]—छेइस्सइ. रा० ५१६ छेय [छेक] ओ० ६३,६४. रा० १२,१७३,६८१, ७४८,७४६,७६४,७६६,७७०. जी० इ।⊏६, \$ \$ x, 8 9 £, 8 9 =, 8 = 0, 8 = 7, 7 = X, 8 8 X, 832 छेयकर [छेदकर] ओ० ४० छेयारिय [छेकाचार्य] ओ० १,५७ छेवट्ट [सेवार्त्त] जी० १।१७,८६,१०१,११९ छोडिय | छोटित | जी० ३। ५ ९६ ল

ज [यत्] जो० ३७. रा० ६. जी० १।५ जइ [यदि] जो० ५७. रा० ७१८. जी० १।५५ जइण [जविन्] ओ० ५७. रा० १२,७५८,७५९. जी० ३ ८६,१७६,१७८,१८०,१८२,४४५ जइपरिसा [यतिपरिषद्] ओ० ७१ जओ [यतस्] रा० ७५४,७५५. जी० १।६६ जंघा [जङ्घा] ओ० १६. रा० २५४. जी० ३।४१५,

\*85,\*89 जंत [यन्त्र] खो० १४ रा० १७,१८, २०,३२, १२६,६७१. जी० ३।२८८,३००,३७२ जंतकम्म [यन्त्रकर्मन्] ओ० ६४. रा० १७३,६५१. জী০ ২।২৭২ भंतवाडचुल्ली [यन्त्रपाटचुल्ली] जी० ३।११द जंबुद्दीव [जम्बुद्दीप] ओ० १७०. रा० ७ से १०, १३,१५,५६,१२४,६६८. जी० ३१८६,२१७, २१९ से २२१.२२७ २४९,२६०,२९९. ३००,३११,४४४,४६६,५६८ से ५७७,६३८, ६६०,६६४,६६६,६६८,७०१से ७०४,७०८, 6449,086,080,088,088,088,088,088, ७६२,७६४ से ७६६,७७४,७९४.९१ ह से ६२२, 223,2038,2008,2050 जंबद्दीवग [जम्बूद्वीपक] जी० ३।७०९,७१०, ७६२,७६४ से ७६६,८१४ जंबदीयाहियति [जम्बूदीपाधिपति] जी० ३,७१५ **अंबुपेठ** ]जम्बूपीठ] जी० ३।६६८,६६९ जंबू [जम्बू] जी० १७१; ३।६६८,६७२,६७३, ६७८ से ६८३,६८८,६८१ से ७००, ¥30 जंबूणदमय [जाम्बूनदमय] जी० ३।३२३ जंबूणय [जाम्बूनद] रा० १५६,२२८. जी० ३।३३२,३८७,६७२ बंधूणयमय [जाम्वूनदमय] रा० ३७,१५०. জী০ ২।২११,४০৬,६४২ जंबूणयामय [जाम्बूनदमय] रा० १३४,१८८, २४५. जी० सा३०५,३६१,६६६,६८६, 382 जंबूदीव [जम्बुद्वीप] जी० ३।७००,७५४,१००१, 8000,8025 जंबूदीवाहिवति [जम्बूद्वीपाधिपति] जी० ३१७०० जंबूपल्लवपविभत्ति [जम्बूपल्लवप्रविभक्ति] रा० १०० जंबूपेड [जम्बूपीठ] जी० शद्दम,६७०

**मंब्फस** [जम्बूफल] ओ० १३. रा० २४. জী০ ২।২৩দ अंबूफलकालिया [जम्बुफलकालिया] जी० ३।८६० जंबूरुक्ख [जम्बूरूक्ष ] जीव ३१७०२ जंब्यण [जम्बूवन] जी० ३।७०२ जंबूसंड [जम्बूषण्ड] जी० ३।७०२ जंभाइता | जुम्भयित्वा ] जी० ३।६३० जकस [यक्ष] ओ० ४९,१२०,१६२. रा० ६९८, ७४२,७८६. जी० ३१७८०,९४७,९४० जक्लगह [यक्षग्रह] जी० ३।६२० जक्खपडिमा [यक्षप्रतिमा] रा० २५७. जी० ३।४१८ जक्समंडलपविभक्ति [यक्षमण्डलप्रविभक्ति] বা০ ৫০ जक्लमह [यक्षमह] रा० ६८८. जी० ३।६१५ जक्लालित [यक्षादीप्त] जी० ३।६२६ अगईपव्यय [जगतीपर्वत] रा० १८१ अगईपव्ययग [जगतीपर्वतक] रा० १८० अगती [जगती] जी० ३।२६० से २६३,२७३, २१९ बगतीपम्बयग [जगतीपर्वतक] जी० ३।२९२ जधन [ जधन ] ओ० १५ बच्च [जात्य] ओ० १९,६४. जी० ३।५९६,५१७, **६१४,**८७८ जच्चकणग [जात्यकनक] ओ० २७. रा० ८१३ जण्चहिगुलुय (जात्यहिंगुलुक) जी० ३१४,६० जज्जरिय [जर्जरित] रा० ७६०,७६१ जहि [जटिन्] ओ० ६४ जडु [जाड्य] रा० ७३२,७३४,७६४ जण [जन] ओ० १,६,६८,११९. रा० १२३, 330 जणइत्ता [जनयित्वा] ओ० ६९ जणउम्मि [जनोमि] रा० ६८७,७१२ जणकलकल [जनकलकल] ओ० ४२. रा० ६८७, ६८८,७१२ जणकलय [जनक्षय] जी० इ।६२८ जणबोल [जनबोल] ओ० ४२. रा० ६८७,७१२

जणवय [जनपद] ओ० १४६. रा० ६६८,६६६, £68, 505, 5 = 3, 00 €, 088, 08 =, 0X0, \$30,030,800 जणवयकहा [जनपदकथा] ओ० १०४,१२७ जणवयपाल [जनपदपाल] ओ० १४. रा० ६७१ जणवयपिय [जनपदप्रिय] ओ० १४. रा० ६७१ जणवधपुरोहिय जिनपदपुराहित को० १४ रा० ६७१ जणवाय [जनवाद] ओ० १४६. रा० ५०६ जणवृह [जनव्यूह] ओ० ५२. रा० ६८७,७१२ जणसण्णिवाय [जनसन्निपात] अरे० १२. रा० ६८७,७१२ जगसह [जनशब्द] ओ० ४२. रा० ६८७,६८८, 682 जणिय [जनित] ओ० ५१ जणुक्कलिया [जनोत्कलिका] ओ० ५२ जणुम्मि [जनोमि] ओ० ५२ जण्णइ [याज्ञिक] ओ० ९४ जण्णु [जानु] रा० १२ जति [यदि] रा० ७१० जतिपरिसा [यतिपरिषद्] रा० ६१ जतो [यतस् | रा० ७४६ जत्ताभिमुह [यात्राभिमुख] ओ० ५५,५८,६२,७० जत्तिय [यावत्] जी० ३।७७,१२७ जत्थ [यत्र] रा० ७१९. जी० १।४८ जवा (यथा) जी० ३।६८ जन्न [यज्ञ] जी० ३।६१४ जन्नु [जानु] रा० ६ जप्यभिइ | यत्प्रभृति ] रा० ७६०,७६१ जमइत्ता |दे०? | ओ० २६ जमग [यमक] जी० ३।६३२,६३३,६३४,६३७ से ६३६ जमगप्यसा [यमकप्रभा] जी० सद्३७

पुनरावर्तनेनातिपरिचितं कृत्वा (वृ०) ।

जमगसमग [दे०] ओ० ६७. रा० १३,६४७ জী০ ২।४४६ जमगा [यमका] जी० ३।६३७ से ६३९ जमगागार [यमकाकार] जी० ३।६३७ जमबग्गिपुत्त | जमदग्निपुत्र ] जी० ३।११७ जमल [यमल] ओ० १,४७. रा० १२,१७,१८,२०, ₹**२,१२**€,१**३३,७**¥⊏,७४€. जी० ३।११८,२२८,३००,३०३,३७२,४६७ जमलिय [यमलित] ओ० ४,८,१०. रा० १४५. जी० ३।२६८,२७४ जम्म |जन्मन्] ओ० १८४ जम्मण [जन्मन्] ओ० ४६. रा० ८०३. जीव २१३० से ३४,५७ से ६१,६६,११६, १२४,१३३; ३।६१७ जम्हा [यसमात्] रा० ७४० जय [जय] ओ० २०,४३,६२ से ६४,६८. रा० १२,४६,७२,११८,२७६,२७९,२५२,ँ जी० ३।४४२,४४४,४४= जयंत [जयन्त] ओ० १९२. जी० ३।१८१,२९६, ४६६,७०७,७१२,७९९,५१३,५१४,६४१ जयंती [जयन्ती] जी० ३।११६,१०२६ जयणा [यतना] ओ० ४६ जया | यदा ] अो० २१. रा० ७०६. ३।७२९ जर [जरा] ओ० ४६,१७२ जर [ज्वर] जी० ३।११८,११९,६२द जरह [जरठ] ओ० ४,८. जी० ३।२७४ जरा [जरा] ओं० ७४,१६४,१९४।८,२१. रा० ७६०,७६१ जल जिल] ओ० १,२३,४६,६८,१११ से ११३, १२२,१३७,१३८,१५०. रा० १७४,८११. जी० ३।११⊂,११६,२≈६,६४२,६५३,७५४, 665,065,000,000 **√जल** [उवल्]—जलंति. रा० २५१, जी० ३।४४७

जमगवण्ण [यमकवर्ण] जी० ३।६३७

जमगवण्णाभ [यमकवर्णाभ] जी० ३।६३७

जस्तंत [ज्वलत्] ओ० २२,२७. रा० ७२३,७७७, ७७८,**७८८,८१**३ जलकिड्डा [जलकीडा] रा० २७७. जी० ३१४४३ जलचर जिलचर | जी० ३११२६1१,१६६ जलज [जलज] जी० ३।१७१ जलणपदेसि [ज्वलनप्रदेशिन्] ओ० ९० जलपवेसि [जलप्रवेशिन्] ओ० ६० जलमज्जग (जलमज्जन) रा० २७७. জী৹ ३⊧४४३ जलय [जलज] ओ० १२. रा० ६,१२,२२. जी० ३।२१० जलगर [जलचर] ओ० १४६. जी० १।६८, ६६, १०१,१०३,११२,११३,११६ से ११९,१२१, १२३,१२४;२१२२,६९७२,७६,६६,१०४, १०५,११३,१२२,१३६,१३८,१४६,१४६; ३।१३७ से १४०,१४२,१४४ जलयरी [जलचरी] जी० २।३,४,४०,४३,६९, ७२,**१४६,१**४६ जलरय [जलरजस्] ओ० १५०. रा० ५११ जलरह [जलरुह] जी॰ ११६९ जलबासि [जलवासिन्] ओ० १४ जलसमूह [जलसमूह] ओ० ४६ जलाभिसेय [जलाभिषेक] ओ० १४. रा० २७७ जलावगाह [जलावगाह] रा० २७७ जलिय [ज्वलित] जी० ३।५९० जल्ल [दे०] ओ० १, २, ८६,६२. जी० ३।५९८ जल्लपेच्छा [ 'जल्ल' प्रेक्षा ] ओ० १०२,१२५. জী০ ২।६१६ जल्लोसहिपत्त [जल्लीषधिप्राप्त] ओ० २४ जव [यव] ओ० १. जी० २। ४६७, ६२१, ७८५, 5€⇒ जवण [जवन] रा० १०, १२, १६, २७९. जी० ३।११८ जवमज्म [यवमध्य] जी० ३।७८८ जबमज्झा [यवमध्या] ओ० २४

जबलिय [ यवलित ] जी० ३।२६८ जवाकुसुस [जपाकुसुम | रा० ४५ जस [यशस्] ओ० ८ से ६५, ११४, ११७, १४५, १४७ से १६०, १६२, १६७ जसंसि [यमस्विन्] ओ० २५. रा० ६८६ जसोधरा | यशोधरा | जी० ३,६९९ जह [यथा] ओ० ७४. जी० १।७२ जहक्कम (यथाक्रम) रा० १७२ जहण [जधन] जी॰ ३।५९७ जहक्ण [जधम्य] और १८७, १८८, १९८४. जीव १।१६, ४२, ४६, ६४, ७४, ७६, ५२, द् से द=, EV, EE, १०१, १०३, १९१, ११२, ११६, ११६, १२१, १२३ से १२४, १३०, १३३, १३५ से १४०, १४२; २१२० से २२, २४ से ४०, ४३ से ६१, ६३, ६४ से ६७, ७३, ७९, ८२ से ८४, ८६ से ८८, १० से ६३, ६७, १०७ से १११, ११३, ११४, ११६ से १३३, १३६; ३।८६, ८१, १०७, १२०, १४६, १६१, १६२, १<del>६</del>४, १७६, १७८, १८०, १८२, १८६ से १९०, 284, 228, 288, 289, 288, 288, 2028, १०२७ से १०३६, १०८३, १०८४, १०८७, १०८६, ११११, ११३१, ११३२, ११३४ से ११३७; ४1३, ४,६ से ११, १६, १७; ५१४, ७, ८, १० से १६, २१ से २४, २८ से ३०; ६१२, ३, ६, ५ से ११; ७१३, ४, ६, १०, १२ से १८; ६।२ से ४,२३ से २६, ३१, ३३, ३४, ३६, ४०, ४१, ४३, ४७, ४९, ५१,५२, ४७ से ६०, ६म से ७३, ७७, ७म, म०, म३, १०५, १०६, ११४, ११५, ११७, ११८,१२३ से १२म, १३२, १३४, १३६, १३म, १४२, १४४, १४६, १४९, १४०, १५२, १४३,१६० से १६२, १६४, १६४, १७१ से १७३, १७६ से १७८, १८६ से १९१, १९३, १९४, १९८ से २००, २०२ से २०४, २०६, २०७, २१०

से २१२, २१४, २१६ से २१८, २२२, २२४, २२म, २२६, २३४, २३६, २३म, २४१ से २४४, २४६, २५७ से २६०, २६२, २६४, २६६, २७१, २७३, २७७ से २०२ जहण्णजोगि [जधन्ययोगिन् ] ओ० १८२ जहण्णपद [जवन्यपद] जी॰ ३।१९५ से १९७ जहा [यथा] ओ० ६९. रा० १०. जी० ११४ जहाणामत | यथानामक | जी० ३। ६६० जहाणामय [यथानामक] ओ० १४०,१६४, १८४. रा० १२, २४, २५, २७, २८, ३०, १४४, १७२, ७०३, ७३७, ७४४, ७४८ से ७६१, ७६५, ७७२, ७७४, ५११. जीव ३।५४,११८, ११६,२१८,२८०,२८१,२८३ से २८४,३०६, 370, 205, 508, 500, 553 जहानामय [यथानामक] रा० २६, २१, ३१, ४५, ६४, १२३, १७१, १७३, जी० ३१८४, ९४, २७७ से २७९, २८२, ६०२, ७४४, ८६०, 3008, 2008 जहाभणिय [यथाभणित] रा० ६९६ जहासंभव [यथासम्भव] जी० १।१३६ जहि [यत्र] जी० ३।११२७ जहिच्छित [यथेप्सित] जी० ३।१११५ जहिच्छिय [यथेप्सित | जी० ३१४९८, ६०६ √जा [या] - जंति. जी० ३।=३=।१ जाइ [जाति ] ओ० २३, १९४, १९४।२१ जाइमंडवग [जातिमण्डपक] रा० १=४ जाइमंडवय [जातिमण्डपक] रा० १८४ जाइसंपण्ण [जातिसम्पन्न] औ० २५ जाइसरण [जातिस्मरण] ओ० १४६, १४७ जाइहिंगुलय [जातिहिङ्गुलक] रा० २७ जाईमंडवग [जातिमण्डपक ] जी० ३।२९६ जाईमंडवय [जातिमण्डवक] जी० ३१२९७ आग [याग] ओ० २ जागर [जागु] - जागरिस्संति. रा० ८०२ जागरिया [जागरिका] ओ० १४४. रा० ६०२,

503

जाण [यान] ओ० १,७,८,१०,१४,४२,४४,४८, ४९,६२,७०,१००,१२३,१४१. रा० ६७१, ६७४,६८७,७९९. जी० ३।२७६,४८१,५८४, ६१७

√जाण [जा]--जाणइ. ओ० १६९. रा० ७७१. जी० ३।१६८ --- जाणंति. रा० ६३. जी० ३।१०७ जाणंती. -- ओ० १९४।१२---जाणति, जी० ३१२०० --- जाणह. रा० ६३ - - जाणामि. रा० ७४६---जाणासि. रा० ७६७ --जाणि-स्यामो. रा० ७२१— जाणिहिति. रा० ५१५ जाणमाण [जानान, जानत] रा० ८१५ जाणय [ज्ञ] ओ० १९,२१,४४. रा० ७४७ जाणविमाण [यानविमान] रा० १३,१७ से १६, २४,३२,४४ से ४९,५६,५७,१२० जाणसाला [यानशाला] ओ० ५९ जाणसालिय [यानशालिक] ओ० ५८,५६ जाणिता [ज्ञात्वा] ओ० १४५. रा० ७१४ जाण [जानु] ओ० १९,२१,४४. रा० २४४,२९२. जी० ३।४१४,४४७,४९६,४९७ जात [जात] रा० ११६,=११ जातक्ष्य [ जातरूप ] रा० ७११. जी० ३१७,३८७ जातरूवमय (जातरूपमय) जी० ३।२६४ जाता [ जाता ] जी० ३।१०४०,१०४४ जाति [जाति] रा० ३०. जी० ३।१६० से १६२, १६६ से १६९,१७१,१७४,२८३,२९७.९६६ **६**६न जातिगुम्म [जातिगुल्म ] जी० ३१४८० जातिपसन्ना [जातिप्रसन्ता] जी० शब६० जातिमंडवग [जातिमण्डपक] जी ३। ५१७ जातिमंडवय [जातिमण्डपक] जी० ३।=५७ जातिसंपण्ग [ जातिसम्पन्न ] रा० ६५६,६५७, ६८,७३३ जातिहिंगुलय [जातिहिङ्गुलक] जी० ३।२८० जाय [जात] ओ० २७,१४०. रा० १४,६१८, 980,088,502,588

#### जायकम्म-जियपरीसह

जायकम्म [जातकर्मन्] ओ० १४४ जायकोउहल्ल [जातकोतूहल्ल] ओ म३ जायग [जातक] ओ० १४४. रा० ५०४ जायत्थाम [जातस्थामन्] रा० ५१३ जायरूप जातरूप] ओ० १४,२७,१४१. रा० १०, १२,१८,६५,१३०,१६४,२२८,२७६,६७१, ५१३. जी० ३।३००,६७२ जायरूप [पाय] [जातरूपपात्र] ओ० १०४, १२५ जायरूव [बंधण] [जातरूपबन्धन] ओ० १०६, 3-8 जायरूवमय [जातरूपमय] रा० १३०,१६०. जी० 31300 जायसंसय [जातसंशय] ओ० ८३ जायसङ्ह (जातश्चद्ध) ओ० ५३ जाया [जाता] जी० ३:२३४,२३९,२४१ जार [जार] रा॰ २४. जी॰ ३।२७७ जारग्पविभत्ति [जारकप्रविभक्ति] रा० ६४ जारिसय [यादृशक] रा० ७७२ जाल (जाल) ओ० १९,६३,६४. रा० १७,१८. জী০ ২।৭४,২৪६ जालंतर [जालान्तर] रा० १३७. जी० २१३०७ **जालकडग** [जालकटक] रा० १३४. जी० ३।३०४ जालकडय [जालकटक] जी० ३।२६२ जालघरग [जालगृहक] रा० १८२,१८३. जी० 312:34,788 जालपंजर | जालपञ्जर ] रा० १३०. जी० ३।३०० जालवंद [ जालवृन्द ] जी० ३१५९४ जालहरय [ जालगृहक] ओ० ६ जाला (ज्वाला) जी०१ (७८; २१६८; २१५४, ११5, ११६, ५८ € जाव [यावत्] ओ० ६०. रा० १ जी० १।३४ जावइय | यावत् | जी० ३:१७६,१७८,१८००,१८२ जावं [यावत्] जी॰ सम्४१ जावज्जीव | यात्रज्जीव | ओ० ११७,१२१,१३६, १६१,१६३

जावतिय [यावत्] जी० ३१९७२,९७३ जावय [जापक] ओ० २१,४४. रा॰ ५,२९२. জী৹ ২।४২৩ जासुअण [जपासुमनस्] रा० २७ जास्यण (जपासुमनस्] जी० ३।२८०,४९० जाहिया [जाहिका] जी० २।६ जाहे | यदा | रा० ७७४. जी० ३:५४३ जिइंदिय [जितेन्द्रिय] ओ० २४,४६,१६४ जिण [जिन] ओ० १९,२१,२६,५१,५२,५४,१७२. रा० ८,१६,२२५,२४४, २९२,७७१,८१५, **∝१७. जी० १**११; **३**।३∝४,४१५,४४२,४५७, 53518,588,689 √जिण [जि]--जिणाहि. ओ० ६८. रा० २८२. जी० ३।४४० जिणपडिमा [जिनप्रतिमा] रा० २२५,२५४ से . २४८,२७३,२६१,३०६ से ३०६,३१७ से ३२०,३४४ से ३४७. जी० ३।३८४,४१४ से ४१९,४४२.४५७,४७१ से ४७४,४८२ से ४६४,५०६ से ५१२,६७६,८६६,८०८ जिजमय [जिनमत] जी० १।१ जिणवर [जिनवर] ओ० ४६. रा० २९२. जी० **ই**।४४७ जिणसकहा [दे० जिण 'सकहा'] रा० २४०,२७६, ३५१. जी० ३,४०२,४४२,५१६,१०२५ जिणिव [जिनेन्द्र] रा० ४७ जित [जित] जी० ३।४४५ जितिविय [जितेन्द्रिय] रा० ६८६ जिडमछिण्णग [जिह्वाछिन्नक] ओ० १० जिब्सिंदिय | जिह्वे न्द्रिय | ओ० ३७ जिमिय [जिमित] रा० ६५४,७६४,५०२ जिय [जित] ओ० ६८. रा० २८२,६८६. जी० ३१४४५ जियकोह [जितकोध | अो० २४. रा० ६८६ जियणिद्व [जितनिद्र] ओ० २५. रा० ६८६ जियपरीसह [जितपरीषह] ओ० २४. रा० द्दद्

# जियभय-जुत्तपालित

# ६३०

- **जियभय** [जितभय] रा० =१७
- जियमाण [जितमान] ओ० २४. रा० ६८६
- जिवमाय [जितमाय] ओ० २४. रा० ६८६
- जियलोभ [जितलोभ] ओ० २५
- जियलोह [जितलोभ] रा० ६८६
- जियसत्तु [जितसत्र] रा० ६७६,६८०,६८३ से ६८४,६९८ से ७००,७०२
- जोमूत [जीमूत] जी० ३।२७८
- जोमूतय [जीमूतक] रा० २५
- जीय [जीत] ओ० ४२. रा० ११,१६,४९,६८७, ६८९
- जीव [जीव] ओ० २७,७१ से ७३,७४१४,४,८४ से ८६,१२०,१३७,१३८,१६२,१८४ से १८८. रा० ६६८,७१९,७४८ से ७६४,७६८,७७० से ७७३,७८६,८१३,८१५. जी० १।१०,११, १४ से ३३,४१ से ४४,४६,४९ से ६२,६४, ७४,७६,८२,८४ से ८७,६०,६३ से ६६,१०१, ११६,१२८,१३० से १३४,१४३,२।१,१५१; 318, 23, 28, 50, 885, 875, 875, 870, 87012, ४,१२६१४,६,१४० से १६०,१८३,१६२,२१०, 288,X0X,X0E,088,070,07X,070, ७८७,५०६,५१९,५२६,५४३,५४६,८५०, EXE EQX, EQX, 2058, 8825, 8830, ११३०;४1१,२५; १1१,६०; ६1१,१२; ७११, २३; ना१,५; ६।१,७ से ६,१४,१८,२१,२२, २= से ३०,३६,३८,५६२,६२,६३,६६,६७, نلا, ۲۵۲, ۲۹۶, ۲۰۶, ۲۹۶, ۲۹۶, ۲۹۶, ۲۹۶, ۲۹۶, ۲۷ 238,888,880,884,885,884,886, 250,200,252,252,254,255,260, २०५,२०६,२२०,२२१,२३२,२४४,२४६, २६७,२६३
- जीवंजीवग[जीवंजीवक] बो० ६. जी० ३।२७५ जीवंत [जीवत्] रा० ७५४,७६२,७६३ जीवंतग [जीवत्क] रा० ७६२
- जीवधण [जीवधन] ओ० १८३,१८४,१९४,११ जीवदय [जीवदय] ओ० १९,२१,४४. रा० ८

जीवपएसिय [जीवप्रदेशिक] ओ० १६० **जीवा** [जीवा] रा० ७४९. जी० ३।४७७,६३१ **जीवाजीवाभिगम** [जीवाजीवाभिगम] जी १:१,२ जीवाभिगम [जीवाभिगम] जी० १।२,६ से १०: हा७,८,२ह३ जोविय [जीवित] ओ० २३,२४. रा० ६८६,७४० से ७४३,७४६,७६२,७६७ जीविया [जीविका] ओ० १४७. रा० ७१४,७७६, ५०६ जीवोबलंभ [जीवोपलम्भ] रा० ७६८ बीहा [जिह्वा] ओ० १९,४७. रा० २१४. जी० 31887,888,886 षह [ चुति ] ओ० ४७,७२,८ से ६४,११४, ११७,१४४,१४७ से १६०,१६२,१६७. रा० १३,६१७ **√जुंज** [युज्]—जुंजइ. को० १७४ जुंजमाण [युञ्जान] ओ० १७६,१७८ से १८० जुग [युग] वो० १९. जी० ३।५ १६, ५४१ जुगल [युगल] रा० २३. जी० ३।४९७ जगव [युगपत्] ओ० १८२ खुगव [युगवत्] रा० १२,७५८,७५९. जी० ३।११५,११६ जुमा [युग्य] ओ० १,७,८,१०,१००,१२३. जी० ३१२७६,४८१,४८४,६१७ जुज्झसज्ज [युद्धसज्ज] रा० १७३,६८१ जुण्ण [जीणं] रा० ७६०,७६१,७८२ जुण्णम [जीर्णक] रा० ७६१ जुति [द्युति] रा० १३,१२१,६५७. जी० ३।४४६, ४४७ जूत [ युक्त ] अरे० १४,१९,२३,४४,४७,४८,६२, 100,08. 710 80,85,70,37,58,00, **१२६,२८४,२९२,६६४,६७२,६८१,६७२,** ६९०,६९१,७०६, ७१४,७२४,५०९,५१०. जी० २।२८८,३००,३७२,४४१,४४७,४६२, ४न६,४६२,४६६,४९७,२३न।३२

जूत्तयालिय [युक्तपालिक] रा० ६६४ **नुत्तय** [युक्तक] रा० ७७६ जुत्तामेव [युक्तमेव] रा० ७०६ जुत्ति [युक्ति] ओ० ६७ जुद्ध [युद्ध] ओ० १४६. रा० ८०६. জী০ ২। হ ২ १ जुद्धजुद्ध [ युद्धयुद्ध ] रा० ५०६ जुद्धसज्ज [युद्धसज्ज] ओ० ४७,६४. रा० ६८२, ६६१. जी० २।२५५ जुद्धाइजुद्ध [युद्धातियुद्ध] ओ० १४६ जुम्ह [युष्मत्] रा० १ जुयल [युगल] ओ० १२,४७. रा० १२,१७,१८, 20,32,826,833,254.268,985,986. जी० २१११८,२८८,२७०,३०२,३७२, 828,822,286 जुयलग [युगलक] जी० ३।६३० जुवइ [युवति] मो० १ जुबराय [युवराज] रा० ६७४. जी० ३।६०६ जुबलिय [युगलित] ओ० ४,५,१०. रा० १४४. जीव ३।२६८,२७४ जुवाण [युवन्] रा० १२,७४८,७४६. जी० ३।११८ जूय [द्यूत] ओ० १४६. रा० ८०६ जुयय [यूपक] जी० २।७२३ ज्या [यूका] जी० ३।७८ १ जूब [यूप] जी० ३१४,६७ ज्वय (युपक) जी० २१६२६ जूवा [यूका] जी० २।६२४ जूहिया [यूथिका] रा० ३०. जी० ३।२८३ जूहियागुम्म [यूथिकागुल्म] जी० ३।४८० जुहियामंडवग [यूथिकामण्डपक] रा० १८४. जी० ३:२६६ जुहियामंडवय | यूथिकामण्डपक ] रा० १५४ जेट्ट [ज्येब्ठ] ओ० मर. रा० ६७३,६७५ जेट्रामूल जिंग्ठामूल ओ० ११५ जेणामेव [यत्रैव] रा० ७४४. जी० ३१४४३ जोइ | ज्योतिस् ] रा० ७१७,७६१,७७२

जोइभायण [ज्योतिर्भाजन ] रा० ७६४ जोइस [ज्योतिस, ज्यौतिष] ओ० ४०. रा० ४९. জী৹ ২৷দ২দ৷২ जोइसामयण [ज्यीतिषायण] ओ० १७ जोइसिणी [ज्यौतिषी] जी० २१७१,७२,१४० जोइसिय [ज्योतिष्क, ज्यौतिधिक ] ओ० ५०,९४. रा० ११. जी० १।१३४; २।१४,१८,३६ से 88,68 62,66; 31230,535128,686 जोईरस [ज्योतीरस] रा० १०,१२,१८,६५,१६४, 308 जोईरसमय [ज्योतीरसमय] रा० १३०,१६० जोएत्ता [योजयित्वा] औ० ५१ जोग | योग | ओ० ११७. रा० = १४. जी० १।३४, £ ₹, १ • १, १ **१ ६, १ २ =, १** ३ ६ ; ३ **। १ २ ७,** १ ६ •, ७०३,७२२,५०६,५२०,५३०,५३४,५३७, 535180,32 जोगनिरोह [योगनिरोध] ओ० १८२ जोगपडिसंलीणया [योगप्रतिसंलीनता] ओ० ३६ जोगि [योगिन् ] ओ० १६ जोग्ग [योग्य] ओ० ६३. रा० ६,१२,४७ जोणि [योनि] ओ० १९४ जोणिष्यमुह [योनिप्रमुख] जी० ११४८,७३,७८, द **१** जोणिया [योनिका] ओ० ७०. रा० ५०४ जोणिसंगह [योनिसंग्रह] जी० ३। १४७ जोणिसुल (योनियूल ) जी० ३।६२८ जोणीपमुह [योनिप्रमुख] जी० ३।१६० से १६२, १६६ से १६६, १७१, १७४, ९६६, ९६न जोणीसंगह [योनिसङ्ग्रह] जी० ३। १६०, १६१, १६३ जोल्ह [ज्यौत्स्न] जी० ३।५३८।१६, २० जोति [ज्योतिस्] रा० ७६५ जोतिभाषण [ज्योतिर्भाजन] रा० ७६४ जोतिरस | ज्योतीरस ] जी० ३।७ जोतिरसमय [ज्योतीरसमय] जी० ३।२६४, ३०० जोतिस [ज्योतिस्, ज्यौतिष] जी० राष्य्रप, पर,

#### **६**३२

- **६६४, ६६७, ६७०, ६२४, ६४२, ९५२,** १००१, १००२, १००६ **कोतिसराय** [ज्योतीराज] जी० ३।२४७, २४,⊂, १०२३ से १०२६
- जोतिसविसय [ज्योतिर्विषय] जी० ३११००६
- जोतिसिंब [ज्यौतिरिल्द्र, ज्यौतियेन्द्र | जी० ३।२१७, २४४, १०२३ से १०२६
- जोतिसिणी [ज्यौतिषी] जी० २1१४६
- जोतिसिय [ज्योतिष्क, ज्यौतिषिक] जी० २। १४, १६, १४८, १४९; ३। २४७, ४१०, ७६३, १०२४
- जोय | योग | ओ० ६४. रा० ५१, ७९६. जी० ३।७०३; हाइइ
- **√जोय** [योजय्]—जोइंसु. जी० ३७०३— जोइस्सति. जी० ३।७०३—जोएइ. ओ० ५९— जोएस्संति. जी० ३।७०३ —जोयंति. ३।७०३
- जोयण [योजन] ओ० ७१, १७०, १६२, १९४. रा० ६, १०, १२, १४, १७, १८, ३६, ४२, ४६, ६१, ६४, १२४, १२६ से १२९, १३७, १७०, १८६, १८८, १८६, २०१, २०४ से २१२, २१८, २२१, २२२, २२४, २२६, रर७, र३०, र३१, २३३, २३न से २४०, २४२, २४४, २४६, २४७, २५१ से २५३, २६१, २६२, २६७, २७२,२७९, ७२७,७१३. जी० १७४, द६. १०१, १११, ११६, १२३, १३४; ३१४, १४ से २१, २४ से २७, ३३ से ३६, ३६ से ४३, ४७, ६० से ७२, ७७, ८० से न२, नइ, १२६ा७, २१७, २१६ से २२७, २३२, २४७, २६० से २६३, २७३, २६८, ३००, ३०७, ३१०, ३४१, ३५२, ३५४, રેપ્રેપ્ર, રેપ્ર⊏, રેપ્રેસ, રેદ્રેર, રેદ્રેઝ, इद्र, इद्द से ३७४, ३७६, ३७७, ३८०, ३८१, ३८३, ३८४, ३८६, ३६२, ३१३, ३९४, ४०० से ४०२, ४०४, ४०६, ४०८, ४१२ से ४१४, ४२२, ४२५, ४२७, ४३७,

४४५, ५६६, ५६८ से ५७०, ५७७, ६३२, ६३४, ६३८, ६३६, ६४२, ६४४,६४३,६४६, ६७६ ६८२, ६८३, ६८६ से ६८६, ७०६, ७१०, ७१४, ७२३ से ७२८, ७३२, ७३६, ७३७, ७३९ से ७४२, ७४४, ७४०, ७४४, ७४६, ७४८, ७६१, ७६२, ७६४ से ७७६, ७८८ से ७६२, ७९४, ७९४, ७१८, ८०२, =१२ ६१४, =१४, =२३, =२७, =३२, द३४, द३दा२७, २८, द३१, ८४२, ८४४, ननन, नहर, नहर से नहर, नह७ से ह०१, €05, €00, €80, €88, €85, €80, €88, ६६६ से ६७१, १००१ से १००६, १०१० से १०१२, १०३८, १०६५ से १०७०, १०७३, 80.68, 805.6. 8055 जोवणय [योजनक] जी० ३।२२६, ६६३ जोयणिय [योजनिक] ओ० १९२

- जोव्वण [यौवन] ओ० ४७. रा० ६९, ७०. जा० ३।४१७
- जोव्वणग [यौवनक] रा० ५०९, ५१०
- जोह [योध] ओ० २३, ४२, ४४ से ४७,६२,६४. रा० १७३, ६८१, ६८७,६८८. जी० ३।२८४

#### झ

**मंझा** [झञ्झा] रा० ७७

- इंझावाय [झञ्झावात] जी० ११८१
- झड |दे० | रा० ७८२
- सय [ध्वज] ओ० २,१२,५५, ५७, ६५. रा० २२, १६७, १७३, १७८, २०२, २०४ से २०८, २१४, २२०, २२३, २२९, २३२, २३४, २४१, २४८, २४०, २४८, २५९,२६१,२७९, २८१, ६८१, ७१४. जी० ३।२८५, २६०, ३४८, ३४९, ३६७ से ३७१, ३७४, ३७९, ३८८, ३६१, ३६४, ४०३, ४१२,४१९,४२०, ४२४, ४३०, ४३३, ४३६, ४४५,४४७,४८९ ५८७, ६०४

मल्लरी [ झल्लरी ] ओ० ६७. रा० १३,७७,६४७. जी० ३।२८ से ३२, ७८, ४४६, ६१८ इसस | झय | ओ० १६. जी० ३।५६६ झाण |ध्यान] ओ० ३८, ४३, ४६ झाणकोट्ठोवगय [ध्यानकोण्ठोपगत ] ओ० ४४,८२ झाम [दग्ध] जी० ३।९६ √झाम |दह्] झामिज्जइ रा० ७६७ √झिया | ध्यै ]---झियाइ रा० ७६५ --झियामि रा० ७६५---- फियायसि रा० ७६५ **झियायमाण** [ध्यायत्] रा० ७६५ झोण [क्षीण] ओ० ११६,११७. रा० ७७४ शीणोवग | शीणोदक | अगे० ११७ झसिय [ शुषित ] जी० ३।११८,११६ झुसिर [शुधिर] जी० ३।००,६६,४४७,४८८ झसणा (जूषणा) ओ० ७७ सूसित्ता [जुषित्वा] अ० १४० सूसिय [जुध्ट, शुषित] ओ० ११७

# £

टकारवग्ग [टकारवर्ग] रा० ६७ (ठ) √ठव [स्थापय्]---ठवेइ रा० ६०१---ठवेई रा० १६ – ठवेंति ओ० १२. रा० ६८७ ठवित्ता (स्थापयित्वा) रा० ७६१ ठविय | स्थापित | ओ० १३४ ठवेत्ता [स्थापयित्वा] ओ० ४२. रा० ५६ ठाण |स्थान | ओ० १९,२१,४०,५४,७३,९५, ११७,१५५,१५६. रा० ५,७६,१७३,२६२, £9X,02X,02E,9X8,9X3,908,90E&. जी० १।१२४; ३।२=४,४४७,=४३,=४४, ६४६ ठाणद्विइय [स्थानास्थतिक] ओ० ३६ ठाणघर | स्थानधर | अगे० ४५ ठाणगव (स्थानपद] जी० ३।२३३,२३४,२४८, २५० से २५२,२५७,१०४४

ठाणपय [स्थानपद] जीव ३११०४८,१०५६ ठाणप्पय [स्थानपद] जी० ३१७७ ठाणमग्गण [स्थानमार्गण] जी० १।३४,३६,३६ ठिइ | स्थिति ] ओ० = ६ से ६४,११४,११७,१४०, १४४,१४७ से १६०, १६२,१६७,१७१. रा० ६६५,६६६. जी० १।१४,४२,४९,६०; २।१४१; રાશ્રબાય,શ્રદાય,શ્દ્ર૦,૬રશ,૧૦૪૨ ठिइक्सय [स्थितिक्षय] ओ० १४१ रा० ७९१ ठिइय [स्थितिक ] ओ० ७०. जी० १।३३ ठिइबडिया [ स्थितिपतिता ] मो० १४४ ठिईय [स्थितिक] जी० ३,७२१ ठिच्चा [स्थित्वा] रा० ७३६ ठित [स्थित] जी० ३।३०३,५४४ ठिति [स्थिति] रा० ७९८, ५१४. जी० ११६४, نها، مح، من, مح، وتر، ٢ ه ع، **٢ ٢ ٢**. ٩ ٢ ٢ . ٩ ٢ ٢ ११६,१२०,१२३ से १२४,१२८,१३३,१३६ से १३८; २।२० से २४,२६ से ३०,३२ से ३६,३६,४६,७६ से ८१,८४,१०७ से १०६, १११ से ११४,११६,११८,१४०; ३।१२०, १५६,१६२,१६४,१५६,१६२,२१५,२३५, २४३,२४७,२४०,२४६,२४८,४६४,४६४, £28,8020,8082,8088,8082,8080, 80x5,80x0,80x2,80x3,80xx,8235, **११३१**;४1३,४,६; ४।४,७,२१,२८; ६।२,४, ७; ७१२,५; ५१२; ६१२ ठितिपद [स्थितिपद] जी० ३।१९२ ठितिबडिया | स्थितिपतिता | रा० ५०२,५०३ Batlu [स्थितिक] रा० १न्६. जी० ३।३५०, ३४६,६३७,६४६,७००,७२४,७२७,७३८, 640,647,662,505,586,576,582, <%X,5%5,55%2,67% ठिय [स्थित] ओ० ४०. रा० १७,१८,१३०,१३३, ৬০২. জী০ ২।২০০ ठियलेस [स्थितलेश्य] ओ० ५०

# (ड)

228

इंड [दण्ड] रा० ७५१ डज्झंत [दह्यमान] जी० ३।४४७ डमर [डमर] ओ० १४. रा० ६७१. জীত হাহ ২৬ इमरकर [डमरकर] ओ० ६४ हिडिम [डिण्डिम] रा० ७७. जी० ३। १८न र्विब [डिम्ब] ओ० १४. रा० ६७१. जी०३।६२७ (ढ) ढंक दि० ढङ्खे जी० १।११४ हिकुण [दे०] जी० ३।६२४ (ण) ण [न] ओ० ४७. रा० ६. जी० १। दर णउत [नयुत] जी० ३।८४१ णवउता [नवति] जी० ३।१००३ णउति |नवति ] जी० ३:१००४ णउय (नवति) जी० ३।२५७ णउल [नकुल] जी० १।११२ णउली | नकुली | जी० २। १ णं | दे० ] ओ० १. रा० २. जी० १।१० णंगुलिय [लाङ्गुलिक] जी० ३।२१६ णंगूलियदीव [लाङ्गूलिकद्वीप] जी० ३।२२४ णंगोलिय [लाङ्गूलिक] जी० ३।२२० णंगोलियदीव (लाङ्गूलिकदीप) जी० ३।२२० गंदगवण | नन्दनवन ] रा० २७९. जी० ३१४४४ **णंदा** [नन्दक<sup>१</sup>] ओ० ६व णंदा ( नन्दा ) रा० २३४,२८८,३१३,३७६,४३५, ४९६,४४६,६१६. जी० ३।३९४. ३९६,४१२, <u>,857,832,888,800,802,62,787,755</u> \*\*\*\*\*\* इन्द,इनन,६०१,६१०,६१४ से ६१६,६१६ णंविधोस | नन्दिधोष ] ओ० ६४. रा० १३४.

 नन्दति---समृद्धौ भवतीति नन्दस्वस्यामन्त्र-णनिदम्, इह च दीर्घरवं प्राकृतत्वात् (वृ) ।

जी० ३।२५४, ३०४ णंदिजणण [नन्दिजनन] रा० ७५० णंदियावत्त [नन्द्यावर्त ] ओ० ४१,६४. रा० २१, ४९. जी० ३।२८६, ५१४ णंबिरुक्स [नन्दिरूक्ष] ओ० १,१०. जी० २।५०२ गंदिवद्धणा | नन्दिवर्धना | जी० ३।९१४ णं विसेणा [नन्दिषेणा] जी० ३१६१० णंदिस्सर | नन्दिस्वर | रा० १३४. जी० ३।३०४ णंबिस्सर (नन्दीश्वर) जी० ३। १४८, १४६ णंदिस्सरवर | नन्दीश्वरवर | जी० ३।८८० से मन२,६**१**न,६२४ णंदिस्सरोद | नन्दीश्वरोद ] जी० ३१६२४,६२७ णंदी [नन्दी] जीव ३१७७४ णंबीमुह [नन्दीमुख] ओ० ६ णंदुत्तरा (नन्दोतरा) जी० ३। ११४, ६१६ णक्ख | नख | ओ० १६. जी० ४१५,५९६ णक्खल (नक्षत्र | ओ० ४०,१४४,१६२. रा० ८०४. जी० ३७७४,८०९,८२०,८३०, E38, E30,E88,E82,E82,E84,630,8000, १००७,१०२०,१०२१,१०३७,१०३८ णक्खत्तविमाण [नक्षत्रविमान] जी० २।४३, ३।१०१३,१०१८,१०३३ गल (नख) जी० २। ११ ७ णगर (नगर) ओ० ४६. जी० ३।६०६ **णगरगुत्तिय** [ नगरगुष्तिक ] रा० ७५४,७५६, 622,628 णगरमाण [नगरमान] रा० ८०६ णगररोग [नगररोग] जी० ३।६२८ णगरी [नगरी] औ० २०,४३. रा० ६७१,६=६, £87,600,907,00£,005,087,08 1920 णग्गभाव (नग्नभाव) रा० ८१६ णग्गोह [न्यग्रंध] जी० १:७२ णग्गोहपरिमंडल [न्यप्रोधवरिमण्डल ] जी० १।११६

#### णच्चत-**णव**

षच्चंत [नृत्यत्] ओ० ६४ णउचण [नर्तन] ओ० ४१ णट्ट [नाट्य] ओ० १४६,१४८,१४९. जी० ३।६३१,१०२५ णट्टग [नाट्यक] ओ० १,२ णट्टगपेच्छा [नाट्यकप्रेक्षा] ओ० १०२,१२५ णट्टपेच्छा (नाट्यप्रेक्षा) जी० ३।६१६ णट्टमाल [नृत्तमाल] जी० ३।४८२ णट्रविधि [नाटचविधि] जी० २।४४७ णटुविहि [नाटचविधि] रा० ७३,५१ से ९५,१०० से १११,११३,११६,२८१. जी० ३।४४७ णट्टसज्ज [नाटचसज्ज] रा० ७६,१७३ षट्टसाला [नाटचशाला] रा० ७८१,७८३,७८६, ৩৯৩ णट्टाणिय [नाटचानीक] रा० ४७,४६ बद्ध [नष्ट] रा० ६,१२. जी० ३:४४७ णइपेच्छा [नटप्रेक्षा] जी० ३।६१६ णस्य [नप्तुक] रा० ७४० से ७४३ णत्यिभाव [नास्तिभाव] ओ० ७१ णदिमह [नदीमह] जी० २१६१५ णपुंसग (नपुंसक) जी० १११२८; २११; ३।१४८, **૧૪૬,૧**૬૪ णपुंसगवेय [नपुंसकवेद] जी० ११२५,१०१ णयुंसगवेयग [नपुंसकवेदक] जी० १।८६ √णम [नम्] — णमेइ. जी० ३।४१७ √णमंस [नमस्य्]----णमंसइ. ओ० २१---णमंसंति. ओ० ४७. रा० ६८७. जी० ३।४१७ --- णमंसामो. जो० ५२. रा० १० णमंसण [नमस्यन] ओ० ५२ णमंतमाण [नमस्यत्] ओ० ४७,५२,६६,८३. TTo &0,850,882,088 णमंसितए [नमस्थितुम] ओ० १३६ णमंसित्ता [नमस्यित्वा] ओ० २१. रा० द জী৹ ২।४২৬

णमिय [नमित] जी० ३।३८७,४९७ णमेत्ता [नमयित्वा] जी० ३।४४७ णमो [नमस्] ओ० २१. रा० ६१७. জী০ ২।४২৬ णय [नत] रा० २४५,६६४. जी० ३।४०७,१६२ णयण [नयन] ओ० १९,२१,४७,१४. रा० ८. ৩१४. জী০ ২।২৫৬,২৫৬ णयणकीयरासि [नयनकीकाराशि) ओ० १३ णयणुप्पाडियग [उत्पाटितकनयन] ओ० ६० णयर [नगर] ओ० २८,२९,६८,८९ से ६३,९४, ६६,११५,११८,११६,१४५,१५८ से १६१, १६३,१६न ण यरगुत्तिय [नगरगुप्तिक] ओ० ६०,६१ णयरी [नगरी] ओ० २,१४,२० से २२,५२,५५, ६० से ६२,६७,६८,७०. रा० १०,१३,६८७ से ६८,७००,७०३,७४०,७४३ णर [नर] ओ० १३,४६. रा० १२६,१७३,६८१, ७४३. जी० ३।२८४,२८८,३११,३१८,३७२ णएक [नरक] जी० ३।७८ से ८१,८४ ण रकंठक [नरकण्ठक] जी० ३।३५५।३ णरग [नरक] ओ० ७४।१,३. जी० ३।१२,७७, ५ से ५७,१२७ णरपवर [नरप्रवर] ओ० १४ णरय [नरक] ओ० ७४. जी० ३।७७,५४,११७ से ११६ णरवद्द [नरपति] ओ० १,२३,६३,६५ णरवसभ [नरवृषभ] ओ० ६५ णरसीह [नरसिंह] ओ० ६५ णरिंद [नरेन्द्र] ओ० ६४ णलागणि [नलागिन] जी० ३।११द णलिण [नलिन] रा० २३,१९७,२७९,२५८. जी० ३।११८,११९,२५९,२५६,२६१,८४१ **णलिणी** [नलिनी] ओ० १. रा० ७७७,७७८, ৬৭৯ णव [नवन्] ओ० १४३. रा० ५०१. जी० १।१०

ई 💐 ६

णव [नव] ओ० १,४,८,७१. रा० ६१. জী০ ३,२७४,४९७ णवंग (नवाङ्ग) रा० ५०६,५१० णवणवमिया [नवनवकिका] ओ० २४ णवजीइयागुम्म (नवनीतिकागुल्म) जीव २१५८० णवणीत (नवनीत | जी० २५४,२१७ णवणीय | नवनीत | ओ० १३,६२,६३. रा० ३१, ३७,१८४,२४४. जी० ३,४०७ णवनीय [नवनीत | जी० २।३११ णवतय [नवत्वक्] रा० ३७ णवमिया [नवमिका] जी० ३। ६२१ णवय निवक रा० ७५९,७६१ णवरं [दे०] जी० ११४६ णवरि [दे०] जी० शहद णवविध [नवविध] जी० मा१,५; धार२१,२३२ णह [नख] ओ० ६२. रा० ५,१०,१२,१४,१५, ४६,७२,७४,११८,१४०,२७९,६४४,६८१, ६८३,६८६,७०७,७०८,७१३,७१४,७२३. জী০ ২।২৪৬ णाइ [ज्ञाति] ओ० १४०. रा० ७४१,७७४,८०२, 588 णाइय [नादित] ओ० ६,६७. रा० १३,५६,५८. जीव ३१२७४,२८६,४४७,४४७ णाऊण | ज्ञात्वा | ओ० २३ णाग (नाग) ओ० ६६,१२०,१६२. रा० ६९८, ७५२,७७१,७८९. जी० ३।३३४,५६६,७३३, <=४,६४४,६४**४**,६४७ णागमगह [नागग्रह] जी० ३।६२८ णागवंत [नागदन्त] रा० १३२,२४०. जी० ३।३०२,३१७,४०२ णागवंतग [नागदन्तक] जी० ३।३०२,३१७,३२६, ३९७ णागदंतय [नागदन्तक] रा० १३२,१५३,२३५, २३६. जी० ३।३०२,३२६,३४५ णागदीय (नागदीप) जी० ३१९४४,९४५

णागहार [नागदार] जी० ३।ययश् णागधर [नागधर] ओ० ६६ णागपइ [नागपति] ओ० ४८ णागफड | नागस्फटा ] ओ० ४८ णागमह | नागमह ] जो० ३।६१५ णागराय (नागराज] जी० ३।७३४ से ७३६, ७४०,७४२,७४४,७४८ से ७४०,७८१,७८२ णागरुष्ख [नागरूक्ष] जीव १।७१ गागलया [नागलता] ओ० ११. जो० ३।४८४ णागलयामंडयग [नागलतामण्डपक] रा० १८४. जी० २।२१६ णागलयामंडवय [नागलतामण्डपक] रा० १८५ णाडग [नाटक] रा० ६८४ णाण [ज्ञान] ओ० ४६,५४,१५३,१६५,१६६, १==, १= 1, १ € x18 8. TIO RER, 5 = 5, 5, 5 = 5, 5 = 5, 5 = 5, 5 = 5, 5 = 5, 5 = 5, 5 = 5, 5 = 5, 5 = ७३६,७४६,७७१,८१४. जीव ३।१५२,४५७, 8993 णाणस [नानात्व] जी० ११११६;३११६१,१६५, २१८ णाणविणय [ज्ञानविनय] ओ० ४० णाणसंषण्ण [ज्ञानसम्पन्न] ओ० २५ णाणा [नाना] ओ० ४०,६३,७०. रा० १९,२०, **३२,३७,४०,१३०,१३३,१३४,१**३६,**१३**५, १७४,१९०,२४४,८०४ जी० ३।७८,२६४, २६४.२८६ से २८८,३००,३०२,३०४, २०६.२११,३२२,३७२,४३४,६४४,१०७१, 8088 णाणावरणिक्त | जानावरणीय | ओ० ४४ णाणाविह [नानाविध] ओ० ६ से ८,१०,४९,४५, १०७,१३०, रा० २४,३२,१२८,१३३,१५१, १४२,१७१,२=१. जी० ३।२७४,२७७,३०३, ३२४,३२४,३४३,४४७ णाणि [जानित्] जीव शन्व, ६६,११६,१३३, 834; 31808,885,8800,880=; 6130, ३१,३३,३४

णातिय [नादित] रा० २९१

णाभि | नाभि | ओ० १९. जी० ३।४१४,४९६, XE 19 णाम [नामन्] ओ० १४,१४,२०,४४,४२,५३,८२, १४४,१७१,१९२,१९४1१६. रा० ११,१७, १८,७६,८१,८३ से ६४,१०० से १११,११३, २८१,६६६ से ६७२,६७४,६८७,७१३,७४१, न०२. जी० १११;३।३,४,१२८,२१७,२१६ से २२३,२२४,२२७,२६०,३००,३४०,३४१, ४०१,४६६,४६८,४६८,४७७,४८२,४८६ से xez,xex, & 37 & 34, & 26, 000, 008, 008,005,080,088,0350,080,080,080, ७४४,७४०,७४४,७६१,७६२,७६४,७६६, ७६८ से ७७०,७७२,७७४ से ७७८,७९४, 666,=00,=80,=88,=28,=28,=28,=28, न४८,८४६,८४६,८६२,८६४,८६८,७७१, म७४,म७७,मम०,६२४,६२७ से ६३२ हरेद से ६४४,६४३,६४४,६७२,१०३६, ११२० णामंक (नामाङ्क) ओ० ४० णामधेज्ज (नामधेय) ओ० १९,२१,५१,५४, १४४,१९३. जी० ३।३४०,६९९,७०२,७६०, द ३६ णामधेय | नामधेय ] ओ० ११७. रा० २९२. জী০ ২।४২৩ गामय (नामक) रा० ६६७. जीव २।७७४ णाय |ज्ञात ] ओ० २. रा० ६८८ णाय | ज्ञात, नाम | ओ० २३ णायस्व (ज्ञातच्य ) रा० १७२ णाराय [नाराच] जी० ३।११० णारी (नारी) जी० ३।२५४ णालबद्ध | नालबद्ध | जी० ३। १७४ णालिएरिवण [नालिकेरीयन] जी० ३।४९१ णालियाखेडु | नालिकाखेल | औ० १४६. रा० ८०६ णासा [नासा | ओ० १९,४७. जी० ३.५९६,५९७ णासिया [नासिका] जी० ३१४१५

णिउण [निपुण] ओ० १५,४९,६३. रा० १२,१७, १८,७४८,७५९,८०६,८१०. जीव ३।११९, ४८८,४९२,४९७ णिओग [निगोद] जी० ४।३३ णिओत [निगोद] जी० १। १९ णिओब [निगोद] जी० ४।२८ से ३०,३७,३८,४१ से ४३,४०,४२,४६ णिओवजीव [निगोदजीव] जी० ५।३७,५३,५८ से Ę٥ णिकरिय [निकरित] ओ० १९ णिकाय ∫लिकाय] ओ० ४६ णिकुरंब [निकुरम्ब] ओ० ४. रा० १७०. जी० ३। ५९६ णिवनांकड (निध्कङ्कट) जीव ३।२६१,२३६ णिक्कंलिय | निष्काङ्क्षित | ओ० १२०,१६२. रा० ६६८,७४२,७८६ णि विखत्तउविखत्तचरय | निक्षिप्त उत्क्षिप्तचरक ] জী৹ ३४ णि विखत्तचरय | निक्षिप्तचरक | ओ० ३४ णित्रखुड [निष्कुट] रा० १४ णिगर [निकर] रा० १३०. जी० ३१३००,४९०, 280 णिसरण [निगरण] जी० ३।५८६ णिगरित | निकरित | जी० ३।५९७ णिगलमालिया [निगडमालिका] जी० २१४९३ √णिगिण्ह | नि-्-ग्रह् | --णिथिण्हइ रा० ६९३ णिगोदजीव | निगोदजीव | जी० ४।४६ णिर्माथ [निर्प्रन्थ] औ० २४,३३,७२,७६. रा० ६६८,७४८ से ७४०,७४२,७८६ णिमांथी [नग्रंग्यी] ओ० ७६ ् णिगगच्छ [ निर्-]-गम् ]-- णिगगच्छइ. रा० ६९. जी० ३।४४३-पिम्मच्छंति. ओ० ४२. যাত হলও, জীত হাওঁপথু णिग्गच्छित्ता [निर्गत्य] ओ० ४२. रा० ६८७. গ্ৰীত ২।৪৪২ गिम्मय [निर्गत] ओ० ६३. रा० ७५४,७५५

#### णिग्गह-णिम्राणमयग

**६**३८

णिग्गह [निग्रह] ओ० २५ णिग्धात [निर्धात] जी० ३।६२६ णिग्धाय [निर्घात] जी० १।७८ णिग्धायण [निर्वातन] ओल २६ णिग्घोस [निर्धोष] ओ० ६७. रा० १३. जी० ३।४४६,४१७ णिद्यस [निकष] ओ० ५२ णिचय [निचय] ओ० २३. जी० ३।२८४ णिचिय [निचित] रा० १२,७४८,७४६. জী০ ३:২৪६ णिचच [नित्व] ओ० ४,८,१०,११. रा० १४४, २००. जीव ३१४६,११६,२६८,२७२,२७४, ३४०,६३७,७०२,४२१,७३८,७६२,७६३, द०८,८१६,४२६,४३३,८३६,५३५**११७,**८४०, न्र४,६२३ णिच्यमंडिया [ लित्यमण्डिता ] जी० ३।६९९ णिच्चालोय [नित्यालोक] जी० ३।१०७७ णिच्चुज्जोय (नित्योद्द्योत) जी० ३।१०७७ णिब्छिड्ड [निश्छिद्र] रा० ७४४,७७२ णिच्छिण्ण [निच्छिन्न] ओ० १९४।२१ णिक्जरण [निर्जरण] ओ० ४६ णिज्जरा [निर्जरा] ओ० ७१,१६९,१७० √णिज्जा [निर्⊣या] --- णिज्जंतु. ओ० ६२. णिज्जाहिस्सामि. खो० ५५ णिज्जाणमगा [निर्माणमार्ग] ओ० ७२. रा० ४६ णिज्जामय [नियमिक] ओ० ४६ जिज्जास [निर्यास] जी० ३।४८६ णिज्जूस (निर्युक्त) जो० ४८,४९,६४. रा० १७३, ६५१ णिज्जह [निर्युह] जीव ३१९९४ णिज्जोय | नियाग | रा० ५४,६९,७० णिटतुर (निष्ठुर) औ० ४० णिडाल [ललाट] ओ० १६. रा० १३३. जी० ३।५६०,११२२ णिडालपट्टिया [ललाटपट्टिका] रा० २४४. जी० ३।४१४

णिण्हग [निह्नव] ओ० १६० √णिद्दा [नि∔दा] —णिदाएज्ज. जी० ३।११८ णित [स्निग्ध] ओ० ४,१३,१९,४७. रा० १७०, ७०३. जी० ३।२२,२७३,४८६,४९६,४९७, १०९५ णिद्धंत [निध्मति] ओ० १९४७ णिद्धच्छाय (स्निग्धच्छाय ) ओ० ४. रा० १७०, હ৹ર, ગી∘ રારહર णिद्धोभास [स्निग्धावभास] ओ० ४. रा० १७०, ७०३ जी० ३१२७३ গিছি [নিঘি] তী০ ২। ১২৩ णिप्पंक [निष्पङ्क] ओ० १९४. जी० ३।२६१,२६६ णिडमय [निर्भय] ओ० ४६ णिब्भिज्जमाण [ निभिद्यमान ] जी० ३।२८३ णिभ |निभ] ओ० ६४. जी० ३,५१६ णिमग्ग | तिमग्न ] ओ० १६. जी० ३ ५१६ णिमिसिय | निमिषित ] जी० ३।११८ णिम्मच्छ [निर्मतस्य] जी० ३।१६५ णिम्मल [निर्मल] ओ० १९,४७,१८३,१८४,१९४. जी० ३।२६१,२६६,२६९,३०० णिम्मा निमा] रा० १६,१३० णिम्माय | निर्मात | ओ० ६३ णियद्वपब्वय [नियतिपर्वत] जी० ३।२१२ √णियंस | नि+वस् ] ---णियंसेइ. जी० ३।४५१ णियंसण ]निवधन | ओ० ४९ णियंसेत्ता (निवस्व) जी० ३।४५१ णियग [निजक] ओ० ७०,१४०. रा० १३,७४१, ८०२,८१**१** णियत्य दि०] रा० ६९,७० णियम [नियम] ओ० ३२. जी० १।५८,५९,७८, 22,22,233,232; 31208,2200 णियमसा [नियमसात्] ओ० १९५:१० णियय ] नियत ] रा० २००. जी० ३१४९,३१० णियया [नियता] जी० ३१६९९ णियसबद्धग [निगडबद्धग] ओ० ६० णियाणमयग [निदानमृतक] ओ ६०

णिरंतर [निरन्तर] ओ० १४. रा० ६७१ জী০ ২ ২২২,২১৬ णिरंतरित [निरन्तरित ] जी० ३।३०० णिरय [निरय] ओ० ४६. जी० ३।११९ णिरयावास (निरयावान) जी० ३।१२ णिरयह स | निरयंदिश | जीव ३।१०८० णिरवयव | निरवयव | जी० ३ २४० णिरवकंस (निरवक्तांक्ष ) अ/० ४६ णिरातंक | निरातङ्क | जी० ३। ५९८ णिरावरण [निरावरण] रा० ५१४ णिरुवहव | निरुपद्रव ] ओ० १ णिहवलेव | निरुपलेष | ओ० १९. जी० ३। ५९६ णिरुवहत [निरुपहत] जी० २।४९२ णिरुवहय [निरुपहुत] जी० ३।४९७ णिरोह [निगेध] ओ० ३७ णिल्लेव [निलेंग] जी० ३।१९४ √णिवाड [नि ने पात्] —णिवाडेत जी० २।४५७ णिवाय (निपात) ओ० १७० णिवाय [निवात] रा० १२३,७४४,७७२ णिवायगंभीर ( निवालगम्भीर ] २०० १२३,७११, ७७२ णिवृद्धि | निवृद्धि | जी० ३।५४१ √णिवेद | नि + वेरय् ] -- णिवेदेइ. ओ० १६ --णिवेदेति. ओ० १७--णियेदेमि. आ० २० णिध्वण (निर्वण) ओ० १९. जी० ३।५९७ णिस्वत्त | निर्वत्त | ओ० १४४. रा० २०२ √ जिन्दत्त | निर्-|-वर्त्तय् |--- णिव्वत्तेइ. रा० ७७२ णिव्वत्तिय (निर्वतित) जी० ३।४९२ णिव्वाघातिम | निर्व्याचातिन्. निर्व्याघातिम ] जी० ३।१०२२ णिख्वाघाय [निर्व्याधात] ओ० १५३,१६५,१६६. रा० ८०४,८१४. जी० १:८२ णिव्याणमगा | निर्वाणमार्ग | अ० ७२. रा० ५१४ णिव्वादित (निर्वाटिन) जीव समजद णिव्यितिगिच्छ [निविचिकित्म] रा० ६६८,

७४२,७८६ णिव्वृद्धकर [निर्वृतिकर] रा० २८८. जी० ३।३०२, ₹£5 णिय्धुतिकर [निर्वृतिकर | रा० ४०,१३२. जी० ३।२८३, २८४.३८७ णिव्वय [ निर्वृत | ओ० १ णिव्वेयणी [निर्वेदनी] ओ० ४५ णिसंत [निशान्त] रा० १४ णिसग्गरुद्ध [निसर्गरुचि ] ओ० ४३ णिसह | निषध ] रा० २७६. जी० ३।७९४ णिसण्ण [निषण्ण] ओ० ६३. जी० ३।३५४ णिसम्म [निशम्य] ओ० २१. ग० १६. জী৹ ই,४४३ णिसह | निषध | जी० ३।४४४ √णिसिर [नि |-सूज्]---णिसिरति. जी० ३।४४५ णिसीइता | निषदा | अं।० १४ √णिसीव | नि-+धद |---निसंदति. जी० ३।३५८ णिसीविया [निपीधिका, नैवेधिकी] जी० ३।३०३. 304,306,556 √णिसीय [नि+-षद्]---णिसीएज्ज. ओ• १८० -- णिसीयइ. ओ० १४--- णिसीयंति. रा० ४८. जी० ३।२१७ णिसंहिया | निवीधिका, नैवेधिकी | रा० १३२ से १३४,१३६,१३७. जी० ३१३०१,३०२, ३०४,३०७,३१४,३४५ णिस्संफिय [नि:शङ्कित] औ० १२०,१६२. 710 285,942,958 णिस्सा | निश्रा ] जीव १।४८, ७३,७८,८१ णिस्सास [नि:श्वात] ओ० १४४,१६४,१६६ णिस्सिय [निःमुत्त] जी० १ ७५ णिस्तेयस [ति:श्रेयस्] ग० २७४. जी० ३१४४१, **४**४२ णिहत [ नि : त | जी॰ ३।४४७ णिहय | निहत | रा० ६,१२ णिहि [निधि] जी० ३।७७४,०४१

# ६४०

णिहुय [निभृत] ओ० ४६ √णोण [णी] —णीणेइ. ओ० ५९ णीणेत्ता [नीत्वा ] अरे० ५९ णोरय [नीरजस्] ओ० १९४. रा० २१,२३,३२, ३४,३६,१२४,१४४,१४७. जी०३।२६१,२६६, 379 णोल [नील] ओ० ४७. रा० २४,२६,१३२,१४३, ६६४. जी० ३।३२६,४६२,४६४,५६६ णोसकणवीर | नीलकणवीर | रा० २६. जी० ३।२७६ णीलग [नीलक] जी० ३।२७९ णोलपाणि | नीलपाणि | रा० ६६४. जी० ३,४६२ णोलबंधुजीव (नीलवन्धुजीव) रा० २६. जी० રેારઙ€ गीललेस्स [नीललेश्य] जी० ६।१८७ णीलनेस्सा | नीललश्या | जी० ३। ९९ णोलवंत [नीलवत्] रा० २७१. जी० ३ ५७७, ६६० णीलवंतद्दह [नीलवद्द्रह] जी० ३।६५१,६६६ णीलासोग [नीलाशोक] रा० २६ णोलासोय | नीलाशांक ] जीव ३।२७६ णीली [नीली] रा० २६. जी० ३।२७९ णीलोगुलिया [नीलीगुलिका] रा० २६. जी० ३।२७६ णीलोभेद |नीलीभेद ] रा० २६. जी० ३।२७९ णीलुप्पल [नीलोत्पल] ओ० १३. रा० २६. जी० 3.208 णीव [नीप] ओ० ६,१०. जी० ३ ५८३ णोसास [नि:ग्वास] ओ० ११७ जी० ३,४५१ णोहारि [निर्हारिन्] ओ० ७१. रा० ६१ णोहारिम | निहारिन् ] ओ० ७,८,१०. जी० ३।२७६ णोह [स्निटु] जी० ११७३ णूम [नूनम्] ओ० १६९. रा० ७०३. जी० 31853

णेउर [नूपुर] जी० ३।५९३ णेग [नैक] रा० ७२७ णेमि [नेमि] ओ० ६४. रा० १७३,६८१. जी० ३।२८४ णेतरव [नेतव्य] जी० ३।२१८,६६६,८८८,१०४८ जेवच्य [नेतव्य] जी० १।४०; ३।२९८,६६७,७६१ णेयाउय [नैर्यात्रिक] ओ० ७२ णेरइय [नैरयिक] ओ₀ ४४,७१,७३,≍७. जी० ११६०,१२५; २१११५,१२६,१३४,१३५,१३५ १४४,१४४,१४८; ३१८६ से ६२,६४,६७, १०४,११६,११८ से १२१,११३१ से ११३३, ११३६,११३५; ६१२,५,१०; ७१७,५,१३,१४, २० से २३; हा१४६,१४८,२०६,२१०, २१६,२२१,२२४,२२६,२२६,२३१ से २३४, २३६,२४१,२४२,२४७,२४० से २४२, २१४,२११,२६७ से २६९,२७४,२७७,२७८, रद३,२८६ से २८८,२९३ णरेइयत्त [नैरयिकत्व] ओ० ७३. रा० ७५०, ৬ খ থ : জীত ২ : ११৬,११২২ णेवच्छ [नेपथ्य] ओ० ४९ णेवत्थ [नेपथ्य] ओ० ७०. रा० ५३,५४,८०४ णेवतिष [नेपथ्य] ओ० ५७ णेव्युतिकर [निर्वृतिकर] जी० ३।२६५ णेह [स्नेह] जी० ३। १८०१ णो [नो] औ० ३३. रा० २५. जी० १।२५ णोअपज्जत्तग | नोअपयांष्त्रक ] जी० ९१९३ णोअपज्जत्तय [नोअपर्याप्तक] जी० हाह१ णोअपरित्त [गोअपरीत] जी० हाद२ णोअभवसिद्धिय [ांगअभवसिद्धिक] जी० ६।११० से ११२ णोअसंजात [नोअसंयत] जी० हा१४५ णोअसंज्ञय | नोअसंयत | जी० ६।१४१,१४७ णोअसण्जि [नोअसं.ज्ञेन्] जीव हा१०७ णोपज्जत्तम [नोपर्याण्तक] जी० हाह३ गोपरित्त [नोनरीत] जी० १ = २, = ६, = ७ णोभवसिद्धिय [नोभवसिद्धिक] जी० हा११० से

११२ णोमालिया [नवमालिका] रा०३०. जी० ३।२५३ गोमालियागुम्म [नवमालिकागुल्म] जी० ३।५५० णोमालियामंडवग (नवमालिकामण्डपक ) रा० १=४. जी० ३,२९६ णोमालियामंडवय [नदमालिकानण्डपक] रा० १९४ णोसंजत [नोसंयत] जो० ६।१४५ णोसंजतासंजत (नोसंयतासंयत) जी० ६।१४४ णोसंजय [नोसंयत] जी० ११४१,१४७ णोसंजयासंजय | नोसंयतासंयत | जी० ९।१४१, १४७ णोसण्णि [नोसंज्ञिन्] जी० ६।१०७ ण्हाइत्ता [स्पनयित्वा] रा० २९१ ण्हाण [स्नान] ओ० १६१,१६३ ण्हाणपीढ |स्नानपीठ] ओ० ६३ ण्हाणमंडव | स्नानमण्डप | ओ० ६३ ण्हाणमल्लिया [स्नानमल्लिका] रा० ३०. জী০ ২।২০২ ण्हाय [स्नात] जो० २०,४२,४३,७०. रा० ६८३, इन्४,इन्७ से इन्ह,६ह२,७००,७१०, ७१६,७२६,७४१,७४३,७६४,७७४,७९४, **२०२,२०५** √ण्हाय [स्नपय]--ण्हाएइ. रा० २६१ ण्हारु [स्नायु] जीव शहप्र, १०५; शहर, 8080 √ण्हाव [स्नपय] - ण्हावेति. जी० ३१४५७ ण्हावेत्ता [स्तपश्चित्वा] जी० ३१४४७

त स [तत्] अ० १. रा० १. जो० १।१ लइय [तृतीय] ओ० १४४,१७४,१७६,१८२ तउआगर [त्रपुकाकर] रा० ७७४ तउय [त्रपुक] रा० ७१४,७१६,७७४ तउयपाय [त्रपुकाज] ओ० १०४,१२६ तउयबंधण [त्रपुकबन्धन] ओ० १०६,१२६ तउयभंड [त्रपुकभाण्ड] रा० ७७४ तडयभारम [त्रयुकभारक] रा० ७६०,७६१, ৬৬४ तउयभारय [त्रपुकभारक] र ० ७७४ सउयागर [त्रपुकाकर] जी० ३।११८ तए [ततग] ओ० १२. रा० १. जी० ३१४४० तओ [ततम्] ग० ११,५९,७०,००२. জী০ ३। १८ २ √ तंडव (साण्डवय् ]- -तंडवेति. ३७० २५१. জীত হাৰ্বেও **तंत** [तान्त] रा० ७६१ तंती (तन्त्री) ओ० ६८. रा० ७,७६,१७३. जी० ३।२८४,३४०,४६३,५४२,८४४, १०२५ तंतुमय [तन्तुमय | जी० ३। १९१ तंबुल [तण्डुल] रा० १५०,२९१. जी० ३।३२३, ४१७,१९२ तंदुलछिण्णग [तण्डुलछिन्नक] ओ० १० संब [ताम्र] ओ० १९,४७. जी० ३।५,१६, 289 तंबच्छि [ताम्राक्षि] जी० ३।८६० तंबपाय [ताम्रपात्र] ओ० १०५,१२व तंबवंघण [ताम्रवन्धन] ओ० १०६,१२६ तंबागर [ताम्राकर] रा० ७७४. जो० ३।११८ संबिय [ताम्रिक] ओ० १०८,१३१ **तंबोलिमंडचग** [ताम्वूलीमण्डपक] रा० १८४ **संबोलिमंडवय** | ताम्बूलीमण्डपक | रा० १८५ तंबोलीमंडवग [ताम्यूलीमण्डपक] जीव ३१२१६ तंस [त्र्यस ] जी० १1५;३१२२,७८,७६,४६४, 8008,800% तकारवग्ग (तकारवर्ग) रा० ६८ तक्क (तर्क) रा० ५१४ तक्कर [तस्कर] ओ० १ तगर [तगर] रा० ३०,१६१,२५६,२७६. जी० ३,२८३,३३४,४१९ तच्च [तृतीय] रा० १२,६४,७०२,७०३

तच्चसत्तराइंदिया [तृतीयसप्तरात्रिदिवा] জা৹ ২४ तच्चा [तृतीया] जी० १।१२५;२।१४८,१४६; ३।२,४,६=,७४,६१,१२४,११११ तज्जण [तर्जन | अ.० १६१,१६३ तज्जणा [तर्जना] ओ० १४४,१६४,१६६. **रা**০ দ**१**६ तज्जायसंसट्टचरय [तज्जातसंसृप्टचरक] ओ० ३४ तज्जोणिय | तद्योनिक | जी० ३।७२१,९१४ तड [तट] जी० ३।४४४ तडवडा (दे०) रा० २८. जी० ३।२८३ तण [तृष] रा० ६,१२,१७१,१७३,७६७. ी० ११६६; ३१२७७ से २५४,२६८,३६०, ५७८,६२२,६१० तणवणस्सइकाइय [तृणवनस्पतिकायिक] হাত ওওং तज् [तनू] ओ० १६. जी० ३। ४६६ से ४६८ तगुग्र (तनुक) रा० १२७. जी० ३।२६१,३५२, \*\*\*\* द१४,६६२ तणुयतर [तनुकतर] ओ० १९२ तण्यरी |तनुतरी | ओ० १९३ तणुवात [तनुवात] जी० ३।१३,१९,२१,२६, 30,20,62,60 तणू वाय [तनुवात] जी० १।५१; ३।३०,३५,४४, পও तण् [तनू] ओ० १९३ तण्हा [तृष्णा] ओ० ११७,१६४।१८. रा० ७२८, जी० ३।११८,११६ तत [तत] रा० ११४,२८१. जो० ३।४४७,४८८ ततिय [तृतीय] रा० ८०२ ततिया [तृतीया] जी० ३।५५ तते [ततस्] जी० ३।४१४ ततो [ततस्] ओ० १४१. जी० ३.१०२३ तत्त [तप्त ] ओ० १९,४७,४०. जी० ३।११८, 280,285

६४२

तत्ततव [तग्ततपस्] ओ० ⊏२ तत्तिय [तावत्] रा० १३०. जी० ३।३०० तत्तो [ततस्] जी० ३।१२७ तत्थ [तत्र] ओ० १४. रा० ५. जी० १।११ तत्थ [त्रस्त] जी० ३।११६ तत्यगत [तत्रगत ] रा० ५ तत्थगय [तत्रगत] ओ० २१,५४. रा० ७१४, ७६६ तत्वावरणिज्ज | तदावरणीय ] ओ० ११९,१५६ तदुभय [तदुभय] ओ० १५५,१६०. जीव ३।१०६०,१०६१ तदुभयारिह [तदुभयाहं] ओ० ३१ तद्देवसिय |तद्दैवशिक | ओ० १६,१७ तप्पढमया [तत्प्रथमता] ओ० ६४. रा० ६९, २८४. जी० ३१४४० तप्पभिइ [तत्प्रभृति | रा० ७९०,७९१ तमतमप्पभा [तमस्तमःप्रभा] जी० ३।४१ तमतमा [तमस्तमा] जी० ३।४ तमप्पभा [तमःप्रभा] जी॰ ३१४१,४३,४४ तमा [तमा] जीव ३।७८,५१,१०२,११४ तमाल [तमाल] ओ० ९,१०. जी० ३।३८८, ४८३ तम्हा [तस्मात्] रा० ७५० तय [त्वच्] जी० ३।३११ तया [तदा] ओ० २१. रा० २१२ तया [त्वच्] ओ० ६४. रा० ७६१. जी० १।७१ तयामंत ]त्वग्वत् [ ओ० ४,८. जी० ३।२७४ तयामुह (त्वक्षुख] ओ० ६३ तयाहार [त्वगहार] ओ० ६४ √तर [त] – तरति. ओ० ४६ तरंग [तरङ्ग] ओ० १९,४६. रा० २४,०१. जी० ३,२७७,४६६,४६७ तरमिल्लहायण [तरोमल्लिहायन] ओ० ६४ तरुण [वरुण] ओ० ४,८,१९,६४. रा० १२,७४८ से ७६१. जीव ३ ११८,११९,२७४,४९६,४१७ तरुणी [तरणी] रा० ७१०,७७४,५०४

#### तरुणीपडिकम्म-तारारूव

तरुणोपविकम्म [तरुणीप्रतिवर्मन्] ओ० १४६. रा० ५०६ तरुपक्खंदोलग [तरुपक्षान्दोलक] ओ० १० तरुपडिधग [तरुपतिनक] ओ० ६० तल [तल] ओ० १३,१६,६३,६४,६८,१९४. रा० ७,१२ ४०,४२,४६,७६,७७,१३७,१७३, **१७४**,२३**१**,२४८,७४८,७**४**८,७७४. जी० ३।२८४,२८६,३०७,३४०,३६३,४६३, रदद'रहह'ह०९'टप्र'ट्रर'ई०५४ तलभंगय (तलभङ्गक) ओ० ४७. रा० ३।५१३ तल्लवर [दे०] ओ० १८,५२,६३. रा० ६८७, **६५५,७४,७४४,७४६,७६२**,७६४. জী০ ২।২০১ तलाग (तडाग) ओ० १ सलागमह [तडागमह] जी० २।६१४ तलाय (तडाग) ओ० १९ तलिग [तलिन] ओ० १९. जी० ३।५९६,५९७ तव [तपस्] ओ० २१ से २४,२६,३०,३८,४५, ४६,५२,५२,६२,११७. रा० ५,६,६५६,६५७, ६८६,७११,७१३,८१४,८१७. जी० ३१६६६ √तव [तप्]---तवंति. रा० २८१. जी० ३।४४७ ---तविसु. जी० ३१७०३---तविस्सति. जी० ३।७०३—तवेंति. जी० ३।८४५ तवणिज्ज [तपनीय] ओ० १९,४७,५०. रा० ४०, 230,237,230,208,262,255. जी० ३।२६४,२८६,३००,३०२,३०७,३१३, ३⊂७,३९७,४९०,४९६,६७२ तवणिज्जमय [तपनीयमय] रा० १३०,१४६, २४४,२५४,२७०. जी० ३।३००,३०४,३०८, ३९१,३२२,३३७,३९९,४०७,४१४,४३५, ६४३,६०४ तथणिज्जामय (तपनीयमय ) रा० ३७ तवस्सि | तपस्वन् ] ओ० २४ तवस्सिवेयावच्च [तपस्त्रिवैयावृत्य] ओ० ४१ तवारिह [तगोई] ओ० ३९

तवोकम्म [तपःकर्मन्] ओ० २४,११९,१२० तस [त्रस] ओ० ५७. जी० १।११,७४,५३,१३६, १३=,१४० से १४३; ४1१७: तसकाइय [त्रसकायिक] जी० ३।१८३,१६४, १६७; ४1१,४,६,१०,१६,१८ से २०; ६1१५२, १८४ तसकाय [त्रसकाय] जीव ३:१७४ तसिय [त्रासित] जी० ३।११६ तह [तथा] ओ० ६९. रा० १०. जी० १।१४ तहप्पमार [तथावकार] ओव ४०,१०५,१०६, १२५,१२६,१४१,१६१,१६३. जीव १:६५, ७१ से ७३,७८,८१,८४,८८,८६,१००,१०३, १११,११२,११४ से ११६,११८,१२२ तहा [तथा] ओ० १७७. रा० १०. जी० १ १४ तहारूव [तथारूप] ओ० ४२,१४१. रा० ६६७, ६८७,८१२ तहि [तत्र] ओ० ८१. रा० १७४. जीव ३।२६६ ताडना [ताडना] रा० ५१६ ताडिज्जंत [ताड्यमान] रा० ७७ ताण [त्राण] ओ० १९,२१,५४ तार [तार] रा० ७६ तारग तिरको जीव सम्बदा११ तारमा [ताराग्र] जी० ३।५३८:२,२६ तारय (तारक) ओ० १९,२१,४४. रा० =,२१२, জী০ ২।४१७ तारयन्ग [तारकाग्र] जी० ३।८३८।२६ तारा (तारा) ओ० ५०,६३,६८,१८२. रा० २४४,२९२. जी० ३।४१४,४४८, न्दन्११,२१,३०,१०२०,१०३७ तारागण [तारागण] जी० ३।७०३,७२२,८०९, द२०,द३०,द३४,द**३७**,द३६।३१,द४४, 8000 ताराणिड [ताराणिण्ड] जी० ३।५३५११ तारारूव [तारारूप] रा० २०,१२४. জী৹ ३,२५५,५४१,५४२,५४५,६६५,१००३ से १००६,१०२० से १०२२,१०३७,१०३५

तारावलिपविभत्ति [तारावलिप्रविभक्ति] रा० ५४ ताराविमाण [ताराविमान] जी० २:१८,४४; 318005'8088'8086'8038 ताल [ताल] अ१० ६,१०,६८. रा० ७,७६,७७, १७३. जी० १।७२; ३।२५४,३४०,३५५, ५६३,५८८८,८४२,८४५,१०२५ 🗸 ताल [ताडय्] -- तालेज्जा. रा० ७१५ सालण [ताडन] ओ० १६१,१६३ तालगा [तःडनः | ओ० १४४,१६४,१६६ तालायर [तालाचर] ओ० १ तालिज्जंत [ताड्यमान | रा० ७७ **तालियंत** [तालवृन्त] ओ० ६७ तालु [तालु] ओ० १९,४७. जी० ३।५९६,५९७ तालुव [तालुक] रा० २४४ जी० ३,४१५ ताव [तावत्] ओ० ७६. रा० ७४१. जी० २१८१ ताव [तापय्]-तावेइ. जी० ३।३२७ - तावेंति. रा० १४४ जी० ३।३२७ --- तावेति. रा० १४४ जीव ३ ७४१ ताबइय (तावत्) रा० १२६. जी० रे।२७३ तावं (तावत्) जीव २१८४१ तावक्लेस [तापक्षेत्र] जी० ३। = ३ = १४,१४, =४२, = & X तावतिय [तावत्] रा० २१०,२१२ जो ३१३००, ३५४,६४७, २२४ तावस [तापस] ओ० १४ ताविय [तापयित्वा] जी० ३:११८ ताहे [तदा | जी० ३.५४३ ति [ति] ओ० ७७. रा० ७. जी० १।१७ ति [इति] रा० ७०३ तिषखुत्तो [त्रिस] ओ० २१,४७,४२,४४,६९,७०,७८, 28,63,68,889,889,820,282,550,582, **६९५,७००,७१**६,७१८,७७८. जी० ३।४५७ तिग [त्रिक] ओ० १,५२

तिगिच्छि [तिगिच्छि] रा० २७६

तिगिच्छिदह [तिगिच्छिद्रह] जी० ३१४४५ तिगुण [त्रिगुण] जी० २।१५१; ३।१०१० से 8088 तिगुणिय [त्रिगुणित] जी० ३।५३५।२४ तिघरंतरिय [त्रिगृहान्तरिक] ओ० १५६ तिण [इदम्] २१० ७४१, जीव ३१२७८ तिणिस [तिनिश] ओ० ६४. रा० १७३,६८१ तिण्ण [तीर्ण] ओ० १९,२१,५४. रा० ८,२१२. জী৹ ३।४४,७ तित्त [तृग्त] ओ० १९४।१८,१९. जी० ३।१०९ तित्त [तिक्त] जी० १.४, ४०; ३।२२ तित्थ [तीर्थ] रा० १७४,२७६. जो० ३।२८६, ४४४ तित्यगर [तीथंकर] ओ० १९,२१,५२,५४. रा० =, २६२. जी० ३,४५७ तित्यगरसिद्ध [तीर्थकरसिउ] जी० १। = तित्थगराभिमुह [तीर्थकराभिमुख] ओ० २१,५४ तित्थयर [तीर्थकर] ओ० ६६,७०. रा० द तित्ययराभिमुह [तीर्थकराभिमुख] रा० ८,६८ तित्यसिद्ध [तीर्थसिद्ध] जी० १। म तिस्थाभिसेय [तीर्थाभिषेक] ओ० १८ तित्थोदम [तीर्थोदक] रा० २७१. जी० ३१४४५ तिवंडय [ त्रिदण्डक ] ओ०११७ तिपडोगार [त्रिजल्यावतार, त्रिपदावतार] जी० 518X3 तियडोया [त्रिप्रत्यावतार, त्रिपदावतार] जी० ३।६३६ ६३५,६४० तिष्पणयार [तेपन, तेवन] ओ० ४३ तिभाग | त्रिभाग | ओ० १६५ा४ से ६, जी० ३1३४ से ३६,४०,४१,४४,४६,७२४,७२८, ७२१,८७८ तिमासपरियाय [त्रिमासपर्याय] ओ० २३ तिमिर [तिमिर] जी० ३।४८६ तिय [त्रिक] ओ० ४४. रा० ६४४,६४४,६८७, ৩१२. জী০ ২। ২২४

६४४

### तियाह-तिसालग

- तियाह [त्र्यह] जी ३।५६,११८,११६
- तिरिक्ख (तिर्यच्) जी० १।४१,१२३;२।२४,६४, १२२;६।१
- तिरिक्खजोणि [तिर्यग्योनि] ओ० ७४,१,३ जी० २।२,३,६,१०,२१ से २४,४६,६८,६६, ७२,१४२,१४४,१४६,१४६,१४१
- तिरिक्खजोणिणी [तिर्यम्पोनिकी] ओ० ७१. जी० ६।१,४,६,१२; ६।२०६,२१२,२१६-२२२
- तिरिक्खजोणिय [तिर्यग्योनिक] जं० ७१,७३, १४६, जी० ११४१,४४,४४,४६,६१,६१,६७, ६८,१०१ से १०३,११६,११७,११६,१२४; २७७३ से १९१,११३,९१६,११७,१९६,१२६; १०७ से १११,११३,९१६,१२६,१०१ से १०४, १०७ से १११,१३३,९१६,१४६,१४६,१४६,१४६, १३८,१३६,१३३,१४३,१४६,१४६,१४६,१४६, १३८,१३६,१३३,१४३,१४६,१४६,१४६,१४६ ३११,१२१,१३० से १४७,१४४, १४६,१६१ से १६३,१६६,११३२,११३४,११३७,१४३,९६१ से १३,९३६६,११३२,११३४,११३७,१४,१६,२० से २३; ६११४६,२०६,२११,२१७,२२०,२२१, २२४,२४०,२४१,२४३,२४४,२६७,२७०, ६७१,२७६,२०४,२६,२०६,२९७,२९६,२६३
- तिरिक्खजोणियत्त [तिर्यंग्योनिकत्व] ओ० ७३. जो० ३:११३४
- तिरिय [तर्यच्] ऑल ४४,४६. रा० १०,१२,४६, १२६,१३२,२७६. जी० १।४४,७६ ८७,६६, १०१,१३६; ३।१२६।२,२४७,३०२,३४१, ४४४,६३८,७०१,७१०,७३६,७४७,७६१,७६४, ७६८,७६६,८१४,८३८।१२,८४०,९४४,१००६, ११११; ६।१४८
- तिरियक्खेवण ( तिर्यक्क्षेपण ] ओ० १००
- तिरियलोग (तिर्यग्लोक] जी० ३.२४६
- तिरियवाध (तियंग्व:त) जी० ११८१
- तिरोड [किरोट] ओ० ५१
- तिरूब [त्रिरूप] जी० २।१५१

- तिल [तिल] जी० १।७२;३।६२१
- तिलकरयण [तिलकरतन] जी० ३।३०७
- तिलग [तिलक] जी० २। १९२, ६३१
- तिलगरयण [तिलकरत्त] रा० १३०,१३७.
  - जी० ३।३००
- तिलपप्पडिया [तिलपर्पटिका] जो॰ १७२१३
- तिलय [तिलक] ओ० ६ से ११. रा० ६६,७०.
  - जी० १।७२; ३।३८८ से ३६०,४८३,७७४।२
- तिलागणि | तिलागिन | जी० ३।११ व
- तिवइ [त्रिपदी] रा० २५१
- तिवति (त्रिपदी) जी० ३।४४७
- तिवलि [त्रिवलि] ओ० १५. रा० ६७२. जी० ३।५९७
- तिवासपरियाय [त्रिवर्षपर्याय] ओ० २३
- तिविध [त्रिविध] जी० २।१०४,१०६,१४१; ३।३व,१४व,१४९,१४३,१६४,२१४,व३६; ४।४७; हा११२
- तिबिह [त्रिविध] ओ० ३३,३७,६६,७०,७८. रा० ७६. जो० १।१०,१२,७४,६६,११७, ११६,१२६,१३३,१३६; २।१ से ३,८,११, ७४ से ७७,६६,१४१; ३।३७,७८,१३७, १६१,१०७१; ६।२३,३२,६७,६६,७४,८८, ६५,१०१,१०६,१६४,२०२
- तिच्व [तीव] ओ० ४,४६,६९. रा० १७०,७०३, ७९४. जी० ३।११०,२७३,६०८,६११
- तिब्वच्छाय [तीवच्छाय] औ० ४. रा० १७०,७०३ जी० ३।२७३
- तिव्योभास [तीव्रावभास] ओ० ४. रा० १७०, ७०३. जी० ३।२७३
- तिसत्तक्खुत्तो [त्रिसप्तकृत्वस्] ओ० १७०. जी० ३।८६
- तिसर [विसर] ओ० ४२,६३. रा० ६०७ से ६०१ तिसरय [त्रितरक] ओ०१००,१३१ तिसालग त्रिधालक] जी० ३।४९४

# **६४**६

तिहा [त्रिधा] रा० ७६४,७६४ तिहि [तिथि] ओ० १४५. रा० ८०५ तीर [तीर] २१० १७४. जी० ३।११८,११६,२८६, 680 तीस [त्रिशत्] ओ० १६२. जी० ३।१२ तीसतिबिह [ जिंशद्विध | जी० २। १३ तीसविध [त्रिंशद्विध] जी० ३।२२८ तु [तु] जी० २। ५३ ८। ४ तुंग [तुङ्ग] ओ० १९,४६,४७,६४. रा० ५२,५६, १३७,२३१,२४७. जी० ३।३०७,३९३,५१६, 280 तंड [तुण्ड] जी० ३।१११ तुंबवीणपेच्छा [तुम्बवीणाप्रेक्षा] जी० ३१६१६ तुंबवोणा [तुम्बवीणा] रा० ७७ सुंचवीणिय [तुम्ववीणिक] ओ० १,२ सुंबवीणियपेच्छा [तुम्बवीणिकप्रेक्षा] ओ० १०२, १२५ तुंबा [तुम्बा] जी० ३।२४८ तुच्छतराय [तुच्छतरक] रा० ७६५ तुच्छत्त [तुच्छत्व] रा० ७६२,७६३ बुट्ट [तुष्ट] ओ० २०,२१,५३,५४,४६,६२,६३, ६६,७६,६०,६१. रा० ६,१०,१२ से १४,१६ से १९,४७,६०,६२,६३,७२,७४,२७७,२७९, 7= 8,780,5 × ×, 5= 8,5= 3,580,58 ×,0000 909,280,280,380,880,880,880,080,000 ७७४,७७८. जो० ३।४४३,४४४,४४७,४११ **सुडिय** [ युटित ] अरे० २१,४७,१४,६३,७२,१०८, १३१. ग० ८,६९,७०,२८४,७१४. जी० 31888'880'863 तडिय | तूर्य | ओ० ६७,६५. रा० ७,१३,३२,२०६ २११,६४७. जी० ३।३४०,३७२,४४६,४६३, ६४६,८४२,८४४ तुडिय | दे० | जी० ३।८४१ तुडिय [तुटिक] जील ३।१०२३ से १०२४

१. आः चूणिकृत्—'तुटिकमन्तपुरमुपदिष्यते' [वृत्ति पत्र ३०४] । सुडियंग [दे०] जी० ३।१८८८,५४१ तुडिया [त्रुटिता] जो० ३।२५४,२५५ √ तुयट्ट [स्वग्+वृत्] — तुयट्टंति. रा० १९४. जी० ३।२१७-तुयट्टह. रा० ७१३. – तुयट्टेज्ज. ओ० १८० तुबहुण [त्वग्वर्तन] ओ० ४० क्षरवक [तुरुष्क] ओ० २,४४ तरग [तुरग] ओ० १,१३,१९,६४. रा० १७,१५, २०,३२,३७,१२६,१७३,६५१. जी० ३।२५४, २८८,३००,३११,३७२,४९६ सरय [तुरग] रा० ६८३,६८४,६९२,७०८,७१०, ७१६,७३१ **त्रुरित** [त्वरित | जी० ३।५६ **सुरिय** [तूर्यं] जी० ३।४४६ **तुरिय** [त्वरित] ओ० २१,४६,५४. रा० ५,१०, १२,९४,४६,२७९,७१४. जीव ३।१७६,१७८, 8=0,8=2,88x,8=E सुरियगति [त्वरितगति] जी० ३।६८० **सुरुवक** [तुरुव्क] रा० ६,१२,३२,१३२,२३६,२८१, २हर. जों० ३।३०२,३७२,३९८८,४४७,४४७ **√तुल** [तोलय] --- तुलेमि. रा० ७६२ तुला [तुला] रा० ७४५ से ७४०,७७३ तुलिय [तुलित] रा० ७६२,७६३ **तुलेत्ता** [तोलयित्वा] रा० ७६२ तुल्ल [तुल्य] ओ० १९. जी० १।१४३; २।६८ से ७२,६४,६६,१३४ से १३८,१४१ से १४६; ३।७३ २ ७४,४४६,३३३,≈३३,४३४,४७ ४ ४७ ४1 १६ से २३,२४; ४।१६,२०,२६,२७,३२ से ३६,५२,५९,६८; ७१२०,२२,२३; १७,१४, ४४,१६६,१५१,२०५,२४० से २४३,२४४, २८६ से २९३ तुरुलत [तुल्यत्व] जी० ३। १९१ **तुवर** [तूबर ] जी० ३।४४५,४४६,४४८ तुसागणि [तुपाग्नि] जी० ३।११=

सुसार [तुपार] ओ० १९४. जी० ३।११६

### तुसारकूड-तोरण

तुसारकूड [तुषारकूट] जी० ३।११६ तुसारपडल [तुषारपटल] जी० ३।११६ **तुसारपुंज** [तुषारपुञ्ज] जी० ३।११६ तुसिणीय [तुष्णीक] रा० ६४,७०१,७९२ तूण [तूण] रा० ७७ तूणइल्ल [तूणावत्] अं१० १,२ तूणहल्लपेच्छा [तूणावत्प्रेक्षा] ओ० १०२,१२४. जी० ३।६१६ तूयर [तूबर] रा० २७९,२८० तूल [तूल] ओ० १३. रा० ३७,१८४,२४४. जी० ३।२९७,३११,४०७ तूली [तुली] रा० २४४. जी० ३,४०७ तेइंदिय [त्रीन्द्रिय] जी० ११८३,८८,९०; २।१०१, १०३,११२,१२१,१३६,१३६,१४६,१४६; मे११२०,१६८; ४११,४,१३,१८ से २१,२४, २४) मा१,३,४; ६।१,३,४,६,१६६,२२३,२३१, 288,788,788 तेज [तेजस्] जी० १।१२८,१३३; २।१३०; श्रान; हार्रह४,२१७ तेउकाइय [तेजस्कायिक] जी० श्राइ, २९; £!१द२,१८४,२५६,२६२,२६६ तेउक्काइय [तेजस्कायिक] जी० ११७५,७६,७६, =0; ?1 **800,8**3 **€,8**3 =,88 €,88 €; ¥18,83 25,20; 518,2 तेउलेस्स [तेजोलेस्य] जी०१।१५४,१५१,१६६ तेउलेस्सा [तेजोलेक्या] जी० ३।११०१ सेंदिय [त्रीन्द्रिय] जी० ९।१६७,२२१,२२९,२५६ तेंदुय [िन्दुक] जी० १।७२ तेजससमुग्घाय [तैजससमुद्यात] जी० ३११११२, १११३ तेणाणुबंधि [स्तेनानुबन्धिन् ] ओ० ४३ तेणामेव [तत्रैव] रा० ७५४ जी० ३।४४३ तेणिस [तैनिस] जी० ३।२=४ तेतलि [तेजस्तलिन, तेतलिन्] जी ३।६३१ तेत्तीस [त्रयसिंशत्] ओ० १६७. जी० १८६६

तेत्तीसम [त्रयस्त्रिश] रा० १६४ **तैमासिय** [त्रैमासिक] ओ० ३२ तेमासिया [त्रैमासिकी] ओ० २४ **ते**व [तेजस्] ओ० २२,४७,४७,६४,७१,७२,१८२. रा॰ ६१,१३३,७२३,७७७,७७८,७८८,८९ जी० ३।३०३,४८६,११२२ तेयंसि [तेजस्विन्] ओ० २५. रा० ६८६ तेयग [तैजस] जी० हा१७ह तेयगसरीरि [तैजसशरीरिन्] जी० ६।१७०,१७४ तेयय [तैजस] जी० १।१५,५९,६४,७४,७९,५२, ۶×,٤३,१०१,११٤,१२२,१३४ तैया [तैजस | जी० ३।१२९१६; १।१८१ तैयासमुग्घात [तैजसनमुद्वात] जी० ३।१११३ तेयासमुग्धाय [तैजसममुद्धात] जी० ३।१५७ तेयाहिय [त्र्याहिक] जी० ३।६२८ तेर [त्रयोदशन् ] जी० ३।२६६।४ तेरस [त्रयोदशन्] ओ० १४५. रा० १८८. জী০ ই।ই४ तेरासिय [त्रैराशिक] जो० १६० तेल्ल [तैल] ओ० ६३,६२,६३. रा० १६१,२५८, २७९. जी० ३।३३४,४१९,४४४ तेल्लग[तैलक]जी० ३।४८६ तेल्लापूय [तैलापूप] ओ० १७०. जी० २।२६० तेल्लापूव [तैलापूप] जी० ३।=६ तेवण्ण [त्रिपञ्चाशत्] जी० १।१११ तेवीस [त्रयोविंशति] जी० ३।७३६ तोण [तूण] ओ० ६४. रा० १७३,६८१. जी० ३,२≍५ तोमर (तोमर) ओ० ६४. जी० ३। ११० तोमरग्ग [तोमराग्र] जी० ३१८५ तोय [तोय] ओ० २७ तोयपट्ठ [तोयपृष्ठ] ओ० ४६ तोरण [तोरण] ओ० १,२,५५,६४. रा० २० से २३,३२,१३८ से १६१,१७३,१७६,२०२,२३४, २७७,२**५१,२**५५,**३१२,४७३,६४५,६**४**५**,६८४

¥XX, \$ € ₹, \$ 67, \$ E €, X 7 X, X X **3, X X 6**, 848,800,832,888,886,806,860, ६०४,६४**१,६६६,६८४,८४४७,६०१** ति [डति] रा० ध (थ) थंग (स्तम्भ) रा० २० श्वंभणया [स्तम्भन] ओ० १०३,१२६ थंभिय | स्तम्भित | ओ० २१,४७,४४,६३,७२. रा० =. जी० ३।४१७ **√थक्कार** [दे०]—थक्कारेंति. रा० २५**१**. जी० ३।४४७ थण | स्तन | ओ० १४. जी० ३।५९७ थणिय [स्तनित] ओ० ४८,७१. रा० ६१ थणियकुमार [स्तनितकुमार] जी० २।१६ थणियकुमारी [स्तनितकुमारी] जी० २।३७ थणियसद्द [स्तनितशब्द | जी० ३।८४१ थलचर [स्थलचर] जी० २।१२२ थलज [स्थलज] जी० ३।१७१ थलय [स्थलज] रा० ६,१२ थलगर [स्थलचर] ओ० १४६. जी० १।६७,१०२ से १०४,११२,११७,१२०,१२४; २।६,२३, २४,६६,७२,७६,**६६,१०४,११३,१३६,१**३=, १४६,१४६; ३।१३७,१४१ से १४४,१६१ से १६३ थलचरी [स्थलचरी] जी० २।३,४,५१,६६,७२, १४६,१४६ थवह्य [स्तवकित] ओ० ४,८,९०. रा० १४४. जी० ३।२६८,२७४ थाम [स्थामन्] ओ० २७ थारुइणिया [थारुकिनिका] ओ० ७०. रा० ५०४ थाल (स्थाल) रा० १४०,२४८,२७६. जी० ३।३२३,३११,४१९,४४४,४८७,४८७ थालइ | स्थालकिन् | ओ० १४ थालिपाक [स्थालीपाक] जी० ३१६ १४

जी॰ ३।२८५,२८८ से २६१,३१४ से ३३४,

थालिपाग [स्थालीपाक] जी० ३।६१४ वाली [स्थाली] जी० ३।७८ यावर [स्थावर] जी० १।११,१२,७४,१३७,१३६, १४१,१४३ **यावरकाय** [स्थावरकाय] जी० ३।१७४ यासग [स्थासक] ओ० ६४ **थिबुग** [स्तिबुक] जी० श६४,६५ थिभूग [स्तिबुक] जी० ३।६५९ थिभूग [स्थिबुक] जी० ३.६४३ थिमिओदय [दे० स्तिमितोदक] अरे० १११ से ११२,१३७,१३५ थिमिय [दे० स्तिमित] ओ० १. रा० १,७५, ६**६६,६६६,**६७**६,६**७७ बिर [स्थिर] ओ० १९. रा० १२,७५८,७५९. जी० ३१११८,५९६,१०६८ थिलिस [दे०] ओ० १००,१२३. जी० ३।५८१, ४८४,६१७ थीह [दे०] जी० १।७३ **√ युक्कार** [थूत्कारय्]—थुक्कारेति. रा० २८१. জী০ হা४४৬ **युभ [स्तूप]** जी० ३।४१२,५६७,६०४ **यूभमह** [स्तूपमह] रा० ६६८. जी० ३।६१५ ष्भाभिमुह |स्तूपाभिमुख | रा० २२५. जीo <mark>३।३</mark>न४,**८**६६ थूभियग्ग [स्तूपिकाय़] ओ० १९२ ष्मियाग [स्तूपिकाक] रा० ३२,१२९,१३०, १३७,२१०,२१२. जी० ३।३००,३०७,३४४, ३७२,३७३,६४७,≂द४ **थूभियाय** [स्तूपिकाक] जी० ३।३०० **थूल** [स्यूल] ओ० ७७ यूलय [स्थूलक | ओ० ११७,१२१. ग० ७ ९६ थेज्ज [स्थैर्य] रा० ७४० से ७४३ थेर [स्थविर | ओ० २५,४०,१५१. रा० ६८७, < १२. जी० १।१;३**।**१ थेरवेयावच्छ [स्थविरवैयावृत्य] ओ० ४१

૪૧૭,૪૪૧,૪૧૭,૧૬૨,૧≈€ वंडणायक (दण्डनायक) ओ० १८ दंडणायग (दण्डनायक) रा० ७४४,७४६,७६२, ७६४ दंडणीइ [दण्डनंगति | रा० ७६७ **वंडनायग** [दण्डनाथक] ओ० ६३ **दंडपाणि** | दण्डपाणि | रा० ६६४ वंडय [दण्डक] रा० ७४४ दंडलक्क्लम [दण्डलक्षण] ओ० १४६. रा० ५०६ दंडसंयुच्छणी [दे० दण्डसंयुच्छणी, दण्डसम्पुसनी] रा० १२ दंडि | दण्डिन् | ओ० ६४ दंत | दन्त | ओ० १९ २४,४७,६४. रा० २५४, ७६०,७६१. जी० ३।४१५,५९६ **दंत** [दःन्त] ओ० १६४ दंत [पान] [दग्तपात्र] ओ० १०४,१२८

७७६,७७७. जी० ३।११७,२६०,३३२,३३३,

इंड दण्ड | ओ० १२,६४,१७४. रा० १०,१२,१८, 22, 49, 44, 946, 840, 744, 766, 767, *६६४,६७४,७४४,७६०,७६१,७६*७,*७६*५,

वओभास [दकावभास] जी० २।७३४,७४०,७४१,

थोवतरग [स्तोकतरक] जी० ३।६६,११३

थोव [स्ताक] ओ० २८,१७१. जी० १।१४३; राइन से ७३,६५,६६,१३४ से १३न,१४१ से १४६; इ। ५६७. ५४१,१०३७,११३५; ४,१९ से २३,२४; ४।१९ से २०,२४ से २७, ३१ से ३६,४२,४६,६०; ६११२; ७१२०,२२, २३ ; नाम्, हाम् से ७,१४,१७,२०,२७ से २६, ३४,३७,४४,६१,६२,६६,७४,५७,६४,१००, १०८,११२,१२०,१३०,१४०,१४७,१४५, १५८,१६६,१६९,१८१,१८४,१६६,२०८, २२०,२३१,२४० से २४३,२४४,२६६,२०६ से २९३ थोवतरक [स्तोकतरक] जी० ३११०१,११४

दंतवेदणा [दन्तवेदना] जी० ३।६२८ दंतुक्ललिय [दग्तोलूखलिक] ओ० ९४ वंस [दंश] ओ० ८९,११७. ग० ७९६, जी० ३।६२४,६३१।३ वंसण [दर्शन] ओ० १४,१९ से २१,४६,५१ से रा० म,४०,७०,१३३,२६२,६न६,६न७.६न६, ७१३,७३८,७६८,७७१,८१४, जी० १।१४, €६,१०१,११९,१२५,१३३,१३६;३।३०३, ४४७,११२२ दंसणविणय [दर्शनविनय | ओ० ४० बंसणसंपण्ण [दर्शनसम्पन्न] अो० २४. रा० ६८६ वंसणोवलंभ [दर्शनोपलम्भ] रा० ७६८ वक्स [दक्ष] ओ० ६३. रा० १२,७४८,७५९, ७६४,७६६,७७०. जी० ३।११द दक्खिण [दक्षिण] जी० ३।४६०,५६६,६३८,६७३, 680,688 दक्खिणकुलग [दक्षिणकुलग] ओ० १४ दविखणपच्च स्थिम [दक्षिणपाश्चात्य] जी० ३।६८७ दविखणपुरत्यिम [दक्षिणपीरस्त्य] जी० ३।६८६ वक्सिणिहल [दाक्षिणात्य] जी० ३।४८६ वग [दक] रॉ० १२. जी० ३।७४१ वगएक्कारसम (दकैकादश ] ओ० ९३ दगकलसग [दककलशक] रा० १२ दगकुंभग [दककुम्भक] रा० १२ बगतइय [दकतृतीय] ओ० ९३ दगथालग [दकस्यालक] रा० १२ वगधारा [दकधारा] रा० २९३ से २९६,३००, ३०४,३१२.३४१,३४४,४९४. जो० ३१४४७ से ४६२,४६४,४७०,४७७,४१७,५२०,४४७, ጞጞጿ दगपासायग [दकप्रास।दक] रा० १८०. जीव ३।२९२ दगपासायय [दकप्रासादक] रा० १८१

दत [बंधण] [दन्तबन्धन] ओ० १०६,१२६

वंतमाल [दन्तमाल] जी० ३,५८२

#### दगविइय-दलइत्ता

६५०

दगबिइय [दकद्वितीय] ओ० ६३ दगमंचम [दकमञ्चक] रा० १८०. जी० ३।२९२ वगमंचय [दकमञ्चक] रा० १८१ **दगमंडय** [दकमण्डप] रा० १८१ **दगसंडव** [दकमण्डप] रा० १८० दगमंडवग [दकगण्डपक] जी० ३।२९२ वगमट्टिया [दनमृत्तिका] ओ० १४६. रा० ५०६ वगमालग [दक्रमालक] रा० १८०. जी० ३।२१२ दगमालय [दकमालक] रा० १८१ दगरय दिकरजस् ओ० १९,४६,४७,१९४. रा० ₹८,१६०,२२२,२४६. जी० - ३।२५२,३१२, £\$\$,\$=\$,X89,X95,X69,=EX वगवार [दकवार] जी० ३।११६ दगवारक [दकवारक] जी० ३।४८७ **बगवारग** [दकवारक] रा० १२ दगसत्तम [दकशप्तम] अं१० ६३ वगसीम [दकसीम | जी० ३।७३४,७४४ से ७४७ दच्चा [दला] रा० ६६७ दड्ड [दग्ध] ओ० १८४ बढ [दृढ] ओ० १,१४२,१४४. रा० १२,७५८, ७४६,५००,५०२. जी० ३।११५ दढवइण्ण | दृढप्रतिज्ञ | ओ० १४४ से १४०,१४४. रा० ८०२,८०५ से ८११,८१६ **दढपतिण्ण** दृढप्रतिज्ञ | रा० ५०४ दढरहा [दृढरथा] जी० ३।२१४ दढाउ [दृढायुष्] जी० ३।११७ **धहर | दे० दर्दर ]** ओ० २,४२,४४. रा० ३२,१४९, २७९,२८१,२८४. जी० ३।३३२,३७२,४४४, 889,8888,888 बहरग [दे० दर्दरक] रा० ७७. जी० ३।४ू८७ दहरय [दे० दर्दरक] रा० २५१. जी० ३।७८, 886 बद्धरिगा [दे० दर्दरिका] रा० ७७ दब्दुर [दर्दुर] ओ० ४१. जी० ३।१०३८ दिधि [दधि ] जी० ३। १९

दशिघण [दधिघन] रा० १३०. जी० ३।३०० दधिमुह [दधिमुख] जी० ३। ११, ११ दिधवासुयमंडवग [दधिवासुकामण्डपक] जी० ३।२१६ द्रव्यण [दर्वण] ओ० १२,१९. रा० २१,४९,२९१. जी० ३।२व१,३४७,५१९ **दप्पणय** | दर्पणक | ओ० ६४ दप्पणिज्ज [दर्पनीय | ओ० ६३. जी० ३।६०२, **ৼ৾६०,ৼ৾६**६,**ৼ७२,**ឝ७ឝ दब्भसंथारग |दर्भसंस्तारक | रा० ७९६ दमणा [दमनक] रा० ३०. जी० ३।२८२ दमिला [द्रविडा, द्रमिला] रा० ५०४ दमिली [द्रविडा, द्रमिला] और ७० वयपत्त [दयाप्र.प्त] ओ० १४. रा० ६७१ दयरय [दबरजस्] रा० २९ **दरिमह** [दशीसह] रा० ६८८ दरिय [दृष्त ] ओ० ६. जी० ३।२७५ दरिसण [दर्णन] रा० ८०३ दरिसणावरणिज्ञ [दर्शनावरणीय] ओ० ४४ दरिसणिज्ज [वर्णनीय] ओ० १,४,७,८,१० से १३ १४.४६,६४,७२,१९४. रा० १७ से २३,३२,३४ ३६ से ३⊏,४०,१२४,१३०,१३१,१३६,१३७, १४४,१४७,१७४,१७४,२२८,२३१,२३३, 788,780,788,885,555,500,507,508, ७००,७०२. जी० ३१८४,२३२,२६१,२६६, २६६,२७४,२७६,२८६ से २८८,२८०,३००, ३०३,३०६,३०७,३११,३८७,३१३,४०७,४१०, ¥=?,X=V,X=X,XEE,XEO,EZE,EOZ, दरे६ दर्४७, द६२, ११२१, ११२२ दरिसणीय [दर्शनीय] रा० १ **दरी** [दरी | जी० ३।६२३ दल | दल ] जीव ३।२८२,४९७ दलइत्ता [दत्वा] ओ० २१. रा० २९३. जी० ३।४५्द

१. प्रान्तकरुणागुण: [वृ] । दयाप्रान्तः स्वभावतः शुद्धजीवद्रव्यत्वात् । बलय [दलक] रा० २९ √दलय [दा] --- दलइस्संति. ओ० १४७. रा० रा० ७७६---दलयइ. ओ० २१. रा० २१३ जी० ३। ११४ -- दलयंति. रा० २८१. जी० ३।४४७ --- दलयति. जी० ३।४५८ दलयित्ता [दत्वा] रा० २९३ दवकर [द्रवकर] ओ० ६४ दवगिग [दवागिन] जी० २१६८; ३:११८,११६ दवगिगवङ्हग [ दवाग्निदग्धक ] ओ० ६० दवष्पिय [द्रत्रप्रिय] ओ० ४९ बस्त [द्रव्य] ओ० २८,४६,६६,७०. रा० ७७८. जी॰ १।३३;३।२२,२३,२७,४४,४०६,४६२; 8718 दब्बओ [द्रव्यतस्] आं० २५. जी० १। ३३ **वव्वद्र** [ द्रव्यार्थ ] जी० ४। ५२, ५६, ६० दव्बद्रुया [द्रव्यार्थ] रा० १९९. जी० ३१४८,५७, 268,628,626,8058 **दव्यविउसम्म [द्र**व्यव्युत्सर्ग] ओ० ४४ **दब्वभिग्गहचरय** [द्रव्याभिग्रहचरक] ओ० **३**४ दब्वीकर [दर्वीकर] जी० १।१०६,१०७ दव्योमोदरिया [द्रव्यावमोदरिका] ओ० ३३ दस [दझन्] ओ० ४७, रा० ८. जी० १।७४ वसण [दशन] जी० ३ ४६७ दसजुष्पडियग [उत्पाटितकदशन] ओ० ६० दसदसमिका [दशदशकिका] ओ० २४ दसद्ध [दशार्ध] रा० १. जी० ३।४१७ दसमभत्त [दशमभक्त] ओ० ३२ दसविष [दशवित्र] जी० ६।१,२५६ दसविह [दशविध] ओ० ३९,४१. जी० ११४,१०; २12६; ३।२३१; ६।५,२६७,२६३ दह [द्रह] रा० २७९. जी० ३।४४५,६३९,६४०, ६६६,७७४,६३७ बहमह (द्रहमह) जी० २१६१४ दहि [दधि] ओ० ६२,६३ दहिघग [दक्षिधन] रा० २६. जी० ३।२८२

दहित्ता [दग्ध्वा] जी० ३।५१६ दहिवण्ण [दधिपर्ण | ओ० ६,१०. जी० ३।३८८ दहिवासुयमंडवग [दखिवासुकामंडपक] रा० १८४ दहि्**वासुयमंडवय** [दधिवासुकामण्डवक] रा० १५४ √वा ]दा] -- दिज्जइ रा० ७८४ -- देइ रा० ७६६ दाइय [दायिक] ओ० २३. रा० ६९४ दाऊण [दत्वा] रा० २९२. जी० ३१४५७ वाडिम [दाडिम] ओ० ६,१०. जी० १।७२; ચાર્ટર, રટહ बाण [दान] औ० २३. रा० ६९४ दाणधम्म [दानधर्म] ओ० ६= दात् [दात्] ओ० ११७ दाम [दामन्] रा० २८,३२,४०,४१,६७,१३०, १३२,१३७,१४०,१४८, २३४,२४४,२६४, 2=8,288,288,288,288,300,30%,382, ३४४,६८३,६९२,७००,७१६. जी० ३१२८१, ३००,३०२,३१३,३३१,३३८,३३८,३४५,३५६, ३९७,४१२,६३४,८९२ दामिणि [दामिनी] जी० ३।४९७ वामिल [द्राबिड] जी० ३।४९४ दार [द्वार] ओ० १,१६२. रा० १२६ से १३८, १६२ से १६६,२१० से २१२,२१४,२७७, २८३,२८६,२८८,२६४ से २८६,३०१ से ३०४,३२२ से ३२४,३२७ से ३२६,३३१ से **३३४,**३३६,**३३**७,३३९,३४१,३४२,**३५१,३५७, ક્રપ્રદર્શપ્રદ્શપ્રદ્વપ્ર**ક્રપ્ર્યક્રપ્ર્યક્રપ્ર્યક્ર X00,X {X,X {X, X ₹X, X ₹0,X0X,X0X, ४९४,४९७,६२४,६२४,६४४,६४४,६४७, जी० ३।२९६ से ३०७,३१४,३३४,३३६,३४६ से ३४४,३४४ से ३४७,३७३,३७४,४१२,४२१, ४४३,४४४,४४६,४४२,४४४,४**५७,**४४६ से ¥**Ę १,**४६**३,४६४,४६**६,४६८,४६९,४७४, ४७६,४८७ से ४८९,४९१ से ४९४,४९६ से ४९९,३०१,१०२,३०४,२०६,३०७,११६, ४१७,४२२,४२४ से ४२६,४२८,४३०,४३१, **५३३,५३६,५३**⊏ से **५४०,५४३,५४५** से

- ४४७,४४०,४४२ से ४१४,१४७,४६३,५६६, १६= से १७०,४९४,६४७,६७३,६७४,७०७ से ७११,७१३,७१४,७६६ से ८०२,८१३ से ८१४,८२४ से ८२७,८४१,८४२,८८४ से \*\*\*\*\*\*\* दारग [दारक] ओ० १४२,१४४ से १४७, रा० ८००,८०२,८०४ से ८१० दारचेडा [द्वारचेटा] रा० १३०,२६४,२६६,२६५ २९६ जी० ३।३०० दारचेडी | द्वारचेटी ] जी० २।४४६,४६१ दारग | दारक | ओ० १४३,१४४,१४८, से १५० TIO 82,508,502,508,588 जी० ३।११५,११९ दारुइज्जपव्वय [दाहकीयवर्षत] रा० १८१ दारुइज्जपव्ययग [दारुकीयपर्वतक] रा० १०० **दारुपव्ययग** [दारुपर्वतक] जी० ३।२९२ दाहपाय [दाहपात्र] ओ० १०५,१२५ दारुय [दारुक] आ०६४ दारुयाग [दारुकक] जी० ३।२-४ दारुयाय [दारुकक] रा०१७३,६०१ दालिम |दाडिम] ओ० १६ दास | दास ] ओ० १४,१४१. रा० ६७१,७७४, ७९९. जी० ३१६१०,६३१।२ दासी |दासी | ओ० १४,१४१. रा० ६७१,७७४, 330 दाह [दाह] रा० ७९५. जी० २।१४०,३।११८, ११९,६२९ दाहिण | दक्षिग ] जो० २१,५४. रा० ८,१९,४०, x3,xx,4E,87x,237,800,803,780, २१२, २३४,२३६,२९२,६६१,६६४. जी० ३।२१७,२१६ से २२१,२६४,२५४,३४२, **૨૪૪,૨૧૮૦,૨७૨,૨૯७,૨૯૦,૪૮७,૮૬**૨,**૨**૬૬, **५्र्र्,५६६,५७७,६४७,६६२,५६२२,**६२ **६६२,६९४,६९६,७११,**५५२,५५४,२०२, 3509X,803E
- दाहिणपच्चत्थिम | दक्षिणपाण्चात्य | रा० ४३, ६६२. जी० ३।२२४,३४३,४६०,७४२ दाहिणपच्चत्थिमिल्ल | दक्षिणपाण्चात्य | जी० ₹I२२०,६६४,६६**५**,६१≂,६२**१** दाहिणपुरत्थिम [ दक्षिणणौरस्त्य | रा० ४३,६६०. जीव ३,३४१,४६०,७४१ दाहिणपुरस्थिमिल्ल | दक्षिणपौरस्त्य | रा० ५६ जी० ३१२१६,२२३,६९२,६६३,६१=,६२० **दाहिणवाय** | दक्षिणवात | जी० १:८१ दाहिणहत्य | दक्षिणहस्त | ओ० ६६ दाहिणिल्ल | दाक्षिणात्य | रा० ४ =, १७, २१४ से ३०४,३०६ से ३१२,३२०,३२१,३२४,३३४, 336,3%,386,886,800,836,3860 जी० २।३३,३५,२१७,२१९ से २२३,२२४, २३४,२४४,२४०,२४३,४४६ से ४७०,४७४ से ४७७,४५५,४९०,४९४,४९९,२७४,५०९, <u> ५२२,५२५,५३६,५४३,५५०,६३२,६३६,</u> ££5,£33,5**63,568**,688,68 दिर्हेतिय | दार्ग्टान्तिक | २ा० ११७,२८१. जी० ३४४७ दिट्ठलाभिय [दृग्टलाभिक] ओ० ३४ दिट्टि दिटि रा० ७४न से ७१०,७७३. जी० १ १४,६६,१०१,११६,१२८,१३३,१३६; ३।१२३,१६० **दिट्रिय** | दृष्टिक | रा० ७६५ दिद्विवाय (पुष्टिवाद) रा० ७४२ दिणयर [दिनक]] जो० २२. रा० ७२३,७७७, ७७८,७५८, जी० ३।८३८११२,१३,२६ विण्ण | दत्त | ओ० २,१७,४४,१११ से ११३, १३७,१३८. २१० १४,३२,२८१,७८७,७८८. জী০ ২ ४८७ वित्त | दृष्त, ताप्त | ओ० १४,१४१. रा० ६७१, 330,988 दित्त | दीष्त | औ० ६३,६५ जी० ३।८३८१२ ध **दित्ततव** [दीप्तसपस् ] ओ० द२ दित्ततेय [दीण्ततेजस्] ओ० २७. रा० ५१३

दिन्न-दीविग

- दिन्न [दत्त] जी० ३।३७२ विष्पंत | दीष्यमान | ओ० ६३. रा० १३३. जी० ३।३०३,४८६,५६०,११२२ **दिप्पमाण** [दीप्यमान] ओ० ६४. जी० ३१४९१ विवड्र [ द्वचर्घ, द्वचपार्घ | जी० २।७३; ३।२३८, २४३ विवस [ दिवस | आं० १४४. रा० ८०२. जीव रे।नरेना१न,न४१ दिव्व [दिव्य] ओ० २,४७,६४,७२. रा० ७,६, १०,१२,१७से १९,२४,३२,४४ मे ५०,५६,४७, ६३,६४,७३,७६,७८ से ६४,१०० से ११३. ११म से १२०,१२२,१७३,२०६,२११,२७६, २८१,२८४,२६३ से २६६,३००,३०४,३१२, 328,322,488,460,623,660. जी० ३१८६,१७६.१७८,१८०,१८२,२८४, ३५०,३७२,४४**५,४४**६,४५१,४५७ से ४६२, ४६४,४७०,४७७,४१६,५२०,५४७,५५४, र्रद्रे,६४६,५४२,५४४,१०२४,१०२५, विख्वा [दिव्याक] जी० १।१०५ दिसा | दिशा | ओ० ४७,७२,७९ से ८१. रा० २६४,६८८८. जी० ३।३६,७४२,७५३, 8085,8088,8028 **दिसाकुमार** [दिशाकुमार] ओ० ४= विसादाह | दिशादाह | जी० ३।६२६ दिसापोक्खि | दिशाप्रोक्षिन् | ओ० १४ दिसासोत्थिय | दिशास्वस्तिक | ओ० ११ दिसासोवत्थिय | दिशासौवस्तिक | २ा० १४६. जी० ३:३१९,५९६ दिसासोवत्थियासण | दिशा जैवस्तिक सन ] रा० १८१,१८३,१८४, जी० ३।२९३,२९४, २९७,५४७ दिसि | दिग्] रा० १९,४४,६१,१२०,१७०,१७४, २०२,२१०,२१२,२२४,२३४,६६४,६९४,
  - ६९७,७१७,७७७,७८७. जी० ११४९,४९, ६२,न्फ,६६,१०१ ; ३१३४,३४,२८७,३४,८,

- ₹ ₹ ₹, ₹ 0 ₹, ₹ **~ ₹, ₹ € ६, ६ ४७, ६ ६ €,** ६ ७३,
- ६७४,६८४,७२३,५५२,५५५,५८८ ८१,५
- १९३ म ३१३,३१३ में ४९३,०९३
- दिसिव्वय [दिग्वत] ओ० ७७
- बिसीभाग [विग्भाग] रा० १०,१२,१८,४६,६४, २७९,६७०. जो० ३।४४४ विसीभाय [दिग्भाग] ओ० २. रा० २,६७८
- दीणारमालिया [दीणारमालिका] जी० ३। ५६३
- वीय [ढीप] ओ० १९,२१,४८,५४,१७०. रा० ७, १०,१२,१३,१४,४६,१२४,२७९,६६८. जी० ३।८६,२१७,२१६ से २२३,२२४ से २**२७,२४७,२४६,२६०,२**६६.३००,३४१, ४४४,१६६,१६न से ४७७,६३८,६६०,६६८, ७०१ से ७०४,७०८,७११,७१४ से ७१९, ७२३,७४६,७३६,७४०,७४२,७४४,७४०, ७४४,७४४,७६०,७६२,७६४ से ७६६,७६२ से **७६०,७९५ से ५००,५०२ से** ५०४,५०६, त०न से त**१०,**८१४,८१६,८१७,८२१ से नर्भ,नर७,नर्ह से नद्र१,न३न(२३,२६, *؞؇؋,؞*؇१,**؞**؇६,؞४७,؞४९,؞६२,<sub>°</sub>६३, *≈६४,न६न,न६६,न७१,न७४,न७४,न७७*, दन• से दन२,**११**८,१२४,**१**२७ से १३४, **८३७ से ६४०,६४३,**६४४, **६**४० से ६४४, ९७२ से ६७४,१००१,१००७,१०२२,१०३६, 2050,8122
- दीव [दीप] रा० ७७२ दीवग [द्वीपक] जी० ३।७७० दीवचंपग [दीपचम्पक] रा० ७७२ दीवचंपय [दीत्रचम्पक] रा० ७७२
- दीवणिज्ज [दीपनीय] जी० ३१६०२,८६०,८६६, ८७२,८७८
- **दोवसिहा** [ दीपशिखा ] जी० ३१४ वर
- दीवायण [ीगयन] ओ० हद्
- वीविच्चग [हीपग] जी० ३।७००
- वीविग [द्वीपिक] जी० ३।६२०

# 

दीहोकरित्तए [दीर्वीकतुम्] जी० ३।६९४ से १९७ दु [द्वि] रा० ४७. जी० १।६ दुंदुभिस्सर [दुन्दुभिस्वर] ओ० ७१. रा० ६१ दुंदुहिणिग्घोस [दुन्दुभिनिर्घोष] ओ० ६७. रा० १३,१३४. जी० ३।४४६,५५७ दुदुहिनिग्घोस [दुन्दुभिनिर्घोष] रा० ६४७. जी० ३।१४७ दुंदुहिस्सर [दुन्दुभिस्वर] रा० १३४.

- जो० ३।३०४
- **दुंदुही** [दुन्दुभी] रा० ७७
- टुख [हुख] ओ० २६,४६,७२,७४,१,४,५, १४४,१६५,१६६,१७७,१६१,१९८५।२१. रा० ७७१,७६४,६१६, जो० १।१३३; ३।११०; १२६।७,६; ६३६।१३ टुख्लुत्तो [हिम् | जी० ३।७३०,७३१ टुखुर [दिखुर] जी० ३।७२० टुगुण [हिगुण] जी० ३।२५६ टुगुणित [दिगुणित] जी० ३।४९७
- दुगुणिय [ दिगुणित ] जी० ३ द३४१२४
- दुगुल्ल [ तुकूल] रा० ३७,२४४. जो० ३।३११, ४०७,४९४ जगा [टर्ग] रा० ७९४ जी० २०००
- हुग्ग [टुर्ग] रा० ७९४. जी० ३।११० हुग्गंच [दुर्गन्व] रा० ७५३

**दुघण** [द्रुघण] २१० १२,७४८,७५९. जीव ३११**१**८ **दुघरंतरिय** | द्विगृहान्तरिक | ओ० १५८ दुच्चिण | दुश्चीर्ण | ओ० ७१ दुट्ट [ दुष्ट ] ओ० ४६ दुत [द्रुत] जी० ३,४४७ **दुतविलंबित** [दुतविलम्बित | जी० ३१४४७ **दुद्ध** [दुग्ध ] जी० २। १९२२ **बुद्धजाति** | दुग्धजाति | जी० २।५८६ **दुवरिस** [ दुर्धपे ] ओ० २७. रा० ५१३ **दुपडोयार** [ द्वित्रत्यावतार, द्विपदावतार ] ओ० ४२. रा० इद७ **दुपय** [द्विपद] रा० ७०३,७१८ **दुपाय** [द्विपक] जी० ३।११८,११९ **दुष्पय** [द्विपदं] रा० ६७१ **दुप्पवेस** [ दुष्प्रवेश ] जो० १ **दुफास** [दुःस्पर्श] जी० ३।६८९१ **दुफासत्त** [दुःस्पर्शल] जी० ३।६८७ **दुब्बल** [दुर्बल] ओ० १४. रा० ६७१,७६०,७६१. जीव ३।११८,११६ **दुब्बलय** [ दुर्बलक ] रा० ७६१ **दुन्भिकल** [दुनिक्षि] अो० १४. रा० ६७१ दुब्भिक्खभत्त [ दुभिक्षभक्त | ओ० १३४ **दुग्भिलमयग** [दुगिक्षमृत म | ओ० १० दुब्भिगंध [ युर्गन्ध | रा० ६,१२. जी० १।४,३६, ३७,४०;३१२२,६२२,६७६,८८४ दुब्भिगंधत्त [दुर्गन्धत्व] जी० ३१६८५ **दुब्भिसद्द** [दुःसब्द] जी० ३।९७७,९८२३ **दुब्भसद्दत** [दुःशब्दत्व | जी० ३।९९३ **बुब्भूय** (युर्भुत) जीव ३१६२८ दुभागपत्तोमोदरिय [द्रिमागपाप्तावमोदरिक] জাঁত ইই वुम [दुम] रा० १३६. जी० ३।३०६,४८२,४८६ से ५९४,६०४ **दुमासपरियाय** [िटमाउपर्याय] ओ० २३

दुय [दुत] रा० १०२,२०१

**बुयविलंबिय** [द्रुतविलम्बित] रा० ६१,१०४, २६१ बुयाह [ द्वचह ] जी० ३१८६,११८,११६,१७६, १७८,१८०,१८२ दुरंत [दुरन्त] रा० ७७४ **दुरभि** [दुरभि] जी० ३।<४ दूरस ]दूग्स] जी० ३११०० वुरहियास [दुरध्यास, दुरधिसह] रा० ७९४. जी० ३।११०,१११,११७ √दुरुह [आ+रुह]--दुरुहइ. रा० ६८५--दुरुहंति. रा० ४८. –-दुरुहति. रा० ४७---दुरुहेति. रा० ६८३ दुरुहित्ता [आरुह्य] रा० ४७ **दुरुहेता** [आरुह्य] रा० ६८३ **बुरूढ** (आरूढ) ओ० ६३,६४, ए० १३,४९ दुरूव (दूरून) जी० ३,६७८,६८४ √दुरूह [आ+ रुह |--- दुरूहति. ओ० ७० दु**रूहिता** (आरुह्य) ओ० ७० **दुरूहित्ताणं** [आरुह्य] ओ० १०१ दुल्लभ [दुर्लभ] रा० ७४० से ७४३ दुल्लभबोहिय [दुर्लभबोधिक | २१० ६२ दुव [दि] जी० ३।२५१ दुवारवयण [द्वालवदन] रा० ७४४,७७२ द्रवालस [ द्वादशन् ] ओ० ३३. जी० ३१३३ दुवालसंगि [डादशाङ्गिन्] ओ० २६ दुवालसविह [द्वादशविध] रा० १२ ७७,७८. জী০ {|૬৪ **दुवासपरियाय** [द्विवर्षपर्थाय] ओ० २३ बुविध [ द्विविध ] जी० ३।१३६,१४०,१४१,१६३, ११२२; ६।१२७ द्रविह [द्विविव] ओ० ३२,४०,७४. रा० ७४१ से ७४४. जी० ११२,३,४ से ७,१०,११,१३,१४, ४७,४८,६३,६४ से ६८,७०,७६,८०,८१,८४, नन,नह,ह२,ह४,ह६,६७,१०० से १०४, **१०६,१११,११५,११६,११**न से े२२,१२६,

दुयविलंबिय-देव

१२६,१३२,१३४,१३६,१४३; २ ४,७,१६; ३:७न,७९,८१,८२,६१,६३,१२७।४,१३२ से १३४,१३८,१३९,१४२ से १४६,२१२,२२६, ६७७ से ६८१,१०२२,१०७१ से १०७४, १०८७,१०६१,१११०,११२१; ४१२; ५१२ से ४,३७ से ४०,५३ से ५५; ६।=,६,११, १४,१६,१८,२१,२२,२४,२८ से ३१,३६, **ዿ**ዸነ<u>ዿ</u>६`\<mark>ጰ</mark>ፈ`**ֈ**<u>ጻ</u>,አ<mark></mark>ਫ'`X<sup>ዸ</sup>`ጞ<sup>ዸ</sup>'6´´<sup>2</sup>`É´<sup>3</sup>`É<sup>X</sup>` ६६,६८,७६,७९,८१,१२४,१३३,१४१, १७४ **दुव्दण्ण** [दुर्दर्ण] जी० ३१४१७ दुहलो [द्वितस्, द्वय] रा० ६९,७०,१३१ से १३०, २४४,७४४,७७२. जी० ३।३०१ से ३०३, ३०५ से ३०७,३१९,३९४,४०७,४७७ दुहओखहा [द्वितःखहा] रा० ५४ दुहओचक्कवाल [दितश्चकवाल] रा० ८४ दुहतो [दितस्, द्वय] रा० १२३. जी० ३१३०४ **दुहा** [दिधा] रा० ७६४,७६५. जी० ३।=३१ दूइरुजंत [द्रूयमाण | ओ० ४६ द्रइज्जमाण [द्र्यमाण] ओ० १९,२०,५२,५३. रा० इन्ह, इन७, इन्ह, ७०६, ७११, ७१३ द्रुय [टूत] ओ० १८,६३. रा० ७४४,७४६,७६२, ७६४ द्रर [दूर] ओ० १९२. रा० १२४. जीव ३।१०३८ दूरंगइय [दूरंगतिक] ओ० ७२ दूरसत्त [दूरसत्व ) जी० ३। १८८६ **दूराहड** [दूशहत] रा० ७७४ दूरूवत्त [दूरूपत्व | जी० ३।१८४ दूस [ दूब्य ] ओ० ५१. जी० ३।६०८ दूसरयण | दूध्यरत्न ] ओ० ६३ देव [देव] ओ० ४४,४७ से ५१,६५,७१,७३,७४, == से ६४,११४,११७,१२०,१४०,१४१, १२४,१४७ से १६०,१६२,१६७,१७०, १९४1१३,१४, रा० ७,६ से १६,२४,३२,४१

**Ę**Q¥

से ४४,४६ से ४९,१४ से ६१,६८,६८,७१ से ७४, ११८ से १२०,१२२,१२४,१२६, १८५ से १८७,२४०,२४९,२६६,२६८,२७०, २७४ से २९१,६४४ से ६६७,६९८,७४२,७४३ ७७१,७८६,७९७ से ७९६,५१४. जी० १।४१, xx,xe,=8,=x,==,=0,e?,80?,88e, १२३,१२=,१३५,१३६; २।२,१५ से १६, ३४ से ३४,३९ से ४७,६२,६७,६८,७१,७२, ७४,७८,=१,६० से ६३,६४,६६,१४४,१४४, १४८,१४९,१४१; ३1१,८६,१२७,१२६1२, १७६, १७८,१८०,१८२,१८४,१९४,१९८ से २०६,२१७,२३० से २३४,२३६,२३८,२३६, २४२ से २४४,२४६,२४७,२४९ से २५२, र४४ से २४७,२९७,२९८, २३३ से ३४४, ३४०,३५१,३५८ से ३६०,३७२,४०२,४१०, ४२९,४३२,४३४,४३९ से ४४७,४४४ से ४६४, \*\*\*\*\*\* ६६६,६८०,७००,७०१,७१०,७२१,७२४, ७७५,७६<del>१</del>,५०५,५**१६,५२६,५४०,५४२**, ۳۶**٤,۳۶٤,۳۶٤,۳۶٤,۳۶۵,۳۶**۵,۳۶,۳**۶** -++E,=67,56X,55X,686,873,87X, हर७ से हरू४, हरू से ह४०,६४२ से ह४४, EX9, EX9, EX9, EX8, ESS # EE9, EEE, १०१४,१०१७,१०२५,१०२७,१०२६,१०३१, १०३३,१०३५,१०३८,१०३८,१०४१ से १०४४,१०४६,१०४७,१०४९ से १०४६, १०८२,१०८२,१०८४ से १०८७,१०८९ से १०६३,१०९७ से १०६६,११०१,११०५, ११०७,११०६ से १११२,१११४ से १११७, १११६ स ११२४,११३२,११३३,११३७, ११३८; ६११,५,७,८,१२; ७:१,७,८,१६ से २१,२३; ६।१४६,१४८,२०६,२१३,२१८,२२०, २२१,२२६,२२६,२३१,२३२,२४८,२५४,२६७, २७४,२=३,२=६,२९१,२९३

**देवउक्कलिया** [देवोत्कलिका] जी० ३।४४७ रेवजल [देवकुल] रा० १२ देवकज्ज [देवकार्य] जी० ३। ११७ वेवकम्म [देवकर्मन्] जी० ३।१२९१६,=४० **देवकहकह** [देवकहकह] जी० ३।४४७ वेवकहकहग दिवकहकहक रा० २८१ वेवकिब्बिसिय | देवकिल्विपिक | ओ० ११९ वेवकिब्बिसियत्त | देवकिल्विषिकत्व | ओ० १४१ देवकुमार [देवकुमार] रा० ६९,७१ से ७४,७९ से द१,द३,११२ से ११द **देवकुमारिया** [देवकुमारिका] रा० ५३,११५ से ११५ **देवकुमारी | देवकुमारी | रा० ७० से ७४,७**६ से = १,११२ से ११४ वेवकुरा [देवकुरु] जी० २।१३; ३। ६१६, ६३७ वेवकुर [देवकुरु] जी० २१३३,६०,७०,७२,६६, 830,835,880,886; 31225,082 **देवकुल** [देवकुल] ओ० ३୬. रा० ७४३ वेवगइ [देवगति ] रा० १०,१२,४६,२७६ वेवगण [देवगण] रा० ६९८,७४२,७८९. जी० ३।११२० **वेवगति** [देवगति] जी० ३१६६,१७६,१७५,१८०, १८२,४४५ **देवगुत्त** [देवगुप्त | ओ० ९६ **देवच्छंदग | देवच्छ**न्दक | जी० ३,६०७ देवच्छंदय [देवच्छन्दक] रा० २४३,२४८,२९१. जी० ३१४१४,४१४,४१९,४४७,६७४,६७६, 800,805 देवजुइ [देवयुति] रा० ६३,६५,११९ देवजुति [देवद्युति] रा० ५६,७३,११८,७६७ देवज्जूइ (देवधुति) रा० ६६७ **देवज्ज़ुति** [देवद्युति] रा० १२२ देवता [ देवतः ] जी० ३।७३७ देवत [देवत्व] ओ० ७२,७३,८६ से ६४,११४, ११७,१४०,११७ से १६०,१६२,१६७. रा० ७४२,७४३. जी० ३:११२८,११३०

## देवदीव-देस

**देवदीव** [देवद्वीप] जी० **२**।७७६,७७७§ वेयदीवग [देवद्वीपक] जीव ३१७७६,७७७ देवदुहदुहग [देवदुहदुहक] रा० २५१. जी० ३१४४७ वेवदूस [देवदूष्य] रा० २७४,२८१,२९१,७४६. জীত ২।४২৪,४४২,४४१,४५ **देवद्दार |दे**वद्वार] जी० ३:८८५ **देवद्दीयग** [ देवद्वीपक ] जी० ३**।७७**६,७७७ **देवपरिसा** [देवपरिषद् | ओ० ७१. रा० ६**१** देवभद्द [देवभद्र] जी० इं। ६४२. ६५१ देवमहाभद्द |देवमहाभद्र ] जी० ३।६४२,६४१ **देवमहावर** [देवमहावर] जी० ३।९५१ देवय दिवत ) ओ० २,४२,१३६. रा० ६,१०,४८, २४०,२७६,६२७,७०४,७१९,७७६. जीव ३।४०२,४४२ देवया [देवता] ओ० १३९ देवरमण [देवरमण] रा० ७५,५०,५२,११२ देवराय [देवराज] जी० ३। ६१६ से ६२२,१०३६ से १०४४ देवलोग [देवलोक] ओ० ७४१२,१४१. रा० ७९९. जीव ३।६३० देवलोय [देवलोक] ओ० ७१,७२,७४।२,८१ से १३. रा० ७४२,७४३. जी० ३।६३० देववर (देववर) जी० ३।६५१ देवविमाण [देवविमान] रा० १८७ देवसण्णिवाय [देवसन्तिपात] रा० २८१ देवसन्निवाय [देवसन्तिपात] जी० ३।४४७ वेवसमवाय [देवसमवाय] जी० ३।६१७ देवसमिति [देवसमिति] जी० ३। ११७ देवसमुदय [देवसमुदय] जी० ३।११७ **देवसमुद्दग** (देवसमुद्रक) जी० ३१७७८ **देवसयणिज्ज** [देवशयनीय ] रा० २४४,२४६,२६१, ३४३,४१४,७९६. जी० ३१४०७,४०८,४२३, ¥₹**€,¥¥**₹,**¥₹€,¥**₹**Ę**¥0,**Ę**७**₹,**9¥€ देवसोक्ख [देवगौख्य] ओ० ७४।२ देवाणुष्पिय [देवानुप्रिय] २०,२१,४२,४३,४४,

- ५६,४८,६०,६२,११७,११८,१२०. रा० ९,१० १३,१४,१७,५८,६३,९५,७२,७३,२७६,२७८, ६४४,६८१,६८७ से ६१०,६६४,७०४,७०६, ७१३,७१४,७१८,७२०,७२३,७४१,७६४, ७६८,७७४,७७४,७७७,८०२. जी० ३।४४२, ४४४,४४४
- **देवाणुभाग** [देवानुभाग] रा० ६६७
- देवागुभाव (देवानुभाव) रा० ४६,६३,६४,७३, ११८,११६,१२२,७६७
- देविंद [टेरेन्द्र] जी० ३१९१९ से १२२,१०३९ से १०४४,१०५५
- देविड्डि [देवधि] ओ० ७४।२, रा० ४६,६३ ६७, ७३,११८,११९,१२२,६६७ ७८७
- **देवित्त** [देवीत्व] जी० ३।११२८ से ११३०
- **देवुक्कलिया** [देवोत्कलिका] रा० २८१
- देवुज्जोय [येवं:द्द्यं:त] रा० २८१. जी० ३१४४७
- **देवोद** [देवोद] जी० ३।७७६,७७७,९४३,९४४
- **देवोदग** [देवोदक] जीव ३।७७०,७७१
- देस [देश] ओ० १९,१९४।१०. रा० १७४,१८०, १न२,१८४,१८८,१९२ से १९७,७६४,७७४, ८०४. जी० १।४,४;३।२६६ से २६९,२८६, २९२,२९४,२९६,४७९ से ४९६,६४०,६४९, ६६४,७०२,७२६,८०८,८२९,८४,८५,८,४ ८६९,८७४,८८

- **देसंतर** [देशान्तर] ओ० ११६,११७
- देसकहा [देशकथा] ओ० १०४,१२७
- देसकालण्णया [देशकालज्ञता] ओ० ४०
- देसभाग [देशभाग] रा० ३२,३६,३६,६६,१६४, २१८,२६१,२८१,३००,३२१,३३३. जी० ३।२७४,३६४,३७२,४४७,४६०,४६४,४४४, ४९६,७४६,७६२,७८२,८४४,४१३
- **वेसभाय** [देशभाग] ऑ० २,६,*८,१९,५५,१९,२७*,२६२. रा० ३,३५.१२४,१८६,२०४,२१७,२२७,२३८, २५२,२६३,२६४,३२६,३३८,३३८,३४६,४१४, ४७६,५३६,५६६,७४४,७७२. जी० ३।२६३, ३१०,३१३,३३८,३४६,३४६,३६१,३६४, ३६८,३६६,३७७,३८६,४००,४१३,४२२, ४२७,४५८,४६०,४८६,४६१,४६८,४०३, ४२१,५२७,५३४,४४२,५४६,६३४,६३ ६४२,६४६,६४६,६६३,६६८,६७१ से ६७३, ६७८,६८४,६०६,६११,६१८,१०२३,१०३६
- **देसावयासिय** [देशावकाशिक] ओ० ७७
- देसिय [देशित] जी॰ १११
- **देसी** [देशी] ओ० ४९,७०. रा० ५०६,५१०
- **देलीभासा** {देशीभाषा } ओ० १४८,१४६
- देसूण [देशोत ] रा० १२८,२०१. जी० २।२६ से ३४,३७,४४ से ६१,६४,८४,८४,८५,९४,११६, १२३,१२४,१३२;३।२४७,२४०,२४६,२७३, २६८,३६२,३६९ से ३७१,४७०,६२९,६४६, ६७३,६७४,७०९,७३२,८८२;६७२,६४६, १६४,६८,७३,७८९,१४२,१४४,१४६,१६२,१६४, १६४,६७८,२००,२०२ से २०४ देसोण [देशांत] जी० ३।३४३ देह [देह] रा० ७६०,७६१. जी० ३।४९६ देहधारि [देहधारिन्] औ० १९
- **दो** [द्वि] ओ० १७०
- दोकिरिय [द्वेकिय] ओ० १६०
- दोच्च [दितीय] ओ० ११७. रा० १०, १२, १८,

६४,२७९,७०२,७०३, जी० ३११२४,४४४

- दोच्चा [हितीया] जी० १।१२४,२।१३४,१३८, १४८,१४९; ३।२,४,६६,६७,७३,७४,८८,९१, १२४,१६१,११११
- **दोणमुह** [द्रोणमुख] ओ० ६६,**६६ से ६३,६४, ६६,१४४ १४**६ से १६१,१६३,१६८. रा० ६६७
- वोभगग [दौर्भाग्य | जी० ३। १९७
- **दोमासिय** [ढ़ैमासिक] झो० ३२
- बोमासिया [ द्वैमासिकी ] ओ० २४
- **दोर** [दवरक] रा० २७०. जी० ३।४३४
- **दोवारिय** [दौवारिक] ओ० १८. रा० ७१४,७१६, ७६२,७६४
- दोस | दोष | अो० ३७,७१,११७,१६१,१६३. रा० १७३,७९६. जी० ३.२५४,४९५ दोसिणाभ! [दे० ज्योत्स्नाभा] जी० ३।१०२३

# ध

घंत | ध्मात ] रा० २६,७४७. जी० ३।२५२ बंतपुरुव [ध्मातपूर्व] रा० ७१७,७६३ वण [धन] ओ० ४,१४,२३,१४१. रा० ६७१, 330,833 धणक्खय [धनक्षय] जी० ३।६२= धणिय [दे०] ओ० ४६. रा० ७७४. জী০ হাধ্বহ चण् [धनुष्] ओ० १,६४,१७०,१८७,१९४,११. Tto 8==,8=E,28E,26,25%,028. जी० १।६४,११२,११६,१२४; ३।८२,६२, २१८,२६०,२६३,३४३,४६२,४९८,६४७, ६४९,६७३ से ६७४,६८३,७०६,७८८, १०१४,१०२२ धणुग्गह [धनुर्घह] जी० ३।६२८ धणुपट्ट [धनुष्पृष्ठ] जी० २।५५७,६२१ धणुवेद [धनुर्वेद] ओ० १४६ धण्वेय [धनुर्वेद] रा० ८०६

धण्ण [धान्य] ओ० २३ धन्म [धन्म] ओ० १६४. रा० ६९४ धमावियपुब्व [ध्मापितपूर्व] रा० ७५७,७६३ धम्म [धर्म] ओ० १९,२१,४०,४६,५४,६९,७१, ७२ ७४ से ७७,७१ से ८१,१४२,१४४,१६१, १६३. रा० म,१६,६१,६२,२६२,६९३ से ६९४,७००,७१७ से ७२०,७३२,७४२,७७४, ७७९,७५०,५००,५०२. जी० ३.४१७ धम्मकहा [धर्मकथा] ओ० ४२,४३. ग० ७७५ भन्म [माण] [धर्म्यय्यान] ओ० ४३ धम्मक्लाइ [धर्माख्यायिन्] ओ० १६१,१६३. ৰাত ভথুই धम्मचरण [धर्मचरण] जी० २,२६ से २९,५४ से ४७,६४,५४,५५,५६,४१४,१२३,१३२ षम्मचितग [धर्मचिन्तक] ओ० ९३ धम्मज्यम [धर्मध्वज] ओ० १६ धम्मणायग [धर्मनायक] रा० २९२. जी० ३।४९७ धम्मस्थिकाय [धर्मास्तिकाय] रा० ७७१. जी० ११४ धम्मदय [धर्मदय] रा० ८,२९२. जी० ३।४५ 9 धम्मदेसय [धर्मदेशक] रा० द,२६२. जी० ३।४५७ षम्मवायम [धर्मनायक] रा० द घम्मपलज्जण ]धर्मप्ररञ्जन ] ओ० १६१,१६३. বা০ ৬খ্য वम्मपलोइ [धर्मप्रलोकिन्] रा० ७१२ घम्मप्पलोइ [धर्मप्रलोकिन्] ओ० १६१,१६३ घम्मसमुदायार [धर्मसमुदाचार] ओ० १६१,१६३ षम्मसारहि [धर्मसारथिन्] रा० ८,२१२. जी० **ই**।४१७ धम्मसीलसमुयाचार [धर्मशीलसमुदाचार] रा० ৬१२ धम्माणुय [धर्मानुग] ओ० १६१,१६३. रा० ७४२ धम्मायरिय [धर्माचार्य] ओ० २१,५४,११७ रा० 930,300,880 धम्मिट्ठ [धर्मिष्ठ] भो० १६१,१६३. रा० ७१२

बन्मिय [धार्मिक] ओ० ५२,५७,१६१,१६३. रा० २७०,२८८,६६७,६८७,७४२,७४३. जी० \$18\$X'8X8 धम्मोवदेसग ∫धर्मोपदेशक | ओ० २१,४४,११७. 210 688,685 √धर [धृ]--धरति जी० ३।७३३ घर [घर] ओ० ५,८,१९,२१,४७,४९,४४,७२. रा० ५,२२,१४५,२६२,६६४,७७१. जी० ₹17६=,२७४,३**=७,**४**१७,**४६२,**१=४,६७**२ 352,202,500 धरण [धरण] जो० ६८. रा० २८२. जी०३:२४४ से २४७,२५०,४४⊏ षरणितल [धरणितल] ओ० २१,४४. रा० द, ४६,२१२. जीव ३।४१७ धरांणयल [धरणितल] जी० ३।४५७,८८२ घरिज्जमाण [ध्रियमाण] ओ० ६३,६५. रा० ६६२,७००,७१६ धरिसणा [धर्षणा] ओ० ४६ **भरेज्जमाण** [झियमाण] रा० ६८३ धव [धव] ओ० ६,१०. जी० १।७२; ३।३८८ ধ্দর্ ववल [धवल] ओ० १९,४६,४७.६३,६४. रा० २४५,२४६,२८५, जी० ३।३७२,४१६,४१७, 828,238,289 धवलहर [धवलगृह] जी० ३।५९४ धाई [धात्री] रा० ५०४ घाउरत [धातुरक्त] ओ० १०७,११७,१३० षातइसंड [धातकीयण्ड] जी० ३१७११ धायइरुक्ख [धातकीरूक्ष] जी० ३।८०८ धायइवण [अलकीवन] जी० ३,८०८ धायइसंड [धातकीपण्ड] जी० ३।७०८,७१४ से ७२०,७६८,७७०,७७१,७९६ से ८००, न०२ से न०४,न०६,न०न,न०६,न३ना२३,२४ धायई [धातकी] जीव ३।७७४,८०८ धायईसंड [धातकीयण्ड] जीव शदवर,नइनार४ धायतिसंड [धातनीगण्ड] जी० ३७६६

**भा**रग-बगरगुण

## **E**E & 0

धारग [धारक] जो० ९७ धारणा [धारणा] रा० ७४०,७४१ धारि [धारिन्] ओ० ४७, ४१,७२. जी० ३। ५९७, १०१४ षारिणी [धारिणी] ओ० १४. रा० ४ धारित्तए [धारयितुम्] ओ० १०५ धारेमाण [धारयत्] रा० २५४. जी० ३१४१६ धिइ [धृति] औ० ४६ जी० ३।११न धिति [धृति] जी० ३।११८,११६ धीर |धीर] ओ० ४६ धुरा [धूर्] ओ० ६४ धुराग [धूपक] रा० १७३,६८१, जी० ३।२८५ मुव [मुव] रा० २००. जी० ३।४९,२७२,३४०, 980 **धूमकेतु** [धूमकेतु] ओ० ४० षुमण्पभा [धूमप्रभा] जी ०३।४१,४३,४४,१०१, 880,888 धुमबट्टि [धूपवर्ति] जी० ३।४५७ धूमिया [धूमिका] जी० ३।६२६ ध्या [दुहितृ] जी० ३।६११ मुलि [धूलि] जी० ३।६२३ धूव [धूप] ओ० २,५५. रा० ६,१२,३२,१३२, २३६,२४८,२७६,२८१,२६०,२६२ से २९७, ३००,३०५,३१२,३४१,३५४,३५४,,३५६, जी० \$ 307,307,385,888,888,885,884,885,884 से ४६२,४६**४,४७०,४७७,५१**६,५२०,५५४, ६७६,६०५ धूवघडिया [ धूपघटिका]रा० २३६. जी०३।३९८, 882,803 धूवधडी [धूपघटी] रा० १३२. २।३०२ **घूबवट्टी** [घूपर्वात] रा० २९२ षोत [धौत] जी० ३,५९६ वोय [धौत] ओ० १९,४७. रा० २६. जी० 31252,580

#### न

न [न] ओ० ४७. रा० २००. जी० ३।२७२ नई [नदी] ओ० १९. जी० ३।७७५ नईमह [नदीमह] रा० ६०० नउल [नकुल] रा० ७७ नंगलिय [लाङ्गलिक] ओ० ६८ मंदणवण [नन्दनवन] रा० १७३,६७०. जी० 31254,280 नंदा [ तन्दक] रा० २८२, जी० ३।४४८ मंदा ( नन्दा ) रा० २३३,२७३,२५८,३१२,३५०, ६४६. जी ३।४४६ नंदाचंपापविभत्ति [तन्दाचम्याप्रविभक्ति] रा० ६३ नंदापविभत्ति [नन्दाप्रविभक्ति] रा० ६३ नंदिधोस [नन्दिघोष] रा० ७७,१७३,६८१. जी० 31485 नंदिमुयंग [नन्दिमृदङ्ग] जी ३।७८ **नंदियावत्त** [नन्द्यावर्त्त | ओ० १२. रा० २९१ नंदिरक्ख (नन्दिरूक्ष) जी० ३।३८८ से ३६० नंदिस्सर [नन्दिस्वर] जी० ३।५९८ नंबी [नन्दी] रा० ७४१,७४३ नंदीमुद्दंग (नन्दीमृदङ्ग) रा० ७७ नंदीमूह [नन्दीमुख] जी० ३।२७४ मंदीसरवर [नन्दीम्बरवर | रा० ५६ नक्कडिण्णग [नक्कडिम्नक] ओं० ६० नक्ल [नख] २१४ मक्खत्त [नक्षत्र] रा० १२४. जी २।१८;३।७०३, ७२२,न३०,द३८।३,४,८,११,१३,२२,३०, 8000 नषलत्तविमाण [नक्षत्रविमान] जी० २१४३; 300818 नखबेदणा [नखवेदना] जी० ३।६२० नग (नग) जी० ३।४६६ नगर [नगर] ओ० १८. रा० ६६७,७४४,७४६ ७६२,७६४,७७४. जी० ३।४९६ नगरगुण [नगरगुण] ओ० १९४।१६

## नगरदाह-चसिण

नगरदाह [नगरदाह] जी० ३।६२६ नगरमाण [नगरमान] ओ० १४६ नगरी [नगरी] ओ० १९. रा० ६६९,६७०,६८०, **६** म **१,६** म ३,६ म ४,६ म ७,६ म म,६ ९ ९,७००, ७०२ से ७०४,७०६,७०८,७१० से ७१२, *७२६,७४१,७७४,७७६,७*८० नगाइ [नग्नजित्] अो० १६ नगाभाव [नग्नभाव] ओ० १४४,१६४,१६६ **√नच्च** [नृत्]-—नच<del>्चि</del>ज्जइ. रा० ७**५**३ नच्चंत [नृत्यत्] ओ० ४६ नच्चणसील [नृत्यनशील] ओ० ६५ मट्ट [नाट्य] ओ० ६८. रा० ७,७८,५०६. जी० ३।२८४,३४० नट्रविधि [नाट्यविधि] रा० ७६ नट्टविहि [नाट्यविधि] रा० ६३,६४,११८,२८१ नट्रसज्ज [नाट्यसज्ज] रा० ६९,७० नट्ठ निष्ट] रा० २५१ नड [नट] ओ० १,२ नडपेच्छा [नटप्रेक्षा] ओ० १०२,१२४ नत्त्य [नप्तु] रा० ७५०,७५२ √नद [नद्]---नदंति. जी० २१४४७ नदी [नदी] जी० २। ५४१ मर्युसग [नपुंसक] जी० २। १९ से ११६, १२०, १२१,१२३,१२५ से १२६,१३२ से १३५, १४० से १४० नपुंसर्गालगसिद्ध [नपुंसकलिङ्गसिद्ध] जी० १।व नपुंसगवेद [नपुंसकवेद] जी० २।१३६, १४०; 61828,825 नपुंसगवेदग [नपुंसकवेदक] जी० ९११३० नपुंसगवेय [नपुंसकवेद] जी० १। ६६, १३६ मपुंसगवेयग [नपुंसकवेदक] जी० ६।१२१ नपुंसय [नपुंसक] जी० २।११७ से ११९, १२२ से १२४ √नमंस [नमस्य]---नमंसइ. रा० ७१४----नमसंति. रा० १०---नमंसति. रा० १२०

रा० ७०६ --- नमंसिस्संति. रा० ७०४ नमंसण [नमस्यन] रा० ६८७ नमंसणिज्ज [नमस्यनीय] ओ० २ नमंसित्तए | नमस्यितुम् ] रा० ६ नमंसित्ता [नमस्यित्वा] ओ० ६९. रा० १०. জী৹ ২়া४৬१ नमिय [नमित] रा० २२५. जी० रे।६७२ नमो [नमस्] रा० ५ नय [नय] ओ० २५. रा० ६८६ √नय [नद्]—नयंति. रा० २५१ नयण [नयन] ओ० १,१४,६९. रा० २२०. জী০ ২।২৪২ नयरी [नगरी] ओ० १,१९,६९. रा० १,२,८, ९,१४,४६,६७७ से ६७९,६८३,६८६ से 570,020,923 मर [नर] ओ० ४,५,६४,६९. रा० १७,१८,२०, ३२,३७,१४१,१७३,१९२. जी० ३।२६६, 298,300,860 नर (कंता) [नरकान्ता] रा० २७६ नरक [नरक] जी० ३।८६ नरकंठ [नरकथ्ठ] रा० १४४,२४५. जी० ३।३२५ नरकंठग [नरकण्ठक] जी० ३।४१६ **तरकंता** [नरकान्ता] जी० ३.४४४ नरग [नरक] ओ० ७१. जी० ३।८६,१२७ नरपवर [नरप्रवर] रा० ६७१ नरय [नरक] रा० ७४०,७४१. जी० ३।८३, 51359,388,02 नरयपाल [नरकपाल] रा० ७११ नरयावास निरकावास ] जी० ३।७७,१२७ नरवइ [नरपति] ओ० १ नरवसभ [नरवृषभ] जी० ३।१२९।१ नरिंद (नरेन्द्र] ओ० २१,५४ मलवण [नलवन] ओ० २६ नलिण [नलिन] ओ० १२,१४०. रा० १७४, দৃং হ, জী০ ২। ২ ১ ২

नलिणा [नलिना] जी० ३।६८६ नव [नवन्] औ० ६३. रा० ५०१. जी० २१२० मब [नव] जी० ३।३११ नवंग [नवाङ्ग] ओ० १४८,१४९ नवणिहिपति [नवनिधिपति] जी० ३।४८६ नवम [नवम] जी० ३।३५६ नयय [नवक] रा० ७४१ नवरं [दे०] जी० १।७७ नवविह [नवविध] जी० १।१०; ६।२५५ नह[नख]जी० ३।३२३ नाइय [नादित] रा० ११,२८०,६१७. जी० ३१११८,११९,४४८,८१७,८६३ नाउं [ज्ञातुम्] जी० ३।५३५,२६ नाग [नाग] ओ० १९,६८. रा० १६२,२८२. जी० ३।२३२,४४८,७३३,७८०,६५० नागकुमार [नागकुमार] जी० २।३७; ३।२४४, ২४ন **नागकुमारराय** [नागकुमारराज] जी० ३।२४४ से २४७,२४**६,२**४०,६**४७**,६**४९**,६६० नागकुमारिंद [नागकुमारेन्द्र] जी० ३।२४४ से 286,288,280,586,586,580 भागवंत [नागदन्त] रा० १३२,२४० नागवंतग [नागदन्तक] रा० १४०. জী০ হাইছদ नागदंतय [नागदन्तक] रा० ११३,२३६. जी० ३।३९७,३९८८,४०३ नागपडिमा [नागप्रतिमा] रा० २५७. জী০ ২।४१ন नागमंडलपविभक्ति [ नागमण्डलप्रविभक्ति ] रा० ६० नागमह [नागमह] रा० ६८८ नागरपविभक्ति [नागरप्रविभक्ति] रा० १२ नागराय [नॉगराज] जी० ३१७४८,७४० नागलया [नागलता] रा० १४५. जी० ३।२६८ नागलयापविभत्ति [नागलताप्रविभक्ति] रा० १०१ नाडय नाटक रा० ७१०,७७४

६६२

नाण [ज्ञान] ओ० १९,२६. रा० ८,६८६,७३८, ७६८. जी० १११४,१०१; ३११२७,१६०; 61555 नाणस [नानात्व] रा० ७६२,७६३ नाणसंपण्ण [ज्ञानसम्पन्न] रा० ६८६ माणा [नाना] रा० ६६,७०,१३०,१३२,१६०, १६०,२२न,२४६,२७०,७६न. जी० १।१३६; 31268,344,388,3440,80,880,683, ६७२ नाणाविह [नानाविध] जी० १७२; ३१२७७, ३७२ नाणि [ज्ञानिन्] जी० २।३०;३।१०४ नाणोवलंभ [ज्ञानोपलम्भ] रा० ७६ द नातव्य [ज्ञातव्य] रा० ३।६८८ नादित [नादित] जी० ३।४४६ नाणा [नाना] जी० ३।३३३ नाभि [नाभि] रा० २५४ नाम [नामन्] ओ० १,२. रा० १,२,६,४६,१२४, २४६,२न१,६६न,६७२,६७३,६७६ से ६७६, ६८६,६८७,६८६,७०३,७०६,७१३,७३२, ७६९. जीव ३१३,४,१२८,३००,४१०,४४७, ४९३,४९४,६३२,६३८,६३६,६६०,६६६, ६६८,७११,७४६,७६४,५१४,५३१,५३८,५३ 528,633,8022 नामग [नामक] जी० ३।२४ नामाधज्ज (नामधेय | रा० ८०३ नामधेज्ज [नामधेय] जी० ३१६९९,९७२ नामधेय [नामधेय] रा० =,७१४,७१६ नायव्य [ज्ञातव्य] जी० ३११२९।३ नायाधम्मकहावर [जाताधर्मकथाघर] ओ० ४५ नारय [नारद] ओ० ९६ नाराय [नाराय] जी० १।११६ नारायग्ग (नाराचाग्र) जीव शहर नारि [नारी ] ओ० ६६ नारिकंता [नारीकान्ता] रा० २७१. জী৹ ই⊧४४५

नारी [नारी] रा० १७३ नाल (नाल) जी० ३।६४३ नालिएर | नालिकेर | जी० १।७२ नाली | नाडी | जी० ३।७५ नावा [नो] जी० २।७९२ नासा [नासा] रा० २८५. जी० ३।४५१ **नासिगा** [नासिका] रा० २१४ निउण | निपुण ] ओ० ६३. रा० ६९,७०,६७२, ७४६ से ७६१, ५०४. जी० ३।११५ निव्णा (निन्दना) ओ० १५४,१६५,१६६. रा० ५१६ निब [निम्ब] जी० १।७१ निकर (निकर] ओ० १३ निकुरंब [निकूरम्ब | रा० ७०३. जी० ३।२७३ निकुरुंब [निकुरुम्ब ] ओ० १९ निक्कंकड [निष्कच्चट] ओ० १२,१९४. रा० २१, 23,32,38,35,828,828,884,840. जी० ३।२६९ निक्कोह (निष्कोध) ओ० १६५ निक्लमंत | निष्कामत् | जो० ३।८३८।१४ निष्त्रमण [निष्कमण] जी० ३।१९४,९१७ तिगम (निगम] ओ० १८,६८,८२ से ६३,६४, हद, १४४,१४ म से १६१,१६३,१६८. रा० ६६७,७४४,७४६,७६२,७६४ √निगिण्ह [नि-नग्रह्]—निगिण्हइ. रा० ६०३ तिगांच | निर्धन्थ | ओ० २४,७६ से ५१,१२०, १६२,१६४. २१० ६३,६४,७३,७४,११८, ६९४,६९८,७३८,७४२,७८६ √निश्वच्छ [निर्+गम्]--निग्गच्छइ. ओ० ६७. रा० २७७---निम्गच्छति औ० ७०. रा० ७४ —निमाच्छति. रा० २५३ निगण्छमाण | निगच्छत् | ओ० ६० निगाच्छिता (निर्गत्य ) ओ० ६९. रा० २८३ तिरामण [निगमन] जी० २१८४१ निग्गय [निगंत] रा० ६,७१४

निग्गह [निग्रह] ओ० ३७. रा० ६८६ निग्गुण [निर्गुण] रा० ६७१ निग्धोस [निर्घोष] जी० ३।४४८,४५७ निघंटु | निघण्टु ] ओ० ६७ निघस [निकष] रा० २८. जी० ३।२८१ निचय (निचय) रा० ३१ निचिय [निचित] ओ० १९. रा० १२,७४४,७४८, ७४६,७७२. जी० ३।११८,५६६ निच्च | नित्य | ओ०४६. रा० १४. जी० ३१३१०, ४६४,६३६।१७ निच्छय [निश्चय] ओ० २५, रा० ६७४,६८६ निच्छोडणा | निष्छोटना | रा० ७७६ निच्छोडित्तए (निश्ठोटयितुम् ) रा० ७३६ निजुद्ध (निर्युद्ध) ओ० १४६. जी० ८०६ निज्जरा | निर्जरा | ओ० १२०,१६२,१६९. रा० ६६८,७१२,७८६ निक्तिय [निर्नित ] ओं० १४. रा० ६७१ निज्जीव | निजीव | ओ० १४६. रा० ८०६ निज्जुत्त [निर्युक्त ] जी० ३।२८४ निट्टिय [निष्ठित] आं० १८३,१८४. रा० ७७४ निट्ठर | निष्ठुर ] रा० ७९४. जी० ३१११० निडाल (ललाट) जी० ३:३०३,५९६ √निहा | नि-+-द्रा] --- निद्दाएज्ज. जी० ३।११६ निद्ध (स्निग्ध ) जी० ११४,४०; ३१२७४,४९६ निद्धंत | निध्मीत | जीव २१४६०,४६६ मिद्यम | निर्धुम | जी० ३। ५६० निद्घ्य | निढृंत | ओ० ५,⇒. जी० ३।२७४ निष्पंक [निष्पङ्क] ओ० १२. रा० २१,२३,३२, २४,३६,१२४,१४४,१४७. जीव ३।२६६ **सिप्पकंप** [ निष्प्रकम्प | आं० ४**६** निष्पच्चक्लाण | निष्प्रत्याख्यान | रा० ६७१ निष्फन्म | निष्पन्त | जी० ३।६०२ निबद्ध [निबद्ध] रा० ७७२ निब्मंछण | निर्भर्त्सना | रा० ७७६ निक्मंछित्तए | निर्मेटिततुम् | रा० ७७६ निभ [निम] रा० ५१

**निमल्जग** [निमग्नक] ओ० ९४ निमित्त [निमित्त] जी० ३।१२६।६ निमिसिय | निमिषित | जी० ३।१११ निमोलिय | निमीलित ] जी० ३११२६। म निम्मल | निर्मल | ओ० १२,१९,४७. रा० २१, 23,32,48,36,828,830,8820,888,886,840. जीव ३।३२२,४९६,४९७ निम्माण | निर्माण ] ओ० १६८ तिम्माय | निर्माय | ओ० १६५ निम्मिय (निमित) रा० १७२. जी० २।२५५ निम्मेर | निर्मेर | रा० ६७१ नियइपव्वय [नियतिपर्वत] रा० १८१ नियइपव्यम | नियतिपर्वतक | रा० १०० √नियंस | नि + वस् } -- नियंसेइ. रा० २९१ ---नियंसेति. रा० २५५ नियंसण | निवसन ] रा० ६९ नियंसेता | निवस्य ] रा० २५५ नियग [निजक] रा० १२०.७७४ नियडि [निकृति] रा० ६७१ नियम [नियम] ओ० २४ रा० ६८६,७२३. जी० १ ३०,६४,८७,६६,११९,१३३,१३६; 31808; 83613; 535188,8668,8805 नियय [नियत] जी० ३।२७२,७६० निरंगण [निरङ्गण] ओ० २७. रा० ८१३ निरंतर | निरन्तर ] रा० १२.७४४,७७२ निरंतरिय [निरन्तरित] रा० १३० निरय [निरय] जी० ३।१२६,१२७:२ निरयभव [निरयभव] जी० ३।११६, १२६।५ निरयवेषणिज्ज | निरधवेदनीय ] रा० ७११ निरयाउय | निरयायुष्क | रा० ७४१ निरयावास | निरयावास | जी० ३:१२, ७७,१२७ **निरवसेस** [निरवशेष] जी० ३।१⊏४, ४१२,४२६, 620 **निरालंबण** | निरालम्बन | आ० २७, रा० ५**१३** निरालय | निरालय] ओ० २७. रा० ५१३ निरावरण [ नि तवरण ] ओ० १४३,१६४,१६६

√निसंभ [नि+रुध्]—निरुंभइ अो० १८२ निरंभिता (निरुध्य) ओ० १८२ निरुत्त (निरुक्त) ओ० ६७ निश्वलेव | निरुपलेप | आ० २७. रा० = १३. জী০ ২। ২৪ন निरुवसम्म (निरुपसगं) जी० ३१४८८ निरुवहय [निरुपहत] ओ० १९. जी० ३। १९६ निरेयन (निरेजन) ओ० १८३,१८४ निरोदर | निगेदर | जी० ३१४६७ निरोध [निरोग | जी० ३।२७४ **निरोयय** [निरोगक] ओ० ६ **निरोह** [निरोध | ओ० ३७ निलाड (ललाट) रा० ७० निल्लेव [निलेंग] जी० ३।१६६, १६७ निल्लेवण [ निर्लेपन ] जी० ३।१९६ तिल्लोह [निर्लोभ] ओ० १६५ √निवाड | नि + पातय् ] — निवाडेइ रा० २१२ निवाडिता [निपात्य] रा० २९२ निवाय [निपत] जी० ३।५६ √निवेद |नि+वेदय् |--निवेदिज्जासि. ओ० २१ √ निबेय | नि⊣-वेदय]—निवेएमो. रा० ७१३ √निवेस [नि-|-वेशय्]---निवेसेइ. ओ० २१. হাত দ **निवेसेत्ता** [निवेश्य]—ओ० २**१.** रॉ० द निटवण | निर्त्रण | जी० ३। १९६६ √ निव्यत्त { निर्⊣वर्त्तय् ] --- निव्वत्तेज्जासि रा० ७४१ निस्वय [निर्न्नत] २०० ६७१ निव्वाघाइम [निर्व्याधातिन्, निर्व्याघातिम] ओ० ३२. जी० ३।१०२२ निब्वाण | निर्वाण | ओ० १६५।१६ निविद्यद्य | निविकृतिक | ओ० ३५ निविषण | निविण्ण | रा० ७६४ निव्विण्णाण | निविज्ञान | रा० ७३२,७३७,७६४ निव्वितगिच्छ [निविचिकित्स] ओ० १२०,१६२ निव्विसय [निविषय | रा० ७६७

६६४

## निव्वुइकर-नोपज्जत्त

निव्दुइकर [निर्वृतिकर] रा० १७३. জী০ ३:২০४, ६७२ निव्वुतिकर [निर्वृतिकर] रा ३०,१३५ निसण्ण [निषण्ण] ओ० ११७. रा० ७९६. जी० ३।দ९६ निसम्न [निषण्ण] रा० २२५ निसम्म [निशम्य] रा० १३ निसामित्तए | निशमितुम् | रा० ७७४ निसिय [निशित] रा० २४६ **√तिसिर** [नि <del>¦ स</del>ृज्]---निसिरंति. रा० १०---निसिरति. रा० ६५---निसिरेइ. रा० ७९४ निसिरितर [निसर्व्ट्म] रा० ७४व निसीइत्ता [निषद्य] ओ० २१ निसीदण [निषीदन] ओ० ४० √निसीय [नि+षद्]-निसीयइ. ओ० २१---निसीयंति. रा० ४८ - निसीयह. रा० ७४३ निसीहिया [निषीधिका, नैषेधिकी] रा० १३१, १३४ निस्ससंकिय { निःशङ्कित ] ओ० ४२. रा० ६८७, ૬≂ શ निस्सास [निःश्वास] रा० ७९६,=१६ निस्सील [निःशील] रा० ६७१ निस्सेयस [निःश्रेयस] ओ० ४२. रा० २७६,६८७ निहृट्टु (निहृत्य) रा० = निहय [निहत] ओ० १४. रा० ६७१ नोरय | नीरजस् | ओ० १२,१८३,१८४ नील (नील) ओ० ४,१२. रा० २२,१२८,१७०, ६६४,७०३. जीव १।४,४०; ३।२२,४४, २७३,२९०,१०७४,१०७६ नोलच्छाय |नीलच्छाय | ओ० ४. रा० १७०, १७३. जी० ३।२७३ नीललेस | नीललेश्य | जी० १। १६३ नीललेसा (नीलन्दश्या) जी० अहह,१०० नीललेस्स [नीजलेण्य] जी० ६ १८५,१६६ नीललेस्सा [नीललेश्या] जी० ११२१

नोलयंत [नीलवत्] जी० ३१४४४,६३२,६४७,६४९ £ £ 5, 98 X नीलवंतदृह [नीलवदुद्रह] जी० ३।६३१,६४०,६४२ ६५६ से ६६१,६६६ नीलवंता (नीलवती) जी० ३१६४९ नीलुप्पस [नीलोत्पल ] ओ० १३. रा० २६ नीलोभास [नीलावभास] ओ० ४. रा० १७०, ७०३. जी० ३।२७३ नीव [नीप] जी० ३।३८८ नीसास [निःश्वास] रा० २८५,७७२. জী০ ২।২১১ नीहार (नीहार) रा० ७७२ **मूणं** [नूनम्] जी० ३। १८ - २ नेम [नेम] रा० १७४,१६०. जी० ३।२६४,२८७, 300 नेयव्व [नेतव्य] जीव २।१५०; ३।३०९ नेरइय [नेरयिक] रा० ७५१. जी० १।५१,५४, £8,57,59,67,6**4,808,886,878,87**3, १२८,१३६; २।६९,१००,१०८,१२७,१३४, 234,236,285,286; 312,2,00,=5,63, € ¥, € €, E =, १ 0 ₹, १ 0 € से ११२, 8 1 =, 8 8 €, १२१ से १२३,१२५,१२६।४,६,७,५,१४४,१४३ १६२; ६११,७,१२; ७११ से ३, १६,२२; 81280,283,220 नेरइयत्त [नेरयिकत्व] जी० ३।१२७ नेल [नैल] ओ० १६ नेसज्जिय [नेषद्यिक] ओ० ३६ नेहाणुराग (स्तेहानुराग) जी० ३।६१३ नो नो रा० ६२. जी० ११२४ नोअपज्जत्तग | नोअपयोप्तक | जी० हायम,ह४ नोअपरित्त [नोअपरीत] जी० १७४,८६,८७ नोअभवसिद्धिय [नोअभवसिद्धिक] जी० १।१०१ नोअसण्णि | नोअसंजिन् ] जी० १।१३३; ६।१०१, १०४,१०५ नोइंदिय [नोइन्द्रिय] जी० १।१३३ नोपज्जल [नोपर्याप्त] जी १।११

नोपज्जत्तग [नोपर्याप्तक] जी० ६।८८,९४ नोपरित्त [नोपरीत] जी० हा७४ नोबायर [नोबादर] जी० ६।६४,६८ से १०० नोभवसिद्धिय [नोभवसिद्धिक] जी० ६।१०६ नोसण्णा |नोसंज्ञा] जी० १।१३२ नोसण्णि [नोसंज्ञिन्] जी० १।८६,१३३; ६।१०१, १०४,१०५ नोसुहुम [नोसुध्म] जी० ६।६५,६८ से १०० (प) पइट्टा [प्रतिष्ठा] ओ० १९.२१,५४ पइट्ठाण [प्रतिष्ठान] ओ० १६८ रा० १३०, १३१,१४७,१४८, १६०,२८०, जी० ३ २६४, ३०१,३२१ पइट्टिय [प्रतिष्ठित] ओ० १९४।१,२. जी० ३११०९७ से १०६४ पइण्णा [प्रतिज्ञा] ओ० १४२,१४४. रा० ७४८ से 6x0,6x2,6xx,6x4,6x5,640,647, 628,003,500,502 पड्भय [प्रतिभय] ओ० ४६ पइरक्लिया | पतिरक्षिता ] ओ० ६२ पइरिक्क [दे०] जी० ३। ५१४ पइसेज्आ [पतिशय्या] ओ० ६२ पईव | प्रदीप ] रा० ७७२ √ पउंज [प्र+युज्]—पउंजइ. रा० ६७१. पउंजमाण [प्रगुञ्जान] ओ० ६४ पउंजियन्व [प्रयोक्तव्य] रा० ७७६ पउद्ग [प्रकोब्ठ] ओ० १६. जी० २१४,६६ पउत [प्रयुत] जी० २१८४१

पडम पदा औ० १२,१६,१५०. रा० २३,१३१,

१३८,१४७,१४८,१९८,१९७,२७९,२८०,२८८,

**≍११.** जी० ३।२४६,२६६,२६१,३०१,४४६,

४४४,४९७,४९८,६४२,६४३,६४२ से ६४४,

६४७,६४८,८२६,८४१,९३७

पडमगंघ | पद्मगन्ध | जो० २।६३१

पउमजाल [पद्मजाल] रा० १९१. जी० ३।२६४ पउमद्दह [पद्मद्रह] जी० ३१४४५ पडमपत्त [पद्मपत्र] रा० २४. जी० ३।२७७ पउमपन्हगोर [पद्मपक्षमगौर] ओ० ५१, जी० 830818 पउमण्पभा (पद्मप्रभा) जी० ३१६८३ पउमरुक्ल [पद्मरूक्ष] जी० २। = २ ६ पउमलया [पद्मलता] ओ० ११,१३. रा० १७,१८, २०,३२,३४,३७,१२६,१४४,१८६. जी० ३१२६८,२७७,२८८,३००,३०८,३११,३१८, 330,3XE,397,3E0,3EE,X5X,E0X पउमलयापविभत्ति | पद्मलताप्रविभक्ति | रा० १०१ पउसवण [पद्मवन] जी० ३। ५२ १ पउमवरवेइया [पद्मवरवेदिका] रा० १७४,१८६ से १६८,२००,२०१,२३३,२६३. जी० ३१२ १७,२४६,२६४ से २७०,२७२,२७३, ₹६२,**₹६**४,६**३२,६३६,६६१,६६**८,६७८, £~3, & ~ E, 60 &, 03 &, 04 8, 04 8, 04 8, 04 E, - ধ্ पउमवरवैदिया [पद्मवरवेदिका] जी० ३।२१७, २६३,२६६,२५६.२९६५,७६५,५१२,५२३, 538,520,552,888 पउमसंड [बद्मपण्ड] जी० ३।०२६ पउमा [पथा] जो० ३।६८३,९२० पउमासण [पद्मासन] रा० १८१,१८३. जी० 3,763,356,308 पउमुत्तर (पद्मोत्तर) जी० ३।६०१ यउमुप्पल [पद्मोत्पल] रा० ५११ पउर [प्रचुर] ओ० १,१४,४६,७४,१४१. रा० 330**,**807 पउसिया' [बकुसिका] ओ० ७० वएस [प्रदेश] ओ० १९४।१०. रा० ४०, १३२, १४४, जी० १1४,३३; ३१३०२,३६८,४७१, ७१४,८०८,८१६ पएसघण [प्रदेशवन] ओ० १९४।३ १. बउसियाहि [राय० सू० ५०४]

## **पए**सि-पंति

पएसि [प्रदेशिन्] रा० ६७१ से ६७५,६७६ से ६ = १,७००,७०२ से ७०४,७० = से ७१०, ७१८ से ७२०,७२३ से ७२६,७२८ से ७३४, ७३६ से ७३९, ७४६ से ७८२,७८६ से ७११, ७६३ से ७९६ पक्षोग [प्रयोग] ओ० १४,१४१. रा० ६७१,७९१, 330 पजोयधर [प्रतोदघर] ओ० १९ यओयलट्ठि [प्रतोदयाध्ट] ओ० ५९ पओहर [पयोधर] रा० १३३. जी० ३।३०३ पंत [पद्भ] ओ० ८६,६२,१५०. रा० ८११. জী০ ২,६२३ पंकष्पभा [पङ्कप्रभा] जी० ३।३६,४१,४३,४४, १००,११३ पंकबहुल [पङ्कवहुल] जी० ३।६,१,१६,२४,३०, ६३ पंकरय [पङ्करजस्] ओ० १४०. रा० ⊏११ पंकोसण्णग [पङ्कावसन्तक] ओ० १० पंच [पञ्चन्] ओ० ४०, रा० २४, जी० १।३४ पंचग्गिताच [पञ्चाग्निताप] ओ० १४ पंचम [पञ्चम] ओ० ६७,१७४,१७६. जी० दै।३३५ पंचमा [पञ्चमी] जी० १।१२३;२।१४८,१४६; ३।२,३६ पंचमासिय [पाञ्चमासिक] ओ० ३२ पंचमी [पञ्चमी] जी० ३।४,७४,८८,९१,१६२, 222212 पंचविध [पञ्चविध] जी० २।१०१,१०२; 31830; 8158; 81885 पंचविह [पञ्चभिध] ओ० १५,३७,४०,४२,६९, 00. TTO 208,208, 502, 552, 680, ७३६,७११,७७४,७७८,७६७. जी० १।५, 66,224; 2,8,24; 31232,810,882, नरेना२१,९७६ ; ४।१ ; ६.१५६,१५न पंचसयर [पञ्चसप्तति] जी० ३।५३५।३१

पंचणउइ [पञ्चनवति] जी० ३।७१४ पंचणउति [पञ्चनवति] जी० ३।७६८ पंचनउति [पञ्चनवति] जी० ३।७६१ **पंचाणउत** [पञ्चनवति] जी० ३:३६**१** पंचाणउति [पञ्चनवति] जी० ३।७२३ **पंचाणुःखइय** [पञ्चानुद्रतिक] ओ० ४२,७५ **पंचिंदिय** [पञ्चेन्द्रिय] ओ० १४,७३,१४३,१५२, रा० ६७२,६७३,८०१. जी० १।४४; २।१०१, ११३,१२२,१३८,१४६;३११३०;४1१,४,६, ٤,٢٥, ٤٤, ٤٤, ٦٤, ٦٤, ٣١٤, ٤١٤ € ٤, ٥ पंचेंदिय [पञ्चेन्द्रिय] जी० शब्द, ६१,६७,६८, १०१ से १०३,११६,११७,१२५,१३६; 51508,508,555,555,585,585; मा१२७ से १४७,१६१ से १६३,१६६,१११५; 846,85,70,78; 612,0,840,846,778, २२४,२२६,२३१,२४६,२४९,२६०,२६४, २६६ यंखर [पञ्जर] रा० १३७. जी० ३०७ पंजलिउड [प्राञ्जलिपुट] ओ० ४७,५२. रा० ६०, £50,562,025 पंजसिकड [कृतप्राञ्जलि] ओ० ७० पंडग [पण्डक] ओ० ३७ षंखगवण [पण्डकवन] रा० १७३,२७६. जी० ३।२⊏४,४४४ **पंडरग** [पण्डरक] जी० ३।५६३ पंडिय [पण्डित] ओ० १४८,१४९. रा० ५०९,५१० **पंडु** [पाण्डु] ओ० ४,८. रा० ७८२. जी० ३,२७४ पंडुर [पाण्डुर] ओ० १,१६,२२,४७. रा० ७२३, ৬৬৬,৬৬৯,৬৯৯, জী০ ३। १ १६ पंडुरतल [हम्मिय] [पाण्डुरतलहम्यं] जी० ३।४९४ **पंडुरोग** [पाण्डुरोग] जी० ३।६२८ पंत | प्रान्त्य | रा० ७७४ पंताहार [प्रान्त्याहार] ओ० ३४ पंति [पङ्कि] थो० ६९. रा० ७४,२९७,३०२, ३२४,३३०,३३४,३४०. जी० ३।२६७,३१८,

₹XX,842,846,860,86X,X00,X0X,XE8,

**द३**दा७ से **ध** पंथ [पन्थ,पथिन] रा० ७३७ पंथिय [पान्थिक] रा० ७८७,७८८ पंसुविद्वि [पांशुवृष्टि] जी० ३१६२६ पकड्डिज्जमाण (प्रकृष्यमाण) ओ० १६ √पकर [प्र-|-कृ]---पकरेंति. ओ० ७३. जी० ३।१२४.--- पकरेति. जी० ३।२१० पकरेत्ता [प्रकृत्य] ओ० ७३ पकरणता | प्रकरण ] जी० ३।२१० पकरणया [प्रकरण] जी० ३।२११ पकाम [प्रकाम] रा० ७३२,७३७ पकामरसभोइ [प्रकामरसभोजिन्] ओ० ३३ पकार [प्रकार] जीव २।६८८; ३।५९५ पकारवग्ग (पकारवर्ग) रा० ६६ प्रकलगी [पनकणी] ओ० ७०. रा० ८०४ पक्किट्रग [पक्वेष्टक] जी० ३।५४५ पक्कीलित [प्रकीडित] जी० ३। ११७ पक्कीलिय [प्रकीडित] रा० १७३. जी० ३१२८५ पक्ल [पक्ष] ओ० २८. रा० १३०,१६०,१६७. जी० ३।२६४,२६९,३००,५४१ पक्संदोलग [पक्ष्यन्दोलक, पक्षान्दोलक] रा० १८० जी० ३।२६२,⊂⊻७ पक्खंदोलय [पक्ष्यन्दोलक, पक्षान्दोलक] रा० १८१. জী০ ३।२९३,९४७ पक्सपुडंतर [पक्षपुटान्तर] रा० १९७ पक्लपेरंत [पक्षपर्यन्त] रा० १९७. जी० ३।२६९ पक्खबाहा [पक्षबाहु] रा० १३०,१६०,१६७. जी० ३।२६४,२६९,३०० √पक्खाल [प्र+क्षालय्]-पक्खालेइ. रा० ३५१. 

- १. यत्र तु पक्षिण आगत्थात्मानमन्दोलयन्ति ते पक्ष्यन्दोलकाः [राय० वृ०] ।
- २. 'गिरिपक्खदोलया' गिरि५क्षे—-पर्वतपार्थ्व छिन्न-टङ्कागिरौ वात्मानमन्दोलयन्ति ये ते तथा [ओ० वृ०] ।

पक्सालण [प्रकालन] ओ० १११ से ११३,१३७, १३८ पश्वालिय [प्रक्षालित] ओ० १= पक्खालेला [प्रक्षाल्य] रा० २८८. जी० ३१४५४ पक्खासण [पथ्यासन, पक्षासन] रा० १८१,१८३. जी० ३।२६३ पक्सि [पक्षिन्] रा ६७१,७०३,७१८. जी० १।१०१; ३।८८,१६५,७२१ √ पक्लिव | प्र + क्षिप् ] --- पविखवइ. जी० ३,४१६. --पविखवेज्जा. जी० ३।१०६ पक्लिव [प्र+क्षेपय्] - -पविखवावेमि. रा० ७५४ पक्खिवत्ता [प्रक्षिप्य] जी० ३।५१६ परखुभित [प्रक्षुभित] जी० ३।८४२,८४४ पम्खुभिष [प्रश्नुभित] ओ० ४६,४२, रा० ६८७ पगइ [प्रकृति] ओ० ७३, ६१, ११६ रा० १७४, २३३. जी० ३।६२४ पगंठग [प्रकण्ठक] रा० १३७, १४९. जीव ३ ३०७, ३११ पगति [प्रकृति] जीव ३।२८६ ५९८८,६२०,७९४, =**१**६,=४**१,**=**१**४,६४६,६**१**७,६६४ पगतिस्थ [प्रकृतिस्थ] जी० ३।११२१ से ११२३ पगब्भ [प्रगल्भ] जीव ३।४९१ पगाह [प्रगात] रा० ७९४. जी० ३१११० **√पयाय** [प्र+गे]—पगाइंसु. रा० ७४ पगार [प्रकार] रा० ५०६,५१०. जी० २।७४, 880,888 पगास [प्रकाम] ओ० १३,१९,२२,४७. रा० १३०, २४्४,६७०,७७७,७७८,७८८. जी० ३।३००, ४१६,४८६,४९६,४९७ पगिज्झ [प्रगृह्य] रा० ६६४ पगिज्झिय [प्रगृहा] ओ० ११६ यगीय [प्रगीत] रा० ७६,१७३. जी० ३।२८४ √परोण्ह [प्र⊹ग्रह्]---पगेण्हति रा० २८८ पगेण्हित्ता [प्रगृहच] रा० २८८ पग्गहित्तु [प्रगृहच] जी० २।४४७ पग्गहिय [प्रगृहच] ओ० ६७. रा० २९२

#### प**चंकनणग**-पच्चोत्त र

पर्चकमणग [प्रचंक्रमणक] रा० ५०३ **√ पच्चक्ख**, °क्खा [प्रति-¦- आ –े ख्या]---पच्चक्खंति ओ० १२७--पच्चक्खामि. रा०७९६ -पच्चक्खामो. ओ० ११७ -- पच्चक्खाइस्सइ. रा० ५१६ पच्चकखाण [प्रत्याख्यान] ओ० १२०,१४०,१५७. रा० ६९८८,७४२,७८७,७८९ पच्चमलाय [प्रत्याख्यात] ओ० ५४,५४,५७,५५, **११७,१२१,१३६ रा**० ७६६ पच्चक्खित्ता | प्रत्याख्याय | ओ० १५७ पच्चणुडभवमाण [प्रत्यनुभवत्] रा० १८४,१८७, ७५१. जी० ३११०६,११८,११६,१२२,१२३, 309,786,785,498 पच्चणुभवमाण [प्रत्यनुभवत्] ओ० १५. रा० ६७२,६८४,७१०,७७४. जी० ३।११६, ११८,११६,१२८,३५८,१११४,१११७,१११८, ११२४ पच्चत्थिम [पाश्चात्य] रा० ४३,४४,१७०,२३४, २३६,२४४,२४९,६६३,६६४. जी० ३।३००, 388,388,360,360,800,880,860,868, ४६२,४६८,४७७,६३२,६६१,६६६,६६६, ६७३,६८२,६९३,६९४,६९७,६९८,७०८, ७१२,७४२,७४४,७**१४,७६१,७**६४,७६८, ७६६,७७१ से ७७३,७७६,७७८,८००,८१४, = ? ¥, 5 ¥ 8, 5 5 ?, 5 5 4, 6 0 8, 6 3 6, 5 8 0, 888,8085 पण्चस्थिमिल्ल [पार्श्वात्य] रा० २९६,२९७,३०१, ३०६,३१७,३२२,३२७,३३४,३४०,**३**४**४**. जी० ३।३३,२२०,२२१,२२४,२२४,४६१, ४६६,४७१,४८२,४८७,४६२,४००,४०४, ११०,४७७,६७३,६९१ से ६६७,७६९,७७१, X\$3,000,X00,F00 पच्चत्थुय [प्रत्यवस्तृत] रा० ३७ √पच्चप्पिण [प्रति-)-अपंय्]--पच्चप्पिणइ. अो० ५७--पच्चप्पिणंति. रा० १२. जी० ३।१११ -- पच्चप्पिणति. रा० ४६

----पच्चप्पिणह. रा० १. जी० ३।४१४ -पच्चप्पिणाहि. ओ० ४४. रा० १७ —पच्च व्पिणेज्जा. ओ० १८० ----पच्चपिणेज्जाह. रा० ७०६ पच्चमाण [पच्यमान] जी० ३।१२९।व पच्चामित्त (प्रत्यमित्र] ओ० १४. रा० ६७१. জী৹ ३।६१२ √पच्चाधा [प्रति+आ+जन्]---पच्चाइस्सइ. रा० ७९७--पच्चायंति. ओ० ७१. जी० ३। ४७२--- पच्चायाहिति. ओ० १४१. पच्चावड [प्रत्यावर्त] रा० २४. जी० ३१२७७ √षच्चुण्णम [प्रति ∔ उत् ∔ नम्]—षच्चुण्णमइ ओ० २१. रा० २९२---पच्चुण्णमति. জী৹ ২।४২,৬ वच्चुण्णमित्ता [प्रत्युन्नम्य] ओ० २१. रा० २९२. জী৹ ২।४২৬ √पच्चुत्तर [प्रति+उत्+तृ]--पच्चुत्तरति. जी० ३।४४३—पच्चुत्तरेइ. रा० ६५६. জী০ ২।४५४ पच्चुत्तरित्ता [प्रत्युत्तीर्यं] जी० ३।४४३ पच्चुत्तरेता [प्रत्युत्तीर्यं] रा० ६४६. जी० ३।४४४ पच्चुत्यत [प्रत्यवस्तृत] जी० ३।३११ √पच्चुद्धर [प्रति-|-उद्-|-धृ]--पच्चुद्धरिस्सामि জীঁ০ ইাং ং ং पच्चू द्वरित्त ए [प्रद्युद्धर्तुम्] जी० ३।११८ **√पच्चुग्नम** [प्रति+उत्+नम्]---पच्चुन्नमइ. रा० द पच्चुन्नमित्ता [प्रत्युन्नम्य] रा० ५ पच्चूसकाल [प्रत्यूषकाल] जी० ३।२८४ **√पच्चुबेक्ख** [प्रति |-उप-<del>|</del>ईक्ष्]—पच्चुबेक्खेइ. ओ० ५१ पच्चुवेक्खमाण [प्रत्युपेक्षमाण] रा० ६७४,६८०, ६९८ पच्चुवेक्खेत्ता [प्रत्युपेक्ष्य] ओ० ५६ पच्चोणिवयंत [प्रत्यवनिपतत्] ओ० ४६ √पच्चोत्तर ∫प्रति - उत्+ तृ ]—पच्चोत्तरइ. रा० २७७--- पच्चोत्तरति. रा० २८५

पच्चोत्तरित्ता [प्रत्युतीर्थ] रा० २७७ पच्चोयड [दे०] रा० १४४,१७४. जी० ३।२८६, ३२७ √पच्चोरुभ [प्रति+अव+रुह्]-पच्चोरुभति. জী৹ ३।४४६ पच्चोरुभित्ता [प्रत्यवरुहच] जी० ३।४४६ √पण्चोरुह [प्रति+अव+ रुह्र]--पच्चोरुहइ. ओ० २१. रा० २७७. जी० ३१४४३ --- पच्चोरुहंति अो० ४२. रा० ५७ --- पच्चोरुहति रा० म. जी० ३।४४३ पच्चोरुहित्ता [प्रत्यवरुहच] ओ० २१. रा० द. জী০ ২১४४২ पच्छय [प्रच्छद] क्षो० १७ पच्छा [पश्चात्] ओ० १६४,१६६,१७७. रा० ४६,६३,६४,२७४,२७६ ७८१ से ७८७, ५०२. जी० ३१४४१,४४२,६८६,१०४८, 2222 पच्छाणुताविय [पश्चादनुतापिक] रा० ७७४, ৬৩২ पच्छियापिष्ठय [पच्छिकापिटक] रा० ७६१,७७२ पजेमगग [प्रजेमनक] रा० ८०३ पजोग [प्रयोग] रा० ७१४ पञ्ज पद्य रा० १७३. जी० ३।२५४ यज्जत्त [पर्याप्त] जी० १। ११, १४, ६३, ६४; ३।१३३,१३४; ४।६,२२,२३,२४; ४।१७,२६, २ - से ३०,३२ से ३६,३९,४०,४३,४६,४९, **५२,५४ से ६०** पज्जत्तग [पर्याप्तक] ओ० १८२. जी० १।१४,५८, £6,03,05,58,58,58,55,58,87,800,80**8**, १११,११२,११६,११५,१२१,१२६,१३५; ३।१३६,१३६,१४०,१४६;४।२,६,१८,२१ से २३,२५; ५१३,४,७,१० से २२,२४,२५,२७, ३१,३३,३४,३६,४०; ९।५२,५९.९२,९४ पज्जत्तय [पर्याप्तक] ओ० १४६. जी० १।१०१; ४१११; ४११२ से १६,२९,४२,६० पङ्जत्ति [पर्याप्ति] रा० २७४,२७४,७६७.

जी० १११४,२६,८६,९०१,११९,१३३, १३६; ३१४४०,४४१ पण्जतिभाव [पर्याप्तिभाव] रा० २७४,२७४, ওইও. জী০ ২।४४০,४४१ पण्जलिय [प्रज्वलित] रा० ४१ पञ्जव [पर्यव] रा० १९९. जी० ३। १८, ८७, २७१,७२४,७२७,१०=१ पञ्जवसाण [पर्यवसान] ओ० १४६. रा० ८०६, ००७. जी० **१।४६**; ३।२५०,२५९,९४८, 383 पज्जालिय [प्रज्वालित] जी० ३। इदह √पज्जुवास [परि+उप-+आस्]-पज्जुवासइ. अो० ६९. रा० ६ – पज्जुवासंति. ओ० ४७. रा० ६८७.--- पज्जुवासति. रा० ६० --- पज्जुवासामि. रा० ४८-- पज्जुवासामो. रा० १०--पज्ञुवासिस्संति. रा० ७०४ ---पज्जुवासेइ. रा० ७१६---पज्जुवासेज्जा रा० ७७६ पज्जुवासणया [पर्युपासना] ओ० ४०,५२. **হা০ হ্**দঙ पज्जुवासणा [पर्युपासना] ओ० ६१ पज्जुवासणिज्ज [ पर्युपासनीय ] को० २. ग० २४०,२७६. जी० ३१४०२,४४२,१०२५ पञ्जूवासमाण [पर्युपासीन] ओ० ५३ पज्जूवासित्तए [पर्युपासितुम्] ओ० १३६. **TIO E** पज्जोसवणा | पर्युषगा,पर्युपरामन | जी० ३/६ १७ पद्मंझमाण [पझञ्क्रमान] रा० ४०,१३२. जी० ३।२६४ षष्ट [पट्ट] रा० ३७,२४४,६६४,६८३. জী৹ ২।২११ पट्टण [पत्तन] ओ० ६८,८१ से ६३,९४,९६,१५४, १४० से १६१,१६३,१६८. रा० ६६७. জী৹ ২। ২ হ ২ पट्टिया [पट्टिका] रा० १३०,१९०,६६४,६८३. जी० ३।२६४,३००,४६२

**पट्ट** [प्रष्ठ] जी० ३।११८ द षड [घट] ओ० २३,६३ पडंत [पतत्] जी० ३। १९० पडग [पटक] रा० ७१३ पडवृद्धि [पटबुद्धि] ओ० २४ पडल [पटल] रा० १२,१४४,१७४. जी० ३।११९,२८६,३२८,३३०,३४५।३ पडलग [पटलक] रा० १२,१४७,२४८,२७६. जी० ३।४१९,४४५ पडह [पटह] ओ० ६७. रा० १३,७७,६४७. जी० ३।१७८,४४६,४८५ पडागा [पताका] ओ० ४४,६४. रा० ३२,४०,४२, **५६,१३७,१७३**,२**३१,२४७,६**⊏१. जी० १।⊏०, 47; 3124X,300,302,383 पडागाइपडागा [पताकातिपताका] ओ० २,१२, ४४, रा० २३,२=१. जीव ३।२९१ **पडागातिपडागा** [पताकातिपताका] **जी० ३**।४४७ √पडिकप्प [प्रति + कल्पय् ] --- पडिकप्पेइ. ओ० ५७---पडिकप्पेहि. ओ० ५५ **यडिकप्पिय** [प्रतिकल्पित] ओ० ६२ पडिकप्पेत्ता [प्रतिकल्प्य] ओ० ५७ पडिकूस [प्रतिकूल] रा० ७४३,७६७,७६८,७७६ 009 पडिक्कंत [प्रतिकान्त] ओ० ११७,१४०,१५७, १६२. रा० ७६६ पडिक्कमणारिह [प्रतिक्रमणाई] ओ० ३९ पडिमय | प्रतिगत | ओ० ७९ से म१. रा० ६१, 970, 58, 58, 58, 080, 032, 000, 070 पडिगाहित्तए [प्रतिग्रहोतुम्] ओ० १११ पडिग्गह [प्रतिग्रह] ओ० १२०,१६२. रा० ६६व, 320,580 पडिगगहित्तए [प्रतिग्रहीतुम्] ओ० ११२ पडिचंद [प्रतिचन्द्र] जी० ३१६२६,८४१ पडिचार [प्रतिचार] ओ० १४६, रा० ५०२ √पडिच्छ [प्रति+इष्]—पडिच्छइ. रा० ६५४

----पडिच्छए. ओ० २ पडिच्छण्ण (प्रतिच्छन्न) जी० ३।५ू८१ पडिच्छमाण [प्रतीच्छत् | ओ० ६९ पडिच्छयण [प्रतिच्छदन] रा० २४५. जी० ३।३११, पडिच्छायण [प्रतिच्छादन] रा० ३७ पडिच्छिय [प्रतीष्ट] को० ६९. रा० ६९४ पडिजागरमाण [प्रतिजाग्रत्] रा० ७९३ पडिजागरेमाण [प्रतिजाग्रत्] रा० ५६ पडिजाण [प्रतियान] ओ० ६२ पहिण [प्रतीचीन ] जीव ३१९७७,१०३९ पडिणिकास [प्रतिनिकाश] रा० १४६. जी० ३।२२२ √पडिणिक्खम [प्रति+निस्+ कम्]—पडिणि-क्खमइ. ओ० २०. रा० २८६. जी० ३।४५४. पहिणिक्लमित्ता [प्रतिनिष्कम्य] ओ० २०. रा० १२. জী০ ২।४४५ √पडिणिक्सिव [प्रति+नि+क्षिय्]---पडिणि-क्खिवइ. रा० २८८. जी० ३।५१६.---पडिणि-ৰিত্তৰিइ, জী০ ২।४५४ पडिणिक्लिक्ति [प्रतिनिक्षिप्य] रा० २८८. जी० 31285 पडिणिविखवेत्ता [प्रतिनिक्षिप्य] जी० ३।४१४ √पडिणियत्त | प्रति+नि-+वृत्]--पडिणियत्तइ. ओ० १७७---पडिणियत्तंति. जी० ३:७४६ पडिणियत्तित्ता [प्रतिनिवृत्य] ओ० १७७ पडिणीय [प्रत्यनीक] ओ० १५५. जी० ३।६१२ पडिदुवार [प्रतिद्वार] ओ० २,४४. रा० ३२,२५१. जी० ३।३७२,४४७ √पडिनिक्खम [प्रति+निस् + क्रम्]--पडिनिवख-मइ. रा० ७१०.-पहिनिक्खमति, रा० २७६. --- पडिनिक्खमति जी० ३।४४६ पडिनिक्खमित्ता [प्रतिनिष्क्रम्य] रा० २७१. जी० 31888 पडिपाव | प्रतिपाद ] जी० ३।४०७

## ६७२

पडिपाय [प्रतिपाद] रा० २४४ √पडिपिधा [प्रति+पि+धा]--पडिपिधेइ. जी० रे। ५१६ पडिपिचेता [प्रतिपिधाय] जी० ३। ५१६ **√पडिपुच्छ [ प्र**ति-+ प्रच्छ् ] — पडिपुच्छंति. ओ० ४५ पहिपुच्छण [प्रतिप्रच्छन] ओ० १२. रा० ६८७ पडिपुच्छणा | प्रतिप्रच्छना | ओ० ४२ **पडिप्रच्छणिज्ज |**प्रतिपृच्छनीय ] रा० ६७४ पडिपुग्ण [प्रतिपूर्ण] ओ० १४,१५,१९,६३,७२, १२०,१४३,१४३,१६२, १६४,१६६,१७०. रा० १३१,१४७,१४८,१४०,१४२,२८०,२८६, ६ ७१ से ६७३,६९८८,७४२,७८६,८०१,८१४. जी० ३।३०१,३२३,३२४,४४६,४४२,४६२, \*\*\*\* पडिपुण्णचंब [प्रतिपूर्णचन्द्र] जी० ३।५६,२६० पडिवुःन [प्रतिपूर्ण] जी० ३।५१६ पडिबंध [प्रतिबन्ध] ओ० २८. रा० ६९४,७७४ पडिबद्ध [प्रतिबद्ध] जी० ३।२२ पडिबोहण [प्रतिबोधन ] रा० १५ पडिबोहिय [प्रतिबोधित] अो० १४८,१४९. रा० 508,580 पडिमट्राइ [प्रतिमास्थायिन्] ओ० ३६ पडिमोधण [प्रतिमोचन] जी० ३।२७६,४८१,४८४ पडियाइबिखय [प्रत्याख्यात ] ओ० ११७ पडिरूव [प्रतिरूप] ओ० ७,१० से १२,१४,७२,१९४. रा० १,२,१६ से २३,३२,३४,३६ से ३⊂, १२४ से १२८, १३० से १३४,१३६,१३७, १४१,१४५ से १४८,१४० से १४३,१५४ से १४७,१६०,१६१,१७४,१७४,१८० से १८४, **१**==,**१६२,१६७,२०६,२११,२**१८,२२**१,**२२२, २२४,२२६,२२५,२३०,२३१,२३३,२३५,२४२, २४४ से २४७,२४९,२४३,२४६,२४७,२६१, २७३,६६८ से ६७०,६७२,६७३,६७६,६७७, ७००,७०२,७०३. जी० ३१२३२,२६० से २६३, २६६ से २६९,२७६,२८६ से २९७,३०० से ३०४,३०६ से ३०८,३१० से ३१२,३१८,

३१९,३२३ से ३२९,३२८ से ३३०,३३३,
३२४,३७,३४७,३४८,३४८,३४२,३४३,३४४,३६१,
३६४,३७२,३७७,३४८,३४८,३४२,३४३,३८४,३८५,
३६०,३१२,३१८३,३१८१,४००,४०१,४०४,४०६
से ४०८,४१०,४१३,४१४,४१८,४४२,४२२,४२७,
४३७,४८१,४८४,६४१,६६८,४४५,४१८,४२२,४२७,
४३७,४८१,४८४,६४४,६६१,६६८,६७२,६३२,६३८,
६४४,६४६,६४८,६४४,६६१,६६८,६७२,६७२,
६४४,६४६,६४८,६४४,६६१,६६८,६७२,६७२,
६७४,६४६,६४८,६४४,६६१,६६८,६७४,६७२,
६४४,६४६,६४८,६४४,६६१,६६८,६७२,५७२,
६४४,६४६,६४८,६४४,६६१,६६२,६४४,६७,६७२,
६४४,६४६,६४८,६४४,६६१,६६४,६७२,६७२,
६४४,६४६,६४८,६४४,६६१,६६२,७४,६७२,
६४४,६४६,६४८,६४४,६६१,६६३,६४८,६७२,
६४४,६४६,६४८,६४४,६६१,६६३,६४८,६७२,
६४४,६०४,६०६,६०७,६१४,६१८,६४८,४८,४
६४४,६०४,६०६,१४२,११२२

- पडिल्ल्वग [प्रतिरूपक] रा० १९.२०,१७५ से १७१, २०२,२३४,२६४. जी० ३।२०७,२०८०,३६३, ३९६,१७९,६४०,६४१,६६१.६०४
- पहिरूवय [प्रतिरूपक] रा० १९,४७,४८,४६,१७, २७७,२८८,३१२,४७३,६४६. जी० ३।४४३, ४४४,४७७,४३२,४४६
- **√पडिलाभ** [प्रति+लाभय्]—पडिलाभिस्संति. रा० ७०४.—पडिलाभेइ. रा० ७१६. – पडिलाभेज्जा. रा० ७७६
- पडिलाभेमाण [प्रतिलाभयत्] ओ० १२०,१६०. रा० **६**९८,७४२,७८**६** √पडिलेह [प्रति+लिख्]—पडिलेहेइ. रा० ७१६
- यडिलोम [प्रतिलोम] रा० ७४३,७६७,७६८,७७६,
- पडिवंसग [प्रतिवंशक] रा० १३०. जी० ३।३०० √पडिवज्ज [प्रति-∔पद्]—पडिवज्जइ. ओ० १≍२. रा० ७७४.—पडिवज्जति.
  - अो० १४७. --पडिवज्जिस्सामि. रा० ६९४. ---पडिवज्जिस्यामो. ओ० ४२. रा० ६८७
- **पडिवज्जित्ता** [प्रतिपद्य] ओ० १५७
- पडिवण्ण [प्रतिपन्त] ओ० २४,७८,८२,१८२
- पडिवत्ति [प्रतिपत्ति] जी० १।१०; शब
- पडिविरय [प्रतिविरत] ओ० १६१,१६३
- **√पडिविसज्ज** [प्रति-**¦**-वि+्+सर्जय्]

--पडिविसज्जेहिति. ओ० १४७. रा० ५०५ पडिवृह [प्रतिव्यूह] ओ० १४६. रा० ५०६ **पडिसंखेवेमाण** । प्रतिसंक्षिपत् ] रा० १६ पडिसंलीणया [प्रतिसंलीनता] ओ० ३१,३७ पडिसंसाहणया [प्रतिसंसाधना] ओ ४० **√पडिसार** [प्रति⊣₋सं+हृ]—पडिसाहरइ. জাঁ০ ২१. খাঁ০ দ पडिसाहरित्ता [प्रतिसंहत्य] ओ० २१ पडिसाहरेता [प्रतिसंहत्य] रा० य पडिसाहरेमाण [प्रतिसंहरत्] रा० १६ √पडिसुण [प्रति-[-श्रु]---पडिसुणंति. रा० १०. जी० ३।४४५.—पडिसुणिज्जासि. रा० ७१३. ----पडिसुणेइ. ओ० ४६. रा० १८.---पडि-सुर्णेति ओ० ११७. रा० ७०७. जी० ३।४४४. ---पडिसुणेति. रा॰ १४, पडिसुणेज्जासि. रा० ७४१ पडिसुणित्ता [प्रतिश्रुत्य] रा० १८. जी० ३।४४५ पडिसुणेत्ता | प्रतिश्रुत्य ] ओ० ४६. रा० १०. জী০ ২। ২. ২. ২ पडिसुय [प्रतिश्रुत] रा॰ १४ पडिसूर [प्रतिसूर] जी० ३।६२६,५४१ पडिसेग [प्रतिषेक] रा० २५४ **पडिसेविय** | प्रतिथेवित | रा० ५१४ पडिसेह [प्रतिपेध] जी० २। १६,१०१ पडिहत | प्रतिहत ] जी० ३७४६ पडिहत्य [दे०] रा० १७४. जी० ३।३२४,८४७, नद्दे,नद्£,न७४,नन१,६४न पडिहय [प्रतिहत] ओ० १९४।१,२ पडोण | प्रतीचीन ] रा० १२४. जी० ३१६३९ पडीणवास (प्रतीचीनवात ) जी० शादश पडीणवाय | प्रतीचीनवात | जी० ३।६२६ पडु [पटु] ओ० ६८. रा० ७,१३,६४७. जी० ३।३४०,४४६,४६३,५४२,५४२,५४४,१०२४ पडुच्च [प्रतीत्य] रा० ७६३. जी० १।३४

पडुप्पन्न [प्रत्युत्पन्न] जी० ३।१९४ से १९७ पडुप्पाएमाण [प्रत्युत्पद्यमान] जी० ३।२५६ पडोयार [प्रत्यवतार] ओ० ४३. जी० ३।२१८, 2XE, XOS, XEE, XEO पढम [प्रथम] ओ० ४७,१४४,१७४,१७६,१८२. रा० म०२. जी० ३३२२६,६ष२,६द३,६षम; u18, 2, Y, E, 88, 88, 88, 84, 80, 20, 27 23; ११ से ७,२३२,२३३,२३४,२३७,२४१,२४३, २४४,२४७,२४०,२४२,२४३,२४४,२६७,२६८, 700,707,702,700,706,748,758,754, २८५ से २९३ पढमग [प्रथमक] रा० २२८. जी० ३।३८७,६७२ पढमसत्तराइंदिया [प्रथमसप्तरात्रिदिवा] ओ० २४ यडमसरयकास [ प्रथमशरत्काल ] जी० ३।११८,११६ पढमा [प्रथमा] जी० ३।२,३,८८,११११ पटनिल्लुय [प्रथम] रा० ७६८ **पणगजीव** [पनकजीव | ओ० १८२ √पणच्च [प्र+नृत्य्]---पणच्चिसु. रा० ७४ पणतीस [पञ्चत्रिंशत्] जी० ३ ८०२ पगपणग [दे० पञ्चपञ्चाशत्]जी० ६।६ पणपन्न (दे० पञ्च पञ्चा शत् | जी० २।२० पणमिय [प्रणत] ओ० ४,८,१०. रा० १४५. जी० ३।२६८,२७४ पणयाल | पञ्चचत्वारिशत् | जी० ३।२२६।६ पणयालीस (पञ्चचत्वारिंशत्) ओ० १९२. জী০ ই।ই০০ पणयालीसविह [पञ्चचत्वारिंशद्विध] अरं० ४० पणयासण [प्रणतासन] रा० १८१,१८३. জী০ ২।২**৫২** पणव [पणव] ओ० ६७. रा० १३,७७,६४७. जी० ३।७८,४४६,५८८ पणवण्णिय | पणपन्निक | ओ० ४६ पणवोस [पञ्चविंशति] रा० १२७. जी० ३।६१ पणस [पनस] जी० २।२८८

पणाम [प्रणाम] रा० ६८,२९१,३०६.

जी० ३।४५७,४७१,५१६ पणि [पण्य] जी० ३ ६०७ पणिय [पणित, पण्य] ओ० १. रा० ७७४ पणियगिह [पणित°, पण्यगृह ] ओ० ३७ पणियसाला [पणित°, पण्यशाला] आ० २७ पणिहाय | प्रणिवाय, प्रणिहाय ] जी० ३।७३ से ७४. १२४,१२४,७९४,१०२४ पगीत [प्रणीत] जी० १।१ वजीयरसपरिच्चाय [प्रणीतरसपरित्याग | ओ० ३५ पणुवीस [पञ्चविंशति] जी० ३।२२६1४ पजोल्लिय | प्रणोदित ] ओ० ४६ वण्णओ [प्रज्ञातरा] रा० ७४२,७४४,७४६,७४२, ७६०,७६२,७६४ पण्णगद्ध [पन्तगार्ध] जी० ३।३०२ पण्णह [पञ्चपष्टि] जी० ३।२२२ **पण्णद्वि** [पञ्चपष्टि ] रा० १६४ पण्णत्त [दे०] ओ० १ पग्णत [प्रज्ञप्त] भो० २. रा० ३. जी० १।१ पण्णत्तर | पञ्चनप्तति | जी० ३।२४६ पण्णसरि [पञ्चसप्तति] जी० ३।६६१ पण्णत्ति | प्रज्ञण्ति | रा० ५१७ **पल्णरस** [पञ्चदशन् ] जी० **३।१२** पण्णरसविध [पञ्चदणविध] जी० ३।२२९ पण्णरसविह [पञ्चदलविश्र] जी० १।८०; २।१४ √पण्णव |प्र-!-ज्ञापय् | -- पण्णवइंसु, जी० १११. -पण्णवेष, ओ० ४२. रा० ६८७. - पण्णवेति जी० ३।२१०. - पण्णवेहेंति. मी० ३। द३ दा३ पण्जवणा (प्रज्ञापना) रा० ७७४. जी० ११४,४८, ७२,१००,११०,१११,११६,११८,१२२,१२३४; २।८६; ३।१८४,२१४,२३२,२३३ यण्णवणापव [प्रज्ञापनापद] जी० ३।२२०,२३१ **पण्णवित्तए** [प्रज्ञापयितुम्] रा० ७७४ पण्णवोस |पञ्चविंशति] जी० ३।१२ पण्णवेमाण [प्रज्ञापयत्] ओ० ६८

१ द्रष्टन्यम्---निशीथभाष्य ४४३४।

√पण्णाय [त्र + जा]--पण्णायति. जी० ३।९९९

- पण्णास [पञ्चागत्] रा० २०६, जी० २।३६
- पण्हावागरणदसाधर [अश्वव्याकरणदशाधर]

ঐা০ ४४

- **पतणतणाइक्ता** [प्रतनननाय्य] रा० १२
- **√पतणतणाथ [प्र ⊢तनतनाय्']** पतणतणायंति. रा० १२
- पतणु [प्रतनु] ओ० ६१,११६
- **पतरग** [प्रतरक | जी० ३।३०२
- **√पतव |प्र**⊹तव्]—पतवंति. जो० ३।४४७. ---पतवेति. रा० २५१
- पतिट्टाण [प्रतिष्ठान] रा० १९,१७५. जीव ३ २८७,३००,४४६,४४८
- पत्ता [पत्त] ओ० ४,६,८,१३,१६,२७,९४, रा० ६, १२,२६,३१,१६१,१७४,२२८,२४८,२७०, २७६,७६२. जो० १७१,७२;३।११८,११६, २७४,२७४,२७६,२६३,२८४,२८६,३३४, ३८७,४१६,४३४,४४४,४८१,४८६,४६६, ६२२,६४३,६७२
- वत्त [आग्त] ओ० ३७,११७,१४०,१५७,१६२, १९४।१९,२२, रा० १,६३,६४,६६७,७९६, ७९७. जी० ३:न६७
- **पत्ताच्छेज्ज** [पत्र<sup>=</sup>छेद्य] ओ० १४६, रा० ५०६
- पत्तट्ठ [दे० प्राप्तार्थ] औ० ६३. रा० १२,७४८, ७४९,७६४ ७६६,७७०
- पत्तभार [पत्रभार] ओ० ४,५. जी० ३।२७४
- पत्तमंत [पत्रवत् ] ओ० ४,८. जी० ३।२७४
- पत्तल [पत्रन] ओ० १९,४७. जी० ३।५९६,५९७
- पत्तासव [गत्रानव] जो० ३।८६०
- पत्ताहार [गत्रास] ओ० ९४
- √पस्तिय [प्रति + इ] --पत्तिएज्जा. रा० ७४०.
  - ---पत्तियाभि. रा० ६९४
- **पत्तिय** [पत्रित ] रा० ७५२
- पत्तियमाण [प्रतियत् ] जी० १११

**१.** अनुकरण वचन ।

पत्ती [पात्री] जी० ३। १८७ पत्तेग | प्रत्येक ] जी० शा२६ यत्तेगसरीर | प्रत्येकशरीर ] जी० ४।३१ पत्तेय [ प्रत्येक ] ओ० ४०. रा० २०,४८,१३७, (६४,१७०,१७४ से १७६, १८६,२११,२१५, २१७ से २१९,२२१,२२२,२२४,२२६,२२७, २३०,२३१,२३३,२४४,२४६,२०२,६६४. जी० ३।२४६,२८६ से २८८,३०७ से ३१३, ₹¥X,₹XX,₹X€,₹X5,₹2€,₹€₹,₹Ę5, ३६६,३७२ से ३७८,३८०,३८१,३८३ से ३८६,३*६२,३६३,३***६५,४१**६,४**१**७,४४८, ४४८ से ४६२,६३२,६३४,६३४,६३७,६४१, *६६१,६६२,६८३ ६८४,७२४,७२७,७२*८, ७६२,७६३,८४७,८८२ से ८८४,,८८७ से 583,083,503,602,605,683,837,837 **पत्तेयजीव |** प्रत्येकजीव ] जी० १।७१ पत्तेयबुद्धसिद्ध [प्रत्येकबुद्धसिद्ध ] जी० शव पत्तेयरस [प्रत्येकरस] जी० ३। १६३ पत्तेयसरीर [प्रत्येकशरीर] जीव शद्द,६६,७२; ४।३१,३३ से ३६ पत्तोमोवरिय [प्राप्तावमोदरिक] ओ० ३३ √पत्थ {प्र⊹अर्थय्]—पत्थंति. ओ० २०—-पर्रथेइ. रा० ७१३--पत्थेंति. रा० ७१३ पत्थ [प्रस्य] ओ० १११ पत्थ [पथ्य] जी० ३।८४४,८७८,९४७ पत्यड [प्रस्तट] रा० १३०, १३७. जी० ३।३००, 309 पत्थडोबग । प्रस्तटादक ) जी० २/७८२,७५४ पत्पय (पथ्यक) रा० ७७२ पत्थयण [पथ्यदन] रा० ७७४ पत्थर [प्रस्तर] ओ० ४६ वत्थिञ्जमाण [प्रार्थ्यमान] ओ० ६६ पत्थिय [प्राधित] ओ० ७०. रा० ६,२७४,२७६, £22,035,030,032,082,022,062,000

७६१,७९३,५०४. जी० ३।४४१,४४२ पद [पद] रा० ७६,२९२. जी० ३।१८४,४४७ 830 पदाहिण [प्रदक्षिण] जी० २।४४३ पदाहिणावत्तमंडल [प्रदक्षिणावर्तमण्डल] জী৹ ২৷৯४২ पदीव [प्रदीप] रा० ७७२ पदेस [प्रदेश] रा० १३४,२३६,७७२. जी० ११४; ३१३०४, ३२**७,**४७३,**४६**७,६६८,७**१**७,७८८, ७८६,८०३,८२८,५२६,८४४,८४३,६४६ ; 8218 पदेसट्टता [प्रदेशार्ग] जी० ४। ५१, ५२ परेसद्वया [प्रदेशार्थ] जी० ४१४० से ४२,४८ से ६० पन्मगळ [पन्नगार्ध] रा० १३२ पन्नरस [पञ्चदशन्] रा० २०८. जी० ३।३८३। 39 पम्नरसइ [पञ्चदश] जी० ३।५३५।१६ पन्नरसविह [पञ्चदशविध] जी० २।१४ पन्नास (पञ्चाशत्) रा० १२७. जी० २।२० पच्पडमोयय [पर्पटमोदक] जी० ३१६०१ पट्फुल्ल [प्रफुल्ल] जी० ३।२५६ पब्सट्ट [प्रभ्रष्ट] रा० १२,२९१,२९३ से २९६, ३००,३०४,३१२,३४४. जी० ३१४४७ से \*\*\*\*\*\*\* पब्सार | प्राग्भार ] ओ० ४६ पभंकरा [प्रभङ्करा] जी० ३।१०२३,१०२६ पभंजण [प्रमञ्जन] जी० ३१७२४ प्रभा [प्रभा] ओ० ४७,७२. रा० २१,२३,२४, *₹२,३४,३६,१२४,१४४,१४४,१४७,२२<,२७३* ७७७,७७८,७८८. जी० ३१२६१,२६६,२६९. ३२७,३८७,६३७,६४९,६७२,७२८,७४३, 980,953,95X,8090 वभाव [प्रभात] ओ० २२. रा० ७२३,७७७,७७८, ৩নন

पभास [प्रभास] रा० २७६. जी० ३।४४५

√प्रभास [प्र-+भास् ]—पभासिसु. जी० ३।७०३ -पभासिस्संति. जी० ३।७०३-पभासेइ. रा० ७७२. जी० ३।३२७ -पभासेंति. रा० १४४. जी० ३।३२७ --- पभासेति. रा० १५४. जीव ३७४१ पभासेमाण [प्रभासमान] ओ० ४७,७२. जी० ३.११२१ पभिइ [प्रभृति] रा० ७१०,७११ पभिति [प्रभृति] ओ० ४२,९३. रा० ६८७,६८८, ७०४. जी० ३।०३८।२४ मभू | प्रभू ] रा० ७४५ से ७६१. जी० ३।११०, ६८८ से ६६७, १०२३ से १०२४,१११४, 8885 पभूष [प्रभूत] ओ० १,१४,४६,१४१. २१० ६, १२,६७१,७६६. जी० ५≍६ √पमज्ज [प्र-|-मृज्]---पमज्जइ. रा० ५९१ -- पमज्जति. जी० ३।४१७ पमज्जित्ता [प्रमुज्य] रा॰ २८१. जी० ३१४५७ पमत प्रगत रा० १४ ममहण [प्रमर्दन] ओ० २६. रा० १२,७५८.७१९. जीव ३:११८ पमाण [प्रमाण] और १४,१९,३३,१२२,१४३. रा० ६.१२,४०,२०५ से २०८,२२४,२५४, २७६,६७२,६७३,६७४,७४५ से ७४०,७७३, ८०१. जी० ३।३१३,३६८ से ३७१,३८४, ४०६,४१२,४१४,४४२,४६८,४६६,४९६,५९७, *६१२,६६६६,६७३,६७६,६७६,६८४,६८६,* इनन, ६९१ से ६६न, ७३७,७४०,७४३,७६४, ७६४,५००,५५६,५६६,५६५,६१६ से ६२१, 888,80198 यमाणपत्त [प्रमाणप्राप्त | ओ० ३३ पमाणभूय ]प्रमाणभूत | रा० ६७५ पमाय [प्रमाद] ओ० ४६ पमाबायरिय [प्रमादावरित] ओ. १३६ पमुइय [प्रमुदित] ओ० १,१९,४९, रा० १७३.

জী০ ২।২৪২ पमुच्चमाण (प्रमुञ्चत्) जी० ३।११= पमुदित [प्रमुदित] जी० ३।२०५ पमुह [प्रमुख] ओ० ४४,४⊏,६२,७०,७१,⊂१. 300,389 015 पमोकक्ख [प्रमंक्ष] रा० ६६८,७४२,७८६ प∓ह [पक्ष्मन् | ओ० ८२ पम्ह | पद्म | जी० १।११४ पम्हल [पक्ष्मल | ओ० ६३. रा० २८५. জীত ই।४५१ पम्हलेस | गचनेक्य | जी० ६।१६० पम्हलेस्स [पद्मलेश्य] जी० ८।१८४,१९६ **पम्हलेस्सा** [पद्मलेण्या j जी॰ ३।११०२ पय | पद | अी० २१,५४ रा० ५,७१४. जी० ३।२३६,२८४ पयंठग [प्रकण्टक | जी० ३।३२२ √पयच्छ [प्र⊣-यम्]---पयच्छइ. रा० ७३२ पयण | पचन ] ओ० १६१,१६३ षयणु [प्रतनु] जी० ३।५९८०,६११,७९४,५४१ पयत [प्रयत] जी० ३:४५७ पयत्त [प्रयत्त ] रा० २९२. जी० ३,६०१,६६६ पयबद्ध | पदबद्ध | रा० १७३. जी० ३।२८५ गययदेव [पतगदेव,पतकदेव ] ओ० ४६ पयर [प्रतर] रा० ४०,१३२ षयरग [प्रतरक] जीव ३।२६४,३१३,४९३ √पमला | प्र-|- चलाय् ] ----पयलाएजज. জী৹ ३।११८ पर्यालय | प्रचलित | ओ० २१,४४. रा० द, ७१४ पयसंचार | पदलञ्चार | रा० ७६,१७३. जी० ३।२८४ √पया [प्र |-जनय्] --पवाडि्इ. रा० ५०१ पयाणुसारि [पद:नु तरिन् ] ओ० २४ पयार | प्रचार ] ओ० ३७ पयावण [पाचन] ओ० १६१,१६३

मयाहिण [प्रदक्षिण] अरे० ४७,५२,६९,७०,७८, न०, न१, न३. रा० ६,१०,१२, ५६,५न,६५. 62,68,88,232,653,640,542,58,2600, 685,985,005 पयाहिणावत्त | प्रदक्षिणावर्त | ओ० १६. জী৹ ৰাধহৰ,শ্ৰহত,দৰ্বাংক, ११ पयोधर [पयोधर] जी० ३१४९७ पर [पर] ओ० १४४,१४४,१६० से १६३,१६४, १६६. रा० ५१६ परं [परम् | जी० ३।५३८।२३ परंगमाण (पर्यङ्गन) रा० ८०४ परंपर | परम्पर] जी० १/४३ परंपरगय | परम्परगत | ओ० १६५।२० परंपरसिद्ध [परम्पःसिद्ध] जी० १७७,६ परकम (पराकम) ओ० ८६ से ६४,११४,११७, १४४,१४७ से १६०,१६२,१६७ परग [परक | जी० ३।४८७ परधर [परगृह] रा० ५१६ **परच्छंवाणुवत्तिय** [परच्छन्दानुवर्तित ] ओ० ४० **परपरिवाइय** [परपरिवादिक] ओ० १५६ वरपरिवाय (परपरिवाद) ओ० ७१,११७,१६१. १६३ **परपरिवायविवेग** [परपरिवःदविवेक] औ० ७१ परपुट्ट | परपुष्ट ] रा० २५. जी० ३ २७= परम [परम] ओ० २०, २१, ४३, ५४, ४६, ६२, **६३,**७५,५०,५**१.** स० ५,१०,१२ से १४,१६ से १८, ४७, ६०, ६२, ६३, ७२, ७४, २७७, २७६, २८१, २८८, २६०, ६४४, ६८१,६८३, EEO, EEX, 000, 000, 080, 083,08X, ७१६, ७१=, ७२४, ७२६, ७६४, ७७४,७७=, द०२. जी० ३**।११**६, ४४३, ४४४,४४७,४४४ **धरमकिण्ह (**परमङ्ख्ण) जी० ३।५३, ६४ **घरमकिण्हलेस्सा** [परमक्रणण**ेक्या | जी० ३**:१०२ परमद्व [परमार्थ] ओ० १२०, १६२. रा० ६६८, ७१२, ७५६

परमण्ण [परमान्न] जी० ३।४१२ **परमसीय** [परमधीत] जी० ३।११५ **परमसुक्कलेस्सा** [परमशुक्ललेश्या] जी० ११०४ परमसुविकल [परमञुक्ल{ जी० ३।१०७६, १०९६ **परमहंस** [परमहंस] ओ० **६**६ परमाउ [परमायुष्] ओ० ६५ परमाणु [परमाणु] जी० ७७१. जी० ११४ परलोग [परलोक] ओ० २९, ८१ से ९४, ११४, ११७, १४४, १४७ से १६०, १६२, १६७ **परवाइ** | परवादिन् | ओ० २६ परवाय [परवाद] ओ० २६ परसु [परशु] रा० ७६४ परस्सर [पराशर] जी० ३।६२० पराइय [पराजित] ओ० १४. जी० ६७१ √परामुस [परा + मृण्] ---परामुसइ. रा० २६४. जी० ३।४६०---परामुसति. रा० २६५. জী৹ ২া४২৩ परामुसिता [परामुख्य] रा० २१४. जी० ३।४५७ √परावर्स [परा+वृत्]—परावत्तेइ. रा० ७२६ ----परावत्तेहि. रा० ७२५ परासर [पराशर] ओ० १६ परिकच्छिय | परिकक्षित | रा० ५२ परिकम्म [परिकर्मन्] ओ० ३६ √परिकह |परि-+ कथय् |----परिकहेइ ओ० ७१. रा० ६१ परिकहेउं | परिकथपितुम् | ओ० १६५।१६ परिकिलंत [परिक्लान्त] रा० ७२८, ७६०,७६१ **√परिकिलेस** | परि + क्लिश् | — परिकिलेसंति ओ० द९ यरिकिलेस | परिक्लेश | ओ० १६१,१६३ परिकिलेसित्ता [परिविजश्य] ओ० ८६ परिक्सिस [परिक्षिप्त] ओ० १, १२, ६४, ७०. रा० १७,१८,१३२,१७०,१७४,२३३,६५१, इन३, इन७, इनन, द्**६२, ७००, ७१६,न०४**. जीव ३।२४६,२५६,३०२,३४५,३६४,६३२, ६६१, ६८२, ७६२, ५४७,८८२,६१०,६११

परिषखेव [परिक्षेप] ओ० १७०. रा० १२४,१२६, १८८,१८६,२०१. जी० ३।४१,८१,८२,८६, १२७, २१७, २२२, २२६।३ से ६, २६०, २६३, २७३, २६८,३४१, ३६१, ३६२,४७७, इरेर, इरेस, इर्र, इर्द्र, इन्ह्र, ७०६,७३६, **८१२, ८२३, ८३२, ८३४, ५४०,८८२,६११,** ११८, १४२,१०१० से १०१४,१०७३,१०७४ परिखित्त | परिक्षिप्त ] रा० ४६, १७३, ६५१. जी० ३।२५४ परिगत [परिगत] जी० ३।२५५, ३००, ३३२ वरिगय | परिगत ] ओ० २ रा० १७, १८, २०, ३२, १२९, १४९, ७९४. जीव ३।३७२ यरिग्गह [परिग्रह] ओ० ७१, ७६, ७७, ११७, १२१, १६१, १६३. रा० ६९, ७१७, ७६६ परिगगहवेरमण पिरिग्रहविरमण अो० ७१ परिगहसण्गा [परिग्रहसंजा] जी० १।२०; ३।१२८ परिलाहिय [परिगृहीत] ओ० २०,२१,४३,५४,४६. ६२,६४,११७,१३६. रा० ८,१०,१२,१४,१८, ४६,५१,७२,७४,११८,२७६,२७९ से २८२,२९२' *६५४,६८१,६८३,६८६,७०७,७०८,७१३,७१४* ७२३,७६०,७६१,७१६. जी० ३१४४२,४४४, ४४६,४४८,४४७,१११,६३०,७२७ परिषट्टिय [परिषट्टित] रा० १७३. जी० ३।२५४ परिषट्ठ [परिघृष्ट] रा० ५२,५६,२३१,२४७. जी० इ।३६३,४०१ परिचत्त | परित्यक्त ] ओ० १२ परिचुंबिज्जमाण | परिचुम्व्यमान | रा० ५०४ परिच्छेय [परिच्छेद | ओ० १७ परिजग [परिजन] ओ० १४०. २० ७४१,००२ न्<u>१</u>१ √परिजाण (परि | जा | -- परिजाणाइ. रा० ७०१ ---परिजाणाति. रा० ७४३ परिजूसिय [परिजुब्ट] अं१० ४३ परिणत [परिणत] जी० ११५; ३१४८७,४६३,४६४,

ৼৢৼ৸

- **√परिणम** [परि-| णम् ] —-परिजमइ. ओ० ७१. रा० ७७**१** --परिजमति. जो० १।€५
- परिणमंत | परिणमत् | रा० ७७१
- परिणममाण [परिणमत्] जी० ३१६८२
- **परिणय** [परिणत] ओ० ५,न. रा० १२,७४न,७५६ न०६,न१०. जी० १।४;३;२२,११न,२७४,४नइ ४नन से ४६२,४६४
- परिणाम [परिणाम | ओ० ७१,६०,११६,१५६, रा० १३३. जी० ३।१२८,३०३,५८६,५८८,५९२, ६७४,६७६ से ६८२
- **√परिणाम** (परि-¦ेणामय् ) ---परिणामेइ. रा०७३२
- √**परिणिग्वा** [परि-|-निर्+वा]-परिणिव्वाइ.ओ १७७-परिणिव्वायति. ओ० ७२. जी० १।१३३ --परिणिव्वा<sub>दि</sub>ति. ओ० १६६ ---परिणिव्वा-हिति. ओ० १५४
- परिणिव्वाण [परिनिर्वाण] ओ० ७१ जी० ३। ११
- **परिणिव्वुय** [परिनिर्वृत] ओ० ७**१**
- परिताब [परिताय] ओ० ५९
- परितायणकर [परितापनकर] ओ० ४०
- परिताविय [परितापित ] ओ० ६२
- परिसा [परीत] जीव १।२६,६२,६४,६४,७७,७६, मव,म२,म७,मम,६६,१०१,१०३,११२,११६, ११६,१२१,१२३,१२म,१३४,१३६; ६।७४, ७६,म७
- परिससंसारिय [परीतसंसारिक] रा० ६४
- परिषाय [परि+धाव]--परिष्ठावंति. रा० २६१. जी० २।४४७
- √परिनिव्वा [परि+निर्+वा]---परिनिव्वा-हिति. रा०त्१६ परिपोलइस्ता [परिपीड्य] जी० १।४०
- परिषुण [परिपूर्ण] रा० २४
- परिपुत | परिपुत | जी० २। मण्ड
- परिषूय [परिपूत] ओ० १११ से ११३,१३७,१३५
- **परिभव** [परिभव] ओ० ४६

ৠও≂

## परिभवणा-परिवुड्ढि

परिभवणा [पन्भिवना] ओ० १५४,१६५,१६६ परिभाइता[ परिभाज्य ] रा० ६९४ **परिभाएमाण** [परिधाजयत्] रा०७६१,७८७,७८८, २०२ परिभायइत्ता | परिताज्य | औ० २३ परिभुंजमाण [परिभुञ्जान | ओ० ११६,११७ परिभुंजेमाण | परिभुञ्जान | २३० ७६४,००२ परिभुज्जमाण [परिभुज्यमान] ता० ३०,१३६,१७४, न०४. जी० ३!११८,११९,२८३,२८६,३०६ परिभोगता [परिभोगत्व | जी० ३।६१० £88,228 परिमंडल [परिमण्डल] रा० ६,१२,१४. जी० ११४; ३ २२ परिमंडित [परिमण्डित] जी० ३।३७२ परिमंडिय (परिमण्डित) ओ० १,५७,६४,७०. रा० ३२,४२,४६,१७३,२३१,२४७,६८१,८०४. জী০ ২:২৫২ परिमदृण [परिमर्दन] ओ० ६३ परिमाण | परिमाण | जी० ३।१२७।३,२४०,२४८ परिमिम | परिमित | जो० १४. रा० ६७२ परिमियपिंडवाइय | परिमितविण्डपातिक | ओ० ३४ √परियट्ट [परि + वृत्] - परियट्टयंति ओ० ४५ परियट्टणा [परिवर्तना | ओ० ४२,४३ परियत्ता (परिवर्त | जो० ४६ परियर [परिकर] रा० ६९,७६४ √परियाइ [परि⊹आ-⊹दा]---परियाएइ रा० परियाइना [ययादाय] रा० १०. जी० ३)४४४ परियाइय | पर्वास | २१० ६६४. जो० २१४६२ वरियाग (पर्याय) ओ० ६४,१४५,१५८ से १६०, શ્૬પ્ર,શ્૬૬ **√परियाण** [१रि-¦-जा] --परियाणइ रा० ६४ परियाय (पर्याय ) ओ० २३,११४,१४०. रा० द१्५ परियारणिड्वि [परिचारणदि] जी० ३।१०२५ परियाल [परिवार] ओ० २३,७०,७१. रा० ७७७,

692,200

परियावणकर [परितापनकर] ओ० १६१,१६३ परिरय [परिरय] ओ० १९२. जी० ३।२१६।१, २,४,४,=३६,६१० परिलित [परिलीयमान] ओ० ६२. जी० ३।२७४ परिली [दे०] रा० ७७ परिवंदिज्जमाण [परिवन्द्यमान ] रा० ५०४ परिवच्छिय [परिवस्नित] ओ० ५७ परिवज्जिय (परिवर्जित) जी० ३।६२२ **√परिवड्र** [परि⊹⊢वृध्]—परिवड्ढइ. जी० ३।५३५।१५.---परिवड्ढिस्सइ. रा० ५०४ √परिक्य [परि ेवृत्]—परिवयंति. रा० २८१. জী০ হা४४७ √परिवस [परि-|-वस्]—परिवसइ. ओ० १४. रा० ७०३.- -परिवसंति ओ० १८६. रा० १८६. जी० ३।२३२.---परिवसति. जी० ३।२३४ परिवसण [परिवसन] जी० ३।४६८ **√परिवह [परि+व**ह्]---परिवहंति জী৹ ৠহ০ হয় **परिवहित्ताए** [परिवोढुम् ] रा० ७६० परिवाइणी [परिवादिनी] जी० ३। ५ मन परिवाडी [परिपाटी] रा० १३१ से १३३,१३४, १३६. जी० ३।३०१ से ३०३ **परिवायणी** [परि**व**ादिनी ] रा० ७७ परिवार [परिवार | ओ० ७०. रा० ७,४२,४७, ४६,३९८,६१,६७,१६४,१८६,२०४ से २०६, २१६,२४३,२५०. जी० ३।३४०,३५०,३५९, ३६६,३६५,३७५,४०४,४४६.४४८,४४७, १६२,६२१,६१७,६६२,६७३,६००,६०४, 63:3'9X0'9X5'8XX0X0'9X6'2'96X5' 622,000,000,0023,000 परिवाल [परिवार ] रा० १३,१२० परिविद्धंसइत्ता [परिविद्धवस्य] जी० १।४० परिवृद्धि [परिवृद्धि] जी० ३।७५८,७५६ १. परिपक्षितं --परिगृहोतं परिवृत्तम् (वृ) ।

## परिव्वय-पलिओवम

परिब्वय [परिव्यय] रा० ७७४ परिव्वायग | परिव्राजक | ओ० १०१ से १३३ परिन्वाया [परिवाजक] ओ० १६ से १९,११७ परिसडिय [परिशटित] ओ० १४. रा० ७६०, ७६१,७५२ परिसप्प |परिसर्प] जी० १।१०२,१०४,१२०, १२२; ३18४१,१४३ परिसप्पी [परिसर्पी ] जी० २।४,७ परिसा | परिषद् ] ओ० ४३,७९. रा० ६,७,४३, श्रद,श्रन,६१,२७६ से २००,२०४,२०७,६६० से द्र्र, द्र्द्र, द् ह ३, द् ह४, ७१२, ७१७,७३२, ७३७,७६६,७६७,७७६. जी० ३।२३४ से २३६, २४१ से २४३,२४४ से २४७,२४९,२४०,२४४ से २४६,२४८,३४१ से ३४३,३४०,३५६,४४२ से ४४६,५५७,५६०,५६३,८४२,८४५,१०४० से १०४२,१०४४,१०४६ से १०४३,१०४५ **√परिसाड** [परि + शाटय् |----परिसाडंति जी० ३।४४५.—पडिसाडेइ रा० १८. --- परिसाडेंति रा० १० परिसाडइता [परिशाट्य] जी० १।४० परिसाडिता [परिजाट्य] रा० १८. जी० ३।४४५ परिसाडेता [परिशाट्य] रा० १० **परिसामंत** [परिसामन्त] जी० ३।१२६ परिसेय [परिषेक] जी० ३।४१५ परिसोधित [परिशोधित | जी० ३।न७न परिस्संत [परिश्रान्त] ओ० ६३. रा० ७६४ परिस्सम [परिश्रम] ओ० ६३ √परिहा [परि +धा]--परिहेइ जी० ३।४४३ परिहत्थ [दे०] औ० ४६. रा० ६९,१५१. जी० ३।११५,११६,२८६  $\sqrt{\mathsf{q}}$ रिहा  $[\mathsf{q}[\mathsf{t}] + \mathsf{g}] - \mathsf{q}[\mathsf{t}]$ जी० ३।द३दः१६.--परिहायति. जी० ३.१०७ वरिहाणि | परिहाणि ] जी० ३।६६=,५३८।१६,२० परिहायमाण [परिहीयमाण] ओ० १९२. जीव ३।६६८८,८८२

ध्द०

परिहारविसुद्धिचरित्तविणय [परिहारविशुद्धिचरित्र-विनय | ओ० ४० परिहित [परिहित] रा० ६८४,६६२,७००,७१६, ७२६,८०२. जी० ३।११२२ परिहिय | परिहित | ओ० २०,४७,५२,५३,७२. रा० ६८७,६८९ परिहोण [परिहीण] ओ० ७४।६,१=२,१९४। -. रा० १३,१५,१७ परिहेत्ता | परिधाय | जी० ३ ४४३ वरोसह [परीपह] ओ० ११७,१५४,१६५,१६६ परूढ (प्ररुढ] औ० १२ **√परूव [प्र**⊹रूपय्]—परूवेइ. ओ० ४२. रा० ६८७.---पह्नवेंति. जी० ३।२१०. परूविय [प्ररूपित ] जी० १।१ परूवेमाण [प्ररूपयत्] ओ० १८ पलंब [प्रलम्ब] ओ० ४७,४९,४७,६४,७२. रा० ५१,६६,७० पलंबमाण [प्रलम्बमान] ओ० २१,५२,५४,६३. रा० ५,४०,१३२,६८७ से ६८६,७१४. জী০ ইাৰ্হ্য पलाल [पत्ताल] रा० ७६७ पलिओवम [पल्योपम] ओ० १४,१४. रा० १=६, २८२,६६४,६६६,७१८. जी० १।१२१,१२४, १३३; २।२०,२१,२५ से २८,३० से ४९,५३ से ५५,५७ से ६१,७३,०३,०४,१३८; ३।१४६, १६४,२१८,२३८,२४३,२४७,२४०,२४६, **३४०,३**<u>४</u>८,४४४,४**६४,**५६४,६२९,६३७, £xe,000,078,078,070,035,058, < ४७, द ६०, द ६३, द ६६, द ६<u>६</u>, द ७२, द७१, न्छन,नन्ध,हरूइ,हरू४,१०२७ से १०३६, १०४२,१०४४,१०४६,१०४७,१०४९ से १०४३,१०४४,१०८६,११३२,११३४; ६१३, ६,६; ७।५,६,१२; ६।१८७ से १८६,२१२, २१४,२२४,२३८,२७३

#### पलिच्छन्न-पबीइय

पलिच्छन्न [परिच्छन्न] ओ० ६. जी० ३।२७४ पलित्त [प्रदीप्त] जी० ३।४८२ पलिय [पलित] जी० ३।४९७ पलियंक [पर्यङ्ख] रा० २२४. जी० ३।३८४ पलिह [परिघ] ओ० १६ √पलीब [प्र-∔ दीपय्]--पलीवेउजा. रा० ७७२ √पल्लंघ [प्र+लंघ्] -पल्लंघेज्ज. ओ० १८० पल्लंघण [प्रलङ्घन] ओ० ४० पल्लग [पल्यक] जी० ३। ६११ पल्लत्थमुह [पर्यस्तमुख] रा० ७६५ परलव [पल्लव] अः० ५,८. रा० १३६,२२८. जी० ३।२७४,३०६,३८७,६७२ पल्लवपविभत्ति | पत्लवप्रविभक्ति | रा० १०० पल्हविया [पह्नाविका] ओ० ७०. रा० ५०४ पल्हायणिज्ज [प्रह्तादनीय] ओ० ६३ पर्वच [प्रपञ्च] औ० १९५ पर्वचेमाण (प्रपञ्चयत् | जी० ३।२३९ पबग [प्लवक] ओ० १,२ पवगपेण्छा [प्लवकप्रेक्षा] ओ० १०२,१२५, जी० 31285 पवण [पवन] ओ० ४८,४७ पवण [प्लवन] रा० १२,७४८,७४९. जी० ३।११८ पवत्त [प्रवृत्त] रा० १४,७४,४०,५२,११२ जी० ३।४४७ √पवत्त [प्र+वर्तय]—पवत्तेइ. रा० ६७१— पवत्तेति. रा० ७५०-- पवत्तेमि. रा० ७५०. पवत्तेहि, रा० ७४० पवत्तय [प्रवर्तक] रा० ६७१ पवत्ताय [प्रवृत्तक] जी० ३।२८५ पवयणणिण्हग [प्रवचननिह्नवक] ओ० १६० पवर [प्रवर] आं० २,२०,४७, से ४३,४४ से ४७, ६३से६४,७२. रा० ६,१२,३२,४१,१३०,१३२, 234,2=8,282,4=2,4=0 6=8,482, ७००,७१६,७२६,८०२. जी० ३।३००,३०२, ₹9**?,**₹8**年,**४४७,४४७,४**६७,११**२२

पवलाइया [दे०] जी० २।६ पवहण [प्रवहण] ओ० १००,१२३ पवा [प्रया] ओ० ३७ रा० १२ पवाइय [प्रवादित] ओ० ६७,६४. रा० १३,६४७. जी० ३।३४०,४६३,१०२४ पवादित [प्रवादित] रा० ८४२,८४४. जी० ३।४४६ पवादिय | प्रवादित ] रा० ७ √ पवाय [प्र-|-वादय्]---पवाएंसु. रा० ७१ पवाल [प्रवाल | ओ० ४,५,१६,२३,४७. रा० २७, २२८ ६९४. जीव १७१,२७४,२८०,३८७, \*85,805,897 पवालमंत [प्रवःलवत्] ओ० ४, ५. जी० ३।२७४ पविइण्ण | प्रविकीर्ण | ओ० १ पविक्लरमाण [प्रविधिरत] जी० ३।११८ पविचरित [प्रविचरित] रा० १७४ पविचरिय [प्रविचरित] जी० ३।२८६,६३९ पबिट्ठ [प्रविष्ट] ओ० ६४. जी० ३।५५,७८ √पविणो [प्र+विन्-नी]---पविणेउजा. जी० ३।११९ । पवित्तय [पवित्रक] ओ० १०८,११७,१३१ पवित्ति [प्रवृत्ति] ओ० १६,१७ पवित्तिवाउय [प्रवृत्तिव्यापृत, प्रवृत्तिवादुक] ओ० **१६,१७,२०,२१,४३,**४४ पवित्यरमाण [प्रविस्तरत्] जी० ३१२५६ पविद्धत्य [प्रविध्वस्त] जो० ३।११८, ११९ पविमोयण [प्रविमोचन] ओ० ७,५,१० पवियरितए [प्रविचरितुम्] रा० ७३२,७३७ पविरल [प्रविरल] रा० ६,१२,२८१,७६०,७६१. जी० ३,४४७,५६१ पविराय | दे०प्रस्कुटित ] जी० ३१११८,११९ पविलीण [प्रविलीन] जी० ३।११८,११६ √पविस [प्र+विश्]--पविसइ. रा० ७९६. --पविसामो. रा० ७६५ पविसंत [प्रविशत् ] जी० ३। ५ २ ५। १४ पवीइय [प्रवीजित] ओ० ६७

592

√पवोणी [प्र+वि+नी]—पवीणेइ ओ० ५६ पवीणेत्ता [प्रविणीय] ओ० १९ √पवुच्च [प्र+वच्] पवुच्चति जी० ३।८४१ पवेस [प्रवेश] ओ० १५४,१६२,१६५,१६६. रा० १२६,२१०,२१२,६६८,७४२,७८६,८१६. जी० \$1300,\$X8,300,X88,E83,54X पव्यद्वत्तए [प्रव्रजितुम्] ओ० १२०. रा० ६९५ पथ्वइय [प्रव्रजित] ओं० २३,७६,७८,९४,१५४, 328 परवग [ पर्वंग ] जीव शाइ ह यव्वत [पर्वत] रा० २७१. जी० ३१४४५,६३२, ६३७,६६१,६६२,६६४,६६६,६६८,७३४,से 983,088,086,080,088,580,580,580 से ६४२,५४४,५६६,५५२,६१० से ६१२,६१४ से ६१६,६१८से६२३ पव्यतग [पर्वतक] जी० ३।८६३,८७४,८८१, १८२७ पव्वतय [पर्वतक] जी० ३। ५६३ √पथ्वय [प्र+व्रज्]--पव्वइस्सति. रा० ५१२. ---पन्वइस्सामो. ओ० ४२. रा० ६८७. -- पच्नइहिति. ओ० १४१.-- पव्वयंति रा० ६६५. यव्वय [पर्वत] रा० ४६,१२४,२७९,७४४,७४७. जी० ३।२१७,२१९ से २२१,२२७,३००,५६८, ४७७,६२२,६३३,६२८,६३८,६६८,७०१, @\$&!@\$~!@X0'@XX'@XX'@X 3'@XE'; 3508,8038 परवयग [पर्वतक] जी० ३।५७९ पव्चयमह [पर्वतमह] जी० ३।६१५ पटवयराय | पर्वतराज ] जी० ३। ५४२ पब्बहणा [प्रव्यथना] ओ० १५४,१६५,१६६ पथ्या [पर्वा] जी० ३।२१८ पसंग [प्रसङ्ग] को० ४६ पसंत [ प्रशान्त ] ओ० १४. रा० ९,१२,१४,२५१, ६७१. जी० ३।४४७

पसण्णा [प्रसन्ना] जी० ३।=६० पसत्त [प्रसक्त] रा० १५ पसत्य [प्रशस्त] वो० १४,१९,४६,४२,११९,१४६. रा० ३३,१३३ ६७२. जी० १।१; ३।३०३, ३७२,४९६ से ४९८ पसत्यकायविणय [प्रशस्तकायविनय] को० ४० पसत्थमणविणय [प्रशस्तमनोविनय] ओ० ४० पसत्थवइविणय [प्रशस्तवाग्विनय] ओ० ४० पसत्यू [प्रशास्तू] ओ० २३. रा० ६८७,६८८ पसम्ता (प्रसन्ता) जी० ३।४८६ √पसर [त्र+सू]-पसरंति. रा० ७४ पसरिय [प्रसृत] ओ० ४६. जी० शप्रवह √पसव [प्र+सू]--पसवंति. जी० ३।६३० पसवित्ता [प्रसूय] जी० ३।६३० पसाधण [प्रसाधन] रा० १५२. जी० ३।३२५ पसाधणघरग [प्रसाधनगृहक] रा० १८२,१८३ √पसार [प्र+सारय]--पसारेति. रा० ६९ पसासेमाण [प्रशासयत्] ओ० १४. रा० ६७१,६७१ पसाहणघरग [प्रसाधनगृहक] जी० ३।२९४ पसाहा [प्रशाखा] ओ० ४,८. रा० २२८. জী৹ ২।২৬४,২৭৬,६७२ पसिढिल [प्रशिथिल] ओ० ५१ पसिण [प्रश्न] ओ० २६. रा० १६,७१९ पसु (पशु] ओ० ३७. रा० ६७१,७०३,७१⊂. जी० ३।७२१ पसेढि [प्रश्नेणि] रा० २४. जी० ३।२७७ **पस्सा** [पश्या] रा० ८१७ पस्सवणी [प्रस्नवणी] रा० ५१७ पह [गथ] ओ० ४२,५४. रा० ६४४,६४४,६≤७, ७१२. जी० ३।५४४,=३=।१५ पहकर [दे०] ओ० १,६. रा० ६८३. जी० ३।२७४ पहगर दि० रा० ४३ यहट्ट [प्रहृष्ट] ओ० १९. जी० ३। ४९६ पहरण [प्रहरण] ओ० ४७,६४. रा० १७३,६६४, ६८१,६८३. जी० ३।२८४,४६२

पहरणकोस [प्रहरणकोश] रा० २४९,३४४. जी० ३,४१०,५२० पहरणरयण [प्रहरणरत्न] रा० २४६,३४४. जी० ३।४१०,५२० पहसित [प्रहसित] जी० ३।३०७,३६४,६३४,६३६, 8005 पहसिय [प्रहसित] रा० १३७,१८६, जी० ३।३५५, ३५६,३६= से ३७१,५=६,६७३ यहा [प्रभा] ओ० १२,२२, २७० १४४. जी० ३।५९६ पहाण [प्रधान] ओ० २३,२४,१४६. ग० ६८६, ८०६,८०७. जी० ३,४१२,४१७ √पहार [प्र+ध।रय्]-पहारेज्जा. ओ० ४०. --- गहारेत्थ. ६४, रूबद. जीव ३।४४४ पहाविय | प्रधावित ] ओ० ४६ पहिट्ठ [प्रहृष्ट] ओ० ५१ पहिय [पथिक] रा० ७८७,७८८ पहियकित्ति [प्रथितकीति ] ओ० ६४ पहीण [प्रहीण] ओ० ७२ पहु [प्रभु] औ० ११९. रा० ७६१ पहेलिया [प्रहेलिका] ओ० १४६. रा० ८०६ पाई (पात्री) रा० २१८,२७९ पाईण [प्राचीन] रा० १२४. जी० २।५७७,६३१, 3508 पाईणवात [प्राचीनवात] जी० १। - १ पाईणवाय [प्राचीनवात] जी० ३।६२६ पाउ [प्रादुस्] ओ० २२. रा० ७२३,७७७,७७८, ច្នេត पाउग्ग [प्रायोग्य] रा० ६९९ √पाउण [प्र+आप्]--पाउणइ. ओ० १८२. ओ० १४०. रा० =१६ पाउणित्ता [प्राप्य] अरेक हरे. राक दश्द ∖ पाउब्भव [प्रादुस्-|-भू]---पाउःभवति. रा० १६---पाउन्मह. रा० १३ 

पाउब्भयमाण [प्रादुर्भवत्] रा० १७ पाउब्भूय [प्रादुर्भूत] ओ० ७९ सेद१. रा० ६१, ¥30,070,000,570,080,037, ×37,058 पाउया [पादुका] ओ० २१,४४,६४. रा० ५१, 388 पाओवगमण [प्रायोपगमन] ओ० ३२ पाओवगय [प्रायोगगत] ओ० ११७ पागडभाव [प्रकटनाव] ओ० २७. रा० = १३ पागडिय [प्रकटित] ओ० ५०,५१ पागय [प्राकृत] जी० ३।=३=।३ पागसासण [पाकशासन] जी० २।१०३६ पायार | प्राकार] ओ० १. रा० १२७,१२८,१७०, ६४४,६४४. जी० ३।३४२, ३४३,३४८, ૧૧૪,૪,૬૪ √पाड [पातय्]---पाडेइ. रा० ७६४ पाडंतिय [प्रात्यान्तिक] रा० ११७,२=१ पाडलि [पाटलि ] ओ० ३०. जी० ३।२८३ पाडिसुय [प्रतिश्रुत] जी० ३१४४७ याडियक्क [प्रत्येक] ओ० ४४,४८,६२,७० पाडिहारिय [प्रातिहारिक] ओ० १२०,१६२. TIO 008,002,082,083,005 पाडिहेर [प्रातिहार्य] ओ० २ पाण [पान] ओ० १४,११७,१२०,१४१,१४७, १४६,१४०,१६२. रा० ६७१,६८६,७०४, 686,0x2,05x,00x,005,040,056, 68x,680,688,502,505,580,58 पाण [प्राण] ओ० ८७,१६१,१६३. जी० ३।१२७, Eux, 2024, 2830 पाणक्खय [प्राणक्षय] जी० ३।६२६,६२= पाणत [प्राणत] जी० ३।१०७६,१०५८ पाणय [प्राणत] ओ० ५१,१६२. जी० ३११०३८, १०५३,१०६६,१०६८ पाणविहि [पागविधि ] स्रो० १४६. रा० २०६ पाणाइवाय [प्राणातिपात] ओ० ७१,७६,७७, ११७,१२१,१६१,१६३. रा० ६९३,७१७, ७९६

## पाणाइवायवेरमण-पारिणामिया

पाणाइवायवेरमण [प्राणातिपातविरमण] ओ० ७१ पाणि [पाणि] ओ० १४,१९,३७,६३,६४,१४३. रा० १२,६६४,६७२,६७३,७४८,७४९,८०१, जी० ३।११८,५६२,५९६ पाणिलेहा | पाणिरेखा | भी० १९. जी० ३। १९६, 289 पाणिय [पानीय] ओ० ४६ पाताल [पाताल] जी० २।७२६,७२६ पाती [पात्री] रा० १४१. जी० ३।३२४,३४४, ४१९,४४४ पाद [पाद] रा० २=१,२==. जी० ३।३११, 809,888,889,848 पादचारविहारि | पादचारविहारिन् ] जी० ३.६१७ पादपीठ [पादपीठ] ओ० ६४ पादव | पादप ] जी० ३१३०३ पामिच्च [पामूत्य] ओ० १३४ पामोक्ख [प्रमुख, प्रमुख्य] रा० ३११,७८७,७८८. जी० ३।४१०,५२० पाय [पात्र] ओ० ३३ पाय [पाद] ओ० १४,३७,४२,६३,६९,९०,१११ से ११३,१३७,१३८,१४३. रा० १२,३७, २४४,६४६,६७२,६७३,७४८,७४९,००१. जी० ३।११८,५५६ पायए [पातुम्] ओ० १३४,१३४ पायंचणी [पादकाञ्चनी] जी० ३।४८७ पायंत [प्रवृत्त, पादान्त] रा० ११५ पायंताय [प्रवृत्तक, पादान्तक] रा० २०१ पायच्छिण्णग | पादच्छिन्तक | रा० ७११ पायच्छिण्णय | पादच्छिन्तक | रा० ७६७ पायच्छिता [प्रायश्चित्त ] ओ० २०,३८,३९,५२, ४३,७०. रा० ६८३,६८४,६८७ से ६८६, £87,000,084,075,028,028,000,738 ७९४,५०२,५०४ पायछिण्णग [पादछिन्तक] ओ० १० पायजाल [पादजाल] जी० ३।५१३

पायतल [पादतल] रा० २५४. जी० ३१४१५ **पायला** [पादात] ओ० ६४ पायसाणियाहिवद्व [पादातानीकाधिवति, पादात्यनी-काधिपति ] रा० १३,१६ पायत्ताणियाहिवति | पादातानीकाधिपति, पादात्यनीकाधिपति | रा० १४ पायत्ताणीय [पादातानीक, पादात्यनीक] ओ० ६४ पायताणीयःहिवद्य [पादातानी काधिवति, प:दात्यनीकाधिपतिः | रा० १५ पायसाय [प्रवृत्तक, पादाग्तक] रा० १७३ पायपीड [पादपीठ] ओ० २१,५४. रा० ८,३७, ४१,७१४. जीव ३ ३११ **पायपुंछण** [पादत्रोव्छन] ओ० १२०,१६२. रा० ६९८,७४२,७८९ पायबद्ध [पादबद्ध] रा० १७३. जीव ३।२८४ पायरास [प्रातराज] रा० ६८२ पायव [पादप] औ० ४,८,६,१२,१३. रा० ३,४, १३३,८०४. जी० ३।२७४ पावविहारचार [पादाविहारचार] ओ० ४२. रा० ६८७ से ६८१,७०० पायवीह [पादपीठ] ओ० १९ पायसीस [पादशीर्थ] जी० ३।४०७ पायसीसग [पादशीर्षक] रा० ३७,२४५. জী০ ই।ই११ पायाल [पाताल] ओ० ४६. जी० ३१७२८, ७३१ यारंचियारिह [पारञ्चिताई] ओ० ३९ पारग [पारग] ओ० ६७ पारगथ [पारनत] ओ० १९४।२० पारगामि [पारगामिन्] ओ० २९ परिब्भमाण | प्रारभमान | ओ० ११७ पारसी [पारती] और ७०. रा० ८०४ पारावय [पारापत] जी० ३।३८८ पारिजातकवण [पारिजातकवन] जी० ३। १८ ह पारिणामिया [पारिणामिकी] रा० ६७१

## पारियाय-पासायवडेंसक

पारियाय [पारिजात] रा० ४४ पारिहेरग | प्रातिहायंक | जी० ३। १९३ पारो [दे० पारी] जी० ३। १८७ पारेवय [पारापत] रा० २६. जी० ३।२७९. ४८३ √पाल [पालय] --- पालयाहि. ओ० ६व. जी० ३।४४०---पालेंति. श्रो० ६१---पालेहि रा० २८२ पालंब [प्रालम्ब] ओ० २१,५२,५४,६३,१०८, १३१. रा० ८,२८५,६८७ से ६८६,७१४. জী০ ২।২৪২ पालग [पालक] ओ० ५१ पालित्ता [पालयित्ता] ओ० ६१ पालियाय [पारिजात] २१० २७. जीव ३।२८० पालेमाण [पालयत्] ओ० ६८. रा० २८२,७११. जी० ३।३४०,४४८,४६३,६३७ पाव [पाप] ओ० ७१,७९ से ५१,१२०,१६२. रा० ६७१,६६८,७४२,७८६ पाव [प्र + आप् ]---पावइ. ओ० १९४११४ --- पाविज्जामि. रा० ७४१--- पाविज्जिहिह. ৰ্ষাত ওখু 🖁 पावकम्म [पापकर्मन्] ओ० ५४,५४,५७,५५. **র্যাত ও**র্থত, ওর্থ **१** पावकम्मोवएस [पापकर्मोपदेश] ओ० १३६ पावग (पापक] ओ० ७४।६ पावय [पापक] ओ० ७१ पावयण [प्रवचन] ओ० २५,७२,७६ से = १, १२०,१६२,१६४. रा० ६९४,६६८,७४२, 320 पावसउण [पापशकुन] रा० ७०३ पास [पार्श्व ] ओ० १९. रा० १३१ से १३८, २४६,८१७. जीव २।२४८,४१४,४६६,४८७, ৬৩४ पास [पाश] रा० ६६४. जी० ३।४६२ पास [ दृश्]-पासइ. ओ० ४४. रा० ७१४. जी० ३।११८---पासंति. ओ० ५२.

रा० ७६५. जी० ३।१०७- पासति. रा० ७. जी० ३।२००--- शाससि. ा० ७७१-- पासह. रा० ६३---पासामि. रा० ७६६---पासिज्जा. रा० ७७६. ---पासिज्जासि. रा० ७४१. --- पासेज्जा. जी० ३।११व पासंत [पश्यत्] रा० ७६४ पासग (पाशक) ओ० १४६. रा० ५०६ पासग्गाह (पाशग्राह) ओ० ६४ पासणया [दर्शन] रा० ७४० से ७४३ पासतो | पार्श्वतस् | रा० ११ पासपाणि [पाशपाणि] रा० ६६४ पासमाग (पश्यत्) रा० ५१५ पासवण ∫प्रस्रवण] रा० ७६६ पाससूल [पार्थ्वशूल] जी० ३।६२८ पासाइय [प्राप्तादीय, प्रातादिक] जी० २।२५६ से २५५,२१० पासाईय [प्राजादीय, प्रासादिक] ओ० ७२. रा० २०,३७,१३०,१३३,१३६,२५७. जी० ३।२६६, 305,388,800,880,258,465,460, ६७२,११२१ पासाग [पाषाण] रा० १७४. जी० ३।२८६ पासाद [प्रासाद] जी० ३।७६२ पासादवडेंसग [प्रासादावतंसक] जी० ३।७६२ पासादीय [प्रासादीय, प्रासादिक] अो० १,७,५, १० से १३,१४,१९४. रा० १,१९,२१ से २३, ३२,३४,३६,३=,१२४,१३७,१४४,**१४**७, 808,608,552=,558,533,588,580 288,552,500,502,505,505,000, ७०२. जीव ३१२३२,२६१,२६६,२७६,३००, 303,300,350,3883,458,458,586, **५४७,५६३,११**२२ पासाय [प्रासाद] रा० १४,७१०,७७४. जी० 31288,808 पासायवॉडसय [प्रासादावतंसक] जी० ३।७७० पासायवर्डेसक [प्रासादावतंतक] जी० ३।३६९, مون

पासायवर्डेसग [प्रःसादावतंसक] रा० १३७,१८६, २०५,२०७,२०८,७७४. जीव ३।३०७ से ३०९, ३१४,३४५,३४९,३६४,३६७,३६९ से ३७३, ६३४,६३६,६८६,६८९,६९२ से ६९८,७६२ पासायवर्डेंसत [प्रासादावतंसक] रा० २०४ पासायवर्डेसय [प्रासादावतंसक] रा० २०४ से २०९. जी० ३।३४९,३६४,३६५ से ३७१, ६६३,६७३,६५४,६८८,७३७ पासावच्चिज्ज [पार्श्वापत्य] रा० ६८६,६८७, ६८६,७०६,७१३,७३३ पासि [पार्श्व] ओ० ६६ जी० ३।३०१ से ३०७, ३१४,३४४,४१७,६३६,७नन से ७८०,न३६, पासित्तए [इच्टुम्] रा० ७६४ पासिसा [दृष्ट्वा] ओ० ५२. रा० म. जी० 3.885 पासेत्ता [दृष्ट्वा] रा० ६८८ पाहुड [प्राभृत] रा० ६८०,६८१,६८३,६८४, 300,200,500,000,000 पाहणगभत्त [प्राधुणकभक्त] अरे० १३४ पाहणिज्ज [प्राह्वनीय] वो० २ षि [अपि] रा० १० पिअदंसण (प्रियदर्शन] ओ० ६३ षित् | पितू ] ओ० १४. रा० ६७१,७७३ पिंगल | पिङ्गल ] ओ० ६३ पिंगलक्ख (पिङ्गलाक) जी० ३।२७४ **पिंगलक्खग** (पिङ्गलाक्षक) ओ० ६ पिछि | पिच्छिन् | ओ० ६४ **पिंजर |** पिञ्जर ] जी० ३। मण्म पिडहलिद्दा [पिण्डहरिदा] जी० १।७३ पिंडि [पिण्डि] ओ० ५,८,१०. ग० १४५. जी० 31285,208 र्षिडिम [पिण्डिम] ओ० ७,८,१०. जी० ३।२७६ विडियग्गसिरय [पिण्डिताग्रशिरस्क] ओ० १६ पिडियसिर [पिण्डितशिरम्] जी० ३११९६

पिच्छजमय [पिच्छध्वज] रा० १६२. जी० ३।३३५ पिच्छणघरग [प्रेक्षणगृहक | २ा० १८२,१८३ पिच्छाधरमंडव [प्रेक्षागृहमण्डप] रा० ३२,३३,५६ पिट्टण [पिट्टन] ओ० १६१,१६३ षिट्ठओ [पृष्ठतस्] ओ० ६६. जी० ३,४१६ पिट्ठंतर [पृष्ठान्तर] रा० १२,७४८,७४९ जी० ३१११८८,४,६८ पिट्ठतो [पृष्ठतस्] रा० २४४,२८६,२६०. जी० ३।४४५,४५६ **पिट्रपयणग** [पिष्टपचनक] जी० ३<sub>।</sub>७८ **पिट्रिकरंडग** [पृष्ठिकरण्डक] जी० ३।२१८,४६८ पिडग [पिटक] जी० ३। द३ दा४ से ६ **पिडय** [ पिटक ] जी० ३।५३८।३,४,६ पिणद [पिनद] ओ० १७,६३. रा० ६९,७०, १३३,६६४,६८३. जी० ३।३०३,४६२ पिणद्वय [पिनडक] रा० ७६१ पिणय [पीनक] जीव ३।४८७ √ पिणिद्ध [पि+नह्,पि+नि+धा]--पिणिद्धेइ. ग० २८४. जी० ३ ४४१.- पिणिद्वेति. रा० २८४. जी० ३।४४१ पिणिढत्ताए [पिनढुम्] ओ० १०८ पिणिद्धेत्ता [पिनहा] रा० २८५. जी० ३।४५१ षितिषिङनिवेदण [पितृषिण्डनिवेदन] जी० ३।६१४ पित्ताजर [पित्तज्वर] रा० ७१४ पित्तिय [पैत्तिक ] ओ० ११७. रा० ७९६ पिधाण [पिधान] रा० १३१,१४७,१४८. जी० ३।४४६ पिबित्ताए [पानुम्] ओ० १११ षिय [ दिय ] ओ० १४,२०,४३,६८,११७,१४३. रा० ७१३,७४० से ७४३,७७४,७९६. जी० 3308,030815;25818 षिय [पितृ] ओ० ७१. रा० ६७१. जी० ३।६११ √षिय [पा]—पिज्जइ. रा० ७५४--पियइ. रा० ७३२ पियंगु [त्रियङ्गु] ओ० ९,१०. जी० ३।३८८, ४९३

## पियतराय-पुंज

पियतराय [प्रियतरक] रा० २५ से ३१,४५. जी० ३।२७५ से २५४,६०१ पियदंसण | प्रियदर्शन ] रा० ६७२,६७३,८०१. জী০ ইাব০ন पियय [प्रियक] ओ० ९,१० वियर | पितु ] रा० ५०२,५०३,५०४,५०५,५१० पियरविखया [पितृरक्षिता] ओ० ६२ पियाल [प्रियाल] जी० ३।३८८,४८३ पिरली [पिरली] जी० ३। १८ म पिरिपिरिया [पिरिपिरिया] रा० ५१,७७ पिरिपिरियावायग [पिरिपिरियावादक] रा० ७१ विव [इव] ओ० २७. रा० १७. जी० रा४५१ पिवासा [पिपाता] ओ० ४६,११७. राज ७९६. जी० ३।१०६,१२७,१२८,५६२,१११४ पिवासिय [पिपासित] रा० ७६०,७६१,७७४. जी० ३।११६,११६ पिसाय | पिशाच | ओ० ४६. जी० ३। १७,२५२,२५३ पिसायकुमार [पिशाचकुमार] जी० ३।२४३ **पिसायकुमारराथ** [पिशाचकुमारराज | जी० ३।२५२ से २४६ पिसायकुमारिद [पिशाचकुमारेन्द्र] जी० ३।२४३ से २४६ पिहडग [पिठरक] जी० ३।७५ √पिहा [षि+धा]-पिहावेमि. रा० ७४४. --- पिहेइ. रा० ७४४ --- पिहेज्जा. रा० ७७२ विहाल [विधान] रा० २१०. जी० २१३०१ पिहागय [पिद्यानक] रा० ७४४,७४६ पिहर्णामजिया [दे० पिहुणमज्जा ] रा० २६ पहल [ पृथुल ] मो० १९. जी० ३। ५९६, ५९७ पीइगम (प्रीतिगम] ओ० ४१ पोइदाण [प्रीतिदान] ओ० २१,५४,१४७. रा० 688,005,505 **पीइमण** [प्रीतिमनस्] ओ० २०,२१,५३,५४,५६, ६२,६३,७८,८०,९१, रा० ८,१०,१२ से १४, १६ से १८,४७,६०,६२,६३,७२,७४,२७७,

२७**६,२८१, १६०,६५५,६८१,६८२,६**८०, £8,600,000,080,082,082,082, ७१८,७२४,७२६,७७४,७७८, जी० ३१४४३, 888'880'888 पीठ [पीठ] ओ० २७,१२०,१६२ रा० ६६८, 3=0,300,5,00,5,00,5,00,300,500 पोढम्माह [पीठग्राह] ओ० ६४ पीढमद्द [पीढमर्द] ओ० १८. रा० ७४४,७४६, ७६२,७६४ योग [पीन] ओ० १९. रा० १३३. जी० ३।३०३, 288,289 √पीण [पीनय्]--पीणंति. जी० ३।४४७. ----पीणेंति. रा० २८१ पीणणिज्ज | प्रीणणीय ] ओ० ६३ पोत (पीत) जीव २१४९४ **योलपाणि** [पीतपाणि] रा० ६६४ यीय [पीत] रा० ६६४. जी० ३।४६२ पीयकणवीर [पीतकणवीर] रा० २८, जी० ३।२८: पीयपाणि [पीतपाणि] जी० ३।४६२ पीयबंधुजीय [पीतवन्धुजीव] रा० २८. জীত ই।২=१ पीयासीय [पीताशोक] रा० २८. जी० ३।२८१ पौलियग [पीडितक] ओ० १० पीलु [पीलु] जी० १।७१ यीवर | पीवर | ओ० १९. रा० ६९,७०. जी० संश्रहह, १६७ √ वीह [स्पृर्] - पीहति. ओ० २० - पीहेइ. रा० ७१३. -- पीहेंति. रा० ७१३ पुंछणी [पुझ्छणी] रा० १३०,१६०. जी० ३।२६४-३०० पुंज [पुञ्ज] ओ० २,४४. रा० १२,३२,३८,१६०, २२२,२४६,२५१,२९१,२९३ से २९६,३००, ३०४,३१२,३४४. जी० ३।३१२,३३३,३७२, ३०१,४१७,४४७,४४७ से ४६२,४६५,४७०, 800,284,240,228,250,220,228,588

दा१,३

पुनखरोदव | पुल्करोदक | रा० २७६ पुग्गलपरियट [पुर्गल ।रिवर्त ] जी० १।१३९ √पुच्छ (प्रच्छ)---पुच्छइ. २/० ७१६.---पुच्छति. रा० ७१३.---पुच्छसि. रा० ७३७. -पुच्छिरसामो रा० १६

पुरुखरोदग [पुष्करोटक] जी० ३१४४५

- भ्र२६,४३७,४४४,४४१,४५६,६८३ से ६८६ पुरुखरोद [ ुवरोद ] जी० ३१४४४.७७४,०२४, त४म से मथ्र,म्थ्र से मथ्र,म्थ्र, म७६, ८७६, १४६, 886 880,887,888
- ३४०,३७६,४३४,४९६,४४६,६१६,६४६ जीव ३।११८,११६,२७४,२८६,३६४,३६६, 885,858 852,888,800,888,800
- १७४,१८०,२३३,२३४,२७३,२८८,३१२,३१३
- युवसरपत्त पुग्करपत्र ] ओ० २७. रा० द१३ पुक्षसरवर (पुप्करवर) जीव ३।७७४,७७४ **पुबलरवरग** (पुष्करवरग) जीव ३।७७४ मुबखरिगी [पुःकरिणी] ओ० ६, ६ ६. रा० १७४,
- पुराखररियभग (पुरकरस्थिभुक) जी० ३।६५४ **पुवस्तरत्थिभुध** [पुष्करस्थिभुक] जी० ३।६४३,६५४ पुक्सरह [युग्कराई] जी० ३। = ३१ से = ३४
- पुक्खरणो [पुम्करणी] जीव ३१६०१,६१०,६११, E8X # E8E
- पुरुखरकण्णिया [पुष्करकणिका] जी० ३१८६,२६० पुक्खरमय [पुष्करगत] ओ० १४६. रा० म०६
- पुंडरोयद्दह [पुण्डरीव देह] जी० ३१४४५ पुक्स ( पुष्कर ) और १७०. रार २४,६४,१७१. जी० ३।२१८,२७७ ३०९,४७८,६७०,७५५, ७७४, ५१६, ५१७, ५२१ से ५२४, ५२७, ५२१ से द३१,८४८,८८३
- युंडरीय {पुण्डरीक} अो० १२,१६,२१,४४. रा० ५,२७९,२९२. जी० ३।११८५,११९,४४७, 285,528
- **पुंडग** (पुण्ड्रक) জী০ ২াদ৩দ पंडरिंगिणी [पुण्डरीकिणी] जी० ३। ११४

**ឪុង**ធ

**पुच्छणा** [प्रच्छना] को० ४३ पुच्छा [पूच्छा] ओ० १९०. जी० ११६१; ३१४, १२,३४,४१,४३,=२,६६ से १०२,११३ से १ १४,१२४,१४४,१४६,१६२,१६३,१६६, १६८,१६६,१८७ से १९१,२३३,२३४,२४३, 622,636; 250,230,230,236,236,236 EXE,EEO,EEE,EOG,EOE,8088,8088, ६०९८'४०९४'४०४८'४०४९'४०६५ झ ४०६९' १०६६,१०७४,१०६६,१११९८,११२६,११३२; 815; 1180 पुच्छितस्य [प्रष्टव्य] जी० ३।३६,७७ पुच्छिय [गृष्ट] ओ० १२०,१६२. रा० ६९८, ७४२ ७८६ पुष्टिष्ठयथ्व [प्रष्टव्य] जी० ३।२४४ पुद्ध [स्पृष्ट] ओ० १९४।९,१०. जी० १।४१; 7127,208,203,200,0022,080,503, **५१**६,द२**द** पुहु [पुष्ट] जी० २।४१७ पुट्ठलाभिय [पृष्टलाभिक] ओ० ३४ पुट्ठि [पुष्टि] जी० ३१४१२ पुछ [पुट] रा० ३०. जी० ३।२८३,१०७८ पुढवि [पृथिवी] ओ० १८६,१६१ से १९४. जी० शहर,१२१ से १२५;२।१००,१०८, १३०,१३४,१३५,१४५,१४६;३।१६१,१६२, 868,865,303,038,639,698; 8120,53 पुढविकाइय [पृथ्वीकायिक] जी० १।१२,१३,६२, १२०; २1१०२,१११,१३६,१३८,१४६; ३।१३१ से १३४,१८३,१८४,१९४,१९४; ५ १,२,५,८,१० से २०; ८१४, ६११०२,१८४, ૨૪૬,૨૪७,૨૬૨,૨૬३,૨૬૬ पुढविकाल [पृथ्वीकाल] जी० ४।१७,२२,३०; 513; 8:00,58,89 पुढविक्काइय [पृथ्वीकायिक] जी० १;६७; R1835,8×E; 31875,837; x187,70;

पुंडग-पुढविक्काइय

জী০ **২**।২৫৬,৯২৬,৯২২ **पुढविसिलापट्ट्य** [पृथ्वीशिलापट्टक] रा० ४ पुढवी [पृथिवी] रा० १२४,१३३,७४४,७४७. जी० २।१२७,१४८,१४६; ३।२ से ६,११ से इर, इ७ से ४०,४२,४४ से ४७,४९ से ६६, ७३ से दर्,दर से १८,१०२,१०४,१०६ से ११२,११६,११७,१२०,१२७,१२८; १६/४, १८५ से १९१,२३४,२५७,६००,६०१, १००३,१०३८,१०४७ से १०४६,१०६३, १०६५,१०६६,११११; २।१७ पुढवीकाइयत्त [पृथ्वीकायिकत्व] जी० रे।१२५ gealकाइयस [पृथ्वीकायिकत्व] जी० ३।११२२, ११३० पुढवीसिलापट्टग [पृथ्वीशिलापट्टक] जी० ३।१७६ पुढवोसिलापट्टय (पृथ्वीशिलापट्टक) रा० १३ युण [युनर्] ओ० ४२. रा० ७४०. जी० २।१५० **√पुण** [पू]—पुणिज्जइ. रा० ७**५**× पूणस्भव [पुनर्भव] ओ० १६४ पुजो [पुनर्] झो० ६३. जी० ३। ५३ ५। १४ पूर्ण्या | यूर्णं | २४० १७४,२८८,७६३, जी० ३।११८, **११**६,२८६,४**५४,५**८६,७९४,७८७,८७९ पुल्ल [पुन्य] ओ० ७१,१२०,१६०. रा० ६९८, ७४२,७४३,७७४,७९६ पुण्णकलस [पूर्णकलश] ओ० ४८,६४. रा० ५० цुज्जत्वभ [पूर्णप्रभ] जी० ३। ८७८ युण्णत्यमाण [पूर्णप्रमाण] जी० ३।७५४,७५७ पुण्णभद्द [पूर्णभद्र] ओ० २,३,१६ से २२,४२,४३, ૬૪,૬૬,७૦ पुण्णमासिणी [ पौर्णमासी, पूर्णमासी ] ओ० १२०, १६२. रा० ६९८,७१२,७८९. जी० ३१७२३, 390 पुण्णरत्ता [पूर्णरक्ता] ओ० ७१. रा० ६१ पुण्णाग [पुन्नाग] जी० १।७१

पुत्त [पुत्र] रा० ६७३,७६१. जी० ३।६११ युत्ताणुपुत्तिय [पौत्राणुपुत्रिक] रा० ७७६ पुष्फ [पुष्प] ओ० २,६,१९,४७,४४,६७,६२,९४. रा० १२,१३,२९,३२,१४६,१४७,२४८,२७९ से २८१,२६१,२६३ से २६६,३००,३०४, **₹१२,३४१,३**४४,४६४,६४७,६७०,७७६. जी० १७४; ३،१७१,२७४,२०२,३२६,**३३०**, ३७२,४१९,४४५ से ४४८,४५७ से ४६२, 863,800,800,286,220,280,238, १८०, १८९१, ४८६, १९१, १९६, १९७, ६००, ६०२,=३=1२,**१५**,=४२ =७२ पुष्क्रम (पुष्पत्रः) औ० ५१ पु**प्फचंगेरिया** [पुष्पचङ्गेरिका] रा० १२ पुष्फछज्जिया [पुष्पछाधिका] रा० १२ **पुष्फवंत** [युष्पदन्त] जी० ३१८६३ **पुष्फमंत** [पुष्पदत्] ओ० ४,५. जी० ३।२७४ पुष्फबद्दलय (पुष्पवार्दलक) रा० १२ पुष्फासव [पुष्पासव] जी० २। ५० **पुण्फाहार** [पुष्पाहार] ओ० ६४ पुण्फिय | पुष्पित | रा० ७८२ **पुष्कुत्तर** [पुष्योत्तर] जीव ३।६०१ पुष्फोदय [पुष्पोदक] ओ० ६३ पुमल [पुंस्टत्र] आं० १४१. रा० ७८९ पुर [पूर] ओ० २३. रा० ६७४,६९४,७९०,७९१ पुरुओ (पुरतस् ) औव १९,६४,६६,७०. राव २०, १२४,१३६ से १६१,१७६,२११,२२१. जी० ३।३२७,३५६,३७४,३७६,३८०,३८४, 362,36%,888,555,556 पूरओकाउं [पुरस्कृत्य] ओ० २५,१६४ पुरच्छिम [पौरस्त्य] जी० ३।३०० पुरतो [पुरतस्] रा० ४९ से ५६,२१५,२३३, २४७,२४८,२९१,५०२. जी० ३।२८८,३१६ से ३२६,३६३,४४७,६४१,८६३,८६७,८६६, 803

पुरत्थाभिमुह [पुरस्तादभिमुख] ओ० २१,४४,

gcविसिलापट्टग [पृथ्वीशिलापट्टक] रा० १०५.

१**१०. रा० ४७,२७७,२**व३,२व६,६४७,७*९६,* जी० ३।४४३,४४**६,४**४२,**४**४७

६६०

- पुरस्यिम [पौरस्त्य] रा० १९,४२,४४,१२६,१७०, २१०,२१२,२३४,२३६,२४२,६४६. जो० दा३००.३४०,३४४,३४१,३७३,३९७, ३६८,४०४,४४३,४४६,५५६,५६२,५६८, ६७७,६३२,६४७,६६१,६६६,६६८,६६८, ६८२,६६४,६९७,६६८,७०२,७१०,७३६, ७.३,७७७,७७६,४००,८३४,९०१४, ४०१६
- g रस्थिमिस्ल [षौरस्त्य] रा० ४७,४६,२७७, २=३,२८६,२८८,२६१,२६८,३०३,३०८, ३१६,३२४,३२६,३३२ से ३४३ ३४७ से ३४१,३६५,४१४,४४४,४७४,४१४,४१५,३४, ४७५,४६४,६३४,६४६,६४७,६६४. जो० ३।३३ से ३४,३७,२१६,२२२,२२३, २२७,४४३,४४४,४४२,४४४,४४,७४६३, ४६८,४७३,४४४,४४२,४४४,४४,७४६३, ४६८,४७३,४४४,४४२,४४४,४४,७४६३, ५१२ से ५१६,४२४,४२६,४३१,४३३,५३६, ५४०,४४६,४४७,४४३,४४६,४४७,४४७,४४३,४४६, ६६८,६७३,६=६,६६२,६६३,७६८,७७०, ७७२,७७४,७७६,४७८,६४७
- पुरवर [गुःवर] ओ० १९ जी० ३१४९६
- पुरा [पुरा] रा० १८४,१८७. जी० ३।२१७, २९७,२९८,३४८,४७९
- **पुरिमताल** [पुरिमताल] ओ० ११५
- पुरिस [पुग्प] ओ० १४,१६,१७,१९,५२,६३,६४, १९४।१८. २१० म २म,२९२,६७१,६२१ से ६८३,६८७ स ६९१ ७००,७०६,३१४ से ७१९,७३२,७३४,७३७,७४१,७४३ से ७४६, ७४म से ७६२,७६४,७६४,७६म,७६९,७७२, ७७४,७७४,७८७,७८४,७६४,७६म,७६१,७७२, २४,६० से ६३,६४,६६,६८,१४१ से १४१;

3182,918,884,886,858,858 पुरिसकार [पुरुषकार] ओ० ८६ से १४,११४, ११७,११५ १४७ से १६०,१६२,१६७ **पुरिसपुंडरीय** [पुरुषपुण्डरीक] ओ० १४. ग० ६७१ **पुरिसलक्खण** (पुस्धलक्षण) ओ० १४६. শত দতহ पुरिसलिंगसिद्ध | युरुषलिङ्गसिद्ध ] जी० १।द पुरिसवग्ध [धुम्पन्याझ] ओ० १४. रा० ६७१ पुरिसवर (पुरुषवर) ओ० १४. रा० ६७१ पुरिसवरगंधहरिथ | गुरुषवरगन्धहस्तिन् | ओ० १४, १९,२१,४४. ा० =,२९२,६७१ जी० ३१४४७ **पुरिसवरपुंडरीय** [ पुरुषवरपुण्डरीक ] ओ० १९,२१, ४४. राज =,२९२. जीव ३।४४७ पुरिसवेव (गुप्तविव) जीव १।१३६;२।६७,६८, हारर३,१२७ पुरिसवेदग | पुरुपवेद क | जीव हा १३० पुरिसवेय | पुरुपवेद | जी० १।२५ पुरिसवेयग [पुरुपवेदक | जी० ६।१२१ पुरिससीह [पुरुवसिंह] ओ० १४, १९, २१, ५४. रा० न, २६२, ६७१. जी० ३।४५७ पुरिसासीविस [पुरुषार्शाविप] ओ० १४. रा० ६७१ पुरिसुत्तम [पुरुपात्तम] रा० = युरिसोत्तम | पुरुषोत्तम | ओ० १६,२१, ४२, ४४. **বা**ণ ২৫২. জীণ **হা**४৫৩ पुरोवग (पुरंपग ) ओं ० ६, १० पुलंपुल दि० | जी० ४६ पुलग | पुलक | आं० ८२. रा० १०,१२, १८, ६४, 852, 708 पुलय (पुलक) जी० २१७ पुलाकिमिय | पुलाकृमिक | जी० १। द४ **पुलिंदी |** पुनिन्दी | ओ० ७०. रा० ५०४ युलिण [ गुलिन ] रा० २४५. जी० ३।४०७ पुब्ध [पूर्व | ओ० ७२, ११६, १४६, १६७,१०२. रा० ४०, १३२,१७३,६८४,७७२.

पुच्चपुरिस [पूर्वपुरुष] ओ० २ पुटवभणित | पूर्वभणिन | जी० ३। ५५१ पुक्तभव [पूर्वभव] रा० ६६७ पुल्बरस [यूर्वरात्र] रा० १७३ पुव्वविदेह [पूर्वविदेह] जी० २।२६,४६,६४,७०, ७२, ५४, ६६, ११४ १२३, १३२, १३७, १३५, X30, XX6; 31XXX, 06X युव्वाणुपुच्वी | पूर्वानुपूर्यी | ओ० १९, २०,५२,५३. रा० ६८६, ६८७,७०६,७११, ७१३ पुरवाभिमुह | पुर्वाभिमुख ] रा० म पुच्चावर | पूर्वापर | रा० १६३,१६६. जी० ३११७४, ३३४,३४४, ३४७,६४८,७२८,७३३,१००६, १०२३ पुटिव | यूर्व ] ओ० ११७. रा० ६३, ६४, २७४, २७६,७५१ से ७८७. जीव २।१५०; ३।४४१, 885 प्हत्त (पृथक्त्व) जो० १।१०३, १११,११२,११६, १२४,१२४; २१४८ से ४०, ४३,४४,४६,८२ से म४,६२,६३,१२२ से १२५,१२म;३।११०, १९७,१११४,१११६,११३४,११३७;४1१४; ५। १६ २६ ; ६।६,११ ; ६।८६,६३,१०२,१०६, १२३,१२८,२१२,२१७,२२४,२३८,२४४, २७३,२८०

**पुहत्तावियक्क** [पृश्वत्ववितर्क] ओ० ४३ **थूइकम्म** [पूतिकर्मन् ] ओ० १३४ पूइत्तए [पूजयितुम्] ओ० १३६ यूइय [पूजित] ओ० १४. २१० ६७१ **युद्धय** [युतिक] रा० ६,१२. जी० ३।३२२ पूर्य [पूत] ओ० ९८ प्रुयण [पूजन] ओ० ४२. ा० १६,६८७,६८६ प्रयणिक्ज (पुजनीय | जो० २. रा० २४०, २७६. जी० ३।४०२, ४४२ **पूर्यफलिवण** [पूर्यफलीवन] जी० श्रह्द१ पूर [पूरय्]---पूरेइ. ओ० १७४ पुरिम [पुरिम, पूर्य्य] ओ० १०६,१३२. रा०२व्४. जी० ३।४४१,५९१ **पूस** [पुष्य] जी० शत्रदा ३२ पूसमाण [ पुष्यमाण | जी० ३।२७७ पूसमाणय [पुष्यमानव] ओ० ६व पूसमाणव (युष्यमाणव ) २१० २४ **पेच्च** [प्रेत्य] ओ० मम **पेच्चभव** [प्रेत्यभव] अं1० ४२. रा० ६८७ पेच्छणधरग ( प्रेक्षणगृहत्ती जीव हार्ह्छ पेच्छणिक्त | प्रेक्षणीय | ओ० १. जी० ३।५९७ **पेच्छाघर** [प्रेक्षागुह] जीव ३।५९१,६०४ **येच्छाधरमंडव** [प्रेक्षायुहमण्डप] २०० ६४,२१५, २१६.२२०.२२१,३०० में ३०४,३३१ से ३३४,३३८ से ३४२. जीव ३।३७६ ३७६, ३८०,४१२,४६४ से ४६९,४८६ से ४९०, ४०३ से ४०७,५५६,५६३ पैच्छिज्जमाण (प्रेक्ष्यमाण) ओ० ६९ **पेच्छित्तए** | प्रेक्षितुम् | ओ० १०२,१२५ वेजन [प्रेपम्] ओ० ७१,११७,१६१,१६३. **TIO 68**8 **पेज्जबंधण** {प्रेयं बंधन | जी० ३।६११ **पेज्जविवेग** [प्रेपोलिवेक] ओ० ७**१** पेड (पीट) जी० शर्द्द वेम [प्रेमन्] ओ० १२०,१६२. रा० ६६८,७४२, ७८९

828

**पुक्तंग** [पुर्वाङ्ग] जीव ३ द४१

२१२,२२४,२३८,२७३

पुस्वकोडिय [पूर्वकोटिक] ओ० १८५

पुस्तवकम [गूर्वकम] ी० ३।म००

४६०,४६२

जी० ३।२६४,२८४,३४८,५४१,५५९,६८५,

पुच्वकोडि [पूर्व होटि] जी० १।१०१, ११६,१२३,

१२४;२:२२,२४,२६ से ३४,४८ से ४०, ५३

से ६१,द३,द४,१०६,११३,११४,११६.१२२

8188'685'688'688'686'565'565'500'505'

पुब्बणतथ [पूर्वन्यस्त] रा० ४८. जीव ३१५५८ से

से १२४) ३।१६१,१६२,११३४:६६) ७।१२)

www.jainelibrary.org

### **8**83

**पेम्म** [प्रेगन्] रा० ७४३ पेया [पेया] रा० ७१,७७ **पेयावायग** [पेयावादक] रा० ७१ पेरंत [पर्यन्त] ओ० १९२. जी० ३।२८५,३००, ४६६,४६८,४६९,७०८,७११,२००,८१४, 573,528,8236,8XX पेलव (पेलव) रा० २८५. जीव ा४५१ पेस [प्रेष्:] जी० ३।६१० पेसल | पेशल | जी० ३।=१९,=६० षेसुण्ण [पैशुन्म] ओ० ७१,११७,१६१,१६३. গাত ওইই **पेस्रण्णविवे**ष | पैशुन्यविवेक | ओ० ७१ पेहणमिजा (दे० पेहणमज्जा) जी० ३।२८२ पोंडरीय [पौण्डनीक] ओ० १४०. रा० २३,२६, १२७,१७४,१९७,२७६,२८८,८११. जी० २:२४६.२५२,२५६,२६१,३०७ पोग्गल [पुद्गल | अगे० १६६,१७०. रा० १०, १२,१८,६४,२७६,७७१. जी० ११४,४०,९४, 222; 3124,25,50,62,60,806,820, १२=,१२६1३, १०,४४४,७२४,७२७,७=७, १७४,६७६,६७७,६५२ से ६५४,६८५ से 3308,0308,8=08,033 पोग्गलपरियट्ट [पुर्गलगरिवर्त ] जीव सद्य, बद, १३२; ४1६,२६; ६1२३,२६,३३,६६,७१, ७३,७५,१४६,१**६४,१६४,१७**५,२०२,२०४ √ **योच्छल** | यन्ति उत् ते शल् j -- पोच्छलेति. **বা**ণ ২**ন**१. জীণ **হা**४४७ पोट्टरोग (दे०) जी० ३।६२८ पोतय पिलज जी० ३।१४९ पोत्तिय | पोतिक | ओ० १४ पोत्तिया | दे० | जी० शृादह पोत्थयग्गाह | पुस्तकश्राह | अं० ६४ **पोल्ययरयण [पुस्तकरत्ते]** ा० २७०,२८७,२८८, ५६४. जीव ३।४३४,४४३,४४४,४४७ **पोय** (पति | क्षो० ४६

पोयय [फेलन] जी० ३११४७,१६१,१६३,१६४

- पोराण [पुराण] ओ० २. रा० ११,५९,१८५, १६७,६७८, जी० १।५०; ३।२१७,२६७,२६८, ३४८,४७६ पोरेकच्च |पुरःकाव्य] औ० १४६. रा० ८०६ पोरेकच्च |पीरपत्य, पीरोवृत्य] औ० ६८. रा० २९२. जी० ३।३५०,४६३,६३७ पोस [पीय] जी० ३.५६८ पोसह [पींगध] औ० १२०,१६२. रा० ६७१, ६१८,७४२,७८७,७८६ पोसहसाला [पींपधायाला] रा० ७६६ पोसहोक्वास |पींपधायाला] आ० ७७,१२०,१४०,
  - 8x0. To Eug, 9x2, 050, 956

# (क)

√ फंब | रान्द् ] -- फंदइ. रा० ७७१.---फंदंति. জী৹ ২০৬২ হ फंदंत (स्पन्दमान) रा० ७७१ **फंदिय** [स्पन्दि] रा० १७३. जी० ३।२८५,५८८ फणस [पनन) ओ० ६,१०. जी० १७२; ३।१८२ करसु [परशु] रा० ७६४ फरिस [स्पर्श | ओ० १४,१६१,१६३. रा० २८४, ६७२,६न४,७१०,७४१,७७४. जी० ३१४५१, \*={,\*&? **फरस** [पहन ] ओ० ४०,४६. रा० ७९४. जी० ३:६६,११८ कल [फल] ओ० ६,७१,१३४. रा० १४१,२२८, २८१,६७०.८१४. जी० १७१,७२; ३११७४, २७४,३२४,३०७,४८६,६००,६०२,६७२ फलग [फलक] ओ० ३७,१२०,१६२,१८०. रा० *१९,१४३,१७५,१९०,२३५,२३६,२४०,६९*, ७०४,७०६. जी० ३।२६४,२८७,३२६,३१७, ३६५,४०२,६०२ फलगगाह [ कलकप्राउ | ओ० ६४ फलमंत [ फलवत् ] ओ० ४,५. जी० ३।२७४ कलय [ फलक ] रा० ७११,७१३,७५२,७७६,७८८. जीव दाइर्ट्र् ४०२

फलवित्ति [ कतप्रति ] जी० ३।२१७,२६७,२६५, ₹૪ઽ,૪૭દ फलविवाग [फलवियाक] ओ० ७४।६. रा० १८४, १८७ फलहसेज्जा | फलकणण्या | ओ० १५४,१६५,१६६. रा० ८१६ फलासब [फलासब] जी० ३१८६० फलाहार [फलाहार] ओ० १४ **फलिय |** फलित | रा० ७५२ फलिह | परिष | ओ० १,१९,१६२. रा० ६९८, ७१२,७८९. जीव ३११९६ फलिह [मफटिक] रा० १०,१२,१८,६४,१६४,२७६. জী৹ ३।৬,४५१,०५४ कलिहरयण | परिघरत | रा० २४६,३१४. जी० ३।४१०,५२० फलिहा | परिखा | जो० १ দাणिय [আणित] আঁ০ ৪ই फालिय (स्फाटिक) औ० १४४,१७४. जी० सन्दर, ३२७ फालिय [याटिल, स्काटित] रा० ७६४,७६४ फालियग [पाटितक, स्फाटितक] ओ० ६० **फालियमय** (स्फटिकमय ) जी० ३।७४७ फालियामय (स्फटिकभय] अ० १९. रा० २५४. ी: ३१४१४,८४७,६११,१००५ फास (स्पर्श) ओ० १३,२७,४७,५१,७२,१६६, 800. TIO 38,33,30,8x,4x,807,85x, १९६,२०३,२३७,२४४,८१३. जी० ११४,३६, 10,25,03,05,52; 3125,52,50,65, १२२,१२३,१२७1१,३,२७१,२२४,२६७,३०६, ३११,३३६, ३६४,३७६,३९९,४०७,४१२, ४२१,५७८,६०१,६०२,६४५,६४८,६४६, £30,078,079,038,5770,758,7707,505, 202,259,252,2008,2.58,2025, १११७,१११८,११२४,११२४ फासओ | स्पर्शतन् ] जी० ११४०,४० फासतो [स्पर्शतस्] जी० ३।२२

फासमंत [स्पर्शवत्] जी० १।३३,३९ फासिंदिय [स्पर्भेन्द्रिय] ओ० ३७. जी० १।२२; ₹1€७६ फासुग [प्रासुक, स्पर्णुक] आे० ३७,१२०,१६२. 210 EE5,0X2,00E,05E फिडिय [स्फिटित] ओ० २३ फूंफुअगिग दि० ] जी० २१७४ फुटमाण [स्फुटत्] रा० ७१०,७७४ फुट्टिन्जंत [स्फोटचमान] रा० ७७ फुड (स्पृष्ट) ओ० १६६,१७० फुड [स्फुट] रा० ७७४ फुडिय (स्फुटित) जी० २। ९६ फुल्ल [फुल्ल] आ० २२. रा० १७४,७२३,७७७, ७७८,७८८. जी० ३१११८,११९,२८६ फुल्लग [फुल्लक] जी० ३।४९३ फुल्लावलि [ फुल्लावलि ] रा० २४. जी० ३।२७७ √फुस [स्पृश्] -फुसइ. ओ० ७१.---फुसंतु. ओ० ११७. रा० ७९६ **फुसित्ता** [स्पृष्ट्वा] ओ० १६६ पुसिय [स्पृष्ट] रा० ९,१२,२८१. जी० ३।४४६ फुमिज्जंत [फूत्कियमान] रा० ७७ केंग [केन] ओ० १९,४६,४७. रा० ३८,१३०, १६०,२२२,२५६. जी० ३।३००,३१२,३३३, 3=8,880,488,=68 फेणक [फेनक] रा० ६९ फोडेमाण (स्फोटयत्) ओ० ४२. रा० ६८८ (ब) बउसिया [वकुशिका] रा० ५०४ बंध | बन्ध | ओ० ४६,७१,१२०,१६१ से १६३. TIO EE5,922,95E ् बंध [बन्ध्] --- वंधइ. अं१० ५६. रा० ७६५. ---बंधति. रा० ७७४ ----बंधति रा० ७५. -- बंधाहि. रा० ७७४ बंधठिति ( उन्धस्थिति ) जीव २।७४,९७,१३९,१४१ बंधण | बन्धन | ओ० १३,४६,१७१,१९५।२१. TIO GXX, GXE, GEX, GGX

#### बंधित्तए-बहिया

**\$**8¥

बंधित्तए विडम् रा० ७७४ बंधिता |बढ्वा| रा० ७४ **बंधुजीवगगुम्भ [ब**न्धुजीवकगुल्म | जी० ३।५०० **बंभ** [ब्रह्मन्] ओ० २४,४**१,१६**२, रा० ६४६... ो० ३।१०४९,१०६६,१०८५,१०६४,१११० बंभचेर (बहापर्य) जी० ३।९९९ बंभचेरवास [ब्रह्मचर्यवाल] आं० १५४,१६५,१६६. **Rio 58**2 बंभण्णय [ज्राह्यण्यक] ओ० ९७ बंभदत्त [ नहादत्त ] जी० २।११७ बंभलोग [तद्यलीक] जीव ३ १०७६ बंभलोय [ब्रह्मलोक] ओ० ११४,११७,१४०. जी० २११४८,१४६; ३११०३८,१०४६,११०२ 🗸 बज्झ [बन्ध् |----बज्भती. ओ० ७४।४ बत्तीस [द्वात्रिंगत्] ओ० ३३. रा० १२४. জী০ ২াখ बत्तीसइगुण [दातिंशद्गुण] जी० २।१५१ बत्तीसइबद्ध [दानिशद्बद्ध] रा० ७३,११८ बत्तीसइबद्धय [द्वात्रिशद्बद्धक] रा० ७१०,७७४ बत्तीसनिबद्ध [द्वात्रिशद्बद्ध] रा० ६३,६५ बस्तीसिवा [ढात्रिशिकः | रा० ७७२ बद्ध बिंह अरे० ४,५,४७, रा० १३२,२३४,६६४, E= 3,0XX,0XE,0EX,008,00X. जीव देविर, १७४,२७४,३०२,३२६,३६७,४६२ बद्धम बिद्धको राव ७७ बद्धीसा (बध्वीमा) ग० ७७ बप्फ बाष्य जिल् ३१४ ६२ बब्बरिया | वर्वरिका | रा० ६०४ बरबरो | बर्बरी | ओ० ७० बरहिण [बर्िन्] अंछ ६. जीव ३।२७४ बल [जल] आ० २३,६७,७१,८६ से ६८,११४, ११८,१५५,१५० से १००,१६२,१६७. TIO 82.83,58,580,508,668,0X5,0X5, ৩ন৬,৬ন≕,৩€০,৬€१ জী০ ই¦११८,४४६, પ્ર≂૬,પ્રહર્

बलदेव बिलदेव को० ७१. जी० ३।७९४,८४१ बलब [बलवत्] भो० १४. रा० १२,६७१,७४८, ७४६. ३११२८,३११ बलवाउय | बलवः पृत | जो० ११ सेद्र बलसंपण्ण [ अत्र 'म्पन्न ] ओ० २४. २१० ६८६ बलागा (बताका) रा० २६ बलाया ( बल'का ) जीव सार्यदर बलाभिओग [बलाजिय]म] ओ० १०१,१२४ बलाहक | बला को जो० २।७८४,७८६,८४१ बलाहय बिलाहक २०० २१, जीव ३।२८२ बलि | यलि | जी० ३१२४० से २४३ वलिकम्म [बलिकर्मन्] ओ० २०,४२,४३,७०. रा० ६०३,६०४,६८७ से ६८६,६६२,७००, 680,082,022,012,023,022,008, ७९४,५०२,५०४ बलिपीड [वलिपीठ] रा० २७२,२७३,६५४. जी० ३।४३७,४३८,४५४,५५६ बलिविसज्जण । अलिविभर्जन । रा० ६५४. जी० <u> 318</u>88 बल्लको | बल्लका | रा० ७७ बहली [बहली | ओ० ७०. राज ५०४ बहुद [ बहु ] अं ० १२,१७,२३,४७ से ४२. रा० १६,१७,२२,२३,४४,४४,७१ से ७४,७९ से =१,=३,११२ स ११८,१३२,१४३,१६७,१६८, १७८ से १८०,१८२,१८४,१८४,१८७,१९२ से १९४,१९६,२३४,२३६,२४०,२४९,२८०, २८२, २८६, ६८७ से ६८६,६६४,७०३, ७०४. और ३ादअ,२१७,३४८,३४८, ३५९, 360,380,384,802,880,888,870, ४४६,४४८,४४४,४४६,४७६ से ४८३ ४८६ से ४६४,६४०,७०२,७२४,७२६,७२७,७२६, 624 A 626,200,276,288,280,202, 689,8020,8026,8058 बहि व मा रा० १३०. जीव ३१३०० बहिया [बहिस,बहिस्तात्] अं० २. रा० २. जी० र्शन रेना १

- बहु [बर] अ० १४,२३,५२,६३,६४,६८,७०,९१, 82,88,888,880,880,888,888,848,848,844, १४७ से १६०.१६२,१६४,१६६,१९४. रा० ७ १४,४१,४६,४६,१९४,१७४,१८१,१८३,१९४, २४०,२७६,२८२,२६१,६४७,६७१,६७४, ६व३,६६८,७१८,७४२,७७४,७८७ से ७८६ ८६६,द०३,द०४,द१६. जी० ३।१११,११६, १**१**६,२४६,२६६,२=६,२६३,२६४,३==, ३६०,४०२,४४२,४४८,४४७,४५७,४५७,३६३, ४०६,४५४ से ४६४,६३७,६४९,७२१,७३५, ७४३,७४०,७६०,७६३,८४७,८६३,८६६, ~ UX, EO ?, E ? U, E E X, ? 0 7 X, ? 0 7 K बहुउदग | बहूदक | ओ० १६ बहुगुणतर बिहुगुणतर रा० ७१८ बहुजण बिुजन अं० २,१४,५२,११९,१४१. रा० ६७१,६७१,६८४ बहुतरक | बहुतरक | जी० ३।१०१ बहुतरग | बहुतरक | जी० ३। ६६,११३,११४ बहुदोस [बहुदोग] ओ० ४३ बहुपडिपुष्ण | बहुप्रतिपूर्ण | ओ० १४३. रा० १५१, १४२,००१. जो० ३।३२४,३२४ बहुपृरिसपरंपरागय [बहुपुरुवपरम्परागत] रा० १७७३ बहप्पकार [बहुप्रकार] जी० ३।५९५ बहुष्पगार [बहुप्रकार] जी० ३।४८६ मे ४८८, ¥,€₹ बहुप्पसन्न [बहुप्रसम्न] अं० १११ से ११३, १३७,१३८ बहबीय | वहुवीज | जी० १।७०,७२ बहुवीयग | बहुर्बाजक | जी० १।७२ बहुमज्झ (बहुमध्य) ओ० ८,१९२. रा० ३,३२, चे थ्र, वे ६, दे ६, १ २ ४, १ ६ ४,१ न ६,१ नन, २०४, 296,285,236,235,342,348,3883, २९५,३००.३२१,३२६,३३३,३१व,३४६, ४१४,४७३,४३६,४९६,७३४,७७२. जी०
  - *٩٤٤، ٩٤٣، ٤٥٤، ٤٥٤، ٤٤ ٤، ٤٦٥، ٤٤٤، ٤٩٤، ٤٩٤*، ٤٨٤ ६६८,६७१ से ६७३,६७६,६८४,६६१,७३७, *७४६,७१८,७६२,*८३१,८८२,८८४,८८७, £89,604,288,683,685,8036 बहुमय | बहुमत | सो० ११७. रा० ७४० से ७४३, હદદ્ बहुमाण [बहुमान] ओ० १४,४०. रा० ६७१ बहुग [बहुक] ओ० १७१. रा० १६७. जी० १।७२,१४३; २।६८ से ७२,९४,९६, १३४ से १३८,१४१ से १४८; ३,४०२,४७६, १०२४,१०३७,१०३५;४1१९,२२,२४; १११९, २०,२६,२७,३२ से ३६,४२,४६,६०; ७१२०, २२,२३; ६१७,१४,५४,२४० से २४३,२५४, २८६ से २९७ बहुरय [बहुरत] ओ० १६० बहुल [बहुल ] ओ० १,७,०,१०,४६,४९. रा० ६७१. जी० ३१११८,११९,२३९,२७४, २७६ बहुबिह [बहुविध] ओ० १९५।१६ बहुसम [बहुसम] रा० २४,३२,३३,३५,६५,६६, १२४,१७१,१न६ से १८८,२०३,२०४,२१७, २३७,२३८,२६१. जीव ३।२१८,२४७,२७७, २०६,३१०,३३६,३४६ से ३६१,३६४,३६४, 345,3468,307,388,800,877,870, **२**न०,६२३,६३३,६३४,६४४,६४६,६४न, £xe, &XE,EE7,EE3,E00,E08,E03, ६६०.६६१,७३७,७४४ से ७४८,७६८,८८३, ==8,562,608,608,882,883,8003, १०३५,१०३६ बाग [वाग] ता० ३६. जी० ३१२७९ बाणउति [द्वानवति] जी० २। द१५

३।२६३,३१०,३१३,३१८,३३८,३४६,३४६,

३६१,३६४,३६ ४,३६८,३६८,३७७,३८६,

४००,४१३,४२२,४२७,४६०,४६४,४८३,

बाणगुम्म [बाणगुल्म] जी० ३.५८० बादर [बादर] जी० ३ा=४१; प्रारह से ३१,३४, ५१,५२,४≍ से ६० बादरआउकाइय [बादरअप्कायिक | जी० ५।२= बादरणिओत [बादरनिगोद] जी० श्रा२१ बादरणिओद [बादरनिगोद] जीक श्रा२न से ३०, ४०,४७ से ४९,५२ बादरणिओदजीव [वादरनिगोदजीव] जी० ४४४३. ४५,५्द से ६० बादरनियोद [बादरनिगोद] जी० १४० बादरतसकाइय [बादरत्रसकायिक | जी० ११२५ से 30,33,3% बादरतेउक्काइय [बादरतेजस्कायिक] जी० १७५, ७६; ४१२५ बादरपत्तेयवणस्सतिकाइय विदरप्रत्येकवनस्पति-कायिक] जी० ४।२६ बादरपुढवि | बादरपृथ्वी ] जी० ५।२६ बावरपुढविकाइय [बादरपृथ्वीकायिक] जी० १।४८; ३।१३२,१३४; ४।२,३,२८ से Зo **बावरवणस्सइकाइय** [वादरवनस्पतिकायिक] जी० খাই০ **बादरवणस्सति** [बादरवनस्पति] जी० ४।२६ बादरवणस्सतिकाइय [बादरवनस्पतिकाधिक] जी० ५।२० से ३१ बादरवाउ [बादरवायु] जी० ४।२९ बादरवाउकाइय [बादरवायुकाथिक] जी० ११२५, зo बादरवाउक्काइय [बादरवायुकायिक] जी० १।५१ बागर [बादर | जी० १/४४; ३१८४१; ५१२८,२६, ३१ से ३६; ६।६४,६७,६६,१०० **बायरआउकाइय** | बादरअप्कायिक | जी० ४।२= बायरआउक्ताइय [वादरजव्काधिक] जी० शहर,द्र

**बायरकाल** [बाःरकाल] जी० ९।९९ बायरणिओव [वादरनिगोव] जी० ५।३व बायरणिओय [बाद निगोद] जी० ११३१,३३,३४, રેદ્ बायरतसकाइय | बादरत्रसकायिक | जी० ४।३१ से ३४,३६ बायरतेजक्काइय [यादरतेजस्कायिक] जी० थ।३१,३३,३४ बायरतेउक्काइय / बादरतेजस्कायिक ] जीव १७६; श्राइ३,३४,३६ बायरपुढवि | बादरपृथ्वी | जी० ४।३१,३३,३५,३६ बायरपुढविकाइय (वादरपृथ्वीकायिक) जी० १।१३,१७,६४,७४; १।३१,३३,३४,३६ बायरपुढविक्काइय [बादरपृथ्वीकायिक] जी० १।४७,४८,६२ बायरवणस्सइकाइय | बादरवनस्पतिकाथिक ] जी० १।६६,६८,६९,७२ से ७४;४।३३,३४, ३६ बायरवणस्सतिकाइय | बादरवनस्पतिकायिक ] जी० ४।३१,३३ से ३६ बायरबाउकाइय [बादरवायुकायिक | जी० ४।३४ बायरवाउक्काइय [वादरवायुकायिक] जी० १।=०, न २ बायाल डिग्वत्वारिशत् | जी० ३।१०२२ बायालीस [ द्वः जत्वारिणत् ] थो० १९२. जीव १।२१२ बारस [ढादशन्] ओ० ६०. रा० ४३. जी० १।व६ बारसभत्त | द्वादशभक्त | ओ० ३२ बारसम बादश श. २०२ बारसाह [हादशाह] ओ० १४४ बाल | बाल | रा० २७,३१,७४८,७४९. जी० ३।२५०,२५४,६६० से ६६७ **बालतवोकम्म** [वालतपःकर्मन् ] ओ० ७३ बालविवाकर | वालदिवाकर | रा० २७. 

#### **बा**लभा**व**-बुक्कार

```
बासभाव [बालभाव] रा० ८०६,८१०
बालविहवा [बालविधवा] ओ० १२
बालिय [बाल] रा० ४५
बावट्ठ [ढाषष्टि] जी० ३ा६३२
बावट्ठ [ढाषष्टि] रा० २०६. जी० ६।६१
बावण्ण [ढिपञ्चाशत्] जी० ३।६७
बावत्तर [ढासप्पति] जी० ३।६२२
बावत्तर [ढासप्पति] जी० ३.६३२
बावत्तर [ढासप्पति] जी० १२६
बावत्तर [ढासप्पति] ओ० १२६
बावोस [ढाविशति] ओ० १४४. २१० ८१६.
जी० १।४९
```

बाहल्ल [बाहल्य] ओ० १९२. रा० ३६,१३७. १८८,५१८,५२१,५२४,५३०,५३८,५४२, २४४,२४६,२५२,२६१,२७२. जी० ३.५,१४ से २७,३९ से ४७,४२,७३ से ७४,७७,८०. १२४,१२४,१२७,२३२,२४७,३०७,३१०, **३५५,३६१,३६५,३७७,३**००,३८३,३८४, **३६२**,४००,४**०४**,४०६,४०८,४१३,४२२, ४२७,४३७,६३४,६४२,६४४,६४९,६४८,६ **६४४,६६**८,६७१,७२४,७२४,७२७,७२८, **٤٤, ۵٤, ۵٤, ۵٤, ۵٤, ۵٤, ۵۶, ۵۶**, ۵۶, ۵۶, १००६,१०१० से १०१४,१०६५,१०६६ बाहा [बाहु] ओ० ११९. जी० २।३५४,४१५ बाहि [बहिस्] रा० ७७२. जी० ३१७७ बाहिर (बाह्य) अरे० ६. २१० ४३. जीव ३।७८, 236,302,583,557,655,055,002, = \$ \$'232155'28X'80XX बाहिरग [वाहिरक, बाहाक] जीव ३१७२४,७८७ बाहिरय [वाहिरक, वाह्यक] अं० ३०,३१,३७. जीव रा६५न,७न२,७न६,७न७,१९० से ६९७ **बाहिरिय** [बाहिरिक, बाह्यक] रा० ६६२. जी० ३।२३४ से २३९,२४१ से २४३,२४६, २४७,२४९,२४०,२४४ से २४६,२४८,३४३, ४४७,५६०,७३३,८४२,१०४० से १०४२ १०४४,१०४६,१०४७,१०४९ से १०५३

बाहिरिया [बाहिरिका] ओ० १८,२०,४३,४५, भ्रम, ६० से ६३ रा० ६म३,६म४,७०म,७५४, 528,530,520 बाहिरिल्ल |बाह्य ] जी० ३।७२३,१००७ बाहु | बाहु ] ओं० १९, रा० १२,७४८,७५९, जी० ३१११८,५९६ बाहुजुद्ध [बाहुपुद्ध] ओ० १४६. रा० ५०६ बाहुजोहि [बाहुकोधिन्] ओ० १४८,१४९, रा० ५०६,५१० बाहुप्पमद्दि [बाहुप्रमदिन्] ओ० १४८,१४९. रा० ६०६,६१० बिइय [ द्वितीय ] ओ० ४७,१७६,१८२. জী৹ ३।२२६ बिट [वृन्त] रा० २२८ बिदिय [ब्रीन्द्रिय] ओ० १०२ बिदु [बिन्दु] आे० २३ बिबफल | सम्बफल ] ओ० १९,४७. जी० ३।४९६ बिहणिज्ज [बुंहणीय] जीव ३।६०२,८६०,८६६, **৯**৬২,**৯**৬৯ बिखोयण [दे०] रा० २४४. जी० ३१४०७ बिलपंतिया [बिलपंक्तिका] रा० १७४,१७५,१८०. जी० ३।२८६,२८७,२९२,४७९,६३७,७३८, 683,653,5586,553 बिसालग [डिशालक] जी० ३।४६४ बीभच्छ (बीभत्स) जी० २।५४ बीय वीज] ओ० १३५,१८४ बीय | द्वितीय | ओ० १७४ सीयग [बीयक] जी० ३।२८१ बीयगुम्म [वीजगुल्म] जी० ३।५०० बीयबुद्धि [वीजवुद्धि] ओ० २४ बीयमंत | बीजवत् | ओ० ५,८. जी० ३।२७४ **बोधय** (बीयक) रा० २५ बीगसत्ताराइं दिया [ द्वितीयसप्तरात्रिदिवा ] को० २ बीयाहर [बीजाहर] ओ० ९४ √ बुवकार [दे०]---बुवकारेंति. रा० २८१. जी० ३।४४७

√ बुज्झ [दे०] -- वुज्झइ. ओ० १७७.---बुज्झंति. ओ० ७२. जी० १।१३३. --- बुज्फिहिति. ओ० १६६.---बुज्झिहिति. ओ० १४४. राव द**१**२ √बुज्झ [बुध्] —बुज्झिहिति. ओ० १५१ बुज्झिहित्ता |बुड्वा | ओ० १५१ बुद्ध [बुद्ध] ओ० १६,२१,४४.१९४।२०. रा० ८, **२** हर. जी० ३।४४७ बुद्धबोहियसिद्ध [बुद्धबोधितसिद्ध] जी० शन बुद्धि [बुद्धि] रा० ६७५ सुब्बुय (वृद्युद] ओ० २३ बुह (बुध) औ० ५० √बू [बू]---दूया. रा० ७३२ बर [बुर] ओ० १३. रा० ७३२. जी० ३।२५४, 280,388,800 बेइंदिय [डीन्द्रिय] जी० १।=३,=४,=७,==, १२८; २।१०१,१०३,११२,१२१,१३१,१३६, 235,285,886;31830,835,856; X12, X, a, 27, 26, 70, 72, 73, 7X; 512, 3,2; 818,3,2,6,258 बॅट [वन्त] जी० ३।१७४ बॅटट्राइ [ वृन्तस्थायिन् ] रा० ६,१२ बंदिय [द्वीग्द्रिय] जी० ४।१७; ६।१६७,१६६, २२१,२२३,२६४ बेयाहिय [द्वचाहिक] जी० ३।६२० बेलंब [बेलम्ब] जी० ३।७२४ बेला | बेला | जी० ३।७३३ बोंड |दे० | जी० ३।५९६ बोंदि दे०] ओ० ४७,७२,१९४1१,२. रा० ७७२ बोद्धन्व [बोद्धव्य] ओ० १९४१४,६. জী০ হাংহেংগ बोधव्व [बे:द्वव्य] जी० शद्द बोषिय [वं।धित] जीव ३।५९६,५९७ बोल [दे0] ओ० ४६,४६,४२. रा० १४,६८७, ६्दद. जी० ३।६२७,५४२,५४४

बोह्य [बोधक] ओ० १९,२१,२२,५४. रा० ५,

२६२,७७७,७७८,७८८,७८८,जो० ३।४४७ बोहि [बोधि ] ओ० १४१. रा० ८१२ बोहिदय [बोधिदय] रा० ८,२६२. जी० ३।४४७ बोहिय [बोधित] ओ० १९

### भ

भइ [भृति] रा० ७८७,७८८ भइणी (भगिनी) जी० ३।६११ भइय [भक्त्र] ओ० १९४।१४ भइय [भृतिक] रा० १२ भंगुर [भङ्गुर] ओ० १९. जी० ३।४,९६,४,९७ भंजिक्जमाण [भज्यमान | रा० ३० भंड [भाण्ड] ओ० ४६,११७. रा० ३०,१५२, **₹ĘĘ,₹Ę**₣,**₹**₣४,४७४,४**३**४,७७४,७१६. जी० ३।२८३,३२५,४२९,४३२,४५०,५३४, ५४**१,११२**८,११३० भंडग [दे०] ओ० ४६ भंडियालिछ [भण्डिकालिञ्छ] जो० ३।११८ भंत | भवन्त | ओ० ६९,७९,५४ से ६४,११४, ११७,११८,९४४,९४७ से १६०,१६२,१६७, १६६ से १७२,१७४,१७४,१७७,१८१,१८४ से १९२. रा० १०,५८,६२,६३,६५,१२१ से १२४,१७३,१९७ से २००,६६५ से ६६७, ६६४,७००,७०२ से ७०४,७१८,७२०,७३६, ७३८,७४७,७४८,७४० से ७४४,७४६,७४६ से ७६१,७६२,७६४ से ७६७,७७०,७७२ से ७७४,७७७,७५२ से ७५४,७५७,७६८,५१७. जी० १।१४ से ३३,४१ से ४६,५१ से ५४, ४६,४९ से ६२,६४,७४,७९,५२,८४ से ८७, से १३४,१३७ से १४३; २।२० से २४,२६ से ३०,३२ से ३६,३९,४६,४८,४८,५४,५७ से ६३,६६,६८ से ७४,७९,८२ से ८४,८६,८८, ६२,६४ से ६८,१०७ से १०६,१११,११३, ११४,११६ से ११९,१२२ से १२६,१३३ से १४०; रार से ६,११ से २०,२४ से ३४,३७

से ३६,४२,४४ से ६६,७३ से ६८,१०३ से ११०,११२,११६,११८ से १२८,१४७,१५० से १६२,१६४,१६७,१६६ मे १०३,१०४,१०६, १९२ से २११,२१४,२१७ से २२३,२२७, २३२ से २४२,२४४ वे २४६,२४व से २४६, २६ से २७२,२=३ से २=४,२६६,३००, ३४०,३४१,४६४ छे ४७८,४९६,४९७,५६७ से ६३२,६३७ से ६३९,६४९,६६०,६६४,६६६ से ६६८,७००,७०१,७०३, ७०४ से ७११, ७१३ से ७२३,७३० से ७३६,७३८,७४० से ७४३,७४४,७४६,७४८ से ७४०,७४४,७६० से ७६६,७६८ से ७७०,७७२,७७६ से ७७८, ७५१ से ७६४,७९७ से ५००,५०? से २०४, ८०५,८०६,८११ से ८१६,८१५ से ८२०, दर्श्व से दर्भ, दर्७, दर्ह, दश्, दश्, दश्, से न३७,न३६,न४०,न४२ से न४७,न४६,न४०, -\*\*\* =७२,=७४,=७= से ==१,६३६,६४०,६४४, हरू से हरर, हर क, हद ?, हर से हद द, हद्ह,ह७२ से ६७७,हदर से हद४,हदद से १००८,१०१०,१०१५,१०१७,१०२० से १०२७,१०३७ से १०४४,१०४४,१०४६, 2026,2052,2053,2056,2056,2062, १०७३,१०७४,१०७७ से १०८३,१०८४, १०८७,१०८९ से १०९३,१०९४,१०९७ से १०९६,११०१,११०५,११०७,११०६ से ११२२,११२४,११२८,११३०,११३१,११३३ से ११३०; ४।३,७ से ११,१३,१६,२२,२३, २५; ५!५,८,१०,१२ से १६,१६ से २४,२६ से ३०,३२ से ३४,३७ से ३६,४१ से ४०,४२ से र् द. र में ६०; ६१न; ७.२,६,२०; ६१२,७, १० से १४,१६,२३ में २६,३१,३३,३९,४१ से ४५,४२,४४,४७ से ४९,६४,६५,७६ से 

१६३,१६५,१६८ से २०७,२१० से २१२, २१४ से २१६,२२२ से २२४,२२७ से २३०, २३३ से २३=,२४० से २४४,२४६,२४६ से २४३,२४४,२४७ से २६३,२६४,२६६ से २७३,२७४ से २८२.२८४ से २९३ भंतसंभंत (आन्तमं आन्त) रा० १११,२५१. জী০ ২।४४৬ भंभा दि० भग्भा रा० ७७. जी० ३१४८८ भंसेडकाम | अं शयितुकाम | रा० ७३७ भगंदल [भगन्तर] जी० ३।६२८ भगव [भगवत्] ओ० १६,१७,१९ से २४,२७४७ से ५४,६२,६६ से ७१,७⊏ से ⊏३,११७. ग० म से १३,१४,४६,४म से ६४,६८,७३,७४, ٥٤, = १, = ३, १ १३, १ १ =, १ २ °, १२१, ६ ६ =, ७१४,७६६,८१४,८१४,८१७ भगवई [भगवती] रा० द१७ भगवंत [भगवत्] ओ० १९,२१,२३,२६ से ३०, x8,x2,x8,880,8x2,85x,86x. To 5, E, 8 8, 48, 38, 58, 540, 08, 078, 98, 578, 38, 500 818; 8189.0 भगवती [भगवती] रा० ८१७

१२२,१३२,१४२,१६० से १६३,१७१,१८६ से

- भग्गइ [भन्नजित्] अो० ९६ भज्जा [भार्या] जी० ३।६११
- भट्टिस [भर्तृत्व] ओ० ६८. रा० २८२. जी० ३।३४०,४६३,६३७
- भट्ट [ अष्ट] रा० ६,१२;२५१, जी० ३१४४७
- भड [ भट ] अति १.२३,४२. रा० १३,६८३,६८७, ६८८,६६२,७१६
- भणित [भणित] जी० २। ८०१
- भणिय [भणित] ओ० १४,४९,१९११४ से ७. रा० ७०,६७२,८०९,५१०. जी० २।१४०;
  - ३।१२६,४६७,५३५।१,२; ६।११७
- भण्ण [भण्] --भण्णंति. जी० ३१९४६
- भति [भति] ओ० १७

भत्त [भक्त] ओ० १४,१७,३२,३३,११७,१४०, १४१,१४४,१४७,१६२,१६४,१६६. रा० £ 58,008,050,055,088,58 भत्तकहा [भक्तकथा] ओ० १०४,१२७ भत्तपच्चक्लाण [भत्त.प्रत्याख्यान] ओ० ३२ भत्तपाणविउस्सग्ग [भक्तपानव्युत्सर्ग ] ओ० ४४ भत्ति [भक्ति] ओ० ४०,४२. रा० १६ भत्तिघर [भक्तिगृह] जी० ३। ११४ भत्तिचित्त [भक्तिचित्त ] ओ० १३,६३. ग० १७, १८.२०,२४,३२,३४,३७,४१,१२**६,१३७**, १४६,२६२. जीव ३।२७७,२८८,३००,३०७, 335,505,325,055,755,995 205 829,232,832,032,032,032 **भत्तिपुब्बग** [भक्तिपुर्बक] रा० ६३,६४ भद्द [भद्र] को० ४७,६८,७२. रा० २८२. जी० ३१४४८ भद्दग [भद्रक] जी० ३।४९८,६२०,६२४,७९४,८४१ भद्दपडिमा [भद्रप्रतिमा] ओ० २४ भहमोत्था [भद्रमुस्ता] जी० १७३ भद्दय [भद्रक] जी॰ ३।७९४ भद्दया [ भद्रता | ओ० ७३,६१,११६ भद्रसालवण [भद्रशालवन] रा० १७३,२७६. जी० ३।२५४,४४४ भद्दा [भद्रक] ओ० ६८. रा० २८२. जी० ३ ४४८ भद्दा [भद्रा] जी० ३। ६१ ४ भहासण [भद्रासन] ओ० १२,६४. रा० २१,४१ से ४४,४६,४६,१६१,१६३,२६१,६४्६ से ६६४. जीव ३,२५९,२६३,३३९ से ३४५, ३६८,३७०,४४८ से ५६०,६३४ भमंत [भ्रमत्] ओ० ४६. रा० १७४. जी० 31885,888,755 भममाण [आम्यत, अमत्] ओ० ४६ भमर [म्रमर] ओ० ६,१९. रा० २४. जी० ३।२७४,२७८,५९६

भमरपतंगसार [भ्रमरपतङ्गसार] रा० २४. जी० ३।२७५

भमुया [अू] ओ० ३११९७ भमुह [ अू ] ओ० १९. रा० २५४, जी० ३१४१५ भय [भय] ओ० १४,२४,२८,४६. रा० ६७१, **६**८६. जी० ३:१२७,१२≍ भयंत [भदन्त] ओ० ७२,१६७ भयग [भूतक] जी० ३।६१० भयणा ( शजना ) जी० १।१३६; ३।१४२ भयव [भगवत्] रा० १२१ भयसण्णा [भयमंजा] जी० १।२०;३।१२८ भर [भर] रा० २२व. जी० ३।३६७,७६४,७६७ भरणी [भरणी] जी० ३।१००७ भरत [भरत] जी० २ १३२,३ ६७२ भरह [भरत] ओ० ६८. रा० २७६,२८२. जी० 7188,7=,88,00,02,88,888,972,880, X30 088, XXX, 389 98 X भरिय [भरित] ओ० ४६,५७,६४. रा० १७३, 558 √भव [भू]—भवइ ओ० २८. रा० २००. जी० ३।५९-भवउ. ओ० २०. रा० ७१३. --- भवति. रा० १२९. जी० ३।२७२--- भवह. रा० ७१३-⊸भवाहि. रा० ७४०----भविस्सइ. अं.० ५२. रा० २००---भविस्सति. जी० ३। ५९ --- भविस्सामि. रा० ७७५ ---भवे. रा॰ २५. जी॰ ३।५४---भवेज्जासि. रा० ७७४.....भुवि. रा० २००. जी० ३१४ह भव [भव] ओ० ४६,१९११३,७,८ भवंत [भवत्] रा० १५ भवक्खय [भवक्षय] ओ० १४१,१९५१९. रा० ७९९ भवग्गहण [भवग्रहण] जी० ७।४,६,१०,१२,१५ से १०; ६ २ से ४,४०,४१,१७१,२३६,२३न, १. भयतारो' ति भदन्ताः कल्याणिनः भक्तारो वा नैयन्थप्रवचनस्य सेवयितारः [बृ०पृ० १५२] ति भक्तार: अगुष्ठान विशेषस्य 'भयंतारो'

सेवयितारो भयत्रातारो वा [वू० पृ० २०३]।

२४३,२४४,२४६,२७१,२७३,२७९ से २०२ भवण [भवन] ओ० १,१४,६६,१४१ रा० ६७१, ६७५,७९६. जीव ३१२३२ से २३४,२४०, २४४,२४८, ४९४, ४९७, ६०४, ६४६ से ६४८, ६४१,६७३,६५२,६५८,६८८२ ले ६९८,७४६ भवणवद्द | भवनपति | रा० ११, ४६. जी० २।६४ भवणयति [भवनपति ] जी० ३। १९७ भवजवासि | भवनवारित् | ओ० ४व. जी० १ १३५; 2182,85,35,30,08,02,68,62,62,65,885, १४६; ३।२३० से २३२,१०४२ भवणवासिणी | भवनवाकिनी | जीव २१७१,७२, १४५,१४६ भवणावास [भवनावास] जी० ३।२३२ भवस्थ | भवस्थ | १।४४ से ४८,४२,४३ भवत्थकेवलणाण [भवस्थकेवलज्ञान] रा० ७४५ भवधारणिज्ज [भवधारणीय] जी० १।६४,६६, १३५,१३६; ३।६१,६३,१००७ से १००६, १०६१,१०६२,११२१ से ११२३ भवपच्चइय भिवप्रत्ययिक | रा० ७४३ भवसिद्धिय (भवसिद्धिक) रा० ६२. जी० हा१०ह से १११,११२ भविता [भूतवा] ओ० २३. रा० ६८७ भसोल [भसोल] रा० १०६,११६,२८१, জী৹ ३।४४७ भाइल्लग [भागिक] जी० ३।६१० भाउय [आतुक] रा० ६७१ भाग [भाग] रा० ७८७,७८८. जी० ३।४७७, ६३२,६३९,८३८,८३८,१०१० से १०१४ भागि [भागिन्] रा० ५१४ भाजण [भाजन] जी० ३.४८७ भाणितव्व [भणितव्य] जीव २।११२; २७७४, **१२०,१२१,१४४,२२७,५७८,६३१.६५७,**१४७ भाणियव्व [भणितव्य] रा० ५०,१६४,२०१, २०४ से २०६,७४२. जीव १।५१,७२,६६, ११८,१२३,१२६,१३४; २१७६,७८,८०,८१,

१०४,१०५,१११,११५,१२३; ३।७४,७७, १५६,१६२,२३१,२५०,३५६,३५८,३५६, ३९४,४१२,४६३,६७३,६७६,६८२,६७५६, ७६६,७६६,७७४,८००,८०१,८१८,५२८, £\$\$,63E,80XX,80X0,8878,8879; 512; 8.228 भामरी [आमरी] रा० ७७ भाष [झातू] जी० ३।६११ भाष | याग | रा० उदय, जी० ३१४७७ √माय भाज् ----भाएति. रा० २८१. जी० इ।४४७ भायरक्लिया [ आतुरक्षिता | ओ० १२ भार भार रा० ७७४ भारह [भारत] रा० द से १०,१३,१४ ५६,६६द भारुंडपविख [भारुण्डपक्षिन्] यो० २७. रा० ८१३ भाव भाव रा० ६३,६४,१३३,७७१,८१४. जी० ३।३०३,७२९ भावओ [भावतस्] ओ० २८. जी० १।३३,३४, ३६,३९ भावविउस्सग्ग [भःवव्युत्सर्गं] ओ० ४४ भावाभिग्गहचरय [भावाभिग्रहचरक] ओ० ३४ भावियण्य | भावितात्मन् ] ओ० १६९ भावेमाण [भावयत्] ओ० २१ से २४,२६,४५, 27,57,270,280,220. 210 =, 8,5= 5, 240,248,484,088,083,042,013, 959,958,5**8**8,589 भावोमोदरिया [भावावमोदन्का] ओ० ३३ √भास् [भाष्] – भासइ. ओ० ४२. रा० ६१ -- भातेंति. जी० ३।२१० भास (य) [भाषक] जी० हाइइ भासंत | भाषमाण ] ओ० ६४. जी० ३।१९१ भासग [आषक] जीव ३।४६,४६,६१ भासमणपज्जति | भाषामनःपर्याप्ति ] रा० २७४, 660. STO 2,880 भासय [भाषक] जीव हार७ भासरासि [ अरमराशि ] रा० १२४ भासा [भाषा] ओ० ७१. रा० ६१,८०६,८१०

भासासमिय [भाषासमित] ओ० २७,१५२,१६४. रा० ५१३ भासुर [भासुर] ओ० ४७,७२. रा० ६,१२ भिउन्व [भार्गव] ओ० १६ भिग [भूङ्ग] ओ० १९. रा० २६. जी० ३:२७१ **भिगंगय** [भृङ्खाङ्गक] जी० ३:१८०७ মিৰ্বাজমা (মৃত্ত্বনিগা] তী০ ২:১১৬ मिगा [भूङ्गा] जी० ३।६८७ भिगार [भुङ्गार] ओ० ६४,६७. रा० ४०,१४८, २४८,२७९,२८१,२८८,७४३. जी० ३।४४४, ४४४,४्≍७ **भिगारक** [भृङ्गारक] ओ० ६. जी० ३।२७४, 328,322,828 भिगि [भृङ्गि ] जी० ३। ५९४,५९६ भिण्डमाल [भिण्डमाल, भिन्दवाल] জী০ ২। ২ ২০ भिंडिमाल | भिण्डिमाल, भिन्दिपाल ] ओ० ६४ भिहिमालमा [भिण्डिमालग्र, भिन्दिपालाग्र] জী০ ২: ৭ খ √भिव i भिद्]—भिंद. रा० ६७१—भिज्जइ. **रা**০ ৩5४ भिभसारपुरा [भिम्भसारपुत्र] ओ० १५,१८,२०, २१,४३ से ४६, ६२ से ६४,६६,६७,६१, 198,50 भिक्खलाभिय [भिक्षालाभिक] ओ० ३४ भिवलायरिया [भिक्षाचर्या] ओ० ३१,३४ भिक्खुपडिमा [भिक्षुप्रतिमा | ओ० २४ भिक्लुय [सिक्षुक] रा० ७१८,७८७,७८८ भिगु (भूगु) जी० ३।६२३ भिच्चा [भित्वा] रा० ७११ भित्ति | भित्ति ] रा० १३०. जी० ३।३०० भित्तिगुलिया [ भित्तिगुलिका ] रा० १३०. জী০ ই। ই০১ भिन्नमुहुत्त [भिन्नमुहूर्तत] जी० ३।१२९।२,१० भिव्भिसमाण [ बाभास्थमान ] रा० १७,१८,२०, ३२,१२६. जी० ३।२८८, ३००,३७२

902

भिलुंग [दे० भिलुङ्ग] रा० ७०३ भिस [बिस] रा० २९,१७४. जी० ३।११८,११९, २न२,२न६ भिसंत [भासमान] ओ० ४,८,६४. रा० ११ জী০ ইা২৬४ **भिसकंद** | बिसकन्द ] जी० ३।६०१ भिसमाण [भासमाण] ता० १७,१८,२०,३२,१२६. जी० ३।२८८,३००,३७२ मिसिया | वृषिका | ओ० ११७ भीत [भीत] जी० ३।११६ भीम [भीम] ओ० ४६,४७. जी० ३।व३ भुंजमाण [भुञ्जान] ओ० ६८. रा० ७. जी० ३।३५०,४६३,८४२,८४५,१०२४, 8022 ∖ **भुकुंड** [दे०]---भुकुंडेति. रा० २⊏४. জী৹ ২।४५१ भुकुंडेता दि० ] जी० ३१४११ भुजंग [भुजङ्ग ] जी० ३। १९७ भुज्जतर [भूयस्तर] ओ० ८१ भुज्जो [भूयस्] ओ० १५९. रा० ७५१ भूत [भुकत] रा० ६८४,७६४,८०२,८१५ भुषग [मुजग] ओ० २,५१ भूयगपद्द [भुजगपति] ओ० ४१ भुयगपरिसप्प [भुजगपरिसर्प] जी० २। ११३ भुयगपेच्छा [भुजगप्रेक्षा] ओ० १०२, १२४ भुयगीसर [भुजगेश्वर] जो० १९. जी० ३। ५९६ भुयपरिसप्प [भुजपरिसर्प] जी० १। १०४, ११२. १२२, १२४; २१७,६,२४,४२,१२२; ३1१४३, १४४, १६१,१६२,१६६ भुयमोयग [भुगमेःचक] ओ० १९. जी० ३। १९६ भूया [भुजा] ओ० १६,२१,४७,४४,६३,७२. रा० =,६९,७०. जी० ३।४४७,४९६ भुवा [ भ्रूका जि० ३। १९६६ भुसागणि [बुषाग्नि] जी० ३।११८ भूइकम्मिय [ भूतिकमिक ] ओ० १४६

भूत [भूत] रा० १,१२, ३२,२५१. जी० ३।३६८, 883,050,582,584,680,686,680 भूतक्खय [भूतक्षय] जी० ३।६२६ भूतभगह [भूतग्रह] जी० ३।६२ म भूतपडिमा [ भूतप्रतिमा [ जी॰ ३।४१८ भूतमंडलपविभत्ति [भूतमण्डलप्रविभक्ति] रा० ६० भूतमह [भूतमह] जीव ३।६१४ भूतवर्डेसा [भूतावतंगा] जी० ३।६२१ भूता [भूता] जी० ३। ९२१ भूताणंद [भूतानन्द] जी० ३।२४० भूमि [भूमि] ओ० ४२. रा० ७९६ भूमिगय [भूमिगत] रा० ७६४ भूमिचवेडा | भूमिचपेटा ] रा० २८१. जी० ३।४४७ भूमिभाग [भूमिभाग] ओ० १६२. रा० २४, ३२, ३३, ३४, ६४,६६,१२४,१६४,१७१,१८६ से १नद, २०३ से २०६,२०८,२१३,२१६,२१७, २३७,२३८,२४१,२६१. जी० ३।२१८, २४७, २७७,३०९,३१०,३३६,३५६,३५९ से ३५१, ३६४,३६४,३६= से ३७२,३७४,३६६,४००, ४१२,४२१,४२२,४२७,५००,६२३,६३३, £38,£82,586,£85,586,584,586,58 इन्दे,६७०,६७१,६७३,६०,६२१,७३७, ७४४ से ७४८,७६२,७६४,७६८,७७०,८८३, मन४,नमम से मह०,६०५,६०६,६१२,६१३, १००३,१०३५ भूमिभाय [भूमिभाग] जी० ३।४२६ भूमिया [भूमिका] रा० ६७५ भूमिसेज्जा (भूमिशय्या) ओ० १४४,१६५,१६६. रा० ५१६ भूमी [भूमी] जी० ३।६३१ भूय [भूत] ओ० २,४,६,२६,४९,४४,६२. रा० १३२,१७०,२३६,७०३. जी० ३।१२७, 763,307,367,880,880,608,8875,8830 भूषपडिमा | भूतप्रतिमा ] रा० २५७ भूयमह [भूतमह] रा० ६८८

भूयवादिय [भूतवादिक] ओ० ४९ भ्याणंद [भूतानन्द] जी० ३।२४९,२५० भूसण [भूषण] ओ० २१,४७,५४,५७. रा० ६९, ७०. जी० ३।५६३ भूसणधर [भूगणधर] रा० ८,७१४ भूसिय [भूषित] ओ० ६४. रा० ४३, ७४१ भेता [मित्वा] जी० ३। ११ भेद [भेद] ओ० २६. जी० १।११८,१२१,१२३, १२४,१२६,१३४;२७६,७५,१०५,१०६; ३११३४,१४२,१४४,२३१,२७९,२८१,६३६ भेव [गेद] ओ० १. रा० २८,६७४,७९३. जी० ११४८; २११४१; ३११२६१६,६४० **भेषकर** [भेदकर] ओ० ४० भेरव [मैरव] ओ० ४६ भेरी [मेरी] ओ० ६७. रा० १३,७७, ६५७,७५५. জী০ ২া৩ন, ४४६ भेरुंड [भेरुण्ड] जी० ३। म७म **भेरुयालवण** [भेरुतालवन] जी० ३ ४८१ भेसज्ज [मैयज्य] ओ० १२०,१६२ रा० ६९८, 370,580 भो [भोस्] ओ० ४४. रा० १३. जी० ३१४४४ भोग [भोग] ओ० १९,२३,४३,४६,१४८ से १४०. रा० ६७२,७४१,७४३,७६१,००६ से द११. जी० ३।५९६, ११२४ भोग [मोज] ओ० ४२. रा० ६८७,६८८,६९४ भोगत्थिय [भोगाधिक | ओ० ६८) भोगपुत्त [भोजपुत्र] ओ० ४२. रा० ६८७ भोगभोग | भोग्यभोग ] ओ० ६८. रा० ७. ्युव इर्डिर्ड भेटेड 'दर्ठ 'दर्ठ रेड हे करे? इंक्टर भोगरय ( मोगरजस् ) ओ० १४०. रा० ८११ भोडचा [भुकःवा] रा० ६६७ भोजण [भोजन] जी० ३। ५ १२ भोत्तए [भोक्तुम्] ओ० १३४ भोत्तूण [मुक्त्वा] ओ० १९५।१८ भोम [भूम] रा० १३०. जी० ३।३०० भोम [भौम] रा० १६४. जी० ३।३३६ से ३३८,

भुओवधाइय [भूतोपधातिक] ओ० ४०

#### 800

३४४,३४४,३४६ भोमिक्ज [शौमेय] पा० २७६,२८० भोमेक्ज [शौमेय] जी० ३।२४१,२४२ भोष [भोग] ओ० १४. रा० ६८४,७१०,७७४ √भोष [भोजग] ओ० १४. रा० ६८४,७१०,७७४ गोषण [भोजन] ओ० १३४, १६४।१८. जी० ३।६०२ भोषणमंडव [भोजनमण्डप] रा० ६०२

### म

मइ [मति] ओ० ४६,४७ मइअण्णाणि [मत्यज्ञानिन् ] जी० १।३०, ५७,६६; हा२०२,२०६,२०न मंड [मुद्र] रा० ७६,१७३ मउंदमह (मुकुन्दम) २०० ६५५ मउड [मुकुट] जा० २१,४७,४६ से ५१,५४,६३, ६५,७२,१०८,१३१. रा० ८,२८५,७१४. जीव ३।४४१,४६३ मज्य [मृदुक] ओ० १९. रा० २८८.जी० १।५०; **૨**,૨૨,૨=૪,३=७,**૫**૯૬,૫૯७,६७२,१०૯= मडल [ मुकुल ] जी० ३ १९७ मउलि [ मुकुलिन् ] जी० १।१०६,१०= मउलि | मौलि | ओ० ४७,७२ मउलिय [ मुकुलित ] ओ० २१,५४. रा० ७१४ मऊर [मयूर] जी० २।४.९७ मंख [मङ्ख] ओ० १,२ मंखपेच्छा [मह्यप्रेक्षा] ओ० १०२,१२५. जी० ३।६१६ मंगल [मङ्गल] ओ० २,१२,२०,४२,४३,६३,६८, 60, 83E. TTO E, 80,86, 45, 848, 280, २७६,२९१,६८३,६८४,६८७ से ६८९, ६१२, 600,00X,088,088,028,048,048,048, ७६४,७७६,७१४,५०२,८०४. जीव ३.३३२, ४०२,४४२ मंगलग मिञ्चलको रा० २१,१६६,१७७,२०२, २०४ से २०८,२१४,२२०,२२३,२२६,२३२,

२४१,२४८,२४०,२४९,२६१. जी० ३१२८१, ३१४,३४७,२४९,३६७ से ३७१,३७४ ३७६, ३=२,३६१,३६४,४०३.४११,४२०,४२४, ४३० ४३३,४३६ ६३६,६४१,६७७,७०=, ه۲٤,۳۵۳,۳۵۲,۳۵۲,۳۵۳,۳۵۳,۳۵۶,۳۵۶,۳۵۶,۳۵۶ मंगलय [मङ्गलक] ओठ ६४. जीव २।३५५,४१७ मंगल्ल [मःङ्गल्य] रा० ६=४,६९२,७००,७१६, ७२६,५०२ मंचाइमंच (मञ्चान्तिमञ्च) ओ० १४, २१० २८१ मंचातिमंच [मञ्जातिमञ्ज] जी० ३१४४७ मंजरि [ंंझ्बरी | ओ० ४,∝,१०, र⇒ १४४, ীণ হাহ্হল,২৬४ मंजू [मञ्जू] ओ० ६९. रा० १३४. भी० अड०४, १९≂ √मंड [मण्ड्]---मंडावेज्जा. रा० ७७६ मंड [मण्ड] जी० शण्७२,६६० मंडणधाई [मण्टनवात्री] र:० ५०४ मंडल [मण्डल] अं० ४०,६४. रा० १४६, जी० ३।३२२,=३=!१० से १२ मंडलग मण्डलको रा० २९५. जी० ३१४६० मंडलपविभत्ति [मण्डलप्रविभक्ति] ग० १० मंडलरोग [मण्डलरोग] जी० ३।६२८ मंडलिय [माण्डलिक] जी० ३।१२९।१ मंडलियावाय [मण्डलिक:वरत ] जी० १।८१ मंडव [मण्डव] जी० ३।५९४,८५३ मंडवग [मण्डपक] अं० ६ से =,१०. जी० ३०४,४७४। मंडवस | मण्डपक | जी० ३:४७९,८६३ मंडित [मण्डित] जीव २,२५४,३०२,४४७ मंडिय | मण्डित | ओ० २,४७,५५.५६, रा० २८१. जीव ३ २६४,३१३ मंडियग | नण्डितक | २०० १३२ मंडियाग [मण्डि⊹क ] रा० ४० मंत | स्त्र ] ओ० २४. रा० ६७४,६८६,७११ मंति [मन्त्रिन्] अ₀े १व. रा० ७४४,७४६,७६२, 1958

भोमिज्ज-मंति

मंथ [मन्थ] ओ० १७४ मंद | मन्द | रा०. ७६,१७३,७४८,७४९. जी० ३।२८४,६०१,८६६ मंदगति (मन्त्राति ) जीव ३१६८६ मंदर [मन्दर] जीव १४,२७. गव १२४,२७६, ६७१,६७६,८१३, जीव ३.-१७, १९ से २२१,२२७,३००,४४४,४६६.४००,४६६. १७७,६६८,७०१,७३६,७४०,७४२,७४४, છર્, છર્, છદ્ર, છદ્ર, ઉદ્દ, કછર્, દ્રેછ, 3509,9008 मंदरगिरि मन्द गिलि रा० १७२, जे० सार-१ मंदलेस ( मन्द्रे श्य ) जीव राषरे मारह मंदलेस्स | मंदलेख | जी० २१८४१ मंदाय | मन्द | रा० ४०,११५,१३२,१७३,२३१. जी० ३।२६५,२८४,४४७ मंबायवलेस्स | मन्दातपलेश्य | जी० ३।५४५ मंस [मांस] अं१० ६२,६३ २ा० ७०३ मंसल [मालल] ओ० १९. जी० ३१४६६,४६७ मंसकुह [मांसनुख] ओ० ६३ मंसु [ श्मश्र | मो० १६. जी० ३१४४५,५६६ मकरंडक मकराण्डक जीव ३।२७७ मगदंतियागुम्म दि० ] जी० राष्ट्रन मगर | भक्तर | ओ० १३,४६. रा० १७,१८,२०, ३२,३७,१२६, जी० १.६६.११८; ३१२८६, ३००,३११,३७२,४९६,४९७ मगरंडग महत्राण्डक] रा० २४ मगरासण [मकरासन] रा० १८१,१८२, औ० ३।२६३ मगरिया | मकरिका | रा० ७७. जी० ३।५६३ मगंद | मुझन्द | जी० २।५८९ मगग | मार्ग | जां० ४६,६४,७२ मस्गण [मार्गक] ओ० ११७,११९,१४६ मग्गतो | पृष्ठतस् | अं.० ५५ मागदय [मार्गदय] आं० १६.२१,५४. रा० म, २९२. जी० ३।४४७

स्वर आग राज्य मघमर्घेत [असरत्] ओ० २,४४. रा० ६,१२,३२,

१३२,२३६,२५१,२६२. जी० ३।३०२,३७२, ३१৯,४४७ मघव [मघवन्] जी० ३।१०१८ मधा (मधा) जी० ३।४ मच्चु [मृत्यु] ओ० ४६ मच्छ [मत्स्य] ओ० १२,४६,६४. रा० २१,४६, १७४,२६१. जी० १।१००; ३।दद,११८, **११६,**२न६,२न९,५९७.९६५,६६६,९६५,९६६ **मच्छंडक** [गत्स्याण्डक] जी० ३।२७७ मच्छंडग [मत्स्याण्डक] रा० ५४ मच्छंडापविभत्ति [मत्स्याण्डकप्रविभक्ति | रा० ६४ भव्छंडामयरंडाजारामारापविभत्ति मिल्स्याण्डकमक-राण्डकजारकमारकत्र।वभक्ति | रा० १४ **मच्छंडिया |** मत्स्पण्डिका ] ी० ३।६०१,८६६ मच्छंडी [मत्स्यण्डी] जी० ३।५९२ मच्छग [मत्स्वक] जी० १/६६ मच्छियपत | मक्षिकापत्र | ओ० १९२ मच्छी [मत्स्वी] जी० २१४ मज्ज [मद्य] ओ० ६२,६३. जी० ३।४९६ √भज्ज [मस्ज्]---मज्यावेज्जा. रा० ७७६ मज्जण (मञ्जन) ओ० ६३ मज्जणधर | मज्जनगृह | ओ० ६३ मज्जणधरग [मज्जलगृहक] रा० १८२,१८३. जी**० ३**। २९४ **मङ्जणधाई** (मङ्जनधात्री) राष २०४ **मज्जार** [मार्जार] जी० ३।५४ मजिजय [मजिजत] ओ० ६३ मज्झ [महत्र] ओ० १४,१९,६३,६५. रा० १२४, १२७,२४०,२४५,२=२,६७२,७६६. जीव १।४६; ३।५२,४७,५०,२६१,३४२, ५६६,६३२,६६१,६न६.७२३.७२६,७३६,७३६ 552 मज्झंमज्झ [मध्यमध्य] औ० २०,५२,६७ से ७०. ्रा० १०,१२,४६,२७६.६न३,६न४,६न७, ६९२,७००,७०६,७०५,७१०,७१६,७२६. জী৹ ২,४४५,५५७

मज्झगय [मध्यगत] रा० ७३२ मजप्तछिण्णक | मध्यछिन्नक | ओ० १० मजिझम [मध्यम] ओ० १९४।६. रा० ४३,६६१. जी० ३१७७,२३६,६५,८,६८,१,१०५५ मज्झिमगेविज्ज [मध्यमग्रैवेय] जौ० २। १६ मज्झिमगेवेज्जा [ मध्यमग्रैवेयक ] जी० ३११०५६, \$ \$ \$ \$ मज्झिमिय [मध्यमिक] जी० सरदेश से २३६, २४१ से २४३,२४६,२४७,२४९,२४०,२४४ से २५६,२४८,३४२,५६०,१०४० से १०४२, ちのみんとのみと、ちのみのちのみと 兵 ちのだぎ ちのだが मजिझय | मध्यक | जी० ३। ४९७ मज्झिल्ल [मध्यम] जी० ३। ३२४,७२८ मट्टिया [मृत्तिका] ओ० ६८. रा० ६,१२,२७६ से २८१ जी० ३ं४४४,४४६,४४८ मट्टियापाय [मृत्तिक!पात्र] अंग्० १०४,१२व मट्ठ [मृष्ट] को० १२,१६,४७,७२,१९४. रा० २१, २३,३२,३४,३६,४२,४६,१२४,१४४,११७, २३१,२४७. जी० ३:२६१,२६६,२६६,३९३, 808,288,280. मड [मृत] जी० ३।८४,६४ मडंब [मडम्ब] अं० ६८,८६ से ६३,९४,९६,१४४, १४८ से १६१,१६३,१६८. रा० ६६७ मङ्ख्य (दे० महुक ) रा० ७७ मण [मनस् | ओ० २४,३७,४०,४७,६९,७० रा० ३०,४०,१३२,१३४.१७३,२२८,२३६, ७६४,७७८,८१४. जी० ३।२६४,२८३,२८४, ३०२,३०४,३८७,३९८८,६७२ मणगुत्त [मनोगुष्त] ओ० २७,१४२,१६४. रा० ५१३ मणगुलिया [मनोगुलिका] जी० ३।४१२,४१९,४४५ मणजोग [मनोयोग] ओ० ३७,१७५,१७७,१७८, १९२ मणजोगि [मनोयोगिन् ] जी० १।३१,८७,१३३;

300

31202,223,2202; E1223 228,220; 220 मणपज्जवणाण [मनःपर्यवज्ञान] ओ० ४०. रा० ७३९,७४४,७४६ मणपज्जवणाणविणध [मनःपर्यवज्ञानविनय] ओ० ४० मणपज्जवणाणि [मनःपर्यवज्ञानिन्] ओ० २४. जी० १११३३; ६११४६,१६२,१६५,१६६, १६७,२०२,२०४,२०८ मणवलिध [मनोबलिक] ओ० २४ मणविणध [मनोबलिक] ओ० २४ मणविणध [मनोवनिय] ओ० ४० मणसमिध [मनोवनिय] ओ० ४० मणसमिध [मनोहर] ओ० ७,९,१०. रा० १७,१९, २०,३० ४०,७८,१३२,१३४,१७३,२३६. जी० ३।२७६,२९३,२९४,३०२,३०४ मणाभिराम [मनोभिराम] ओ० ६८

- मणाम [दे०] ओ० ६⊏,११७. रा० ७४० से ७४३,७७४,७६६. जी० १।१३४; ३।१०६०, १०६६
- मणामतराय [दे०] ४ा० २४ से ३१,४५. जी० ३।२७६ से २८४,६०१,६०२,८६०, ८६६,८७२,८७८,१६०
- मणि [मणि] ओ० २३,४७,४६,१२,६३,६४.
  रा० १७,१२,२४ से ३३,३७,४०,४४,५१,६५, ६६,७०,१३०,१३२,१३७,१४४,१६०,१७१, १७३,१७४,२०३,२२८,२३७,१४४,१६०,१७१, १७३,१७४,२०३,२२८,२३७,२४६,२६२, ६८७ से ६८६,६९४,८०४. जी० ३।२६४, २७७ से २८६,६९४,८०४. जी० ३।२६४, २७७ से २८६,३००,३०२,३०७,३०९ से ३११,३३३,३३६,३६०,३६४,३७२,३७६, ३८७,३८६,४१२,४४७,३६०८,६४४,६४८, ४८७,४८६,४९०,४६३,६०८,६४४,६४८, ६४६,६७०,६७२,६६०,७४७

मणि (पाय) [मणिपात्र] ओ० १०४,१२८ मणि (बंधण) [मणिबन्धन] ओ० १०६,१२६

मणिजाल [मणिजाल] ग० १९१. जीव ३।२६४,

- मणिपेढिया [मणिपीठिका] रा० ३६,३७,६६,६७, २१८,२१९,२२१,२२२,२२४ से २२७,२३०, २३१,२३८,२३६,२४२ से २४७,२४२,२४३, २६१,२६४,२६७,२६९,३००,३०४ से ३११, ३१७ से ३२१, ३३८, ३४४ में २४७,३४२ से ३५४,४१४,४७४,४३४,५९५. जी० ३१३१०,३११,३६४,३६६,३७७.३७५, इत०,इत१,इत्र से इत्६,३६२,३६३,४००, ४०१,४०४ से ४०९,४१३,४१४,४२२,४२३, ४२७,४२८,४१७,४६१,४७० सं ४७४,४८२ से ४८६,५०३,५०९ से ५१२, ५१६ से ५१९, **१२६,४३३,१४०,४४८,१४७,६३४**,६४**६,** ६४,०,६६३,६७१ से ६७४,७४≍,७४६,७६४, ७६८,७७०,८१ से ६००,६०६,६०७
- मणिमय [मणिमय] रा० १९,२०,३६,३७,१३०, १३५,१३८,१७५,१६०,२१८,२२१,२२४, २२६,२२६,२३०,२३६,२४२,२४४ से २४६, २६१,२७०,२७६,२८०. जीव ३।२६४,२८७, २८८,३००,३०५,३११,३१२,३२२,३४३, 364,300,350,353,354,362,800, ४०४,४०६ से ४०८,४१३,४२२,४२७,४३४, ૪૪३,૪४४,६४६,६४९,६४४,६७१,७४८,

मणिलक्खण मणिलक्षण ओ० १४६. रा० ५०६

मणिसिलागा [मणिशलाका] जी० ३।४८६,८६०

मणुण्ण [मनोज्ञ] ओ० ४३,६८,११७. रा० ३०,

४०,७८,१३२,१३४,१७३,२३६,७४० से

मणुज्जतराय [मनोज्ञतरक] रा० २४ से ३१,४४.

मणुय [मनुज] ओ० ४४,६८,६०,६१,६३,१६१,

जीव शर्थन से रन४, ६०१

७४३, ७७४,७९६, जी० १।१३४; ३।२६४, २==३,२=५,३०२,३०४,१०६०,१०६६,१११७

मणियंग [मण्यज्ज | जी० ३। १९२३

मणुई [मनुजी] जी० २।५९७

मणिवट्टक | मणिवृत्तक | जी० ३:४८७

- 503,333568,582,580,588,804

- १६३,१६८. रा० २८२,८१५. जी० १।८२; ३।==,१२९,४४=,४४६,४९६,५९= से ६००, ६०३,६०४ से ६२१,६२४,६२७ से ६३१, ७९४,८४१,११३७; ११२४४
- मणुयरायवसभ [मनुजराजवृषभ] ओ० ६५
- मणुग्रलोग [मनुजलोक] जी० ३।५३५।१,४ से ६
- मणुवलोव [मनुजलोक] जी० ३।८३८।३
- मणुस्स [मनुष्य] ओ० ७३,१७०. रा० २७,७३२, ७३७,७७१. जी० १।५१,५४,५५,५६,६१,६५, 195,59,59,59,399,805,33,975,395,300,30 १३४,१३६; २।२,११,१४,२६ से ३०, ३२ से ३४,४४, ४७ से ६१,६४,६६,६८,७०,७२,७४, 66, 50, 58, 54, 55, 85, 80 E, 88X, 88X, १२३,१२४,१३२ से १३४, १३७,१३८,१४३, १४५,१४७,१४६;३११,५४,११८,२१२ से २१५, २१७ से २२४,२२७ से २२९,२००, ४७९,न३६,न३न११३,न४०,११३२,११३५, ११३८; ६११.४,६,१२; ७११,६,१२,१७,१८, २०,२३; E18x4,8x5,708,785,720,
- २३१ मणस्सखेत [मनुष्यक्षेत्र] जी० १।१२७; ३।२१४,
- द३्र से द३७,द३द1२१
- मणुस्सजोणिय [मनुष्ययोनिक] जी० २१९९
- मणुस्सत [मनुष्यत्व] ओ० ७३
- मगुर्सित [मनुष्येन्द्र] ओ० १४. रा० ६७१
- मणुस्सी [मानुनी] जीव ३ ४७६; ६। १।४,६,१२;
- 81208,285,250
- मणुस [मनुष्य] ओ० १. जी० ३।९९३,९९७; 61282,228,228,228,228,232,230,235, 28x,288,2x0,2x8,2xx,220,2021 263,248,242,246,246,246,268,263
- मणसपरिसा [मनुष्यपरिषद्] ओ० ७५
- मणुसी [मानुषी] जी० धा२१२
- मणोगम [मनोगम] ओ० ५१
- मणोगय [मनोगत] रा० ६,२७४,२७६,६८८,

- For Private & Personal Use Only

602

632,930,035,085,085,0665,080,0888, ७९३. जीव ३१४४१,४४२ मणोगुलिया [मनोगुलिका] रा० १५३,२३५, २४८,२७६. जीव ३१३०६,३४४,३६७,६०२ मगोज्जगुम्म [मनोजागुलन] जीव ३१४५० मणोगकूल [मनोनुकूत जी० ३।५९४ मणोमाणसिय [मनोमानसिक | रा० ५११ मणोरम | मनोरम | जी० ३.६३४ मणोरमा |मनोरमा | जीव ३। १२० मणोरह |मनोरथ | ओ० ६९ मणोसिलक (मनःशिलक) जी० ७४४ मणोसिलग |मनःझिलक| जी० ७४५ मणोसिलय | मनःशिलक | जी० ७३४,७४६ मणोसिला | मनः शिखा | रा० १६१,२५८,२७६. জী০ ই।ইই४,४१६,७४७ मणोसिलायुढवी [मनःशिलापृथ्वी] जी० २ः१८४. १न१ मणोहर [मनोहर] रा० ७६,१७३. जीव २१२६४, २≒४् मति | मति | जी० ३।११८,११६ मतिअण्णाणि | मत्यज्ञानिन् | जी० ३.१०४,११०७, 61856,202 मत्त | अमत्र | जी० ३:११२८,११३० मस [गत] हो० १,६,२३,४७,६४. २० १४८, २८८. जीव २1११८,११९,२७४,३२१,४४४ मत्तगय [मत्ताङ्गक] जी० ३।४८६ मत्तगयविलंबिय [मततजविलम्बित | रा० ६१ मत्तगयविलसिय (मतनजविलसित) त० ११ मत्तहयविलंबिय | मलहयविलम्वित | रा० ६१ मत्तहयविलसित | मतत्यविलजित | २ा० ६१ मत्यगसूल [मस्तकशूल] जी० ३१६२८ मत्थय | मस्तक | ओ० २०,२१,४३,४४,४३,६२, ११७. राज्य २,१०,१२,१४,१८,४६,७२,७४, **११८,२७६,२७६.२**९२,२६२,**६**४४,६५४, £=3,£=6,600,000,000,080,088,

७२३,७७४,७९६. जी० ३१४४२,४४४,४४८, 889,888 मद [मद] जी० २।५६० महण | गर्दन | अरे० १६१,१६३ मद्दय | मर्दक | जी० ३।१८६ महल मर्दल रा० ७७ महव [मार्दव] ओ० २४,४३. रा० ६८६,८१४. লী০ ২। ২৪৮,৬৪২,৫४१ मधु[मधु]जी० ३ः⊂६० मधुर मधुर जी० ३।२०१ ममत्तभाव [ममत्वभाव] जी० ३/६०५ मम्म | मर्मन् | रा० ७६३ मय [मृत] रा० ७३२. जीव सेवर मयणसाला वि० ) ओ० ६. जी० सर७४ मयणिज्ज | पदमीय | ओ० ६३. जी० ३/६०२, ०६०,८६६,८७२,८७८ भयपद्भगः [मृतपलिका] ओ० ९२ मयर [मकर] ओ० ४८ मयरंडापविभत्ति | मक ाण्डक ३विसक्ति | रा० ६४ √मर [म]---मरंति. जी० १ःध३ मरगय मरकत औ० १३ भरवा | मरण | ओ० २४,४६,७४,१७२ १९४।५, १२. रा० ६वद् मरीइ [मीनि] जी० ३.११२२ मरोइया (मरीचिका] रा० २१,२३,२४,३२,३४, मरोचिया | मरीविका | ओ० १९४ मरोतिकवय | मधीचिकत्रच | २१० ३२ **মর্ডী** [ দহচ্য] জী০ ৬০ मरुपक्खंदोलग | मरुपक्षान्दोलक | ओ० ६० मरुपडियग [मरुपतितक] ओ० १० मरुया [मरवक,मरुत्तक] रा० ३०. जी० ३ २८३ मल | मल | ओ० दृहुहु२, जी० ३। १९६ √मल [मृद्]—मलइज्जइ. रा० ७४५

१. मुरंडी (रा० ६०४) ।

388,888,880,000,088,088,088, द०२,द०द. और ३130३,३२६,४१६,४४४, \*\*\*\*\* मल्ल [मल्ल] और १,२ मल्लइ [मल्लवि] ओ० ४२ रा० ६८७,६८८ मल्लइयुल [मल्लविपुत्र] रा० ६८७,६८८ मल्लग [दे० मल्लक] जी० ३।५८७ **मल्लजुद्ध (**मल्लुद्ध) ओ० ६३ मल्लदाम [माल्यदामन्] ओ० २,४५,६३ से ६४. TIO \$ 7, 48, 8 \$ 7, 7 \$ 4, 7 X 4, 7 E 8, 7 E 5 8 00, ३०५,३१२,३४५,६८३,६९४. जी० ३१२८२, 307,307,380,885,880,847,840,846, x**E 8, XE** 2, XE X, XO0, XOO, X 8 E, X 2 0 मल्लपेच्छा [मल्लप्रेका] ओ० १०२,१२५. जी० ३।६१६ सल्लिया [मल्लिका] ा० ३०. जी० ३१२८३ महिलयागुम्म [मल्लिकागुल्म] जी० ३ १८० मल्लियामंडवग [मल्लिकामण्डपक] रा० १८४. जी० ३।२९६ मल्लियामंडवय [मल्लिकामण्डपक] रा० १२५ मसग [मशत] ओ० ८९,११७. रा० ७९६. জীত হাহ্বপ मसार (ममार ) रा० १३ मसारगल्ल | मसारगल्ल | रा० १०,१२,१८,६४, रद्र,२७९. जी० ३।७ मसिहार मिल्हार ओ० ६६ मसी | मसी, मधी | रा० २४,२७०. जी० ३।२७८, ४३४,६०७

मलय-महज्जुईय

888

मलय [मलय] ओ० १४. रा० १४६.१७३,२७६,

महल [माल्य] ओ० ४७,४१,६७,७२,६२,१०६,

मलिय [मर्दित] ओ० १४. रा० ६७१

३८४,६७१,६७९. जी० ३।२८४,३३२,४४४,

१३२,१४७,१६१,१६३, २१० १**२,१३३,१**४६,

१४७,२४८,२७९ से २८१,२८४,२८६,२९१,

- ৬২३ महंत [महत्] ओ० १४,४६ रा० ६७१,६७९. जी० २।१११,१२४,१२४ महंती [महती] रा० ७७ महग्गह [महाग्रह] जी० ३।७०३,७२२,८०६, द२०,५२०,५२४,५३७,५३५१६,१३, 2000 महग्ध [महार्घ] ओ० २०,४३. रा० २७८,२७९, ६८०,६८१,६८३ से ६८४,६९२,६९८,७००, 602,005,008,088,028,502. র্জীত হাস্বস্থ্য,র্পস্থ महत्त्व | महार्च, महार्च्य | रा० ६६३,६६४,७१७, 300,05,50,50 महज्जुइतराय [महाद्युतितरक] रा० ७७२ महज्जुइय [महाद्युतिक] ओ० ४७,७२,१७०. रा० १८६, ७७२. जी० ३।११६ महज्जूईय [महाचुतिक] रा० ६६६
- मह [मह] जी० राद्रशार मह [महत्] ओ० ३,७,८,१०,१४,४६,५२,६७ से ६९. रा० ३,४,१२,१३,१४,३२,३४ से ३६,४३,१२३,१४८,१८८,२०४,२३८,२४२ से २४६,२४१ से२४३,२६० से २६२,२६४, २६७,२६९,२७०,२७२,२७३,२४८,६८८, ७६०,७६१,७७४. जी० ३।११०,११=,११६, २७३,२७६,२६८,३३८,३६१,३६४ से ३६६, ४००,४०१,४०४ से ४०८,४१०,४१२ ते ४१४, ४२१ से ४२३,४२५ से ४२८,४३१,४३४, ४३५,४३७,४३८,४४६ से ४४९,४५४,६४२, ६४६,६४०,६७१ से ६७५, ६८२,६८२,६८२, ६८६,६९२ से ६९८,७३७,७४६,७४८ महइ [महती] रा० ७३२. जी० २७७७,२६२,
- मसूरग [मसूरक] ग० ३७. जी० ३।३११ √मह | मथ्]---महेइ. रा० ७६४
- मसूर [मसूर] जी० १।१=
- জী৹ ३।२०४
- मसीमुलिया [मसीयुलिका] रा० २४.

300

महज्जुतीय [ महायुतिक ] जी० ३।४६,३४०, 370 महण [मधन] जी० ३। ५ ६२ महता [महत्] जी० ३।३०१,३०२,३२१ से ३२३ महति [महती | ओ० ७१,७८. रा० १२,५६,६१, ६९३,६९४,७१७,७७१,७७७, जी० ३११२, 220,2230 महती [महती] जी० ३। १८८८ महत्तर [महत्तर] ओ० ७० महत्तरगत्त महत्तरकत्त्व ] ओ० ६८. रा० २८२. জী০ হাহহ০,হ্বহ,দ্বও महत्य [महार्थ] रा० २७८,२७६,६८०,६८१, E=3,E=8,EEE,000,002,005,00E. জী০ ২।४४४,४४५ महद्धण [महाधन] ओ० १०५,१०६,१२८,१२६ महप्यभ [महाप्रभ] जी० ३।८८५ महम्पतल [महाफल] ओ० ४२. रा० ६८७ महब्बल [महाबल] ओ० ४७,७१,७२,१७०. रा० ६१,६६६. जी० ३।५६५ महब्भूय [महाभूत] रा० ७५१ महयर [महत्तर] रा० ५०४ महया मिलत् रा० ७,१३१,१३२,१४७ से १४१, १९७,२८० से २८३,६१७,६७१,६७९,६८,६८३, ६८७ से ६८९.६९२,७००,७१२,७१६,७३२, ७३७,७१४.न०३,न०४. जी० ३१३२४,३५०, ४४७,४६३,५४२,५४५,१०२४ महरिह [महाहं] ओ० ६३. रा० ६९,७०,२७८, 768,4=0,4= 8,4=3,4=8,428,900, ७०२,७०८,७०९. जी० ३१४४४ ४४४, 258 महल्ल [ गहत् ] अ० ४६ महरिलया [ यहती ] ओ० २४ महआसवतर [महाझवतर] जी० ३।१२६ महाउस्सासतराय [महोच्छ्वासतरक] ৰাণ ৩ভি

महाकंदिय [महाकन्दित] को० ४९ महाकम्मतर [महाकर्मतर] जी० ३।१२६ महाकम्मतराय [महाकर्मतरक] रा० ७७२ महाकाय [महाकाय] ओ० ४९ महाकाल [महाकाल] जी॰ ३1१२,११७,२५२, ৬২४ महाकिरियतर (महाक्रियतर) जी० ३।१२६ महाकिरियतराय [महाकिश्तरक] रा० ७७२ महागुम्मिय [महागुल्मिक] जी० ३।१७१ महाघोस ] महावोध | जी० ३१२५० महाजस [महायशत्] ओ० १७० महाजाइगुम्म [महाजातिगुल्म] जी० ३१४८० महाजुद्ध [महापुढ] जी० २।६२७ महाणई [ महानदी ] ओ० ११७. रा० २७६. জী৹ হা४४४,६३৪, महाणगर [महानगर] जीव २३१४० महाणवी [महानदी] रा० २७६. जी० ३।३००, ४६८,६३२,६६८,७४६,८००,८१४,६३७ महाणरग [महानरक] जी० ३।१२,११७ महाणिरय [ महानरक | जी० ३।७७ महाणील [महानील] ओ० ४७ महाणुभाग [महानुभाग] अहे ४७,७२,१७०. रा० १८६,६६६, जी० अट६,१८८ से ११७, 3999 महाणुभाव [महानुभाव] जी० ३।३४०,७२१ महातराय [महत्तरक] रा० ७७२ महातव [महातपस्] ओ० ५२ महाधायदृरुक्ख [महाजातकी रुक्ष | जी० ३।८०८ महानई [महानदी] अं० ११४,११७. বাঁ০ ২৬৪ महानीसासतराय [महानिःश्वासतरक] रा० ७७२ महानीहारतराय [महानीहारतरक] रा० ७७२ महापउम महापद्म रा० २७१ महापउमद्दह [महापबद्रह] जी० ३।४४५

महापजनरुक्त [महापदारूक | जी॰ ३।=२१

महज्जुतीय-महापउमख्वख

महापट्टण [महापत्तन] ओ० ४६ महापरिग्गहया [महापरिग्रहता] क्वो० ७३ महापह [महापथ] ओ० ४२,४४. रा० ६४४, ६४,४,६८७,७१२. जी० ३।४४४ महापाताल [महापाताल] जी० २।७२३,७२६ महापायाल [महापाताल] जी० ३।७२३ से ७२४, ૭૨૯ महापुंडरीय [महापुण्डरीक] ओ० १२. जी० ३।११८८,११६ **महापुंडरीयद्दह** [महापुण्डरीकद्रह] जी० ३।४४५ महापुरिसनिपडण [महापुरुषनिपतन] জী**০ ২,११७**,६२७ महायोंडरीय [महापौण्डरीक] आ० १५०. रा० २३,१९७,२७९,२८८. द. ९११. जी० ३।२५६,२६१ महाबल [महाबल] रा० १९६. जी० ३१८६, 3999,870,028,898 **महाभद्दपडिमा** [महाभद्रपतिमा] ओ० २४ महाभरण [ महाभरण ] रा० ६९,७० महमद्द महामति रा० ७६५,७३६,७७० महमंति (महामन्त्रिन्) ओ० १८. रा० ७४४, ७४६,७६२,७६४ महामहतराय [महामहत्तरक] रा० ७७२ महामहिम [महामहिमन्] जी० ३।६१४,६१७ महामुह [महामुख] रा० १४६,२६६. जी० ३।३२१,४५४ महामेह [महामेघ] ओ० ४,६३. रा० १७०,७०३. जी० ३।२७३ महायस [महायधर्] ओ० ४७,७२. रा० १=६, ६६६. जी० ३। द६,३४०,७२१,१११६ महारंभ [महारम्भ] जी० ३।१२६ महारंभया [महारम्भता] ओ० ७३ **महारव** [महारव] ओ० ४६ महात्क्क [महारूक्ष] जीव ३।१७१ महारोख्य [महारोक्क] जी० २।१२,११७ महासत [महत्] रा० ५६०

महालय [महत्] ओ० २४,७१,७८. रा० ५२, जी० ३।१२,७७,११७,७२३,११३० महालयत्त [महत्त्व] जी० ३।१२७ महालिजर [महालिञ्जर] जी० ३।७२३ महालिया [महती] रा० ७६६,७७२ महावत्त [महावतं] ओ० ४६ महाबाय [महावात] रा० १२३ महाविजय [महाविजय] जी० ३१६०१ महावित्त [महावृत] रा० २९२. जीव २१४४७ महाविदेह [महाविदेह] अंग १४१. रा० ७६६. जी० २।१४; ३।२२६ महाविमाण [ महाविमान ] ओ० १६७,१६२. **TIO 1**75 महावीर [महावीर] ओ० १६ से २४,२७,४४,४७ से ४३,४४,६२,६९ से ७१,७० से ५३,११७. रा० न से १३,१४,४६,४न से ६४,६न,७३, ७४,७६,५१,५३,११३,११८,१२०,१२१, ६६८,५१७ **महावेयणतर** [महावेदनतर] जी० ३।१२६ महासंगाम [महासंग्राम] जी० ३:६२७ महासत्यनिपडण [महाशस्त्रनिपतन] जी० ३।६२७ महासन्नाह [महासन्नाह] जी० ३१६२७ महासमुद्द [महात्रमुद्र] ओ० ४२. रा० ६८७. র্বা০ ই।দে४२,দে४২ महासवतराय [महास्रवतरक] रा० ७७२ महासुक्क [महाशुक] ओर ११,१९२. जीव २।९६, 824,826; 218034,8028,8068,8066, १०६८,१०८६,१०८८ महासोक्ख [महाक्षेख्य] ओ० ४७,७२,१७०. रा० १न६,६६६ महाहारतराय [महाहारतरक] रा० ७७२ महाहिमवंत [महाहिमवत्] रा० २७६. जीव ३।२८४,४४४,७९४ महिद [महेन्द्र] ओ० १४. रा० ६७१,६७९

महिंदनुंभ [महेन्द्रकुन्म] रा० १३१,१४७.

७१२ ৰ্জাত ইাই০৪ महिदज्झय | महेन्द्रव्यज ] रा० ४२,४६,२३१ से 233,236,286 1 286,388,388,386, ३५४. जीव ३।३२३ से ३९४,४०१,४०२, महिच्छ ( नहेच्छ) ओ० ४३ महिड्रिय मर्रोद्धक] ओ० ४० से ११,७२,१७०. भाव १८६ जीव संदर्भस,२४७,२४८,७१४, 505,528,528,560,563,566,666,568,503, न्द्र स्थन, हरू १, १०२१ महिड्रियतराय (मर्डिकारक) रा० ७७२ महिड्डीय [मर्फिय] रा० ६६६. जीव ३।८६, *३४,६,६३७,६६४,७००,७२१,७२४,७३*≂, 686,683,682,660,363,668,768, दर्भ, ६४४, ६२३, ६८८ से ६६७, १०२१, 3899 महिम [महिमन्] जो० ३१६१९ महिय | मथित | रा० ३८,१६०,२२२,२४६. ि० ३(२१२,३३३,३**२१,**८४ महिय | महित | अा० २,४५. रा० न्द.२५१. জীত ২।২৬২,৯४৬ महिया | महिका | जी० ११६४; ३।६२६ महिवइवह | महीपतिपथ | अंग् १ महिस महिप का० १,१४,१६,५१,१०१,१२४, १४१. र:० २७,६७१,७७४,७९९. जी० ३१८४, २८०,५९६,६१८,१०३८ महिसी | महिषी | जीव राइ१६ मह मन्तु औ० ६२,६३. जी० ३।४८६,४६२ महयर [मजुकर] ओ० ४७ महबरी [मधुकरी | ओ० ६. जी० ३।२७४ महधासन मध्वाश्वत ) ओ० २४ महर मिनुर] अंक ६,७१. गा० १३,१४,१७,१८, २०,६१,७६,१७३. जी० १1४,४०; ३।२२, महेला [महेला] जी० २१४९७

महेसक्स [महेणाख्य] जीव ३।६६,३५०,७२१, 3888 महोरग [महोरग] ओ० १२०,१६२. २ा० १४१, १७३,१६२,६६८,७**५**२,७७१,७८६. जी० १ १०४,१२१; ३।२६६,२८४,३१८,६२४ महोरगकंठ [महोरगकण्ठ] रा० १४४,२४५. जी० ३।३२५ महोरगकंठग (म.ाध्यकण्डक) जीव ३,४१९ महोरगी [महोः गी] जीव राष मा [मा] ओ० ११७. रा० ६९४ माइय दि० | ओ० ४.८,१०. रा० १४५. जी० ३।२६६ २७४ माइय | मात्रिक | जो० १९. जी० ३। १९६, १९७ माइरक्खिया [मातृरक्षिता] ओ० १२ माइल्लया | मायिता | ओ० ७३ माउ [मातु] ओ० १४. रा० ६७१ मागथ [मागध] जीव ३:४४४ मागह [मागध] ओ० २,१११ से ११३. रा० २७६ मागहपेच्छा [मागधप्रेक्षा] ओ० १०२,१२५. जी० ર:૬१૬ मागहय | मागधक] अं ० १३७,१३८ मागहिया [मागधिका] ओ० १४६. रा० ८०६ माघबती | माधवती | जो० २१४ माडंबिय (माडम्बिक) ओ० १८,५२,६३. रा० ६८७,६८८,७०४,७४४,७४६,७६२,७६४. जीव इन्द्रव्ह माण [मान] ओ० १४,२८,३७,४४,७१,६१,११७, ११६,१४३,१६१,१६३,१६८. रा० ६७१ से ६७३,७४८ से ७४०,७७३,७९६,८०१,८१६ जी० ३।१२८,४३८,५९८,७९५,८४१ माणकसाइ [मानकपायिन् | जी० ६,१४८,१४६, ૧૫૨,૧૫૫ माणकसाय [मानकषाय] जी० १।१९ माणणिज्ज [माननीय] रा० २४०,२७६. जी० ३१४०२,४४२

#### माणवक-माहण

माणवक [मानवक] जी० ३४०२,४०४,५१६ मानवग [मानवक] रा० २४४,३५१. जीव 31803,805,807% मानवय [मानवक] रा० २३९,२७६,३५१. जी० ३।४०१,४४२,५१६ माणविवेग [मानविवेक] ओ० ७१ माणस [मानस] ओ० ७४. रा० १५ माणसिय [मानसिक] अं० ६९ माण्स [मानुष] ओ० १६४ १३. रा० ७४१, ৬४३. জী০ ইালইলাই माणुसनग {मानुःनग] औ० ३ = ३= २=,३२ माणुसभाव [मानुद्रभाव] ओ० ७४।३ माणुमुत्तर [मानुपोत्तर] जी० २।व३१,व३३. द्र इ. में द्व४२ द४४ माणुस्स [मानुष्य] अे० ७४।२. रा० ७४१,७५३. জী**০** ३:**११**६ माणुस्सत [मानुत्यक] रा० ७४१ माणुस्सय [मासुष्थक] ओ० १४. रा० ६८४,७१०, ક્ષર,હહ૪,હદ૧ मातंग [मातङ्ग] ओ० २६. जी० ३।११न माता [मातृ] जी० ३१६११ माता [मात्रा] जी० ३।६६६,५५२ √माय [मा]—माएज्जा ओ० १९४।१४ मायंग | मातङ्ग | जी० ३।११६ माया [मातू] ओ० ७१,१६२. जी० ३१६३११२ माया [माया] ओ० २९,३७,४४,७१,९१,११७, ११६,१६१,१६३,१६=. रा० ६७१,७९६. जी० ३।१२८,५९८,७९४,८४१ मायाकसाइ [मायाकपायिन्] जी० ९।१४८,१४९, १५२,१५५ मायाकसाय | मायाकपाय ] जी० १।१९ मायामोस [मायामूचा] अंग० ७१,११७,१६१,१६३ मायामोसविवेग (मायाम्याविवेक) ओ० ७१ मायाविवेग | मायाविवेग | ओ० ७१ मार [मार] रा० २४. जी० ३।२७७

मारणंतिय [मारणान्तिक] ओ० ७७. औ० १। दर मारणंतियसमुग्धात [मारणान्तिकसमुद्धात ] जी० 318882,8883 मारणंतियसमुग्धाय (मारणान्तिजरमुद्धात ) जी० ११२३,४३,६०,८२,१०१; ३११०८,१५८ मारापविभत्ति निगक विकक्ति राज १४ मारि [मारि] ओ० १४. टा० ६७१ मालणीय (मालनीय) तक १७,१०,२ ५३२.१२६. জী**০ ३।**२५४,३७**२** मालय [दे० मालक] जी० ३।५९४ मालवंत [मल्यपत्] जीव राष्ट्र ७७,६६४,६९७ **मलिवंतद्दह** [ राल्यवद्दह ] ी० ३।६६७ मालवंतपरियाग [माल्यय-पर्याथ] ा० २७६ জী৹ ২১৪৪৫ मालवंतपरियाय | माल्यवरपर्याय ] जी० ३।७९४ माला [माला] जो० ४७,४२,६३,६९,७२. जीव 33218 मालागार [मालाकार] रा० १२ मालिघरग [मालिगृहक] रा० १८२ १८३. जी० ३।२१४ मालिणीय | मालिनीय | जी० ३।३०० मालुयामंडवम [मालुकामण्डपक] रा० १८४. जी० ३१२१६ मालुयामंडवध [ मालुकामण्डपक ] रा० १८५ मास [मान] ओ० २८,२९.११५,१४३. ग० ८०१. जी० १।८६;३।११६,१७६,१७८, 8=0,8=7,530,588,588,589,680; 8,8,88 मास (माप) जीव ३।८१९ मासपरियाय | मातपर्वाय | ओ० २३ मासल [मांधल] जीव शद१९,५६०,९५६ मासिय [माहिक] जो० ३२ मासिया (मातिकी) ओ० २४,१४०,१५४ माहण [माहन] ओ० ४२,७१ से दर, रा० ६६७, **६७१,६८७,६८८,७१८,७१६,७८७,७**८

माहणपरिव्वाय [माहनपरिव्राजक] ओ० १६ माहणपरिसा [माहनपरिषद्] रा० ७६७ माहण्य [माहात्म्य] अो० ७१. रा० ६१ माहिव [माहेन्द्र] थो० ५१,१६२. जी० २।६६, 285,286;312035,2080,2025,2065, १०६८,१०७६,१०८८,१०९४,११०२,११११ मिउ [मुदु] रा० ३७,१३३. जी० ३।३०३,३११, xez,xee,xe=,uex,=x? मिउमहवसंपण्ण [मृदुमार्दवसम्पन्न] ओ० ६१ मिउमद्दवसंपथ्णया [मृदुमार्दवसम्पन्तता] ओ० ११६ मिजा [मज्जा] ओ० १२०,१६२. रा० ६९८, ७४२,७५९ मिग [मृग] ओ० ५१. रा० २४. जी० ३ १०३व मिगज्मय [मृगध्वज] रा० १६२. जी० ३।३३४ मिगलुद्धग [मृगलुब्धक] ओ० १४ मिगलोम [मृगलोम] जी० ३। ५१४ सिगवण [मृगवन] रा० ६७० मिच्छ [म्लेच्छ] ओ० १९४।१६ मिच्छत्त [मिथ्यात्व] ओ० ४६ मिच्छत्तकिरिया [मिथ्यात्वकिया] जी० ३।२१०, २११ मिच्छत्ताभिणिवेस [मिथ्यात्वाभिनिवेश] ओ० १५५,१६० मिच्छदिद्वि [मिथ्यादृष्टि] आ० १६०. रा० ६२. जी० ३।१०३,१५१ मिच्छा [मिथ्या] जी० ३।२११ मिच्छावंसणसल्ल | मिथ्यादर्शनशत्य ] ओ० ७१, ११७,१६१,१६३. रा० ७६६ मिच्छादंसणसल्लविवेग [मिथ्यादर्शनशल्यविवेग] ओ० ७१ मिच्छादिद्वि [मिथ्यावृष्टि] जी० ११२८,८६; ३१११०४,११०६; हाद७,६९ मिणालिया (मृणालिका) जी० ३।२८२ मित [मित] जी० ३।४९६,४९७ मित्त [मित्र] ओ० १४०. रा० ७४१,७७४,

न०२,न११. जी० ३।६१३,६३१ मित्त [मात्र] रा० २५४,८०६,८१० मिसपक्ख [मित्रपक्ष] जी० ३।४४८ मिथुग (मिथुन) जी० ३।६३९ मिघुण (मिथुन) जी० ३।३४४ मिय (मूग) रा० ६७१,७०३,७१८ मिय [मित] ओ० १९ मियगंध [मृगगन्ध] जी० ३।६३१ मियवण [मृगवन] रा० ७०६,७११,७१३,७१६, 390 मिरिय [मरीचि] रा० १३३. जी० ३।२६१,३०३ मिरीइकवच [मरीचिकवच] जी० ३।३७२ मिरीय [मरीचि] जी० ३।२६६,२६९,२७७ √मिल |मिल्] --मिलंति जी० ३।४४४ √मिलाय [मिल्]---मिलायंति. रा० २७१ मिलाइसा [मिलित्वा] रा० २७१ मिलायमाण [म्लायत्] रा० ७८२ मिलिला [मिलिला] जी० ३।४४४ मिलेच्छ [म्लेच्छ] जी० ३।२२९ मिसिमिसंत [दे०] ओ० ६३ मिसिमिसॅत [दे०] रा० १७,१८,६९,७० मिस्स [मिश्र] जीव १।७१।२ मिहण [मिथुन] ओ० ६. जी० ३।२७४,२८६ मिहुणग [मिथुनक] रा० १७४. जी० ३।३१० मिह्रणय [मिथुनक] जी० ३।११८८,११९ मौरिय [मरीचि] ओ० १२ मोसजाय [मिश्रजात] ओ० १३४ मीसय [मिश्रक] ओ० ४६ मोसिय [मिश्रित] ओ० २व मुइंग [मृदङ्ग] ओ० ६७,६द. रा० ७,१३,२४,७७, ६४७,७१०,७७४. जी० ३।२७७,३४०,४४६, मुइत्ता [मुक्त्वा] रा० २८८ मुद्दय [मुदित] ओ० १४. रा० ६७१ मुएत्ता [मुक्ता] जी० ३।४५४

√मुंच [मुच्] -मुच्चइ. ओ० १७७. मुच्चति. ओ० ७२. जी० १११३३. -- मुच्चती. औ० ७४१४. मुच्चिहिति. ओ० १६६. --- मुच्चिहिति. ओ० १५४. रा० ६१६. मुंड [मुण्ड] को० २३,५२,७६,७५,१२०. रा० £=0, &= E, & EX, 0 3 2, 0 3 0, = ? 2 मंडभाव [मुण्डभाव] ओ० १५४,१६५,१६६. रा० 52६ मंडमाल [मुण्डमल] जी० ३। ४ १४ मुंडि [मुण्डिन्] ओ० ६४ मुक्क [मुक्त] ओ० २,२७,४४. रा० १२,३२, २५१. जी० ३।१२९।६,३७२,४४७,५८०, 288,289 मुक्कतोय [मुक्ततोय] रा० ५१३ मुखछिण्णग [मुखछिन्नक] ओ० १० मुगुंद [मुकुन्द] रा० ७७ मुगुंदमह [मुकुन्दमह] जी० ३।६१५ मुगुंसिया दि० ] जी० २/१ मुच्छिज्जत [मूच्छ्र्यमान] रा० ७७ मुच्छिता [मूच्छिता] जी० ३।२८४ मुच्छिय [मूच्छित] रा० १४,७४३ मुच्छिया [मूच्छिता] रा० १७३ √मुज्झ [मुह्]—मुज्झिहिति. ओ० १५०. रा० 582 मुद्धि [मुष्टि] रा० १३३. जी० ३।३०३ मुद्रिजुद्ध [मुब्टियुद्ध] ओ० १४६. रा० ८०६ मुद्रिय [मौष्टिक, मुष्टिवः ] ओ० १,२. रा० १२, ७४८,७४९. जी० ३।११८ मुट्टियपेच्छा | मौष्टिकप्रेक्षा | ओ० १०२,१२४. जी० ३।६१६ मुणाल [मृणाल] ओ० १९४. रा० १७४. जी० ३।११५,११६,२८६ मुणालिया [मृणालिका] ओ० १९,४७. रा० २९. জী০ ২। খহহ

मुणिपरिसा [मुनिपरिषद्] को० ७१. रा० ६१ मुणिय [ज्ञात्वा] ओ० २३ मुणतव्य [ज्ञातव्य] जी० ३।६३४ मुणेयव्य [ज्ञातव्य] जी० शद ३८१११,२२ **मुत्त** [ मुक्त ] ओ० १९,२१.४६,४४. रा० ज,२९२. জী৹ ২।४২৬ मुत्ता [मुक्ता] रा० २०. जी० ३।२८८ मुत्ताजाल [मुक्त,जाल] ा० १३२,१४६,१६१. जी० ३।२६४,३०२,३३२ मुत्तादाम [मुक्तादामन्] रा० ४०. जी० ३।३१३, ३११ मुत्तालय [मुक्तालय] ओ० १९३ मुत्तावलि [मुक्तावलि] आ० १०८,१३१. राव २५५. जी० ३४४४१,६३६ मुत्तावलिपविभत्ति [मुक्तावलिप्रविभक्ति] रा० ५४ मुत्ति [मुक्ति] ओ० २४,४३,१९३. रा० ६८६, **५१४** मुत्तिमगग [मुक्तिमार्ग] ओ० ७२ मुत्तिसुह [मुक्तिमुख] ओ० १९५।१४ मुद्दा [मुद्रा] ओ० ४७. रा० २०५ मुद्दिया [मुद्रिका] ओ० ६३,१०८,१३१. जी० 31888 **मुद्दियामंडवग** [मृद्वीकामण्डपक] रा० १८४. जी**०** ३३२६६ **मुहियामंडवय** [मृद्वीकामण्डपक] रा० १८५ मुद्दियासार [मूर्वाकासार] जी० ३,४८६,८६० मुद्ध [मूर्धन् ] ओ० १९,२१,५४. जी० ३।५९६ मुद्धज | मूर्धज ] जी० ३।४१४ मुद्धय [गूर्धज] रा० २५४ मुद्धाण [मूर्धन्] रा० ५,२९२ मुढाहिसित्त [मूर्धाभिषिक्त ] ओ० १४. रा० ६७१ मुम्मुर [मुर्मुर] जी० १७८८; ३।८४ मुय [मृत] रा० ७६२,७६३ √मुय [मुच्]-- मुयइ. रा० २८८. मुयति. जी० BIRXR.

मुसंढी | दे० | जी० १।७३ मुसल [मुसल] ओ० १६. जी० ३।११०,५९६ मुसावाय [मृषावाद] ओ० ७१,७६ ७७,११७, १२१,१६१,१६३. TIO ६६३,७१७,७६६ मुसावायवेरमण [मृवावादविरमण] ओ० ७१ मूसंहि दि० | ओ० १. जी० ३।११० मूहमंगलिय [मुखमाङ्गलिक] ओ० ६५ मुहमंडव [मुखमण्डप] रा० २११ से २१४,२९५ से २९९ ३२६ से ३३०,३३३ से ३३७. जी० ३।३७४ से ३७६,४१२,४२१,४६० से ४६४, ४९१ से ४९४,४९९ से ५०२,८८७ से ८८९ मुहमूल [मुखमूल] जी० ३।७२३,७२६ मुहत्त [ मुहूर्स ] अं१० २८,१४५. रा० ७५३,८०५ मुहुत्तंतर [मुहूत्तन्तिर] रा० ७६४ मुहुत्ताग [मुहुत्तं] रा० ७४१,७४३ मूढ | मूढ | रा० ७३२,७३७,७६४ मूढतराय [मूटतरक] रा० ७६४ मूल [मूल] ओ० ६४,१३४. रा० १२७,२०४, २०४,२०९,२२८. जी० १७९,७२; ३।२६१, ૨૪૨,૨૬૪,૨७૨,૨૦૭,૬૨૨,૬૪૨,૬૪ ६**६१,६७२,**६७८,**६७९,६**८**६,७२३,७२**६, ७३६,७६२,५३६,५७५,५५२,१००७ मूलमंत [मूलवत्] ओ० ४,८,१०. जी० ३।२७४, ३८१,४८१ मूलय [ मूलक ] जी० १।७३ मूलारिह [मूलाई] ओ० ३९ मूलाहार | मूलाहार ] ओ० **६**४ मूसग [मूलक] जी० ३। ५४ १. मरुण्डी [ ओ० ७० ]

मूसिया [मूषिका] जी० २। इ मेइणी [मेदिनी ] जी० ३। १९७ मेंद्रमुह | मेषमुख | जी० ३।२१६ मेघ |मेव | रा० १३,१४ मेढि | मेढी' | रा० ६७४ मेडिभूग | मेडीभूत | रा० ६७४ मेत्त [मात्र] ओ० ३३,१२२. रा० ६,१२,४०, २०५ से २०८,२२५,२७६ मेत्तय [मात्रक] जी० ३।४४० मेधावि [मेधाविन् | रा० १२,७५८,७५६ मेरग |मेरक | जी० ३।४८६ मेरय मिल) जीव शबदव मेरु |मेरु| जी० ३।५३८।१०,११ मेरुयालवण | मेरुतालवन | जी० २/४५१ मेलिय [मेलित ] जी० ३:५९२ मेहमुह [मेवमुख] जी० ३।२१६ मेहला | मेखला ] जी० ३,५९३ मेहस्सर [सेधस्वर] रा० १३४. जी० ३।३०५ मेहावि | मेधाविन् | ओ० ६३. जी० ३।११द मेहुण [मैथुन] ओ० ७१,७६,७७,११७,१२१, १६१,१६३ मेहुणवत्तिय [मैथुनप्रत्यय] जी० ३११०२५ मेहुणवेरमग [मैथुनविरमण] ओ० ७१ मेहुणसण्णा [मथुनसंज्ञा] जी० १।२०; 3: 825 मोक्ल [मोक्ष] ओ० ७१,१२०,१६२ मोगगर [मुद्गर] जी० ३।११० मोग्यरगुम्म [मुद्गरगुल्म] जी० ३। १०० मोणचरय [मौनचरक] ओ० ३४ मोत्तिय [मौक्तिक] ओ० २३. रा० ६९४. জী০ ই। হ০ দ √मोय (मुच्]---मोएति. रा० ७३१ मोयग [मोचक] ओ० २१,५४. रा० ५,२६२. জী০ ২।४५৪

१. आप्टे, पृष्ठ १२८६--- मेठिः, मेढी, मेथिः ।

मुयंग [मृदङ्ग] जी० ३।७८

**मुरंडो** [मु**र**ण्डी] रा० ५०४

**मुरव** [मु**र**ज] जी० ३।७८,४४६

मुयंत | मुञ्चत् ] ओ० ७,५,१०. जी० ३।२७६

मुरय [मुरज] ओ० ६७. ग० १३,७७,६४७

मुरवि [दे०] ओ० १०५,१३१. रा० २५४

### मोयपडिमा-रत्तबंधुजीव

मोयपडिमा ['मोय' प्रतिमा ] ओ० २४ मोयय [मोचक] ओ० १९ मोर [मयूर] रा० २६. जी० ३।२७९ मोल्ल [मूल्य] ओ० १०५,१०६ मोसमणजोग [मृपायनीयोग] ओ० १७८ मोसवइजोग [मुपावाम्गोग] ओ० १७६ मोसाणुबंधि [मृपानुबन्धिन् ] ओ० ४३ मोह [मोह] ओ० ४६. रा० ७७१ 🖌 मोह [मोहय्] - मोहंति. जी० ३।२१७ —मोहेंति. रा० १९४ मोहणधर [मोहनगृह] जी० ३।५९४ मोहणघरग [मोहनगृहक] रा० १८२,१८३. জী০ ২।২৪४ मोहणिज्ज [मोहनीय] औ० मध्र,मध मोहणीय [मोहनीय] ओ० ४४ मोहरिय [मौखरिक] ओ० ९४

#### य

य [च] ओ० ३२. रा० ७. जी० १।२ यज्जुव्वेद [यजुर्वेद] ओ० ९७ या [च] रा० ७०४

#### ₹

रद्द [रति] ओ० ४६. रा० १४,००६,०१० रद्दय [रचित] ओ० १,२१,४६,४४,६४,१३४, १८२. रा० ८,३२,६६,७६,१३३,७१४. जी० ३।३७२,४६१,४६६,४६७ रद्दय [रतिद] ओ० १९. जी० ३।४६६,४६७ रद्दय [रतिक] ओ० १९. जी० ३।४६६,४६७ रद्दय [रतिक] ओ० १६. जी० ३।४६६,४६७ रद्दय [रतिक] ओ० १९. जी० ३।४६६,४६७ रद्दय [रतिक] ओ० १६. जी० ३।४६६,४६७ रद्दय [रतिक] ओ० १६. जी० ३।४६६,४६७ रद्दय [रतिक] औ० १६. जी० ३।६२६ रंगंत [रज्जत्] जी० ३।६२६ रंगंत [रज्जत्] ओ० ४६ रक्खंत [राक्षर] ओ० ४६,१२०,१६२. रा० ६६८,७४२,७८६ रवखसमहोरगगंधव्वमंडलपविभत्ति [राक्षसमहो२ग-गन्धर्वमण्डलप्रविभक्ति] रा० ६० √रक्खाब [रक्षापय्] – रक्खावेमि. रा० ७१४ रक्लोवग [रक्षोपग] रा० ६६४ रगसिगा [रगसिका] जी० ३।४ू०० रचिय [रचित] जी० ३।३०३ रज्ज (राज्य) ओ० १४,२३. रा० ६७१,६७४, \$30,030,303 √रज्ज (रञ्ज्]—रज्जिहिति. ओ० १५० रज्जधुराचितय [राज्यधूश्चिन्तक] रा० ६७४ रज्जसिरी [राज्यश्री] रा० ७९१ रज्जु रज्जु रा० १३५. जी० ३.३०५ रट्ठ (राष्ट्र) ओ० २३. रा० ६७४,७९०,७९१ रण्ण (अरण्य] ओ० २० रतण [रतन] जी० ३।३४६ रतणसंचया [ रत्नसञ्चया ] जी० ३१९२२ रतणुच्चया (रक्तोच्चया] जी० ३१९२२ रति [रति] जी० ३।११८,११६,५६७ रतिकर [रतिकर] रा० ४६. जी० ३। १९ से 822 रतिय [रतिद] जी० राष्ट्र ५१९७ रतिय [रतिक] जी० ३।५४२,५४१ रत (रक्त) ओ० ४७,५१,६९,७१,१०७,१२०, १३०,१६२. रा० २७,७६,१३३,१७३,२२५, जी० ३।२८०,२८४,३०३,३८७,४६२,४९४ से ષ્ટ્ર છ, ૬७૨ रत्तंसुय [रत्तांशुक] रा० ३७,२४५. जी० **૨**!૨**११,४**०७ रत्तकणवीर [रक्तकणवीर] रा० २७. জী০ ৠহ্ব০ रत्तचंदण [रक्तचन्दन] ओ० २,५५. रा० ३२, **২-१**. জী৹ **३।३**७२,४४७ रत्ततल [ रक्ततल ] ओ० १९,४७. जी० ३।५९६ रत्तपालि [ ?क्तपाणि ] रा० ६६४. जी० ३१४६२ रत्तबंधुजीव [ रक्तवन्धुजीव ] रा० २७ जीव ३।२८०

#### ওខ្ខុដ

- रत्तरयण [रक्तरतन] ओ० २३ रत्तवर्द [रक्तवती] रा० २७६ रत्तवती [रक्तवती] जी० ३।४४५ रत्ता [रक्ता] रा० २७६. जी० ३।४४५ रत्तासोग [रक्ताशोक] ओ० २२. रा० २७,७७७७, ७७६,७६६. जी० ३।२६० रत्ति [रात्रि] रा० ४५ रत्तुप्पल [रक्तोत्पल] ओ० १६. रा० २७. जी० ३।२६०,४६६,४६७ रत्या [रथ्या] ओ० ४४. रा० २६१. जी० ३।४४७
- रथ [रथ] जी० ३। मद
- रद्ध [राद्ध] जी० ३।५१२
  - रम [रम्]---रमंति. रा० १८४. जी० ३।२१७. ---रमिज्जइ. रा० ७८३
- रमणिज्ज [रमणीय] ओ० १९,४७,६३,१९२. रा० २४,३३,३४,६४,६६,१२४,१७१,१९६ से १८८,२०४,२१७,२३७,२३८,२६१, ७८१ से ७८७. जी० ३;२१८,२४७,२७७, ३०९,३१०,३३६,३४९ से ३६१,३६४,३६४, ३६८,३६९,३६९,४००,४२२,४२७,५८०, ३६८,३६९,३६९,४००,४२२,४२७,५८०, ३६८,३६९,३६९,४००,४२२,४२७,५८०, ३६८,६९,३६९,३६३३,६३४,६४४,६४६, ६४८,६४६,६४६,६६२,६६३,६७०,६७१, ६७३,६२०,६६१,७३७,७४४ से ७४८,७६८, ६००३,६०३
- रम्म [रम्य] औ० ४,६. रा० १७०,१७३,६७०, ७०३,८०४. जी० ३१२७३,२७४,२८४,४११
- रम्मगवास [रम्यकवर्ष] रा० २७६. जी० २।१३, ३२,४६,७०,७२,६६,१४७,१४६; ३।२२८, ४४५
- रम्मयवास [रम्यकवर्ष] जी० ३।७९४
- रय [रजस्] ओ० २३. रा० ९,१२,२५१. जी० ३।४४७,१९८
- रय [रय] ओ० ४६

रधण [रतन] ओ० २३,४७,४९,६३,६४. रा० १०,१२,१७,१८,३२,३७,४०,५१,६५, ६६,७०,१३०,१३२,१३७,१६०,१६४,२२८, २४६,२७६,२५१,२५४,२९२,६९४,७७४. जी० ३।७,२४ ६० से ६३,२६४,३००,३०२. 86,888,880,880,820,256,256,260, **१**९३,६७२,७७४,**९३**६,९३७ रयणकंड [रत्नकाण्ड] जी० ३।८,१५,२० रयणकरंडग [रहनकरण्डक] ओ० २६. रा० ११४, २४=,२७९,७४० से ७४३. जी० ३।३२७, ४१९,४४५ रयणकरंडय [रत्नकरण्डक] रा० १५४. জী০ হাহত্ও रयणकरंडा [रत्नकरण्डक] जी० ३।३४४ रयणजाल [रत्नजाल] रा० १९१. जी० ३।२६४ रयणप्पभा [रत्नप्रभा] रा० १२४. जी० ११६२; २1१००,१२७,१३४,१३८,१४८,१४६; ३1३, ५ से ६,१२ से १९,२२ से २६,२९,३०,३३, ३७ से ३९,४२,४४,४४,४७ से ४७,४१ से ६४,७३,७६ से ७८,८०,८१,८३ से १८,१०३ से ११०,११२,११६,१२० से १२४,१२६ से १२५,२३२,२४७,१००३,१०३८,१०३८ 8888 रवणपहा [रत्नप्रभा | ओ० १८६,१६२. जी० १।१०१;२।१३४ रमणभार [रत्नभार] रा० ७७४ रयणभारय [रत्नभारक] रा० ७७४ रयणमय (रत्नमय) जी० ३।७४७ रयणा [रत्ना] जी० ३१६७ से ७२,९२२ रयणागर [रत्नाकर] रा० ७७४ रयणामय [रत्नमय] ओ० १२. रा० २१,२३,३५, १२४,१२४,१२७,१२=,१३१,१३४,१४१, १४५,१४८,१५१,१५२,१५५ से १५७,१६०, १६१,१८० से १८४,१६२,१६७,२२२,२४३,

२४६,२४७,२७२. जी० ३।२६२,२६३,२६६,

२६८,२६९,२८१ से २९६,३०१,३०४, ३१०,३१२,३१८,३१८,३२४,३२४,३२ से **३३०,३३३,३३४,३४७,३४८,३**५**१,४१४**, ४**१८,४३७,६७४,७४०,७**४३,८६३,८६६, 800,825,9035,9038,9058 रयणावलि [रत्नावलि] ओ० १०८,१३१. रा० २८५. जी० ३,४५१ रयणावलिपविभक्ति [ रलावलिप्रविभक्ति ] रा० ५५ रयणि (रत्नि) ओ० १९४।६ रवणिकर [रजनिकर | जी० ३। ५१७ रवणियर (रजनिकर) ओ० १५. रा० ६७२. जी० ३।५३५।१२,१३ रयणी [रजनी] ओ० २२. रा० ७२३,७७७,७७६, ওদ্দ रवणी | रत्नी | ओ० १८७,१९५७. जी० १।१३५; ३।६१,७८८,१०८७ से १०८६ रयत [रजत] जी० ३१७,३००,३३३,४१७ रयत्ताण [रजस्त्राण] रा० ३७,२४४. जी० ३।३११,४०७ रमय [रजत] ओ० १४,१४१. रा० १०,१२,१८, £X,830,860,868,808,442,48 २४६,२७६,६७१,७६९. जी० ३।२८६,३००, रयय [पाय] [रजतपात्र] ओ० १०५,१२व रयय [बंधण] [रजतबन्धन] ओ० १०६,१२६ रपयामय [रजतमय] रा० ३७,१३०,१३२,१३४, 6x3'60x'660'532'5x0'5xX'5=2' २९१. जी० ३।२६४,२=६,३००,३०२,३०४, 388'35A'356'38er'xos'xo@'xxx' 829,638 रत्लग [रल्लक] जी० ३।४९४ रव [रव] ओ० ४६,४२,६७,६८. रा० ७,१३, १४,४४,४६,४६,२००,२६१,६४७,६०७, ६८८. जी० ३।३४०,४४६,४४७,४४७,४६३, **८४२,८४४,१०२**४

रसंत [रवत्] जो० ४६

```
रवभूय [रवभूत] को० ५२. रा० ६५७,६५५
```

रवि [रवि] ओ० १९. जी० ३।५९६,५९७,८०९, दरदाइ

- रस [रस] ओ० १४,१६१,१६३,१६६,१७०. रा० १७३,१६६,६७२,६८४,७१०,७४१, ७७४. जी० १।४,३८,४८,७३,७८.८१; ३।४८,८७,२७१,२८४,२८६,३८७,४८६,४६२, ६०१,६०२,७२४,७२७,८६९,३६६,८७२, ८७८,६७२,६८०,६६२,१०८१,१११८,११२४
- रसओ [रहतस्] जी० ११४०
- रसतो [रसतस्] जी० ३।२२
- रसपरिच्चाव [रसपरित्याग] ओ० ३१,३४
- रसमंत (रसवत्) जी० १।३३
- रसविगइ [रसविकृति] ओ० ६३
- रसिय [रसित] रा० १३,१४
- रसोदय [रसोदक] जी० ११६४
- रह [रथ] ओ० १,७,८,१०,४२,४४ से ४७,६२, ६४ से ६६,१००,१२३,१७०. रा० १४१, १७३,६८३,६८४,६८७ से ६८६,६९२,७०८, ७१०,७१६,७२७ से ७२९,७३१,७३२. जी० ३।२६०,२७६,२८४,३२३,४८१,४८४, ४९७,६१७
- रह्यणघणाइय [रथधनघनायितं] रा० २५**१.** जो० ३।४४७
- रहजोहि [रथयोधिन्] ओ० १४८,१४९. रा० ५०९,५१०
- रहवाय [रयवात] रा० ७२५
- रहस्स [रहस्य] ओ० ६७. रा० ६७४,७६३
- रहित [रहित] जी० ३।११२१ से ११२३
- रहिय [रहित] ओ० १. जी० ३।५९७
- रहोकम्म [रहःकर्मन्] रा० ५१४
- राइ [राजि] अो० १९. रा० ७१४ से ७१७. जी० ३।४९७
- राइंदिय | रात्रिदिव] स्रो० २४,१४३. रा० ८०१. जी० १।७९,८८; ३।६३०;४।४,१३;४।६,१३, २८,२६

Jain Education International

राइण्ण [राजन्य] ओ० २३,४२. रा० ६८७,६८८ राइय [ रात्रिक ] ओ० २९ [एगराइय (एकरात्रिक) पंचराइय (पंचरात्रिक) राईभोयण [रात्रिभोजन] ओ० ७६ राग [राग] ओ० ३७,४९,४२,४४,७४।६,१०७, १३०,१६८ रा० १६,१३३,२८१,७७१. जीव इ।३०३,४४७,४६४ रातिविय [ रात्रिदिव ] जी० ३१२१८ राम [राम] ओ० ९६. जी० ३।११७ रामरक्लिया [रामरक्षिता] जी० ३। ११ रामा (रामा) जी० ३।६१६ राय [राजन्] ओ० १४ से १६,१८,२०,२१,४२ से १६,६२ से ६८,७०,७१,८०,९६. रा० ४, ६,११४,६:१ स ६७४,६७९ से ६८१,६८३ से ६८४,६८७,६८८,६६८ से ७००,७०२ से ७०४,७०८ से ७१०,७१८ से ७२०,७२३ से से ७२६,७२८ से ७३४,७३६ से ७३९,७४७ से ७८१,७८८ से ७९१,७९३ से ७९६. जी॰ 3:828,326,282,602,608,638,686, ≂૬૬,૬૪૬ रायंगण [राजाङ्गण] रा० १२,१७३. जी० ३।२८४ रायंतेउर [राजान्तःपुर] रा० १२,१७३ रायकउह [राजककुद] ओ० ६९ रायकज्ज [राजकार्य] रा० ६८०,६९८ रायकहा (राजकथा | ओ० १०४,१२७ रायकिच्च [गजकृत्य] रा० ६८०,६६८ रायकुल [राजकुल] रा० ६७१ रायणीइ [राजनीति] रा० ६८०,६९८ रायधाणी [राजधानी] जी० ३१४४६,७००,७०१ रायमग्य [राजमार्ग] ओ० १. रा० ६८४,६८४, 600,005 रायरुक्ख [राजरुक्ष] ओ० ६,१०. जी० ३।३८८, ध्रुद्ध ३

ভিত্ত

रायलवखण [राजनक्षण] रा० ६७१

रायववहार [राजव्यवहार] रा० ६८०,६९८ रायहाणी [राजधानी] रा॰ २८२,६६७. जी॰ ३।३४०,३४१,३४४,३४४,३४७,३४८,३५८ ४४७,४६३,४६७ से ४६९,६३७,६३८,६४९, 978,03=,938,088,988,088,088,988 ७१३,७६०,७६१,७६३ से ७८०,८००,८१४, ६०२,६१९ से ६२२,६४०,९४५ रायारिह [राजार्ह] रा० ६८०,६८१,६८३,६८४, 300,200,500,900,908 रासि [राशि] ओ० १९४।१४. २०० २७,२९,३१. जीव ३।२८०,२८२,२८४,८१९,८३६ राहु [राहु] ओ० ५० राहुविमाण [राहुविमान] जी० ३। द३ दा१७ रिउवेद [ ऋग्वेद ] ओ० ९७ रिगिसिया | दे० रिङ्गिसिका ] रा० ७७ रिक्ल [ऋक्ष] ओ० ६३. जी० ३।=३=३२६ रिह [ िव्ट ] रा० १०,१२,१८,६४,१६४,२७९. जी० ३।७,८,१४,२४,३०,६२,३४६,४४५ रिट्टमय [रिष्टमय] जी० ३ ४३४ रिट्टव [रिष्टक] ओ० १३ रिद्वा [िष्टा] जी० ३१४ रिट्ठाभ [रिष्टाभ] जी० ३।४८६ रिट्ठामय [रिष्टमय] रा० १९,१३०,१७५,१९०, २२८,२१४,२७०. जी० ३।२६४,२८७,३००, ३५७,४**१**४,४३**४,**६४३,६७२ रिड [ऋड] ओ० १. रा० १,६६८,६७६, **६७७** रिभित [रिभित] जी० ३ ४४७ रिभिय [रिभित] रा० ७६,१०६,११६,१७३, २८१. जी० ३।२८५ **रियारिय** [रितारित] रा० १११,२=१. জী০ ২,४४৬ रिसि [ ऋषि ] ओ० ७१

For Private & Personal Use Only

रोतिवा (पाय) [रीतिकापत्र] ओ० १०१, १२न रीतिया (बंधण) [ रीतिकाबन्धन ] ओ० १०६,१२६ रह हिंचि रा० ७४८ से ७४०,७७३ रुइर ( रुचिर ) जीव ३१४६६,६७२ रुइस (रुचिर) अं० ४,५,१६. २० २२५. जी० ३।२७४,३=७,४६६,४६७ हंद | दे० | विस्तीर्ण ओ० ४६ रुक्स (रूक्ष ) रा० ७८२, जी० ११६९,७०,७२; ३१९५१,६०३,६०४,६३१,६७६,६३७ रुक्लगेहालय (रूक्षगेहालय) जीव २१६०२,६०५ रुक्खमह [रूक्षमह] रा० ६८८. जी० ३१६१% रुक्खमुल [रूक्षमूल | ओ० ८,१०. जी० ३।३८९, ५८१ से ५८३,५८६ से ५९५ रुक्लमूलिय [रुक्षमुलिक] ओ० ९४ रुचिक्लमरण [रुच्यमान] जी० ३।२८३ रुद्द [रौद्र] रा० ६७१ रुद्द (झाण) [रौद्रध्यान] ओ० ४३ रुद्दमह [ हद्रमह ] रा० ६८८. जी० ३।६१४ रुप्पकूला | रूप्यकूला | रा० २७६. র্জাৎ ২।४४५ रुष्पच्छद (रूप्यच्छद) जी० ३।३३२ रुष्पपट्ट [रूप्यपट्ट] रा० २२,२९. जी० ३१२५२, २६० रूपमणिमय (रूप्यमणिमय ) रा० २७१,२८० रुष्प्रसङ् (रूप्यमय) रा० १४९,२७९,२८० रुष्पागर [रूप्याकर] रा० ७७४. जी० ३।११९ रुष्पामणिमय | रूप्यमणिमय | जी० ३ ४४४ रुष्पामय (रूप्यमय) जीव ३१४४४,४४६ रुचिव (हविमन्) रा० २७६. जीव ३१४४४, 430 रुयम [ हचक] जो० ४७. जी० ३।५९६,५९७, 66X,887,8X2 **रुयगवर** [रुचकवर] जी० ३।९३४ रुधगवरभद्द [ इचकवरभद्र ] जी० ३।६३४

रीतिया (पाय)-रोग

रुयगवरमहाभद्द [ रुच हव रमहाभद्र ] जी० ३।९३४ रुपगवरोभास [रुच रुधरावभात ] ी० ३। ६२४ रुयगवरोभासभइ (एचकव सवभावभट) জী০ ২।৫২४ रुयगवरोभासमहाभद्द [ रुवकवरावभास महाभद्र ] জী০ ২৷১২४ रुवगवरोभासमहावर [ रुचकवरावभागमहावर] जी० ३।९३४ रुयगवरोभासवर [रुचकवरावभासवर] রীত ইঃ৪ই४ रुयय [रुचक] ओ० १९. जी० ३।६३४ रुह ( रुह ) ओ० १३. २१० १७,१८,२०,३२,३७, १२६. जी० ३:२८८,३००,३११,३७२ रुहिर [रुधिर] रा० २७. जीव ३।२८० रूत (रूत) जीव २।४०७ रूय [रूत] ओ० १३. रा० ३१,३७,१८४,२४४. जी० ३।२८४,२९७,३११ स्तव [रूप] को० १४,२३,४७,६३,७२,१४६,१६१, 853,887. TO 80,86,28,58,00,95, **१७३,१६०,६७२,**६५४,७१०,७**४१**,७७**१**, ७७४,८०६,८०६ ८१०. जी० २।१५१; ३।११०,१११,२६४,२६४,५९०,५९४,५९६, 280,8=7,8884,8880,8878 स्वग | रूपक | रा० १७,१८,२०,३२,१२९,१३२. ৰ্বা০ ২।২৭৮,২০০,২৬২ रूवसंपण्ण लिपसम्पन्न अंग २४. रा० ६८६ रूवि [रूपिन् | रा० ७७१. जी० १।३,५ रेण | रेणू | रा० ६,१२,२८१. जी० ३।४४७ रेयग (रेवक) रा० ७६ रेरिज्जमाण | राराज्यमान | रा० ७५२ रोइयावसाण [ राचितावसान] रा० ११५,१७२, २८१. जी० ३।४४७ रोएमाण | रोचमान | जी० १।१ रोचियायसाण | रोचितावतान | जीव २।२५४ रोग [रोग] ओ० ४६,११७. रा० ७९६. जीव ३।६२८,६३१

#### ৬২২

रोम [रोमन्] औ० ६२. जी० ३।१,१७ रोमराइ [रोमराजि] ओ० १९. रा० २५४. जी० ३.४१४,५९६,५९७ रोमसुह (रोमसुख] ओ० ६३ √रोव [रुच्)—रोएज्जा रा० ७१० गोएमि. रा० ६९५ रोहण्य [रोहिणिक] जी० १।६६ रोहिण्य [रोहिणिक] जी० १।६६ रोहिण्य [रोहिणिक] जी० १।६२१ रोहिलंसा [रोहिलांशा] जी० ३।४४५ रोहितंसा [रोहितांशा] जी० ३।४४५ रोहियंसा [रोहितांशा] रा० २७६

## ल

लउड (लकुट) जी० ३।११० लउग [लकुच] ओ० १ से ११. जी० १।७२; ३।४५३ लउल [लकुट | ओ० ६४ लउलग्ग [लकुटांध्र] ग्री० ३।५४ लउसिया | लाओसिया, लउसिया | आ० ७०. र**ा०** ५०४ संख लह्य अं० १,२ संखपेच्छा [सङ्खप्रेक्षा | ओ० १०२,१२५. जी० ३।६१६ लंघण [लङ्घन] रा० १२,७५८,७५९. জী৹ ২।११৯ लंतक [सान्तक] ओ० ५१,१६२, जी० ३।१०३८, 2020,8888 लंतय [लान्तक] ओ० १५५. जी० २।१४८, १४६; ३1१०६०,१०६६,१०६८,१०६, 8055,8084,8803 लंबत (लम्बमान ) जी० ३। १११ **लंबियग | ल**म्बितक] अरे० ६० लंबुसग लम्बुसक रा० ४०,१३२,१६१. जी० ३:२६४,३०२ ३१३,३९७ लबखण [लक्षण | ओ० १४,१५,१६,४३,१४३,

1221122. TO 133, 507, 503, 008, 508. जी० ३।३०३,४९६,४९७ लक्खारसग [लाक्षाएसक] रा० २७ लक्खारसम [लाक्षारसक] जी० ३।२८० लग्ग [लग्न ] जो० २३ लच्छी | लक्ष्मी | ओ० ६४ लज्जा [लञ्जा] ओ० २५ लज्जासंपण्ण [लज्जासम्पन्न] ओ० २५. रा**० ६**न६ लज्जु |लज्जावत् | ओ० १६४ सद्र (लाट) ओ० १,१९,६३. रा० ३२,५२,५६, २३१,२४७. जी० ३:३७२,३९३,४०१,५१६, 289 लट्टदन्त [लप्टदन्त] जी० ३।२१६ लट्टिग्गह [यध्टिग्रह] ओ० ६४ लडह [दे०] ओ० १९. जी० ३। १९६, १९७ लण्ह [ ग्लक्ष्ण ] ओ० १२,१६४, रा० २१,२३,३२, ३४,३६,१२४,१४४,१४७. जी० ३।२६१, 255,258 सता [ लता ] जी० ११६६; ३११७३,३४४ लत्तिया |दे० | रा० ७७ सद्ध | लब्ध | ओ० २०,४६,४३,१२०,१४४,१६२, १६४,१६६. रा० ६३,६४,६६७,६९८,७१३, 622,622,962,966,600,958,90,586 लद्धपच्चय (लब्धप्रत्यय) रा० ६७४ √लभ | लग् | ---लब्भति. रा० ७७४. --- लभइ. रा० ७१६. -- लभज्ज. रा० ७१६ लय लग] रा० ७६,१७३, जी० ३।२=४ सया [लता] रा० १३६. जी० ३।३०६,६३१ लयाघरग [लनागृहक] २ा० १८२,१८३. জী৹ ২।২৫४ लधाजुद्ध [लतागुड] ओ० १४६. रा० ८०६ लयापविभति [लताप्रविभक्ति] रा० १०१ √ लल [लल्] - ललंति. रा० १८५. जी० ३:२१७ सलिय [ललित] ओ० १४,४७,६३. रा० ७०,७६, १७३,६७२. जी० ३१२८४,४६७

लब [लव] ओ० २८. जी० इ।८४१ लवइव [दे० लवकिन] ओ० ४,८,१०. रा० १४४. जी० ३।२६५,२७४ लवंग [लवङ्ग] रा० २९,३०. जी० ३ २८२ सवण [लवण] जी० ३।२१७,२१६ से २२७,३००, ४६६,४६५,४६६.१७१, से १७६,७०४ से ७०८,७१०,७११,७१३ से ७२३,७२६,७२८ से ७३१,७३३,७३६,७३६ से ७४१,७४४,७४७, હરા હરા સે હદદ, હહર, હદર સે હદદ, હહર, ७८१ से ७८६,७८८ से ७९६,८३८१४, 823,8225,828 लवणग | जवणक | जी० ३।७१० लवणतोध [लवणतोध] जी० ३।५३८।२३ सवणसिहा [लवणशिखा | जी० ३।७३२ लवणाहिवइ [ लवणाधिपति ] जी० ३।७२१,७१४, 682,328 लवणोदय [लवणोदक] जी० ११६५ लवय [लवक] जी० ३।३८८ लहु [लघु] जी० ३।२२ लहुय लिघुक औ० ४६. जी० ११४; ३।८७८ लहुयत्त [लधुकत्व] रा० ७६२,७६३ लाइय [दे०] जो० २,५४. रा० ३२.२८१. জী৹ ३।३७२,४४७ लाधव [लाघव] ओ० २४. रा० ६८६,८१४ लाघवसंपण्ण [लाधवराम्पन्न] ओ० २५. रा० ६८६ लाभत्थिय (लाभाधिक) ओ० ६= लाला [लाला] स० १३४,२५४. जीव ३।३०४, 888 लावणग (लावणिक) जी० ३।७६६ से ७६९ सावणिग (लावणिक) जी० ३।५३४। २४ लावण्ण [लावण्य] गो० १४,२३. रा० ६९,७०. জীত ২।ধৃহও √लास [लासय्]- -लामेंति. रा० २०१. জী০ **২**:४४৬ लासग [लासक] ओ० १,२ सासगपेच्छा [लासकप्रेवा] ओ० १०२,१२५.

जी० ३।६१६ लासिया [ल्हानिका] ओ० ७०. रा० ५०४ लिद [लिन्द्र] जी० ३।७२१ लिब [लिम्ब] रा० ३७ लिक्सा [लिक्षा] जी० ३।६२४,७८८ **लिच्च** [लिच्च] जी० ३।३११ लिस [लिप्त] रा० १२३,७४४,७७२ लिष्पासण [लिप्यासन] रा० २७०. जी० २१४३४ लीला [लीला] २१० १७,१८,१३०,१३३. লীত হাই০০,ই০২ लुक्ल [ रूक्ष ] जीव १।४,३९,४०,४०; ३।२२ **लुइग** लुब्धक रा० ७७४ √लुम | लू ] ---लुज्जइ. रा० ७६४ सूसणया [लूपण] ओ० १०३,१२६ लूसमाण (जूषत् ] रा० १३३ लूसेमाण (लूषत् ) जी० ३।३०३ √लूह [रूक्षय, मृज्]--लूहेति. रा० २५४. জী০ ২।४५१ लूहाहार [रूक्षाहार | को० ३४ लूहिव [रूक्षित] आं० ६३ लूहेता [ रूक्षयित्वा ] रा० २८५. जी० ३१४५१ लेवल [लब्य] रा० २७०. जी० ३१४३५ लेच्छइ [लिच्छवि, लेच्छवि] औ० १२. रा० ६८७. ६५५ लेच्छईपुस [लिच्छविपुत्र, लेच्छविपुत्र] ओ० ५२. रा० ६८७,६८८ लेच्छतिपुत्त [लिच्छविपुत्र,लेच्छविपुत्र] जी० ३।११७ लेट्टु [लेब्टु] आं० २६ लेण [लयन] तो० १४९,१४०. रा० =१०,=११. লীত হাংহে लेस (लेक्या) रा० ७७१ लेसणया [लेशन] ओ० १०३,१२६ लेसा [लेण्या] ओ० ४७,७२,११९ जी० १।१४ 78, xe, = &, e &, t o 8, t ?=; 71e=, ee, 22018,225,240,582; 8152

लेस्सा [लेस्या] ओ० १५६. जी० १।२१,७६, ११६,१३६,;३;१०१,१२५,१४०,१६०, 8803 लेह [लेख] ओ० १४६. रा० ८०६,८०७ लेहणी [लेखनी] रा० २७०. जी० ३।४३४ सोग [जोक] रा० ७५१,७५३,८१५, जी० १।१४०; 31582,53512,802; 218 सोगंत [ लोकान्त ] ओ० १६४,१९४। ६ सोगट्टिति [ लोकस्थिति ] जी० ३।७९४ सोगणाह [लोकनाथ] रा० २६२. जी० ३।४४७ लोगनाली [लोगनाडी, "नाली ] जी० ३।११११ लोगनाह [तंकनाथ] रा० व लोमपईव [लोकप्रदीप ] रा० ८,२९२. जी० ३।४९७ लोगपज्जोयगर [जंजप्रदीतकर] रा० ५,२६२. জী৹ রাগ্যও लोगमज्झावसाणिय [लोकमध्यावसानिक] रा० ११७,२८१ जी० ३,४४७ सोगहिय [ लोकहित ] रा० ५,२६२. जी० ३।४१७ लोगाणुभाव [लोकानुभाव] जी० ३।७९५ सोगुसम (लोकोत्तम) रा० म,२९२. जीव ३४४७ सोगोवयारविणय [सोकोपचारविनय] ओ० ४० सोग | लवण ] ओं • १२, जी • ३।७२१ लोद्ध (लोध्र) अं० ६,१०. जी० १।७२; ३।३८८, ४८३ लोभ [सोभ] ओ० ४६,७१. जी० ३:१२म,५६४, ७९४,५४१ लोभकसाइ [लोभकपायित्] जी० १।१३१; हा१४५,१५०,१५५ लोभविवेक (लोभविवेक) ओ० ७१ सोमपविस [लोमपक्षिन्] जी० १:११३,११५ लोमहत्थ [लं. महस्त] ओ० २. रा० १४६,१४७, २५८,२७६,२६५ से २९६,३५१. जी०३।३२६, 330,885,880 लोमहत्थग [लोमहरतक] रा० २९१,२९४ से २९६,२९८८,३००,३०४,३१० से ३१२,३४१ સે ૨૧૬,૪૧૪,૪૮૨ સે ૮૭૧,૧૨૪,૧૨૬૫,

४९४,४९४. जीव २१४४४,४४७,४६० से ४६२,४६४,४७०,४७७,५१६,५२०,५३२, ৼৢ४७ लोमहत्यय [लं.महस्तक] रा० २९१,२९४ से २९७,३००,३०४,३१० से ३१२,३४२ से ३४६,४१४,४७३ से ४७४,४३४,४३४,४६४ **५६४. जी० ३**।४४≍ लोमहरिस | लोमहर्ष | जी० ३।८३ लोय [लोक] ओ० ७१,१६९,१७०,१७४. जी० १।१३६;२।१२०,१३१;३।११८,११६, न४१; धन,२२; हार्भज लोयंत लिं।कान्त जी० ३:३३ से ३६, १००२ लावमा (जोकाय) ओ० १६८,१९३,१९४।२ लोवग्गथूभिधा [ लोकापस्तूपिका | ओ० १९३ लोवग्गपडिबुउझणा [लोनाग्रप्रतिबोधना] ओ० १९३ लोयण [तं.चन] जी० ३.५९७ लोल [लोल] ओ० ६. जी० स२७४ लोव [लोग] ओ० ११७ लोह [नोम] ओ० २८,३७,४४,६१,११७,१६१, १६३,१६८. रा० ७९६. जीव ३।१२८ लोहकसाइ [लोभकष:यिन्] जी० ९१५३ लोहकसाय [लोभकवाय] जी० १।१९ लोहया [लोभता] ओ० ११६ सोहारंबरिस लिहकारम्बरीष | जी० ३।११८ सोहित [ लोहिंग | रा० १२८,१३२. जी० ३।२२, ४५ सोहितमख ( ल हिताक ) जी० २१७,२००,४१५ सोहितक्लमणि | लोिताक्षमणि | जी० ३।२८० सोहितक्खमय | लोहिताक्षमय | रा॰ १९,१७५, १६०. जीव २।२६४,२८७,३०० सोहितग ( लेहितक ) जीव २।२८० लोहिय | लोहित | ओ० १२. रा० २२,२४,२७, १५३. जी० १:४०;३:१११,२२०,३२६, १०७४,१०७६ सोहियवल [लोहिताक] रा० १०,१२,१८,६५,

१३०,१६५,२४४,२७९८. जी० ३।४१५ लोहियक्खमण [लोहिताक्षमण] रा० २७ लोहियक्खमय [लोहिताक्षमय [ रा० १३०,२४५ जी० ३।४०७,४७७ लोहितपाणि [लोहितपाणि] रा० ६७१ लोही [लोही] जी० १।७३ लोही [लौही] जी० ३।७५

#### व

व [इव] ओ० २७ ब च जी. ३।१२६1६ बइ |वाच् | ओ० ३७,४० वइकच्छछिण्णस [वैकक्षछिन्नक] ओ० १० वइगुत्त [वाग्गुप्त] ओ० १६४ वइजोग वाग्योम | ओ० ३७ वइजोगि [वाग्यांगिन्] जी० १।३१,८७,१३३; 3180%,8%3,8808; 81883,88%,88%, १२० वइर [वज्ज] ओ० १२,१९,४८, रा० १०,१२, 89,85,70,77,77,42,44,878,846,846,860, 854,785,708,758,768,767,008. जीव ३१७,६१ से ६३,२८८,२६०,३००,३३२, ₹**₹₹,**₹४६,**₹७**२,४**१७,४**४७,५<u>६</u>६ वइरणाभ [वज्रनाभ ] जी० ३।३२३ वइरनाभ [वजनाभ] रा० १५० वहरमंड [वज्रभाग्ड] रा० ७७४ वइरभार [वज्रभार] रा० ७७४ वइरभारय विज्ञसारक रा० ७७४ वइरमज्झा (वज्जमध्या) अंछ २४ वइररिसहणाराय [वज्रऋषभनाराच] ओ० ५२ वइरागर [बज्जाकर] रा० ७७४ बइरामय [वज्जमय] रा० १९,३४,३७,३९,४०, ४२,४६,१३०,१३२,१३४,१३७,१<del>४३</del>,१७४, १६०,२१७,२१५,२२५,२३१,२३४,२३६, २४०,२१४,२४७,२४९,२४४,२७०,२७६,

३००,३२१,३३८,३४१, जी० ३१८७,१११, २६**१,२**६४,२८६,२८७,३००,३०२,३०४, 300,388,383,322,325,328,388, 3-9,363,369,364,808,807,809, **X 8 €, X € 7, E X 3**, E X X, E O 7, **E** O E, O 7 X, ७२७,नन१,न६१,६००,६२७,६४८,१०२४ वद्वरोयणराय [वैरोचनराज] जी० ३।२४० से ২४३ वइरोयणिव [वैरोचनेंद्र] जी० ३।२४० से २४३ वइरोसभणाराय [वज्रऋषभनाराच] ओ० १८४ वहरोसभनाराय विष्त्रऋषभनाराच ] जी० १।११६ वइविणय [वाग्विनय] ओ० ४० वइसमिय [वाक्समित] अो० १६४ वंक [वक्त] ओ० १ वंग [वङ्ग] जीव राष्ट्र १ वंग [व्यङ्ग] जी० ३।४९७ **वंचण** [वञ्चन] रा० ६७१ वंचणया [वञ्चनता] ओ० ७३ वंजण [व्यञ्जन] ओ० १४,१४३. रा० ६७२, ६७३,८०१. जी० ३।५९६ **√वंद** [वन्द्]—वंदइ. ओ० २१.—वंदंति ओ० ४७. रा० १०.-वंदति. रा० ८. जी॰ ३।४५७.--वंदर, रा॰ ६.--वंदामि. ओ० २१. रा० ५.- वंदामो. ओ० ४२. रा० १०.--वंदिज्जाह. रा० ७०६. ---वंदिस्तति रा० ६०४. --वंदेज्जा. रा० 505 वंद [ वृन्द ] अं१० ७०,७१. २१० ६१,६६२,७१६, 508 वंदण [वन्दन] ओ० २,४२. रा० १६,६८७,६८९ वंदणकलस [वंदनक अश] ओ० २,४४. रा० ३२, १३१,१४७,२४५,२८१,२६०. जीव ३1३०१, まらいまれだいまのらいえららいみののとださいここと वंदणकाम [वन्दनकाम] ओ० ५१

# ७२६

वंदणघड विन्दनघट ओ० २,४१. रा० ३२, २८१. जी० ३।३७२,४४७ वंदणिज्ज [वन्दनीय] ओ० २. रा० २४०,२७६. जी० ३।४०२,४४२ वंदावंदय [वृन्दवृन्दत्र] रा० ६५८,६८६ वदित्तए [वन्दितुम्] ओ० १३६. रा० ६ वंदित्ता [वन्दित्वा] ओ० २१. रा० ५. জী০ ২৷४২৩ वंस [वंश] आ० १४. रा० ७९,७७,१३०,१७३, १६०,६७१. जीव ३।२६४,२८५,३००,४८८ वंसकवेल्लुय [वराकवेल्लुक] रा० १३०,१९०. जी० ३।२६४,३०० धंसग [वंशक] रा० १३०. जी० ३।३०० वंसा [वंशा] जी० ३।४ वक्कति [अवकांति] जीव शाप्र ; ३।१२१,१५६, 8042 **बक्कंतिय** [अवकांतिक] रा० ७९४ √वक्कम [अव + कम्]---वक्कमति जी० १। १८ द वक्स | वक्ष | जी० २।४९७ वक्खार [वक्षार, वक्षस्कार] रा० २७६. जी० ३१४४४,४७७,६६८,७७४,९३७ √बग्ग [वल्ग्]---वम्गंति. रा० २८१. জীত ২া४४৬ वगगण [वल्गन] ओ० ६३ वागवागु [वर्गवर्ग] जी० १९४।१४ वग्ग [वाज्] ओ० ६८. रा० ७६७ वग्गुरा [वागुरा] ओ० ४२. रा० ६०७,६००, 900 वागुलि | बल्गुलि | जी० १।११४ बग्ध वियाझ रा० २४. जी० राइ४,२७७,६२० बग्धमूह |व्याध्यमुख | जी० २१२१६ वग्धारित देव जीव ३:३०३,३६७,४४७,४४६ वग्धारिय [दे०] ओ० २,५१. रा० ३२,१३२, 734,758,768,768,766,300,304, ३१२,३५५. जी० ३।३०२,३७२,४६१,४६२,

¥£**X**,४७०,४७७,**X१**६,X२० √वच्च [अत्]— वच्चंति. जी० ३।१२९।६ वच्चंसि [वर्चस्विन्] ओ० २५. रा० ६८६ **वच्चग** [तच्चक] जी० ३।५८८ **यक्तचघर** [वर्चोगृह] रा० ७५३ वच्छ [ वक्षम् ] ओ० १६, २१, ४७, ५४, ५७, ६३, ६४, ७२- रा० ५, ६९, ७१४, जी० 3, 4 64, 8878 वज्ज [वर्ज] क्षो० २९. जी० १।५१, ५५, ६१, न७,१०१,११९,१२३,१२न;३।१५५५,६०५; **६११**० বঙল [ৰজ্য] জী০ ২। ২ হও यज्ज्जकंद विज्जकन्दी जी० १।७३ वज्जरिसभनाराय [वज्रऋषभनाराच] जी० ३।५६८ बज्जिता [वर्जयित्वा] जी० ३।७७ वज्जिय [वर्जित] ओ० ४८. रा० ७७४, জী∘ ३।५९⊏ यज्जेत्ता [वर्जयत्वा] रा० २४०. जी० ३।४०२ वज्झवत्तिय [वर्श्ववित] ओ० १० बट्ट [बृत्त] ओ० १,२,१६,४४,१७०. रा० १२, ३२,४२,४६,२३१,२≈१,२९१,२९४,२९६, ३००,३०४,३१२,३४४,७४८,७४६. जी० ११४; ३१२२,४८ से ४०,७७ से ७६, = 4, 7 4 0, 7 6 X, 3 X 7, 3 6 7, 3 6 3, Y 0 8, xx@'xx6'x88'x65'x28'x200'x00' ४१३,४२०,४९४,४९६,४९७,७०४,७९३, ७**६६,८१०,७२१,५३१,५४८,८४६,५४६**, द६२,द६४,द६द,द७१,द७४,द७७,दद०, **६१०,६२५,६२७ से ६३२,६३**≍,६४**३,१०७१,** १०७२ **√वट्ट** [वृत् ]—वट्टसि. रा० ७६७.---वट्टिस्सामि. ব্যুত ওছ্ল वट्टक [वर्तक] जी० ३।१८७ वट्टखेडु [यृत्तखेल] ओ० १४६. रा० ५०६

### बट्टभाव-वणस्सतिकाल

वट्टभाव [वृत्तभाव] ओ० ५,=. जी० ३।२७४ बट्टमग्ग [ वृत्तमार्ग, बर्र्मगार्ग ] को० १९ वट्टमाण [वर्तमान] ओ० ४७. रा० २८१,८१४. জী০ ২,४४৬ वट्टमाल [वृत्तमाल] जी० ३:५८२ बट्टलोह [पाय] (वृत्तलोहपात्र) ओ० १०४,१२८ बट्टलोह [बंधण] वृत्तलोहबन्धन ] ओ० १०६, 378 बट्टवेतद्र [वृत्तवैताढच ] जी० २१४४५ वट्टवेयड्ड [वृत्तवैताढच] रा० २७९. जी० ३१४४५, ¥30 बट्टि वित्ति जी० ११७२,३१४८६ वट्टिज्जमाण्चरय [वर्त्यमानचरक] ओ० ३४ बट्टिता [वतित्वा] रा० ७७६ aट्टिय | वर्तित ] ओ० १६,७१. रा० ६१,१३३, २४४,७६८,७७७. जी० ३।१७२,३०३,४६६, 280 वडभिया [वडभिका] रा० ८०४ वडभी [वडभी ] ओ० ७० वडिसग [अवतंसक] ओ० १० बडिसय [अवतंसक] ओ० १२. जी० ३। १८४ वडेंसग [अवतंसक] ओ० ५,८,६४. रा० १२५, १४४. जी० ३।२६८,२७४,२८४,७०२,८०८, **५२६,१०३**€ वर्डेसय [जनतंतक] रा॰ १२५ ् बहु [नृष्] - वड्ढइ, जीव ३,७३१.--- बड्ढए. ी० ३.५३८।१४....वड्ढति. जी० ३।७२३ वण वती रा० ४४,६५४,६४४,७६४. রী৹ ় ধ্ধ্ধ,ধ্বং वण (लया) [वनलता] जी० ३।२६५ वणत्यि [वनाधिन्] रा० ७६४ वणप्फइकाइय [वनस्पतिकायिक] जी० ३।१९६६ वणप्फति [वनस्पति] जी० ३।१२३ वणप्फतिकाइय [वनस्पतिकायिक] जी २।१२६, १९६

वणमाला [वनमाला] ओ० ४७,४८,७२. रा० १३६,२१०,२१२. जी० ३।३०६,३५४, **३७३,४६१,६४७,६७३,**८८६,८८८ वणराइ [वनराजि] रा० ६५४,६५५. जी० ३।२७६,४४४,४४४,५८५,६३१ **वणराति** [वनराजि | रा० २६ वणलया[वनलता] ओ० ११,१३. रा० १७,१८,२०, ३२,३७,१२६,१४४. जी० ३।२८८,३००,३११, ३७२,१५४ वणलयापविभत्ति [वनलताप्रविभक्ति] रा० १०१ वणसंड विनषण्ड | ओ० ३,४,८. रा० ३,१७०, **१७१,१७४,१**८२,१८४,१८६,१८**६,२०१**, २३३,२६३,६४४,६४४,७०३,७८१,७८२, ७८६,७८७. जी० ३१२१७,२४६,२७३,२७७, २८६,२९४,२९६,२९८,३४८,३४८,३६२, ३६४,४४४,६३२,६३६,६६१,६६८,६६४ £~**₹,**€~~,€~€,७०€,७₹६,७**१४,७**६२, ७६५,७६८,७९८,५१२,५२३,५३९,५५०, 5×30,557,680,688 वणस्सइ | वनस्पति | जी० दा३ वणस्सइकाइय (वनस्पतिकायिक) जी० १।१२,६६ से ७४; २।१३≂; ३।१३१,१३५; ४।६,१४; 518; 81858,283 वणस्सइकाइयत्त [वनस्पतिकायिकत्व] जी० ३।१२७ वणस्सइकाल[वनस्पतिकाल] जी० १।१४२; २।६३,६४ से ६७,११७,१२६,१२७,१३०: ४।१२७; ६¦११७,१२७,२६४,२७१ वणस्सति [वनस्पति] जी० ४११७ वणस्सतिकाइय [वनस्पतिकायिक] जी० २११०२, \$20,228,235,835,2X5,2X5,3183X; भ्रा १, ६, १ म से २०; मा४,४; ६। १म२,२४६, २५्≍,२६६ वणस्सतिकाल [वनस्पत्तिकाल] जी० २।५६ से 55,E0 # E7, 886,838,833; 31888

वत्यविहि [वस्त्रविधि] ओ० १४६. रा० ८०६ वत्यव्व [जास्तव्य] रा० २८२. जी० ३।४४२,४४८, ४२७ वत्थव्वग [वास्तव्यक] जीव ३।३५०,४४६,५६३ वस्थि [वस्ति] रा० ७६३. जी० ३११९७७

वर्त्यत वस्त्रान्त रा० ६९

१. वत्रं च सूत्रव तनकम् | ओ० वू० | ।

वतै – सूत्रवलनकम् ∫जी० वृ०] ।

वत्त' (वर्त) ओ० १६. जी० ३।४६६ २३१,२४७,२८१,२८४,२६१,२६३ से २६६, वत्तमंडल [वृत्तमण्डल] ओ० ६४ ३००,३०४,३१२,३४५. जी० १।४,३४,३५,४०, वत्तव्व [वक्तव्य] ओ० ३३. जी० ६२५,६८२ र्म,७३,७म,मर; ३१४म,म३,म७,६४,१२७, बत्तव्वता वक्तव्यता जी० ३११६६,८४६,८८६, २७१,२७७ से २८२,३००,३०६,३४३,३६०, ३७२,३९३,४४७,४४१,४४७ से ४६२,४६४, ४७०,४७७,४१९६,४२०,११४४,४७८,१८०, ४८६,५९१,५९२,५९४,५९७,६०१,६०२, **६३७,६४५,६४८,६३६,६<u>३</u>६,७२४,७२७,७३**८, 983,953,560,555,602,505,<u>8</u>92, १०७४,१०७६,१०=१,१०६३ से १०६६ वण्णओ विणंतस्] जी० ११३४,४०,९६,१३६ वण्णग | वर्णक | ओ० ६२,१६१,१६३ वण्णत [वर्णक] राज २४३, जीव ३।२१७ वण्णतो [वर्णतस्] नी० ३।२२,२७,४५ वण्णमंत वर्णवत् जी० ११३३,३४ वण्णय वर्णक] रा० ६९,१४,६,१६४,१७०,२०१, २०२,२०४ से २०५,२१९,२३२,२३४,२६१, २६३.ी० ३१२६८,३१४ से ३१७,३२०,३२१, ३३८,३४४,३४४,३**४८,३५८,३६२,३**६२,**३६**६, *`*३६५,३७३,३७४,३७५,३६४,३६६,४०**१४०६**, ४२३,४२४,४२९,६३२ से ६३४,६३९ से ६४१, ૨ ૪ ૨,૬૪ ૩,૬ **૧૦, ૨** ૨**૧, ૨૬ ૬ ૯, ૨ ૩૨, ૬** ૭૪,

६७८,६७६,६८३ स ६८४,६८६,७०६,७३६,

अर्थ,७४६,७४६,७६२,७६८,५१२,५२३,५३६,

- वणिय (वश्विज्) जा० १ वणोवजीवि [वनापजीविन्] रा० ७६४ वण्ण [वर्ण] आं० २,१३,२३,२४,४७,४६ से ४१, xx, 42, 856, 860, 868. TTO E, 82, 28 से २९,३२,४५,५२,५६,१२०,१३०,१७१,१९६,
- ११३७;४१७; ४१४,३०; ६१५,१०; ७११०, १३ से १४,१७,१८,६१३,४,४८,४६,८०,८३, १०३,१०४,११४,१२४,१२६,१३६,१३८, १७७,१९४,२०७,२११,२१९,२१८,२२२, २२६,२३६,२४१ से २४३,२४६,२६२,२७७ से २७६,२६१,२६२

xx0,xx0,xx2,xx5,xx5,xx60,880,

वण्णसंजलणया [वर्णसंज्वलनता] ओ० ४०

वण्णाभ[वर्णाभ] रा १२४. जीव ३७७७,६३७,

£XE, EE &, OZG, OXZ, OEZ, GEE, GXX,

वण्णावास [वर्णावास] रा० १६,२०,२४ से २६,

36,88,838,888,808,860,225,288, २४४,२७०. जी० ३।२६४,२७६ से २८२,

Z=0,30X,388,322,3XE,3=0,800,

४**१५,४३४,**६४३**,६**५४,६६५

283,274,279,237,238,234 बत्तव्वया [वक्तव्यता] रा० ५२,२१४,३२१,७४०

से ७५३. जी० ३।३२,२५०,४१२,४३१,४३४,

505,568,008,080,005,500,5%

वत्तिय (प्रत्यय) ओ० ४२. रा० १६,६८७,६८६

वत्य | वस्त्र | ओ० २०,३३,४७,४९,५१ से ५३,७२, १०७,१२०,१३०,१४७,१४९,१५०,१६२०,

रा० १४६,१४७,२४८,२७६,२८६,२८१,

£=X,&=0,&=E,&E7,&E=,000,08X,

े१६,७१९,७२६,७४२,७८९,७९४,८०२,

८०८,८१०,८११. जी० ३।३२९,४१९,४४७,

xxx,xex, que, bux, que, equ, 222

€ 8 8, € 3 €, 8005

দও হ

## वत्थू-वरुणोद

**बत्यू [वस्तु,दास्तु]** ओ० १ वत्थुलगुग्म [वास्तुलगुल्म] जी० ३।४८० वस्थुविज्जा [वास्तुविद्या] ओ० १४६. रा० ५०६ √ वद [वद्]--वदह. ओ० ६६. रा० ६६४. --- वदेज्जा. रा० ७४१ वदण [वदन] जी० ३।४९६ से ४९८ वदित्ता [वदित्वा] ओ० ७९ वद्दलियाभत्त [बार्दलिकामक्त] ओ० १३४ बद्धण (वर्धन) जी० ३। ४९२ बढणो [नर्धनी] जी० ३।५५७ वद्धमाण [वर्धमान] ओ० ४८,६८ वद्धमाणग [वर्धमानक] आ० १२,६४. रा० २१, २४,४९,२९१. जी० ३१२७७,२८१ वद्धमाणा [वर्धमाना] रा० २२५. जी० ३.३०४, <u> ૧</u>૬૬ √वद्धाव [वर्धय] - वद्धावेइ. ओ० २०. रा० ६८०, -वढावेंति. रा० १२. जी० ३१४४२. --- वद्धावेति. रा० ४६ वद्वावेत्ता [वर्धयित्वा] जो० २०. रा० १२. জী০ হা४४२ वष्प [वप्र] रा० १७४. जी० ३।११८,११९,२८६ बल्पिजी [दे०] ओ० १ वम्भिय [वर्मित] रा० ६६४,६८३. जी० ३।४६२ वध [वचस्] ओ० २४. रा० ५१४ वग्र [वयस्] ओ० ४७ वय [बत] ओ० २४,४६ √वय [वद्]--वइस्संति. रा० ८०२.--वएज्ञा. रा० ७४०.--वयइ. ओ० ७१.---वयामि. रा० ७३४.---वयासि. ओ० २०. रा० ७३४. जी० ३।४४८.-व्यासी. रा० ८. जी० ३।४४२.--वयाहि. रा० १३ √वय [वच्]-वीच्छं. ओ० १९४1१७. जी० ३।२२६ वर्यस [वयस्य] जी० २१६१३ वयंसय [वयस्यक] रा० ६७५ वयगुस [वचोगुप्त] ओ० २७,१५२. रा० ५१३

- वयजोग [वचोयोग] ओ० १७४,१७७,१७६,१८२
- वयण [वचन] को० ४६,५६,५७,५६,६१,६६.
  - रा० १०,१४ से १९,१८,७४,२७९,६४४,६८१, ६९९,७०७. जी०३।४४४,४४४
- **वयण** [वदन] ओ० १४,१९,२१,४४. रा० ६७२. जी० ३।**४**९७
- वयबलिय [वचोबलिक] ओ० २४
- वयरामय [कजमय] रा०१७४
- बर [बर] ओ० १,२,४,५ से १०,१२ से १४,१६, ેર્ફ,૪૬,૪૬,૪૬,૪૬,૨,૪,૨૭,૫૬,૬૨ સે ૬૨, ६७ १०७,१५३,१६५,१६६,१७२. रा० ३,४, =, ६, १२,१३ २८,३२,४७,४२,४६,६८ से ७०, ७६,१२६,१३१ से १३३,१४७,१४८,१५६, **१६२,१७३,१**८५,२**१०,**२१२,२२४,२३१,२३६, २४७,२७७,२८०,२८३,२८६,२९१,२९२,३४१, ४९४,६४७,६६४,६७१,२८१,६८३,७१०, 688,628,668,688,202,208,288. जी० ३।२७४,२८१,२८२,२८५,२९७,३०० से ३०३,३२१,३३२,३३४,३४४,३७२,३७३, इद्र७,४४३,४४६ से ४४६,४५७,५१६,५४७, ५४७,४६२,४८६१ में ४९३,४६१ से ५८७, √वर [बरय्]-वरइ. जी० ३।=३=,१६ वरंग | वराङ्ग ] जी० २।३२२
- बरदाम [वरदामन्] रा० २७६. जी० ३।४४५
- **वरपुरिस** [वरपुरुष] जी० ३।२५१
- वराह [वराह] ओ० १९,४१. रा० २४,२७.
  - जी० ३।२७७,२८०,४६६,१०३८
- वरिसघर [वर्षधर] ओ० ७०. रा० ५०४
- वरुण [वरुण] जी० ३।७७४,५४७
- वरुणप्पभ [वरुणप्रभ] जी० २१८५७
- वरुणवर [वरुणवर] जी० ३१८४१,८४६,८४७, ८४६
- वरुणोद [वरुणोद] जी० ३।२८४,८४६,८६०, ८६२,९४८,९६३

वलभी [वलभी] जीव ३१६०४,७१३ वलभीघर [वलभीगृह] जी० ३।५१४ वलय [बलय] जो० १।६९; ३।३७ से ४०,४२, ४४ से ४०,४९३,७०४,७९३,७९६,८१०, ~~**?**?,~**₹**?,~४~,~**₹**₹,~**₹**₹,~**₹**\$, 468,508,500,550,557X वलयमयग [वलयमृतक] ओ० १० वलयामुह [वडवामुख] जी० ३।७२३ वलयावलिपविभत्ति ]वलयावलिप्रविभक्ति ] रा० दध् वलि [वलि] जी० ३। १९७ वलित [वलित] जी० २। ५९६ वलिय [वलित] ओ० १४,१९. रा० १२,६७२, ७१८ से ७६१. जी० राष्ट्र बल्ली [बल्ली] जी० १।६९,३।१७२ वयगत [व्यपगत ] जी० २।५९७,६१०,६१२ से ६१६,६२४,६२७,६२= बबगय [व्यपगत] ओ० १४, ६२. रा० ६७१. जी० ३।६०७,६०६,६२२ √ववरोव [व्यप+रोपय्]—ववरोवएज्जा. रा० ७५१–-ववरोविज्जइ. रा० ७६७ ----ववरोवेमि. रा० ७५६----ववरोवेहि. रा० ७४१ ववरोवेता [व्यपरोप्य] रा० ७१६ √ववस [वि+अव+सो]--ववसइ. रा० २८८. রী০ ২।४५४ ववसइत्ता [व्यवसाय] रा० २८८. जी० ३।४१४ वदसाय [व्यवसाय] ओ० ४६. रा० २८८. জীৎ ২।४४४ ववसायसभा [व्यवसायसभा] रा० २६६,२७१, २७२,२८६,२८८,४९४,४९६,४९७,६१६, ६३४,६३४. जी० ३।४३४,४३६,४३७,४४२, ४५४,५४७,५४६ से ५५३ बबहार [व्यवहार] रा० ६७१

ववहारग [व्यवहारक] रा० ७६९ ववहारि [व्यवहारिन्] रा० ७६९ वस [वश] ओ० २०,२१,५३,५४,५६,६२,६३, ७८,५०,५१. २१० ८,१०,१२ से १४,१६ से 85,80,20,23,23,63,08,200,206, २५१,२६०,६४४,६५१,६५३,६६०,६६४, 000,000,000,000,000,000,000,000 ७२४,७२६,७७४,७७८. जी० ३।४४३,४४४, 889,888 √वस [वस्]—वसाहि. ओ० ६५. रा० २५२. जी० ३।४४ = वसंतलया [वासन्तीलता] रा० २४ वसट्टमयग [वशार्तमृतक] ओ० ६० वसण [वसन] रा० २६,२८,६६,७०,१३३. जी० ३।२७६,२८१,३०३,११२१ से ११२३ वसणभूत [व्यसनभूत] जी० ३।६२ -वसणुप्पाडियग [उत्पाटितकवृषण] ओ० १० वसभ [वृषभ ] ओ० २७. रा० ५१३. জী০ হাং০ংখ वसमाण [वसत्] रा० ६८३,७०६ बसह [बुषभ] रा० २४ वसहि [वसति] ओ० ३७,११८,११९,१९१, জী০ ২। ২০২ बसु [वसु] जी० ३।११७ वसुंधरा [वसुन्धरा] ओ० २७. रा० द१३. जी० ३।६२२ वसुगुत्ता [वसुगुप्ता] जी० ३। १२२ वसुमित्ता [वसुमित्रा] जी० ३।६२२ वसू [वसू] जी० ३।६२२ बह [वध] ओ० ४६,७३,१६१,१६३. বাঁত হও? बहक [वधक] जी० ३।६१२ वहमाणय [वहमानक] ओ १११ से ११३,१३७, १३५

वा [वा] ओ० ४२. रा० ६. जी० ३।११७

वलक्ख-वा

वलवल [वलका] जी० ३।३२२,५१३

#### वाइज्जंत-वायणा

वाइज्जंत [वाद्यमान] रा० ७७ वाइस [वादित्र] रा० ११४,२५१ वाइय [वाद्य] जी० ३।४४७ बाइय [वादित] ओ० ६८,१४६. रा० ७,७८, म०६. जी० ३।३५०,५६३,१०२५ वाइय [वातिक] ओ० ११७. रा० ७९६ वाइय [वाचिक] ओ० ६९ वाउ [वायु] ओ० ४६. जी० १।१२८,१३३; २ १३०,१३६; ३:३०७,३९३; ४1१७,२०,२४, २४ २७ वाउकाइय [वायुकायिक] जी० २।१३८; ४।१,६, २६,३१,३३,३६; ८१४; ६११८२,१९४,२५६, રથ७, २६२, २६६ वाउकाय [यायुकाय] रा० ७७१. जी० ३।१३४, ७२४,७२५ वाउक्कलिया [वातोत्कलिका] जी० १।=१ वाउक्काइय [वायुकायिक] जी० १।७४,८०,८२; 21802,885,886; \$1868; 214,88,20, **द**११,३ वाउक्शाम [वातोद्भ्राम] जी० १। द१ वाज्याय [वायुकाय] रा० ७७१ वाउवेग [वायुवेग] जी० ३। १९६८ वाएसा [वाचयित्वा] रा० २८८. जी० ३।४५४ वाकवासि [वल्कवासिन्] ओ० ९४ √वागर [वि∔ आ+कृ]—वागरेइ. ओ० ६६ वागरण [व्याकरण] ओ० २६,९७. रा० १६, 988,98= वागरमाण [ब्याकुर्वाण] ओ० २६ वागरेयस्व [व्याकर्तव्य] जी० ३।७७ वाधाइम वियाघातिन् व्यावातिम] ओ० ३२. জী০ ইাং০২২ वाधातिम [व्यापातिन्, व्याघातिम ] जी० ३।१०२२ वाघाय (व्याधात) जी० २,४९,५२ **বান্ত** [বান্ত, বা**র**] জী০ ২।**৭**৩৭ वाण [वाण] ओ० १३ वाणपत्थ [वानप्रस्थ] ओ०६४

वाणमंतर [वानव्यन्तर] ओ० ४६,८६ से ६३. रा० ११,५९. जो० १।१०१,१३५;२।१५, १६,७१,७२,९४,९६,१४८,१४६; ३1२१७, २३०,२४१,२९७,२९८५,३४५,४०२,४४६, XX=,XXX,XX0, £30, 5XE, 020, 5X0, 680 वाणमंतरो [जानव्यन्तरी] जीव २।३व,७१,७२, १४५,१४९ वाणिज्ज [वाणिज्य] जी० २१६०७ वात [वात] रा० १७३ वातकरग [वातकरक] जी० ३।३१४,४१९,४४४ √वाव [वादय्]---वादेंति, जी० ३।४४७ वादित [वादित] जी० २। ४२, ५४५ वाबाहा (व्याबाधा] जी० ३।६२०,६२४ वाम [वाम] ओ० २१,४७,४४. रा० ५,७०, १३३,२६२,७६७,७६८,७७६,७७७, जी० ३।४४ वाम [वाम,व्याम'] ओ० ४,० जी० ३।२७४ वामण [वामन] जी० १।११६ **वामणिया** [वामनिका] रा० ५०४ वामणी [वामनी] ओ० ७० वामहण [व्यामर्दन] ओ० ६३ वामहत्य [वामहस्त] जी० २।३०३ वामुत्त ग [दे० वामोत्तक,व्यामोत्तक] जी० ३।५६३ बाय [बात] ओ० ४६,६४. रा० ४०,५०,५२,५६, १३२,१३७,२३१,२४७,२५४,७७१. जी०३।२६५,२८४,४४१,५८०,७२६ √वाय |वाचय्]--वाएति. रा० २= =. जी० ३४४४४. वायंति.---ओ० ४४ √वाध [वादय्] --वाइज्जइ रा० ७८३---वाएंति रा० ११४ वायंत [बादयत्] ओ० ६४ वायकरग [वातकरक] रा० १४३,२४८,२७६. জী০ ২।২২૬ वायणा [वाचना] अ० ४२,४३ १. अनेकाभिर्नरवामाभि: सुप्रसारिताभि: (ओ०वु० अनेकैर्नरव्यामैः पुरुषव्यामैः सुप्रधारितैः (जी०वृ०)

वायमंडलिया [वातमण्डलिका] जी० शद श वायाम वियायाम ] ओ० ६३ वारण [वारण] ओ० १६ वारम [वारक] जी० ३।५९६ वारि [वारि] रा० १३१,१४७,१४८,१८०. জী০ ই।২০१,४४६ वारिसेणा [वारिवेणा] रा० २२५. जी० ३।३८४, 588 वारुणि [वारुणी] जी० ३। ५६० वारुणिकंत [वारुणिकान्त] जी० ३। ८६० बारुणिवरोदय [ वारुणीवरोदक ] जी० ३।८४७ बारुणी [वारुणी] जी० ३। ४ द६ वारुणोद [वारुणोद] जी० ३।२८६ वारुणोदय [वारुणोदक] जी० ११६४ वारुणोयग [वारुणोदक] रा० १७४. जी० १७४ वाल [व्याल] ओ० ११७. रा० ७९६. जीव ३;३००,६२४,५२२ वाल [बाल] रा० १६०,२४६. जी० ३।३३३, ४१७ वालग [व्यालक] ओ० १३. रा० १७,१८,२०, ३२,३७,१२९. जी० ३।२्८८,३००,३११, ३७२ वालग्ग [बालाम] जी० ३।७९८,७८१ वालग्गयोतिया [दे० बालाग्रपोतिका] जी० ३१६०४ वालरूवग [व्यालरूपक] रा० १३० वालरूवय [व्यालरूपक] रा० २९४,२१६ से २६९,३१२,४७३. जी० २।४४९,४६१,४**६२**, ४७७,४३२ वालवीइय [वालवीजित] ओ० ६३ वालवीयणय [वालवीजनक] ओ० ६९ वालवीयणी | वालवीजनी | ओ० ६७ वाली दि० रा० ७७ वालुयप्पभा [बालुकाप्रभा] जी० ३।३४,४१,४३, 88,88,33,88 वालुया [बालुका] रा० १३०,१३७,१७४,२४४.

জী০ ২।২৯২,২০০,২০৬,४০৬

वालुयापुढवी [बालुकापृथ्वी] जी० ३११८५,१८८

वालुयासंयारय [बालुकासंस्तारक] ओ० ११७

वावण्ण [व्यापन्न] जी० ३१८४

वावत्तरि [ढिसप्तति] ओ० १४६

- **षावी** [वापी] ओ० ६,९९. रा० १७४,१७४, १८०. जी० ३१२७४,२८६,२८७,२९२,४७९, १९७,६६४,८७४,८८१,९४८
- वास [वर्ष] जो० ६=,= ६ से ६५,११४,१४०, १४१,१४५,१५४,१५५,१५७ से १६०,१६५, १६६,१==,१६२. रा० = से १०,१२,१३, १५,५६,२७६,२=१,६६=,७२६,=०५,=१६. जी० १।५१,५५,५६,६६,६५,७४,=२,=७,६६, १०१,१०३,१११,११२,११६,११६,१३३, १३६,१३७; २।३५ से ३६,४१,६६,७३,६२, ६३,६६,६७,१०=,११०,१११,११६,१२६, १३६;३७; २।३५ से ३६,४१,१२,१२६, १३६;३७,१०९,१०,११०,१११,११९,१२६, ७=५,७=६,७६५,=४१,१०२७ से १०३०, ४०३=,११३१; ४।३,६,११,१२,१६; ५।५, ६३,१०,१२,१४,१५,२६; ६।२,६; ७।३, १३; ६।२,४,२१०,२१४,२२४,२२६,२३४, २४१,२६६,२७७
  वास वास वार २०,६=३,७०६. जी० ३।२=३
- √ वास [वृष्]—वासंति. रा० १२. जी० ३।४४७--वासह. रा० ६
- वासंति [वासन्ती] जी० ३१४९७
- वासंतिकलया [वासन्तिकलता] जी० ३११८४
- वासंतिमंडवग [वासन्तीमण्डपक] रा० १८४
- वासंतिमंडवय [वासन्तीमण्डपक] रा० १८५
- वासंतिम [लया] [वासन्तिकलता] जी० श्ररद
- वासंतियलया [वासन्तिकलता] ओ० ११. रा० १४५

वासंतियलयापविभक्ति [वासन्तिकलताप्रविभक्ति] रा० १०१ वासंविधानम्म [वासन्तिकलारुम] जीव २४४८०

वासंतियागुम्म [वासन्तिकागुल्म] जी० ३१४८० वासंतिलया [वासन्तीलता] जी० ३१२७७

ভইহ

### वासंतीमंडवग-विक्खंभ

वासंतीमंडवग [वासन्तीमण्डपक] जी० ३।२९६ वासघर [वर्षधर] रा० २७६. जी० ३।२१७,२१६ से २२१,२२७,४४४,६३२,६६८,७९४,८४१, १९७ वासपरियाय [वर्षपर्याय] ओ० २३ वासवद्दलय [वर्षबार्दलक] रा० १२३ वासहर [वर्षधर] रा० २७६. जी० ३।४४४, 430,800 वासा [वर्षा] रा० ६,१२ वासावास [वर्षावास] ओ० २६ वासिक्क | वार्षिक | रा० १९७. जी० ३।२६१ वासित्ता [वर्षित्वा] रा०२० वासी [वासी] ओ० २९ वासुदेव [वासुदेव[ ओ० ७१. जी० ३।७९५, 5४१ वासेता [वर्षित्वा] रा० २० वाहण [वाहन] ओ० १४,२३,५२,५९,६९,१४१. RIO & 68, 808, 808, 850, 858, 950, 955 330, \$30, 030 वाहणसाला [वाहनशाला] ओ० ४९ वाहणा ] उपानह् ] ओ० ११७ वाहा [बाहु] जी० ३।४९७ वाहि [व्याधि] ओ० ७४।२. जी० २।१२८, ¥86 बाहित [ब्याहत] जी० रे।२३९ वि [अपि] ओ० ६७. रा० २७६ विअट्टच्छउम [विवृत्तछद्मन्] जी० २१४४७ विइय [दितीय] ओ० १८२ विउक्कम [वि-+ उत् + कम् ] --- विउक्कमंति. जी० ३। ८७ विउल | विपुल | ओ० १,२,४,८,१४,१९,२३,४६, 22,22, 24, 25, 282, 280, 286, 220. राo ७, १४,३२,२२८,२७८,२७६,२५१,२६१,२६४, २९६,३००,३०४,३१२,३४४,६७१,६७४, Eno, Eng, Eng, End, End, E Ex. E EE,

,390,580,300, 200,800,800, 500,000 665,9330,536,050,700,700,700,730 द०द,द१०,द११. जीठ ३**।११०,११७**,२७४, **૨**૭૨,૪૬१,૪૬૨.૪૬૨,૪७०,૪૭७,૫१૬, 220,285 **विउलकयविति** [ विपुलकृतवृत्तिक ] ओ० १६ विउलमइ [विपुलमति] ओ० २४. रा० ७४४ √विउव्व | वि+ क्र]-- विउव्वइ. रा० ३२. ---विउव्वंति. रा० १०. जी० ३।११०. ----विउव्वति. रा० १९.----विउव्वाहि. रा० १७. -विउब्बिसु. जी० २।१११६ -विउब्विस्संति. জী৹ ২।१११६ विउव्यिणिड्रिपत्त [विक्रियद्विप्राप्त] ओ० २४ विडस्वणा [विकरण] जी० ३।१२७।४,१२६।२ से ४ विडब्वित्तए [विकर्तुम्] जी० ३।११० विउग्वित्ता [विकृत्य] रा० १० जी० ३।११० विउग्विय [विकृत] ओ० ४९ विउल्वेमाण [विकुर्वाण] जी० ३।११०,१११५ विउस्सम्ग [ब्युत्सर्ग] ओ० ३८,४३,४४ विउस्सम्पारिह [न्युत्सर्गार्ह] ओ० ३६ विओग [वियोग] ओ० ४६ विओसरणया [व्युत्मर्जन] ओ० ६९,७०. रा० ७७८ विद [वृन्द] रा० ६८३. जी० ३। १८६ विंहणिज्ज [वंहणीय] ओ० ६३ विकच्छसुत्तग [वैकक्षसूत्रक] रा० २५४ विकय्प [विकल्प] ओ० ५७. जी० ३।५९४ विकिट्ठ | विकृष्ट ] ओ० १. रा० ६८३ विक्रुस | विकुश ] ओ० ५,१०. जी० ३.३८९,५८९ से ४८३, ४८६ से ४९४ विक्कम | विक्रम | ओ० १६,२३. जी० ३१९७६, 805,850,852,465 विक्किरिज्जमाण [विकीयंगाण] रा० ३० विक्लंभ [विष्कम्भ] ओ० १३,१७०,१९२. रा० ३६,१२४,१२६ से १२९,१३७,१७०, १८६,१८८,१८६,२०१,२०४ से २१२,२१८,

२२१,२२२,२२४,२२६,२२७,२३०,२३१, २३३,२३४,२३९,२४२,२४४,२४६,२४७, २४१ से २४३,२६१,२६२,२७२. जी० ३।४१ २६३,२७३,२९८८,३००,३०७,३१०,३५१ से ₹**XX,**₹X¤,**₹XE,**₹**E8,**₹**E**7,३**E**8,३**E**8, ३६० से ३७४,३७६,३७७,३००,३०१,३०३, ३५**५,३**५६,३**६२,३६३,३**९५,४००,४०**१**, ४०४,४०६,४०८,४१२ से ४१४,४२२,४२४, ४२७,४३७,<u>५७७,६३२,६</u>३४,६<u>३</u>६,६४२, ६६३,**६६८,६७१ से ६७४,** ६७९,६८**३,६**८४, ६८,७०६,७२३,७२६,७३२,७३६,७३७, 644,644,644,647,647,644,645,600, ७९४,७९४,७९८,५१२,५२३,५३२,५३४, त्रहर, तहर से तह¥, तह७, तह से ह०१, €0€,60%,680,688,685,685,8000 → 8088,8003,8098 विक्खरिज्जमाण [विकीर्यमाण] जी॰ ३।२८३ विक्खेवणी [विक्षेपणी] ओ० ४४ विग | वृक] जी० ३१८४,२७७,६२० विगय [विगत] जी० ३। ९४ विगसिय | विकसित | रा० ५,७१४ विगोवइत्ता [विगोप्य] ओ० २३. रा० ६९४ विस्गह [विग्रह] ओ० १६ विग्गहिय [विगृहीत] जी० ३।५९८ विचरिय [विचरित] जी० ३।११८,११६ विचिषकी (दे०) रा० ७७ विचित्त [विचित्र] ओ० ६,४७,४८,६३,७२. रा० १७३,२२८,६८१. जो० ३।२७४,२८४, 349,249,2468,289,299 विच्छडुइत्ता [विच्छर्य | ओ० २३ विच्छडिसा [विच्छर्य] रा० ६९४ विच्छड्डिय [विच्छदित] ओ० १४,१४१. रा०६७१, 330

**विच्छविय** [विच्छिविक] जी० ३।९६ विच्छिण्ण | विस्तीर्ण ] ओ० १४,१९. रा० ६७१, ७७४. जी० ३।२६१,३४२.४१६,४१७,६३२, £\$8,555,5-2 **विच्छिन्न** [विस्तीर्ण] रा० ६७१ विच्छिप्पमाण [विस्पृश्यमान] ओ० ६९ विजड [वित्यक्त] जी० ३।४४,४६ विजडपुरुव [वित्वक्तपूर्व] जी० ३१५४,४६ विजय [विजय] ओ० २०,५३,६२,६४,६८,१९२. रा० १२,४६,४०,४२,४६,७२,११८,१३७, २**३१**,२४७,२७६,२७९,६६४,६=३,६=९, ७०७,७०८.७१३,७२३. जी० ३११८१,२९९ से ३०७,३१४,३३४,३३६,३३६ से ३४१,३७२, इंटइ,४०२,४१०,४२९,४३२,४३४,४३६ से, ४४७,४४४ से ४६४,६०१,६३४,६६०,६६४, ७०१,७०७ से ७१०,७१३,७६२,७७४,७९९, soo,=१३,=१४,=२४,=२३,=३१,=६=, 883,083,353,859,880 विजयदूस [विजयदूष्य] रा० ३८,३९.

जी० ३।३१२,३१३,३३८,६३४,८१२

- विजया [विजया] जो० ३।३४०,३४१,३४४,३४५, ३४७,३४८,३६०,४३९,४४२,४४५ से ४४८, ४४४,४४४,४४७,७०४,७१०,७३९,७४४,६०२
- विजाति | विजाति ] जी० २।७८१,७८२
- विज्जा [विद्या] ओ० २४. रा० ६५६
- विज्जाबर [विद्याधर] जी० ३।७९४
- विज्जाहर [विद्याधर] ओ० २४. रा० १७,१८, २०,३२,१२९. जी० ३।२८८,३००,३७२,७९४, ८४०,८४१
- विज्जु [विद्युत्] ओ० ४८,४७. रा० १३३. जी० १७८८ ; ३।३०३,४६०,११२२
- विज्जुकार [विद्युत्कार] जी० ३१८४१
- **विज्जुत** [विद्युत्] जी० ३।६२६
- विज्जुवंत [विद्युदन्त] जी० ३।२१६

# वज्जुप्पभ-वि<mark>द</mark>ेह

विज्जुष्यभ [विद्युत्प्रभ] जी० ३।७४९ विन्जुष्पभा [विद्युत्प्रभा] जी० रे।७११ विज्जुमुह [विद्युन्मुख] जी० ३।२१६ विज्जुयंतरिय [विद्युदन्तरिक] ओ० १९८ विज्जुयाइत्ता [विद्युतायित्वा] रा० १२ √ विज्जूयाय [विद्युताय्] --- विज्जुयायंति. रा० १२. লী৹ ২।४४७ विज्जुयार [विद्युत्कार] जी० ३१४४७ √विज्झव [वि+ध्यापय्] —विज्झवेज्ञा. रा० ७६५ विज्झाय [विध्यान] रा० ७६४ विदूर [विप्टर] जी० २११८७ विडंग [विटङ्ग] जी० ३।५९४ विडाल [बिडाल] जी० ३।६२० विडिम [दे० विटप] ओ० ५,८,५१. रा० २२७, २२८. जी० ३१२७४,३८६,३८७,३८८, ६७२, ६७४,६७६ विगइय | विनयित | रा० ७२३ विगद्व [विनष्ट] जी० ३।५४ विणमिय [विनत] ओ० ४,८,१०. रा० १४४. जी० ३।२६८,२७४ विषय [विनय] ओ० २,२३,३९,४०,४७,५२,५६, 史与,文色, 气 , 气 色, 白口, 二 号, 2 号 €. 天下口 20, 28, १८,६०,७४,२७९,६४४,६७१,६८१,६८७,६१२, ७०७,७१६,७३७,७७७,७७५. जी० ३।४४४, विणयओ [विनयतस्] रा० ६६४ विणयतो [विनथतस्] जी० ३। १६२ विणयपडिवत्ति [विनयप्रतिपत्ति] रा० ७७६ विषयसंपण्ण [विनयसम्पन्न] ओ० २१. रा० ६८६ विणासण [विनाशन] रा० ६,१२,२५१. जी० ३।४४७ विणिच्छय [विनिध्वय] रा० ६८६ विणिच्छिय | विनिश्चित | ओ० १२०,१६२. रा० ६९८,७४२,७८९ विणिम्मुयंत [विनिर्मुञ्चत्] रा० ३२,२९२.

জী০ ইাইও২,४४৬ विणिम्मुयमाण [विनिर्मुञ्चत्] जी० ३।११८ विणिवाय [विनिपात] ओ० ४६ विजीत [विनीत] जी० ३।७१४,५४१ विणीय [विनीत] ओ० ६१. रा० ७६५,७६६, ७७०,८०४. जी० ३१४६८,७६४,८४१ विजीयया [विनीतता] ओ० ११६ विज्ञाय [विज्ञक] रा० ८०६,८१० √विण्णव [वि+ज्ञपय्]—विण्णवेहि. रा० ६९९ विष्णाण [विज्ञान] ओ० २३. रा० ७४०,७४६, 962,968,9000 चितण्ह [वितृष्ण] जी० ३।१०६ वितत [वितत] रा० २४,११४,२५१. র্বা০ ২।২৬৬,४४৬,४८५ विततपक्ति [विततपक्षिन्] जी० १।११३; २११० वितार [वितार] रा० ७६ वितिक्कंत [व्यतिकास्त] रा० ५०१ वितिमिर [वितिमिर] जी० ३। १८ ९ वित्त [वित्त] ओ० १४,१४१. रा० ६७१,६७४ विति [ वृत्ति ] ओ० ६१ से ६३,१६१,१६३. रा० ७४२,७७६ विस्थड [विस्तृत] ओ० ७१. रा० ६१. जी० इदि१,८२; द३८११४,१०७३,१०७४ वित्यरतो [विस्तरतस्] जी० ३।२४९ विस्थार [विस्तार] जी० ३।७३ सित्थिण्ण [विस्तीर्ण] ओ० १४१. रा० १७,१८, १२४,१२७,७९९. जी० ३१४७,९६६१,७३६, 3509 विदिण्णविचार [विदत्तविचार] रा० ६७४ विदित [विदित] ओ० २६ विदिसा | विदिशा ] जी० ३। ६१ न विदिसीवाय [विदिग्वात] जी० १14 १ विदुपरिसा [विद्वत्परिषद्] रा० ६१ विदेस [विदेश] ओ० ७०. रा० ५०४ विदेह [विदेह] ओ० ९६. जी० २१८९

# विदेहजंबू-**वियाण**य

७३६

विदेहजंबू [विदेहजम्यू] जी० ३१६९९ विधाण [विधान] जी० ३।२५६ विधि [विधि] जी० ३।१६०,२४९,४४७,४८७ से શ્ર=૬,૧૬૧,૬३૪ विपंची [विपञ्ची] रा० ७७. जी० ३१४ मम विषक्क [विपक्व] जी० ३। ५ ६२ विपरिणामाणुप्पेहा (विपरिणामानुप्रेक्षा] ओ० ४३ विषुल [विपुल] रा० ६८६,७९४. जी० ३।४४४, 884,880,848,485 विष्पइट्ठ [विप्रकृष्ट] जी० २।५९१ विष्वक्षोग [विप्रयोग] ओ० ४३ विष्वजहणा | विप्रहाणि | ओ० १८२ विष्पजहिता | विप्रहाय ] ओ० १८२ विष्पमुक्क [विप्रमुक्त] ओ० १४,२४,२७,३६, 202,26215. TIO 22,203,262,283 से २९६,३००,३०४,३१२,३४४,६७१,६५६, < **१३**. जी० ३।२८४,४५७ विष्परिणामइत्ता [विपरिणमय्य] जी० ११४० विष्पोसहियत [विप्रुडीषधिप्राप्त] ओ० २४ विष्फालिय [विस्फारित] जी० ३।५९६ विफलीकरण [विफलीकरण] ओ० ३७ विद्यम [विभ्रम] जी० ३।५९४ विभंगणाणि [विभङ्गज्ञानिन्] जी० १।९६; 31808,8800; 81880,203,200,205 विभत्त | বিभक्त | জী০ ২। ২৪৩ विभयमाण (विभजमान) जी० ३।५३१ विभत्ति | विभक्ति ] जी० ३। १९४ विभाग [विभाग] जी० ३। ४ ६१ विभासा (विभाषा ) जी० ३।२२७ विभूइ | विभूति | ओ० ६७. रा० १३,६१७ विभूति [विभूति | जी० ३।४४६ विभूसण | विभूयण ] ओ० ४९ विभूसा [विभूषा] ओ० ३६,६७. रा० १३, ६४७. जी० ३।४४६,११२१ से ११२३ विभूसित | विभूषित ] जी० ३।४४१

विभूसिय [ त्रिभूवित | अे० ६३,७०. रा० २८४, २८६,८०४. जीव ३।४४२ विमउल (विमुकुल ) ओ० १ विमउलिय [विमुकुलित] जी० ३। ११० विमल [विमल] अंग्व १४,१६,४६,४७,४१,५३, EX, 288. TO BR, 48, 56, 00, 230, 246, १७४,२८८,६६४,६७२,६८३. जी० ३१११८,११६,२८६ ३००,३३२,३७२, 828,820,227,246,264,260 454 विमलप्पम |विमलप्रभ] जी० ३।८६६ विमाग [विमान] जं१० ४१. रा० ७,१२ से १४, १२४ से १२६,१२६,१६२,१६३,१६९,१७०, २७४,२७६,२७९,२८१,२८२,६४४,६४४, ७९६. जीव ३।१७४ से १८२,२१७,८४२, =४४,१०२४ से १०२६,१०३=,१०३६, १०४३,१०४८,१०५६ से १०५६,१०६५, १०६७,१०७१,१०७३,१०७४ से १०८१, 2089,8888 विमाणावास | विमानावास | रा० १२४. जीव ३:२४७,१०३८,१०३६,११२८ विमुक्क [विमुक्त] ओ० १९४।६,१८,२१. जी० ३१४४७ से ४६२,४६४,४७०,४७७, \*\*\*\*\* विम्हावण [विस्मापन] ओ० ११९ वियट्टछउम [विवृत्तछदान्] जो० १६,२१,५४. **रा०** ५ वियड [विकट] ओ० १९. जी० ३।५९६,५९७ वियडावति [विकटापातिन्] जी० ३७७१४ वियडावाति [विकटापातिन्] रा० २७१. র্জী০ ২।४४५ वियसंत [विकसत्] औ० ४१ वियसिय | विकसित | ओ० २१,४७,१४. रा० १३७. जी० ३।३०७ वियाणते [ यिजानत् ] ओ० १९ शा १६ **वियाणय** [विज्ञायक] **रा०** ५०४

### वियाणित्ता-विसय

वियाणित्ता [विज्ञाय] ओ० १४९. रा० ५१० वियाणिय (विज्ञात) ओ० ७० वियालचारि | विकालचारिन् | ओ० १४८,१४६. रा० ८०६,८१० विरइय | विरचित ] ओ० ६,६३. जी० ३१२७४ विरचिय | विरनित | रा० ६९,७० विरत ( विरत | ओ० ४६ विरय [विरत] ओ० १६= विरल्लिय | विरल्लिस | जी० ३। ५६१ विरसाहार | विरसाहार | ओ० ३५ विरहित | विरतिन | जीव २। ७९१, ५४४ विरहिय | विन्हित | ओ० ३७. जी० ३१८४७ विराइय [विगजित] ओ० १४,४७,४७,७२. मा० ७०,६७१. जी० २१४६७,११२१ विरागया | विरागता | ओ० ४६ विरायंत (विराजत्) अं० २१,१४,१७. रा० =, ७१४ विरायमाण | विराजमान ] ओ० १ विराहय | विराधक | २७० ६२ विरिय [वीर्य] जी० २।५९२ विरुद्ध | विरुद्ध | ओ० ६३ विरुवरूव | विरूपरुप ] रा० ८१६ विलंबिय [जिलस्थित] २३० १०२,२८१. জী০ ২।४४७ विलवणया | जिलपनता | ओ० ४३ विलविय [विलभित] ओ० ४६ विलसिय | विलसित | ओ० १६ विलास (विलाग) ओ० १४. २१० ७०,६७२, ८०९,८१०, जी० ३।४९७ विलासित | विलालित | जीव ३ ५२६ विलोग | विलीन | जी० २१५४ विलेवभ | विलेपन | ओ० ६३,१६१,१६३,१७० विलेवणविहि (विोपनविधि ) जा० १४६. रा० ५०६ विव | इव | ओ० १९. रा० १३३. जी० ३।१११

विवच्चास [विगयींस ] रा० ७६७,७६८,७७६, 000 विवणि | विपणि | ओ० १. जी० ३०६०७ विवर | विवर | रा० ७१४ से ७१७,७९३ विवागविजय | विभाकविचय | ओ० ४३ विवागसुवधर [यिपाकञ्जूतधर] ओ० ४५ विवाह [विवाह | जी० ३।६३१ विवाहपण्णत्तिधर | व्याख्याप्रज्ञप्तिधर | ओ० ४५ विवित्तसयणासणसेवणया | विविक्तणयनासन-सेवनता | ओ० ३७ विविध | विविध | जी० ३।३०२,३८७,४८८,४६४ विविह [विविध] ओ० १,४९,५१,११७. रा० २०, ४०,१३२,१३७,२२८,७१६. जी० सु२६४, २नन,३०७,३११,४न६,४न७,४न९ से ५९३, *સદ*ય,૬७૨ विवेग | विवेक | ओ० ४३,७९ से ८१ विवेगारिह [विवेकाई] ओ० ३६ विस ( विष ) रा० ७९१,७९४,७९४ विसज्जित [विसजित] रा॰ ६८४ विसडिजय | विसजित | ओ० २१. रा० ६८० 586,900,000,333 विसप्पमाण [ दिख्येत्] और २०,२१,५३,५४, ४६,६२,६३ ७८,५०,५१. २१० ८,१०,१२, से १४.१६ से १८,४७,६०,६२,६३,७२,७४, २७७,२७९,२५१,२९०,६४४,६८१,६८३, £80,588,000,000,080,083,088, ७१६,७१८,७२५,७२६,७७४,७७८. जीव ३१४४३,४४४,४४७,५५५५,५६७ विसभक्तियम | विषभक्षितक | ओ० ६० विसम | विषम | ओ० १७१. जी० ३/६२३,७०४, 686,588,522,588 विसय |विशद | रा० १३३. जी० ३।३०३,४,६२, ૬ સ્ટક્ विसय | विषय | ओ० २३,३७. रा० १५. जी० 3 6 4 5, 800

# वि**स**ह-विहि

#### ৩ইন

- विसह | विषह | ओ० २७. रा० ८१३
- विसाण [विपाण] ओ० २७. रा० द१३
- विसाय |विषाद | आ० ४६
- विसारय [विशारद] ओ० ९७,१४८,१४९. रा० ९७५,८०१,८४०
- विसाल [विशाल] ओ० ६४. रा० २२८. जी० ३।३८७,५१७२
- विसाला | विशाला ] जी० ३।६९९,६१५
- विसिट्ठ [मिशिष्ट] झो० १९,६३. रा० ३२,४२ ४६,१३४,२३१,२४७. जी० ३।२९७,३७२, ३९३,४९२,४९६,४९७,६०४,न४७
- विसुज्झमाण [विशुध्यमान] ओ० ११९,१४६
- विसुद्ध [ विशुद्ध ] ओ० ८,१०,१४,४६,१८३,१८४. रा० २६२,६७१. जी० ३।३८६,४**१७,**१८१ से ५८३,१८६ से ४६४
- विमुद्धलेस्स [विशुद्धलेश्य] जी० ३।१९९,२०१, २०३ से २०९
- विसेस [विशेष] ओ० १६४।१७, रा० ४४,१८८. जी० ३।१२६।४,२१७,२२६।४,३४८,४७६, द३६।१३
- विसेसहीण [विशेषहीन] जी० ३।७३
- विसेसाधिय [विशेषाधिक] जी० शब्द
- विसेसाहिय [विशेषमधिक] ओ० १७०,१६२. जी० १।१४३ ; २।६८ से ७२,६४,६६,१३४ से १३८, १४१ से १४६; ३।७३,७४,८६,१३४ से १३८, २६०,३४१,३६१,६३२,६६१,६६८,७३२२, द१२,८३२,६३४,६३२,६६१,६६८,७३६, द१२,८३२,६३४,८३६,८८२२,१०३७,११३८; ४।१६ से २२,२४; ४।१८ से २०,२४ से २७ ३१ से ३६,४२,४६,६०; ७।२०,२२,२३; ८:४; ६।४,७,१४,४४,१४४,१६६,१६६,१८४, १६६,२०८,२३१,२४० से २४३,२४४,२६६, २८६ से २६३

विस्संत [विथान्त] जी० ३।८७२ विस्सुयकित्तिय [विश्रुतकीर्तिक] जो० २ विहंगिया [विहङ्गिका] रा० ७६१

- विहग [विहग] ओ० १३,१६,२७. रा० १७,१६, २०,३२,३७,१२६,६१३. जी० ३।२६६,३००, ३११,३७२,४६६
- विहरिथ [वहस्ति] जी० ३७० म
- √विहर |वि-|-हू| -विहरइ. ओ० १४. रा० ६. जी० ३।२३६.—विहरति.ओ० २३. रा० १=४. जी० ३।१०६.—विहरति. रा० ७. जी० ३।२३४.—विहरामि. रा०७५२.— विहराहि. ओ० ६०. रा० २६२. जी० ३।४४६ ---विहरिस्सइ. रा० ६१४.—विहारस्सति. रा० ६०२.- विहरिस्तामि. रा० ७६७. --- विहरिज्जा. ओ० २१
- विहरंत | विहरत् ] रा० ७७४
- विहरमाण [विहश्त्] ओ० १९,३०,७६,७७,९२, ९४,११४,१४३,१४८,१४६,१६५. रा० ६८६, ७११,७७४,८१३
- विहरित्तए [विहर्तुम्] ओ० ११७. रा० ७९१. जी० ३११०२४
- **विहरिता** [विहृत्य] ओ० १४५
- विहव [यिभव] रा० १४
- विहस्सति [ वृहस्पति ] ओ० ५०
- विहाड [वि+घटय्]--विहाडेइ. रा० २८८. जी० ३।४१६.-विहाडेति. ओ० ७४।४. --विहाडेति. जी० ३।४५४
- विहाडिता | विघटच ] रा० २८६
- विहाडेता [तिघटच] रा० ३४१. जी० ३।४५४
- विहाण [विधान] रा० ७१,७४. जी० १।४८,७३, ७८,८१
- विहाणमग्गण [विधानमार्गण] जी० १।३४,३६, ३६
- विहार [विहार] ओ० ३०,६२,६४,११४,११४, १४३,१४८,१४६,१६४. रा० ८१४,८१६

विहि [विधि] ओ० ६३. रा० २०१. जी० ३।४७४. ४७६,४०६,१०६,१० से ४६४,०३०।१३; ४।३० विहिय [वितित] ओ० १४. रा० ६७२ विहुव [निधुन] जो० २।१८० विहण | विहीत | जी० ३।२१८,३६० वीइक्कंत | व्यतिकान्त | श्रो० १४३,१४४. যাত দত্ वीईवइत्ता | व्यतिव्रज्य | ओ० १९२, रा० १२६. জী০ ২। হেৰ্ব बीईवयलाण | व्यक्तिव्रजत् ] रा० १०,१२,२७६. जी० ३।४४४ **बीचि** [वीचि] ओ० ४६. जी० ३।२५६ वीचिषट्ट [वीचिपट्ट] जी० ३। १९६७ वीजेमाण [वीजयत्] ी० ३।४१७ वीणग्गाह [वीणाग्राह] ओ० ६४ वीणा [वीणा] रा० ७७,१७३. जी० ३।२८४ वीतसोग [वीतशोक] जी० ३। ६२७ **धीतिवइत्ता** [ व्यतिव्रज्य ] जी० ३।७३९ बोतिवतित्ता [व्यतिव्रज्य] जी० ३।३५१ √वोतिवः [वि + पति + वज्] - नोतिवइंसु. जी० ३।५४०--वीतिवइस्संति. जी० ३।५४० -वोतिवएज्जा. जी० ३।व६-वीतिवयंति. जी० ३।५४० वोतिवयमाण [व्यतित्रजत्] रा० १६. जी० २१८६, १७६,१७=,१=0,१=२ वीतीवद्वत्ता [व्यतिव्रज्य ] रा० १२६ वीषि [वीथि] ी० ३।३१५ **धोरवल**ग [वीरवलय] ओ० ६३ वीरासणिग विशिसनिक अंग० ३६ वोरिय [वीर्य] ओ० ७१,८६ से ६५,११४,११७, १५५,१५७ से १६०,१६२,१६७. रा० ६१. র্জা০ ২াধন্দ वीरिःलाद्ध [वीर्यलव्धि] ओ० ११६ बीबाह | विवाह ] जी० २१६१४ √वीसंद [वि+स्यन्द]-वीमंदति. जी० ३।४६६ वीसंदित [विस्यन्दित] जी० ३।८७२ वोसत्य [विध्वस्त] ओ० १ बीससा [विसता] जी० ३१४८६ से ४९४

वीसाएमाण [विस्वादयत् ] रा० ७६५,००२ वीसादणिज्ज [त्रिस्वादनीय] जी० ३।६०२,८६०, नद्दः,न७२,न७न वीहि | ब्रीहि | जी० ३।६२१ बोहि | वीथि | जी० ३।२६८,३१८ वीहिया | वीथिका | ओ० ४५. रा० २८१. জী৹ ২়াধপড वीस [विशति] जी० ३।१३६ वुग्गाहेमाण | व्युद्ग्राहयत् | ओ० १४५,१६० √युच्च [वच्]—वुच्वइ ओ० ८९. रा० १२३. जी० ३।२३६ — वुच्चंति. जी० ३।४८ --- वुच्चति. रा० १२३. जी० ३।२३१ वुड्डसावग [वृद्धश्रावक | ओ० ६३ वृङ्घि [वृद्धि] जी० ३।७६१,७५२,५४१ वत्त (उक्त) ओ० ४६. रा० १०,१२,१४,१८, ६०,६३,६४,७४,२७६,६४४,६८१,७०१, ७०३,७०७,७२४,७९२. जी० ३।४४४,४४४ वृष्पाएमाण [ब्गुत्नादयत् ] ओ० १५५,१६० बह [ब्यूह] ओ० १४६. रा० ८०६ बेइय [व्येजित] रा० १७३. जी० ६।२८५ वेइयपुडंतर [वेदिकापुटान्तर] रा० १९७ बेइयफलक विदिकाफलक] रा० १९७ वेइया | वेदिका | रा० १७,१८,२०,३२,१२६, १९७. जी० ३।३७२,६०४,७२३,७७६,७७७, 093,300 गेइयावाहा विदिकाबाहु | रा० १९७ होडस्वि | विकारिन् | ओ० ५१ वेउध्विउं [तिकर्तुम्] रा० १८ वेडव्विय | वैकिय | रा० २७६,२५०. जी० १।५२, E3'66E'65K 2K2 SI661R'RRR'2K वेउव्विामीसासरीर [वैकियकमिश्रकशरीर] ओ० १७६ वेउविवयलदि [वैक्रियलब्धि] ओ० ११६ वेउव्वियसमुग्धात [वैकित्रसमुद्धात] जी० ३।१११२,१११३

वेउव्वियसमुग्धाय [वैक्रियसमुद्धात] रा० १०,१२, १८,६४,२७९. जी० १।८२;३;१०८,४४४ वेउव्वियसरोर | वैकियशरीर | ओ० १७६. র্জাত হাংওত वेउव्वियसरोरि | वैफियगरीरिन् | जी० ६ १७०, १७७,१५१ वेंट [वृन्त] जीव ३।३८७,६७२ वेग [वेग] ओ० ४६,९७ वेच्च [ब्युत, व्यूत] रा० ३७,२४५. जी० ३।३११, 800 वेजयंत (वैजयन्त) ओ० १९२. जी० ३।१८१, 788,2856,3560,000,088,088,583, ६२४,१४१ वेजवंती | वैजयन्ती ] ओ० ६४. रा० ५०,५२,५६, १३७,२३१,२४७. जी० ३।३०७,३६३,६१६, 8025 वेडंतिय (पाय) [दे०] ओ० १०५,१२५ वेडंतिव (बंधण) दि०] ओ० १०६,१२६ वेढ | वेव्ट | रा० ७६७ वेढणग [वेष्टनक] जी० ३.५९३ वेढिता [जेप्टित्वा] रा० ७६७ वेडिल | वेण्टिम | ओ० १०६,१३२. रा० २८१. জী৹ ३।४५१,५९१ वेगतिश | वनयिकी | रा० ६७१ वेणु विणु जी० ३। ४ ५ ५ वेणूदेव | वेणुदेव | जी० ३।२४० वेणसलाइता [वेणुशलाकिकी] रा० १२ वेव |वेद] ओ० ६७. जो० २।१५१ √वेद | वेदय् | -- वेदेति. जी० ३।११२ वेदणा [वेदना] जी० ३।१११ से ११५,११७, १२= वेदणासमूग्धात [वदनासमुद्धात] जी० ३।१११२, १११३ वेदणासमुग्धाय | वेदनासमुद्धात ] जी० ३।१०८, १ৼৢড়

वेदिया | वेदिका | जी० ३।२६६,२८८,३००,३७२, ७६४,७६६ से ७७४,७७८ **वेदियापुडंतर** | वेदिकापुटान्तर | जी० ३।२६१ वेदित्राबाहा |वेदिकाबाहु | जी० ३।२६९ वेदेमाण | वेदयत् | ओ० मध्र रा० ७४१ वेमाणिणी [वैमानिकी] जी० २.७१,७२,१४८, 388 वेमाणिय [वैमानिक] ओ० ५०. रा० ७,११,१५ से १७,४४,४६,४८,४६,१८४,१८४,१ रह,रह१,६४७. जी० १।१३४;२।१४,१६, xx,xe, 98,02,ex,ee,8x=,8xe; 31230, 280,8035 वेय [वेद] ओ० २४. रा० ६८६,७७१. जी० १११४,११६; २११४१; हाइइ √वेय [वि + एज्] - वेयइ. रा० ७७१.- वेयंति. जी० ३।७२६ वेयंत (व्येजमान) रा० ७७१ वेवण | वेतन ] रा० ७८७,७८८ वेयण |दे० विक्रम | रा० ७७४ वेपणा [वेदना] ओ० १७,४६,७१,७४.१९४. रा० ७४१,७९४. जी० ११८६; ३१७७,११०, १२७१४,४,१२८११,१२६१७ **वेयणासमुग्धा**ः [वेदनाकमुद्धात] जी० १।२३,८२. १३३ वेवणिज्ज [वेदनीय] ओ० ५६,१७१ वेयणीय [ वेदनीय | ओ० ४४ वेयद्दिय | वितर्दिक | ओ० २ वेयालिया [वेवालिकी] रा० १७३. जी० ३ः२⊂४ू वेयावच्च [वैयावृत्य] ओ० ३८,४१ वेर [वैर] जी० ३।६२७ वेरगग |वैराग्य ] ओ० ४६,७४।४ वेरमण [विरमण] ऑ० ७६,७७,७९ से द१, १२०,१४०,१४७. २१० ६९३,६८८,७१७, 3 50,0 70, 5 X 0 वेराणुबंध [वैराणुबन्ध] जी० ३।६१२

- वेरि | वैरिन् | जी० ३।६१२
- वेरिय | वैरिक | जी० ३।६३१
- वेद्धलिय [वँडूर्य] ओ० ६४. रा० १०,१२,१८, ३२,४१,६४,१४४,१४६,१६०,१६४,१७४, २२८,२४६,२७६,२६२. जी० ३।७,३३२, ३३३,३४६,३७२,३८७,४१७,४४७,६७२

वेहलियमणि [वंडूर्यमणि] जी० ३।२८६,३२७

- वेरुलियमय | वैंडूर्यमय | ४ा० १३०,१४३,२७०. २६२. जी० ३।३२२,४३४
- वेद्धलियामय [वैडूर्यमग्र | रा० १६,१३२,१७४, १६०,२३६. जी० ३,२६४,२८७,३००,३०२, ३२६,३६८,४४७,६४३,८७४
- **वेलंधर** [वेलन्धर] जी० २।७३४ से ७३६,७४०, ७४२,७४४,७४७,७६१,७६२
- वेलंब | वेलम्ब | जी० ३।७२४
- **वेलंबग** | विडम्बक ] ओ० १,२
- **वेलंबगपेच्छा** [विडम्बकप्रेक्षा] ओ० १०२,१२**५.** जी० ३।६१६
- वेलवासि [वेलावासिन्] ओ० ९४
- वेला [वेला] ओ० ४६. जी० ३।७३२
- वेलु [वेणु] रा० ७७
- वेस [वेष] ओ० १५,४६,५३,७०. रा० ७०, १३३,६७२,८०४. जी० ३।३०३,४६७, ११२२
- वेसमण [वैश्रमण] ओ० ६५
- **वेसमणमह [**वैश्वमणमह ] रा० ६⊏⊏. जी० ३।६१४
- वेसाणिय [वैयाणिक] जीव ३।२१६,२२१
- वेसाणियदीव [वैषाणिकद्वोप] जी० ३।२२१, २२५ वेसासिय [वैश्वासिक] ओ० ११७. रा० ७५० से
- ७५३,७९६ वेहाणसिय | वैखानसिक | ओ० ६०
- affenda [agenda] ale Ce
- वोच्छिण्णय [व्यवच्छिन्तक] रा० ७१३

- वोज्झ [उह्य] रा० २८४. जी० ३१४४१
- वोलट्टमाण [व्यपलोटत्] जी० ३।७८४,७८७
- वोसट्टमाण [विकसन्] जी० ३।७५४,७५७
- ∖ **वोसिर** [वि + उत्∔ गृज्]—वोसिरामि. जो० **११७. रा**० ७९६
- च्च [इव] ओ० १९. रा० १३७. जी० ३।३०७

# स

- स स | स | ओ० २,१२,१४,१९,३०,५४,६० से ६५, 00,80,800,828. TIO 0,5,78,78,72, ३४,३६,३७,४२,४७,४०,४१,४६,४८,६७, £E,0E, & ZX, &XX, &X0, & E Z, & EX, & E E, १७३,१८६,२०४ से २०६,२१९,२४३,२४५, २४४,२४६,२८०,६७२,६८१ से ६८३,६९१, ६६२,७००,७०३,७१४ से ७१६,७७१,८१५. जी० ३।३५,३६,४०,४१,४३,४४,४६,१७४, २६१,२६६,२६६,२७७,२५४,२८८,३००, ३०६,**३०७:३११,३३५,३४०,३**४०,३४२, *३४५,३४९,३६६,३७२,३७४,३७८,३*८८, 多色光,火oボ,火o仍,火ss,火ss,火sx,火xse 当 ४४न,४१७,१६३,१९२,१९६,६१न,६६३, ६७२,६७३,६९९४,७२८,७३३,७३७,७४०, 685'02x'0x'0x'025'02x'022'060' नचना१२,१००६,१०३३,१०१४
- स [स्व | ओ० ६४,७१. २७० ६,११,१३,<mark>५६,१५</mark>४ २**-१,६**न३,७२३,७२६,७३२,७३७,७४७, ७७४. जी० **३।**३२७,३४९
- सइ [स्मृति] ओ० ४३
- सइंविय [सेन्द्रिय] जी० ६।१५ से १७,६६
- सइय [शतिका] ओ० १८७. जी० ३,६८१
- सउण [ शकुन | ओ० ६. रा० १७४. जी० ३।११ः ११६,२७४,२८६,६३९
- **सउणरु**य [बकुनरुत] ओ० **१४६**. रा० ८०६,८०
- सउणि [शकुनि] जी० ३।४६८
- सडणिजमय [शकुनिव्वज] रा० १६२.

संकंत [सङ्कान्त] रा० ७४३ संकड [सङ्घट] ओ० ४६. रा० २८४. জী০ ২।४५१ संकष्प [सङ्करप] रा० ६,२७४,२७६,६८८,७३२, ७३७,७३८,७४६,७४८ से ७४०,७६४,७६८, ७७३,७७७,७११,७१३ जी० ३।४४१,४४२ संकम [सङ्कम] जी० ३।व३वा१२ संकमण [सङ्कमण] जी० ३। ५३ ५। १२ संकला [श्टङ्खला] रा० १३४,२७०. জী০ ২।২০২,४২২ संकसमाण [सङ्कसत्] जी० ३।११८,११९ संकिद्व [सङ्कृष्ट] ओ० १ √ संकिलिस्स | सं+ क्लिश्]----संकिलिस्संति. স্ত্রীত ওস্থার্ संकु[ शङ्कु] रा० २४. जी० इ।२७७ संकुइय [शङ्कुचित] आ० ६९. जी० २१८० संकृचियपसारिय [सङ्कुचितप्रसारित] रा० १११, २८१. जी० ३।४४७ संकुष [सङ्कुच] जी० ३।५३८।१५ संकूल (सङ्कुल) ओ० ४६. रा० १४ संक्रसुमिव [सङ्कुसुमित] रा० ४५ संस [शङ्ख] ओ० १९,२३,२७,४७,६७,१९४. रा० १३,२६,३४,७१,७७,१६०,२२२,२५६, ६४७,६६४,५१३. जीव सार्यर,३१२,३३३, इन१,४१७,४४६,४९६,५९७,६०न,७३४, ७३५,७४२ से ७४४,८९४ संख [साङ्ख्य] ओ० ९६ संख (पाय) [श्रह्वपात्र] ओ० १०४,१२८ संख (बंधण) [शङ्खवन्धन] ओ० १०६,१२६ संसतल [शङ्घतल] रा० १३०. जी० ३।३०० संसधमग [शङ्ख म्मायक] ओ० १४ संखमाल [ शङ्खमाल ] जी० ३।५८२ **संखवाणिय [ शङ्खवणिज् ]** रा० ७३७ **संखवाय** [अङ्खवादक] रा० ७१ संसाण [सङ्ख्यान] थो० ९७

**संखादत्तिय** [ तङ्ख्यादत्तिक ] ,ओ० ३४ संखिज्ज [नङ्ख्येय] जी० ४।११ संखित्त [सङ्क्षिप्त] रा० १२३. जी० ३।२६१, **३४२,६३२,६६१,६**५६,७३६,५३६,८८२ संखित्तविउलतेयलेरस [सङ्क्षिप्तवि गुलते जोलेश्य] ओ**० द२. रा**० ६्द६ संखिय [शाङ्किक] ओ० ६० संखियवाय [शङ्चिकावादक] रा० ७१ संखिया [ शङ्खिका] रा० ७१,७७. जी० ३।१८८ संखेणज [सङ्ख्येय] रा० १०,१२,१८,६४,२७९. जी० ११४८,७३,७८,८१,१०१,१३४;२१६३, १२१,१२६; ३।८१,८२,८६,११०,४४५,८५०, **؞؉ؚ२**,؞**؉؉**,؞؉؞؞؞ڋ**ڋ,؞Ę**४,؞Ę७,؞٥٥, *७७६,६२४,*१२६,१०७३,१०७४,१०५३, १०५४,१११५;४।८,१२ से १४,१६; ५.१०, १२ से १४,२९,४१ से ४०,४६,४८; ८१३; واع،४,२२३,२२=,२५و संवेज्जहभाग [सङ्ख्येयत्तमभाग] जी० १।६४, १२४,१३४ संखेज्जगुण [सङ्ख्येयगुण] जी० २१६९ से ७२, ६४,६६,१३६ से १३=,१४१ से १४६; ३।७३, ७**४,१०**३७;४१२२,२४;४११६,२०,२६,२७, **३**४,३६,४२,४८,६०;६1१२,६1३७,**६४,१**३०, 185,220 संखेज्जतिभाग [सङ्ख्येयतमभाग] जी० ३१९१, १०८७ संखेज्जभाग [संख्येयभाग] जी० ३/११ संखेज्जहा [संख्येयधा] रा० ७६४,७६५ संग [सङ्ग] ओ० १६८ संगत [जङ्गत] जी० ३१४९६,४९७ संगतिय [साङ्गतिक] जी० सद्१३ संगय [सङ्घत] ओ० १४,१९ रा० ६९,७०,७४, ६७२,५०६,५१० जी० ३१४६७ संगामिय [सङ्गामिक] बो० ५७ संगेल्लि [दे०] ओ० इद्

७४२

संगोवंग (याङ्गोपाङ्ग) ओ० १७ संघ [सङ्घ] ओ० ४० रा० ३२,२०९ २११ জী০ ३७२ संघधग [संहतन] ओ० बर,१६४ की० १।१४, १७, न६, ६४ १२न, १३४; ३। ६२, १२७) ३, 125,2080 संधयणि [यंगानिन्] जीव ११६५,१०१,११६, 230, 3182,8080 संघरिससमुद्विय [संघर्षतमुत्थित] जी० १।७६ संघवेयावच्च [ ाङ्कवैयावृत्य ] अरे० ४१ संघाइम | सङ्घातिम | ओ० १०६,१३२, रा० २८५ जीव सा४५१,५६१ संघाड [ हात] रा० १४१,१६२ जी० ३।२६४ ૨૬૬.३१૬,३⊀પ્ર संघाडग (सङ्घाटक) रा० १६० संधातत्त [तङ्घातत्व] जी० ३।१०६० संचाय [ ुङ्घात ] ओ० ४७,७२. जी० १७२१२,३ संघायस [सञ्चातत्व] जी० १।१३४; ३।६२ संचय [सङ्ख्य] ओ० ४६ जी० ३।४६८ √संचाय [सं+शक्] --संचाएइ. रा० ७११ ---संचार्ति. रा० ७७४ -- संचाएण्डा. जी॰ ३।११६ -संचाएति. रा॰ ७१३ जी० शारेश्य संचाएमि रा० ६९४ √संचिद्व [सं+ष्ठा] -- संचिट्टइ. रा० ७०१ संचिद्रणा [संस्थान] जी० १।१४१; २।६२,५३, न४,९५०,९४९;४१२६;६,७;७१८,५१३; ٤13, १٤, ३६, १४७, १६ = ३, २६३ संछण्ण (सञ्छन्त) जी० ३.११८,११९,२८६ संछन्त सञ्छन्त रा० १७४ संजतासंजत ( संयतासंयत ) जी० ६.१४४ संजम [ तयत] ओ० २१ से २८,४४,४६,४२,५२ XTo 5, E, E = E, E = 9, E = E, 927, 927, 54 = 88, ⊏१७ संजमासंजम [ संयमासंयम ] जो० ७३ संजय [ संयत ] जो० ४६ जी० ११११,१४२,१४६

880 संजयासंजय [संयतासंयत] जी० हा१४१,१४६, १४७ संजायको झहल्ल [संजातको तुहल | ओ० ५३ संजायसंसय (सञ्जातसंघय | ओ० ५३ **संजायसङ्घ** [सञ्जातश्रद्ध] ओ० ८३ संजुत्त [संयुक्त] रा० ७४३,७९४ जी० ३१४९२ संजोग [संयंग] ओ० २८,४६ संझब्भराग विन्डयाञ्चराग रा० २३ जी० ३;२८० संझा [सन्ध्या] जी०३।६२६ संझाविराग [सन्ध्याविराग] जी ३। १ म संठाण [संस्थान] ओ० ४७,४०,७२,८२,१७०, १८६,१९४,१९४।३,४,८ रा० १२४,१२७, १३२,१८५ जी० ११४,१४,७२,१२८,१३६; ३।२२,४५ से ४०,७५,५६,१२७।१,३,१२६।३, ४,२४७,२**६०**,२६**१,२**९७,३०२,३४२,४७७, ४९८,६०४,६३२,६६१,६८९,७०४,७२३, ७२६,७३६,७९६,८१०,८२१,८३१,८३६, ਫ਼**ਫ਼ੑ**ਖ਼ੑਫ਼ਫ਼ੑਫ਼,ਫ਼७१ੑ,ਫ਼७४ੑਫ਼७७,ਫ਼**ਫ਼**੦ੑਫ਼ਫ਼੨ੑ 688,684,624,8005,8008,8068, 8082 संठाणओ [ उंस्थानतस् ] जी० ३।२४६ संठाणतो [संस्थानतम्] जी० ३।२२ संठाणविजय [संस्थानविचय] ओ० ४३ संठित [तंस्थित] रा० १२४ जी० ३।२० से ३२; ४८ से ४०,७८ ७९,८६,९३,२६०,२६१, ₹£७,३०२,३४२,<u>३७७,४</u>६७,**६३**२,६**६१**, ७०४,७०५,७६३,७९६,७९७,८१०,८९१ *~~?*,*~~?,~?*?,*~~?*,*~~*,*~~*,*~~*, 4005,400,440,447,458,578,8004, 9069,9069 संठिति [संस्थिति] जी० ३।५११

संठिय | संस्थित | ओ० १,१३,१९,५०,५२,१७०, १९४. रा० ३२,५२,५६,१२७,१३२,१३३, १=४,२३१,२४७. जी० १।१=,६४,६४,६७, \$130,X0,05,7X0,7X6,7E0,303,300, ३७२,३९३,४०१,४९४,४९६ से ४९८,६०४, ६८६,७२३,७२६,७३६,७६३,५३८।२,१४, 8008,283,2893 संड [ घण्ड ] ओल २२. रा० ७७७,७७८,७७८ संडासय [मंदंशक] जी० ३१११८,११६ संडेय [षण्डय] अ१० १ संणिखित्त | सन्निक्षिप्त ] जी० ३।४१५ संत [सत्] ओ० २३. रा० ६९४. जी० ३।६०५ संत [श्रान्त] ओ० ६३. रा० ७६५ संताण | सन्तान | ओ० ४६ संति [सत्] जी० श७२ा३ √संथर [स+स्तू]—संथरइ. रा० ७६६. --संथरति. ओ० ११७ संयरित्ता [सस्तृत्व ] औ० ११७ संधार [संस्तार] रा० ६६८,७०४,७०६,७१२, ৬নই संधारग | संस्तारक ] ओ० ३७,१२० रा० ७११ संभारय [संस्तारक] ओ० १६२,१८०. रा० ७१३, હાઉદ્ √संथुण [सं+स्तु]—संथुणइ. रा० २९२. जी० \$1870 संधुणिता [संस्तुत्य] रा० २९२. जी० ३।४१७ संबद्घ [सन्दब्ट] जी० ३।३२३ संदमाणिया [स्यन्दमानिका] ओ० १,५२,१००, १२३. रा० ६८७ से ६८१. जीव ३१२७६, ५८१,५८४,६१७ संदमाणी | स्थन्दमानी ] रा० १७३ संदमाणीया | स्यन्दमानिका ] जीव ३।२८१ संदिद्र [सन्दिष्ट] रा० १४० √संदिस [सं-|-दिग्]—संदिसंतु रा० ७२ संधि [सन्ति] ओ० १९. रा० १९,३७,१३०,

१४९,१७४,१९०,२४४,६६४. जी० ३।२६४, २८७,३००,३११.३३२,४०७,४६२,४६६,४९७ संधिवाल | सन्धिपाल | ओ० १८,६३. रा० ७१४, ૭ % ૬, ઉદ્દર, ઉદ્દ ૪ √संध्क्ष | मं-|-धुक्ष्]---संधुक्सेइ. रा० ७६५ संनिकास (सन्तिकाश) जी० ३।३०३ संनिषिखस (सन्दिक्षिप्त) जीव शाववर,४१०, 885,886,826,832,832,882 संनिखिल | सन्निक्षिष्त | रा० २४०,२४९,२४४, २४३.२४८,२६६,२६८,२७६ संनिविद्व [सन्तिविष्ट] जी० ३ २०४,३७२,३७४, ६४६,६७३,६७४,व५४,५५७ संपउत्त [सम्प्रयुक्त] ओ० १४,२१,४३,६४,१४१. J30, 808, 680, 998, 988, 98 संपओग (सम्प्रयोग) ओ० ४३. रा० ६७१ संपक्लाल (सम्प्रक्षाल | ओ० ९४ संपगाढ | सम्प्रगाढ | जी० ३:१२१७ संपद्विय | सम्प्रस्थित ] ओ० ६४,११५ संपणाइय [सम्प्रतादित] रा० ३२,२०६,२११. जी० ३।३७२,६४६ संपन्न | सम्पन्न | जीव ३१४६८ संपत्त सम्प्राप्त अ ० २१,५२,५४,११७,१४४. रा० ५,२९२,६५७,६=६,७१३,७१४,७९६, ২০২. জী০ ইা**४**९७ संपत्ति [सम्पत्ति संप्राण्ति] जीव ३।१११६ संपरियय (सम्प्रस्थित) रा० ४९ से ५४,७७४ संयन्न [सम्पन्न] जी० ३।७९४,८४१ √संपमण्ज | सं-|-प्र + मृज् ]----संपमज्जइ. ओ० ५६. --- संपमज्जेज्जा. रा० १२ संपमज्जेता [सम्प्रमुज्य] ओ० ५६ संपरिक्लिस ) सम्परिक्षिप्त ] ओ० ३,६,११. रा० १२७,२०१,२६३. जी० ३।२१७,२६०,२६२, २६४,३१३,३४२,३६२,३६५ से ३७१,३५८, ३६०,६३९,६<u>१२,६</u>४८,६६८,,६७८,६७**२**, द्द१,६८८,७०४,७०६,७३६,७१४,७९६.

७६८,५१०,५१२,५२१,५२३,५३३,५३६, न४न,न५०,न५९,न६२,न६४,न६न,न७१, **८७४,८७७,८८०,६२**४ संपरिविसताणं [सम्परिक्षिप्य] जी० ३।४८ संपरिखित्त (सम्परिक्षिप्त) रा० ४०,१८६,१६१ २०५ से २०न संपरिवृड [ राम्परिवृत ] ओ० १८,१९,६३,६८, 60. The 6,83,86,45,45,45,920,788, ६४७,६द३,६द**६,७११,७**४४,७४६ ७६२, ७६४,७७७,७७८,०४. जी० ३१४४७,११७, १०२५ संपललिय [सम्प्रललित] ओ० २३ संपलियंक [सम्पर्यङ्क] ओ० ११७. रा० ७६%. জী০ ইাৰহহ संपविद्व |सम्प्रविष्ट] रा० ७६४ संपाविउकाम | सम्प्राप्तुकाम | ओ० १९,२१,५४, १**१**७. रा० द संविष्ठिय [सम्पिण्डत] ओ० ६. जी० ३१२७४ संयुच्छण [सम्प्रश्न] जी० ३।२३९ संपुड [सम्पुट] जी० २।७९२ √संपेह [सं + प्र + ईक्ष] --- संपेहेइ. रा० ६ संपेहिता [सम्प्रेक्ष्य] रा० ६ संगेहेता (सम्प्रेक्ष्य) रा० ६८८ संबंधि [सम्बन्धिन्] जी० १५०. रा० ७४१,००२ 5११ संबद्घ [सम्बद्ध] जी० ३।११०,१११५ संबाह ]सम्बाध | ओ० ८९ से ६३,६४,६६,१४४, १४न से १६१,१६३,१६न. रा० ६६७ संबाहणा | सम्बाधना | ओ० ६३ संबाहिय (सम्बाधित ) ओ० ६३ संबुद्ध [सम्बुद्ध] रा० ७७४ संभम [सम्भ्रम] ओ० ६७. रा० व,१३,६५७, ৬१४. জীত ২।४४६ संभार [सम्भार] जी० ३। १८६ संभिष्ण (सम्भिन्न) जीव ३।१११११३

संभिष्णसोय [सम्भिन्नस्रोत्तस्] ओ० २४ संभोग [सम्भोग] ओ० ४० संमज्जण [सम्मार्जन] रा० ७७६ संमज्जिय [सम्माजित] रा० २८१,८०२ संमद्व (सम्मृष्ट) रा० २०१ संमय [सम्मत] ओ० ११७. रा० ७९६ √ संमुच्छ | सं + मूच्छ | – संमुच्छति. জী০ ২। १२७ संमुच्छिम (सम्मूच्छिम, सम्मूच्छनज) जी० १।९६ से ६=,१०१ से १०४,११२,११९,१२६ से १२५ ; ३।१३८,१३९,१४२,१४५ से १४७, १४९,१६१,१६३,१६४,२१२ से २१४ संमुहागय (सम्मुखागत) जी० ३।२०५ संलग्न [संलब्ध] रा० ७६८ संलाव (संलाग) आं० १५. रा० ७०,६७२. জী৹ ২।২৫৩ संलेहणा (संवेखना) ओ० ७७,११७,१४०,१५४ संबच्छर [संवत्सर] जी० ११=७; २१६७; 31288;818 संवच्छरपडिलेहजग [संवत्सरप्रतिलेखनक] হাঁ০ দ০২ संबट्ट [सं+वर्तस्]--संवट्टेइ. आ० ५९ संबद्टगवाय [संवर्त्तकवात] जी० १। ५१ संबद्धयकाय [संवर्त्तकवात] रा० १२ संबद्देत्ता (संवर्त्ध) ओ० ४९ संबद्धिय [संबधित] रा० ५११ संवर (मवर) और ४६,७१,१२०,१६२. XIO 885,9X2,058 संवाह [संवाह] ओ० ६८ संविकिण्ण [संविकीणी] रा० ३२,२०६,२११. জী০ ২।২৩২ संविद्धणित्ता [संविधूय] ओ० २३ संबुद्ध [संवृद्ध | ओ० १४०. रा० ५११ संबुत [संबृत] जी० ३।४०७ संवृत्त [संवृत्त] रा० ७७१

# संवुय-सची

७૪૬

संवय [संवृत] रा० ३७,२४४. जी० ३।३११ संगेग | संवेग | और ६९ संवेयणी [ संवेदनी ] ओ० ४४ संवेल्लित [दे०] जी० ३।३०३ संवेल्लिय दि० रा० ६९,७०,१७३ संसट्टचरय [संसुष्टचरक] ओ० ३४ संसत्त (संसक्त) ओ० ३७. जी० ३।८४ संसार [संसार] ओ० २६,४६,१६५ संसारअपरित्त (संसारापरीत ] जी० ६।७६ संसारपरित [ संसारपरीत ] जी० ६।७६,७८,५४ **संसारविउस्सग्ग** [संसारव्युत्सर्ग] औ० ४४ संसारसमावण्ण सिंसारसमापन्न | जी० १।६,१० संसारसमावण्णग ]संसारसमापन्नक ] जी० १।१०, **११,१४३; २।१,१४१;३**,१,१न३,११३न; ४११,२४; ५११,६०; ६११,१२; ७११,२३; 518,8; 818,0 संसारसमावण्णय [संसारसमापन्नक] जी० १११० संसाराणुपेहा [संसारानुप्रेक्षा] ओ० ४३ संसारावरित्त [संसीरापरीत] जी० १। ५१, ५६ संसुद्ध [संशुद्ध] ओ० ७२ √संसेय [सं+स्विद्]-संसेयंति. जी० ३१७२९ संहत [संहत] जी० ३।१९७ संहरण [संहरण] जी० २।३० से ३४,५७ से ६१, ६६,१३३ संहित ] जी० ११७२१३; ३१४६६,४६७ संहिय [संहित] रा० १७३. जी० ३। ५६७ सक [स्वक] ३।७६४,७७० सकक्षकस [सकर्कश] ओ० ४० सकसाइ [सकवायिन्] जी० ६।२व सकाइय [तकायिक] जी० ९।१८ से २० सकिरिय [सकिय] ओ० ४०,८४,८५,८७ सबक [शक] जी० ३१६२०,६२१,६३७,१०३६ से १०४२,११११

१. संहितौ- मध्यकायापेक्षया विरली

सबकय [संस्कृत] जी० ३ ४९४ सक्करप्पभा [शर्कराप्रभा] जी० २।१००; ३।४, **१९**,२०,२**१,२७,३१,३२,३४,४**०.४३,४४,४६, ६८,१०७ सक्करा [ शर्क ा ] रा० ६,१२. जी० ३।६०१, ६२२ सक्करापुढवी [ शर्करापृथ्वी ] जी० ३।१८५,१९० **√सक्कार** [सत्+क्र] - सक्कारिस्मंति रा० ७०४ -- सक्कारेइ. ओ० २१. रा० ६८४ ----संवकारेज्जा. रा० ७७६ -- सक्कारेमि. रा० ५८ ----सक्कारेमो. ओ० ५२. रा० १० --- सक्कारेस्संति. रा० ५०२. ----सनकारेहिति. ओ० १४७ सक्कार [ गत्कार ] ओ० ४०,४२. रा० १६,६८७, ६८९,८०३,८०५, जी० ३।६०६ सक्तारणिज्ज [सल्कारणीय] औ० २. रा० २४० २७६. जी० ३।४०२,४४२ स**वकारिलए** [सत्कर्तुम्] ओ० १३९. रा० ९ सक्कारेत्ता [सत्कृत्य] ओ० २१ **सक्कुलिकण्ण** [ शब्कुलिकर्ण ] जी० ३।२१६,२२४ **सक्कुलिकण्णदीव** [शब्कुलिकणंढीप] जी० ३।२२५ सग [स्वक] जी० ३।७६८,७६९,७७२,७७३,७७६ से ६७६,११११ सगड [शकट] ओ० १००,१२३. जी० ३।२७६, \*\*\*,\*\*\*,\*\*9,\*\* सगडवूह [राकटब्यूह] ओ० १४६. रा० ५०६ सगल [सकल] जी॰ १७२;३।४६२ सगल [शकज] जी० ३।५९६ सगेवेज्ज [सग्रैवेय] रा० ७१४,७१६,७६४ सग्ग [सर्ग] ओ० ६८ सचित्त [सचित्त] ओ० २८,४६,६९,७०. रा० ⊌ও ⊏ **√सचित्तीकर** [सवित्तीकृ]—सचित्तीकरेइ. रा० ७७२ सची [शची] जी० ३। १२०

#### सच्च-सण्ह

सम्च [सत्य] ओ० २,२५,७२,११८. रा० ६८६ सच्चमणजोग [सद्यमनोयोग] ओ० १७८ सच्चवइजोग [सत्यवाग्योग] ओ० १७६ सच्चामोसमणजोग [सत्यमुषामनोयोग] लो॰ १७८ सच्चामोसवइजोग [सरयमुपावाग्योग] ओ० १७६ सच्चोवात [सत्यावपात ] ओ० २ सच्छंद [स्वच्छन्द] ओ० ४९ सच्छड [संस्तृत] रा० ७७४ सजोगि [सयोगिन्] ओ० १८१. जी० १।२१,४६, ४९,१२ सज्ज [सज्ज] ओ० ६४. रा० १७,१८,१७३, इन्१,६न२,६९१. जीव श्वर्थ सज्ज [सद्यस्] जी० ३। ८७२ √सण्ज [सरज्]—सज्जावेइ रा० ६८०. -सज्जेइ. रा० ६११ सज्जावेत्ता [सज्जयित्वा] रा० ६८० सज्जिय [सज्जित] जी० ३। ४६२ सज्जीव [सजीव] ओ० १४६. रा० ८०६ सज्जेता [सज्जित्वा] रा० ६९१ सजझाय [स्वाध्याय] ओ० ३८,४२ सद्वाण [स्वस्थान] जी० ६।१६६,२०८ सट्टि [षण्टि] ओ० १४०. रा० २३१. জী০ ২। ११ = सद्गितंत [षष्ठितन्त्र] ओ० ६७ सडंगवि [धडङ्गविद्] ओ० ९७ सङ्ग्रह [श्राद्धकिन्] ओ० १४ सण [सन] ओ० १३ सणंकुमार [सनत्कुमार] ओ० ४१,१६०,१६२. जी० २।६६,१४८,१४६; ३।१०३८,१०४५, 2086,2025,2056,2065,2065,2068, ११०२,११११,११२६ सणप्फई (सनखपदी) जी० २।६ सणम्फय [सनखपद] जी० १।१०३ सणिचर [शनैश्चर] जी० ३।६३१

सणिच्छर [शनैक्चर] ओ० १० सण्णद्ध [सन्नद्ध] ओ० ५७. रा० ६६४,६८३ सण्णय [सन्नत] ओ० १९. जी० ३। १९६, १९७ √सण्णव [संज्ञापय] - सण्णवेइ. रा० ७६९ सण्णा [संज्ञा] रा० ७४८ से ७४०,७७३. अो० १।१४,२०,५६,६६,१०१,११६,१२८, १३६; ३।१२५।२ √सण्णाह [सं+नह ]--सण्णाहेहि. ओ० ५५ सण्णाहिय [सन्नद्ध] ओ० ६२ सण्णाहेला [संनह्य] ओ० ५६ सक्लि [संज्ञिन] ओ० १५६,१८२. रा० १।१४, २४,5६,६६,१०९,११६,१३३,१३६; 81808, १०२,१०४,१०८ सण्जिकास [सन्निकाश] जी० २।३३३,३०१,४१७, = & ¥, **१ १**२२ सण्णिखित्त [सन्निक्षिप्त] जी० ३।१०२५ सण्णिणाय [सन्निनाद] ओ० ६७. रा० १३, EXO. 210 2188E सण्णिपंचिदिय [संज्ञिपञ्चेन्द्रिय] ओ० १५६ सण्णिभ [सन्निभ] रा० १९,४७,६३,६४. जी० ३।५९६ सण्णिमहिय [सन्निमहित] ओ० १ सण्णिवाइय [सन्तिपातिक] ओ० ७१,११७. TIO 88,088 सण्णिविट्ठ [सन्निविष्ट] ओ० १. रा० १७, १८, २०. जी० ३।२८८ सण्णिवेस [सन्निवेश] ओ० ६८,८१ से ६३,६४, ६६,१५५,१५८ से १६१,१६३,१६८. বা০ হহও सण्णिवेसदाह [सन्निवेशदाह] जी० ३।६२६ सण्णिसण्ण [सन्तिषण्ण] रा० ८,४७,६८,२७७, २८३. जी० ३।४४३,४४९,४४२,४५७,८३९ सण्णिहिय [सन्तिहित] ओ० २ सण्ह [ म्लक्ष्म] ओ० १२,१९४. रा० २१ से २३, **३**२,३४,३६,३न,**१२४,१३०,१३७,१४४,१४७,** 

१७४,२९१. जीव १।४७,४८; ३।२६१,२६२, २६६,२६९,२८६,२८०,३००,३०७,३९४, ¥₹¥,¥¥७,¥€₹,६३€,5₹€ सण्हपुढवो । प्रलक्ष्णपृथ्वी ] जी० ३।१८५५,१८६ सत (शत) रा० १२६. जी० ३१८२,१७२,१७३, १९७,२२६,२४६,२४४,२४७,२६०,२२४, ३३४,३४३,३४४,३४७,३४५,३४८,३६१ ३७२, 888'886'885'886'860'86c'235'258' £X5,5X0,5X8,5X7,547,566,566,566, ६७३,६७४ ६७९,७०३,७१४,७२४ से ७२६,७२८,७३३,७३६,७४०,७४६,७८८, 968,964,962,400,482,482,484,420, *स२७,द३०,द३२,द३४,द३७,द३६,द४१,* E 8 5, E 100, 8000 社 800×, 800 E, 808E, १०३०,१०३८,१०४४,११३७; ५१२६; £188; GIRE; EISE, 802, 789 सतपत्त [शतपत्र] रा० २३. जी० ३१२४६,२९१ सतसहरूम | शतसहस्र ] जी० ११४८; ३१२२,२७, ६७ से ७२,८६,१६१,१६७,१६**६,१७४,२५७,** २६६,६०२,६४८,७०३,७०६,७१४,७२३, હદ૪,હદ૪,હદ૬,૬૨૨૨,૬**૨**૨,૯**१**૦,૯૬૬, हृद्द,१०३८,१०८७,१०८८,११२८ सताउ [ शताशुष् ] जी० २। ५८६ सति [स्मृति] जीव २१११८,११९ सतिय [शतिक] जी० ३।६७३,६७४ सत्त [सप्तन्] ओ० २१. रा० ७. जी० ११६४ सत्त [सत्व] जी० ३।१२७,७२१,६४४,११२८, ११३० सत्तग्ग [ शवत्यग्र ] जी० ३।⊂ ५ **सत्तघरंतरिय** | सप्तगृहान्तरिक ] ओ० **१**४० सत्तद्वि [तप्तवविट] जी० ३।७२२ **सत्तणउय** [सप्तनत्रति] जी० ३।२२६ सत्ततीस [सप्तत्रिंशत्] जी० ३१३४१

सत्तम [सप्तम] ओ० १७४,१७६,१८६ सत्तमा [सप्तमी] जी० ३।२,४,७२,७५,७७,९१, 288 सत्तमासिया [सप्तमासिकी] ओ० २४ सत्तमी [सप्तमी] जी० ३।३६,५५,११११।३ सत्तरस [मप्तदशान् ] जी० ३।३४६ सत्तरि [सप्तति] जी० ३।२४६ सत्तवण्णवर्डेसय [सप्तपर्णावतंसक] रा० १२५ सत्तवण्णवण [सप्तपणंबन] रा० १७०. जीव ३।५५१ सत्तविध [सप्तविध] जी० २।१००; ३।२; ६।१८२ सत्तविह [सप्तविध | ओ० ४०. जी० १।१०,४८, हर; दा **१,१**२; हा १९४,१९६ सत्तसत्तमिया [ सप्तसप्तकिका ] ओ० २४ सत्तसिवखावद्वय [सप्तशिक्षाव्रतिक] ओ० ५२,७० सत्ताणउति (सप्तनवति) जी० ३।१०३८ सत्तावोस [सप्तविंशति] ओ० १७०. रा० १८८. जी० **३।**५२ **सत्तावीसतिगुण** [सप्तविंशतिगुण] जी० २।१४१ सत्तावीसय [सप्तविंशति] जी० २।१४१ सत्ति [शक्ति] ओ० ६४ सत्तिमण्ण [सप्तपर्ण ] ओ० ६,१०. जी० ३।३४६, ३८८,४८३ सत्तिवण्णवण [सप्तपर्णवन] जी० ३।३४८ सत्त [ शत्रु ] अो० १४. रा० ६७१ सत्तुपक्ख [ शत्रुपक्ष ] जी० ३।४४८ सत्य [शास्त्र] औ० ६७ सत्थ [शस्त्र] रा० ७९१ सत्यवाह [सार्थवाह] ओ० १८,४६,५२. रा० £50,555,008,088,084,082,052,058. জী৹ ২**।**६०९ सत्थोवाडियग [शस्त्रावपाटितक] ओ० ६० सदारसंतोस [स्वदारसन्तोष | ओ० ७७ सदेस [स्वदेश] ओ० ७०. रा० ८०४ सह [शब्द] ओ० ६,१४,६३,६४,६७,६८,१६१,

•১৪৯

सत्तपण्ण [सप्तपर्ण] रा० १८६

१६३. रा० १३ से १४,३२,४०,१३२,१३४, १७३,२०९,२११,२५२,६४७,६७२,६५४, 660'035'036'08'6''08'8'''006'' जी० ३१११८,११९,२६४,२७४,२८४,२८६, २९८,३०४,३६०,३७२,४४६,४४८,१७८, ६३९,६४६,६९०,८४७,८६३,६०४,९७७, 8=2,8880,888=,8828,8828 √सइह [श्रत्+धा] – सहहामि. रा० ६९४. **TIO 1920** सद्दहमाण [श्रदान] जी० १।१ सहाल' [दे०] जी० ३।११२२ √सहाव [ झब्दय् ]—सहावेइ. ओ० ४८. रा० ६. --- सहावेंति. ओ० ११७. रा० २७८. जी० इरि४४. - सहावेति. रा० १३. जी० इर्रि ४४ सद्दावति [ शब्दापातिन् ] जीव २।७९४ सद्दावाति [शब्दापातिन्] रा० २७६. जी० ३।४४५ सद्दाविय [ शब्दायित, शब्दित ] रा० ७२ सहावेता | शब्दयित्वा ] ओ० ४८ रा० ६. জী০ ২।১৪৪ सहिय [ं झब्दित ] ओ० २ सद्दुल [ सार्दुल ] ओ० १९. जी० २११९६ सद्ध श्रिाद जीव दे। ६१४ साँछ [सार्डम्] ओ० १४. रा० ७. जी० ३।२३९ सन्नद्ध [सन्नद्ध] जी० ३।४६२ सन्निकास [सन्निकाश] रा० १३३. जी० ३।३१२ सन्निविखत्त (सन्निक्षिप्त) जी० ३।४४२ सन्निखित्त [सन्निक्षिप्त] रा० २२५,२७० सन्निगास [सन्निकाश] रा० ३८,१६० २२२,२५६ सन्निभ (सन्निभ) ओ० १९. जी० २१४, ६६ सन्तिबिद्र [सन्तिविष्ट] रा० ३२,६६,१३८,२०६, २११. जी० ३.७४६ सन्तिवेस [सन्तिवेश] जी० ३।६०६,८४१ सन्निवेसमारी [सन्निवेशमारी] जी० ३।६२८ सन्निसन्न [सन्निषण्ण] रा० १७३

१. नूपुर, किंकिणी ।

सपज्जवसित [सपर्यवसित] जी० ११२४,३१,६८, EE,= 8, 87%, 80%, 202 सपज्जवसिय [सपर्यवसित] जी० ६१११,१३,१६, २३,**२४,२६,३१,३३,३४,**४८,६०,६४,६८,**६६**, ७१,७२,०६,११०, १२४,१३३,१४६,१६४, 822,808,202,205 सपढिकम्म [सप्रतिकर्मन्] ओ० ३२ सण्पि [सपिस्] ओ० ६२,६३ सम्पियासन [सपिराश्रव] ओ० २४ सफल [सफल] ओ० ७१ सबरी [शवरी] ओ० ७०. रा० ५०४ सभा [सभा] रा० ७,१२ से १४,२०९,२१०,२३४ से २३७,२४०,२४१,२७६,३४१,३४६,३४७, ३७६,३६४,३९४,६४,६४६,६४७. जी० ३।३७२, ३७३,३९७ से ३९९,४११,४१२,४२६,४४२, X8E,X78,X77,X78,X7X,X2E,X20, 8028,8024 सभाव [स्वभाव] जी० ३। १ १७ सम [सम] ओ० १९,२९,५९,१७१,१९२. रा० ७०,७५,७६,००,११२,१३३,१७३ १७४,७७२. जी० ३।४२,११८,११९,२८४,२८६,३०३, 322,350,456, 282,280,002,028, 696,637,658,656,666,588,522, 588.680,688,685,5655,8823 सम [श्रम] रा० ७२६,७३१,७३२ समद्दर्शकंत [समतिकान्त] ओ० ४७ समइच्छमाण' [समतिकामत्] ओ० ६९ समइय [सामयिक] ओ० १७३,१७४,१५२, जी० 813,8 समंता [सगन्तात्] ओ० ३. रा० ६. जी० ३।४९ समक्खाय [समाख्यात] जी० ३।१६७ से १६९ समग्ग [समग्र] ओ० ६० समचउरंस [समचतुरस्र] ओ० ८२. जी० २। ११६, १३६; ३।४६८,१०**६१,१**०६२

```
१. हे० ४। १६२
```

समजोतिभूत [समज्योतिभूत] जी० ३।११८ समज्जिणिता [समर्ज्य] रा० ७१०

- समञ्जूइय [समद्युतिक] जी० ३१११२०
- समद्र [समर्थ] ओ० वह से ह४,११४,११७,१२०, १४४,१४७ से १६०,१६२,१६७,१६६,१७०, १७२,१७७,१८१,१८६ से १९१. रा० २४ से 38,XX,803,0X8,0X3,0XX,0X0,0X6, ७६१,७६३,७७१, जी० ३।५४,८४,११५, १९८८ से २०३,२७८ से २८४,६०१,६०२, ६०५ से ६०७,६०९,६१०,६१२ से ६१७, ६२२ से ६२४,६२६,६२८,७८२,७८६,८६०, =६६,=७२,=७=,१६० से १९२, ११४ से ९९६,१०२४
- समण [श्रमण] अँ:० १९ से २५,२७,३३,४६ से ४३,४४,६२,६९ से ७१,७८ से ८३,६४,११७, १२०,१४४,१४९,१६२,१७०. रा० म से १३, १४,४६,४५ से ६४,६८,७३,७४,७८,८१,८३, ११३,११=,१२०,१२१,१३१,१३२, १४७ से १४१, १८४,१६७,६६७,६६८,६७१,६६८, ७१=,७१९,७३६,७४८ से ७४०,७४२,७=७से ७८६,८१७. जीव १।४६,६२,६४,८२,६६, १२८; २1१४०; ३1१७६,१७८,१८८,१८२, २५६,२६६,२६७,३०१,३०२,३२१ से ३२४, रदर,रद से १९४,१९८,६००,६०३ से ६०७,६०६ से ६१७,६२०,६२२ से ६२४, ६२७,६२८,६३०,७९४,८४१,९६५४,१०५६, 8850
- समणी [श्रमणी] जी० ३।७९४,८४१
- **√ समणु गच्छ** [सम् + अनु + गम् ]----समणुगच्छंति ৰাত খথু
- समणुगम्ममाण [समनुगम्यमान] ओ० ६५. जी० ३।१७४
- समणुगाहिज्जमाण [समनुग्राह्यमान] जी० ३ १७४ समणुजितिज्जमाण [समनुचिन्त्यमान] जी० ३।१७४ समणुपेहिज्जमाण [समनुप्रेक्ष्यमान] जी० ३।१७४

समणुबद्ध [समनुबद्ध] रा० १४९,६७०. जी० ३।३२२,४६१ समणोवासग [श्रमणोपासक] ओ० १६२ समणोवासय [श्रमणोपासक] ओ० ७७,१२०,१४०, १६२. रा० ६९८,७५२,७८६ से ७६१ समणोवासिया [अमणोपासिका] ओ० ७७. যা০ ৬খ্ৰ समण्णागय [समन्वागत] ओ० ४३. रा० १२, ७४८,७४९. जी० ३।११८,२८४ समतल [समतल] ओ० ११. जी० ३।४१६ समताल [समताल] ओ० १४६. रा० ८०६ समतुरंगेमाण [समतुरङ्गायत्] जी० ३।१११ समत्त [समस्त] ओ० ६३. जी० ३।७०१ समत्तगणिपिडग [समस्तगणिपिटक | ओ० २६ समत्य [समर्थ] ओ० १४८,१४९. रा० १२,७३७, ७४८,७४९,७७०,८०१. जी० ३।११८ समन्नागय [समन्वागत] रा० १७३ समष्पभ [समप्रभ] रा० २८४. जी० ३।४५१ समबल [समबल] जी० ३।११२० समभिजाणित्ता [समभिज्ञाय] रा० २७६. জী৹ ২।४४২ √समभिलोय [सं+अभि+ लोक्]-समभिलोएइ. रा० ७६१-समभिलोएति. रा० ७६१. समय [समय] ओ० १,१८,१६,२३ से २५,२७, २८,४४,४७ से ४१,८२,११४,१७३,१७४, 252,20X12. TIO 2,0,05,203,208, ६६८,६७६,६८४,६८६,७७१. जी० ११६,३३; २१४८,४४ से ४६,६४,८६,८८,८८,४१७, १२३,१३२; ३१८६,६०,११८,११६,२१०,

**२११,२६४,४३**६,४६६,५६६,६४**१,**६४४,

न४७,६७३,१०न३,१०न४,१०न६;७१ से

६, ६ से १८, २० से २३; ६।१ से ७, २४,

२४,४०,४३,४८ से ४१,४७,६०,११४,११८

१२४,१२४,१२७,१३४,१३८,१४२,१४६,

१४०,१४२,१६१,१६२,१७१,१७२,१७६,

१६६,२००,२०३,२३२ से २३८, २४१ मे २४८, २४० से २४३,२४४, २६७ से २७३, २७४ से २८२,२८४ से २९३ समन [समक] जी० ३।२७३,२९६ समयओ [समयतस्] रा० ६६४ समयखेल [समयक्षेत्र[ रा० २७६. जी० ३।४४५ समयग [समयक] जी० ७।४ समयतो [समयतस्] जी० ३।५६२ समयस [समयशस्] जी० ३।११२० समयिक | सामयिक ] जी॰ ९।२ से ४ समयिग [सामयिक] जी० ९१६ समरस [समरस] रा० २२८. जी० ३।३८७ समरसोद [समरसोद] जी० ३।२८६ √समलंकर [सं-|-अलं-|-क्र]---समलंकरेइ. ओ० ५९ समलंकरेता [समलङ्कृत्य] ओ० ५६ समल्लीण [समालीत] ओ० १३. रा० ४ समवायघर [समवायधर] ओ० ४१ समसोक्ख [समसौख्य] जी० ३।११२० समहिद्धिज्जमाण [समधिष्ठीयमान] रा० ७११ समाइण्ण [समाकीर्ण] ओ० ७१. रा० ६१ समाउत्त [समायुक्तं] ओ० ६४. रा० ५१ समाउल [समाकुल] रा० १३६. जी० ३।३०६ समाण [सत्] ओ० २०,५२,५६,६३,६४,६८, ११७,१४२,१४४,१४७. रा० १०,१२ से १४, \$=, XE, Eo, E3, EX. O2, OX, 20X, 70X, २७९,२८३,२८६,६४४,६८१,६८४,७००, , २२७,४९७,**६**९७,०**९७,७०७,६०७,९**०७ 620,052,008,062,080,500,502. जी० ३१११८८,११९,४४०,४४१,४४४,४४९, 885,888,680,656 समाण [समान] ओ० २३,२६,२६,११७. रा० १३१,१३२,१४७ से १४१,१९७,२नन, ७४० से ७४३,७९६, जी० २७४,९८८,१४०;

31888,885.886,256,308,308,308,328

से ३२४,४१४ समाणुभाग [समानुभाग] जी० ३।११२० समादाण [समादान] जी॰ ३।११७ समामेद [समकमेव] रा० ७१ √समायर [समा+चर्]- समायरह. रा० ७४१ समायरिता [समाचर्य] रा० ६६७ समायरेला [समाचयं | रा० ७४१ समारंभ [समारम्भ] ओ० ६१ से ६३,१६१,१६३ **समावडिय** [समापतित | ओ० ४६ समावण्णग [समापनन] जी० ३।८४२,८४४ समास [समास] जी० ३।५३८।१ समासओ [समासतस्] जी० १।४,४८,६४,७३, ५४,५५,५६९,६२,१००,१०३,१११,**११२,११**६, ११८,१२१,१२६,१३४ समासतो [समासतस्] जी० १।७५,५१; ३१२२६ समाहय [समाहत] ओ० ४६. रा० १२,७४८, ৬২. জী৹ ২। ११ समाहि [समाधि] ओ० ११७,१४०,१५७,१६२. रा० ७९६ समिद्वीय [समधिक] जी० ३।११२० समिता [समिता] जी० ३।२३५.१०४०,१०४४, १०४६ समिद्ध [समृद्ध] ओ० १,१४. रा० १,६६८ से 808,808,800 समिया [समिता] जी० ३।२३१,२४४ सम्मा [समुद्ग] ओ० ७४।४. रा० १६१,२४८, २७६,३४१. जी० ३।३३४,४१९,४४४,५६६ समुग्गक [समुद्गक] जी० ३।४०२,४१६ समुग्गग [समुद्गक] जी० ३।३०० समुग्गपविख [समुद्गपक्षिन्] जी० १।११३,११६ समुग्गय [समुद्गक] ओ० १७०, रा० १३०,२४० २७६,३४१. जी० ३१४०२,४४२,५१६,१०२५ समुग्धात [समुद्धात] जी० ३।१०८,१५७,१११२ समुग्धाय [समुद्धात] अो० १७१,१७२,१७४, १७७. जीव १११४,२३,५२,५६,६६,१०१, ११९,१३३,१३६;३११२७१४,१६०

सम्चिछण्णकिरिय [समुच्छिन्नकिय] ओ० ४३ समुद्धित [समुस्थित] जी० ३।३०३ समुद्विय [समुत्थित] रा० १३३,६७१ समुदय [समुदय] ओ० ६७. रा० १३,४०,१३२, ६५७,५०३,५०४. जी० ३।३०२,४४६,४११ समुद्द [समुद्र] ओ० १७०. रा० १०,१२,४६, २७९,६८८. जी० ३।८६,२१७,२१९ से २२७, ~46''56''9''9''9''3''5''5''5''5''5''5''5''5'' १७१ से ४७६,६३८,७०४ से ७०८,७१०,७११, ७१३ से '७२३,७२६,७२८ से ७३१,७३३,७३६, ७३६ से ७४१,७४४,७४७,७४०,७४४,७६१, ७६२,७६४ से ७६६,७७२ से ७६६,८००, ८०३,८०४,८०६,८१० से ८१६,८१८ से ८२१, दब्दा२६,व४व से व्४१,व्४४ से व्४६, ७**५६,५६०,५६२,५६४,५६६,५६**८,५७१, x97,588,589,585,550,5874,678, से ६३४,६३५,५३६,६४३ से ६४६,६४६ से ६५२,६५५,६५८,६६१,६६३ से ६६६,६६६, ९७२ से ९७४ समुद्दग [समुद्रग] जी० ३।७७४,७७८ समहलिक्ला [समुद्रलिक्षा] जी० १।८४ समुपविद्व [समुपविष्ट] जी ३।२५४ √समुप्पउज [सं+उत्+पद्]—समुपञ्जित्या. रा० ६----समुष्पज्जइ, ओ० १५६----समुष्प-६८८. जो ३।४४१.—समुप्पज्जिहिति. ओ० १५३. रा० ६१४ समुष्पण्ण [समुत्पन्न] ओ० ११९ १५७. रा० ২৩६,७३८,७४६. জী০ ২।४४२ समुप्पणको अहल्ल [समुत्पन्नकौतूहल] ओ० दश्व समुष्पण्णसंसय [समुत्पन्नसंशय] ओ० ८३ समुप्पण्णसङ्घ्र [समुत्पन्नश्चद्ध] ओ० ५३ समुप्पन्न[समुत्पन्न] जी० ३।२३६ समुवागत [समुवागत] जी॰ ३। ६१७ समुस्विद्व [समुपविष्ट] रा० १७३ समुस्सिय [समुत्सृत] रा० ४१

समूसिय [समुच्छित] ओ० ६४ समूह [समूह] रा० १२३ समोगाढ [समवगाढ] ओ० १६५१६. जी० ३।८४५ √समोयर [सं+अव+त्]-समोयरंति. जी० 31898 समोसट [समवसृत] ओ० ४२,४३. रा० ६, ६८७,६८६,७१३ √समोसर [सं+अव + स् ! समोसरह. रा० रिस्सामि. रा० ७०३ समोतरिस्सामो. रा० 90¥ समोसरण [समवनरण] रा० ७५,५०,५२,११२, ७४६ से ७४०,७७३ समोसरिउकाम [समवसर्तुकाम] ओ० १९,२० समोहण [सं+अव ⊨हन्]—समोहणंति, ओ० १७१----समोहणिसु. जी० ३।१११३ --- समोहणिस्संति. जी० ३।१११३ समोहणित्ता [समवहत्य] रा० १०. जी० ३।४४५ समोहण्ण [सं + अव + हन् ]-- समोहण्णइ. रा० १८ --- समोहण्णंति. रा० १०. जी० ३।४४५ समोहत [समवहत] जी० १।१२८; ३।१४८, २००,२०१,२०६,२०७ समोहतासमोहत [समावहतासमवहत] जी० ३।२०२,२०३,२०८,२०६ समोहय[समवहत] ओ० १६६. जी० १।५३,६०,८७ सम्मं [सम्यक्] ओ० १६२. रा० ६७१,६६८, ox0,0560,550,350,350,590,500 से ७१२,७७७,८७८,७८६ सम्मज्जग [सम्मग्नक] ओ० ९४ सम्मज्जित [सम्माजित] जी० २१४४७ सम्मज्जिय [सम्माजित] ओ० ५५,६० से ६२. জী০ ২।४४৬ सम्मद्व [सम्मृष्ट] ओ० ११. जी० २।४४७ सम्मत्त (सम्यवत्व] ओ० ४६ सम्मत्तकिरिया [सम्यक्त्वकिया] जी० ३।२१० २११

सम्मदिद्वि (सम्यग्दुष्टि ] रा० ६२. जी० १।२८, 52; \$180\$, 848, 880X, 880E; EIEG, ६८,७१,७४ सम्मय [मम्मत] रा० ७४० से ७४३ सम्माण (सम्मान) ओ० ४०,५२. रा० १६,६८७, ६८९ √सम्माण (संय)मानय]—सम्माणिस्संतिः रा० ७०४----सम्माणेइ. ओ० २१. ७०६---सम्मा-णेज्जा. रा० ७७६ - सम्माणेति. रा० ६५४ राम्माणमि. रा० ५८---सम्माजेमो. ओ० ५२. रा० १० सम्माणेहिति. ओ० १४७ सम्माणणिज्ज [सम्माननीय] ओ० २. जी० ३।४०२,४४२ सम्माणित्तए [सम्मानयितुम्] ओ० १३९. रा० सम्माणेता [सम्मान्य] ओ० २१ सम्मामिच्छदिद्वि [सम्यग्मिथ्यादृष्टि] जी० १।२८,८६; ३।११०५,११०६ सम्मामिच्छाविद्वि (सम्यग्मिथ्यावृष्टि) जी० 31803,828; 8150,00,03,08 सम्मुद्द [सम्मति] जी० ३।२३९ सय | शत ] ओ० ६३,६४,६८,७१,११४,११८, ११६,१७०,१६२,१९४१४. रा. १७,१८,३२, ६१,६६,६६ से ७१,१२४,१२७,१२९,१३७, १६२,१७०,१७३,१=६,१=८,२०४ से २०६, २०६,२११,२३३,२४१,२४४,२४५,२५,२६२, २६२,६८१,६८६,७११,७४३. जी० ११९४; 2188,84,03,62,60,828,824; 3142, ६१,१२६१६,१७४,२१७ से २२६,२२६।१,३, £, ??%, ??%, ?% £, ?% £, ?% X, ?% %, ? { e, , ? } २६२,२६३,३११,३४८,३६१,३७४,४१६, ४५७,६३२,६४७,६४९,६७४ से ६७६,६८३, ७०३,७०६,७२२,७३६,७४४,८०२,८०६, न३९,नन७,६०न,६१न,९६८,१००३,१००४,

सम्मदिट्रि-सयवत्त

१० १४,१०१९,१०२२,१०४१,१०४२,१०४३, १०५५,१०६५ से १०७०;४।१५;५।१६,२६; 8182, 805, 823, 824, 888 सय [स्वक] ओ० २०,४३. रा० ४४,६७१,६८१, 800,085,080,098 √सय |शी | — सयंति रा० १८५. जी० ३।२१७ सयंपभा [स्वयंत्रभा] जीव ३।१०७७ सयंबुद्धसिद्ध [स्वयंबुडसिड] जी० १।व सयंभुमहावर [स्वयंभूमहावर] जी० ३/१४१ सयंभुरमण [स्वयंभूरमण] जीव ३१२५९,९४६ से Ex8, EEZ, EEX, EEX, EEE सयंभूवर (स्वयंभूवर) जी० ३१९५१ सयंभूरमण [स्वयंभूरमण] जीव ३। १७१ सयंभूरमणग [स्वयंभूरमणक] जी० ३।७८० संग्रंसंबुद्ध [स्वयंसंबुद्ध] रा० ८,२१२. জী৹ ২।४২৬ सयग्वि [ शतघ्ति ] ओ० १ सयण [शयन] ओ० १४,१४१,१४९,१४, TTO 8=2, 508, 502, 088, 580, 582. जी० ३।२९७,५५७,११२८,११३० संयण [स्वजन] ओ० १५०. रा० ७५१,८०२, ≂११ सयणविहि [शयनविधि] ओ० १४६. रा० ८०६ सयणिज्ज [ शयनीय ] रा० २६१,२७७. जीव ३१६४०,६८२ सयपत्त [ शतपत्र ] ओ० १२,१४०, रा० ८११. जी० ३।११८,११९,२८६ सयपाग [ शतपाक ] ओ० ६३ सयपोराग [शतपर्वक] जी० ३।१११ सबमेव [स्वयंमेव] रा० ६७४,६८०,६८८,७१४, 930 सयराइं [सप्तति] जी० २।१००० सयराह [दे०] अकस्मात् ओ० १२२ सयल [ शकल ] ओ० १९,४७ सयवत्त [ शतपत्र ] ओ० ४७, रा० १३७,१७४, १९७,२७९,२८८. जी० ३।३०७

的复き

सयसहस्स [शतसहस्र] ओ० १,२१,४६,१४,६८, Ex, Ex, 200, 267. 210 2x, 20, 25, 22x, १२६,१७०,१८८. जी० १।७३,७८,८१,१३४; रे।१२,६२ से ६६,७७,८२,१२७,१६०,१६२, १६६ से १६न,१७१,२३२,२६०,७०९,७१०, ७२२,७२३,७९४,५०२,५०९,५१२,५१४, न२०,न२३,न२७,न३०,न३२,न३४,न३४, = \$9, = 3 = 1 ? = , = 3 E, = 8 8, = ¥ 0, = ¥ 7, E 80, EXX,E==,2029,203=,203E,209X सयसाहस्सिय [शतसाहस्रिक] रा० ५६ सयसाहस्सी [शतराहस्री | जीव ३।६५८ सर [ भर ] ओ० ६४. रा० १७३,६८१,७६४. जी० ३।२५५ सर [स्वर] ओ० ६,७१. रा० १७,१८,२०,६१. जी० ३।११८,११९,२७४,२८४,२८६,८४७, दद् सर [सरस्] ओ० ११ सरंधी [दे०] जी० २। ६ सरम [सरक] जी० ३।१८७ सरगय [स्वरगत] ओ० १४६. रा० ८०६ सरडी [सरटी] जी० २।६ सरण [शरण] ओ० १९,२१,५४. जी० ३।५९४ सरणबय [ शरणदय ] ओ० १९,२१,५४. रा० ८, २६२. जीव ३।४१७ सरतल [सरस्तल] रा० २४. जीव ३।२७७ सरपंतिया [सरःपङ्क्तिका] रा० १७४,१७५,१८०. জী৹ ३।२८६ सरम [शरभ] ओ० १३. रा० १७,१८,२०,३२, ३७,१२९. जी० ३।२८८,३००,३११,३७२ सरमह [सधेमह] य० ६८८ सरय [शरद्] जी० ३।५९० सरस [सरल] जी० १।७२ सरसवण [सरलवन] जी० ३।५८१ सरस [सरस]ओ० २,४४,६३.रा० ३२,२७६,२८१, २८४,२९१,२९३ से २९६,३००,३०४,३१२, ३५१,३५५,५९४, जी० ३।३७२,४४५,४४७,

४५१,४४७ से ४६२,४६५,४७०,४७७,४१६, \*\*\*\*\* सरसरपंतिया [सर:सर:पङ्क्तिका] रा० १७४, १७५,१८०. जी० ३।२८६ सरसी [यरसी] रा० १७४,१७४,१८०. জী৹ ই।২=६ सरस्सई [सरस्वती] ओ० ७१. रा० ६१ सरागसंजम (सरागसंयम) ओ० ७३ सरासण ( शरासन ) रा० ६६४,६८३. জী৹ ইাগ্ৰহ্ব सरि [सदृश्] जी० ३।६६६,७७४ सरिता [रारिता] जी० ३।४४४ सरितय [सदुक्त्वच्] चा० ६९,७० सरिव्वय [सदृग्वयस्] रा० ६९,७० सरिस [सद्श] जो० १६,२२,४७. रा० ६६,७०, २७०,७७७,७७८,७४९. जी० ३१११०,४१२, ४९६ से ४६८,६८२,७०८,७१०,८१४,९२८, 888,8884 सरिसक [सदुशक] जी० ३।६६६ सरिसय [नदृशक] रा० ६९,७०. जी० ३।६६५, ७६२ सरिसव [सर्धप] जी० १।७२ सरिसवविगइ ( सर्षपविकृति ! ओ० ६३ सरिसिव [सरीसृप] रा० ६७१ सरीर [शरीर] ओ० १४,२०,४२,४३,८२ ११७, १४३. रा० १२२,१२३,६७२,६७३,६८६ से **६**न**६**,६**६२,७००,७१**६,७२६,७२८,७३२, . ७३७,७४८ से ७६४,७७० से ७७३,७९४, ७९६,८०१. जी० १।१४,१६ से १८,४०, ७२१२,३,७४,८६,८८,६०,६४ से १६,१०१. **१११,११२,११**६,**१**१९,१२१,१२३,१२४, १३०,१३४; ३१९१ से ६३,१२६१४,१०,३६८, ६६६,१०८७,१०८६ से १०६२ सरीरग [ शरीरक] रा० ७६४. जी० १।१४,५६,

2068,806,806,8308,8308 सरीरत्य ] शरीरस्थ ] ओ० १७४ सरीरपज्जत्ति [ शरीरपर्याप्ति ] रा० २७४,७९७. जी॰ १।२६;३,४४० सरीरय | शरीरक | जीव ११६४; ३१६२,६४,६६, सरीरविउस्तग्ग (शरीरव्युत्सर्ग) ओ० ४४ सरीरि [श्वरीरिन्] जी० श६६ सरोसिव [सरीसृप] जी० ३। प्य सलिस [सलिल] ओ० २७,४६. रा० १७४,२८व. जी० ३,११८,११६,२५६,४५४ सलिला [सलिला] रा० २७६. जी० ३।४४१ सलील [सलील] रा० २५४,२४६. जी० ३।४१६, 889 सलेस [रालेण्य] जी० ६।२६ सलोह [सलोव्च] रा० ७४४,७१६,७६४ सल्ल (शल्य) ओ० ७२ सल्लई [सल्लकी] जी० ३१८७२ सल्ली [दे०] जी० २१९ सवण [श्रवण] ओ० १९. रा० २५४. जी० ३।४१४,५९६,५९७ सवणया [अवणता] ओ० २०,५२,५३. रा० ६८७, ७१३, ७१९,७४० से ७५३ सवियारि [सविचारिन्] ओ० ४३ सविसय [सविषय] जी० ११४७ सविवेस [सविशेप] जी० ३।१०१०,१०१४ सवेदग [सवेदक] जी० हा२२,२५,२७ सबेदय (सबेदक) जी० ६ २३,२८,३२ सरव [सर्व] ओ० २७. रा० ९. जी० ११४० सन्वक्षे [सर्वतस्] ओ० ३,६,२७,७६,११७. रा० ६,९२,३०,४०,६३,६५,९२७,१३२, १३४,१४४,१७३,१८६,२०१,२०४ से २०७, २३६,२६३,२=१,६७०,=१३. जी० ३।२१७, ३८८,८१२,८२**३,८५०** सव्यओभद्व [सर्वतोभद्र] ओ० ५१ सम्वओभद्दपडिमा [सर्वतोभद्रप्रतिमा] ओ० २४

सध्वंग [सर्वाङ्ग] ओ० १४. रा० ६७२,६७३, ८०१. जीव ३१५९६,५१७ सञ्वकामगुणिय [सर्वकामगुणित ] ओ० १९४।१८ सम्वकाल [सर्वकाल] ओ० १९५।१९ सध्यक्खरसण्णियाइ [सर्वाक्षरवन्तिपातिन् ] ओ० २६ सव्यग्ग [सर्वाग्र] रा० २२७. जी० ३।३८६,६४२, **६४३,६७२,६७९,७**९४,७९४ सम्बद्घ [सर्वार्थ] जी० ३।६३४ सय्बट्ठसिद्ध [सर्वार्थसिद्ध] ओ० १६७,१६२. जी० २१७=,=१; ३११=४,१६२ सब्बट्टसिद्धग [सर्वार्थसिद्धक] जी० २। ५५, ९६; **३**।२३१ सब्बण्णु [सर्वज्ञ] ओ० १९,२१,५४. रा० ५,२९२. জী০ ২।४২৬ सञ्चता [सर्वतस् ] रा० १२,४४,१६१,२०८,७४४, ७६४,७६५,७७२,७७४. जी० ३।४९,४०, २६०,२६२,२६४,२८३,२८४,३०२,३०४, ३१३,३२७,३४२,३६२,३६८ से ३७१,३६०, **₹&**=,**४४७,१&१,६**३८,६१२,६१<,६६, £52,200,252,252,250,000,002,022, ,082,02X,000,000,005,065,065,7560, सव्वत्ता [सर्वता] ओ० ७६ सब्बत्ध [सर्वार्थ] ओ० ४० सव्वत्थ [सर्वत्र] जी० २१८५ सब्बदरिसि [सर्वदशिन् ] ओ० १६,२१,४४. रा० ८।२१२. जी० ३।४४७ सब्बद्धविडिय [सर्वाध्वपिण्डित] ओ० १९५।१४, १४ सस्वद्धा [सर्वाध्व] जी० ३।१९३,१९४ सब्वपाणभूयजीवसत्तमुहादहा { सर्वप्राणभूतजीव-सत्त्वसुखावहा] ओ० १६३ सथ्वभाव [सर्वभाव] ओ० १९५।१२ सन्वभासाणुगामि [सर्वभाषानुगामिन्] ओ० २६

सव्यभासाणूगामिली [सर्वभाषानुगामिनी] ओ० ७१. रा० ६१ सव्वरतणा [सर्वरत्ना] जी० ३। १२२ सव्वागास [सर्वाकाश] ओ० १९४।१४ सण्विदिय [सर्वेन्द्रिय] जी० ३।६०२, = ६०, = ६६, ८७२,८७८ सविवदियकायजोगजुंजणया | सर्वेन्द्रियकाययोग-योजनता] औ० ४० सम्बोउय [सर्वर्तुक] ओ० ४९. रा० १४९,६७०. जी० ३।३३२ सब्बोसहिपत्त [सवौधधिप्राप्त] ओ० २४ सस [ शश] रा० २७ ससंभग [ससम्भग] ओ० २१,५४ ससक [शशक] जी० ३।२०० ससक्खं [ससाक्ष्य, ससाक्षात्] रा० ७५४,७५६, ७६४ ससग [शशक] जी० ३।६२० ससण [ श्वसन ] ओ० १९. जी० २। १९६ ससरोरि [सशरीरिन्] जी० १।६२ ससि [शशिन्] ओ० १४,१९,४७,६३,१४३. रा० ६७२,६७३,००१. जी० ३१४६३,४६६, ४६७,८०९,५३८१३,२४,२६,२८,३०.३१, 8000 ससुरकुलरक्खिया [ श्वसुरकुलरक्षिता ] ओ० १२ **सस्सिरीय** [सश्रीक] औ० ६३. रा० १३६,२२८. जी० ३।३०६,३८७,४६६,६७२ सस्सिरीयरूव [सश्रीकरूप] रा० १७,१८,२०,३२, १२६,१३०,१३७. जी० ३।२८८,३००,३०७, ३७२ सह [सह] जी० ३।६११ सहसंबुद्ध [स्वयंसम्बुद्ध] ओ० १९,२१,५२,५४ सहसा [सहसा] जी० ३।४८९ सहस्स [सहस्र ] ओ० १९,६८,६९,८ से ९३, १७०,१९२. रा० १७,१८,२०,२४,३२,४२,

¥६,१२४,१२६,१२६,१**५**६,१६३,१६६,

222,232,280,208,250,050,055. जी० १। १८, ११, ६१, ७३, ७४, ७८, ८१, ९४, १२३,१३६,१३७;२।३४ से ३९,६६,१०न, ११०,१११,११८,१२८,१२६,१३६;३११४ से २१,२३ से २७,४१,६० से ६३,७७,०० से नर,६१,११न,१७४,१न६ से १६२,२२६।६, २४२,२४६,२६०,२७७,२नन,३००,३३२, ₹₹**X,**₹₹€,₹**X १,**₹X**X,**₹X**5,**₹**5**,₹6**१,**३७२, ३६३,३६८,४४४,४४६,४४८,४६,४६,४६८ से ४७०,४७७,४९०,४९८८,६३२,६३८,६३६, ६६०,७०३,७०६,७१४,७२२,७२३,७२५, ७२६,७२८,७३२,७३३,७३६,७३८,७४०, 6x2,6xx,6x0,6xx,6z8,6z2,6zx से ७७६,७८८ से ७६२,७६४,७९४,७९८, न०२,न०**६,न१२,न१४,**न१४,न२०,न२**३,** न२७,न३०,न३२,न३४,न३४,न३७,५३न१२७, १०००,१०१५,१०१७ से १०१९,१०२२, १०२३,१०२८,१०२६,१०३८,१०५१, 8003,8008,8838,813,226,88,88 ५१४,६,१०,१२,१४,१४,२५,२६; ६१२, ६,७।३,१३; ८।३; हार से ४,१३२,२१०, २१४,२२४,२२८,२३४,२४१,२६०,२६९, ২৩৩ सहस्तपत्त [सहस्रपत्र] ओ० १२,१४०. रा० २३,

१७४,२२३,२७९,**२५१,**२५५,२५**६,**५**११.** जी० ३।११८,११६,२५६,२५६,२५६,२ **\$ {**X`X,XX`XX@`XXX`XX`&3E`E\$@` ६५१,६५९,६७७,७३८,७४३,७६३,८९४ सहस्सपाग [सहस्रपाक] ओ० ६३

सहस्सभाग [सहस्रभाग] ओ० २

सहस्सरहिस [सहस्ररश्म] ओ० २२. रा० ७२३,

७७७,७७५,७९५

सहस्सवत्त [सहस्रपत्र] रा० १९७,२७९

सहस्ससो [सहस्रशस्] जी० ३।१२६।६

सहस्सार [महस्रार] ओ० ५१,१५७,१९२. जी० ११११६,१२३; २ ६१,६६,१४५,१४६; ३।१०३८,१०१२,१०६१,१०६६,१०६८, १०७६,१०५३,१०५५,१०८५ सहस्तारग [सहस्रारक] जी० ३।११११ सहा (सभा) ओ० ३७. जी० ३।४१२ सहिगग [ क्लक्ष्णक ] जी० ३। ५६५ सहित [सहित] जी० २।१०४; ३।२८४,६२७ सहिय [संहत] ओ० १९ सहिय [सहित] रा० ७४. जी० ३१८३८१२४ सही [सखी] जी० ३।६१३ सहोड [सहोह] रा० ७४४,७४९,७६४ साइ [साचि] रा० ६७१ √साइड्ज [स्वाद्] – साइउजामो. ओ० ११७ साइज्जणया [स्वादन] ओ० २२ साइज्जित्तए [स्वादयितुम्] औ० ११७ साइम [स्वाद्य] ओ० ११७,१२०,१४७,१६२. 1500, 250, 380, 800, 800, 739 015 ७८७ से ७८१,७१४,७१६,८०२,८०८ साहरेग [सातिरेक] झो० २३,१४५,१८८. TIO 800,288,222,220,2X3. जी० २१९३; ३१२४०,३४८,३७४,३७६,३८६, ४१४,६५३,६७४,न्द२,न्न्क,न्ह४; ११३४, दह,ह३,१३४,१६०,१६१,१६४ साउ [स्वादु] ओ० ६. जी० ३.२७४ सागर [सागर] ओ० २७,४६,७४१५, ६९, १९४१२२. रा० २४,७६४,५१३. जी० ३।२७७,४६६,५३८।२३ सागरनागरपविभक्ति [सागरनागरप्रविभक्ति] रा० ६२ सागरपविभत्ति | सागरप्रविभक्ति | रा० ६२ सागरमह [सागरमह] रा० ६८८,६८ सागरोवम [सागरोपम] ओ० ११४,११७,१४०, १५५,१५७ से १६०,१६२,१६७. रा० २८२. जी० ११६६,१३६,१३५;२१७३,७६,५२,

23,20,800,805,885,824,820,828, १३६; ३११९२,१९७,४४८,८४१,१०४६, १०४७,१०४६ से १०४३,१०४४,११३१, ११३७; XIX, E, १४, १६; XIE, १०, १६ २=, २६; ६१२,११; ७१३,१६; ५१३; ६१२ से ४, ₹१,₹४,६८,७२,८६,€३,१०२,१०६,१२३, १२८,१३२,१३४,१६०,१६१,१६५,१७२, १७६,१८६ से १९१,१९३,१९८,११९,२०३, २०६,२१०,२१७,२२४,२२८,२३४,२४४, २६०,२६६,२⊏० सागार [साकार] ओ० १व२,१६४।११. जी० १।३२,८७;३।१०६,१४४,१११०; हाइह,३७ साण् कोसिया [सानुकोशता] ओ० ७३ सातासोक्स [सातसीख्य] जी० ३।१११७ साति [साचि] जी० १।११६ साति [स्वाति] जी० ३११००७ सातिरेग [सातिरेक] रा० ८०४. जी० १७४; २१४३,४४,४७,०२,१२४,१२०; ३१२४७, 7\*\* \$, 35 \$, 58 3, 503, 508, 555 6, 500, १०३४,१०३६,११३७;४1९,१४; ४1१६, २६; ६१११; ७१६; ५१३; ६(३,३१,६८,७२, १०२,१०६,१२३,१२८,१३२,१९८, 208,286,288,280,250 सादीय [सादिक] ओ० १८३,१८४,१९४. जी० हार४,२४,३१,३३,३४,८२,११०,१२४, 863,887,888,208,202,208,205, २१x.२१६,२२७,२३०,२४०,२४६,२६१, २६४,२७६,२९४ साभाविय [स्वाभाविक] रा० २७६,२५०. जी० ३।४४५,४४६ साम [सामन्] रा० ६७४ सामंत [मामन्त] रा० ७५३ सामण्णपरियाग [श्रामण्यपर्याय] ओ० ६४,१५५, १५९,१६०

**सामन्नओविणिवाइय** [सामान्यतोविनिपातिक] रा० ११७,२८१ सामन्मतोविणिवातिय [सामान्यतोविनिपातिक] জী৹ ২১४४৬ सामलतामंडवग [ म्यामलतामण्डपक] জী৹ ঝান্ধও सामलतामंडवय [श्यामलतामण्डपक] जी० ३।⊏४७ सामलया [श्यामलता] अरे० ११. रा० १४५. जी० ३।२६८,३०८,३७७,३६०,४८४ सामलयापविभत्ति [ श्यामलताप्रविभत्ति ] रा० १०१ सामलयामंडवग [श्यामलतामण्डपक] जी० ३।२९६ सामलयामंडवय [ श्यामलतामण्डपक ] जी० ३।२९७ सामलि [शाल्मली] जी० ३। ५९६ सामवेद [सामवेद] ओ० ९७ सामाइय [सामायिक] ओ० ७७ सामाइयचरित्तविणय [सामायिकचरित्रविनय] को० ४० ' सामाणिय [सामानिक] रा० ७,४१,४८,४६ से भूद,२७६ से २८०,२८२,२८४,२८७,२८६, २९१,६४७,६४८,६६६,जी० ३।३३९,३४०, ३५९,४४२ से ४४६,४४८,४४५,४४७,५४७, ५४८,४६३,४६४,६३४,६३७,६५७,६५६,६८०, ७००,७२१,७३८,७६०,७६३,८४३,८४६, 8028 सामाय [म्यामाक] रा० २६. जी० ३।२७९ सामि [स्वामिन्] ओ० ४६. रा० ६,६=१,७०७, ७२३,७२६,७३१,७३३ से ७३४,७४१,७४३ सामित्त [स्वामित्व] ओ० ६८. रा० २८२. जी० रे। ३४०,४६३,६३७ सामुग्ग [समुद्ग] ओ० १९ सामुच्छेइय [सामुच्छेदिक] ओ० १६० सामुहग [सामुदग] जी० ३।७८० साथ [सात] जी० ३।१२९।६

साया [सात] जी॰ ३।११८,११६

सार [सार] ओ० १४,२३,४६. रा० ३७,१७३, **६७१,**६७९,६९४. जी० ३।२८४,३११,४८६, ६०५ सारइय [शारदिक] जी० ३।२८२,८७२,९६० सारक्सणाणुबंधि [सारक्षणानुबन्धिन् ] ओ० ४३ सारग [सारक, स्मारक'] ओ० ६७ सारतिय [णारदिक] रा० २६ सारय [शारद] ओ० २७,७१. रा० ६१. जी৹ ३।४९२,५९७ सारयसलिस [शारदसलिल] रा० ८१३ सारस [सारस] ओ० ६. जी० ३।२७५ सारहि [सारथि] ओ० ६४. रा० १७३,६७४, ६न०'६न१,६न३ से ६न४,६०० ले ६१०, ६६२,६६३,६९४ से ७१०,७१३,७१४,७१६ से ७३४,७३६,७४८. जी० ३।२८५ सारा [दे०] जी० २। १ सारिज्जंत [सार्यमान] रा० ७७ सारीर [शारीर] अो० ७४ साल [शाल] ओ० ६,१०. जी० १।७१; ३।५८३ सालघरग [शालागृहक] रा० १८२,१८३. जी० ३।२९४ सालगग [शालनक] जी० ३।४९२ सालभंजिया [शालभव्जिका] रा० १३३,१३६, २९४,२९६ से २९९,३१२,४७३. जी० ३१३००, ३०३,३१६,३४४,३७२,४४६,४६१,४६२, **४७७,४३**२ सालभंजियाग [शालभञ्जिकाक] रा० १७,१८, ३२,१३० सालमंत शाखावत् ] ओ० ४, प. जी० ३१२७४ सालवण [शालवन] जी० ३।५८१ साला [शाखा] रा० १३३,२२८. जी०३०३,३८७, ४़∽०,६२१,६७२ से ६७४

१. 'सारय' ति अध्यापनद्वारेण प्रवर्त्तकाः स्मारका वा अन्थेषां विस्मृतस्य स्मारणात् (वृ) ।

# सालि-सिंगार

सालि [शालि] ओ० १. रा० १४०. जी० ३।६२१, ξ**ξ**β सालिपिट्र [ शालिपिष्ट ] रा० २६. जी० ३।२=२ सालिसय [सदुशक] रा० २४५. जी० ३।४०७ सावएज्ज [स्वापतेय] रा० ६९४. जी० ३१६०० सावज्ज [सावद्य] ओ० ४०,१३७,१३⊂ सायज्जजोग [सावद्ययोग] ओ० १६१,१६३ सावतेज्ज [स्वापतेय] ओ० २३ सावत्थो [श्रावस्ती] रा० ६७५,६७७ से ६०० ६८३,६८४ से ६८६,६८२,७००,७०६, 988 सावय [स्वापद] ओ० ४६. जी ३।६२० सावय [श्रावक] जी० ३।७९४,५४१ सावाणुगगहसमत्थ [शापानुग्रहसमर्थ] ओ० २४ साविया (श्राविका) जी० ३।७९४,८४१ सार्वेत [श्रावयत्] त्रो० ६४ सास [ श्वास ] जी० ३।६२८ सासंत [शासत्] ओ० ६४ सासत [शाश्वत] जी० ३१४७,४८,८७,७०२, 19 E O सासय [शाश्वत] ओ० १९३,१९४,१९४,११,२१. रा० १३३,१६८ से २००. जी० ३।५६, १२७१२,२७० से २७२,३०३,३४०,७२१, ७२४,७२६,७६०,१०≍१ सासा [स्वाशा,शास्या] ओ० ४६ √साह [कथय,शास्]--साहिति. रा० ११ ---साहेंति. रा० २५१. जी० ३।४४७ ---साहेह. रा० ६ √साह [साध्]--साहेइ रा० ७६४---साहेज्जासि. रा० ७६५.-साहेमि. रा० ७६५ साहर्टु [संहृत्य] ओ० २१ √साहण [स+हन्]---साहणेञ्जा. जी० ३।११= साहम्मियवेयावच्च [साधमिकवेयावृत्य] ओ० ४१ साहय [संहत] ओ० १९. जी० ३।४९६,४९७ √साहर [सं+ह]-साहरति जी० ३।४४७

साहरण [संहरण] जी० २।११६,१२४ साहरणसरीर [साधारणशरीर] जी० १।६८,७३ साहरिज्जमाण [संह्रियमाण] रा० ३०,८०४. জী০ ২।২ন২ साहरिज्जमाणधरम [संहियमाणचरक] ओ० ३४ साहरित्ता [संहत्य ] जी० ३।४९७ साहसिय [साहसिक] ओ० १४८,१४९. रा० 508,580 साहस्सित [साहस्रिक] जी० ३।५४२ साहस्तिय [साहसिक] रा० १६. जी० इन्४२, <u></u>ব্বপ্থ साहस्सी [साहस्री] ओ० १९. रा० ७,४१ से ४४, ४६,४६ से ४६,२३४,२३६,२६०,२६२,२६९, २९१,४६८,६४७,६४८,६६० से ६६२,६६४. जी० ३,२३६,२४३,२५५,३३६,३४१ से <u>\$XX'5K0'560'562'282'282'282'</u> ४४७,४४७,४४८,४६०,४६२,४६३,६३४, ६३७,६४७ से ६४६,६००,७००,७२१,७३३, ७३८,७६० से ७६३,६०२,६०३,१०२५, १०३५,१०४१,१०४४,१०४६,१०४९ से 8022 साहस्सीय (साहसिक) रा० ६७१ साहा [णाखा] ओ० ४,५. रा० २२५. जी० ३।२७४,३८७,६७२ साहिता [ कथयित्वा ] रा० ६ साहिय [साधिक] ओ० १९४१७ साहिय [सहित] जी० ३। १२% साहिय [साधित] रा० ७६५ साह [साधू] ओ० ४६,१६१,१६३ सिंग [म्टुङ्ग] रा० ७१,७७ सिंगबेर [श्रुङ्गबेर] जी० १७३ सिगमेद [श्टङ्गभेद] ओ० १३ सिंगमाल [श्रृङ्गमाल] जी० ३।१८२ सिगवाय शिद्धवादक] रा०७१ सिंगार [श्रङ्गार] ओ० १५. रा० ७०,७८,१३३, ६७३,८०९,८१०. जी० ३।३०३,४९७,११२२

### હફર

सिंघाडन [श्रुङ्गाटक] ओ० १,४२,५४. रा० ६८७, ७१२. जी० ३।४४४,४४४ सिंघाडय [शुङ्गाटन] रा० ६४४,६५४ सिंदुवार [सिन्दुवार] जी० ३।२८२ सिद्धवारगुम्म [सिन्दुवारगुल्म] जी० ३। १०० सिंधू [सिन्धु] रा० २७९, जी० ३।४४४,४९४ 853 सिभिध [श्लैप्मिक] ओ० ११७. रा० ७९६ सिंह सिंह जीव २ ७५१,७५२,१०३५ सिहली [सिहली] ओ० ७०. रा० २०४ सिक्कग [ जिस्यक ] ४१० १३२,१४३,२३६,२४०. जी० ३।३२६,४०२ सिक्कय [ शिक्यता ] रा० १३२,१४०,७६१. जी० ३।३०२,३२६,३९८८,४०२ सिक्सा | शिक्षा | औ० ७६,७७,९७ सिक्खाब । शिक्षय् । ---- सिक्खाविहिति ओ० १४६ —सिक्खावेहिइ. रा० ५०६ सिक्लावय [शिक्षावत] ओ० ७७ सिक्खावित्ता [ शिक्षथित्वा ] ओ० १४६ सिक्खवेत्ता | शिक्षयित्वा | रा० ८०७ सिग्ध [शोध] रा० १०,१२,५६,२७९. जी० ३।८६,१७६,१७८,१८०,१८२,४४४ सिम्घगति | शीझगति | जी० ३।६८६,१०२० सिग्धगमण [शीझगमन] रा० १७,१५ √सिज्झ [सिध्]---सिज्झइ. ओ० १७७---सिज्झई. ओ० १९५। १२---सिज्मति. बो० ७२. जी० १।१३३--सिज्झिहिति. ओ० १६६ -- सिज्झिहिति ओ० १४४ रा० द१६ सिज्झमाण (सिध्यत् ) ओ० १=४ सिढिल [হিম্পিল] যা০ ৬২০,৬২१ सिणाइत्तए [स्नात्म] ओ० १११ सिग्गेह [स्नेह] ओ० १६८. जी० ३।२२ सिता [स्यात्] जी० ३।६०,१०६,११८,११६, १७६,१७८,१८८,१८२,१८२.१६४,१६६ सित्त [सिक्त] ओ० ४४. जी० शार् १२

सित्थ [सिक्थ] जी० ३। ५ ६२ सिद्ध [सिद्ध] ओ० ७१,७४।३,६,१८३,१८४, १८६ से १६२,१९४११,२,४ से ११,१३,१४, १७,१६ से २१. जीव ११६; ६१६,१०,१२, **१४,१९,२९,४४,४४,५४,६२,६**६,१५६, १४८,२०६,२१४,२१६ से २२१,२२७,२३० से २३२,२४०,२४९,२६४,२६७,२७४,२७६, २९४ से २९७,२६२,२६३ सिडकेवलणाण [मिडकेवलज्ञान] रा० ७४५ सिद्धस्य [िदार्थ] रा० १४६,१४७,२४६,२७६ जी० ३।३२९,४१९,४४४ सिद्धत्यय [िद्धार्थक] रा० २७९,२८०. जी० ३।४४४,४४६,४४८,५१६३ सिद्धवसहि [सिद्धवगति] ओ० ७४।३ सिद्धाधतण | सिद्धाधतन | रा० २४१,२४२.२५६, २६०,२७६,२५५,२९१,२९३,२९४,३१३, ३३१,३३२. जी० ३१४१२,४१३,४२०,४२१, ૪૧,૪૧७ से ४१९,४७=,४६६,४६७,६७४, ६७६,६७७,६९१ से ६६८,८२४,८८४,८०१ से ६०५,६०६,६१३ सिद्धालय (सिद्धालय) ओ० ७४।६,१९३ सिद्धि | सिद्धि ] ओ० ७१,१७२,१९३ सिद्धिगइ [सिद्धिगति] ओ० १६,२१,४४,११७. रा० ८,२६२,७१४,७६६. जी० ३१४५७ सिद्धिमग्ग | सिद्धिमार्ग | ओ० ७२ सिद्धिमहापट्टणाभिमुह [सिद्धिमहापत्तनाभिमुख] জাঁ০ ४६ सिष्य [शिल्प] ओ० ६३. रा० १२,७४८ से ७६१. জী০ ২। ११८, ११९ सिप्पायरिय [ झिल्पाचार्य ] रा० ७७६ सिपि | शिल्पिन् | ओ० १ सिप्पि [ जुक्ति ] जी० ३।७१३ सिष्पिय [शिल्पिक] जी० ३। ५ ९ १ सिबिया [शिबिका] ओ० ४२

सिय [सित] औ० ४६

## सिय-सीओसिणवेदणा

सिय [स्यात्] जी० १।४९,७३,८२; ३१४७,४८, २७० सियरत [सितरक] ओ० ४७ सिया [स्यात्] जी० ३१८४,८४,११८,१९७, २७८ से २८४,६०१,६०२,८६०,८६६,८७२ से नधन, हतर, १०५४,१०५६ सियाल [श्रृगाल] जी० ३१६२० सिर [ शिरस् ] ओ० ४२,७१. रा० ६१,७६,६८७ से ६८ ह सिरय | शिरोज] ओ० १९,५१. रा० १३३. जी० ३।३०३,५९६,५९७ सिरय | शिरस्क | ओ० ६३,६५ सिरसावत्त [शिरसावर्त्त] ओ० २०,२१,४३,४४, ४६,६२,११७. रा० ८,१०,१२,१४,१८,४६, ७२,७४,११८,२७६,२७<u>६,२</u>५२,२६२,**६**४४, £56,62,62,646,000,000,055,055,055 ७२३,७६६. जी० ३।४४२,४४४,४४⊂,४४७, XXX सिरिकंता श्रीकान्ता ] जी० ३।६८८ सिरिचंदा [श्रीचन्द्रा] जी० ३।६८८ सिरिणिलया (श्रीनिलया) जी० ३१६८८ सिरिवाम [श्रीदामन्] जी० ३। १९७ सिरिधर [श्रीधर] जी० ३। द१४ सिरिप्पभ [श्रीप्रभ] जी० ३। ८५४ सिरिमहिया [श्रीमहिता] जी० ३१६८८ सिरिली [दे० श्रीली] जी० १।७३ सिरिवच्छ [श्रीवत्स] ओ० १२,१९,४१,६४. रा० २१,४९,२५४,२९१. जी० ३।२८८, 380,888,885 सिरी [श्री] रा० ४०,१३२,१३४,२३६,७३२, ७३७,७७४,७८२. जी० ३।२६४,३०२,३०४, 383,385,450,458,468 सिरीस [शिरीष] ओ० ६,१०. रा० ३१.

१. श्रीवृक्षेणाङ्कितं – लाञ्छितं वक्षो येषां ते श्रीवृक्षलाञ्छितवससः (वृ० पत्र २७१) ।

जी० ३।२८४,३८८,५८३ सिरीसव [सरीसूप] रा० ७१८. जी० ३।७२३ सिरौसिव [सरीसप] रा० ७०३ सिरोवेदगा [शिरोवेदना] जी० ३।६२८ सिलप्पवालमय [शिलाप्रवालमय] रा० २४४. सिला [शिला] को० १६,२३,४७. रा० २७, **६९४,७४४,७४७. जी० ३।२००,४**९६,६०० सिलातल [शिलातल] जी॰ ३। ४९६ सिलायल [शिलातल] थो० १६ सिलिम [सिलिन्ध] जो० ४७ सिलेस [ स्लेष ] जी० १।७२।४ सिसोय [ इलोक ] ओ० १४६. रा० ५०६ सिव [शिव] ओ० १४,१९,२१,१४. रा० म, २९२,६७१. जी० ३।४४७ सिवग [शिवक] जी० ३।७४० सिवमह [शिवमह] रा० ६८८. जी० श६१२ सिवय [शिवक] जी० ३।७३४,७४१ सिवा [शिवा] जी० ३। ६२०१, ६२२ सिविया [ झिविका ] जी० ३।७४१ सिविया [ शिविका ] ओ० ७,८,१०. रा० ६८७ से ६८९. जी० ३।२८५ सिस्स [शिष्य] जी० ३।६१० सिस्सिरिली [दे०] जी० १।७३ सिहंडि [शिखण्डिन्] ओ० ६४ सिहर [शिखर] ओ० ४. रा० ४२,४६,१३७, २३१,२४७. जी० ३।२७४,३०७,३७३ सिहरि [शिखरिन्] रा० २७९. जी० ३।२२७, 888,988 सीउंढी [दे०] जी० १।७३ सीओदा [शीतोदा] जी० २।५६८,७०८ सीओभास [शीतावभास] ओ० ४. रा० १७०, १७३. जी० ३ २७३ सीओया [शीतोदा] जी० ३१४४५ सीओसिणवेदणा [ शीतोष्णवेदना ] जी० ३।११२, ११३,११४

सीत [शीत] जी० ३!२२,११३,११४,११८, 398 सीतल [ शीतल ] जी० ३।११८,११६ सीतवेदणा [शीतवेदना] जी० ३।११२ से ११४, 398 सीता [शीता] रा० २७१. जी० ३।३००,६३२, ६३९,६६६८,७४६ सीतीभूय ∫ शीतीभूत } जी० ३।११ म सीतोदय [शीतोदक] जी० १।६२ सीतोवा [शीतोदा] रा० २७१. जी० ३।७४६, ন 🛿 ४ सीसोसिज [शीतोष्ण] जी० ३।११२,११४ सीष् [सीधु] जी० ३। ५८६,८६० सीमंकर [सीमङ्कर] ओ० १४. रा० ६७१ सोमंतोवणयण [सीमन्तोपनयन] जी० ३।६१४ सीमंघर [सीमन्धर] अो० १४. रा० ६७१ सीमा [सीमा] ओ० १ सीय [ शीत ] ओ० ४,८९,११७. रा० १७०,७०३, ७९६. जी० ३1११२,११३,११४,११८,११६, २७३ सीय [सित] ओ० १९४ सीयच्छाय [शीतच्छाय] ओ० ४. रा० १७०, ७०३. जी० ३।२७३ सीयकुड [शीतकुट] जी० ३।११९ सीयपडल [शीतपटल] जी० ३।११६ सीयपुंज [शीतपुञ्ज] जी० ३।११६ सीयभ्य [ शीतीभूत ] जी० ३।११८,११६ सीयल [ भीतल ] रा० १५६,१७४,६७०. जी० ३।२००,३३२,६०४ सोयवेदणिज्ज [ शीतवेदनीय ] जी० ३।११६ सीयवेयणिज्ज [ गीतवेदनीय ] जी० ३।११६ सीया [ शीता ] जी० ३१४४४,५०० सीया [शिबिका] ओ० १,१००,१२३. रा० १७३. जी० ३।२७६,५८१,५८४,६१७ सील [ शील ] ओ० ४६ सीलइ [शीलजित्] ओ० १६

७६२

सीलम्बय [ शीलव्रत ] ओ० १२०,१४०,१४७. रा० ६९८८,७५२,७८७,७८१ सीवण्णी [श्रीपर्णी] जी० १।७१ सीसगपाय [सीसकपात्र] ओ० १०५,१२८ सीसगबंधण [सीमकवन्धन] ओ० १०६,१२६ सीसगभारग [सीसकभारक] रा० ७६०,७६१ सीसघडी | सीर्थघटी ] रा० २५४. जी० ३४४१५ सीसछिण्णाग | शीर्षछिन्नक | ओ० ६० सीसछिण्णय | गीर्षछिन्नक | रा० ७६७ **सीसपहेलियंग** [ झीर्वप्रहेलिका ङ्ग ] जी० ३।**८४**१ सीसपहेलिया [शीर्षप्रहेलिका] जी० ३१८४१ सीसागर [सीसाकर] जी० ३।११८ सीह [शीझ] जी० ३।६८८ सीह [सिह] ओ० १९,२७,४८. रा० २४,३७, ≂१३. जी० ३।∽४,≂≍,२७७,३११,४९६, ४९७,६२०,६३१,७५२,१०१४ सीहकण्ण [सिंहकर्ण] जीव रे।२१६ सीहकण्णी (सिहकर्णी] जी० १७७३ सीहमति [ शीझगति ] जी० ३।६८६ सोहघोस [सिंहघोष] जी० ३।५९८ सीहज्झय [सिंहध्वज] रा० १६३. जी० ३।३३४ सोहणाय [सिहनाद] ओ० ४२. रा० ६८७,६८८. জী০ হাৎপ্ৰ,দ্পশ্ব सीहणिक्कीलिय |सिंहनिष्कीडित | ओ० २४ सीहणिसाइ [सिंहनियादिन्] जी० ३।५३६ सोहनाद [सिंहनाद] जी० ३१४४७ सीहनाय [सिंहनाद] रा० २८१ सीहनिक्कीलिय [निहनिष्कीडित] ओ० २४ सोहपुच्छियग [सिंहपुच्छितक] ओ० १० सोहमंडलपविभत्ति [सिंहमण्डलप्रविभक्ति] रा० ६१ सोहमुह [सिंहमुख] जी० ३।२१६ सीहस्सर [सिंहस्वर] रा० १३४. जी० ३।३०४, ४६न सीहासण [सिंहासन] ओ० १३,१६,२१,१४,६४. रा० ७,५,३७,३९,४१ से ४४,४७,४१,६७,

६८,१४८,१६४,१८१,१८३,१८६,२०४ से ₹09,**₹१६,**₹४**३,**₹६**४,**₹६**७,₹६**,₹७७, २७६,२८३,२८६,२८८,३००,३२१,३३८, ३४२.४७४,४३४,४९४,६४७, जी० ३१२९३, **૨**૧૧,૨**૧૨**,૨**૨**,૨૨૯,૨૪૫,૨૫૫,૨૫૬, **३५६,३६६,३६५,३**७५,४०५,४**१**६,४२५, xex.x=e'xos'x60'xss'xxo'xxe' \*\*\*\*\* 680,082,088,020,082,082,085, ७७०, ५९२, १०२४ से १०२६ सुअक्खाय [स्वाख्यात] ओ० ७१ से ५१ सुअलंकित [स्वलङ्कृत] जी० ३।३०३ सुअलंकिय [स्वलङ्कृत] रा० १३३ सुद्व [गुचि] ओ० १९,४४,६३,६८. रा० १९, २८१. जी० ३.४४७,४१६, ११७ मुइभूय [शुचीभूत] ओ० २१. रा० ७६४, ०२ सुइसमायार [ शुचिसमाचार ] ओ० १८ सुईभूध [शुचीभूत] बो० १४. रा० २७७ सुउत्तार [सुखोत्तार] रा० १७४. जी० ३।२८६ सुउमाल [सुकुमार] ओ० ६३ सुओवार [सुखावतार] रा० १७४ सुंक [शुल्क] रा० ७२७ सुंबर [सुन्दर] ओ० १४,१९,१४३. रा० ६७३, ५०१. जीव ३।५९६,५१७ सुंबरंगी [सुन्दराङ्गी] वो० १४. रा० ६७२ **सुंसुमार** [ गूंशुमार, शिशुमार ] जी० १। ६६,११ ज सुंसुमारिया [शिशुमारिका] रा० ७७ सुंसुमारी [ शुंशुमार, शिशुमारी ] जी० २।४ सुक [ যুক] जी० ३। ११ €७ सुकता [सुकान्त] जी० २। ५७२ सुकवित [सुक्वथित] जी० ३। ४७२ सुकतिय [सुक्वथित] जी० ३१८६६ सुकम [सुकत] थो० २,५२,५५,६३ से ६५.

रा० ३२,१७३,२५ १,६५१,६८७,६८९. जी० ३।२९४,३७२,४४७ सुकुमाल [सुकुमार] थो० ४,५,१४,१९,६३, १४३. रा० २२८,२८०,६७२,६७३,८०१. जी० ३।३⊂७,४४६,५६६,५१७,६७२,१०६द सुक्क [जुक] ओ० ४०. जी० ३।११११ सुक्क [शुब्क] रा० २६,७८२ जीव ३।२८२ सुक्क [शुक्ल] जी० हा१५४ सुक्क (झाण) [शुक्लध्यान] ओ० ४३ सु**वकपक्ल** [ शुक्लपक्ष ] जी० ३।=३५। **१**५ सुक्कलेस [जुक्ललेश्य] जी० ९।१९१ सुक्कलेसा [जुक्ललेक्या] जी० ३।१५० सुक्कलेस्स [ शुक्ललेश्य ] जी० ३।१८५,१६६ **मुक्कलेस्सा** [जुक्ललेश्या] जी० ३।११०३ सुविकल [शुक्ल] ओ० १२. रा० २२,२४,२६, १२८,१३२,१४३. जी० १।४,३४,३४,४०, **٤**३६; ३१२२,४४,२७८,२८२,२६०,३०२, **રે**ર૬,**રે**રર, રેદછ, રદર, **૨**૦૭૪, **૧૦૭૬, ૨**૦૯૪ सुविकलग [ राक्तक ] जी० ३।२८२ सुबल [सौख्य] ओ० १९४।२१ सुगंध [सुगन्ध] ओ० २,५५,६३. रा० ६,१२,३२, १३२,२३६,२५१,२५४. जी० ३।३०२,३७२, 889,8886,8865,865 सुगंधि [सुगन्धि] ओ० ७,५,१०. रा० १४६. জী৹ ২،২৬६,২২২ सुगंथिय [सौगग्धिक] ओ० १४०. रा० २७६, < १**१**. जी० ३।४४४ सुगुज्झदेस [सुगुह्यदेश] ओ० १९ सुगूढ [सुगूढ] जी० ३।५९७ सुघोसा [सुघोषा] रा० ७७. जी० ३।७५,४८८ सुवरिय [सुचरित] रा० ८१४ सुचि [ शुचि ] जी० ३। ५१६ मुचिग्ण [सुचीर्ण] ओ० ७१. रा० १८५,१८७. जी० ३।२१७,२६७,२६८,३४८,४७९ मुजात [सुजात] जी० ३।३८७, ४८६,४१६,४१७

सुजाय [सुजात] ओ० ५,८,१४,१५,१९,१४३. रा० १७४,२८८,६७१ से ६७३,८०१. जी० ३।११८,११६,२७४,२८६,४६६,४६७, ६७२ सुजाया [सुजाता] जी॰ ३।६९९।२ सुज्झ [दे०] रा० १७४. जी० ३।२८६ सुद्रिय [सुस्थित] जी० ३।५९४,७२१,७५४,७५६, ७६०,७६१ सुट्टिया [सुस्थिता] जी० ३।७६१ √सूण [श्र]---सुणंतु. रा० १४---सुणह. ओ० १९५।१७ -- सुणिस्सामो .रा० १६ ---सुणेस्तामो. झो० ५२. रा० ६८७ सूण [ श्वन् | जो० ३:५४ मूणग [ शुनक ] जी० ३।६२० मुगति [सुनति] रा० ७६,१७३. जी० ३१२=५ सुणिउण [सुनिपुण] रा० १७ सणिद्ध [सुस्निग्ध] ओ० १९ सुणिम्मिय [सुनिमित] जी० ३१४९७ सुणिसिय [सुनिशित] जी० ३।४१० सुणत | शृण्वत् | रा० ७७४ **सुणेत्ता** [श्रुत्वा] रा० ६८८ सुण्हा | स्नुषा ] जी० ३।६११ सुतिबलधार |सुतीक्ष्णवार] रा० २४६. জী৹ ২।४१० सुत्त [सूत्र] रा० १३२,१५३,२३५. जी० ३।३०२, ३२६,३९७ मुत्त [सुप्त] ओ० १४८,१४९. रा० ८०९,८१० **सुत्तओ |**सूत्रतस् ] को० १४६. रा० ८०६,८०७ मुत्तग [सूत्रक | जी० ३।४९३ सत्तखेड्र' [सूत्रखेल ] ओ० १४६. रा० ८०६ **सुत्तरुइ** [सूत्ररुचि] ओ० ४३ **सुत्ति** [ शुक्ति ] जी० ३।४⊂७ सुत्थिय | सुस्थित | जी० ३।७६१ सुदंसण [सुदर्शन] जी० ३।८०९ १. सूत्रखेलं --- सूत्रकीडा, अत्र खेलशब्दस्य 'खेड्ड' इत्यादेशः (जंबु. वृत्ति)

सुवंसणा [सुदर्शना] जी० ३।६६८,६७२.६७३, ६७५ से इय३,इयद,इयह,इहर से ७००, 983 083,230 मुदुत्तार [सुदुस्तार] ओ० ४६ सुद्ध [शुद्ध] ओ० २७. रा० ७६,१७३,⊏१३. जी० ३।२८४,४८८ मुद्धदंत [शुद्धदन्त] जी० ३।२१६ सुद्धदंता [शुद्धदन्ता] जी० २।१२ सुद्धण्पावेस [ शुद्धप्रावेश, शुद्धपावेश्य, शुद्धात्मवेश ] ओ० २०,४३. रा० ६८४,६९२,७००,७१६, ७२६,=०२ **सुद्वपुढवो** [ शुद्धपृथ्वी ] जी० ३।१८५,१८७ सुद्धवात [ शुद्धवात ] जी० ३।६२६ **मुद्धवाय** [जुद्धवात] जी० श्व... १ **सुद्धागणि** [शुद्धाग्नि] जी० १।७८,८५ **मुद्धेसणिय** [शुद्धैषणिक] ओ० ३४ सुद्धोदय [शुद्धोदक] ओ० ६३. जी० ११६५ सुधम्मा [सुधर्मा] रा० २६७,६४६.जी० ३।३७२, *₹६€,४१२,४२१,४२६,४४२,१०२४,१०२*४ सुनिउण [सुनिपुण] रा० १२ सुनिवेसिय [सुनिवेशित] ओ० ६. जी० ३।२७५ सुपइट्ठ [सुप्रतिष्ठ] रा० २४व सुपइट्ठक (सुप्रतिष्ठक) जी० ३।४९७ सुपइट्रग [सुप्रतिष्ठक] रा० १४२. जी० ३।४८७ सुपइट्टिय [सुप्रतिब्ठित] रा० १३३,१७३,२२८, ७४०,७४२,७४८. जी ३।२८४,३०३,६७९ **सुपक्क [सुपक्व] जी० ३**।४८६,८६० सुपडियाणंद [सुप्रत्यानन्द | ओ० १६३ सूपण्णत्त [सुप्रज्ञप्त] ओ० ७६ से ८१ सुपण्ह [सुप्रक्त] ओ० ४६ सुपतिद्व [सुप्रतिष्ठ] २ा० २७१. जी० ३।३५५ सूपतिट्टक [सुप्रतिष्ठक] जी० ३।४१९,४४१ सुपतिट्टग [सुप्रतिष्ठक] जी० ३।३२४ स्पतिद्वित | सुप्रतिष्ठित ] जी० ३।३८७,३९३, 808

لاعق

सुयतिद्विय [सुप्रतिष्ठित] रा० ४२,४६,२३१, 280,028,028,028,080,0882,0888. जी० ३।५९६,६७२ सुपरक्तंत [सुपराकान्त] रा० १९५,१८७. जी० ३।२१७,२६७,२६८,३४८,४७६ सुपरिणिट्टिय [ सुपरिनिष्ठित | ओ० ६७ सुपस्सा [सुपक्ष्या] रा० द१७ सुपिणद्ध [सुपिनद्ध] जी० ३।२८४ सुष्पइट्टिय [सुप्रतिष्ठित] ओ० १९ सुष्पडियाणंद [सुप्रत्यानन्द] ओ० १६१ सुप्पबुद्धा (सुप्रवुद्धा) जी० ३।६९९ सुष्पभ [सुप्रभ] जी० ३१८७४ सुष्पभा [सुप्रभा] ओ० १९४ सुप्पमाण [सुप्रमाण] ओ० १३,१९. जी० ३।४९६, 238 सुप्वसारिय [सुप्रसारित] ओ० ४, द. जी० ३।२७४ सुष्वसूय [सुप्रसूत] आ० १४. रा० ६७१ **सुफा**स [सुस्पर्श] जी० ३।६५१,६८७ सुबद्ध [ मुबद्ध ] ओ० १९. रा० १७४. जी० ३।२८६,४९६,४९७ सुबहु [सुबहु] रा० २६६,२६८,७४० से ७४३, ७७४. जी० ३।४३२,५३४,५४१ सुबिभगंध [सुगन्ध] जी० १।४,३६,३७,४०; ₹1898,85% सुक्रिमगंथल [सुगन्धरव] जी० ३।६५% सुबिभसह [सुशब्द] जी० ३। १७७, १८ सुब्भिसहत (सुभव्दत्व) जी० ३१९४३ सुभ [गुभ] ओ० ४१,११६,१४६. रा० १८४, १८७,६७० जी० १११३४; ३।२१७,२६७, 285,345,408,807,808,930,808 सभग (सुभग) ओ० १२,१५०. रा० २३,१७४, १९७,२७९,२८८,८११. जी० २।११८,११६, **?**\$\$,7=%,**7**&**?** सुभ**चवलुकं**त [जुभचक्षुःकान्त] जी० ३।६३**३** सुभद्द [सुभद्र] जी० ३। १२५

सुपतिद्विय-सुरभि

सुभद्दा [सुभद्रा] ओ० ४४,४८,६२,७०,७१,८१. জী০ ই।হৃহহ सुभाविय [सुभावित] ओ० ७९ से =१ सुभासिव [सुभाषित] ओ० ७१ से दश सुभिक्ल (सुभिक्ष) ओ० १,१४. रा० ६७१ सुभूम [तुभूम] जी० ३।११७ समज्झ [मुमध्य] रा० १३३. जी० ३।३०३ सुमण | युमनस् | जी० ३। १२४, १३४ सुमणदाम [सुमनोदामन् | रा० २७६,२८४. জী০ ২।४४২,४২१ सुमणभद्द [सुमनोभद्र] जी० ३:६२व सुमणा [सुमनसी ] जी० ३।६९९,९२० सुमहम्ब [सुमहार्थ्य] ओ० ६३ मुय [शुक] ओ० ६. जी० ३।२७४ सुध [श्रुत] ओ० ५२. रा० १६,६८७,६८९ सुयअण्णाणि [श्रुताज्ञानिन्] जी० १।३०,०७,९६; 31808,8800; 81880,202,205,205 सुवणाण [श्रुतज्ञान] ओ० ४०. रा० ७३९,७४२, ७४६ मुयणाणविणय [श्रुतज्ञानविनय] ओ० ४० सुयणाणि [श्रुतज्ञातिन्] ओ० २४. जी० १।८७, ६६,११६,१३३;३११०४,११०७; ६११४६, 250,252.255,266,285,708,705 सुयदेवया [श्रुतदेवता] रा० ५१७ सुयनाणि (श्रुतज्ञानिन् ] जी० १।१३३ सुयपिच्छ [ शुकपिच्छ ] रा० २६. जी० ३।२७६ सुयमुह [ शुकमुख ] ओ० २२. रा० ७७७,७७८, 955 सुरइ [सुरति] रा० ७६,१७३ मुरइय [सुरचित] ओ० ४९ मुरति [सुरति] जी० ३।२०५ मुरभि [सुरभि] ओ० २,७,८,१०,४६,४५. रा० ३२,१३१,१४७,१४८,१५८,२२८,२८०, रंत१,२५४,२६१,३४१,६७०. जी० ३।२२, २७६,३०१,३३२,३७२,३८७,४४६,४४७, ४४१,४६=

७६४

सुरम्म [सुरम्य] ओ० १,६ से ८,१०,१३. रा० २२,३७,२४४. जी० ३।२७४,२७६, 388,356,800,858,858 सुरवर | सुरवर ] रा० ८,१२ सुरस | सुरस ] जी० ३।६८०,६८६ सरहि (सुरभि) ओ० ६३. जी० ३।६७२ **सुरा** [सुरा] जी० ३।५८६ सुरूव [सुरूप] ओ० १४,४७ से ४१,१४३. रा० ५३,६७२,६७३,५०१. जी० ३।२६०, १७८,१८४ सुरूवग [सुरूपक] जी० ३। ५९६ सुरूवत्त [सुरूपत्व] जी० ३।१९४ सुलभबोहिय [सुलभबोधिक] रा० ६२ सुललिम [सुललित] रा० १७३. जी० ३।२८५ सुवण्ण | सुवर्ण ] ओ० २३,४२,६३. रा० ४०,१३२, १७४,२८१,६८७ से ६८६. जीव ३।२६४, २न६,३०२,३१३,४४७,६०न,न४०,नन४, ११२२ सुवण्ण [सुपर्ण] ओ० ४८,१२०,१६२. रा० ६६८, ७४२,७८९. जी० ३।२३२ सुवण्णकूला [सुवर्णकूला] रा० २७९. जी० ३।४४५ सुवण्णजुत्ति [सुवर्णयुक्ति] ओ० १४६. रा० ५०६ सुवण्णजूहिया [सुवर्णयूथिका] रा० २८. जी० ३।२८१ स्वण्णहार [सुपर्णद्वार] जी० ३१८८४ सुवण्णपाग [सुवर्णपाक] ओ० १४६. रा० ८०६ सुवण्णमणिमय [सुवर्णमणिमय] रा० २७९,२८०. জী০ ২। ধধ্য सुवण्णचण्पमणिमय [सुवर्णरूप्यमणिमय] रा० २७६, २८०. जी० ३।४४५ सुवण्णरुष्पमय [सुवर्णरूप्यमणिमय] रा० १७४. जी० ३१४०२,६०२ स्वण्णरुप्पामणिमय [सुवर्णरूप्यमणिमय] জী০ হাপপথ

सुवज्जरूपामय [सुवर्करूप्यमय] रा० १९,१५३, १९०,२३४,२३६,२४०,२७४,२८०. জীত **३।२६४,२८७,३२**६,३**६७,३**६८,४४४ सुवण्णागर [सुवर्णाकर] रा० ७७४. जी० ३१११= सुवयण [सुवचन] ओ० १२. रा० ६६७,६८७ सुवासित [सुवासित ] जी० ३१८७८ सुविणीय [सुविनीत] रा० ७९ से मश सुविभत्त [सुविभक्त] ओ० १,४,८,१०,१९. ग० ३२,१४५. जी० ३।२६८,२७४,३७२, **પ્**દ૬,પ્ર**દ**૭ सुविरइय [सुविरचित] रा० ३७,२४५. জী০ হা४০৬,४९६,४१७ सुविरचित [सुविरचित] जी० ३।३११ सुविहि [सुविधि] जी० ३। ५१४ सुव्वत्त [सुव्यक्त] ओ० ७१. रा० ६१ सुव्वय [सुवत] ओ० १६१,१६३ सुसंपउत्त [सुसम्प्रयुक्त] ओ० ४६,६४. रा० ७६, १७३,६८१. जी० ३।२८४,४८८ सुसंपग्गहित [सुसम्प्रगृहीत] जी० ३।२८५,३०२ सुसंपग्गहिय [सुसम्प्रगृहीत] ओ० ६४. रा० १३२, १७३ सुसंपरिगहित [सुसम्परिगृहीत] जी० ३।२५४ सूसंपरिग्गहिव [सुसम्परिगृहीत] रा० १७३,६८१ सूसंपिणद्ध [सुसंपिनद्ध] रा० १७३,६८१ सुसंभास [सुसंभाष] ओ० ४६ सुसंबुय [सुसंवृत] ओ० ६३ सुसंहय [सुसंहत] ओ० १९ सुसम्मन्य [सुसंस्कृत] जी० २।५९२ सुसज्ज [सुसज्ज] ओ० ४७. रा० ४३ षुसमाहिव [सुसमाहित] ओ० ३७ सुसवण [सुश्रवण] जी० ३।५९६ सुसब्ब [सुनर्व] रा० १४२. जी० ३।३२४ सुसामण्णरव [सुश्रामण्यरत ] ओ० २५,१६४ **सुसाहत** | सुसंहत | जी० ३। **५ ६ ६** सुसिणित [सुस्निग्ध] जी० ३। १९७ मुसिर | शुथिर | रा० ११४,२८१

सुरभिगंध-सुसिर

सुरभिगंध [सुरभिगन्ध] रा० ६,१२

UĘU

ससिलिट्र [सुप्रिलल्ट] ओ० १९,६३,६४. रा० ३२, ४२,४६,२३१,२४७. जी० ३।३७२,३९३,४०१, 732 सुसील | सुशील] ओ० १६१,१६३ **मुसुद्द** [सुश्रुति] ओ० ४६ सुस्तर [सुस्वर] रा० १३४. जी० ३।३०४,४९७, ५९८ सुस्सरघोस [सुस्वरघोष] रा० १३४. जी० ३।३०४ सुस्सरणिग्घोस [सुस्वरनिर्घाप] जी० ३। १९८० **सुस्सरा** | सुस्वरा | रा० १४ **सुस्सवण** [सुश्रवण] ओ० १६ सुस्सूसणाविषय [सुश्रूषणाविनय] ओ० ४० सुस्सूसमाण [शुश्रूषमाण] जो० ४७,४२,६६,८३. रा० ६०,६५७,६९२,७१६ सुह [सुख] ओ० १,२३,२६,४२,१६४।१४,१६, २२. रा० १४,२७४,२७६,६ = ३,६९७. जी॰ ३११२हाह,४४१,४४२,५६४,६०४, दइदा १३ सुह [ कुम ] ओ० ६ से ६,१०. जी० ३।२७४,२७६ सहंसुह [सुखंसुख] ओ० १९. रा० ६०६,७११, দ০४. জী০ ২।১१৬ सूहफास [सुखस्पर्श, शुभस्पर्श] रा० १७,१८,२०, ३२,१२९,१३०,१३७. जी० ३!२नन,३००, ३०७,३७२ सुहम्मा [सुधर्मा] रा० ७,१२ से १४,२०६,२१०, २३५ से २३७,२४०,२५१,२७६,३५१,३४६, **₹**¥७,**₹७**६,**₹€**४,३<u>६</u>४,**६४७**,७<del>६</del>४,७</del>€४, ००२. जी० ३।३९७,३६८,४११,४१२,४१६, ५२१ से ५२५,५५६,५५७ सुहलेसा [ शुभलेषण] जी० ३।५३५।२६ **सुहलेस्सा** [शुभलेश्या] जी० ३१८४५ सुहविहार [सुखविहार] जीव ३१४९४ सुहासण [सुखासन] रा० ७६४,७१४,५०२ मुहि [मुखिन्] जो० १६४।१९,२२ **सुहिय** [सुहृद्] जी० श६१२

सुसिलिट्ठ-सुहुमवणस्सतिकाइय

सूहिरण्ण [सुहिरण्य] रा० २८ सुहिरण्णया [सुहिरण्यका] जी० ३।२५१ सुहम [सुक्ष्म] ओ० ४७,१७०,१८२. रा० १६०, २४६. जी० ३1१३३,३३३,४१७,४६६; े प्रार१ से रइ,र४ से २७,इ४ से इ६,४१,४२, ४७ से ६०; हाह४,ह६,हह,१०० मुहुमआउ [सूक्ष्माप्] जी० ४।२४ सुहमआउकाइय | सूक्ष्माप्कायिक ] जीव १।२७,३४ सुहुमआउक्काइय (सूक्ष्माप्कायिक) जी० ११६३,६४ सुहुमकाल [सूक्ष्मकाल] जी० ६।९९ सुहुमकिरिय (सूक्ष्मकिय ) ओ० ४३ सुहुमणिओद (सूक्ष्मनिगोद | जी० १।३८,३९,४४ से ४६,५२,६० सुहुमणिओदजीव [सूक्ष्मनिगोदजीव] जी० ४।४३, 28,28,50 सुहुमणिओय [सुक्ष्मनिगोद] जी० ४।२१,२२,२४, ૨૭,**૨૪,૨**૪ सुह्रमणिगोद [सूक्ष्मनिगोद] जी० १।४४ सुहुमणियोदजीव [सुक्ष्मनिगोदजीव] जी० ११६० सुहुमणिगोय [सूक्ष्मनिगोद] जी० ४।२६,३६ सुहुमतेउकाइय [सूक्ष्मतेजस्कायिक] जी० ५।२५, २७**,३६** सुहुमतेउक्काइय [सूक्ष्मतेजस्कायिक] जी० १।७६, 66: 8138 सहमनिओग [सूक्ष्मनिगोद] जी० १।२४ सुद्वमनिओय [सूक्ष्मनिगोद] जी० १।३४,३१ सुहुमनिगोद [सूक्ष्मनिगोद] जी० १।३४ सुहुमपुढविकाइय [सूक्ष्मपृथ्वीकायिक] जी० १।१३; १४,४६; ३।१३२,१३३, ४।२,३,२४,२४, २७,३४ सहमपुढवी [सूक्ष्मपृथ्वी] जी० ११२७ सु**हुमवणस्सइकाइय** [सूक्ष्मवनस्पतिकायिक] জী৹ શ૬૬,૬७; ৼાર७,३४,३૬ सुहुमवणस्सति [सूक्ष्मवनस्पति] जी० ११२४ सुहुमवणस्सतिकाइय [सूक्ष्मवनस्पतिकायिक] জী৹ খা২খ,২৬,३૬

सुहुमवाउकाइय (सूक्ष्मवायुकायिक] जी० ४।२७, зX सुहुमवाउक्काइय [सूक्ष्मवायुकायिक] जी० १।५० सुहुमसंपरायचरित्तविणय [सूक्ष्मसम्परायचरित्र-विनय∣ ओ० ४० **सुहुमसरीर | सूक्ष्मणरीर | जी० ३**११२९१६ सुहुय [सुहुत] ओ० २७. रा० ५१३ मुहोतार | सुखोत्तार | जी० ३। ५ १४ सुहोदय { शुभोदक, सुखोदक | ओ० ६३ सुहोयार | सुखावतार | जी० ३।२८६ सूइभूत [ सूत्रीभूत ] जी० ३।४४३ सुई [जुवी] रा० १९,१३०,१७४,१००,१९७. जी० ३।२६४,२६६,२≂७,३०० सूईकलाव [शूचीकलाप] जी० १७७,७९ सूईपुडंतर [जूचोपुटान्तर] रा० १६७. जी० सर्दह मूईफलय | यूचीफलक[ रा० १९७. जी० ३।२६६ सूईभूव | शूचीभूत | रा २८८ सूईमुख [जूचीमुख] रा० १९७ सूईमुह [ जूचीमुख] जी० ३।२६९ मुचिकलाव [ शूचिकलाप ] जी० २। ५४ सूणगलंखणय स्णालाञ्छणक रा० ७६७ समाल [सुकुमार] रा० २८५. जी० ३।२७४,४५१ सुयगडघर [सुत्रकृतधर] ओ० ४५ सूयपुरिस [सूपपुरुष] जी० ३।४६२,४९७ सूर [सूर] ओ० १९,२२,२७,४०. रा० १३३, ७७७,७७८,७८८,५८२,८०२,८१३. जी० २।१८; 31225,303,256,263,266,062,060, 056,008,003,004,000,008,53=1X, १०,१४,२१,२३,२४,२७,२८,२८,३२,८३७, ६५०,६५३,१०१६,१०२०,१०२१,१०२६, ११२२ सूरकंतमणि [सूरकान्तमणि] जी० १।७= सूरणकद [सूरणकन्द] जी० १।७३ सूरत्यमणपविभत्ति [सूरास्तमनप्रविभक्ति] रा० ५१

सूरवीव [सूरदीप] जी० ३।७६४,७६६,७७१,७७७ सूरद्दोव [सूरद्वीप] जी० ३। १२७ सूरपरिएस [सूरपरिवेश] जी० ३। ८४१ सूरपरिवेस | सूरपरिवेश ] जी० ३।६२६ सूरप्पभा |सूरप्रभा | जी० ३।७६५,१०२६ सूरमंडल [सूरमण्डल] रा० २४. जी० ३।२७७, 480 सूरमंडलपविभत्ति [सूरमण्डलप्रविभक्ति] रा० १० सूरवर्डेंसय [सूरावतंसक] जी० ३।१०२६ सूरवरोभास [सूरवरावभास] जी० ३। ६३८ सूरविमाग [सूरविमान] जी० २ा४१; ३।१००३ से १००५,१००६,१०११,१०२६ सूरागमणयविभत्ति [सूरागमनप्रविभक्ति] रा० ८७ सूराभिमुह [सूराभिमुख] अं० ११६ सूरावरणपविभत्ति [सूरावरणप्रविभक्ति] रा० ५५ सुरावलिपविभत्ति [सुरावलिप्रविभक्ति] रा० ८४ सूरिय [सूर्य] ओ० १६२. रा० ४४,१२४. जीव से १७६,१७८,१८०,१८२,२५७,७०३, ૡ૱૱ૢૡ**૾ૡ૱**ૢૡ૱ૢૡ૱ૢૡ૱ૢૡ૱ૢૡ૱ न४५,६नन से १०००,१०२०,१०३७,१०३न सूरियकंत [सूर्यकान्त] रा० ६७३,६७४,७९१ से 98₹ सुरियकंता [सूर्यकान्ता] रा० ६७२,६७३,७५१, ७७९,७९१ से ७९४,७१६ सुरियाम | सूर्याभ ] रा० ७,६,१०.१२ से १६,४१ से ४४,४६ से ४९.४५ से ६५,६८,६६,७१ से ७४,११९ से १२०,१२२,१२४ १२६,१२६, 887,888,846,840,846,740,740,246,245 २६८,२७०,२७४ से २९१,६५४ से ६६७, ७१६ से ७११ सुरियाभविमाणपद | सूर्यामविमानपति | २७० सूरियाभविमाणवासि | सूर्याभविमालवासिन् | रा० ७,१४ से १७,४४,४६,४८,२८०,२८२, 258,288,589 सूरिल्लिमंडवग [दे० सूरिल्लिमण्डपक] रा० १८४. জী০ ২।২৪২

## सूरिल्लिमंडवय-सोइंदिय

सूरिल्लिमंडवय [दे० सूरिल्लिमण्डपक] रा० १८५ सूरुग्गमणपविभत्ति [सुरोद्गमनप्रविभक्ति] रा० ८६ सूरोवराग [सूरोवराग] जी० ३।६२६,५४१ सूल | जूल | ओ० ६४. जी० ३।११० सूलग्ग | जूलाग्र | जी० ३.८४ सुलभिष्णग [ जुलभिन्नक] ओ० ६०. रा० ७४१ सुलाइग | जुलातिग | रा० ७५१ सुलाइय [ जूलातिग | रा० ७६७ सुलाइयग [जूलाचितक, जूलातिग] ओ० ६० से [दे०] ओ० ३१. रा० १२. जी० १।२ सेव सितु | ओ० १,७,८,१०. जी० ३१२७६ सेउकर |सेतुकर | ओ० १४. रा० ६७१ सेज्जा [ शय्या ] ओ० ३७,१२०,१६२,१८०. TIO & EC, 608, 908, 988, 983, 982, 988, 320 सेट्टि | दे० श्रेष्ठिन् | आं० १८,२३,५२,६३. रा० ६८७,६८८,७४४,७४४,७४६,७६२, ৬६४. জী০ ३।६०६ सेढी [श्रेणी] औ० १९,४७. रा० २४,७६०,७६१. जी० ३।२७७,४९६,७२३,७२६ सेणा [सेना] को० ४४ से ४७,६२,६४ सेणावइ [सेनापति ] अं१० १८,२३,४२,६३. Kia Ezalézziaox,axx,axetez,aez सेगावच्च |सेनापत्य] ओ० ६८. रा० २८२. जी० ३।३४०,४४८,४६३,६३७ सेणावति | सेनापति | जी० ३।६०६ सेत ( क्वेत ) जीव ३।३००,३४४,४५४,८८५ सेतासोध [ श्वेताशांक ] जी० ३।२८२ सेधा | दे० ] जी० २। ६ सेथ [ण्वेत] आ० ४१,६४,६७,१६४. रा० १२६, **१३०,१६२,१६०,२१०,२१२,२**२२,२==. जी० दे।२६४,३००,३१२,३३५,३७३,३५१, ६४७ सेच [स्वेद] ओ० ८९,६२. जी० ३।५९८

सेय [श्रेयस् ] लो० ११७. रा० ६,२७५,२७६, ७७४,७७७,७५१. जी० ३।४४१,४४२ सेय [सेक] जी० ३।५९२ सेयकणवीर [श्वेतकणवीर] रा० २६. जी० ३।२५२ **सेयबंधुजीव** [श्वेतबन्धुजीव] रा० २९. जी० ३३२ न २ सेयमाल [धवेतमाल] जी० ३। ५ ८२ सेयविया [ श्वेतविका ] रा० ६६९ से ६७१,६८१, ६८३,६९९,७००,७०२ से ७०४,७०६,७०८, ७१० से ७१३,७१६,७२६,७५० से ७४३, 520,020,020,020,300,500 सेवासोग [श्वेताजोक | रा० २६ सेरियागुम्म [सेरिकागुल्म] जी० ३।४८० सेल [ गंल ] ओ० ४६. जी० ३। १९४ सेलपाय [शैलपात्र] ओ० १०५, १२८ सेलबंधण [मैलबन्धन] ओ० १०६,१२६ सेला [ शैला | जी० ३।४ सेलु [ बेलु ] जी० १।७१ सेलेसी [शैलसी] ओ० १०२ सेवासगुम्म [शैवालगुरुम] जी० ३।१८० सेवालभविल [शैवालभक्षिन्] ओ० १४ सेस [शेष] ओ० १२०,१६२. रा० २३९,६९८, ७१२,७८६. जी० १।६४,६४,७७,७६,८२, मन, ६०,१०१,१०३,१११,११२,११६,१२१, १२३,१२४;२१३७,८९,१२०; ३:६८ से ७२, १६ ।,१६४,२१६ से २२६,२४३,२४८,३४४, E=0,00E,088,088,080,080,0E2,0E2, ७६६,७६**६,७७०,७७२,५३५**१२२,५**४१,** ११४ से ११६,१३६,९४०,६६२,११२२; 1:21,28;28; 818,6 सेहवेयावच्च [शैक्षवैयावृत्य] ओ० ४१ √सेहाव [शिक्षय्]-सेहाविहिति. ओ० १४६. —**-से**हावेहिइ. रा० =०६ सेहावित्ता [शिक्षयित्वा] ओ० १४६

- सेहावेत्ता [शिक्षयित्वा] रा० ८०७
- सोइंदिय [श्रोवेन्द्रिय] ओ० ३७. जी० १।१३३

सोंडियालिछ [ शुण्डिकालिञ्छ ] जी० ३।११८ सोंडीर [शीण्डीर | ओ० २७. रा० ८१३ सोक्ख [सीस्य] ओ० २३,१९४1१३,१४,१७. जी० ३।११८८,११९ सोग [ शंक ] ओ० ४६. रा० ७६५. जी० ३।१२८ सोगंथिय | सौगन्धिक | ओ० १२. रा० १०,१२, १८,२३,६४,१६४,१७४,१९७,२८८, जी० ३।११८,११९,२४९,२८६,२९१ सोच्चा |श्रुत्वा | ओ० २१. रा० १३. জী০ ২।४४২ सोणंद (दे०) त्रिपदिका ओ० १९. जी० ३१५९६ सोणि | श्रोणि | जी० ३। १९७ सोणिय [ शोणित ] रा० ७०३ सोस्णित्तग | श्रोणिस्त्रक | जी० ३। ५९३ सोत [श्रोतस्] जी० ३।७४६ सोतिदिय | श्रोत्रेन्द्रिय | जी० २१९७६,९७७ सोतिथ | स्वस्ति | जी० ३।१७७ सोत्थिक् [स्वस्तिकूट] जी० ३११७७ सोत्थिय !स्वस्तिक ] रा० २१,२४,४६,८१,२९१. जी० ३१२७७,२८६,३१४,३४७,३४४,४६७ सोत्थियकंत (स्वस्तिककान्त | जी० ३११७७ सोत्थियज्झय [ रवस्तिक ध्वज | जीव ३११७७ सोत्थियपभ [स्वस्तिकप्रभ] जी० ३।१७७ सोरिथयलेस [स्वस्तिकलेभ्य] जीव ३।१७७ सोरिथयवण्ण (स्वस्तिकवर्ण) जी० ३।१७७ सोत्थियसिरिवच्छनंदियावत्तवद्धमाणमभट्टासण-कलसमच्छदण्पणमंगलभत्तिचित्त [स्वस्तिक-श्रीवत्सनन्द्यावर्त्तवर्धमानकभद्रासनकल ग्रमत्स्य-दर्पणमङ्गलभक्तिचित्र ] रा० ७१ सोल्यियावत्त [स्वस्तिकावतं ] जी० ३११७७ सोत्थिसिंग [स्वस्तिम्हज्ज ] जी॰ ३:१७७ सोत्थिसिट्ट [स्वस्तिशिष्ट] जी० ३।१७७ सोत्युत्तरवडिसग [स्वस्त्युत्तरावतनक] র্বী০ ২। १ ৩ ৩

सोधम्म [सौधम] रा० १६०. जी० २१६६,१४८, १४६; ३1१०३८,१०३६ सोधम्मक |सौधर्मक] जी० २।१४८,१४६ सोधम्मग [सौधर्मक] जी० ३।१०३६ सोधम्मवर्डेसग [सौवर्मावतंसक | रा० १२६ सोधम्मवर्डेसय [सौधर्मावतंसक] रा० १२४ सोपाण [सोपान] जी० ३।४५४,५९४ सोभ [ शोभ] ओ० ६३. जी० ३।७२२,५२०,५३०, न्दे४,८३७,८१५ √सोभ [शाभय्]--सोभति. जी० ३।७०३. सांभियु. जा० ३।७०३.--सोभिस्यंति. जी० ३1७०३.---सोभेंसु. जी० ३१८०५ सोभंत [शोभमान] ओ० ४९. रा० ६९. জী০ ই।ই০૬,২ৄছও सोभग [मौभाग्य] ओ० २३ सोभग [ शोभन ] ओ० १४५. रा० ८०५ सोभमाण [शोभमान] जी० ३।५६१ सोमिय [बोधमित] ओ० १ सोभेमाण [शोभमान] जी० ३।१८६ सोम [साम्य] ओ० १५ १९. रा० ७०,१३३, ६७२ जी० ३।३०३,४,६६,४,६७,११२२ सोमणस [जीमनज] ओ० ११. जी० ३ १२५,१३४ सोमगसवण [संामनमवन] रा० १७३,२७६. जी० ३।२८४,४४५ सोमणसा [सोमनसा] जी० २१६९८,६२० सोमणस्सिय [सीमनस्यित, सीमनस्यिक] ओ० २० २१,४३,४४,४६.६२,६३,७८,८०,८१. रा० ८, १०,१२ से १४,१६ से १०,४७,६०,६२,६३, ७२,७४,२७७,२७९,२५१,२६०,६४४,६५१, £53,660,66X,000,000,020,023, 68,682,682,684,624,624,664,665. जीव ३।४४३,४४४,४४७,४५५ सोमलेस | संग्रियों आंग २७. राज ८१३ सोमाकार [सौम्याकार] ओ० १५,१४३. रा० ६७२,६७३,५०१

सोमाण (सोपान | रा० ४७,१७५ से १७९,६४६. जीव ३.४४६,६४०,६४१,८४७ सोय [शौच] ओ० २५. रा० ६८६ सोय (श्रोतस्) ओ० १२२ सोयंधिय (सीगन्धिक) जी० ३१७ सोयणया [ शोचनता ] ओ० ४३ सोयधम्म |शीचधर्म ] ओ० १७ सोल [पांडम] जी॰ ३।२२६।२ सोलस | पोडशम् | ओ० ३३. रा० ७. जी० ३।१४ सोलसग (पोडशक ) जी० ३।५ सोलसभत्त [पांडशभक्त] अ० ३२ सोलसविध | पोडशविध | जी० ३:७,३४७ सोलसबिह [पोडशविध] रा० १६५. जीव ३।३४६ सोलसिया [गोडणिका] रा० ७७२ सोहिलग (पक्व] अं० १९४ सोवणिगय [सौर्वाणक] २१० ३७,२४४,२७६,२८०. जा० ६।३११,४०७,४४४,४४६,४४३ सोवत्थिय [गौवस्तिक] ओ० १२,६४. रा० २४. লী৹ **২।**২৬৬.২৪২ सोवाण (सोपान) रा० १९,२० ४८,५६,५७, २०२,२३४,२६४,२७७,२५८,३१२,४७३. জী০ হাহ্রও,হ্রর,ইর্ই,ই&্হ,४४३,४४७, ४३२,४७८,६६६,६८४ सोस [ बोष | जी० ३।६२८ सोह | शोभ | अो० ४२. रा० ६०७ से ६०६ सोइंत [बांभमान] रा० १३६ सोहगग [सौभाग्य] ओ० ६९ सोहम्म [सीधर्म] ओ० ५१,६५,१६०,१६२. रा० ७,१२,५६,१२४,२७९,७६६. जी० ११४६; 2185,825, 31530,8032,8036, 8052,8056,8008,8003,8008,8000 से १०८३,१०८४,१०८७,१०६०,१०६१, १०११,१०११,३३०१ से १०३,११०१,११०४, ११०७,११०६ से १११२,१११४,१११७, **१**१६,**११२**१,११२२,११२४,**१**१२=

सोहम्मा [सुधर्मा] जी० ३।३७३ सोहि [गोधि] ओ० २५ सोहिय [ योमित ] ओ० ४,६,८,१६४ जी० ३।२७४, २७४

## ē

- हंत [हन्त] रा० १४
- हंता [हन्त] त्रो० ८४. रा० १७३. जी० २।१३
- हंस [हंग] ओ० ९६. रा० २९. जी० ३।२५२, ४९७
- हंसगढभ [हंसगर्भ] रा० १०,१२,१०,६५ १६५, २७९. जी० ३७७,२०४
- हंसगब्भतुलिया [हंसगर्भजुलिका] रा० ३१
- हंसगब्भतुली [हंसगर्भतुली ] जी० ३।२५४
- हंसगडभलय [हंसगर्भमय] रा० १३०. जी० ३।३००
- हंसस्सर [हंसरवर] रा० १३४. जी० ३।३०४,४६८
- <mark>हंसावलिपविभत्ति [</mark>हंसावलिप्रविभक्ति] रा० ५४
- हंसासण [हंसासन] रा० १८१,१८३,१८४.
  - जी० **३।२६३,**२६**५,२६७,**५**४**७
- **√हवकार** [आ+कारय्]—हक्कारेति रा० २५**१.** जो० ३।४४७
- हुट्ट ] को० २०,२१,१३,१४,१६,६२,६३, ६८,७८,८०,२१, रा० ८,१०,१२ से १४, १६ से १८,४७,६०,६२,६३,७२,७४,२७७,२७६, २८१,२६०,६११,६२१,६८३,६१०,६६१,७००, ७०७,७१०,७१३,७१४,७१६,७१८,७२४,७२६, ७७४,७७६. जी० ३,४४३,४४४,४४७,११४
- हडप्पगाह [हडप्पग्राह] औ० ६४
- हडिबद्धग (हडिवदक) ओ० ६०
- √ हण [घातय] --हण रा० ७६१
- हणु [हनु] ओ० ११
- हणुया [हनुका] जी० ३।४९६,४९७
- हत्य [हस्त] ओ० २१,५४,६९,१११ से ११३, १३७,१३६. रा० १३३,२८१,२८८ से ११३, ६४६,७१९,७४३,८०४. जी० ३।४४७,४४४ से ४४६,४६७

हत्य दि० अो० १७

हत्थग [हस्तक] ओ० १२. जी० ३।२९१,३१४,

हत्य-हल

६३६,६५१,६७७,५१४ हत्थण्डिण्णग | हस्तच्छिनक | रा० ७५१ हत्यचिछण्णय [हस्तच्छिन्नक] रा० ७६७ हत्यछिण्णग | हस्तच्छिन्नक | ओ० ६० हस्थतल [हस्ततल] रा० २५४. जी० ३१४१५ हत्थमालग (हस्तमालक) जी० ३। ५९३ हत्थय [हस्तक] रा० २३,२२३ हत्याभरण [हस्ताभरण] ओ० ४७,७२ हरिष [हस्तिन्] ओ० १०१,१२४. रा० ७७२. जी० ३।५४,६१८ हत्यक्लंघ [हस्तिस्कन्ध] ओ० ६१ हत्थिगुलगुलाइय [हस्तिगुलगुलायित] रा० २०१. জী৹ ३।४४७ हरिथतावस [हस्तितापस] ओ० १४ हत्यिमुह [हस्तिमुख] जी० ३।२१६ हत्थरयण [हस्तिरत्त] ओ० ४५ से ५७, ६२ से **£**8,**£**8 हत्यिवाउय [हस्तिव्यापृत] ओ० ४६,४७ हत्थिसोंड [हस्तिशौण्ड] जी० १। प्य हम्मिय [हर्म्य] जी० ३ १९४,६०४ हय [हय] ओ० १९,४५,५१,५२,५५ से ४७,६२, ६५. रा० १४१ से १४४,१६२ से १९४, २दध, इदछ से ६८ जीव ३। २६६, २६७, ૨१૬,૨૨૪,૪૧૧,૧૯૬ हयकंठ [हयकण्ठ] रा० १५५,२५८. जी० ३।३२८ हयकंठग [हयकण्ठक] जी० ३।४१९ हयकण्ण [हयकर्ण] जी० ३।२१६,२२२ से २२४, २२६।३ हयकण्णदोव [ह्यकर्णद्वीप | जी० ३।२२२ हयजोहि [हयपोधिन्] ओ० १४८,१४६. Ro 508,580 हयलक्खण [हयेलक्षण] ओ० १४६. रा० ८०६ हयविलंबिय | हयविलम्बित | रा० ११ हयविलसिय [हयविलसित] रा० ६१

हयहेसिय [हयहेसित] रा० २८१. जी० ३।४४७ हरतणुय [हरतनुक] जी० १।६५ हरय [ हद | रा० २६२ से २६४,२७३,२७७, ४७३. जीव ३१४२४,४२६,४३८,४४३,५३२ हरि [हरित्] रा० २७९. जी० ३।४४४ हरिओभास | हरितावभास ] २१० १७०,७०३. জী৹ ३।२७३ हरिकंता [हरिकान्ता] २१० २७६. जीव ३१४४४ हरितकाय [हरितकाय] जी० ३। १७४ हरितग | इरितक | जी० ३।३२४ हरिताभ | हरिताभ | जी० ३।द७व हरिताल [हरिताल | जी० ३।८७८ हरिय [हरित] ओ० ४,५,८,१०३,१२६,१३५. रा० १७०,७०३. जी० ११६६:३१२७३,२७४ हरिय [भरित] जी० ३:२८४ हरियकाय [हरितकाय] जीव ३।१७४ हरियग [हरितक] रा० १५१,७५२ हरियच्छाय [हरितच्छाय] ओ० ४. रा० १७०, ७०३. जी० ३।२७३ हरियाल [हरिताल] रा॰ २८,१६१,२४८,२७८ जी० ३।२५१,३३४,४१६ हरियालिया [हरितालिका] रा० २५ हरियोभास [हरितावभास] ओ० ४ हरिवास [हरिवर्ष] र:० २७९. जी० २११३,३२, xe,00,07,ee,8x0,9xe; 3,77=,xxx, ¥30 हरिवाहण [हरिवाहन | जी० ३। १२३ हरिस [हर्ष] ओ०२०,२१,४३,४४,४६,६२,६३,७=, म०,म१. रा० म,१०,१२ से १४,१६ से १न, **४७,६०,६२**,६३,७२,७४,२७७,२७९,२**०१, २६०,**६६४,**६**=१,६=३,६८०,६९४,७००,७०७, ७**१०,७१३,७१४,७१६,७१**८,७२**४,७**२६,७७४, ७७८. जी० ३।४४३,४४५,४४७,५५५ हरिसय [हर्षक] जी० ३। १९ १३ हरिसिय [हर्षित ] रा० १७३. जी० ३।२८५ हल [हल] ओ० १. जी० ३।११०

हलवर [हलधर] ओ० १३. रा० २६. জী০ ই।২৬৪ हलिद्दा [हरिदा] रा० २८. जी० ३।२८१ √हव [भू]---हवंति ओ० १८३. जी० ३।१२ ----हवेज्ज ओ० १९४।४.----हवेज्जा ओ० १९४।१४ हव्व [अर्वाच्] ओ० १७ हुठवं [अर्वाच्] ओ० १७०. रा० ७२०. जी० ३।८६ √हस [हस्]--हसंति रा० १८४.--हसिज्जइ যাঁ০ ৬নই हसंत [हयत्] ओ० ६४ हसिय [हसित] ओ० १४,४९. रा० ७०,६७२, ८०६,८१०, जी० ३१४६७ हस्स [हस्व] ओ० १८२,१९४।४ √हाव [हा]---हायइ जी० ३।७३१. -हायति জী৹ ३।७२३ हायण [हायन] जी० ३।११८,११६ हार [हार] ओ० २१,४७,४२,४४,६३,६४,७२, tos, 238, 268. TIO 5, 26, 80, 232, इदर, इदण से इदर, ७१४. जीव ३।२६४, २५२,३०२,४६२,६३४,११२१ हारपुब्ध (पाय) [हारपुटकपात्र] ओ० १०५, १२५ हारपुडय (बंघण) [हारपुटकबन्धन] ओ० १०६, 359 हारभट्ट [हारभद्र] जी० ३।९३४ हारमहाभद्द [हारमहाभद्र] जी० ३। ६३४ हारमहावर [हारमहावर] जी० ३। ६३४ हारवर [हारवर] जी० ३।६३५ हारवरभद्द [हारवरभद्र] जी० ३।९३५ हारवरमहाभद्द [हारवरमहाभद्र] जी० ३।६३४ हारवरमहावर [हारवरमहावर] जी० ३।६३४ हारवरोभास [हारवरावभास] जी० ३। १३४ हारवरोभासभइ [हारवरावभासभद] জী০ হাহহুধ हारवरोभासमहाभद् [हारवरावमासमहाभद्र]

জীত হাচ্যুথ हारवरोभासमहावर [हारवरावभासमहावर] জী০ ২। ১২২ हारवरोभासवर [हारवरावभासवर] जी० ३। १ ३ ५ हालिइ [हारिद्र] ओ० १२. रा० २२,२४,२८, १२८,१३२,१४३. जी० १।४,१३६;३।२२, ४४,२=१,२६०,३२६,१०७४,१०७६ हालिद्दग [हारिद्रक] जी० ३।२८१ हास [हास] ओ० २८,४१,४१ हास [ हस्व ] जीं० ३।७८१,७८२ हासकर [हासकर] ओ० ६४ हिगुंलय [हिङ्गुलक] रा० १६१,२४८,२५८, जी० राइर४,४१९ हिंसण्पयाण [हिंसप्रदान] ओ० १३६ हिसाणुबंधि [हिंसानुबन्धिन् ] ओ० ४३ हिद्विमय [अधस्तन] जी० ३।४ हित [हित] जी० २।४४१,४४२ हिम [हिम] रा० २४१. जी० ११६४; ३१११९, ४१६ हिमकूड [हिमकूट] जी० ३।११९ हिमपडल [हिमपटल] जी० ३१११६ हिमपुंध [हिमपुञ्ज] जी० ३।११९ हिमवंत [हिमवत्] ओ० १४. रा० १७३,६७१, 598 हियउप्पाडियग [ उत्पाटितकहृदय ] ओ० ६० हिव [हित] ओ० ४२. रा० १४,२७४,२७६,६८७ हियय [हृदय] ओ० २०,२१,२७,४३,४४,४६,६२, ६३,६९,७८,५०,५१. रा० ५,१०,१२ से १४, १६ से १८,४७,६०,६२,६३,७२,७४,२७७, २७६,२५१,२६०,६४४,६५१,६५३,६८०, £\$\$0,080,0\$0,0\$0,080,000,080,000,833 ७१८,७२४,७२६ ७४० से ७४३,७७४,७७८, < १३. जी० ३।४४३,४४४,४४७,<u>४</u>५५ हिययगमणिज्ज [हृदयगमनीय] ओ० ६८ हिययसूल [हृदयशूल] जी० ३१११९,६२८

हिरण्ण [हिरण्य] ओ० २३. रा० २८१,६९४. जी० ३।४४७,६०८,**६३**१ हिरण्णजुत्ति [हिरण्ययुक्ति] ओ० १४६. रा० ८०६ हिरण्णपाग [हिरण्यपाक] ओ० १४६. रा० ८०६ हिरण्णवय [हिरण्यवत] जी० ३।२८८ हिरिलि [दे०] जी० १।७३ हिरो [ही] रा० ७३२,७३७,७७४ होण [हीन] ओ० १९९४. रा० ७७४. জী০ ২।৩২ हीर [हीर] जी० ३।६२२ हीरय [हीरक] जी० ३।६२२ हीलणा [हीलना] ओ० १४४,१६४,१६६, রাত দংহ √हु [भू]—हुंति. जी० १।१४ हंड [हुण्ड] जी० १।=६,६४,१०१,११६; ३।६३, 82813,8 हुंबउट्ठ [दे०] ओ० ६४ हुडुक्क [हुडुक्क] ओ० ६७. रा० १३,६५७. जी० ३।४४६ हुडुक्की [हुडुक्की | रा० ७७ हुतवह [हुतवह] जी० ३१४९६ हुयवह [हुतवह] ओ० १६,४७. जी० ३।५१० हुयासण [हुतासन] ओ० २७. रा० ८१३ हुहुय [हुहुक] जी० ३।८४१ हुहुयमाण [दे० जाज्वल्यमान] जी० ३।११८ हेउ [हेतु] ओ० ११६. रा० १६,७१९,७४८ से 500,**020** हेट्ठा [अधस्] ओ० १३,१=२. रा० ४,२४०. जी० ३१७७,८०,३४९,४०२ हेट्ठि [अधस्] जी० ३।९९८ हेट्टिम [अधस्तन] जी० ३।७० से ७२,११११।३

**हेट्ठिमगैविज्ज** [अधस्तनग्रैवेय] जी० २। १६ हेट्टिमगेवेज्जग [अधस्तनग्रैवेयक] जी० ३।१०४६ हेट्टिममज्झिमिल्ल [अधस्तनमध्यम] जी० ३।७२९ हेट्टिल्स [अधस्तन] जी० ३।६०,६२ से ७१,७२४, 652296969696969696969696969696 हेहिल्लमजिझल्ल [अधस्तनमध्यम] जी० ३७७२९ हिट्ठिल्लातो [अधस्तनतस्] जी० ३।६९,७२ **हेमंति**य [हैमन्तिक] ओ० २६. रा० ४४ हेमजाल [हेमजाल] रा० १३२,१७३,१६१,६८१ जी० ३।२६४,२८४,३०२,४९३ हेमण्य [हेमात्मन्] जी० ३।५९५ **हेमवत** [हैमवत] जी० २।६६,१४७,१४६;३।७**६**४ हेमवय [हैमवत] ओ॰ ६४. रा॰ १७३,२७९,६८१. जी० २।१३,३१,४८,७०,७२;३।२२८,२८४, ४४४ हेरण्णवत [हैरण्यवत] जी० २१६६,१४७; ३।७९४ हेरण्णवय [हैरण्यवत] जी० २।१४६; ३।४४५ हेर [हेरु] जी० ३।६३१ **हेरुयालवण** [हेरुतालवन] जी० ३१४८१ √हो [भू]--होइ ओ० १६४।५. रा० १३०. जी० १११३६-होई. जी० ३११२६।३ ---होउ. ओ० १४४. रा० ७३०--होंति. रा० १३०. जी० ११७२ - होति. ओ० १९४१८. जी० ३।१९४---होज्ज. रा० ७१४. जी० ३।४९२.--होज्जा. रा० ७१८,---होत्था ओ० १. रा० १ होतिय [होत्रिक] ओ० १४ होरंभा [होरम्भा ] रा० ७७. जी० ३।४८५ **√ हस्सीकर** [हस्वी+क]—हस्सीकरेज्ज জী০ ২৷৪৪৬ हरसीकरित्तए [हस्वीकर्तुम्] जी० ३। १९४

## কুল মাত্ৰ ১৪২থ

ॺॣ॑०	पं०	अशुद्ध	'যুৱ
Ŗ	१२	बससंडेण	वणसंडेभ
१६	१७	धम्मोप°	धम्मोव°
१७	Ę	भगवाओ	भगवओ
२७	6	विउस <b>ग्मे</b>	विउस्सःवे
38	३	विहणि°	विहणि°
<b> </b>	US	तुंबविणिपेच्छा	तुंबविणियपेच्छा
६७	१२	सयमेब	सयमेव
<b>द</b> े ४	२२	जायमेव	जीयमेव
53	R	घोसेडिया	घोसाडिया
£3	१२	पोंडरि <b>य</b> °	पोंडरी <b>य</b> ँ
80%	٦	डिडिमाच	<u> </u>
388	٩	হ <del>ত</del> ত°	<b>भू</b> च्छ°
રહર	85	नुब्बजे	हुब्व <del>भे</del>
२१७	१	कसित्ता	<b>क</b> सिला
३१४	११	सुब्भ	ধুত্যু
३१४	टि० १३ का अन्तिम		'सुवण्णसुज्करययवालुयाओ' इति
			सुवर्णंपीतकान्तिहेम सुज्भं
			रूप्यविशेष: रजतं—प्रतीतं तन्मय्यो
			वालुका यासु ताः सुवर्णसुज्य-
			रजतवालुका (मवू)
३२०	पं० ११	°विव्वुइ°	°णिव्दुइ°
<b>ર</b> ७ <b>%</b>	टि० १२	३१६=६	३। <b>क६</b> ६
३५१	पं० १६	यत्तयं-	पत्तेयं-
४२९	पं० ६	उबवेता	उववेता
४४७	पं० ह	बाघाइमे	वाघाइमे 
૪૬૧	पं० ह	अणत्तरो <sup>°</sup>	अणुत्तरो° <del>स्टित्नस</del> ्थ
४७३	पं० ४	तिर <b>क्सि</b> °	तिरिवख°
६७६		पमोकक्ख	पमोक्ख

शुद्धि-पत्र

